इज़ाला औहाम

(भ्रांतियों का निराकरण)

(IZALA AUHAM)

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद-व-महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

दुनिया में एक नज़ीर आया पर दुनिया ने उसे क़ुबूल न किया लेकिन ख़ुदा उसे क़ुबूल करेगा और बड़े ज़ोरआवर हमलों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा

भाग - प्रथम

इज़ाला औहाम

(भ्रान्तियों का निराकरण)

فِيۡهِ بَاۡسٌ شَدِيۡدٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम किताब : इज़ाला औहाम (भ्रांतियों का निराकरण)
Name of Book : IZALA AUHAM (Bhrantiyon Ka Nirakaran)
लेखक : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम
Author : HAZRAT MIRZA GHULAM AHMAD QADIANI
The Promised Messiah and Mahdi[as]
अनुवादक : डॉ. अन्सार अहमद, एम.ए, एम.फिल, पी.एच.डी,
पी.जी. डी.टी, मौलवी फ़ाज़िल
Translated by : Dr. ANSAR AHMAD, M.A. M.Phil., Ph.D., PGDT,
Hon. in Arabic
संख्या Quantity : 1000
संस्करण : प्रथम (हिन्दी) मार्च 2019 ई.
Edition : First (Hindi) March 2019
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at,
Qadian, 143516
Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press,
Qadian 143516
Distt. Gurdaspur, (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक "इज़ाला औहाम" का यह हिन्दी अनुवाद डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), अली हसन एम. ए. नसीरुल हक़ आचार्य, इब्नुल मेहदी एम् ए और मुहियुद्दीन फ़रीद एम् ए ने इसका रीव्यू आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

ٹائیٹل بار اوّل

حصہ اول

دنیا میں ایک نذیر آیا پر دنیا نے اسے قبول نہ کیا لیکن خدا اسے قبول کریگا اور بڑے زور آور حملوں سے اسکی سچائی ظاہر کر دیگا

ازالہ اوہام

فیہ بأس شدید و منافع للناس

الحمد والمنت کہ بماہ مبارک ذی الحجہ ۱۳۰۸ھ کتاب جامع معارف قرآنی وشارح اسرار کلام ربانی از تالیفات مرسل یزدانی و مامور رحمانی حضرت جناب میرزا غلام احمد صاحب قادیانی

باہتمام وسعی شیخ نور احمد مالک مطبع ریاض ہند مطبوع گردید

تعداد ۷۰۰ — قیمت فی جلد عمہ

۸/

अनुवाद- टाइटल प्रथम संस्करण उर्दू

दुनिया में एक नज़ीर आया पर दुनिया ने उसे क़ुबूल न किया लेकिन ख़ुदा उसे क़ुबूल करेगा और बड़े ज़ोरआवर हमलों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा

भाग - प्रथम

इज़ाला औहाम

(भ्रान्तियों का निराकरण)

فِيْهِ بَاسٌ شَدِيْدٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ

लेखक

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

हे सन्देह करने वालो ! आकाशीय फैसले की ओर आओ !

हे बुज़ुर्गो ! हे मौलवियो ! हे क़ौम के चुने हुए लोगो ! ख़ुदा तआला आप लोगों की आंखें खोले। प्रकोप और क्रोध में आकर सीमा से मत बढ़ो। मेरी इस पुस्तक क दोनों भागों को ध्यानपूर्वक पढ़ो कि इनमें प्रकाश और मार्गदर्शन है। ख़ुदा तआला से डरो तथा अपनी जीभों को काफ़िर ठहराने से रोक लो। ख़ुदा तआला अच्छी तरह जानता है कि मैं एक मुसलमान हूं।

اٰمَنْتُ بِاللّٰہِ و ملٰئکتِہٖ و کُتُبِہٖ و رُسُلِہٖ و البعث بعد الموت و اشھد ان لَّآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شریک لہ و اشھد ان محمّدًا عبدہٗ و رسولہ فاتقوا اللّٰہ و لا تقولوا لست مُسلما و اتقوا الملک الذی الیہ ترجعون

और यदि अब भी इस पुस्तक के पढ़ने के बाद सन्देह है तो आओ परख लो ख़ुदा किस के साथ है। हे मेरे विरोधी राय रखने वाले मौलवियों और सूफ़ियो ! और सज्जादा नशीनो ! जो काफ़िर ठहराने वाले झुठलाने वाले हो। मुझे विश्वास दिलाया गया है कि यदि आप लोग मिल जुल कर या आप में से एक एक उन आकाशीय निशानों में मेरा मुकाबला करना चाहें जो ख़ुदा के वलियों के हाल के लिए अनिवार्य हुआ करते हैं तो ख़ुदा तआला तुम्हें लज्जित करेगा और तुम्हारे पर्दों को फाड़ देगा और उस समय तुम देखोगे कि वह मेरे साथ है। क्या तुम में कोई है ? जो इस आज़मायश के लिए मैदान में आए और अख़बारों के माध्यम से सामान्य घोषणा करके उन स्वीकारिता के संबंधों में जो रब्ब मेरे साथ रखता है अपने संबंधों की तुलना करे। स्मरण रखो कि ख़ुदा सच्चों का मददगार है वह उसी की सहायता करेगा जिसको वह सच्चा जानता हे। चालाकियों से रुक जाओ कि वह निकट है। क्या तुम उससे लड़ोगे ? क्या कोई अहंकार पूर्ण उछलने से वास्तव में ऊंचा हो सकता है। क्या केवल जीभ की तेज़ियों से सच्चाई को काट दोगे। उस अस्तित्व से डरो जिसकी प्रकोप समस्त प्रकोपों से बढ़कर कर है -

اِنَّہٗ مَنْ یَّاْتِ رَبَّہٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَہٗ جَھَنَّمَ ؕ لَا یَمُوْتُ فِیْھَا وَ لَا یَحْیٰی *

नसीहत कर्ता

ख़ाकसार - **ग़ुलाम अहमद** क़ादियानी, लुधियाना से मुहल्ला इक़्बाल गंज

* सूरह ताहा : 75

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ وَالسَّلَامُ عَلٰی قَوْمٍ موجع سیّمَا عَلٰی امَام الْاَصْفیاء وَسیّد
الْاَنْبیاء مُحَمّدٍ الْمُصْطَفٰی وَاٰلِہٖ وَاَصْحٰبِہٖ اَجْمَعِیْنَ۔ اللّٰھُمَّ ارْزُقْنَا انوار
اتباعہٖ و اعطنا ضَوْعہٗ بِجَمِیْعِ اَنْوَاعِہٖ بِرَحْمَتِكَ عَلَیْہِ وَاَشْیَاعِہٖ۔

इस प्रश्न का उत्तर कि हज़रत मसीह बिन मरयम ने मुर्दों को जीवित किया, अंधों को आंखें प्रदान कीं, बहरों के कान खोले इन समस्त चमत्कारों में से मसीह के मसील (समरूप) ने क्या दिखाया

यहाँ प्रथम तो यह उत्तर पर्याप्त है कि मुसलमान लोग जिस मसीह की प्रतीक्षा कर रहे हैं उसके बारे में हदीसों में कदापि यह नहीं लिखा कि उसके हाथ से मुर्दे जीवित होंगे अपितु यह लिखा है कि उसकी फूंक से जीवित मरेंगे। इसके अतिरिक्ति ख़ुदा तआला ने इस विनीत को इसी उद्देश्य से भेजा है ताकि आध्यात्मिक तौर पर मुर्दे जीवित किए जाएँ, बहरों के कान खोले जाएँ और वे जो क़ब्रों में हैं बाहर निकाले जाएँ एवं यह भी समरूपता का कारण है कि जैसे मसीह इब्ने मरयम (मरयम के पुत्र मसीह) ने इंजील में तौरात का सही ख़ुलासा और यह ख़ाकसार इसी कार्य के लिए आदिष्ट (मामूर) है ताकि असावधान लोगों को समझाने के लिए पवित्र क़ुर्आन की मूल शिक्षा प्रस्तुत की जाए। मसीह केवल इसी कार्य हेतु आया था कि तौरात के आदेशों को धूम धाम के साथ प्रकट करे। इसी प्रकार यह ख़ाकसार भी इसी कार्य के लिए भेजा गया है ताकि पवित्र क़ुर्आन के आदेश स्पष्टतापूर्वक वर्णन कर दे। अन्तर केवल इतना है कि वह मसीह मूसा को दिया गया था और यह मसीह मूसा के समरूप को दिया गया। अत: यह समस्त समरूपता तो सिद्ध है तथा मैं सच-सच कहता हूँ कि मसीह के हाथ से जीवित होने वाले मर गए, परन्तु जो व्यक्ति मेरे हाथ से जाम पिएगा जो मुझे दिया गया है वह कदापि नहीं मरेगा, वे

जीवनदायिनी बातें जो मैं कहता हूँ और वह हिकमत जो मेरे मुख से निकलती हैं यदि कोई अन्य भी उसके समान कह सकता है तो समझो कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से नहीं आया, परन्तु यदि यह हिकमत और मारिफ़त जो मुर्दा हृदयों के लिए अमृत का आदेश रखती है अन्य स्थान से नहीं मिल सकती तो तुम्हारे पास इस अपराध का कोई बहाना नहीं कि तुम ने उस उद्गम से इन्कार किया जो आकाश पर खोला गया, पृथ्वी पर कोई उसे बन्द नहीं कर सकता। अत: तुम मुकाबले की जल्दी न करो और जान-बूझ कर इस आरोप के अन्तर्गत स्वयं को न लाओ कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है :-

وَ لَا تَقۡفُ مَا لَیۡسَ لَکَ بِہٖ عِلۡمٌ ؕ اِنَّ السَّمۡعَ وَ الۡبَصَرَ وَ الۡفُؤَادَ کُلُّ اُولٰٓئِکَ کَانَ عَنۡہُ مَسۡـُٔوۡلًا *

कुधारणा और बद्गुमानी में सीमा से अधिक न बढ़ो, ऐसा न हो कि तुम अपनी बातों से पकड़े जाओ और फिर उस दु:ख के स्थान में तुम्हें यह कहना पड़े कि :-

مَا لَنَا لَا نَرٰی رِجَالًا کُنَّا نَعُدُّہُمۡ مِّنَ الۡاَشۡرَارِ **

آں نہ دانائی بود کز نا شکیبائی نفس — خویشتن را زود تربرضد و انکار آورد

صبر باید طالب حق راکہ تخم اندر جہاں — ہرچہ پنہان خاصیت وارد ہماں بار آورد

اند کے نور فراست باید این جامرد را — تاصداقت خویشتن را خود باظہار آورد

صادقاں را صدق پنہانی نے ماند نہاں — نورِ پنہاں بر جبین مرد انوار آورد

ہر کہ از دستِ کسے خورداست کاتا ساوصال — ہر زمان روئش سرورِ واصلِ یار آورد

अनुवाद :- 1. वह बुद्धिमान नहीं जो नफ़्स की अधीरता के कारण तुरन्त सत्य का इन्कार कर देता है।*

2. सत्याभिलाषी को धैर्य से काम लेना चाहिए कि संसार में प्रत्येक बीज जो

* बनी इस्राईल- 37

** साद : 63

भी गुप्त गुण रखता है उसी के अनुसार फल लाता है।*

3. मनुष्य को कुछ प्रतिभा का प्रकाश भी चाहिए ताकि सच्चाई स्वयं को प्रकट कर दे।*

4. सदात्मा लोगों का आन्तरिक सत्य गुप्त नहीं रह सकता। गुप्त प्रकाश मनुष्य के ललाट पर चमक पैदा कर देता है।*

5. वह व्यक्ति जिसने किसी के हाथ से मिलन की मदिरा के जाम पिए हों उसका मुख हर समय उस प्रियतम के मिलन का आनन्द प्रकट करता रहता है। *

हे मुसलमानो! यदि सच्चे हृदय से हज़रत ख़ुदा तआला और उसके पवित्र रसूल अलैहिस्सलाम पर ईमान रखते हो और ख़ुदाई सहायता के अभिलाषी हो तो निस्सन्देह समझो कि सहायता का समय आ गया और यह कारोबार मनुष्य की ओर से नहीं और न किसी मानवयोजना ने इसकी आधार-शिला रखी, अपितु यह वही सच्चा प्रभात उदय हो गया है जिसकी पवित्र लेखों में पहले से सूचना दी गई थी। ख़ुदा ने नितान्त आवश्यकता के समय तुम्हें याद किया। निकट था कि तुम किसी विनाशकारी गढ़े में गिर पड़ते, परन्तु उसके सहानुभूतिपूर्ण हाथ ने शीघ्रता के साथ तुम्हें उठा लिया। अत: कृतज्ञता प्रकट करो तथा खुशी से कूदो कि आज तुम्हारी ताज़गी का दिन आ गया। ख़ुदा तआला अपने धर्म-उद्यान को जिसकी सदात्माओं के रक्तों से सिंचाई हुई थी कभी व्यर्थ करना नहीं चाहता वह कदापि यह नहीं चाहता कि अन्य जातियों के धर्मों की भांति इस्लाम भी एक प्राचीन कथाओं का भण्डार हो, जिसमें विद्यमान बरकत कुछ भी हो वह अंधकार के पूर्ण आधिपत्य के समय अपनी ओर से प्रकाश पहुँचाता है। क्या अंधकारमय रात के पश्चात् नए चन्द्रमा के उदय होने की प्रतीक्षा नहीं होती, क्या तुम अमावस की रात को जो अंधकार की अन्तिम रात है को देखकर नहीं कहते कि कल नया चन्द्रमा निकलने वाला है। खेद कि तुम इस संसार के बाह्य प्रकृति के नियम को तो भली प्रकार समझते हो, परन्तु उस आध्यात्मिक प्रकृति के नियम से जो उसी का समरूप है पूर्णतया अनभिज्ञ हो।

* प्रस्तुत शे'रों का अनुवाद, अनुवादक की ओर से है। (प्रकाशक)

हे स्वार्थी मौलवियो! और नीरस धर्मात्माओ! तुम पर खेद कि तुम आकाशीय द्वारों का खुलना चाहते ही नहीं अपितु चाहते हो कि सदैव बन्द ही रहें और तुम पेशवा बने रहो। अपने हृदयों में झांको तथा अपने अन्त:करण को टटोलो, क्या तुम्हारा जीवन सांसारिक मोह में लिप्त होने से पवित्र है, क्या तुम्हारे हृदयों पर वह ज़ंग (मोरचा) नहीं जिसके कारण तुम एक अंधकार में हो, क्या तुम उन धार्मिक पंडितों और यहूदी परम्परावादियों से कुछ कम हो। जो हज़रत मसीह के समय में दिन-रात कामवासनाओं में लिप्त थे, फिर क्या यह सत्य नहीं कि तुम मसीह के सदृश (मसील) के लिए मसीह से समरूपता का कुछ सामान अपने हाथ से प्रस्तुत कर रहे हो ताकि ख़ुदा तआला का समझाने का प्रयास तुम पर हर प्रकार से पूर्ण हो। मैं सत्य कहता हूँ कि एक काफ़िर का मोमिन हो जाना तुम्हारे ईमान लाने से अधिक सरल है अधिकांश लोग पूरब और पश्चिम से आएंगे और इस नै'मत के थाल से भाग लेंगे, परन्तु तुम इसी ज़ंग की स्थिति में ही मरोगे। काश तुम ने कुछ सोचा होता।

और समरूपता के लिए मसीह के पहले जीवन के चमत्कार जो माँगे जाते हैं के बारे में अभी वर्णन कर चुका हूँ कि शरीर का जीवित करना कुछ वस्तु नहीं आध्यात्मिक (रूहानी) तौर पर जीवित करने के लिए यह विनीत (ख़ाकसार) आया है और उसका प्रकटन होगा, सिवाए इसके कि यदि मसीह के मूल कार्यों को उन अतिरिक्त कार्यों से पृथक करके देखा जाए जो मात्र झूठ घड़ने के तौर पर या गलत समझने के कारण घड़े गए हैं तो कोई चमत्कार दिखाई नहीं देता, अपितु मसीह के चमत्कारों और भविष्यवाणियों पर जितने आरोप और सन्देह उत्पन्न होते हैं मैं नहीं समझ सकता कि किसी अन्य नबी के विलक्षण चमत्कारों अथवा भविष्यवाणियों में कभी ऐसे सन्देह उत्पन्न हुए हों। **क्या तालाब का वृत्तान्त मसीही चमत्कारों की प्रतिष्ठा को कम नहीं करता ?** और भविष्यवाणियों की स्थिति इस से भी अधिक अस्त-व्यस्त है। क्या ये भी कुछ भविष्यवाणियां हैं कि भूकम्प आएंगे, संक्रामक रोग आएगा, लड़ाइयां होंगी, दुर्भिक्ष पड़ेंगे तथा इससे अधिक खेदजनक बात यह है कि हज़रत मसीह की जितनी भविष्यवाणियाँ ग़लत निकलीं उतनी सही नहीं निकल

सकीं। उन्होंने यहूदा इस्क्रियूती को स्वर्ग के बारह तख़्तों में से एक तख़्ता दिया था जिससे अन्ततः वह वंचित रह गया तथा पतरस को न केवल तख़्त अपितु आकाश की कुंजियां भी दे दी थीं तथा स्वर्ग के द्वार किसी पर बन्द होने या खुलने उसी के अधिकार में रखे थे, परन्तु पतरस जिस अन्तिम वाक्य के साथ हज़रत मसीह से बिदा हुआ वह यह था कि उसने मसीह के समक्ष मसीह पर लानत भेजकर तथा शपथ खाकर कहा कि मैं इस व्यक्ति को नहीं जानता। ऐसी ही और भी बहुत सी भविष्यवाणियां हैं जो सही नहीं निकलीं, परन्तु यह बात आरोप-योग्य नहीं क्योंकि कश्फ़ी बातों में समझने में गलती नबियों से भी हो जाती है। हज़रत मूसा की कुछ भविष्यवाणियां भी इस रंग में प्रकट नहीं हुईं जिस रंग में हज़रत मूसा ने अपने हृदय में आशा बांध रखी थी। कहने का तात्पर्य यह है कि हज़रत मसीह की भविष्यवाणियां अन्य नबियों की भविष्यवाणियों से अधिक ग़लत निकलीं, परन्तु यह ग़लती इल्हाम में नहीं अपितु समझ और विवेचना की ग़लती है। चूँकि मनुष्य थे मनुष्य का राय ग़लत और सही दोनों की ओर जा सकती है इसलिए विवेचना के तौर पर ये ग़लतियां हो गईं।

यहाँ सर्वाधिक आश्चर्य यह है कि हज़रत मसीह चमत्कार दिखाने से स्पष्ट इन्कार करके कहते हैं कि मैं कदापि कोई चमत्कार दिखा नहीं सकता। परन्तु फिर भी जन सामान्य उनकी ओर चमत्कारों का एक भंडार सम्बद्ध कर रहे हैं, नहीं देखते कि वह तो स्पष्ट तौर पर इन्कार किए जा रहे हैं। अतः हीरोदिस के सामने जब हज़रत मसीह प्रस्तुत किए गए तो हीरोदिस मसीह को देखकर अति प्रसन्न हुआ क्योंकि उसे उसका कोई चमत्कार देखने की आशा थी, परन्तु इस बारे में हीरोदिस ने यद्यपि कि बहुत विनती की, परन्तु उसने कुछ उत्तर न दिया, तब हीरोदिस अपने समस्त साथियों सहित उससे श्रद्धाविहीन हो गया और उसे तुच्छ ठहराया। देखे 'लूक़ा' बाब : 22

अतः विचार करना चाहिए कि यदि हज़रत मसीह में अधिकृत तौर पर जैसा कि ईसाइयों का विचार है चमत्कार-प्रदर्शन की शक्ति होती तो हज़रत मसीह हीरोदिस

को जो एक श्रद्धालु पुरुष और उन के देश का राजा था कोई चमत्कार दिखाते, परन्तु वह कुछ भी न दिखा सके अपितु एक बार धार्मिक पंडितों और यहूदी परम्परावादियों ने जिनका क़ैसर की सरकार में बड़ा सम्मान था, हज़रत मसीह से चमत्कार मांगा तो हज़रत मसीह ने उन्हें सम्बोधित करके उत्तेजना एवं क्रोधपूर्वक शब्दों में कहा कि - इस युग के दुष्ट और हरामकार लोग निशान ढूँढते हैं * परन्तु यूनुस नबी के

---

* **हाशिया** - यहां हज़रत मसीह की सभ्यता और उनकी नैतिक स्थिति पर एक बड़ा आरोप आता है क्योंकि मती, बाब - 23, आयत - 3 में वह फ़रमाते हैं कि धार्मिक पंडित और यहूदी परम्परावादी मूसा की गद्दी पर बैठे हुए हैं अर्थात् बड़े बुज़ुर्ग हैं और उन्हें यह भी मालूम था कि वे लोग यहूदियों के पेशवा कहलाते थे और क़ैसर के दरबार में बड़े सम्मानपूर्वक विशेष रईसों में बैठाए जाते थे फिर इन समस्त बातों के बावजूद उन्हीं धार्मिक पंडितों और यहूदी परम्परावादियों को सम्बोधित करते हुए नितान्त असभ्य शब्दों का प्रयोग किया अपितु आश्चर्य तो यह है कि उन यहूदियों के प्रतिष्ठित बुज़ुर्गों ने नितान्त नम्र और शिष्टतापूर्ण शब्दों द्वारा सर्वथा विनम्रतापूर्वक हज़रत मसीह की सेवा में यों विनती की कि हे उस्ताद! हम तुम से एक निशान देखना चाहते हैं। इसके उत्तर में हज़रत मसीह ने उन्हें सम्बोधित करते हुए ये शब्द प्रयोग किए कि - इस युग के दुष्ट और हरामकार लोग निशान ढूँढते हैं... और इतने को ही पर्याप्त नहीं समझा अपितु वह उन प्रतिष्ठित बुज़ुर्गों को सदैव बुरे शब्दों में याद करते रहे। कभी उन्हें कहा "हे सांपो हे सांपों के बच्चो" देखो मती बाब-23, आयत-13 कभी उन्हें कहा - "अंधे" देखो मती बाब-15, आयत-14, कभी उन्हें कहा "हे पाखंडियो" देखो मती, बाब-23, आयत-13, कभी नितान्त अश्लील शब्दों में यह कहा कि - "वैश्याएं तुम से पहले ख़ुदा की बादशाहत में प्रवेश करती है" तथा कभी उनका नाम सुअर और कुत्ता रखा। देखो मती, बाब-21, आयत-31 और कभी उन्हें "मूर्ख" कहा। देखो मती, बाब-23, आयत-17, कभी उन्हें कहा कि "तुम नारकी हो"। देखो मती बाब-13, आयत 16, जबकि स्वयं ही सहिष्णुणा और शिष्टता की नसीहत देते हैं अपितु फ़रमाते हैं कि जो कोई अपने भाई

निशान के अतिरिक्त कोई निशान उन्हें नहीं दिखाया जाएगा। देखो 'मती' बाब - 12, आयत - 39 । और हज़रत मसीह ने यूनुस नबी के निशान की ओर जो संकेत किया तो इस से हज़रत मसीह का तात्पर्य यह था कि यूनुस नबी मछली के पेट में नहीं मरा अपितु जीवित रहा और जीवित निकल आया, इसी प्रकार मैं भी सलीब पर नहीं मरूँगा और न क़ब्र में मुर्दा होकर प्रवेश करूँगा।

हम और हमारे आलोचक

कुछ सज्जनों ने आलोचना के तौर पर इस ख़ाकसार के दोष निकाले हैं और यद्यपि मनुष्य दोष से ख़ाली नहीं तथा हज़रत मसीह का यह कहना सत्य है कि मैं **नेक नहीं हूँ, नेक एक ही है अर्थात् ख़ुदा।** परन्तु चूँकि ऐसी आलोचनाएं धार्मिक कार्यों पर दुष्प्रभाव डालती हैं और सत्याभिलाषियों को लौटने से रोकती हैं इसलिए कुछ आलोचनाओं का संक्षिप्त रूप में उत्तर दिया जाता है।

प्रथम आलोचना -

इस ख़ाकसार के बारे में यह की गई है कि अपनी पुस्तकों में विरोधियों के बारे में कठोर शब्द प्रयोग किए गए हैं, जिन से उत्तेजित होकर विरोधियों ने अल्लाह तआला और उसके रसूले करीम का अनादर किया और अपयशपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित कर दीं। पवित्र क़ुर्आन में स्पष्ट आदेश है कि विरोधियों के उपास्यों को गाली-गलौज से याद न करो ताकि वे भी अज्ञानता और द्वेष से ख़ुदा तआला के बारे में गाली-गलौज और अपशब्दों द्वारा मुख न खोलें, परन्तु यहाँ रसूलों के आचरण के विपरीत अपशब्दों से काम लिया गया।

शेष हाशिया को मूर्ख कहे नर्काग्नि का पात्र होगा। इस आरोप का उत्तर उन अभियोगों के उत्तर में दिया जाएगा जो सभ्यता के बारे में कुछ कुशाग्र बुद्धि लोगों में इस खाकसार के बारे में किए हैं। इसी से।

उत्तर - अत: स्पष्ट हो कि इस आलोचना में आरोपक ने वे शब्द वर्णन नहीं किए जो इस ख़ाकसार ने उनके विचार में अपनी पुस्तकों में प्रयोग किए हैं और वास्तव में अपशब्दों में गिने जाते हैं। मैं सच-सच कहता हूँ कि जहाँ तक मुझे ज्ञात है मैंने एक शब्द भी ऐसा प्रयोग नहीं किया जिसे गालियाँ देना कहा जाए। बड़े धोखे की बात यह है कि अधिकांश लोग गालियाँ देने और वस्तु स्थिति के वर्णन को एक ही रूप में समझ लेते हैं तथा इन दोनों अलग-अलग आशयों में अन्तर करना नहीं जानते, अपितु ऐसी प्रत्येक बात को जो वास्तव में एक सत्य बात की अभिव्यक्ति हो और यथा स्थान चरितार्थ हो केवल उसकी कुछ कड़वाहट के कारण जो सत्यवादिता के लिए अनिवार्य हुआ करती है गालियाँ समझ लेते हैं, हालाँकि गालियाँ और अपशब्द मात्र उस आशय का नाम है जो घटना के विपरीत और झूठ के तौर पर मात्र कष्ट देने के लिए प्रयोग किया जाए और यदि प्रत्येक कठोर और कष्टदायक भाषण को मात्र उसकी कटुता, कड़वाहट और कष्टदायक होने के कारण गालियों के आशय में सम्मिलित कर सकते हैं तो फिर इक़रार करना पड़ेगा कि सम्पूर्ण पवित्र क़ुर्आन गालियों से भरा है क्योंकि मूर्तियों का जो कुछ अनादर और मूर्तिपूजकों का तिरस्कार और उनके बारे में धिक्कार और भर्त्सनापूर्ण कठोर शब्द पवित्र क़ुर्आन में प्रयोग किए गए हैं, ये कदापि ऐसे नहीं हैं जिन के सुनने से मूर्तिपूजकों के हृदय प्रसन्न हुए हों अपितु नि:सन्देह उन शब्दों ने उनकी क्रोध-स्थिति को बहुत उत्तेजित किया होगा। क्या ख़ुदा तआला का मक्का के काफ़िरों को सम्बोधित करके यह कहना

إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ*

आपत्तिकर्ता के मनघडंत नियमानुसार गाली में शामिल नहीं है क्या ख़ुदा तआला का पवित्र क़ुर्आन में काफ़िरों को 'शर्रुलबरिय्यह' ठहराना और समस्त नीच और अपवित्र सृष्टियों (मख़लूक़) से अधिक निकृष्ट व्यक्त करना ये आपत्तिकर्ता के विचार की दृष्टि से गालियों में सम्मिलित नहीं होगा? क्या ख़ुदा तआला ने पवित्र

* अल अंबिया, आयत न. 99 रुकू-7

क़ुर्आन में

وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ*

नहीं फ़रमाया, क्या मोमिनों के लक्षणों में

اَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ**

नहीं रखा गया। क्या हज़रत मसीह का यहूदियों के धार्मिक पंडितों और परम्परावादियों को सुअर और कुत्ते के नाम से पुकारना और गलील के महान शासक हीरोदिस का नाम लोमड़ी रखना तथा आदरणीय यहूदी जादूगरों और धार्मिक पंडितों का उदाहरण वैश्या से देना और यहूदियों के बुज़ुर्ग पेशवाओं को जो क़ैसर की सरकार में उच्च श्रेणी के प्रतिष्ठित और क़ैसर के दरबारियों में कुर्सी धारक थे, इन धृणास्पद, नितान्त कष्टदायक और अशिष्ट शब्दों से याद करना कि तुम हरामज़ादे हो, हरामकार (दुराचारी) हो उद्दण्ड हो, कमीने हो, बेईमान हो, मूर्ख हो, पाखंडी हो, शैतान हो, नारकी हो, तुम सांप हो, सांपों के बच्चे हो। क्या ये शब्द आपत्तिकर्ता के विचारानुसार अश्लील और गन्दी गालियां नहीं हैं। इस से स्पष्ट है कि आपत्तिकर्ता की आपत्ति न केवल मुझ पर और मेरी पुस्तकों पर अपितु वास्तव में आपत्तिकर्ता ने ख़ुदा तआला की समस्त किताबों पर और समस्त रसूलों पर नितान्त जले-सड़े हृदय के साथ प्रहार किया है और यह प्रहार इंजील पर सर्वाधिक है, क्योंकि हज़रत मसीह की कठोर भाषा समस्त नबियों से बढ़ी हुई है तथा इंजील से सिद्ध है कि वर्णन की उस कठोरता के कारण कई बार यहूदियों ने हज़रत मसीह को मारने के लिए पत्थर उठाए और सरदार जादूगर का अपमान करने से हज़रत मसीह ने अपने मुँह पर थप्पड़ भी खाए और जैसा कि हज़रत मसीह ने फ़रमाया था कि मैं सुलह कराने नहीं आया अपितु तलवार चलाने आया हूँ। अत: उन्होंने मुख की तलवार ऐसी चलाई कि किसी नबी के कलाम (वाणी) में ऐसे कठोर और

---

* अत्तौबा आयत नं 73, रुकू-10

** अलफ़तह आयत नं. 30, रुकू-4

कष्टदायक शब्द नहीं जैसे इंजील में हैं। उस जीभ की तलवार चलने से अन्तत: मसीह को क्या कुछ कष्ट उठाने पड़े। इसी प्रकार हज़रत यह्या ने भी यहूदियों के धार्मिक पंडितों और बुज़ुर्गों को 'सांपों के बच्चे' कह कर उनकी उद्दण्डताओं और मक्कारियों से अपना सर कटवाया, परन्तु प्रश्न तो यह है कि क्या ये पुनीत लोग अधम स्तर के असभ्य थे, क्या वर्तमान युग की आधुनिक सभ्यता की उन तक गन्ध भी नहीं पहुँची थी? इस प्रश्न का उत्तर हमारे स्वामी और पेशवा 'जिन पर मेरे माता-पिता बलिहारी जाएँ' हज़रत ख़ातमुन्नबिय्यीन पहले से दे चुके हैं और वह यह है कि जब ये आयतें उतरीं कि मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) अपवित्र हैं, गन्दे हैं, सृष्टि में सर्वाधिक निकृष्ट हैं, मूर्ख हैं और शैतान की सन्तान हैं, उनके उपास्य अग्नि और नर्क का ईंधन हैं तो अबू तालिब ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बुलाकर कहा कि हे मेरे भतीजे! अब तेरे अपशब्दों से जाति अत्यन्त उत्तेजित हो गई है और निकट है कि तेरा वध करें और साथ ही मुझे भी। तूने उनके मनीषियों को मूर्ख ठहराया और उन के बुज़ुर्गों को सृष्टि में सबसे अधम कहा और उन आदरणीय उपास्यों का नाम नर्क और अग्नि का ईंधन रखा और सामान्यतया उन सब को अपवित्र, शैतान की सन्तान और गन्दा ठहराया। मैं तेरे हित की दृष्टि से कहता हूँ कि अपनी जीभ को रोक और अपशब्दों से पृथक हो जा अन्यथा मैं जाति के लोगों का मुकाबला करने की शक्ति नहीं रखता। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उत्तर में कहा कि हे चाचा! यह अपशब्द नहीं हैं अपितु सत्य की अभिव्यक्ति है और वस्तुस्थिति का यथा स्थान वर्णन है और यही तो कार्य है जिसके लिए मुझे भेजा गया है। यदि इस से मुझे मृत्यु का सामना करना है तो मैं अपने लिए प्रसन्नतापूर्वक इस मृत्यु को स्वीकार करता हूँ। मेरा जीवन इसी मार्ग में समर्पित है मैं मृत्यु के भय से सत्य को अभिव्यक्त करने से रुक नहीं सकता और हे चाचा! यदि तुझे अपनी कमज़ोरी और अपने कष्ट का विचार है तो तू मुझे शरण में रखने से पृथक हो जा। ख़ुदा की सौगन्ध मुझे तेरी कुछ भी आवश्यकता नहीं, मैं ख़ुदाई आदेश पहुँचाने से कभी नहीं रुकूँगा, मुझे अपने स्वामी (ख़ुदा) के आदेश प्राण से

अधिक प्रिय हैं। ख़ुदा की सौगन्ध यदि मैं इस कार्य में मारा जाऊँ तो चाहता हूँ कि फिर बार-बार जीवित होकर सदैव इसी मार्ग में मरता रहूँ। यह भय का स्थान नहीं अपितु मुझे इसमें असीम आनन्द है कि उसके मार्ग में कष्ट उठाऊँ। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह भाषण दे रहे थे चेहरे पर सच्चाई और प्रकाश से भरपूर आर्द्रता प्रकट हो रही थी और जब आप(स) यह भाषण समाप्त कर चुके तो सत्य का प्रकाश देखकर अबू तालिब के स्वयं आंसू जारी हो गए और कहा कि मैं तेरे इस उच्च स्थान से अज्ञान था तू और ही रूप में तथा और ही शान में है, जा अपने काम में लगा रह, जब तक मैं जीवित हूँ जहाँ तक मेरी शक्ति है मैं तेरा साथ दूँगा। अब कहने का तात्पर्य* यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

---

* **हाशिया :-** यह सम्पूर्ण लेख अबू तालिब के वृत्तान्त का यद्यपि पुस्तकों में लिखित है परन्तु यह कुल इबारत इल्हामी है जो ख़ुदा तआला ने इस ख़ाकसार के हृदय पर उतारी। केवल कोई-कोई वाक्य व्याख्या के लिए इस ख़ाकसार की ओर से है। इस इल्हामी (ईशवाणी) इबारत से अबू तालिब की सहानुभूति और हमदर्दी प्रकट है परन्तु पूर्ण विश्वास के साथ यह बात सिद्ध है कि यह हमदर्दी पीछे से नुबुव्वत के प्रकाश और दृढ़ता के लक्षण देख कर उत्पन्न हुई थी। हमारे सरदार एवं पेशवा स.अ.व. ने एक अपनी आयु का एक बड़ा भाग जो चालीस वर्ष है, विवशता, विकलता और अनाथ होने की स्थिति में व्यतीत किया था। किसी स्वजन या परिजन ने उस एकान्त रहने के समय में कोई स्वजन या परिजन होने का कर्त्तव्य अदा नहीं किया था यहाँ तक कि वह आध्यात्मिक बादशाह अपनी अल्पायु की अवस्था में अनाथ बच्चों की भाँति कुछ जंगल-निवासी और खानाबदोश स्त्रियों के सुपुर्द किया गया और विवशता और दरिद्रता की स्थिति में उस समस्त सृष्टि के सरदार ने दूध पीने के दिन पूरे किए और जब कुछ समझदारी की आयु को पहुँचा तो अनाथ और असहाय बच्चों की भाँति जिनका संसार में कोई भी नहीं होता उन ख़ानाबदोशों ने उस सेवकों के सेव्य को बकरियाँ चराने की सेवा सुपुर्द की तथा उन तंगी के दिनों में तुच्छ प्रकार के अनाज अथवा बकरियों के दूध के अतिरिक्त अन्य कोई आहार न

अबूतालिब के आरोप का स्वयं अपनी मुबारक जीभ से जो कुछ उत्तर दिया वही उत्तर वास्तव में प्रत्येक आपत्तिकर्ता को निरुत्तर करने के लिए पर्याप्त और बहुत है,

---

शेष हाशिया था। जब युवावस्था की आयु को पहुँचा तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विवाह के लिए किसी चाचा इत्यादि ने आँहज़रत के नितान्त सुन्दर होने के बावजूद कुछ ध्यान न दिया अपितु पच्चीस वर्ष की आयु होने पर संयोगवश मात्र ख़ुदा की कृपा से मक्का की एक मालदार स्त्री ने आँहज़रत (स.अ.व.) को अपने लिए पसन्द करके आप से विवाह कर लिया। यह नितान्त आश्चर्य का स्थान है कि जिस स्थिति में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सगे चाचा अबू तालिब और हम्ज़ा तथा अब्बास जैसे मौजूद थे और विशेषकर अबू तालिब जो मक्का के सरदार तथा अपनी जाति के सरदार भी थे तथा सांसारिक वैभव, प्रतिष्ठा, धन-दौलत और शक्ति बहुत कुछ रखते थे, परन्तु इन लोगों की ऐसी समृद्ध स्थिति के बावजूद आँहज़रत सल्लल्लाहु अलहि व सल्लम के वे दिन बड़े संकट, भूखे पेट और लाचारी में गुज़रे, यहाँ तक कि बद्दुओं की बकरियाँ चराने तक नौबत पहुँची। इस कष्टदायक स्थिति को देखकर किसी की आँख से आँसू नहीं गिरे और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जवानी तक किसी चाचा को ध्यान तक नहीं आया कि हम भी तो पिता के ही समान हैं। विवाह इत्यादि आवश्यक बातों के लिए कुछ सोच-विचार करें। हालांकि उनके घर में और उनके अन्य परिजनों में ही लड़कियां थीं। अत: स्वाभाविक तौर पर यहां यह प्रश्न उठता है कि इतनी उदासीनता उन लोगों से क्यों प्रकट हुईं। इसका वास्तविक उत्तर यही है कि इन लोगों ने हमारे स्वामी और सरदार स.अ.व. को देखा कि एक लड़का अनाथ है, जिसका न पिता है न माता है, असहाय है, जिसके पास किसी प्रकार का समूह नहीं, बेघर है, खाली हाथ है, ऐसे संकटग्रस्त की हमदर्दी से लाभ ही क्या है फिर उसे अपना दामाद बनाना तो जैसे अपनी लड़की को विनाश में ढकेलना है, परन्तु इस बात का ज्ञान नहीं था कि वह एक राजकुमार और आध्यात्मिक बादशाहों का सरदार है जिसे संसार के समस्त ख़ज़ानों की कुंजियां दी जाएंगी। इसी से

क्योंकि गाली-गलौज और वस्तु है तथा वास्तविकता का वर्णन यद्यपि वह कैसा ही कड़वा और कठोर हो दूसरी वस्तु है। प्रत्येक अन्वेषक और सत्यवादी का यह कर्तव्य होता है कि सत्य बात को पूर्णतया भूले भटके विरोधी के कानों तक पहुँचा दे। फिर यदि वह सत्य को सुनकर क्रोधित हो तो हुआ करे। हमारे विद्वान जो यहाँ ला तसुब्बू (لَا تَسُبُّوْا) की आयत प्रस्तुत करते हैं (अर्थात् गाली मत दो) मैं आश्चर्य करता हूँ कि इस आयत को हमारे आशय और उद्देश्य से क्या संबंध है। इस आयत में तो केवल गाली-गलौज से मना किया गया है, न यह कि सत्य की अभिव्यक्ति से रोका गया हो। यदि अज्ञान विरोधी सत्य की कटुता और कड़वाहट को देखकर उसे गाली-गलौज का रूप समझ ले और फिर उत्तेजित होकर गालियाँ देना आरंभ कर दे तो क्या इस से नेक बातों का आदेश देने का द्वार बन्द कर देना चाहिए, क्या इस प्रकार की गालियां काफ़िरों ने पहले कभी नहीं दीं। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सत्य के समर्थन के लिए केवल कठोर शब्दों का ही प्रयोग नहीं किया अपितु मूर्ति पूजकों की उन मूर्तियों को जो उनकी दृष्टि में ख़ुदाई का पद रखती थीं अपने हाथ से तोड़ा भी है। इस्लाम ने चापलूसी को कब उचित समझा है और ऐसा आदेश पवित्र क़ुर्आन के लिए स्थान में मौजूद है, अपितु अल्लाह तआला चाटुकारिता के निषेध में स्पष्ट फ़रमाता है कि - जो लोग अपने मां-बापों के साथ भी उनकी क़ुफ्र की अवस्था में चाटुकारिता का व्यवहार करें, वे भी उन जैसे ही बे ईमान हैं तथा मक्का के काफ़िरों की ओर से वर्णन करता है कि -

وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ (अलक़लम आयत 10)

अर्थात् मक्का के काफ़िर इस बात को प्रिय समझते हैं कि यदि तू सत्य पर पर्दा डालने के लिए नर्मी धारण करे तो वे भी तो धर्म में हां में हां मिला दिया करें परन्तु इस प्रकार हां में हां मिलाना ख़ुदा तआला को स्वीकार नहीं। अत: क़ुर्आन की आयत जिसे आपत्तिकर्ता ने प्रस्तुत किया है यदि वह किसी बात को सिद्ध करती है तो केवल यह बात कि आपत्तिकर्ता को ख़ुदा का कलाम समझने की तनिक बुद्धि नहीं। नहीं विचार करता कि यदि यह आयत प्रत्येक प्रकार की कठोर भाषा से संबंधित

समझी जाए तो उचित बातों का आदेश और बेहूदा बातों से रोकने का द्वार बन्द हो जाना चाहिए एवं ऐसी परिस्थिति में ख़ुदा तआला का कलाम दो विपरीत बातों को एकत्र करने वाला स्वीकार करना होगा अर्थात् यह मानना पड़ेगा कि प्रथम तो उसने प्रत्येक प्रकार की कठोर भाषा से मना किया और प्रत्येक स्थान में काफ़िरों को प्रसन्न रखने के लिए आग्रह किया और फिर स्वयं ही अपने कथन के विपरीत कार्यवाही आरंभ कर दी तथा इन्कार करने वालों को हर प्रकार की गालियाँ सुनाईं अपितु गालियां देने के लिए आग्रह किया। अत: जानना चाहिए कि जिन मौलवियों ने ऐसा विचार किया है कि जैसे सामान्यतया प्रत्येक कठोर भाषा से ख़ुदा तआला मना करता है, यह उन की अपनी समझ का दोष है अन्यथा वे कटु शब्द जो सत्य को व्यक्त करने के लिए आवश्यक हैं और अपने साथ अपना प्रमाण रखते हैं उन्हें प्रत्येक विरोधी को स्पष्ट तौर पर सुना देना न केवल वैध अपितु समय की आवश्यकताओं में से है ताकि चाटुकारिता की विपत्ति में ग्रसित न हो जाएं। ख़ुदा तआला के भेजे हुए महान लोग ऐसे कठोर प्रचार के समय किसी धिक्कारने वाले की धिक्कार और किसी भर्त्सना करने वाले की भर्त्सना से कदापि भयभीत नहीं हुए। क्या ज्ञात नहीं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में मुश्रिकों का द्वेष जितना बढ़ गया था उसका मुख्य कारण वे कठोर शब्द ही थे जो उन मूर्खों ने गालियों के रूप में समझ लिए थे, जिसके कारण अन्तत: नौबत जीभ से तीर तक पहुँची अन्यथा प्राथमिक अवस्था में तो वे लोग ऐसे न थे अपितु पूर्ण श्रद्धा से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में कहा करते थे कि

عَشِقَ مُحَمَّد عَلٰى رَبّه

अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने रब्ब पर मोहित हो गए हैं जिस प्रकार आजकल के हिन्दू लोग भी किसी एकान्तवासी भिक्षु को कदापि बुरा नहीं कहते अपितु उपहार और भेटें देते हैं।

यहाँ मुझे नितान्त खेद और दुखी हृदय के साथ इस बात को भी प्रकट करने की आवश्यकता हुई है कि जो ऐतराज़ मुझ पर किया गया है यह केवल जनसाधारण

की ओर से ही नहीं अपितु मैंने सुना है कि इस ऐतराज़ के मूल स्रोत कुछ विद्वान भी हैं। अत: मैं उनकी शान के बारे में यह तो नहीं सोच सकता कि वे पवित्र क़ुर्आन और पूर्वकालीन किताबों से अनभिज्ञ हैं और न किसी प्रकार से बदगुमानी का स्थान है* परन्तु मैं जानता हूँ कि यूरोप की आधुनिक झूठी सभ्यता ने जो ईमानी स्वाभिमान

---

* **हाशिया** :- पवित्र क़ुर्आन जिस उच्च स्वर में कठोर शब्दों का प्रयोग कर रहा है उससे एक महामूर्ख और नितान्त श्रेणी का अज्ञान भी अपरिचित नहीं रह सकता। उदाहरणतया आधुनिक युग के सभ्य लोगों के निकट किसी पर लानत (फटकार) डालना एक कठोर गाली है परन्तु पवित्र क़ुर्आन काफ़िरों को सुना-सुना कर उन पर लानत भेजता है, जैसा कि फ़रमाता है -

اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلَآئِكَةِ وَالنَّاسِ
أَجْمَعِينَ۔ خَالِدِينَ فِيهَا۔

(अलबक़रह आयत नं. 162, 163)

اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ

(अलबक़रह आयत नं. 160) इसी प्रकार स्पष्ट है कि किसी मनुष्य को जानवर कहना भी एक प्रकार की गाली है, परन्तु पवित्र क़ुर्आन न केवल जानवर अपितु काफिरों और इन्कार करने वालों को संसार के समस्त जानवरों से निकृष्ट ठहराता है। जैसा कि फ़रमाता है :-

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا (अन्फ़ाल आयत नं. 56)

इसी प्रकार स्पष्ट है कि किसी विशेष व्यक्ति का नाम लेकर या संकेत के तौर पर उसे लक्ष्य बना कर गाली देना आधुनिक सभ्यता के विरुद्ध है, परन्तु ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में कुछ का नाम अबू लहब और कुछ का नाम कुत्ता और सुअर कहा तथा अबूजहल तो स्वयं प्रसिद्ध है। इसी प्रकार वलीद, मुग़ीरह के बारे में नितान्त कठोर शब्द जो प्रत्यक्षतया गन्दी गालियाँ प्रतीत होते हैं प्रयोग किए हैं।

से बहुत दूर है हमारे विद्वानों के हृदयों को भी एक सीमा तक प्रभावित कर लिया है। इस भयंकर आंधी के कारण उनकी आँखों पर भी कुछ पर्दा सा पड़ गया है और

शेष हाशिया

जैसा कि फ़रमाता है -

فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِينَ- وَدُّوا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُونَ- وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِينٍ-هَمَّازٍ مَّشَّاءٍ بِنَمِيمٍ- مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ- عُتُلٍّ بَعْدَ ذَٰلِكَ زَنِيمٍ-
سَنَسِمُهُ عَلَى الْخُرْطُومِ-

(अलक़लम, आयत नं. 9-14, 17) अर्थात् तू उन झुठलाने वालों के कहने पर न चल जो हार्दिक तौर पर इस बात के अभिलाषी हैं कि हमारे उपास्यों को बुरा मत कहो और हमारे धर्म की निन्दा न करो तो फिर हम भी तुम्हारे धर्म के बारे में हां में हां मिलाते रहेंगे। उनकी वाचालता पर ध्यान मत दो। यह व्यक्ति जो चाटुकारिता का इच्छुक है, झूठी क़समें खाने वाला, कमज़ोर विचार वाला, निर्ल्लज व्यक्ति है, दूसरों के दोष ढूँढने वाला, अपनी वाचालता से लोगों में फूट डालने वाला और नेकी के मार्गों से रोकने वाला, दुराचारी, इसके साथ ही अशिष्ट। इन समस्त दोषों के अतिरिक्त व्यभिचार की सन्तान भी है हम शीघ्र ही उसकी नाक पर जो सुअर की तरह बहुत लम्बी हो गई है दाग़ लगा देंगे। लम्बी नाक से अभिप्राय परम्पराओं और मान-मर्यादा की पाबन्दी है जो सत्य को स्वीकार करने से रोकती है (हे सर्व शक्तिमान ख़ुदा हमारी क़ौम के कुछ लम्बी नाक वालों की नाक पर भी उस्तरा रख) अब क्यों हज़रत मौलवी साहिब क्या आप के निकट इन कठोर शब्दों से कोई गाली बाहर रह गई है। यहाँ एक नितान्त उत्तम रहस्य यह है कि वलीद मुग़ीरह ने नर्मी धारण करके चाहा कि हम से नर्मी का व्यवहार किया जाए। इसके उत्तर में उसके समस्त पर्दे खोले गए। यह इस बात की ओर संकेत है कि मोमिनों से चाटुकारिता की आशा मत रखो। इसी से

उनकी स्वाभाविक कमज़ोरी इस को स्वीकार कर गई है। इसी कारण वे ऐसे विचारों पर बल देते हैं जिनका कोई तथ्य सही हदीस और क़ुर्आन में नहीं पाया जाता, हां यूरोप की नैतिकता संबंधी पुस्तकों में अवश्य पाया जाता है और उन सदाचारों में यूरोप ने यहाँ तक उन्नति की है कि एक जवान स्त्री द्वारा एक ऐसे व्यक्ति की इच्छा पूर्ति न करना जिस से विवाह वैध है उचित नहीं समझी गई, परन्तु क्या पवित्र क़ुर्आन यूरोप के इन शिष्टाचारों से सहमत है, क्या वह ऐसे लोगों का नाम नहीं रखता। मैं ऐसे विद्वानों को मात्र परमेश्वर के लिए सतर्क करता हूँ कि वे ऐसी आलोचनाएं करने और ऐसे विचारों को हृदय में स्थान देने से सत्य और सत्य देखने से बहुत दूर जा पड़े हैं। यदि वे मुझ से लड़ने को तैयार हों तो अपनी नीरस तर्कशास्त्र से जो चाहें कहें, परन्तु यदि ख़ुदा तआला से डर कर कुछ विचार करें तो यह ऐसी बात नहीं है जो उनकी दृष्टि से छुपी रह सके। सौभाग्यशाली मनुष्य का कर्त्तव्य है कि सत्य के मार्गों को हाथ से न जाने दे अपितु एक तुच्छ से तुच्छ व्यक्ति के मुख पर सत्य का वाक्य जारी हुआ और स्वयं से गलती हो जाए तो अपनी ग़लती का इक़रार करके कृतज्ञता के साथ उस तुच्छ व्यक्ति की बात को स्वीकार कर ले और

اَنَا خَيْرٌ مِنْهُ

(मैं उस से उत्तम हूँ) का दावा न करे अन्यथा अहंकार की अवस्था में कभी सद्मार्ग प्राप्त नहीं होगा अपितु ऐसे व्यक्ति का ईमान भी खतरे में ही दिखाई देता है।

और कठोर शब्दों के प्रयोग करने में एक यह भी नीति है कि सोए हुए हृदय इस से जागृत होते हैं तथा ऐसे लोगों के लिए जो चाटुकारिता को पसन्द करते हैं एक प्रेरणा हो जाती है। उदाहरणतया हिन्दू जाति एक ऐसी जाति है कि उनमें से अधिकांश लोग ऐसा स्वभाव रखते हैं कि यदि उन्हें अपनी ओर से छेड़ा न जाए तो वे चाटुकारिता के तौर पर जीवन पर्यन्त मित्र बनकर धार्मिक मामलों में हां में हां मिलाते रहते हैं अपितु कभी-कभी तो वे हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रशंसा और गुणगान तथा इस धर्म के बुज़ुर्गों की प्रशंसा और स्तुति करने लगते हैं, परन्तु उनके हृदय नितान्त काले और सत्य से दूर होते हैं, उनके सामने सत्य को

उसकी पूर्ण सख़्ती और कड़वाहट के साथ प्रकट करना इस प्रकार के शुभ परिणाम पर समाप्त होता है कि उसी समय उनकी चाटुकारिता समाप्त हो जाती है और स्वर के साथ अर्थात् स्पष्टता और घोषणा के रूप में अपने कुफ्र और द्वेष को वर्णन करना आरंभ कर देते हैं जैसे उनका रोग ज्वर की ओर स्थान्तरित हो जाता है अत: यह प्रेरणा जो तबियतों में अत्यन्त जोश पैदा कर देती है यद्यपि एक अज्ञान की दृष्टि में अत्यन्त आरोप-योग्य है परन्तु एक मनीषी व्यक्ति भली भांति समझ सकता है कि यही प्रेरणा सत्य का सामना करने के लिए प्रथम सीढ़ी है, जब तक एक रोग के तत्व गुप्त हैं तब तक उस रोग का कुछ उपचार नहीं हो सकता, परन्तु तत्व के प्रकट होने के समय प्रत्येक प्रकार का उपाय हो सकता है। नबियों ने जो कठोर शब्द प्रयोग किए वास्तव में उन का आशय प्रेरणा ही था ताकि प्रजा में एक उत्तेजना उत्पन्न हो जाए और आसावधानी से इस ठोकर के साथ जागरूक हो जाएं तथा धर्म के बारे में सोच-विचार करने लगें और इस मार्ग में गतिशील हों, यद्यपि वह विरोधात्मक गति ही सही और अपने हृदयों का सदात्मा लोगों के हृदयों के साथ एक संबंध पैदा कर लें यद्यपि वह संबंध शत्रुता का ही क्यों न हो। इसी की ओर अल्लाह तआला संकेत फ़रमाता है :-

فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا (सूरह अलबक़रह आयत नं. 11)

निश्चय ही समझना चाहिए कि इस्लाम धर्म को सच्चे हृदय से एक दिन वही लोग स्वीकार करेंगे जो अत्यन्त शक्तिशाली जागृत करने वाली प्रेरणाओं के कारण धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में लग गए हैं और जोश के साथ इस मार्ग की ओर पग उठा रहे हैं, यद्यपि वह पग विरोधात्मक ही सही। हिन्दुओं का वह पहला ढंग हमें बहुत निराश करने वाला था जो अपने हृदयों में वे लोग इस ढंग को अधिक रुचिकर समझते थे कि मुसलमानों से कोई धार्मिक बातचीत नहीं करना चाहिए तथा हां में हां मिलाकर काम चला लेना चाहिए, परन्तु अब वे मुकाबले पर आकर और मैदान में खड़े होकर हमारे तेज़ हथियारों के नीचे आ गए हैं और उस निकटतम शिकार की भांति हो गए हैं जिसकी एक ही चोट से काम पूर्ण हो सकता है उनकी

हिरण चौकड़ियों से डरना नहीं चाहिए, शत्रु नहीं हैं वे तो हमारे शिकार हैं। शीघ्र वह युग आने वाला है कि तुम दृष्टि उठाकर देखोगे कि कोई हिन्दू दिखाई दे परन्तु इन शिक्षित वर्ग में से तुम्हें एक हिन्दू भी दिखाई नहीं देगा। अत: तुम उनके जोशों से घबराकर निराश न हो, क्योंकि वे अन्दर ही अन्दर इस्लाम स्वीकार करने के लिए तैयारी कर रहे हैं और इस्लाम की ड्योढ़ी के निकट आ पहुँचे हैं। मैं तुम्हें सच-सच कहता हूँ कि जो लोग विरोधात्मक उत्तेजना से आज तुम्हें भरे हुए दिखाई देते हैं थोड़े ही समय पश्चात् तुम उन्हें नहीं देखोगे। वर्तमान में आर्यों ने जो हम लोगों की प्रेरणा से शास्त्रार्थ करने की ओर अग्रसर हुए हैं तो यद्यपि इसमें उनका कितना भी कठोर व्यवहार हैं और यद्यपि वे गालियों और गन्दी बातों से भरपूर पुस्तकें प्रकाशित कर रहे हैं, परन्तु वे अपनी उत्तेजना द्वारा वास्तव में इस्लाम के लिए अपनी जाति की ओर जाने का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं तथा हमारी प्रेरणाओं का वास्तव में कोई दुष्परिणाम नहीं। हां ये प्रेरणाएं अदूरदर्शियों की दृष्टि में कुरूप हैं परन्तु किसी दिन देखना कि ये प्रेरणाएं किस प्रकार बड़े-बड़े पत्थर दिल लोगों को इस ओर खींच लाती हैं। यह विचार कोई कल्पनात्मक और सन्देहास्पद नहीं अपितु एक निश्चित और वास्तविक बात है, परन्तु खेद उन लोगों पर जो अच्छाई और बुराई में अन्तर नहीं कर सकते और जल्दबाज़ी के कारण ऐतराज़ करने के लिए खड़े हो जाते हैं। ख़ुदा तआला ने हमें चाटुकारिता से तो स्पष्ट तौर पर मना किया है परन्तु सत्य के अभिव्यक्ति से उस सत्य की कटुता और कठोरता के होते हुए कहीं आदेश नहीं दिया। अत: हे जल्दबाज़ विद्वानो! क्या तुम क़ुर्आन का अध्ययन नहीं करते? तुम्हें क्या हुआ है तुम कैसा निर्णय करते हो।

मेरे एक निष्कपट मित्र मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी जो आधुनिक और प्रशिक्षण के रंग में रंगीन और कुशाग्र बुद्धि रखने वाले व्यक्ति हैं जिनके हृदय पर मेरे सच्चे प्रेमी बिरादरम मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब की अभिभावक और शिक्षक रूपी संगत का अति उत्तम अपितु असाधारण चमत्कारिक प्रभाव पड़ा है वे भी जो अब क़ादियान में मुझ से भेंट करने के उद्देश्य से आए वादा कर गए हैं कि

मैं भी वास्तविक सभ्यता के बारे में एक पत्रिका लिखकर प्रकाशित करूँगा, क्योंकि मौलवी साहिब महोदय इस बात को भली-भांति समझते हैं कि वास्तव में सच्ची सभ्यता का मार्ग वही मार्ग है जिस का नबियों ने अनुसरण किया है जिसमें कठोर शब्दों का कड़वी औषधि की तरह कभी-कभी प्रयोग करना अवैध की भांति नहीं समझा गया अपितु ऐसे कठोर शब्दों का यथास्थान आवश्यकता और हित की दृष्टि से प्रयोग में लाना प्रत्येक प्रचारक और उपदेशक का कर्त्तव्य है जिसको अदा करने में किसी उपदेशक का आलस्य और सुस्ती करना इस बात का संकेत है कि ख़ुदा के अतिरिक्त किसी अन्य का भय जो शिर्क (ख़ुदा का भागीदार बनाना) में सम्मिलित है उस के हृदय पर विजयी तथा उसकी ईमानी अवस्था ऐसी कमज़ोर है जैसे एक कीड़े का प्राण कमज़ोर और निर्बल होता है। अत: मैं उस मित्र के लिए दुआ करता हूँ कि ख़ुदा तआला उस पुस्तक के लेखन के इरादे में पवित्र आत्मा (रुहुलक़ुदुस) द्वारा उसकी सहायता करे। मेरे निकट उत्तम है कि वह अपनी उस पत्रिका का नाम '**तहज़ीब**' (सभ्यता) ही रखें। मुझे ज्ञात हुआ है कि मेरे उस मित्र को यह जोश एक मौलवी साहिब के आरोप से उत्पन्न हुआ है, जो क़ादियान की ओर आते समय संयोग से लाहौर में मिल गए थे, जिन्होंने इस विनीत के बारे में इस सन्दर्भ में ऐतराज़ किया था। हे सर्वशक्तिमान ख़ुदा! यद्यपि अनादिकाल से तेरा यही स्वभाव और यही नियम है कि तू बच्चों और अनपढ़ों को बुद्धि प्रदान करता है और इस संसार के नीतिवानों और दार्शनिकों की आंखों तथा हृदयों पर अंधकार के घने पर्दे डाल देता है परन्तु मैं तेरे समक्ष विनय और गिड़गिड़ाकर दुआ करता हूँ कि इन लोगों में से भी एक जमाअत हमारी ओर खींच ला जैसे तू ने कुछ को खींचा भी है और उन्हें भी आंखे प्रदान कर, कान प्रदान कर, हृदय प्रदान कर ताकि वे देखें, सुनें और समझें और तेरी उस नै'मत का जो तूने अपने समय पर उतारी है के महत्व को समझते हुए उसकी प्राप्ति के लिए ध्यान देने लगें यदि तू चाहे तो ऐसा कर सकता है क्योंकि तेरे आगे कोई बात अनहोनी नहीं। आमीन पुन: आमीन !

दूसरी आलोचना -

यह है कि मालीखोलिया (एक रोग) या दीवानगी के कारण मसीह मौऊद होने का दावा कर दिया है।

इसका उत्तर यह है कि यों तो मैं किसी के दीवाना कहने या दीवाना नाम रखने में नाराज़ नहीं हो सकता अपितु प्रसन्न हूँ क्योंकि हमेशा से अज्ञानी लोग प्रत्येक नबी और रसूल का भी उनके युग में यही नाम रखते आए हैं और हमेशा से ख़ुदा के सुधारकों को क़ौम की ओर से यही उपाधि मिलती रही है एवं मुझे इस कारण से भी प्रसन्नता प्राप्त हुई है कि आज वह भविष्यवाणी पूरी हुई जो '**बराहीन**' में प्रकाशित हो चुकी है कि तुझे दीवाना भी कहेंगे, परन्तु आश्चर्य तो इस बात में है कि इस दावे में दीवानी का कौन सा लक्षण पाया जाता है, कौन सी बात बुद्धि के विरुद्ध है जिसके कारण आरोप को दीवानगी का सन्देह हो गया। इस बात का निर्णय हम दोषारोपण कर्ताओं के विवेक पर ही छोड़ते हैं तथा उनके समक्ष अपने बयान और अपने विरोधियों के वृत्तान्त रख देते हैं कि हम दोनों पक्षों में से दीवाना कौन है और सद्बुद्धि किस की भाषण शैली को दीवानों की बातों के समरूप समझती है तथा किस के बयानों को स्पष्ट कथन क़रार देती है।

मसीह मौऊद के बारे में जिस के आकाश से उतरने और दोबारा संसार में आगमन की प्रतीक्षा की जाती है जैसा कि ख़ुदा तआला ने अपनी कृपा और दया दृष्टि से मुझ पर प्रकट कर दिया है मेरा बयान यह है कि मसीह के दोबारा संसार में आगमन की पवित्र क़ुर्आन में तो कहीं चर्चा नहीं, पवित्र क़ुर्आन तो उसे हमेशा के लिए विदा करता है, यद्यपि कुछ हदीसों में जो रूपकों से भरी हुई हैं मसीह के दोबारा संसार में आने के लिए बतौर भविष्यवाणी वर्णन किया गया है। अत: इन हदीसों के अगले-पिछले प्रसंग से स्पष्ट है कि इस स्थान पर वास्तव में मसीह इब्ने मरयम का ही पुन: संसार में आ जाना कदापि अभिप्राय नहीं है। अपितु यह एक सूक्ष्म रूपक है जिसका अभिप्राय यह है कि किसी ऐसे युग में जो मसीह इब्ने मरयम

(अर्थात ईसा) के युग के समरूप युग होगा, प्रजा के सुधार के लिए एक व्यक्ति संसार में आएगा जो स्वभाव, शक्ति तथा अपने मुख्य कार्यों में मसीह इब्ने मरयम का समरूप होगा और जैसा कि मसीह इब्ने मरयम ने हज़रत मूसा के धर्म का नवीनीकरण किया और तौरात की वह वास्तविकता और मर्म जिसे यहूदी लोग भूल गए थे, उन पर पुन: स्पष्ट कर दिया, इसी प्रकार वह दूसरा मसीह मूसा के समरूप के धर्म का जो हज़रत ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं नवीनीकरण करेगा और यह मूसा के समरूप मसीह अपने चरित्र और अन्य समस्त परिणामों में जो जाति पर उनके अनुसरण या उन की अवज्ञा की अवस्था में प्रभावी होंगे उस मसीह के बिल्कुल समरूप होगा जो मूसा को दिया गया था। अब जो बात ख़ुदा तआला ने मुझ पर प्रकट की है वह यह है कि वह मसीह मौऊद मैं ही हूँ।

मुसलमानों का रुढ़िवादी विचारों के अनुसार जो उनके हृदयों में जमे हुए चले आते हैं यह दावा है कि मसीह इब्ने मरयम वास्तव में दो फ़रिश्तों के कन्धों पर हाथ रखे हुए आकाश से उतरेगा तथा दमिश्क के पूरब में मीनार के पास आ ठहरेगा, और कुछ कहते हैं कि मीनार पर उतरेगा और वहाँ से मुसलमान लोग सीढ़ी के द्वारा उसे नीचे उतारेंगे और फ़रिश्ते वहाँ से चले जाएँगे, वह वहाँ से उत्तम लिबास पहले हुए उतरेगा, यह नहीं कि नंगा हो और फिर महदी के साथ भेंट और कुशल-क्षेम का आदान-प्रदान होगा तथा बावजूद इतना समय गुज़रने के वही पूर्व कालीन आयु बत्तीस या तेंतीस वर्ष की होगी। माह तथा वर्षों की इतने दीर्घ चक्र ने उसके शरीर और आयु पर कुछ प्रभाव न किया होगा, उसके नाख़ून और बाल इतने न बढ़े होंगे जो आकाश पर उठाए जाने के समय मौजूद थे तथा किसी प्रकार का परिवर्तन उस के अस्तित्व में न आया होगा, परन्तु पृथ्वी पर उतर कर फिर परिवर्तनों का क्रम आरंभ होगा, वह किसी प्रकार का लड़ाई-झगड़ा नहीं करेगा अपितु उसकी मुख की वायु में ही ऐसा प्रभाव होगा कि जहाँ तक उसकी दृष्टि पहुँचेगी काफ़िर मरते जाएंगे अर्थात् उसकी फूंक में ही यह विशेषता होगी कि जीवितों को मारे, जैसे पहले यह विशेषता थी कि मुर्दों को जीवित करे। फिर हमारे विद्वान अपने इस पहले कथन को

भुलाकर यह दूसरा कथन जो पहले का विपरीत है प्रस्तुत करते हैं कि वह लड़ाई-झगड़ा भी करेगा और काना दज्जाल उसके हाथ से वध किया जाएगा, यहूदी भी उसके आदेश द्वारा मारे जाएंगे। फिर एक ओर तो यह इक़रार है कि मसीह मौऊद वही मसीह इब्ने मरयम ख़ुदा का नबी है जिस पर इन्जील उतरी थी, जिस पर हज़रत जिबराईल उतरा करता था जो ख़ुदा तआला के महान पैग़म्बरों में से एक पैग़म्बर है तथा दूसरी ओर यह भी कहते हैं कि वह दोबारा पृथ्वी पर आकर अपनी नुबुव्वत का नाम भी नहीं लेगा अपितु नुबुव्वत के पद से निलंबित होकर आएगा और हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत में शामिल होकर समस्त मुसलमानों की भांति क़ुर्आनी शरीअत का पाबन्द होगा, नमाज़ अन्यों के पीछे पढ़ेगा जैसे सामान्य मुसलमान पढ़ा करते हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि वह हनफ़ी होगा और इमाम आ'ज़म (इमाम अबू हनीफ़ा रह.) साहिब को अपना इमाम समझेगा परन्तु अब तक इस बारे में स्पष्ट तौर पर यह वर्णन नहीं किया गया कि चार सिलसिलों में से किस सिलसिले में सम्मिलित होगा, क्या वह क़ादिरी होगा या चिश्ती या सहरवर्दी अथवा मुजद्दिद सरहिन्दी की तरह नक़्शबन्दी। अत: इन लोगों ने शीर्षक में नुबुव्वत का पद स्थापित करके फिर जिस स्तर तक इस पद को नीचे गिराया है कोई बुद्धिमान व्यक्ति ऐसा कार्य कदापि नहीं कर सकता। तत्पश्चात् उसके विशेष कार्य रूपकों को वास्तविकता पर चरितार्थ करके ये वर्णन किए गए हैं कि वह सलीब को तोड़ेगा, सुअरों का वध करेगा। आश्चर्यजनक है कि सलीब तोड़ने से उसको क्या लाभ है और यदि उसने दस-बीस लाख सलीबें तोड़ भी दीं, तो क्या ईसाई लोग जिन्हें सलीब-पूजा की धुन लगी हुई है क्या और सलीबें नहीं बनवा सकते, तथा दूसरा वाक्य जो कहा गया है कि सुअरों का वध करेगा यह भी यदि वास्तविकता पर चरितार्थ है तो बड़ा विचित्र वाक्य है। क्या हज़रत मसीह के पृथ्वी पर उतरने के पश्चात् उत्तम कार्य यही होगा कि वह सुअरों का शिकार खेलते फिरेंगे और बहुत से कुत्ते साथ होंगे। यदि यही सत्य है तो फिर सिखों, चमारों सांसियों तथा गंडीलों इत्यादि को जो सुअर के शिकार को प्रिय समझते हैं शुभ

सन्देश है कि उनकी खूब बन आएगी, परन्तु कदाचित् ईसाइयों को उन के द्वारा सुअरों के वध किए जाने से कुछ थोड़ा सा भी लाभ न पहुँच सके, क्योंकि ईसाई जाति ने सुअर के शिकार को पहले से ही चरम सीमा को पहुँचा रखा है, क्रियात्मक तौर पर विशेषत: लन्दन में सुअर का मांस बेचने के लिए सहस्त्रों दूकानें मौजूद हैं और विश्वस्त सूत्रों से सिद्ध हुआ है कि केवल यही सहस्त्र दुकानें नहीं अपितु प्रतिदिन पच्चीस हज़ार अतिरिक्त सुअर लन्दन से आस-पास के लोगों के लिए बाहर भेजा जाता है। अब प्रश्न यह है कि क्या ख़ुदा के नबी का यही वैभव होना चाहिए कि वह संसार में प्रजा के सुधार के लिए तो आए पन्तु फिर अपने प्रिय समय को एक अपवित्र जानवर सुअर के शिकार में नष्ट करे, हालांकि तौरात के अनुसार सुअर को स्पर्ष करना भी नितान्त पाप में गिना जाता है। फिर मैं यह भी कहता हूँ कि प्रथम तो शिकार खेलना ही बेकार लोगों का कार्य है और यदि हज़रत मसीह की रुचि शिकार ही की ओर होगी और दिन-रात यही कार्य पसन्द आएगा तो फिर क्या यह पवित्र जानवर जैसे हिरण, गोरखर और ख़रगोश संसार में क्या कुछ कम हैं ताकि एक अपवित्र जानवर के रक्त से हाथ गन्दे करें।

अब मैंने वह सम्पूर्ण रूपरेखा को जो मेरी क़ौम ने मसीह की उन घटनाओं की खींच रखी है जो दोबारा पृथ्वी पर उतरने के पश्चात् उन पर गुज़रेंगी, प्रस्तुत कर दिया है। बुद्धिमान लोग इस पर विचार करें कि इसमें प्रकृति के नियम के विपरीत बातें किस सीमा तक हैं, इसमें किस सीमा तक **दो विपरीत** बातें एक ही स्थान पर विद्यमान हैं, किस सीमा तक यह बात नुबुव्वत की प्रतिष्ठा से दूर है परन्तु यहां यह भी स्मरण रहे कि यह व्यर्थ बातों का सम्पूर्ण संग्रह बुखारी और मुस्लिम (हदीस की पुस्तकें) में नहीं है। इमाम मुहम्मद इस्माईल बुख़ारी रह. ने इस बारे में संकेत मात्र भी नहीं किया कि यह आने वाला मसीह वास्तव में वही पूर्वकालीन मसीह होगा अपितु उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से दो हदीसें ऐसी लिखी हैं जिन्होंने निर्णय कर दिया है कि मसीह प्रथम (पूर्व कालीन) और है और मसीह द्वितीय और, क्योंकि एक हदीस का लेख यह है कि इब्ने मरयम (ईसा) तुम

में उतरेगा फिर बयान के तौर पर स्पष्ट कर दिया है कि वह तुम्हारा एक इमाम होगा जो तुम में से ही होगा। अत: इन शब्दों पर भलीभांति विचार करना चाहिए, कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 'इब्ने मरयम' शब्द की व्याख्या करते हुए फ़रमाते हैं कि वह तुम्हारा एक इमाम होगा जो तुम में से ही होगा और तुम से ही पैदा होगा, मानो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस भ्रम का निवारण करने के लिए जो 'इब्ने मरयम' शब्द से लोगों के हृदयों में पैदा हो सकता था उसके बाद के शब्दों में बतौर व्याख्या कह दिया कि उसे वास्तव में इब्ने मरयम ही न समझ लो

بَلْ هُوَ اِمَامُكُمْ مِّنْكُمْ

(अपितु वह तुम्हारा इमाम होगा और तुम्हीं में से होगा -अनुवादक) और दूसरी हदीस जो इस बात का निर्णय करती है वह यह है कि मसीह प्रथम की आकृति आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अन्य प्रकार की बताई है तथा मसीह द्वितीय की आकृति और प्रकार की वर्णन की है जो इस विनीत की आकृति के बिल्कुल अनुकूल है। अब विचार करना चाहिए कि इन दोनों आकृतियों में परस्पर एक दूसरे का स्पष्ट तौर पर विपरीत होना क्या इस बात पर ठोस सबूत नहीं है कि वास्तव में मसीह प्रथम और है और मसीह द्वितीय और।

एक अन्य बात ध्यान योग्य यह है कि हमारे विद्वानों की हठधर्मी तो इस बात पर है कि इब्ने मरयम के उतरने के बारे में जो हदीस है उसे वास्तविकता पर चरितार्थ करना चाहिए, परन्तु इनके कुछ बुद्धिमानों से जब इस हदीस के अर्थ पूछे जाएं कि इब्ने-मरयम उतरेगा और सलीब को तोड़ेगा और सुअर का वध करेगा। तो 'इब्ने मरयम' के शब्द को तो वास्तविकता पर ही चरितार्थ रखते हैं तथा सलीब और सुअर के बारे में कुछ दबी भाषा में हमारी तरह रूपक और लाक्षणिकता से काम लेने लगते हैं। अत: वे लोग अपनी इस कार्यवाही से स्वयं दोषी ठहरते हैं क्योंकि इस परिस्थिति में इन पर यह सबूत क़ायम होता है कि इन तीन शब्दों में से कि 'इब्ने मरयम का उतरना', 'सलीब का तोड़ना' और सुअरों का वध करना है। दो शब्दों के बारे में तो तुम स्वयं ही मान गए कि रूपक के तौर पर उन से अभिप्राय

कुछ और है। तो फिर यह तीसरा वाक्य जो इब्ने मरयम का उतरना है क्यों इसमें भी बतौर रूपक कोई अन्य व्यक्ति अभिप्राय नहीं। अब मैं पूछता हूँ कि क्या इन विपरीतार्थक विचारों के संग्रह पर दृढ़ रहना बुद्धिमत्ता और दक्षता का मार्ग है अथवा वे आध्यात्मिक ज्ञान समझ के निकट और बुद्धि के अनुकूल हैं जो इस विनीत पर प्रकट किए गए हैं।

इसके अतिरिक्त अन्य कई मार्गों से इन पुराने विचारों पर बुद्धिसंगत कठोर आरोप आते हैं जिन से बचने का कोई मार्ग दिखाई नहीं देता।

इन सब में से एक यह है कि पवित्र क़ुर्आन के किसी स्थान से सिद्ध नहीं कि हज़रत मसीह इसी पार्थिव शरीर के साथ आकाश की ओर उठाए गए अपितु पवित्र क़ुर्आन के अनेकों स्थानों में मसीह की मृत्यु हो जाने का स्पष्ट वर्णन है और एक स्थान पर स्वयं मसीह की ओर से मृत्यु को प्राप्त हो जाने का इक़रार विद्यमान है और वह यह है :-

كُنتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ أَنتَ
الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ۔*

अब जब कि मृत्यु को प्राप्त होना सिद्ध हुआ तो इस से स्पष्ट है कि उनका शरीर उन सब लोगों की भाँति जो मर जाते हैं पृथ्वी में दफ़्न किया गया होगा, क्योंकि पवित्र क़ुर्आन स्पष्ट तौर पर कहता है कि इनकी मात्र आत्मा आकाश पर गई न कि शरीर। तब ही तो हज़रत मसीह ने उपरोक्त आयत में अपनी मृत्यु का स्पष्ट इक़रार कर दिया। यदि वह जीवितों के रूप में पार्थिव शरीर के साथ आकाश की ओर जाते तो अपने मर जाने की कदापि चर्चा न करते और ऐसा कदापि न कहते कि मैं मृत्यु पाकर इस लोक (संसार) से विदा किया गया हूँ। अब स्पष्ट है कि जब आकाश पर उनकी आत्मा ही गई तो फिर उतरने के समय शरीर कहाँ से साथ आ जाएगा।

इनमें से एक आरोप यह है कि नवीन और प्राचीन दर्शनशास्त्र इस बात को

* सूर: अलमाइदा - 118, रुकू 16

दुर्लभ सिद्ध करता है कि कोई मनुष्य अपने इस पार्थिव शरीर के साथ शीत कटिबन्ध तक भी पहुँच सके अपितु भौतिक विज्ञान के नवीन अन्वेषण इस बात को सिद्ध कर चुके हैं कि कुछ ऊँचे पर्वतों के शिखरों पर पहुँचकर उस क्षेत्र की वायु स्वास्थ्य के लिए ऐसी हानिकारक मालूम हुई है कि जिसमें जीवित रहना संभव नहीं। अत: इस पार्थिव शरीर का चन्द्र या सूर्य पिण्ड तक पहुँचना कितना व्यर्थ विचार है* इनमें से एक यह आरोप है कि जो लोग आकाशों के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं, वे यद्यपि उन के गतिशील होने को भी मानते हैं और गति भी परिक्रमात्मक विचार करते हैं। अब यदि कल्पना की जाए कि हज़रत मसीह पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर गए

---

* **हाशिया** :- यहाँ यदि कोई यह आरोप प्रस्तुत करे कि यदि पार्थिव शरीर का आकाश पर जाना दुर्लभ में से है तो फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मे'राज इस पार्थिव शरीर के साथ क्योंकर वैध होगा, तो इसका उत्तर यह है कि मे'राज पर जाना इस पार्थिव शरीर के साथ नहीं था अपितु वह नितान्त उच्च श्रेणी का कश्फ़ था जिसे वास्तव में जागने की अवस्था कहना चाहिए। ऐसे कश्फ़ की अवस्था में मनुष्य एक प्रकाशमान शरीर के साथ अपनी मनोवृत्ति की पात्रता के अनुसार आकाशों की सैर कर सकता है। अत: चूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उच्च श्रेणी की पात्रता थी और अपनी चरम सीमा तक पहुँची हुई थी, इसलिए वह अपने मे'राजी भ्रमण में आबाद जगत के चरम बिन्दु तक जो महान अर्श (सिंहासन) से चरितार्थ किया जाता है पहुँच गए। अत: वास्तव में यह भ्रमण एक कश्फ़ी दृश्य था जो जागने की अवस्था के अत्यधिक समरूप है अपितु एक प्रकार की जागने की अवस्था ही है। मैं इसका नाम स्वप्न कदापि नहीं रखता और न इसे कश्फ़ के निम्नस्तरों में से समझता हूँ अपितु यह कश्फ़ की महानतम श्रेणी है जो वास्तव में जागना अपितु इस जागने की अवस्था से यह अवस्था अधिक शुद्ध और आभामय होती है तथा इस प्रकार के कश्फ़ों में लेखक स्वयं अनुभव रखता है। यहां अधिक लिखने की गुंजाइश नहीं है। ख़ुदा ने चाहा तो किसी अन्य स्थान और अवसर पर विस्तृत वर्णन किया जाएगा। इसी से

हैं तो स्पष्ट है कि वह हर समय ऊपर की दिशा में ही नहीं रह सकते अपितु कभी ऊपर की ओर होंगे और कभी पृथ्वी के नीचे आ जाएंगे। ऐसी स्थिति में इस बात पर विश्वास भी नहीं हो सकता है कि वह अवश्य ऊपर की ही ओर से उतरेंगे। क्या यह संभव नहीं कि पृथ्वी के नीचे से ही निकल आएं क्योंकि वास्तव में उनका ठिकाना तो किसी स्थान पर न हुआ। यदि प्रात: आकाश के ऊपर हुई तो सांय पृथ्वी के नीचे। अत: उनके लिए ऐसी विकट स्थिति उचित समझना किस स्तर का अनादर है।

इनमें से एक आरोप यह है कि यदि हम असंभव कल्पना करते हुए स्वीकार कर लें कि हज़रत मसीह अपने पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर पहुँच गए तो इस बात के इक़रार से हमें चारा नहीं कि वह शरीर जैसा कि समस्त प्राणी वर्ग शरीरों के लिए आवश्यक है आकाश पर भी समय के प्रभाव से अवश्य प्रभावित होगा तथा समय व्यतीत होने के साथ-साथ आवश्यक और अनिवार्य रूप से उसके लिए एक दिन मृत्यु अवश्य अनिवार्य होगी। अत: इस परस्थिति में प्रथम तो हज़रत मसीह के बारे में यह मानना पड़ता है कि अपनी आयु का चक्र पूर्ण करके आकाश पर ही मृत्यु को प्राप्त हो चुके हों तथा आजकल नक्षत्रों की आबादी जो स्वीकार की जाती है उसी के किसी क़ब्रस्तान में दफ़्न किए गए हों और यदि फिर कल्पनात्मक तौर पर अब तक उनका जीवित रहना स्वीकार कर लें तो कुछ सन्देह नहीं कि इतना समय गुज़रने पर जीर्ण हो गए होंगे तथा इस कार्य-योग्य कदापि नहीं होंगे कि कोई धार्मिक सेवा अदा कर सकें, परन्तु ऐसी स्थिति में उनका संसार में आना अकारण कष्ट उठाने के अतिरिक्त अन्य कुछ लाभप्रद प्रतीत नहीं होता।

वे लक्षण जो मसीह ने अपने आगमन के बारे में रूपक के तौर पर अपने आने के वर्णन किए हैं तथा सूरह अलज़िल्ज़ाल की व्याख्या

मसीह ने अपने दोबारा आगमन का लक्षण यह बताया है कि उन दिनों में सूर्य तुरन्त अंधकारमय हो जाएगा और चन्द्रमा अपना प्रकाश नहीं देगा और सितारे आकाश से गिर जाएंगे तथा आकाश की शक्तियाँ हिल जाएगी, तब आदम के बेटे का निशान आकाश पर प्रकट होगा तथा आदम के बेटे को बड़ी शक्ति और प्रताप के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे तथा वह नरसिंगे के बड़े शोर के साथ अपने फ़रिश्तों को भेजेगा, वे उसके भेजे हुए बुज़ुर्गों को चारों ओर से आकाश की इस सीमा से उस सीमा तक एकत्र करेंगे। जब तुम यह सब कुछ देखो तो समझो कि वह निकट अपितु द्वार पर है। मैं तुम्हें सच-सच कहता हूँ कि जब तक यह सब कुछ न हो ले इस युग के लोग गुज़र न जाएंगे, आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कदापि न टलेंगी, परन्तु उस दिन और उस पल मेरे बाप के अतिरिक्त आकाश के फ़रिश्तों तक कोई नहीं जानता, जैसा नूह के दिनों में हुआ वैसा ही इब्ने आदम का आना भी होगा, क्योंकि जिस प्रकार इन दिनों में तूफ़ान से पूर्व खाते-पीते, विवाह करते, ब्याहे जाते थे उस दिन तक कि नूह नौका पर सवार हुआ और नहीं जानते थे कि जब तक कि तूफान आया और उन सब को बहा ले गया। इसी प्रकार आदम के बेटे का आगमन भी होगा अर्थात् जिस प्रकार कि नूह की नौका बनाने से पूर्व लोग अमन और शान्ति से रहते थे, उन पर कोई पार्थिव या आकाशीय विपत्ति नहीं आई थी, इसी प्रकार इब्ने आदम अर्थात् मसीह भी लोगों के आराम और समृद्धि के समय में आएगा। उसके आगमन से पूर्व लोगों पर किसी प्रकार की आपदा नहीं

आएगी अपितु साधारण तौर पर लोग अमन और शान्ति के साथ अपने-अपने कार्यों में व्यस्त होंगे। देखो 'मती' बाब-24।

हज़रत मसीह के इस वर्णन में प्रत्यक्षतया जितना विरोधाभास है दर्शकों ने समझ लिया होगा, क्योंकि उन्होंने अपने उतरने से पूर्व इस बात को अनिवार्य ठहराया है कि सूर्य अन्धकारमय हो जाए तथा चन्द्रमा प्रकाश न दे और आकाश के सितारे पृथ्वी पर गिर जाएं। अत: इन लक्षणों को यदि प्रत्यक्ष पर चरितार्थ किया जाए तो ये अर्थ स्पष्ट तौर पर मिथ्या हैं क्योंकि जिस समय सूर्य अन्धकारमय हो गया और चन्द्रमा का प्रकाश जाता रहा तो फिर लोग नूह के युग की भांति क्योंकर अमन के साथ आबाद रह सकते हैं। भला यह भी जाने दो कदाचित् लोग अत्यन्त संकट के साथ गुज़ारा कर सकें, परन्तु पृथ्वी पर सितारों के गिरने से क्या पृथ्वी-निवासियों में से कोई शेष रह सकता है। सत्य तो यह है कि यदि आकाश का एक भी सितारा पृथ्वी पर गिरे तो सम्पूर्ण विश्व का विनाश करने के लिए पर्याप्त है, क्योंकि कोई सितारा लम्बाई-चौड़ाई में पृथ्वी के फैलाव से कम नहीं है। एक सितारा पृथ्वी पर गिर कर उसकी समस्त आबादी को दबा सकता है कहाँ यह कि समस्त सितारे पृथ्वी पर गिरें तथा उनके गिरने से एक व्यक्ति को भी क्षति न पहुँचे अपितु हज़रत नूह के युग की भांति मसीह के उतरने से पूर्व शान्ति और लोगों की बहुलता से आबाद हों तथा मसीह को बड़ी शक्ति और प्रताप के साथ आकाश के बादलों पर आते देखें।

अत: हे सत्याभिलाषियो! निश्चय समझो कि ये सब रूपक हैं यथार्थ पर कदापि चरितार्थ नहीं। हज़रत मसीह का आशय मात्र इतना है कि वह धर्म के लिए एक अंधकार का युग होगा तथा पथ-भ्रष्टता का ऐसा अंधकार होगा कि उस समय न सूर्य के प्रकाश से जो मान्य रसूल और उसकी शरीअत और उसकी किताब है, लोग आंखें खोलेंगे क्योंकि उनके अहंकार के पर्दों के कारण शरीअत रूपी सूर्य उनके लिए अंधकारमय हो जाएगा और चन्द्रमा भी उन्हें प्रकाश नहीं देगा अर्थात् वलियों (ॠषियों) के होने से भी उन्हें कुछ लाभ न होगा, क्योंकि अधर्म के बढ़ जाने से

पवित्रात्मा लोगों का प्रेम भी उनके हृदयों में नहीं रहेगा। आकाश के सितारे गिरेंगे अर्थात् ख़ुदा वाले विद्वान मृत्यु को प्राप्त हो जाएंगे तथा आकाश की शक्तियां हिल जाएंगी अर्थात् आकाश किसी को ऊपर की ओर नहीं खींच सकेगा, लोग दिन-प्रतिदिन पृथ्वी की ओर खिंचते चले जाएंगे अर्थात् लोगों पर तामसिक वृत्ति की भावनाएं प्रभुत्व स्थापित कर लेंगी, उस समय न लड़ाईयां होंगी और न जनसाधारण के अमन और शान्ति में कोई विघ्न होगा अपितु नूह के युग की भांति एक शान्तिदायक सरकार के अधीन* वे लोग जीवन व्यतीत करते होंगे जिन में मसीह मौऊद उतरेगा। स्मरण रखना चाहिए कि हज़रत नूह का युग अपने रहन-सहन के नियमों की दृष्टि से नितान्त शान्तिपूर्ण युग था, लोग अपनी लम्बी-लम्बी आयु को नितान्त ऐश्वर्य, शान्ति और कुशलतापूर्वक व्यतीत कर रहे थे, इसी कारण लोग अत्यन्त लापरवाह हो गए थे। मालूम नहीं कि उस समय कोई व्यक्तिगत शासन था या प्रजातंत्र। संयोग से इस स्तर पर सामान्य प्रजा के लिए हर प्रकार से समृद्धि पैदा हो गई थी। बहरहाल उस युग के लोग आराम, शांति और कुशलतापूर्वक जीवन-यापन में इस युग के लोगों से बहुत समानता रखते हैं जो बर्तानवी सरकार की छत्र-छाया में जीवन व्यतीत करते हैं। सरकार की ओर से प्रजा की शान्ति, आराम और समृद्धि के लिए जितने संसाधन उपलब्ध किए गए हैं उनकी गणना कठिन है, मानो उनके इस जीवन को स्वर्ग का एक आदर्श बना दिया गया है, परन्तु नितान्त आराम प्राप्ति तथा शान्ति के

---

* **हाशिया** :- मेरा यह दावा है कि समस्त विश्व में बर्तानवी सरकार की भांति कोई अन्य ऐसी सरकार नहीं जिसने पृथ्वी पर ऐसी शान्ति स्थापित की हो। मैं सच-सच कहता हूँ कि हम जो कुछ पूर्ण स्वतंत्रता के साथ इस सरकार के अधीन सत्य का प्रचार कर सकते हैं यह सेवा हम मक्का या मदीना में बैठकर भी कदापि नहीं कर सकते। यदि यह शान्ति, स्वतंत्रता और निष्पक्षता आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अवतरित होने के समय अरब में होती तो वे लेग तलवार से कदापि न मारे जाते। यदि यह शान्ति, स्वतंत्रता और निष्पक्षता उस समय के क़ैसर तथा किस्रा की सरकारों में होती तो वे बादशाहतें अब तक स्थापित रहतीं। इसी से।

कारण हृदयों में यह आपदा पैदा हो गई है की भौतिक जीवन कि नितान्त मृदुलतापूर्ण कल्पना से दिन-प्रतिदिन हृदयों में उसका प्रेम बढ़ता जाता है। जिस ओर दृष्टि डालो यही इच्छा जोश मार रही है कि संसार की यह मनोकामना पूर्ण हो जाए, वह मनोकामना पूर्ण हो जाए तथा शान्ति फैल जाने के कारण संसार की प्रत्येक वस्तु का महत्व बढ़ता जाता है, खेती की वह भूमि जिसे सिखों के युग में कोई मुफ़्त भी नहीं ले सकता था, का लाखों रुपयों में विक्रय हो रहा है तथा लाभ के मार्ग यहां तक खुल गए हैं कि लोग गन्दगी और हड्डियों के विक्रय से वे लाभ अर्जित करते हैं कि इस से पूर्वकालों में उत्तम श्रेणी के अनाजों के विक्रय में वे लाभ प्राप्त नहीं हो सकते थे और न केवल आराम की यही साधन हैं अपितु दृष्टि डालकर देखो तो रहन-सहन, आवश्यकता, मात्र और स्थिरता के संबंध में आराम के वे साधन निकल आए हैं जो इससे पूर्व के समयों में कदाचित् किसी ने स्वप्न में भी न देखे होंगे। अत: इस सौभाग्यशाली सरकार के युग को उस शान्ति के युग से सामानता दें जो हज़रत नूह के समय में था तो यह युग निस्सन्देह उसका अत्यधिक समरूप होगा।

अब जबकि यह सिद्ध हो चुका कि सच्चे मसीह ने उस युग में आने का कदापि वादा नहीं किया जो लड़ाई-झगड़े तथा अन्याय और अत्याचार का युग हो, जिस में कोई व्यक्ति शान्तिपूर्वक जीवन-यापन न कर सके तथा भले लोग पकड़े जाएं और अदालतों के सुपुर्द किए जाएं तथा वध किए जाएं अपितु मसीह ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि उन उपद्रवयुक्त युगों में ईसाइयों और यहूदियों में झूठे मसीह पैदा होंगे जैसा उन पूर्वकालीन युगों में ऐसे कई लोग पैदा भी हो चुके हैं जिन्होंने मसीह होने का दावा किया था। इसी कारण मसीह ने आग्रहपूर्वक कहा कि मेरा आगमन उन प्रारंभिक युगों में कदापि नहीं होगा तथा शोर, उपद्रव, अन्याय, अत्याचार और लड़ाइयों के दिनों में कदापि नहीं आऊँगा अपितु शान्ति के दिनों में आऊँगा। हां उस समय नितान्त अमन और शान्ति के कारण अधर्म फैला हुआ होगा और ईश्वर-प्रेम हृदयों से उठा हुआ होगा जैसा कि नूह के समय में था। अत: यह एक अति उत्तम लक्षण है जिसे मसीह ने अपने आने के लिए प्रस्तुत किया है, यदि चाहो तो इसे

स्वीकार कर सकते हो।

यहाँ इस प्रश्न का समाधान भी आवश्यक है कि मसीह किस उत्तम और महत्वपूर्ण कार्य के लिए आने वाला है। यदि यह विचार किया जाए कि दज्जाल का वध करने के लिए आएगा तो यह विचार नितान्त कमज़ोर और व्यर्थ है क्योंकि केवल एक काफ़िर का वध करना कोई ऐसा महत्वपूर्ण कार्य नहीं जिसके लिए एक नबी की आवश्यकता हो, विशेषकर इस स्थिति में कहा गया है कि यदि मसीह वध भी न करता तब भी दज्जाल स्वयं पिघल कर नष्ट हो जाता अपितु सत्य तो यह है कि मसीह का ख़ुदा की ओर से आना इसलिए निर्धारित किया गया है ताकि समस्त जातियों पर इस्लाम धर्म के सत्य होने के प्रमाण को सम्पन्न करे और ताकि विश्व की समस्त जातियाँ ख़ुदा तआला के आरोप के अन्तर्गत आ जाएँ। इसी की ओर संकेत है कि जो कहा गया है कि मसीह की फूंक से काफ़िर मरेंगे अर्थात् स्पष्ट सबूतों और अकाट्य तर्कों की दृष्टि से वे नष्ट हो जाएंगे।

द्वितीय कार्य मसीह का यह है कि इस्लाम को दोषों और अनुचित बातों की मिलावट से शुद्ध करके वह शिक्षा जो मर्म और सत्य से परिपूर्ण है लोगों के समक्ष रखे।

तृतीय कार्य मसीह का यह है कि ईमान रूपी प्रकाश को विश्व की सम्पूर्ण जातियों के अभिलाषी हृदयों को प्रदान करे तथा द्वैतवादियों को शुद्ध हृदयी लोगों से पृथक कर दे अत: ये तीनों कार्य ख़ुदा तआला ने इस विनीत के सुपुर्द किए हैं और यथार्थ में आदिकाल से यही निर्धारित है कि मसीह अपने समय का मुजद्दिद होगा तथा ख़ुदा तआला उस से उच्च श्रेणी की नवीनीकरण सेवा लेगा तथा ये तीनों बातें वे हैं जिसका ख़ुदा तआला ने इरादा किया है जो इस विनीत के द्वारा प्रकट हों। अत: वह अपनी इच्छा पूर्ण करेगा और अपने भक्त का सहायक होगा।

यदि यह कहा जाए कि हदीसें साफ और स्पष्ट शब्दों में बता रही हैं कि मसीह इब्ने मरयम आकाश से उतरेगा और दमिश्क के पूर्वी मीनार के पास उसका उतरना होगा तथा दो फ़रिश्तों के कन्धों पर उसके हाथ होंगे तो इस शुद्ध और नितान्त स्पष्ट

वर्णन से क्योंकर इन्कार किया जाए। इसका उत्तर यह है कि आकाश से उतरना इस बात को सिद्ध नहीं करता कि वास्तव में पार्थिव अस्तित्व आकाश से उतरे अपितु प्रमाणित हदीसों में तो आकाश का शब्द ही नहीं है तथा यों तो 'नुज़ूल' (उतरना) का शब्द सामान्य है। जो व्यक्ति एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान पर ठहरता है उसे भी यही कहते हैं कि उस स्थान पर उतरा है। जिस प्रकार कहा जाता है कि अमुक स्थान पर सेना उतरी है या डेरा उतरा है क्या इस से यह समझा जाता है कि वह सेना या वह डेरा आकाश से उतरा है। इसके अतिरिक्त ख़ुदा तआला ने तो पवित्र क़ुर्आन में स्पष्ट कह दिया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी आकाश से ही उतरे हैं अपितु एक स्थान पर फ़रमाया है कि लोहा भी हमने आकाश से उतारा है। अत: स्पष्ट है कि यह आकाश से उतरना उस प्रकार का नहीं है जिस प्रकार का लोग विचार कर रहे हैं तथा सामान्य तौर पर रूपकों के पाए जाने के बावजूद जिन से हदीसें भरी हुई हैं तथा हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कश्फ़ों और सच्चे स्वप्नों से परिपूर्ण हैं, फिर दमिश्क के शब्द से दमिश्क ही अभिप्राय करना दावा बिना प्रमाण तथा अनावश्यक* और यह भी स्मरण रखने योग्य है कि ख़ुदा तआला की भविष्यवाणियों में कुछ बातों की गोपनीयता तथा कुछ की अभिव्यक्ति होती है तथा ऐसा होना बहुत कम ही होता है कि हर प्रकार से

---

* **हाशिया** :- रूपक जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कश्फ़ों और स्वप्नों में पाए जाते हैं वे हदीसों के अध्ययन कर्ताओं पर गुप्त और छुपे नहीं हैं। कभी कश्फ़ी तौर पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने हाथों में सोने के दो कड़े पहने हुए दिखाई दिए तथा उन से दो महा झूठे अभिप्राय लिए गए जिन्होंने झूठे तौर पर नबी होने का दावा किया था। कभी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने स्वप्न और कश्फ़ में गायें ज़िब्ह होती दिखाई दीं। इससे अभिप्राय वे सहाबा (नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथी) जो 'उहद' के युद्ध में शहीद हुए। एक बार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने एक कश्फ़ में देखा कि स्वर्ग के अंगूरों का एक गुच्छा आपको अबू जहल के लिए

अभिव्यक्ति ही हो, क्योंकि भविष्यवाणियों में ख़ुदा तआला के इरादे में एक प्रकार की प्रजा की परीक्षा ही अभीष्ट होती है और अधिकांश भविष्यवाणियां इस आयत का चरितार्थ होती हैं कि

يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا وَّ يَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا (अलबक़रह : 27)

इसी कारण भौतिकवादी लोग परीक्षा में पड़कर भविष्यवाणी के प्रकट होने के समय धोखा खा जाते हैं और इन्कार करने वाले तथा अभीष्ट सच्चाई से वंचित रहने वाले अधिकतर वही लोग होते हैं जो यह चाहते हैं कि भविष्यवाणी प्रत्यक्ष तौर पर

शेष हाशिया :- दिया गया है तो उससे अभिप्राय 'अकरमा' (अबूजहल का बेटा) निकला। एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कश्फ़ी तौर पर दिखाई दिया कि जैसे आप ने एक भू-भाग की ओर प्रवास किया है कि वह आपके विचार में यमामा था, परन्तु वास्तव में उस भू-भाग से अभिप्राय मदीना मुनव्वरा था। इसी प्रकार अन्य नबियों के कश्फ़ों में अधिकांश उदाहरण पाए जाते हैं कि प्रत्यक्ष रूप में उन पर कुछ प्रकट किया गया तथा वास्तव में उस से अभिप्राय कुछ और था। अत: नबियों के वाक्यों में रूपकों और लक्षणों का हस्तक्षेप होना कोई दुर्लभ बात नहीं है और न कोई ऐसी बात है कि जो कृत्रिम और बनावटी तौर पर गढ़नी पड़ती है अपितु नबियों की यह आदत परिचित और प्रचलित है कि वे रुहुलक़ुदुस से परिपूर्ण होकर उदाहरणों तथा रूपकों द्वारा बोला करते हैं और ख़ुदा की वह्यी (ईशवाणी) को यही शैली पसन्द आई है कि इस भौतिक संसार में जो कुछ आकाश से उतारा जाता है उसमें अधिकतर रूपक और लक्षण होते हैं। सामान्य तौर पर प्रत्येक मनुष्य को कोई न कोई सच्चा स्वप्न आ जाता है जिसे नुबुव्वत का छियलीसवां भाग बताया गया है। यदि उसके भागों पर भी दृष्टि डालकर देखो तो शायद ही कोई ऐसा स्वप्न हो जो रूपकों और लक्षणों से पूर्णतया रिक्त हो।

अब यह भी जानना चाहिए कि दमिश्क़ का शब्द जो 'मुस्लिम' (हदीस की पुस्तक) की हदीस में आया है अर्थात 'सही मुस्लिम' में जो यह उल्लेख है कि हज़रत मसीह दमिश्क के पूर्वी सफेद मीनार के पास उतरेंगे। यह शब्द आरंभ से

अक्षरश: उसी प्रकार पूरी हो जाए जैसी समझी गई हैं, हालांकि ऐसा कदापि नहीं होता। उदाहरणतया मसीह के बारे में बाइबल की कुछ भविष्यवाणियों में यह लिखा था कि वह बादशाह होगा, परन्तु चूँकि मसीह निर्धनों और दरिद्रों के रूप में आया, इसलिए यहूदियों ने उसे स्वीकार न किया तथा इस रद्द और इनकार का कारण केवल शब्दों का अनुसरण था कि उन्होंने बादशाहत के शब्द को मात्र प्रत्यक्ष पर चरितार्थ कर लिया। इसी प्रकार हज़रत मूसा की तौरात में हमारे सरदार एवं पेशवा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में इस भविष्यवाणी का उल्लेख था कि वह बनी इस्राईल में से और उनके भाइयों में से पैदा होगा। इसलिए

शेष हाशिया :- अन्वेषकों को स्तब्ध करता चला आया है, क्योंकि प्रत्यक्ष में कुछ ज्ञात नहीं होता कि मसीह को दमिश्क से क्या अनुकुलता है और दमिश्क को मसीह से क्या विशेषता। हां यदि यह लिखा होता कि मसीह मक्का में उतरेगा या मदीना में उतरेगा तो इन नामों का प्रत्यक्ष पर चरितार्थ करना अनुकूल भी होता, क्योंकि मक्का ख़ुदा के घर का स्थान और मदीना रसूलुल्लाह का मुख्य स्थान है, परन्तु दमिश्क में तो ऐसी कोई विशेषता नहीं जिसके कारण समस्त मुबारक स्थानों को छोड़कर उतरने के लिए केवल दमिश्क़ को विशेष्य किया जाए। यहां निसन्देह रूपक के रंग में अभिप्राय बतौर कोई अर्थ गुप्त हैं जो प्रकट नहीं किए गए और इस विनीत ने अभी इस बात की छान-बीन करने की ओर ध्यान नहीं दिया था कि वे अर्थ क्या हैं कि इसी मध्य मेरे एक मित्र और घनिष्ठ प्रेमी मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब यहाँ क़ादियान में पधारे और इस बात के लिए विनती की कि मुस्लिम की हदीस में जो शब्द 'दमिश्क' एवं ऐसे अन्य संक्षिप्त शब्द हैं उनके प्रकटन के लिए ख़ुदा के दरबार में ध्यान किया जाए, परन्तु चूँकि उन दिनों मेरी तबियत ख़राब तथा मस्तिष्क सोच-विचार करने के योग्य न था, इसलिए मैं उन समस्त उद्देश्यों की ओर ध्यान देने से असमर्थ रहा, केवल थोड़ा सा ध्यान करने से एक शब्द की व्याख्या अर्थात् दमिश्क़ शब्द की वास्तविकता मुझ पर प्रकट की गई एवं एक साफ़

यहूदी लोग इस भविष्यवाणी का आशय यही समझते रहे कि वह बनी इस्राईल में से पैदा होगा हालांकि बनी इस्राईल के भाइयों से बनी इस्माईल अभिप्राय हैं। ख़ुदा तआला सामर्थ्यवान था कि बनी इस्राईल के भाइयों के स्थान पर बनी इस्माईल ही लिख देता ताकि करोड़ों की संख्या में प्रजा विनाश से बच जाती। परन्तु उसने ऐसा नहीं किया, क्योंकि उसे एक जटिलता मध्य में रखकर सच्चों और झूठों की परीक्षा लेना अभीष्ट थी। इसी आधार और उद्देश्य के कारण उपमा के रंग में या रूपक के तौर पर बहुत बातें होती हैं जिन पर विचार करने वाले दो वर्ग हो जाते हैं।

शेष हाशिया :- और स्पष्ट कश्फ़ में मुझ पर प्रकट किया गया कि हारिस नामक एक व्यक्ति अर्थात् 'हुर्रास' आने वाला जो अबू दाऊद की किताब में लिखा है यह ख़बर सही है और यह भविष्यवाणी तथा मसीह के आने की भविष्यवाणी वास्तव में ये दोनों अपने चरितार्थ की दृष्टि से एक ही हैं अर्थात् इन दोनों का चरितार्थ एक ही शक्ति है जो यह विनीत है।

अत: प्रथम मैं दमिश्क़ के शब्द का आशय जो इल्हाम द्वारा मुझ पर प्रकट किया गया वर्णन करता हूँ, तत्पश्चात् अबू दाऊद वाली भविष्यवाणी जिस प्रकार से मुझे समझाई गई है वर्णन करूँगा।

अत: स्पष्ट हो कि 'दमिश्क़' के शब्द का आशय मुझ पर ख़ुदा की ओर से यह प्रकट किया गया है कि यहां ऐसे क़स्बे का नाम दमिश्क़ रखा गया है जिसमें ऐसे लोग रहते हैं जो यज़ीदी स्वभाव रखने वाले तथा अपवित्र यज़ीद के समान आदतों और विचारों के अनुयायी हैं जिन के हृदयों में अल्लाह और रसूल का कुछ प्रेम नहीं तथा, ख़ुदा के आदेशों का कुछ आदर नहीं जिन्होंने अपनी काम भवानाओं को अपना उपास्य बना रखा है और अपनी तामसिक वृत्ति के आदेशों के ऐसे आज्ञाकारी हैं कि पुनीतों और पवित्रात्मा लोगों की हत्या भी उनकी दृष्टि में सरल और आसान बात है तथा आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते, ख़ुदा का विद्यमान होना उनकी दृष्टि में एक जटिल समस्या है जो उन की समझ में नहीं आता। अत: उपचारक को रोगियों ही की ओर आना चाहिए। इसलिए आवश्यक

प्रथम - वह वर्ग जो मात्र भौतिकवादी तथा भौतिक रंग में देखने वाला होता है तथा रूपकों से पूर्णतया इन्कारी होकर उन भविष्यवाणियों के प्रकटन को प्रत्यक्ष रूप में देखना चाहता है। यह वह वर्ग है जो समय पर सच्ची वास्तविकता को मानने से प्राय: वंचित और दुर्भाग्यशाली रह जाता है अपितु नितान्त शत्रुता, द्वेष और कपट तक नौबत पहुँचती है। संसार में जितने ऐसे नबी या ऐसे रसूल आए जिन के बारे में पूर्वकालीन पुस्तकों में भविष्यवाणियां मौजूद थीं, उनके कट्टर इन्कारी तथा कट्टर शत्रु वही लोग हुए हैं जो भविष्यवाणियों के शब्दों को उनके प्रत्यक्ष रूप में देखना

शेष हाशिया :- था कि मसीह ऐसे लोगों में ही उतरे। तात्पर्य यह कि मुझ पर यह प्रकट किया गया है कि 'दमिश्क़' के शब्द से वास्तव में वह स्थान अभिप्राय है जिस में यह दमिश्क़ वाली प्रसिद्ध विशेषता पाई जाती है तथा ख़ुदा तआला ने मसीह के उतरने का स्थान जो दमिश्क वर्णन किया, तो यह इस बात की ओर संकेत है कि मसीह से अभिप्राय वह पूर्वकालीन मसीह नहीं है जिस पर इन्जील उतरी थी अपितु मुसलमानों में से कोई ऐसा व्यक्ति अभिप्राय है जो अपनी आध्यात्मिक अवस्था की दृष्टि से मसीह है एवं इमाम हुसैन से भी समानता रखता है क्योंकि दमिश्क़ यज़ीद के शासन का मुख्य स्थान हो चुका है तथा यज़ीदियों का योजना-स्थल जिस से सहस्त्रों प्रकार के अन्यायपूर्ण आदेश जारी हुए वह दमिश्क़ ही है तथा यज़ीदियों को उन यहूदियों से बड़ी समानता है जो हज़रत मसीह के समय में थी। इसी प्रकार हज़रत इमाम हुसैन को भी अपने अत्याचार पीड़ित जीवन की दृष्टि से हज़रत मसीह से असीम स्तर की समरूपता है। अत: मसीह का दमिश्क़ में उतरना स्पष्ट तौर पर सिद्ध करता है कोई मसीह के सदृश जो हुसैन से भी समानता के कारण इन दोनों बुज़ुर्गों की समरूपता रखता है। यहूदियों को चेतावनी देने तथा दोषी ठहराने के लिए जो यहूदियों के समान हैं उतरेगा। स्पष्ट है कि यज़ीदी स्वभाव रखने वाले लोग यहूदियों के समरूप हैं यह नहीं कि वास्तव में यहूदी हैं। इसलिए दमिश्क का शब्द स्पष्ट तौर पर वर्णन कर रहा है कि मसीह जो उतरने वाला है वह भी वास्तव में मसीह नहीं है अपितु जैसा कि यज़ीदी लोग यहूदियों के समरूप हैं इसी

चाहते थे। उदाहरणतया 'एलिया' नबी का आकाश से उतरना और प्रजा के पथ-प्रदर्शन के लिए संसार में आना बाइबल में इस प्रकार लिखा है कि - एलिया नबी जो आकाश पर उठाया गया फिर दोबारा वही नबी संसार में आएगा। इन प्रत्यक्ष शब्दों को यहूदी दृढ़ता से पकड़े बैठे हैं और इसके बावजूद कि हज़रत मसीह जैसे बुज़ुर्ग नबी ने स्पष्ट तौर पर साक्ष्य दी कि वह एलिया जिसके आकाश से उतरने की प्रतीक्षा की जाती है यही ज़करिया का पुत्र यह्या है जो आपका पथ प्रदर्शक है, परन्तु यहूदियों ने स्वीकार न किया अपितु इन्हीं बातों से हज़रत मसीह पर बहुत क्रोधित

शेष हाशिया :- प्रकार मसीह जो उतरने वाला है वह भी मसीह का समरूप है और हुसैनी स्वभाव रखता है। यह रहस्य एक नितान्त सूक्ष्म रहस्य है जिस पर विचार करने से स्पष्ट तौर पर प्रकट हो जाता है कि **दमिश्क का शब्द मात्र रूपक के तौर पर** प्रयोग किया गया है। चूँकि इमाम हुसैन की अत्याचार पीड़ित घटना ख़ुदा तआला की दृष्टि में बहुत श्रेष्ठता और महत्व रखती है और यह घटना हज़रत मसीह की घटना से ऐसी समरूप है कि इसमें ईसाइयों को भी कोई आपत्ति नहीं होगी। अत: ख़ुदा तआला ने चाहा कि आने वाले युग को भी उसकी श्रेष्ठता से और मसीही समरूपता से सतर्क करे। इस कारण से दमिश्क का शब्द बतौर रूपक लिया गया ताकि अध्ययनकर्ताओं की दृष्टि के समक्ष वह युग आ जाए जिसमें रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिगर के टुकड़े हज़रत मसीह की भांति चरम सीमा के अत्याचार और अन्याय पूर्ण मार्ग से दमिश्कियों दुर्भाग्यशाली के घेरे में आकर शहीद किए गए। अत: अल्लाह तआला ने उस दमिश्क़ को जिस से ऐसे अत्याचारपूर्ण आदेश जारी होते थे तथा जिस में क्रूर हृदय और निष्ठुर लोग पैदा हो गए थे। इस उद्देश्य से लक्ष्य बना कर लिखा कि अब दमिश्क का मसील न्याय और ईमान प्रसारित करने का हैडक्वार्टर होगा, क्योंकि अधिकांश नबी अत्याचारियों की बस्ती में ही आते रहे हैं और ख़ुदा तआला ला'नत के स्थानों को बरकत के स्थान बनाता रहा है। ख़ुदा तआला ने इस रूपक को इसलिए धारण किया ताकि अध्ययन करने वाले इससे दो लाभ प्राप्त कर सकें। एक यह कि नृशंस मज़्लूम

हो गए तथा हज़रत मसीह के बारे में यह विचार करने लगे कि वह तौरात की इबारतों के अन्य-अन्य अर्थ करके बिगाड़ना चाहता है, क्योंकि उन्हें अपने प्रत्यक्ष रंग के विचार के कारण पूर्ण दृढ़ता के साथ आशा लगी हुई थी। अत: हृदय में अभी तक वही अनुचित धारणा है कि एलिया वास्तव में यहूदियों की जमाअत के समक्ष आकाश से उतरेगा तथा उसके दाएं-बाएं फ़रिश्ते अपने हाथों का सहारा देकर बैतुल मुक़द्दस की किसी ऊँची इमारत पर आकर उतार देंगे फिर किसी सीढ़ी के द्वारा एलिया नीचे उतर आएंगे और यहूदियों के समस्त विरोधियों का पृथ्वी से सर्वनाश

शेष हाशिया :- इमाम हुसैन रज़ि. की शहीद होने की कष्टदायक घटना जिसकी दमिश्क़ के शब्द में बतौर भविष्यवाणी सांकेतिक तौर पर नबी करीम स.अ.व. की हदीस में सूचना दी गई है उसकी श्रेष्ठता और महत्व हृदयों पर स्पष्ट हो जाए। दूसरे यह ताकि निश्चित तौर पर ज्ञात कर लें कि जैसे दमिश्क में रहने वाले वास्तव में यहूदी नहीं थे परन्तु उन्होंने यहूदियों के काम किए, इसी प्रकार जो मसीह उतरने वाला है वास्तव में मसीह नहीं है परन्तु मसीह की आध्यात्मिक अवस्था का समरूप है और यहां बिना उस व्यक्ति की जिसके हृदय में हुसैन की घटना की वह श्रेष्ठता न हो जो होनी चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति इस दमिश्क़ी विशेषता को जो हमने वर्णन की हैं पूर्ण प्रफुल्लता के साथ अवश्य स्वीकार कर लेगा और न केवल स्वीकार अपितु इस लेख पर गहरी दृष्टि डालने से जैसे वास्तविक विश्वास तक पहुँच जाएगा और हज़रत मसीह को जो इमाम हुसैन(रज़ि.) से उपमा दी गई है यह भी रूपक का रूपक है जिसका हम आगे वर्णन करेंगे। अब प्रथम हम यह वर्णन करना चाहते हैं कि ख़ुदा तआला ने मुझ पर यह प्रकट कर दिया है कि यह क़ादियान का क़स्बा इसके कारण कि इसमें यज़ीदी स्वभाव लोग निवास करते हैं दमिश्क से एक अनुकूलता और समानता रखता है तथा यह स्पष्ट है कि उपमाओं में पूर्ण तौर पर चरितार्थ की आवसश्यकता नहीं होती अपितु प्राय: एक निम्न स्तर की समानता के कारण अपितु केवल एक भाग में समानता के कारण एक वस्तु का नाम दूसरी वस्तु पर चरितार्थ कर देते हैं। उदाहरणतया एक बहादुर मनुष्य को कह देते हैं कि यह शेर है और शेर

कर देंगे और चूँकि उनकी किताबों में जो कि इल्हामी किताबें हैं यी भी लिखा है कि अनिवार्य है कि मसीह के आगमन से पूर्व एलिया आकाश से उतरे। इसी जटिलता के कारण अर्थात् इस कारण से कि उनके विचार में एलिया अब तक आकाश से नहीं उतरा, मसीह इब्ने मरयम पर वे ईमान नहीं लाए और स्पष्ट कह दिया कि हम नहीं जानते कि तू कौन है, क्योंकि वह मसीह जिसकी हमें प्रतीक्षा है अनिवार्य है कि उससे पूर्व एलिया आकाश से उतर कर उसके मार्गों को प्रशस्त करे। इसके उत्तर में हज़रत मसीह ने यद्यपि उन्हें अत्यधिक बल देकर कहा कि वह एलिया जो आने

शेष हाशिया :- नाम रखते हैं। यह आवश्यक नहीं समझा जाता कि उसके पंजे शेर की भांति हों और शरीर पर ऐसे ही बाल हों और एक पूंछ भी हो अपितु मात्र वीरता के गुण की दृष्टि से ऐसा चरितार्थ हो जाता है और सामान्य तौर पर रूपक के समस्त प्रकारों में यही नियम है। अत: ख़ुदा तआला ने इसी सामान्य नियमानुसार इस क़ादियान के क़स्बे की दमिश्क से उपमा दी तथा इस बारे में क़ादियान के सन्दर्भ में मुझे यह भी इल्हाम हुआ कि

اخرج منه الیزیدیون

अर्थात् इस में यज़ीदी लोग पैदा किए गए हैं। अब यद्यपि मेरा यह दावा तो नहीं और न ऐसी पूर्ण स्पष्टता से मुझ पर प्रकट कर दिया है कि दमिश्क़ में कोई मसीह का समरूप पैदा नहीं होगा अपितु मेरे निकट संभव है कि भविष्य में विशेषकर दमिश्क में भी कोई मसीह का समरूप उत्पन्न हो जाए, परन्तु ख़ुदा तआला भली प्रकार जानता है तथा इस बात का साक्षी है कि उसने क़ादियान की दमिश्क से उपमा दी है और इन लोगों के बारे में यह फ़रमाता है कि ये यज़ीदी स्वभाव रखते हैं अर्थात अधिकतर वे लोग जो यहां निवास रखते हैं वे अपने स्वभाव में यज़ीदी लोगों के स्वभाव से समरूप हैं और यह इल्हाम भी समय से काफ़ी पहले हो चुका है कि

اِنَّا اَنْزَلْنٰهُ قَرِیْبًا مِّنَ الْقَادِیَان وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَ کَانَ وَعْدُ اللّٰہِ مَسْئُوْلًا۔

वाला था यही ज़करिया का बेटा यह्या है जिसे तुम ने नहीं पहचाना, परन्तु यहूदियों ने मसीह के इस कथन को कदापि स्वीकार नहीं किया अपितु विचार किया कि यह व्यक्ति तौरात की भविष्यवाणियों में नास्तिकता और परिवर्तन कर रहा है तथा अपने पेशवा को एक श्रेष्ठता देने के लिए प्रत्यक्ष अर्थों को तोड़-मरोड़ कर कुछ का कुछ बना रहा है। अत: प्रत्यक्षवादी होने के दण्ड ने यहूदियों को सत्य समझने से वंचित रखा और मात्र शब्दों पर बल देने तथा रूपक को वास्तविकता समझने के कारण उन्हें हमेशा की लानतों (फटकारों) का भंडार मिला हालांकि वे स्वयं को विवश

शेष हाशिया :- अर्थात् ''हमने उसे क़ादियान के निकट उतारा है और सत्य के साथ उतारा और सत्य के साथ उतरा और अल्लाह का वादा एक दिन पूरा होना था। इस इल्हाम पर गहन विचार करने से स्पष्ट होता है कि इस ख़ाकसार का ख़ुदा की ओर से क़ादियान में प्रकट होना इल्हामी किताबों में बतौर भविष्यवाणी पूर्व काल से लिखा गया था। अब चूँकि क़ादियान को अपनी एक विशेषता की दृष्टि से दमिश्क से उपमा दी गई तो इस से स्पष्ट तौर पर विदित होता है कि क़ादियान का नाम पूर्व कालीन पुस्तकों में रूपक के तौर पर दमिश्क रखकर भविष्यवाणी वर्णन की गई होगी, क्योंकि किसी हदीस की पुस्तक या पवित्र क़ुर्आन में क़ादियान का नाम लिखा हुआ नहीं पाया जाता तथा यह इल्हाम जो बराहीन अहमदिया में भी प्राकाशित हो चुका है बड़ी स्पष्टता और उच्च स्वर में प्रकट कर रहा है कि क़ादियान का नाम पवित्र क़ुर्आन में या नबी करीम स.अ.व. की हदीस में बतौर भविष्यवाणी अवश्य मौजूद है और चूँकि मौजूद नहीं तो इसके अतिरिक्त अन्य किस ओर ध्यान जा सकता है कि ख़ुदा तआला ने क़ादियान का नाम पवित्र क़ुर्आन या हदीस में किसी अन्य रूप में अवश्य लिखा होगा और अब जो एक नए इल्हाम से यह बात प्रमाणित हो गई कि क़ादियान की ख़ुदा ताआला के निकट समानता है तो उस पहले इल्हाम के अर्थ भी इस से स्पष्ट हो गए। मानो यह वाक्य जो अल्लाह तआला ने इल्हाम के तौर पर इस ख़ाकसार के हृदय पर बैठा रखा है कि

اِنَّا اَنْزَلْنَاہُ قَرِیْبًا مِّنَ الْقَادِیَانِ

समझते थे, क्योंकि उनकी दृष्टि बाइबल के प्रत्यक्ष शब्दों पर थी। खेद कि हमारे मुसलमान भ्राता भी इसी चक्रवात में फंसे हुए हैं और हज़रत मसीह के बारे में यहूदियों की भांति उनके हृदयों में भी यही विचार जमा हुआ है कि हम उन्हें वास्तव में आकाश से उतरते हुए देखेंगे और यह चमत्कार हम चश्मदीद देखेंगे कि हज़रत मसीह पीले रंग का लिबास पहने हुए आकाश से उतरते चले आते हैं तथा दाएं-बाएं उनके साथ फ़रिश्ते हैं और समस्त बाज़ारी लोग देहात के लोग एक बड़े मेले की तरह एकत्र होकर दूर से उन्हें देख रहे हैं और छोटे-बड़े चिल्ला-चिल्ला कर कह

शेष हाशिया :- इसकी व्याख्या यह है कि -

اِنَّا اَنْزَلْنَاهُ قَرِيْبًا مِّنْ دِمَشْق بِطَرفٍ شَرْقِیِّ عِنْدَ الْمَنَارَةِ الْبَیْضَآء

क्योंकि इस विनीत का निवास स्थान क़ादियान के पूर्वी किनारे पर है मीनार के पास। अत: ख़ुदा के इल्हाम का यह वाक्य कि

كَانَ وَعْدُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا

इस व्याख्या से पूर्णतया चरितार्थ होकर यह भविष्यवाणी निश्चित तौर पर पूरी हो जाती है। यह ख़ाकसार इस इबारत तक पहुँचा था कि यह इल्हाम हुआ -

قُلْ لَوْ كَانَ الْاَمْرُ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدْتُّمْ فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا قُلْ لَوِ التبع اللّٰه اَهْوَاءَ كُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتِ وَلْاَرْض و من فيهنّ و لبطلت حكمتة و كان اللّٰه عزِيْزًا حكِيما۔ قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمَاتِ رَبِّی لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمَاتُ رَبِّی وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا۔ قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰه فَاتَّبِعُوْنِی يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا۔

तत्पश्चात् इल्हाम किया गया कि इन विद्वानों ने मेरे घर को बदल डाला, मेरी

रहे हैं कि वह आए, वह आए, यहां तक कि दमिश्क के पूरवी मीनार पर उतर आए तथा सीढ़ी के द्वारा नीचे उतारे गए तथा परस्पर सलाम अलैक और कुशलता का आदान-प्रदान हुआ। आश्चर्य कि ये लोग नहीं सोचते कि संसार में कि जो परीक्षा-गृह है ऐसे चमत्कार कदापि प्रकटित नहीं होते अन्यथा इस्लाम का निमंत्रण परोक्ष पर ईमान लाने की सीमा से बाहर निकल जाए। हम इस से पूर्व उल्लेख कर चुके हैं कि मक्का के काफ़िरों ने इसी प्रकार का चमत्कार हमारे सरदार एवं पेशवा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम समस्त नबियों से श्रेष्ठ से भी मांगा था जिन्हें स्पष्ट

शेष हाशिया :- इबादतगाह (उपासना गृह) में इनके चूल्हे हैं, मेरे उपासना-गृह में उनके प्याले और ठूठियॉठ रखी हुई हैं और चूहों की तरह मेरे नबी की हदीसों को काट रहे हैं। (ठूठियां वे छोटी प्यालियाँ हैं जिन्हें हिन्दुस्तान में सकोरियों कहते हैं, उपासना-गृह (इबादतगाह) से अभिप्राय इस इल्हाम में वर्तमान युग के अधिकांश मौलवियों के हृदय हैं जो संसार से भरे हुए हैं) यहाँ मुझे याद आया कि जिस दिन वह उपरोक्त इल्हाम जिसमें, क़ादियान में उतरने की चर्चा है हुआ था, उस दिन कश्फ़ी तौर पर मैंने देखा कि मेरे स्वर्गीय भाई मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर मेरे निकट बैठकर ऊँचे, स्वर में पवित्र क़ुर्आन पढ़ रहे हैं और पढ़ते-पढ़ते उन्होंने इन वाक्यों को पढ़ा कि

اِنَّا اَنۡزَلۡنَاہُ قَرِیۡبًا مِنَ الۡقَادِیَان

तो मैंने सुनकर अत्यन्त आश्चर्य किया कि पवित्र क़ुर्आन में क़ादियान का नाम लिखा हुआ है, तब उन्होंने कहा कि यह देखो लिखा हुआ है। तब मैंने दृष्टि डालकर जो देखा तो ज्ञात हुआ कि वास्तव में पवित्र क़ुर्आन के दाएं पृष्ठ में शायद लगभग आधे के स्थान पर यही इल्हामी इबारत लिखी हुई मौजूद है, तब मैंने अपने हृदय में कहा कि हाँ निश्चित तौर पर क़ादियान का नाम पवित्र क़ुर्आन में लिखा हुआ है और मैंने कहा कि तीन शहरों का नाम सम्मान के साथ पवित्र क़ुर्आन में लिखा गया है मक्का, मदीना और क़ादियान। यह कश्फ़ था जो कई वर्ष पूर्व मुझे दिखाया गया था और इस कश्फ़ में जो मैंने अपने स्वर्गीय भाई साहिब को जो कई वर्ष हुए मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं, पवित्र क़ुर्आन पढ़ते देखा और इस इल्हामी वाक्य को उनके मुख

यह उत्तर दिया गया कि ऐसा होना ख़ुदा के नियम से बाहर है। खेद कि हमारी क़ौम के लोग रूपकों को वास्तविकता पर चरितार्थ करके कठिन जटिलताओं में फंस गए हैं और उन्हें ऐसी कठिनाइयों का सामना है कि अब उन से सरलतापूर्वक निकलना उन लोगों के लिए दुष्कर है और जो निकलने के मार्ग हैं वे उन्हें स्वीकार नहीं करते। उदाहरणतया सही मुस्लिम की हदीस में जो यह शब्द मौजूद है कि हज़रत मसीह जब आकाश से उतरेंगे तो उनका लिबास पीले रंग का होगा। इस शब्द को प्रत्यक्ष लिबास पर चरितार्थ करना कैसा निरर्थक विचार है। पीला रंग पहनने का कोई कारण

शेष हाशिया :- से पवित्र क़ुर्आन में पढ़ते सुना तो इसमें यह रहस्य गुप्त है जिसे ख़ुदा तआला ने मुझ पर प्रकट कर दिया कि उनके नाम से इस कश्फ़ की ताबीर का बहुत कुछ संबंध हैं, अर्थात उनके नाम में जो क़ादिर का शब्द आता है, इस शब्द को कश्फ़ी तौर पर प्रस्तुत करके यह संकेत किया गया है कि यह सर्वशक्तिमान का काम है इस से कुछ आश्चर्य नहीं करना चाहिए। उसकी क़ुदरत के चमत्कार इसी प्रकार पर हमेशा प्रकटित होते हैं कि वह निर्धनों और तिरस्कृत लोगों को सम्मान प्रदान करता है और बड़े-बड़े प्रतिष्ठित और महामना लोगों को मिट्टी में मिला देता है बड़े-बड़े प्रकाण्ड विद्वान उसके वरदान की चौखट से पूर्णतया वंचित और असफल रह जाते हैं, तथा एक अपमानित, तिरस्कृत, अनपढ़ अज्ञान, अयोग्य व्यक्ति को चुनकर मान्य लोगों के वर्ग में सम्मिलित कर लेता है। सदैव से उसका कुछ ऐसा ही स्वभाव है और अनादि काल से वह ऐसा ही करता चला आया है। यह अल्लाह की कृपा है जिसे चाहता है प्रदान करता है।

अब मैं यह हदीस जिसका अबूदाऊद ने अपनी पुस्तक (हदीस की पुस्तक) में उल्लेख किया है पाठकों के सामने प्रस्तुत करके उसके चरितार्थ की ओर उन्हें ध्यान दिलाता हूँ। अत: स्पष्ट रहे कि यह भविष्यवाणी जो अबूदाऊद की सही हदीस में लिखी है कि एक हारिस नामक व्यक्ति अर्थात 'हुर्रास' जो उस नहर के पीछे से अर्थात् समरक़न्द की ओर से निकलेगा जो आले रसूल को दृढ़ करेगा जिसकी सहायता और सहयोग प्रत्येक मोमिन पर अनिवार्य होगा। इल्हामी तौर पर मुझ पर

मालूम नहीं होता, परन्तु यदि इस शब्द को एक कश्फ़ी रूपक ठहरा कर स्वप्नों का परिणाम बताने वालों की रुचि और अनुभव के अनुसार उसका परिणाम निकालना चाहें तो यह परिणाम उचित होगा कि हज़रत मसीह अपने प्रकटन के समय अर्थात् उस समय में कि जब वह मसीह होने का दावा करेंगे कुछ बीमार होंगे तथा स्वास्थ्य की दशा अच्छी न होगी, क्योंकि स्वप्नफल संबंधी पुस्तकों की दृष्टि से पीले रंग का लिबास पहनने की यही व्याख्या है और स्पष्ट है कि कश्फ़ और स्वप्न की यही व्याख्या स्थिति के नितान्त अनुकूल और सर्वथा उचित और कल्पना के निकट है

शेष हाशिया :- प्रकट किया गया है कि यह भविष्यवाणी और मसीह के आने की भविष्यवाणी जो मुसलमानों का इमाम और मुसलमानों में से होगा, वास्तव में ये दोनों भविष्यवाणियों का विषय है और दोनों का चरितार्थ यही ख़ाकसार है। मसीह के नाम पर जो भविष्यवाणी है उसके विशेष लक्षण वास्तव में दो ही हैं। प्रथम - यह कि जब वह मसीह आएगा तो मुसलमानों की आन्तरिक अवस्था को जो उस समय अत्यधिक बिगड़ी हुई होगी, अपनी उचित शिक्षा से सुधार कर देगा तथा उनकी आध्यात्मिक दरिद्रता और आन्तरिक दरिद्रता को पूर्णतया दूर करके उनके समक्ष ज्ञानों, वास्तविकताओं तथा आध्यात्मिक बातों को रख देगा, यहाँ तक कि वे लोग उस दौलत को लेते-लेते थक जाएंगे और उनमें से कोई सत्याभिलाषी आध्यात्मिक तौर पर दरिद्र और निर्धन नहीं रहेगा अपितु जितने लोग सत्य के अभिलाषी हैं उन्हें सत्य का पवित्र आहार और मा'रिफ़त का मधुर रस बहुतात के साथ पिलाया जाएगा तथा सच्चे ज्ञान रूपी रत्नों से उनकी झोलियाँ भर दी जाएंगी और पवित्र क़ुर्आन की वास्तविकता और सार के इत्र से भरी हुई बोतलें उन्हें दी जाएंगी।

द्वितीय विशेष लक्षण यह है कि जब वह मसीह मौऊद आएगा तो सलीब को तोड़ेगा और सुअरों का वध करेगा तथा काने दज्जाल का वध कर देगा और जिस काफ़िर तक उसकी सांस की वायु पहुँचेगी वह तुरन्त मर जाएगा। अत: इस लक्षण की मूल वास्तविकता जो आध्यात्मिक तौर पर अभीष्ट है यह है कि मसीह संसार में आकर सलीबी धर्म की प्रतिष्ठा और वैभव को अपने पैरों के नीचे कुचल डालेगा

क्योंकि स्वप्नफल की पुस्तकों में स्पष्ट लिखा है कि स्वप्न या कश्फ़ी दृश्य में उसे पीले रंग को लिबास में देखा जाए तो उसका यह परिणाम निकालना चाहिए कि वह व्यक्ति बीमार है अथवा बीमार होने वाला है। काश यदि इस अन्वेषणात्मक रुचि के अनुसार हमारे व्याख्याकार और हदीस के विद्वान इस वाक्य की यही व्याख्या करते अर्थात् यह कहते कि जब मसीह प्रकट होकर प्रजा पर अपना मसीह मौऊद होना प्रकट करेगा तो उस समय उसके स्वास्थ्य की स्थिति अच्छी नहीं होगी अपितु अवश्य किसी प्रकार की शारीरिक बीमारी और कमज़ोरी लगी होगी जो उसके

शेष हाशिया :- और उन लोगों को जिनमें सुअरों जैसी निर्लज्जता और बेहयाई तथा विष्ठा खाना है, उन पर अकाट्य सबूतों द्वारा प्रहार करके उन सब का काम समाप्त करेगा और वे लोग जो केवल सांसारिक आँख रखते हैं परन्तु धर्म की आँख पूर्णतया नहीं रखते अपितु उसमें एक कुरूप फुल्ली निकली हुई है उन्हें स्पष्ट सबूतों की काटने वाली तलवार से आरोपित करके उनके नकारात्मक दुर्भाग्य का अन्त कर देगा और न केवल एक आँख वाले लोग, अपितु प्रत्येक काफ़िर जो मुहम्मद स.अ.व. के धर्म को तिरस्कार की दृष्टि से देखता है मसीही सबूतों की प्रतापी फूंक से आध्यात्मिक तौर पर मारा जाएगा। अतएव ये समस्त इबारतें रूपक के तौर पर आई हैं जो इस ख़ाकसार पर भली भाँति प्रकट की गई हैं। अब चाहे कोई इसे समझे या न समझे, परन्तु अन्तत: कुछ समय तक और प्रतीक्षा करके तथा अपनी निराधार आशाओं से पूर्ण निराशा की स्थिति में आकर एक दिन सब लोग इस ओर लौटेंगे। इस समय इन मसीही लक्षणों को लिखते-लिखते मुझे अपना एक सच्चा स्वप्न याद आ गया है और रुचि रखने वाले लोगों को आनन्दमग्न करने के लिए मैं उसे यहाँ लिखता हूँ -

एक बुज़ुर्ग अत्यन्त सदाचारी ख़ुदा के वलियों में से थे और ख़ुदा के वार्तालाप से भी सम्मानित थे, सुन्नत पर पूर्ण रूप से आचरण करने वाले तथा संयम और शुद्धता की समस्त पदों और श्रेणियों का ध्यान और दृष्टिगत रखने वाले थे और उन सदात्मा और व्यवहार कुशल लोगों में से थे जिन्हें

प्रकटन के लिए एक विशेष लिबास की तरह एक लक्षण और निशान होगी तो ऐसी व्याख्या क्या उत्तम, उचित और सर्वथा सत्य पर आधारित होती, परन्तु खेद कि हमारे विद्वानों ने ऐसा नहीं किया अपितु वे तो अपनी नितान्त सादगी और व्यर्थ विचारों के कारण बिल्कुल यहूदियों की भांति प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वास्तव में जब मसीह आकाश से उतरेगा तो उसके शरीर पर केसर के रंग से रंगा हुआ पीले रंग का लिबास होगा। यदि ऐसे विद्वानों को कभी ऐसा स्वप्न भी आया होता कि उन्होंने पीले रंग के कपड़े पहने हुए हैं तत्पश्चात् बीमार भी हो जाते तो आज उनकी दृष्टि

शेष हाशिया :- ख़ुदा ने अपनी ओर आकर्षित किया हुआ होता है तथा समय के नितान्त पाबन्द, ख़ुदा के स्मरण में लीन और तन्मय तथा उसी मार्ग में अनुरक्त थे, जिनका प्रसिद्ध और चिरपरिचित नाम अब्दुल्लाह ग़ज़नवी था। एक बार मैंने उस पवित्रात्मा महापुरुष को स्वप्न में उनके निधन के पश्चात् देखा कि सिपाहियों के रूप में बड़ी श्रेष्ठता और प्रतिष्ठा के साथ बड़े पहलवानों के समान हथियारबन्द होने की दशा में खड़े हैं, तब मैंने अपने कुछ इल्हामों की चर्चा करके उन से पूछा कि मैंने एक स्वप्न देखा है, उस का स्वप्नफल बताइए। मैंने स्वप्न में यह देखा है कि एक तलवार मेरे हाथ में है जिसका दस्ता मेरे हाथ में है और नोक आकाश तक पहुँची हुई है, जब मैं उसे दाईं ओर चलाता हूँ तो सहस्त्रों विरोधी उस से क़त्ल हो जाते हैं और जब बाईं ओर चलाता हूँ तो हज़ारों शत्रु उस से मारे जाते हैं, तब स्वर्गीय हज़रत अब्दुल्लाह साहिब रज़ि. मेरे इस स्वप्न को सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और हर्षोल्लास तथा चित्त की प्रफुल्लता के लक्षण और निशान उनके चेहरे पर प्रकट हो गए और फ़रमाने लगे कि इस स्वप्न की ता'बीर यह है कि ख़ुदा तआला आप से बड़े-बड़े काम लेगा और यह जो देखा कि दाईं ओर तलवार चलाकर विरोधियों को क़त्ल किया जाता है इस से अभिप्राय विवाद को पूर्ण रूप से सिद्ध करके अन्त करने का कार्य है कि आध्यात्मिक तौर पर प्रकाशों और कल्याणों द्वारा सम्पन्न होगा तथा यह जो देखा कि बाईं ओर तलवार

में हमारी ये बातें महत्वपूर्ण ठहरतीं, परन्तु कठिनाई तो यह है कि आध्यात्मिक कूचे का उन्हें ज्ञान ही नहीं, यहूदियों के विद्वानों की भांति प्रत्येक बात को भौतिक आकृति में ढालने चले जाते हैं परन्तु एक अन्य वर्ग भी है जिसे ख़ुदा तआला ने एक विवेक और बुद्धिमत्ता प्रदान की है कि वह आकाशीय बातों को आकाशीय प्रकृति के नियम के अनुसार समझना चाहते हैं तथा रूपकों और कल्पनाओं को मानते हैं परन्तु खेद कि वे लोग बहुत कम हैं और हमारी क़ौम में अधिकतर यही लोग बहुलता के साथ फैले हुए हैं जो भौतिक विचारों पर गिरे जाते हैं, नहीं समझते कि ख़ुदा तआला का

शेष हाशिया :- **चलाकर हज़ारों शत्रुओं को मारा जाता है इससे अभिप्राय यह है कि आप के माध्यम से बौद्धिक तौर पर ख़ुदा तआला प्रतिद्वन्दियों को आरोपित और निरुत्तर करेगा और संसार पर दोनों प्रकार से अपने विवाद को पूर्ण कर देगा। तत्पचात् उन्होंने फ़रमाया कि जब मैं संसार में था तो मैं आशा करता था कि ख़ुदा तआला अवश्य कोई ऐसा व्यक्ति पैदा करेगा, फिर स्वर्गीय हज़रत अब्दुल्लाह साहिब मुझे एक विशाल मकान की ओर ले गए जिसमें सदाचारियों और वलियों (ऋृषियों) का एक समूह बिराजमान था, परन्तु सभी हथियारबन्द सैनिकों के रूप में ऐसे सतर्क और सावधान बैठे हुए प्रतीत होते थे कि जैसे कोई युद्ध सेवा के लिए किसी ऐसे आदेश की प्रतीक्षा में बैठे हैं जो बहुत शीघ्र आने वाला है तत्पश्चात् आँख खुल गई।** यह सच्चा स्वप्न जो वास्तव में एक कश्फ़ का प्रकार है रूपक के तौर पर उन्हीं लक्षणों को सिद्ध कर रहे हैं जो मसीह के बारे में हम अभी वर्णन कर चुके हैं अर्थात् मसीह का सुअरों को वध करना और सामान्यतया समस्त काफिरों को मारना इन्हीं अर्थों की दृष्टि से है कि वह उन पर ख़ुदाई विवाद को पूर्णतया सिद्ध कर देगा तथा तर्कों की तलवार से उनको मारा देगा। शेष अल्लाह ही उचित को अधिक जानता है। और हारिस के नाम पर जो भविष्यवाणी है उसके पांच विशेष लक्षण वर्णन किए गए हैं । प्रथम - यह कि वह न तलवार के साथ न तीर के साथ अपितु अपनी ईमान की शक्ति और अपने दिव्य ज्ञान के प्रकाश और बरकतों के वर्णन के साथ सत्याभिलाषियों

सामान्य प्रकृति का नियम जो उसकी वह्यी और उसके कश्फ़ों के बारे में है उनके विचार के विपरीत स्पष्ट तौर पर साक्ष्य दे रहा है सैकड़ों बार स्वप्नों में देखा होता है कि एक वस्तु दृष्टिगोचर होती है और वास्तव में उस से अभिप्राय दूसरी वस्तु होती है। एक व्यक्ति को मनुष्य स्वप्न में देखता है कि वह आ गया और फिर प्रात: कोई उसका समरूप आ जाता है। नबियों के कलाम में उपमा के साथ रूपक के तौर पर बहुत सी बातें होती हैं। देखो हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी पतिवृत्ता पत्नियों मोमिनों की माताओं को कहा था कि

शेष हाशिया :- और सच्चाई के भूखों-प्यासों को दृढ़ता प्रदान करेगा और अपनी निष्कपट वीरता और मोमिनों वाली साक्ष्यों के कारण उन के पग को प्रशस्त कर देगा उसी के अनुसार क़ुरैश के मुसलमानों ने श्रेष्ठ मक्का में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई स्वीकार करके अपनी सम्पूर्ण शक्ति और ईमानी पूर्णता के लक्षण प्रदर्शित करके आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दा'वत (ख़ुदा की ओर बुलाना) के कार्य को शक्ति दे दी थी तथा मक्का में इस्लाम को स्थापित कर दिया था। द्वितीय लक्षण यह कि वह हारिस नहर के पीछे से होगा जिसका अर्थ यह है कि वह मूल रूप से समरक़न्द या बुख़ारा का होगा। तृतीय लक्षण - यह है कि वह ज़मीदारी वाले प्रतिष्ठित वंश में से तथा खेती करने वाला होगा। चतुर्थ लक्षण यह कि वह ऐसे समय में प्रकट होगा कि जिस समय आले मुहम्मद अर्थात सादात क़ौम में संयमी मुसलमान धर्म के किसी सहायक और योद्धा के मुहताज होंगे। आले मुहम्मद के शब्द में एक श्रेष्ठतम और पवित्र भाग की चर्चा करके समस्त लोग जो पवित्रता और शुद्धता में इस भाग से अनुकूलता रखते हैं उसी में सम्मिलित किए हैं जैसा कि धार्मिक मीमांसकों (जो धार्मिक मामलों को बौद्धिक तर्कों द्वारा सिद्ध करते हैं। अनुवादक) का यह सामान्य नियम है कि प्राय: एक वस्तु के एक भाग का वर्णन करके उस से कुल वस्तु अभिप्राय ली जाती है। पंचम लक्षण उस हारिस का यह है कि अमीरों और बादशाहों और लोगों के समूह को साथ लेकर प्रकट नहीं होगा अपितु उस उच्च श्रेणी के कार्य को सम्पन्न करने के लिए अपनी

तुम में से पहले उसका स्वर्गवास होगा जिसके हाथ लम्बे होंगे और उन समस्त घरवालों को इस हदीस के सुनने से यही विश्वास हो गया था कि वास्तव में लम्बे हाथों से अभिप्राय उनका लम्बा होना ही है यहाँ तक कि हुज़ूर स.अ.व. की उन पतिवृत्ता पत्नियों ने परस्पर हाथ नापने आरंभ कर दिए, परन्तु जब सब से पहले ज़ैनब रज़ि. का निधन हुआ तब उनकी समझ में आया कि लम्बे हाथों से अभिप्राय त्याग और दान की विशेषता है जो ज़ैनब रज़ि. पर सबकी तुलना में अधिक थी।

यह विचार कि आवागमन के तौर पर हज़रत मसीह इब्ने मरयम संसार में

शेष हाशिया :- क़ौम की सहायता का मुहताज होगा।

अब प्रथम हम अबू दाऊद की हदीस को उसके मूल शब्दों में वर्णन करके फिर जिस प्रकार उचित और पर्याप्त हो अपने बारे में उसका प्रमाण प्रस्तुत करेंगे। अत: स्पष्ट हो कि हदीस यह है

عن علی قال قال رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَخْرُجُ رَجُلٌ مِنْ
وَرَآءِ النَّهْرِ يُقَالُ لَهُ الْحَارِث حرَّاث عَلٰى مقدمته رجل يُقَالُ لَهٗ
مَنْصُوْرِ يَوْطن اَوْ يمكّن لِاٰلِ مُحَمَّد كما مَكَّنت قُرَيْش
لِرَسُولِ اللهِ صَلعم وَجَبَ عَلٰى كُلّ مُوْمِن نَصَرهٗ اَوْ قَالَ اجَابَته

अर्थात् अली कर्रमल्लाहो वज्हहू से रिवायत है कि कहा - कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि एक व्यक्ति नहर के पीछे से निकलेगा अर्थात् बुख़ारा या समरक़न्द उसका मूल देश होगा तथा वह हारिस के नाम से पुकारा जाएगा अर्थात् अपने पूर्वजों के व्यवसाय की दृष्टि से लोकाचार में या उस सरकार की दृष्टि में हारिस अर्थात् एक ज़मींदार कहलाएगा फिर आगे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि हारिस क्यों कहलाएगा, इस कारण से कि वह हुर्रास होगा अर्थात् विशिष्ट ज़मींदारों में से होगा और खेती करने वालों के एक प्रतिष्ठित वंश के व्यक्ति में गणना होगी, तत्पश्चात् फ़रमाया कि उसकी सेनाएं अर्थात् उसकी जमाअत का सरदार और नायक एक सामर्थ्यवान व्यक्ति होगा जिसे

आएंगे सर्वाधिक खण्डनीय और लज्जाजनक है। आवागमन के मानने वाले तो संसार में ऐसे व्यक्ति का पुनरागमन मानते हैं जिसकी आत्मशुद्धि में कुछ कमी रह गई हो, परन्तु जो लोग पूर्णतया बहुत सी विशेषताओं के पड़ाव तय करके इस संसार से कूच करते हैं वे उनके विचारानुसार एक दीर्घ अवधि के लिए मुक्ति-गृह में प्रविष्ट किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त हमारी आस्थानुसार स्वर्ग में रहने वालों के लिए यह ख़ुदा तआला का वादा है कि वे उससे कभी निकाले नहीं जाएंगे। फिर आश्चर्य कि हमारे विद्वान क्यों हज़रत मसीह को उस सर्वोच्च स्वर्ग से निकालना चाहते हैं, स्वयं

शेष हाशिया :- आकाश पर मन्सूर के नाम से पुकारा जाएगा क्योंकि ख़ुदा तआला उसके सेवकीय इरादों का जो उसके हृदय में होंगे स्वयं सहायक होगा। यहाँ यद्यपि उस मन्सूर को सेनापति के तौर पर वर्णन किया है, परन्तु यहाँ वास्तव में कोई प्रत्यक्ष युद्ध और लड़ाई अभिप्राय नहीं है अपितु यह एक आध्यात्मिक सेना होगी जो उस हारिस को दी जाएगी जैसा कि कश्फ़ी अवस्था में इस ख़ाकसार ने देखा कि मनुष्य के रूप में दो व्यक्ति एक मकान में बैठे हैं। एक पृथ्वी पर और एक छत के निकट बैठा है। तब मैंने उस व्यक्ति को जो पृथ्वी पर था सम्बोधित करके कहा कि मुझे एक लाख सेना की आवश्यकता है परन्तु वह खामोश रहा और उसने कुछ भी उत्तर न दिया, तब मैंने उस दूसरे व्यक्ति की ओर मुख फेरा जो छत के निकट और आकाश की ओर था और उसे मैंने सम्बोधित करके कहा कि मुझे एक लाख सेना की आवश्यकता है वह मेरी इस बात को सुनकर बोला कि एक लाख नहीं मिलेगी परन्तु पाँच हज़ार सैनिक दिए जाएंगे, तब मैंने अपने हृदय में कहा यद्यपि पाँच हज़ार थोड़े लोग हैं परन्तु यदि ख़ुदा तआला चाहे तो थोड़े अधिक पर विजयी हो सकते हैं। उस समय मैंने यह आयत पढ़ी -

كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةً بِإِذْنِ اللّٰهِ

(अलबक़रह : 250)

फिर वह मन्सूर मुझे कश्फ़ी हालत में दिखाया गया और कहा गया कि

ही ये क़िस्से सुनाते हैं कि हज़रत इदरीस ने जब मौत के फ़रिश्ते से आज्ञा लेकर स्वर्ग में प्रवेश किया तो मौत के फ़रिश्ते ने चाहा कि फिर बाहर आएं, परन्तु हज़रत इदरीस ने बाहर आने से इन्कार किया और यह आयत सुना दी -

وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ (अलहिज्र - 49)

अब मैं पूछता हूँ कि क्या हज़रत मसीह इस आयत से लाभान्वित होने के पात्र नहीं हैं, क्या यह आयत उनके पक्ष में निरस्त का आदेश रखती है और यदि यह कहा

शेष हाशिया :- समृद्धिशाली (खुशहाल) है, खुशहाल (समृद्धिशाली) है परन्तु ख़ुदा तआला की किसी गुप्त युक्ति ने मेरी दृष्टि को उसे पहचानने से असमर्थ रखा परन्तु आशा रखता हूँ कि किसी अन्य समय दिखाया जाए। अब हदीस का शेष अनुवाद यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि वह हारिस जब प्रकट होगा तो वह (आले मुहम्मद वाक्य की व्याख्या हो चुकी है) शक्ति और दृढ़ता प्रदान करेगा और उनकी शरण बन जाएगा अर्थात् ऐसे समय में कि जब मोमिन असहाय होंगे और इस्लाम धर्म लाचारी की अवस्था में पड़ा होगा और चारों ओर से विरोधियों के प्रहार आरम्भ होंगे। यह व्यक्ति इस्लाम का सम्मान स्थापित करने के लिए अपनी पूर्ण शक्ति के साथ उठेगा तथा मोमिनों को अज्ञानियों के मुख से बचाने के लिए ईमानी जोश के साथ खड़ा होगा और इरफ़ान (दिव्य ज्ञान) के प्रकाश से शक्ति पाकर उन्हें विरोधियों के प्रहारों से बचाएगा और उन सब को अपनी सहायता में ले लेगा और उन्हें ऐसा ठिकाना देगा जैसा क़ुरैश ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दिया था अर्थात् शत्रु के प्रत्येक आरोप तथा प्रत्येक प्रश्न और प्रत्येक सबूत के मांगने के समय सब मोमिनों के लिए ढाल की तरह हो जाएगा और अपने उस दृढ़ ईमान से जो उसने नबी के अनुसरण से प्राप्त किया है अबू बकर सिद्दीक़, उमर फ़ारूक और अली हैदर की तरह इस्लामी बरकतों और दृढ़ताओं का प्रदर्शन कर मोमिनों के अमन में आ जाने का कारण होगा। प्रत्येक मोमिन पर अनिवार्य है कि उसकी सहायता करे अथवा यह कि उसे स्वीकार करे। यह इस बात

जाए कि वह इसलिए इस अवनति की अवस्था में भेजे जाएंगे कि कुछ लोगों ने उन्हें अकारण ख़ुदा बनाया था तो यह उनका दोष नहीं है

لَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰی (अलअन्आम - 165)

इसके अतिरिक्त यह बात भी अत्यन्त विचार करने योग्य है कि यह विचार कि वास्तव में मसीह इब्ने मरयम ही स्वर्ग से निकल कर संसार में आ जाएंगे क़ुर्आनी विवरण और व्याख्या के बिल्कुल विपरीत है। पवित्र क़ुर्आन तीन स्थानों पर हज़रत

शेष हाशिया :- की ओर संकेत है कि उस हारिस के सुपुर्द एक ऐसा महान सिलसिला किया जाएगा जिसमें कौम की सहायता की आवश्यकता होगी जैसा कि हम 'फ़तह इस्लाम' पुस्तक में उस सिलसिले की पाँचों शाखाओं का विस्तृत वर्णन कर आए हैं और यहाँ यह भी समझाया गया है कि वह हारिस बादशाहों या अमीरों में से नहीं होगा कि ऐसे खर्चों को स्वयं वहन कर सके और इस सख्त आदेश से इस बात की ओर भी संकेत है कि उस हारिस के प्रकटन के समय जो मसीह के समरूप (मसील) होने का दावा करेगा लोग परीक्षा में पड़ जाएंगे और उनमें से बहुत से लोग विरोध करने पर खड़े हो जाएंगे और सहायता देने से रोकेंगे अपितु प्रयास करेंगे कि उसकी जमाअत तितर-बितर हो जाए, इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहले से ज़ोर देते हुए फ़रमाते हैं कि हे मोमिनों तुम पर उस हारिस की सहायता अनिवार्य है। ऐसा न हो कि तुम किसी के बहकाने से उस सौभाग्य से वंचित रह जाओ। यहाँ ख़ुदा के पैग़म्बर ने जो वर्णन किया कि मोमिनों को उसके प्रकटन से दृढ़ता प्राप्त होगी और उसके मैदान में खड़े होने से उस तितर-बितर हो चुकी जमाअत में एक दृढ़ता आ जाएगी और वह उनके लिए ढाल की भाँति हो जाएगा तथा उनकी दृढ़ता का कारण होगा जिस प्रकार मक्का में इस्लाम की दृढ़ता के लिए महान सहाबा कारण हो गए थे। यह इस बात की ओर संकेत है कि वह तलवार और कुल्हाड़ी से इस्लाम की सहायता नहीं करेगा और न इस कार्य के लिए भेजा जाएगा, क्योंकि मक्का में बैठकर क़ुरैश के मोमिनों ने आँहज़रत सल्लल्लाहु

मसीह की मृत्यु हो जाने के बारे में स्पष्ट तौर पर वर्णन करता है तथा हज़रत मसीह की ओर से यह आपत्ति प्रस्तुत करता है कि ईसाइयों ने जो उन्हें अपने विचार में ख़ुदा बनाया तो इस से मसीह पर कोई आरोप नहीं, क्योंकि उनका इस पथ-भ्रष्टता के समय से पूर्व निधन हो चुका था। अत: क़ुर्आन की शिक्षा तो यह है कि मसीह का बहुत समय पूर्व निधन हो चुका है। अब यदि हमारे विद्वानों को पवित्र क़ुर्आन की तुलना में हदीसों से अधिक प्रेम है तो उनका कर्तव्य है कि हदीसों के ऐसे अर्थ करें जिन से पवित्र क़ुर्आन के विषय का असत्य होना अनिवार्य न हो। मेरे विचार में

शेष हाशिया :- अलैहि वसल्लम की जो सहायता की थी जिसमें किसी अन्य जाति का कोई व्यक्ति सम्मिलित नहीं था सिवाए इक्का-दुक्का के। वह केवल ईमानी और दिव्य शक्ति की सहायता थी, न म्यान से कोई तलवार बाहर निकाली गई थी और न कोई भाला हाथ में पकड़ा गया था अपितु उन्हें शारीरिक मुक़ाबला करने से सख़्त मनाही थी, उनके पास केवल ईमानी शक्ति और दिव्य ज्ञान का प्रकाश रूपी चमकदार शस्त्र तथा उन शस्त्रों के जौहर जो धैर्य, स्थायित्व, प्रेम, निष्कपटता, प्रतिज्ञा-पालन, आध्यात्म ज्ञान और उच्च धार्मिक सच्चाइयाँ विद्यमान थीं लेगों को दिखाते थे, गालियाँ सुनते थे, प्राण की धमकियों द्वारा भयभीत किए जाते थे और भिन्न-भिन्न प्रकार के अपमान देखते थे परन्तु प्रेम के नशे में कुछ ऐसे बेसुध थे कि किसी ख़राबी की परवाह नहीं करते थे तथा किसी विपत्ति पर हताश नहीं होते थे। सांसारिक जीवन की दृष्टि से उस समय आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास क्या रखा था जिसकी आशा पर वे अपने प्राणों और सम्मानों को खतरे में डालते तथा अपनी क़ौम से पुराने और लाभप्रद सम्बन्धों को तोड़ लेते। उस समय तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तंगी और दरिद्रता, न कोई पूछने वाला न कोई परिचित, अज्ञातवास का युग था और भविष्य की आशाएं बाँधने के लिए किसी प्रकार की संभावनाएं और लक्षण मौजूद न थे। अत: उन्होंने उस असहाय दरवेश का (जो वास्तव में एक महान बादशाह था) ऐसे जटिल युग में वफ़ादारी के साथ प्रेम और अनुराग से बहरे हो चुके हृदय से जिस युग में जो दामन

जहाँ तक मैं सोचता हूँ निश्चित तौर पर यह बात हृदय में अंकित है कि अब तक हमारे मौलवियों ने हदीसों को क़ुर्आन के साथ अनुकूलता देने के लिए लेशमात्र ध्यान नहीं दिया जिस ओर किसी संयोग से विचार चला उसी पर बल देते गए हैं। मैं निश्चित ही जानता हूँ कि हमारे विद्वानों के लिए यह बात कुछ सरल या आसान नहीं कि वे पवित्र क़ुर्आन और अपने विचारों में उन्होंने जो प्रत्यक्ष शब्द हदीसों से निकाले हैं उनकी अनुकूलता और समानता दिखा सकें, अपितु जिस समय वे इस ओर ध्यान देंगे तो उन के हृदय का प्रकाश अथवा यों कहो कि उनकी अन्तरात्मा

शेष हाशिया :- पकड़ा भविष्य के प्रताप की तो क्या आशा स्वयं उस सुधारक के कुछ दिनों में प्राण जाते दिखाई देते थे यह वफ़ादारी का सम्बन्ध मात्र ईमानी शक्ति के जोश से था जिसकी मस्ती से वे अपने प्राण न्यौछावर करने के लिए खड़े हो गए जैसे अत्यन्त प्यासा मधुर झरने पर सहसा खड़ा हो जाता है। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं। इसी प्रकार जो वह हारिस आएगा तो वह मोमिनों को तीर और फरसे से सहायता नहीं देगा अपितु क़ुरैश के मोमिनों की उस विशेष स्थिति और उस विशिष्ट वृत्तान्त की भाँति जो उन पर मक्का में गुज़रता था जबकि उनके साथ अन्य जातियों में से कोई न था और न शस्त्र प्रयोग किए जाते थे अपितु केवल ईमानी शक्ति तथा अध्यात्म ज्ञान रूपी प्रकाश की रश्मियाँ अपने वार्तालाप और आचरण से दिखा रहे थे और उन्हीं के माध्यम से विरोधियों को प्रभावित कर रहे थे, उस हारिस का भी मोमिनों को अपनी शरण में लाने के बारे में यही ढंग होगा कि वह अपनी ईमानी शक्ति तथा दिव्य प्रकाश के लक्षण और झलक दिखा कर विरोधियों को निरुत्तर करेगा तथा अभिलाषी हृदयों पर उसका प्रभाव डालेगा, उसकी ईमानी शक्ति और दिव्य ज्ञान के प्रकाश का झरना जैसा कि वीरता, स्थायित्व, श्रद्धा, निष्ठा, प्रेम और वफ़ा की दृष्टि से बहता होगा इसी प्रकार आध्यात्मिक बातों का वर्णन करने तथा आध्यात्मिक और बौद्धिक तर्कों को विरोधियों पर पूर्ण करने के लिए बड़े वेग से जारी होगा और वह झरना उसी झरने का समरूप होगा जो क़ुरैश के पवित्र बुज़ुर्गों सिद्दीक़ [रज़ि.] फ़ारूक़ [रज़ि.] और अली मुर्तज़ा [रज़ि.] को

स्वयं उन्हें आरोपित करेगी कि वे उन विचारों को जो शारीरिक तौर पर उनके हृदयों में समाए हुए हैं क़ुर्आन के नितान्त स्पष्ट और असंदिग्ध आदेशों से कदापि कदापि अनुकूलता नहीं कर सकते और न पवित्र क़ुर्आन की उन आयतों में व्याख्या का कोई मार्ग खोल सकते हैं और यह बात स्वयं स्पष्ट है कि जब कोई हदीस अपने किसी अर्थ की दृष्टि से पवित्र क़ुर्आन के अत्यन्त स्पष्ट आदेशों से विपरीत हो तो पवित्र क़ुर्आन पर ईमान लाना प्राथमिक है क्योंकि हदीस की श्रेणी पवित्र क़ुर्आन की श्रेणी से कदापि समान नहीं तथा जो कुछ हदीसों के बारे में ऐसे संशय उत्पन्न हो

शेष हाशिया :- मिला था जिन के ईमान को आकाश के फ़रिश्ते भी आश्चर्य की दृष्टि से देखते थे तथा जिनके शुद्ध इरफ़ान में से इतने ज्ञान, प्रकाश, बरकत वीरता और दृढ़ता के झरने निकले थे कि जिसका अनुमान लगाना मनुष्य का कार्य नहीं। अत: हमारे सरदार, पेशवा (स.अ.व.) फ़रमाते हैं कि वह हारिस भी जब आएगा तो उसी ईमानी झरने और इरफ़ान के उदगम से क़ौम के पौधों की सिंचाई करेगा तथा उनके मुरझाए हुए हृदयों को पुन: ताज़ा करेगा तथा विरोधियों के अनुचित आरोपों को अपनी सच्चाई के पैरों के नीचे कुचल डालेगा, तब इस्लाम पर अपनी प्रतिष्ठा और श्रेष्ठता प्रदर्शित करेगा और निर्ल्लज्ज सुअर वध किए जाएंगे तथा मोमिनों को वह सम्मान का स्थान प्राप्त होगा जिसके वे पात्र हैं। अत: हदीस की यह व्याख्या है जिसका हमने यहाँ उल्लेख कर दिया तथा इसी की ओर वह इल्हाम संकेत करता है जो बराहीन अहमदिया में लिखा जा चुका है -

بخرام کہ وقت تو نزدیک رسید
و پائے محمدیان برمنار ترمحکم افتاد

और इसी की ओर वह इल्हाम भी संकेत करता है जो इस ख़ाकसार के बारे में एक हदीस के अनुसार भविष्यवाणी के तौर पर इस ख़ाकसार के पक्ष में है ख़ुदा तआला ने वर्णन किया है जिसका उल्लेख बराहीन अहमदिया में है और वह यह है -

لَوْكَانَ الْاِيْمَانُ معلقا بالثّريا لنا له رجلٌ مِنْ فَارس اَنَّ الَّذِيْنَ كفروا

सकते हैं जो हदीसों की प्रमाणिकता के स्तर को कमज़ोर करें इन आशंकाओं में से क़ुर्आन के बारे में एक भी लागू नहीं हो सकती। अत: क्यों न हम हर हाल में पवित्र क़ुर्आन को ही प्राथमिकता दें जिसकी प्रमाणिकता पर समस्त क़ौम की सहमति और जिसके सुरक्षित चले आने के लिए श्रेष्ठ श्रेणी के सबूत हमारे पास हैं तथा हमारे विद्वानों पर यह बात आवश्यक और अनिवार्य है कि इस से पूर्व कि इस बारे में इस विनीत पर कोई आरोप लगाएं प्रथम पवित्र क़ुर्आन और हदीसों के लेखों में पूर्णरूप से सदृश्यता और अनुकूलता करके दिखा दें और हमें बौद्धिक तौर पर समझा दें कि

शेष हाशिया :- وصدُّو اعن سبيل الله ردَّ عليهم رجل من فارس شكر الله سعيه خُذوا التوحيد التوحيد ياابناء الفارس

इस इल्हाम में नितान्त स्पष्ट तौर पर वर्णन किया गया है कि वह फ़ारसी मूल से जिसका दूसरा नाम हारिस भी है एक यह बड़ी विशेषता रखता है कि उसका ईमान अत्यन्त सुदृढ़ है यदि ईमान सुरैया सितारे पर भी होता तो वह मर्द उसे वहीं पा लेता। ख़ुदा उसका कृतज्ञ है कि उसने इस्लाम धर्म के इन्कार करने वालों के समस्त आरोपों और सन्देहों का खण्डन किया तथा समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण कर दिया। एकेश्वरवाद की शिक्षा दो और एकेश्वरवाद जो संसार में पतन के साथ ही लुप्त होता जा रहा है उसे दृढ़तापूर्वक पकड़ लो कि यही सर्व प्रमुख है और लोग इसे ही भूल गए। यहाँ ابنइब्न के स्थान पर ابناءअब्नाअ का शब्द प्रयोग किया गया जबकि सम्बोधित केवल एक व्यक्ति है अर्थात् यह ख़ाकसार। यह ख़ुदा तआला की ओर से सम्मान के तौर पर है, जिस प्रकार कि कुछ हदीसों में इस हदीस के स्थान पर लَوْكَانَ الْاِيْمَانُ معلّقًا ما لثّريّا لَنَالَهٗ رجلٌ مِنْ فَارِسٍ है رجال من فارِسٍ लिखा है वह भी वास्तव में इस सम्मान के इरादे के कारण है अन्यथा प्रत्येक स्थान पर वास्तव में رجُلٌ (एक वचन में) ही अभिप्राय है। इस सम्पूर्ण जांच-पड़ताल से ज्ञात हुआ कि हारिस के बारे में हदीसों में यही उत्तम लक्षण है कि संसार में ईमान के आदर्श के साथ आएगा तथा अपनी ईमानी शक्ति की शाखाएं और

पवित्र क़ुर्आन जिस स्थिति में नितान्त स्पष्ट तौर पर हज़रत मसीह के मृत्युप्राप्त होने को स्वीकार करता है तो उनकी मृत्यु हो चुकने और स्वर्ग में प्रविष्ट हो जाने के बावजूद फिर क्योंकर उनका वह पार्थिव शरीर जो पवित्र क़ुर्आन के नितान्त स्पष्ट आदेशानुसार पृथ्वी में दफ़्न हो चुका आकाश से उतर आएगा और यहाँ केवल पवित्र क़ुर्आन ही उनके मुद्दे के विपरीत नहीं अपितु प्रमाणित हदीसें ही विपरीत और विरुद्ध हैं। उदाहरणतया बुख़ारी की यह हदीस कि जो

اِمَامُکُمْ مِنْکُمْ

शेष हाशिया :- उसके फल प्रकट करके कमज़ारों को शक्ति प्रदान करेगा तथा कमज़ोरों को संभाल लेगा परन्तु मोमिनों के लिए आँख का प्रकाश और कलेजे की ठण्डक की भाँति शान्ति, संतुष्टि और सन्तोष का कारण होगा तथा ईमानी ज्ञानों का शिक्षक बन कर क़ौम में ईमान के प्रकाश को फैलाएगा तथा हम पुस्तक 'फ़तह इस्लाम में उल्लेख कर आए हैं कि वास्तव में मसीह भी ईमानी मा'रिफ़त की शिक्षा देने वाला और ईमानी शिक्षक था और यह भी व्यक्त कर आए हैं कि मसीह भी प्रत्यक्ष लड़ाइयों के लिए नहीं आएगा अपितु बुख़ारी ने उसका लक्षण يضع الحرب (लड़ाई को स्थगित करेगा) लिखा है और यह कि उसके द्वारा वध किया जाना अपनी सांसों की हवा से होगा न कि तलवार से अर्थात् स्पष्ट बातों से आध्यात्मिक तौर पर वध करेगा। अत: मसीह और हारिस इन दोनों लक्षणों में एक होना इस बात पर ठोस सबूत है कि हारिस और मसीह मौऊद वास्तव में एक ही हैं और यह हारिस मौऊद का प्रथम लक्षण है जिसका हमने उल्लेख किया है अर्थात् वह न तलवार के साथ न तीर के साथ अपितु अपनी ईमानी शक्ति के साथ तथा अपने आध्यात्मिक ज्ञान के प्रकाशों के साथ अपनी क़ौम को दृढ़ता प्रदान करेगा जिस प्रकार क़ुरैश अर्थात् सिद्दीक़ रज़ि. (अबू बक़र), फ़ारूक रज़ि. (उमर), हैदर रज़ि. (अली) तथा मक्का के अन्य मोमिनों ने इन्हीं सुदृढ़ विशेषताओं के साथ श्रेष्ठ मक्का में अहमद के धर्म के पैर जमा दिए थे।

है यदि कष्ट कल्पना की कसौटी पर न चढ़ाया जाए और जैसा कि हदीस के प्रत्यक्ष शब्द हैं उन्हीं के अनुसार अर्थ लिए जाएं तो स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि इस हदीस के प्रत्यक्ष तौर पर यही अर्थ हैं कि वह तुम्हारा इमाम होगा और तुम में से ही होगा अर्थात् एक मुसलमान होगा न यह कि वास्तव में हज़रत मसीह इब्ने मरयम जिस पर इंजील उतरी है जिसे एक पृथक उम्मत दी गई आकाश से उतर आएगा। यहाँ स्मरण रखना चाहिए कि इमाम मुहम्मद इस्माईल साहिब जो अपनी सही बुख़ारी में आने वाले मसीह के बारे में केवल इतना वर्णन करके ख़ामोश हो गए कि

शेष हाशिया :- इस प्रथम लक्षण का प्रमाण इस ख़ाकसार के बारे में प्रत्येक विचारशील व्यक्ति पर स्पष्ट होगा कि यह ख़ाकसार इसी ईमान की शक्ति के जोश से सामान्य रूप से इस्लाम का निमंत्रण देने के लिए खड़ा हुआ तथा लगभग बारह हज़ार विज्ञापनों को रजिस्टर्ड डाक द्वारा समस्त जातियों के पेशवाओं और प्रमुखों तथा देश के शासकों के नाम भेजा, यहाँ तक कि एक पत्र और एक विज्ञापन रजिस्टर्ड डाक द्वारा बर्तानवी सरकार के उत्तराधिकारी राजकुमार के नाम भी प्रेषित किया, एक प्रति विज्ञापन और पत्र की बर्तानवी प्रधान मंत्री ग्लैस्टोन के नाम भी प्रेषित की गई इसी प्रकार राजकुमार बिस्मार्क के नाम तथा अन्य प्रतिष्ठित अमीरों, शासकों के नाम भिन्न-भिन्न देशों में विज्ञापन और पत्र भेजे गए जिन से एक बक्सा भरा हुआ है तथा स्पष्ट है कि यह कार्य ईमान की शक्ति के अभाव में सम्पन्न नहीं हो सकता। यह बात अपनी बड़ाई के तौर पर नहीं अपितु वास्तविकता के अभिव्यक्ति के तौर पर है ताकि सत्य के अभिलाषियों पर कोई बात संदिग्ध न रहे। इसके अतिरिक्त ईमान की शक्ति के जो प्रकाश परोक्ष से सहायता के रूप में बतौर अद्भुत चमत्कार प्रकट होते हैं जो ख़ुदा तआला की कृपा, दया, और सानिध्य को सिद्ध करते हैं उनके बारे में भी उन्हीं विज्ञापनों में लिखा गया है। इस ख़ाकसार को ये सब अनुकम्पाएं ईमानी शक्ति तथा सद्मार्ग पर कार्यरत होने के कारण विशेष तौर पर प्रदान की गई हैं, किसी विरोधी धर्म को यह पद कदापि प्राप्त नहीं, यदि है तो वह मुक़ाबले के लिए खड़ा हो तथा अपनी आध्यात्मिक बरकतों की जो उसे अपने धर्म

اِمَامُکُمۡ مِنۡکُمۡ

स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि हज़रत इस्माईल बुख़ारी साहिब का वास्तव में यही मत था कि वह इस बात को कदापि नहीं मानते थे कि मसीह इब्ने मरयम वास्तव में आकाश से उतर आएगा अपितु उन्होंने इस वाक्य में जो

اِمَامُکُمۡ مِنۡکُمۡ

है, नितान्त स्पष्ट तौर पर अपना व्यक्त कर दिया है इसी प्रकार हज़रत बुख़ारी साहिब ने अपनी सही बुख़ारी में मे'राज की हदीस में जो हमारे सरदार एवं पेशवा

शेष हाशिया :- के अनुसरण द्वारा प्राप्त हों इस ख़ाकसार से तुलना करे, परन्तु आज तक कोई मुक़ाबला के लिए नहीं उठा और न कमज़ोर तथा तुच्छ मनुष्य की यह शक्ति है कि केवल अपने छल-कपट की योजना अथवा द्वेषपूर्ण हठधर्मी से इस सिलसिले के सामने खड़ा हो सके जिसे ख़ुदा तआला ने अपने हाथ से स्थापित किया है। मैं सत्य कहता हूँ कि यदि कोई इस सिलसिले के सामने अपनी बरकतों के प्रदर्शन हेतु खड़ा हो तो नितान्त घोर अपमान के गढ़े में गिरा दिया जाएगा, क्योंकि यह कार्य और यह सिलसिला मनुष्य की ओर से नहीं अपितु उस शक्तिशाली और प्रतापवान हस्ती (ख़ुदा) की ओर से है जिसके हाथों ने आकाशों को उन के समस्त पिण्डों के साथ बनाया और पृथ्वी को उसके निवासियों के लिए बिछा दिया। खेद कि हमारी क़ौम के मौलवी और विद्वान यों तो काफ़िर कहने के लिए अतिशीघ्र काग़ज़ और क़लम-दवात लेकर बैठ जाते हैं परन्तु तनिक भी नहीं सोचते कि क्या यह भय और दबदबा असत्य में हुआ करता है कि सम्पूर्ण विश्व को मुक़ाबले के लिए कहा जाए तथा कोई सामने न आ सके, क्या वह वीरता और स्थायित्व किसी ने झूठों में भी देखी है जो एक विद्वान के सामने यहाँ प्रकट की गई। यदि उन्हें सन्देह है तो इस्लाम के विरोधियों के जितने पेशवा, उपदेशक और शिक्षक हैं उनके द्वार पर जाएं तथा अपनी दूषित विचारधाराओं का सहारा देकर उन्हें मेरे मुक़ाबले पर आध्यात्मिक बातों के मुक़ाबले के लिए खड़ा करें, फिर देखें कि ख़ुदा तआला मेरी

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आकाश पर दूसरे नबियों से मुलाक़ात के वृत्तान्त का उल्लेख किया है तो वहाँ हज़रत ईसा का विशेष तौर पर पार्थिव शरीर के साथ होना कदापि वर्णन नहीं किया अपितु जैसे हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा की रूह से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुलाक़ात का उल्लेख किया है इसी प्रकार लेशमात्र अन्तर के बिना हज़रत ईसा की रूह से मुलाक़ात का वर्णन किया है अपितु हज़रत मूसा की आत्मा (रूह) का स्पष्ट तौर पर आँहज़रत स.अ.व. से वार्तालाप करना विस्तारपूर्वक उल्लेख किया है। अत: इस हदीस को पढ़कर कुछ सन्देह नहीं हो सकता कि यदि हज़रत मसीह शरीर के साथ आकाश की ओर उठाए

शेष हाशिया :- सहायता करता है या नहीं। हे ख़ुश्क मौलवियो! और बिद्अतपूर्ण संयमियो तुम पर खेद कि तुम्हारी आँखें जन सामान्य से अधिकता क्या उनके बराबर भी नहीं देख सकती। स्वयं ही ये हदीसें सुनाते हो कि अलआयातो बा'दलमिअतैन (الايات بعد المأتين) और कहते हो कि बारह सौ वर्ष के पश्चात् मसीह मौऊद इत्यादि निशानियों का प्रकट होना आवश्यक है अपितु तुम में से वे मौलवी भी हैं जिन्होंने शर्त के तौर पर पुस्तकें लिख डालीं और प्रकाशित भी करा दीं कि चौदहवीं सदी (हिज्री) के प्रारंभ में मसीह और महदी-ए-मौ'ऊद का प्रकट होना आवश्यक है, परन्तु जब ख़ुदा तआला ने अपने पवित्र निशानों को प्रकट किया तो सर्वप्रथम इन्कारी तुम ही ठहरे।

तथा ईमानी शक्ति के लक्षणों में से जो इस ख़ाकसार को दी गई है दुआ की स्वीकारिता भी है। इस ख़ाकसार पर प्रकट किया गया है कि जो बात इस ख़ाकसार की दुआ के द्वारा रोकी जाए वह किसी अन्य माध्यम से स्वीकार नहीं हो सकती और जो द्वार इस ख़ाकसार के द्वारा खोला जाए वह किसी अन्य माध्यम से बन्द नहीं हो सकता, परन्तु ये स्वीकारिता की बरकतें केवल न लोगों पर अपना प्रभाव डालती हैं जो घनिष्ट मित्र अथवा जघन्य शत्रु हों। जो व्यक्ति पूर्ण श्रद्धा से आता है अर्थात् ऐसी श्रद्धा जिसमें किसी प्रकार की गुप्त अशुद्धता न हो जिसका परिणाम बदगुमानी और कुधारणा नहीं, जिसमें किसी गुप्त द्वैमुखता का विष नहीं वह

गए हैं तो फिर इसी प्रकार हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा इत्यादि नबी भी इस पार्थिव शरीर के साथ उठाए गए होंगे। क्योंकि मे'राज की रात में वे समस्त नबी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक ही रूप में आकाशों पर दिखाई दिए हैं, यह नहीं कि कोई विशेष वर्दी अथवा हज़रत मसीह को पार्थिव शरीर के साथ उठाए जाने का कोई विशेष लक्षण उनमें देखा हो और अन्य नबियों में वह लक्षण न पाया गया हो। हदीसों का अध्ययन करने वाले समस्त लोग इस बात को भली भाँति जानते हैं कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मे'राज

शेष हाशिया :- निस्सन्देह इन बरकतों को देख सकता है तथा उनसे भाग प्राप्त कर सकता है तथा वह निस्सन्देह इस झरने को अपनी मान्यतानुसार पहचान लेगा, परन्तु जो निष्कपटता के साथ नहीं ढूँढेगा वह अपनी ही कल्पना के कारण वंचित रह जाएगा और स्वयं ही अजनबी होने के कारण अनजान रह जाएगा।

ईमानी शक्ति का एक फल सच्चे रहस्यों और धार्मिक आध्यात्मिक ज्ञानों का भण्डार है जो इस ख़ाकसार को ख़ुदा की ओर से प्रदान किया गया है। अत: जो व्यक्ति इस ख़ाकसार की पुस्तकों पर दृष्टि डालेगा, इस ख़ाकसार की संगत में रहेगा उस पर यह वास्तविकता स्वयं ही स्पष्ट हो जाएगी कि ख़ुदा तआला ने इस ख़ाकसार को धार्मिक सच्चाइयों और सूक्ष्मताओं से कितना भाग प्रदान किया है।

द्वितीय और तृतीय लक्षण अर्थात् बुख़ारा या समरकन्द के मूल का होना, तथा ज़मींदार और ज़मीदारी के प्रतिष्ठित वंश में से होना ये दोनों लक्षण स्पष्ट तौर पर इस ख़ाकसार पर चरितार्थ हैं। तथा यहाँ मुझे हित में दिखाई देता है कि अपने पूर्वजनों का जीवन अर्थात् जीवनी संक्षिप्त रूप में लिखूँ। अत: इससे पूर्व मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि बीस वर्ष के लगभग समय हुआ होगा कि मिस्टर ग्रेफ़िन नामी एक अंग्रेज़ ने भी जो इस ज़िले में डिप्टी कमिश्नर रह चुका है तथा भोपाल और राजपूताना रियासतों का रेजीडेन्ट भी रहा है पंजाब के रईसों की जीवनी के तौर पर एक पुस्तक प्रकाशित कराई थी, उसमें उन्होंने मेरे स्वर्गीय पिता श्री मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब का वर्णन करके कुछ संक्षिप्त तौर पर उनके ज़मींदार वंश का वृत्तान्त

की रात में जिन-जिन नबियों से भेंट की उन सब की स्थिति एक ही शैली और एक ही पद्धति पर वर्णन की है। हज़रत मसीह की कोई पृथक विशेषता वर्णन नहीं की। क्या यह बात विद्वानों के लिए विचारणीय नहीं?

एक अत्यन्त सूक्ष्म रहस्य जो सूरह 'अलक़द्र' के अर्थों पर विचार करने से विदित होता है यह है कि जिस समय कोई आकाशीय सुधारक पृथ्वी पर आता है तो उसके साथ फ़रिश्ते आकाश से उतर कर अभिलाषी लोगों को सत्य की ओर खींचते हैं। अत: इन आयतों के अर्थ से यह नवीन लाभ प्राप्त होता है कि यदि

शेष हाशिया :- तथा समरकन्दी मूल का होना लिखा है, परन्तु मैं यहाँ कुछ विस्तार के साथ वर्णन करने के उद्‌देश्य से उन समस्त बातों का विस्तृत रूप में उल्लेख करना चाहता हूँ जो उस हदीस की पूर्ण व्याख्या के लिए बतौर चरितार्थ हैं ताकि इस ख़ाकसार का प्रारंभ से समरकन्दी मूल का होना तथा प्रारंभ से यह वंश एक ज़मींदार वंश होना जैसा कि हज़रत ख़ातमुलअंबिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस का आशय है लोगों पर भली-भांति प्रकट हो जाए।

स्पष्ट हो कि उन काग़ज़ों और पुराने लेखों से जो इस वंश के बुज़ुर्ग छोड़ गए हैं प्रमाणित होता है कि बाबर बादशाह के युग में कि जो चुग़ताई शासन का प्रमुख उत्तराधिकारी था इस ख़ुदा के मुहताज ख़ाकसार के पूर्वज समरक़न्द से एक बड़े समूह के साथ किसी कारण जिसका वर्णन नहीं किया गया प्रवास करके देहली में पहुँचे और वास्तव में यह बात उन कागज़ों से भली भांति स्पष्ट नहीं होती कि क्या वे बाबर के साथ ही हिन्दुस्तान में आए थे या इसके उपरान्त अविलम्ब इस देश में पहुँच गए, परन्तु यह बात अधिकांश काग़ज़ों के देखने से भली-भांति सिद्ध होती है कि यद्यपि वे साथ पहुँचे हों या कुछ दिन पश्चात पहुँचे हों, परन्तु उनका शाही ख़ानदान से कुछ ऐसा विशेष सम्बन्ध था जिसके कारण वे इस सरकार की दृष्टि में सम्माननीय सरदारों में सम्मिलित किए गए थे। अत: समय के बादशाह की ओर से पंजाब में बहुत से देहात उन्हें बतौर जागीर प्राप्त हुए तथा वे एक बड़ी ज़मींदारी के प्रमुख ठहराए गए तथा उन देहातों के मध्य एक मैदान में उन्होंने क़िले के तौर पर

नितान्त पथ-भ्रष्टता और अज्ञानता के युग में अचानक अद्भुत तौर पर मानव शक्तियों में स्वयं धर्म को ज्ञात करने के बारे में गति का उत्पन्न होना प्रारंभ हो जाए तो यह इस बात का संकेत होगा कि कोई आकाशीय सुधारक उत्पन्न हो गया है क्योंकि रुहुलक़ुदुस के उतरने के बिना वह गति पैदा होना संभव नहीं और वह गति स्वभावों की योग्यतानुसार दो प्रकार की होती है - पूर्ण गति और अपूर्ण गति । **पूर्ण गति -** वह गति है जो आत्मा में शुद्धता और सरलता प्रदान करके बुद्धि और विवेक को पर्याप्त कुशाग्र करके सत्य के समक्ष कर देती है तथा **अपूर्ण गति -** वह है जो

शेष हाशिया :- एक क़स्बा अपने निवास के लिए आबाद किया जिस का नाम 'इस्लामपुर काज़ी माझी' रखा। यही इस्लामपुर है जो अब क़ादियान के नाम से प्रसिद्ध है। इस क़स्बे के चारों ओर एक दीवार थी जिसकी ऊँचाई बीस फुट के लगभग होगी और चौड़ाई इतनी थी कि तीन छकड़े एक दूसरे के बराबर उस पर चल सकते थे, चार बड़े-बड़े बुर्ज थे जिसमें एक हज़ार के लगभग सवार और पैदल सेना रहती थी और इस स्थान का नाम जो इस्लामपुर क़ाज़ी माझी था तो उसका कारण यह था कि प्रारंभ में देहली के बादशाहों की ओर से इस सम्पूर्ण क्षेत्र का शासन हमारे पूर्वजों को दिया गया था तथा न्याय का पद अर्थात् प्रजा के मुक़द्दमों का निर्णय करना उनके सुपुर्द था और यह शासन-प्रणाली उस समय तक स्थापित और यथावत् रही जब तक पंजाब का मालिक देहली के शासन को कर देता रहा, परन्तु इस के पश्चात शनै: शनै: चुग़ताई सरकार में शासकों में आलस्य और सुस्ती और विलासिता, और अयोग्यता के कारण बहुत सा विकार व्याप्त हो गया तथा कई प्रान्त हाथ से निकल गए, उन्हीं दिनों में पंजाब का अधिकांश भाग चुग़ताई सरकार से पृथक होकर यह देश एक ऐसी विधवा स्त्री की भांति हो गया जिसके सर पर कोई अभिभावक न हो और ख़ुदा तआला की विचित्र क़ुदरत ने सिखों की जाति को जो असभ्य कृषक थे उन्नति देने का इरादा किया। अत: उनकी उन्नति और अवनत्ति के दोनों युग पचास वर्ष के अन्दर समाप्त होकर उनका क़िस्सा भी काल्पानिक ही रह गया। अत: उस युग में जब चुग़ताई शासन ने अपनी अयोग्यता और कुप्रबन्धन

रुहुल क़ुदुस की प्रेरणा से बुद्धि और विवेक तो एक सीमा तक कुशाग्र हो जाता है परन्तु योग्यता के सुरक्षित न रहने के कारण वह सत्य के सामने नहीं हो सकता अपितु इस आयत का चरितार्थ हो जाता है कि -

فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا (सूरह बक़रह - 11)

अर्थात् बुद्धि और विवेक के गतिशील होने से उस व्यक्ति की पूर्व अवस्था से बाद की अवस्था अधिक निकृष्ट हो जाती है जैसा कि समस्त नबियों के समय में

शेष हाशिया :- से पंजाब के इस भाग से पूर्णतया पृथकता धारण कर ली तो उन दिनों इस क्षेत्र में बड़े-बड़े ज़मींदार ख़ुदमुख़्तार बनकर अपना पूर्ण अधिकार स्थापित करने लगे। अत: इन्हीं दिनों में ख़ुदा की कृपा और उसके उपकार से इस ख़ाकसार के परदादा स्वर्गीय मिर्ज़ा गुल मुहम्मद साहिब अपनी ज़मींदारी के क्षेत्र (ता'ल्लुक़ा) के एक स्थायी रईस और अराजकता के कारण एक छोटे से क्षेत्र के जो केवल चौरासी पचासी गाँव रह गए थे पूर्ण अधिपत्य के साथ शासक बन गए और अपनी स्थायी रियासत का पूरा-पूरा प्रबन्ध कर लिया और शत्रुओं के प्रहार रोकने के लिए अपने पास पर्याप्त सेना रखी ली और उनका सम्पूर्ण जीवन ऐसी अवस्था में व्यतीत हुआ कि किसी अन्य बादशाह के अधीन नहीं थे और न किसी को ख़राज़ देने वाले अपितु अपनी रियासत में स्वाधीन शासक थे और उनकी लगभग एक हज़ार सवार और पैदल की सेना थी तथा तीन तोपें भी थीं और उत्तम प्रकार के विद्वान और मनीषी लोग उनके साथियों में थे तथा पाँच सौ के लगभग वेतन पाने वाले पवित्र क़ुर्आन के हाफ़िज़ थे जो यहाँ क़ादियान में रहते थे और समस्त मुसलमानों को पूरी पाबन्दी के साथ नमाज़ रोज़े और इस्लाम धर्म के आदेशों पर चलने की चेतावनी थी तथा शरीअत के विपरीत बातों को अपनी सीमा में प्रचलित नहीं होने देते थे और यदि कोई मुसलमान होकर इस्लामी आचरण के विपरीत कोई लिबास या प्रवृत्ति रखता था तो वह कठोर प्रताड़ना का पात्र होता था तथा असहाय, निर्धन और दरिद्रों का ध्यान रखना तथा पोषण के लिए एक विशेष पूंजी नक़द और अनाज की एकत्र

भी होता रहा कि जब उनके उतरने के समय फ़रिश्तों का उतरना हुआ तो फ़रिश्तों की आन्तरिक प्रेरणा से प्रत्येक स्वभाव सामान्यतया गतिशील हो गया, तब जो लोग सत्य के अभिलाषी थे वे सदात्माओं की ओर खिंचे चले आए और जो उद्दण्डता और शैतान की औलाद थे वे इस प्रेरणा से गहरी नींद से जाग तो उठे और धार्मिकता की ओर आकर्षित भी हो गए, परन्तु योग्यता की कमी के कारण सत्य की ओर मुख न कर सके। अत: फ़रिश्तों का कर्म जो ख़ुदाई सुधारक के साथ उतरते हैं प्रत्येक मनुष्य पर होता है, परन्तु इस कर्म का प्रभाव अच्छे लोगों पर अच्छा तथा बुरे लोगों

शेष हाशिया :- रहती थी जो प्राय: उन पर वितरित होती थी। यह उन लेखों का सार है जो तत्कालीन समय का हमें उपलब्ध हुआ है जिनकी साक्ष्य मौखिक तौर पर भी निरन्तरता के साथ अब तक पाई जाती हैं। यह भी लिखा है कि उन दिनों में मुग़ल शासन का ग़ियासुद्दौला नामी एक रियासती मंत्री क़ादियान में आया तथा स्वर्गीय मिर्ज़ा ग़ुलमुहम्मद साहिब की दृढ़ता, कुशल प्रबन्ध, संयम, पवित्रता, वीरता तथा स्थायित्व को देख कर रो पड़ा और कहा कि यदि मुझे पहले मालूम होता कि मुग़ल वंश में ये एक ऐसा महान व्यक्ति पंजाब के एक कोने में मौजूद है तो मैं प्रयास करता ताकि वही देहली में उत्तराधिकारी हो जाता तथा मुग़ल वंश नष्ट होने से बच जाता । अत: स्वर्गीय मिर्ज़ा साहिब एक दृढ़ संकल्प, संयमी, नितान्त दूरदर्शी तथा प्रथम श्रेणी के योद्धा पुरुष थे। यदि उस समय ख़ुदा की इच्छा मुसलमानों के विरुद्ध न होती तो बहुत आशा थी कि ऐसा शूरवीर और दृढ़ संकल्प पुरुष सिखों के घोर उपद्रव से पंजाब का दामन पवित्र करके इस्लाम का एक विशाल शासन इस देश में स्थापित कर देता। जिस परिस्थिति में रंजीत सिंह ने अपने पिता की थोड़ी सी सम्पत्ति के बावजूद जो मात्र नौ गाँव थी थोड़े से ही समय में इतने पैर फैलाए थे कि पेशावर से लुधियाना तक खालसा ही खालसा दिखाई देता था और प्रत्येक स्थान पर टिड्डियों की भांति सिखों की ही सेनाएं दिखाई देती थीं तो क्या ऐसे व्यक्ति के लिए विजयें अनुमान से दूर थीं जिसकी लुप्त सम्पत्ति में से अभी चौरासी या पचासी गाँव शेष थे तथा हज़ार के लगभग सेना भी थी और अपनी व्यक्तिगत वीरता में ऐसे

पर बुरा प्रभाव पड़ता है -

باران کہ در لطافت طبعش خلاف نیست   درباغ لالہ روید درشورہ بوم و خس

और जैसा कि हम अभी ऊपर वर्णन कर चुके हैं, यह आयत -

فِیْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا (बक़रह - 11)

इसी विभिन्न प्रकार के प्रभाव की ओर संकेत करती है।

यह बात स्मरण रखने के योग्य है कि प्रत्येक नबी के उतरने के समय एक

शेष हाशिया :- प्रसिद्ध थे कि उस समय की साक्ष्यों से स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि इस देश में उनका कोई सदृश न था, परन्तु चूँकि ख़ुदा तआला ने यही चाहा था कि मुसलमानों पर उनकी असंख्य असावधानियों के कारण चेतावनी हो इसलिए स्वर्गीय मिर्ज़ा साहिब मुसलमानों की सहानुभूति में सफल न हो सके तथा स्वर्गीय मिर्ज़ा साहिब की विचित्र परिस्थितियों में से एक यह है कि धर्म के विरोधी भी उनके बारे में उत्तराधिकार की कल्पना करते थे और उन की कुछ अद्भुत और विलक्षण बातें सामान्यतया उनके हृदयों में घर कर गई थी, यह बात बहुत दुर्लभ होती है कि धर्म का कोई विरोधी अपने शत्रु के चमत्कार को स्वीकार करे परन्तु इस लेखक ने स्वर्गीय मिर्ज़ा साहिब की कुछ अद्भुत चमत्कारीय बातें सिखों के मुख से सुनी हैं जिनके बाप-दादा विरोधी वर्ग में सम्मिलित होकर लड़ते थे। अधिकांश लोगों का कहना है कि प्राय: मिर्ज़ा साहिब (स्वर्गीय) केवल अकेले हज़ार-हज़ार लोगों के मुक़ाबले पर युद्ध के मैदान में जाकर विजय प्राप्त कर लेते थे और किसी में सामर्थ्य नहीं थी कि उनके निकट आ सके और यद्यपि प्राणों की बाज़ी लगाकर शत्रु की सेना प्रयास करती थी कि तोपों या बन्दूकों की गोलियों से उन्हें मार दें, परन्तु कोई गोली या गोला उन पर प्रभावकारी नहीं होता था। उनका यह चमत्कार सैकड़ों अनुयायियों और विरोधियों अपितु सिखों के मुख से सुना गया है, जिन्होंने अपने लड़ने वाले पूर्वजों (बाप-दादों) से प्रमाण स्वरूप वर्णन किया था। परन्तु मेरे निकट यह कुछ आश्चर्यजनक बात नहीं। अधिकांश लोग एक लम्बे समय तक युद्ध करने वाली

लैलतुलक़द्र होती है जिसमें वह नबी और वह किताब जो उसे दी गई है आकाश से उतरती है और फ़रिश्ते आकाश से उतरते हैं, परन्तु सब से बड़ी लैलतुल क़द्र वह है जो हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को प्रदान की गई है, वास्तव में इस लैलतुल क़द्र का दामन आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग से क़यामत तक फैला हुआ है और जो कुछ मनुष्यों में हार्दिक और बौद्धिक शक्तियों की गति नबी करीम स.अ.व. के युग से आज तक हो रही है वे लैलतुल क़द्र के प्रभाव हैं, अन्तर केवल इतना है कि सौभाग्यशालियों की बौद्धिक शक्तियों में पूर्ण

शेष हाशिया :- सेनाओं में नौकर रह कर अपनी आयु का बहुत सा भाग लड़ाइयों में व्यतीत करते हैं और ख़ुदा की क़ुदरत से किसी भी तलवार या बन्दूक का एक छोटा सा घाव भी उनके शरीर को नहीं पहुँचता। अत: यह चमत्कार यदि उचित तौर पर वर्णन किया जाए कि ख़ुदा तआला अपनी विशेष कृपा से शत्रुओं के आक्रमणों से उन्हें बचाता रहा तो कुछ हानि की बात नहीं। इसमें कुछ सन्देह नहीं हो सकता कि स्वर्गीय मिर्ज़ा साहिब दिन के समय एक प्रतापी योद्धा और रात के समय एक गुणवान उपासक थे तथा समय के पाबन्द और शरीअत पर चलने वाले थे। उस युग में क़ादियान में वह इस्लाम का प्रकाश चमक रहा था कि आस-पास के मुसलमान इस क़स्बे को मक्का कहते थे, परन्तु स्वर्गीय मिर्ज़ा गुल मुहम्मद साहिब की रियासत के युग में जो इस ख़ाकसार के दादा साहिब थे, एक बार एक बहुत बड़ी क्रान्ति आ गई तथा उन सिखों की बेईमानी, अन्याय और प्रतिज्ञा भंग करने के कारण जिन्होंने विरोध के पश्चात् केवल द्वैमुखता के तौर पर मैत्री धारण कर ली थी, उन पर नाना प्रकार के कष्ट आए तथा क़ादियान और कुछ देहात के अतिरिक्त समस्त देहात उन के अधिकार से निकल गए, अन्तत: सिखों ने क़ादियान पर भी अधिकार कर लिया तथा स्वर्गीय दादा साहिब अपने समस्त साथियों सहित वहाँ से निकाल दिए गए, उस दिन सिखों ने लगभग पांच सौ पवित्र क़ुर्आन अग्नि में जला दिए और बहुत सी पुस्तकें फाड़ दीं और मस्जिदों में से कुछ मस्जिदें ध्वस्त कीं, कुछ में अपने घर बनाए और कुछ को धर्मशाला बना कर स्थापित रखा जो अब तक मौजूद हैं। इस

और सीधे तौर पर वे गतियाँ होती हैं तथा दुर्भाग्यशालियों की बौद्धिक शक्तियाँ टेढ़े तौर पर गति में आती है और जिस युग में आँहज़रत स.अ.व. का कोई नायब संसार में उत्पन्न होता है तो ये प्रेरणा बड़ी तेज़ी से अपना कार्य करती है अपितु उसी युग से कि वह नायब माँ के गर्भाशय में आए मानव शक्तियाँ गुप्त तौर पर कुछ-कुछ गति प्रारंभ करती हैं और उनमें योग्यतानुसार एक गति उत्पन्न हो जाती है तथा उस नायब को प्रतिनिधित्व के अधिकार प्राप्त होने के समय तो वह गति नितान्त तीव्र हो जाती है। अत: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नायब के उतरने के समय

शेष हाशिया :- उपद्रव के समय जितने फ़क़ीर, विद्वान, प्रतिष्ठित कुलीन लोग क़ादियान में मौजूद थे सब निकल गए तथा भिन्न-भिन्न देशों और शहरों में जाकर आबाद हो गए और यह स्थान उपद्रवियों तथा यज़ीदी स्वभाव लोगों से भर गया जिनके विचारों में दुष्टता और दुराचार के अतिरिक्त और कुछ नहीं। फिर अंग्रेज़ी सरकार के युग से कुछ समय पूर्व अर्थात् उन दिनों में जबकि पंजाब पर रंजीत सिंह का सामान्यत: अधिकार हो गया था इस ख़ाकसार के पिता श्री अर्थात् स्वर्गीय मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब दोबारा आकर इस क़स्बे में आकर आबाद हुए और फिर भी सिखों के अत्याचार और अन्याय के प्रहार होते रहे। उन दिनों में हम लोग ऐसे अपमानित और तिरस्कृत थे कि एक गाय का बच्चा जो दो या डेढ़ रुपये में आ सकता है हमारी तुलना में सहस्त्रों गुना अधिक आदर की दृष्टि से देखा जाता था और इस जानवर को एक तुच्छ सी रगड़ पहुँचाने के कारण मनुष्य का वध करना वैध समझा गया था। सैकड़ों निर्दोष मनुष्य केवल इस सन्देह से क़त्ल किए जाते थे कि उन्होंने इस जानवर को ज़िब्ह करने का इरादा किया है। स्पष्ट है ऐसा असभ्य शासन कि जो जानवर के वध के बदले में मनुष्य का वध कर डालना अपने कर्तव्य समझते थे इस योग्य नहीं थे कि ख़ुदा तआला बहुत समय तक उसे ढील देता, इसलिए ख़ुदा तआला ने उस चेतावनी के रूप को मुसलमानों के सर से बहुत शीघ्र उठा लिया और दया दृष्टि की भाँति हमारे लिए अंग्रेज़ी सरकार को दूर से लाया और वह कटुता और कड़वाहट जो सिखों के युग में हमने सहन की थी ब्रिटिश

जो लैलतुल क़द्र निर्धारित की गई है वह वास्तव में उस लैलतुल क़द्र की एक शाखा है अथवा यों कहो कि उसकी छाया है जो आँहज़रत स.अ.व. को प्राप्त हुई है। ख़ुदा तआला ने उस लैलतुल क़द्र की प्रतिष्ठा को नितान्त बुलन्द किया है जैसा कि उनके पक्ष में यह आयत है कि -

فِيۡهَا يُفۡرَقُ كُلُّ اَمۡرٍ حَكِيۡمٍ ۙ (अद्दुख़ान - 5)

अर्थात् उस लैलतुल क़द्र के युग में जो क़यामत तक फैली हुई है प्रत्येक नीति

शेष हाशिया :- सरकार की छत्र-छाया में आकर हम सब भूल गए और हम पर और हमारी नस्ल कर यह अनिवार्य हो गया कि इस मुबारक ब्रिटिश सरकार के हमेशा कृतज्ञ रहें।

अंग्रेज़ी सरकार में तीन गाँव ता'ल्लुक़दारी तथा क़ादियान के स्वामित्य का जद्दी (दादा का) भाग स्वर्गीय पिता श्री को मिले जो अब तक हैं और हर्रास के शब्द के चरितार्थ के लिए पर्याप्त हैं। स्वर्गीय पिता श्री की इस देश के प्रतिष्ठित ज़मींदारों में गणना की गई थी। गवर्नर के दरबार में इन्हें कुर्सी मिलती थी तथा बर्तानवी सरकार के वह सच्चे कृतज्ञ और शुभचिन्तक थे। 1857 ई. के ग़दर के दिनों में उन्होंने अपने पास से पचास घोड़े खरीद कर तथा उत्तम जवान उपलब्ध करके पचास सवार बतौर सहायता सरकार को दिए। इस कारण वह इस सरकार में बहुत प्रिय थे तथा सरकार के उच्च अधिकारी उनसे उत्साह के साथ मिलते थे अपितु प्राय: डिप्टीकमिश्नर और कमिश्नर मकान पर आकर उनसे भेंट करते थे। इस समस्त वर्णन से स्पष्ट है कि यह खानदान ज़मीदारी का एक प्रतिष्ठित ख़ानदान है जो पूर्व बादशाहों के समय से आज तक सम्मान के कुछ अवशेष रखता है।

فالحمد للّٰہ الذی اثبت ھذہ العلامۃ اثباتاً بیّنًا و اصنحًا من عندہٖ۔

(प्रत्येक प्रकार की प्रशंसा उस ख़ुदा के लिए जिसने अपनी ओर से इस निशानी को नितान्त स्पष्ट तौर पर प्रमाणित किया) तथा चौथी और पाँचवीं निशानी की व्याख्या कुछ आवश्यक नहीं स्वयं स्पष्ट है और ख़ुदा तआला ने क़ादियान की दमिश्क़ के साथ जो उपमा दी और यह भी अपने इल्हाम में फ़रमाया कि -

और मा'रिफ़त की बातें संसार में प्रसारित कर दी जाएंगी तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की विद्याएं और अद्‌भुत कलाएं और विचित्र उद्योग संसार में फैला दिए जाएंगे, मानव शक्तियों में उनकी भिन्न-भिन्न प्रकार की योग्यताओं तथा ज्ञान और बुद्धि की क्षमताओं की संभावनाओं के अनुसार जो कुछ योग्यताएं गुप्त हैं अथवा जहाँ तक वे उन्नति कर सकते हैं सब कुछ आयत के अनुसार प्रदर्शित किया जाएगा, परन्तु यह सब कुछ उन दिनों में प्रबल प्रेरणाओं से होता रहेगा कि जब कोई नायब-ए-रसूल स.अ.व. संसार में पैदा होगा। वास्तव में इसी आयत को सूरह 'अज़्ज़िल्ज़ाल्'

शेष हाशिया :- اَخۡرَجَ مِنۡہُ الۡیَزِیۡدِیُّوۡنَ

यह उपमा उन नास्तिकों और उपद्रवियों के कारण है जो इस क़स्बे में रहते हैं, क्योंकि इस क़स्बे में अधिकतर ऐसे लोग भरे हुए हैं जिन्हें मृत्यु स्मरण नहीं, दिन-रात सांसारिक छल-कपटों में कार्यरत हैं। यदि अंग्रेज़ी सरकार का प्रबन्ध बाध्य न हो तो उन लोगों के हृदय प्रत्येक अपराध करने के लिए तैयार हैं इल्ला माशाअल्लाह! कुछ एक उनमें से ऐसे भी हैं जो ख़ुदा तआला के अस्तित्व के पूर्णतया इन्कारी हैं तथा किसी वस्तु को अवैध नहीं समझते। मैं उनके हृदयों को देखता हूँ कि दुराचार से लेकर निर्दोष की हत्या भी यदि अवसर पाएं तो इनके निकट न केवल वैध अपितु यह समस्त कार्य प्रशंसनीय हैं। मैं उनके निकट कदाचित् सम्पूर्ण विश्व से निकृष्ट हूँ, परन्तु मुझे अफ़सोस नहीं। मुझे अपने आध्यात्मिक भाई मसीह का कथन याद आता है कि नबी तिरस्कृत नहीं परन्तु अपने देश में। मैं सच-सच कहता हूँ कि यदि ये लोग इमाम हुसैन रज़ि. का युग पाते तो मेरे विचार में है कि यज़ीद और शमर से पहले इनका क़दम होता और यदि मसीह के युग को देखते तो अपनी कपटताओं में यहूदा इस्क्रियूती को पीछे डाल देते। ख़ुदा तआला ने इनकी उपमा जो यहूदियों से दी तो अकारण नहीं दी, उसने इनके हृदयों को देखा कि सीधे नहीं, इनके आचरण पर दृष्टि डाली कि ठीक नहीं तब उसने मुझ से कहा कि ये लोग यज़ीदी स्वभाव रखते हैं और यह क़स्बा दमिश्क के समान है। अत: ख़ुदा तआला ने एक महान कार्य के लिए इस दमिश्क़ में इस ख़ाकसार को उतारा।

में विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है, क्योंकि सूरह 'अज़्ज़िल्ज़ाल्' से पूर्व सूरह 'अलक़द्र' उतार कर यह प्रकट किया गया है कि ख़ुदा का नियम उसी प्रकार जारी है कि ख़ुदा तआला की वाणी (कलाम) लैलतुलक़द्र में ही उतरती है तथा उसका नबी लैलतुलक़द्र में ही संसार में आता है तथा लैलतुलक़द्र में ही वे फ़रिश्ते उतरते हैं जिनके माध्यम से संसार में नेकी की प्रेरणाएं पैदा होती हैं और वह गुमराही की अंधकारमय रात से आरंभ करके सत्य का सवेरा उदय होने तक इसी कार्य में व्यस्त रहते हैं ताकि अभिलाषी हृदयों को सत्य की ओर खींचते रहें, फिर इस सूरह के पश्चात् ख़ुदा तआला ने सूरह 'अलबय्यिन:' में बतौर उदाहरण वर्णन किया कि -

لَمۡ یَکُنِ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا مِنۡ اَهۡلِ الۡکِتٰبِ وَالۡمُشۡرِکِیۡنَ
مُنۡفَکِّیۡنَ حَتّٰی تَاۡتِیَهُمُ الۡبَیِّنَةُ۔ (अलबय्यिन: आयत 2)

अर्थात जिन कठोर विपत्तियों में अहले किताब और मुश्रिक लिप्त थे उन से मुक्ति पाने का कोई मार्ग न था सिवाए उस मार्ग के जिसे ख़ुदा तआला ने स्वयं उत्पन्न कर दिया कि वह शक्तिशाली रसूल भेजा जिसके साथ शक्तिशाली प्रेरणा देने वाले फ़रिश्ते उतारे थे और शक्तिशाली कलाम (वाणी) भेजा गया था, तत्पश्चात भावी युग के लिए ख़ुदा तआला सूरह अज़्ज़िलज़ाल में शुभ सन्देश देता है और

اِذَا زُلۡزِلَتۡ

के शब्द से इस बात की ओर संकेत करता है कि जब तुम ये निशानियां देखो तो समझ लो कि वह लैलतुलक़द्र अपने पूर्णतम ज़ोर के साथ पुन: प्रकट हुई है और

शेष हाशिया :-

بطرف شرقیٍّ عند المنارة البیضاء من المسجد الذی من دخله کان اٰمنًا فتبارك الذی انزلنی فِیۡ ھٰذَا المقام۔ والسلام عَلٰی رسوله افضل الرُّسُل وخیر الانام۔

(इसी से)

ख़ुदा की ओर से उसका कोई सुधारक हिदायत प्रसारित करने वाले फ़रिश्तों के साथ उतरा है जैसा कि फ़रमाता है -

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝ وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ۝ وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۝ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ۝ بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ۝ يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ۝ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝ (सूरह अज़्ज़िलज़ाल 2 से 9)

अर्थात उन दिनों का जब अन्तिम युग में ख़ुदा तआला की ओर से कोई महान सुधारक आएगा और फ़रिश्ते उतरेंगे यह निशान है कि पृथ्वी जहाँ तक उसका हिलाना संभव है हिलाई जाएगी अर्थात् स्वभावों, हृदयों और मस्तिष्कों को अत्यधिक हिलाया जाएगा तथा बौद्धिक, चिन्तन निर्दयता और पशुतापूर्ण विचार पूरी उत्तेजना के साथ गतिशील हो जाएंगे और पृथ्वी अपने समस्त बोझों को बाहर निकाल देगी, अर्थात् मनुष्यों के हृदय अपनी समस्त गुप्त योग्यताओं को प्रकट कर देंगे तथा उनके अन्दर ज्ञान और कलाओं का जो भी भंडार है अथवा उनमें जो कुछ हार्दिक और मानसिक शक्तियाँ तथा योग्यताएं गुप्त हैं समस्त प्रकट हो जाएंगी तथा मानव-शक्तियों का अन्तिम सार निकल आएगा और मनुष्य के अन्दर जो-जो प्रतिभाएं हैं अथवा उसके स्वभाव में जो-जो भावनाएं ख़ुदा की धरोहर है। वे समस्त संभावित शक्ति से क्रियात्मक रूप में प्रकट हो जाएंगी, मानव ज्ञानेन्द्रियों की प्रत्येक प्रकार की उत्तेजनाएं, मानव-बुद्धि की समस्त सूक्ष्मताएं, प्रकट हो जाएंगी, ज्ञानों और कला-कौशलों की गुप्त निधियाँ और भंडार जो छुपे चले आ रहे थे उन सब पर मनुष्य विजय प्राप्त कर लेगा, अपनी चिन्तन और बौद्धिक युक्तियों को प्रत्येक क्षेत्र में चरम सीमा तक पहुँचा देगा, मनुष्य की समस्त शक्तियाँ जो मानव उत्पत्ति के ख़मीर में रखी गई हैं सैकड़ों प्रकार की प्रेरणाओं के कारण गतिशील हो जाएंगी और फ़रिश्ते उस सुधारक के साथ उस लैलतुलक़द्र में आकाश से उतरे होंगे, प्रत्येक व्यक्ति पर उसकी योग्यतानुसार उस पर चमत्कारिक अद्भुत प्रभाव डालेंगे अर्थात् नेक लोग अपने नेक

विचार में उन्नति करेंगे तथा जिनकी दृष्टियां संसार तक सीमित हैं वे उन फ़रिश्तों की प्रेरणा से भौतिक अक़्लों और रहन-सहन के उपायों में चमत्कार दिखाएंगे तथा एक आध्यात्मिक ज्ञानी स्तब्ध होकर अपने हृदय में कहेगा कि ये बौद्धिक और चिन्तन शक्तियाँ इन लोगों को कहाँ से मिलीं, तब उस दिन प्रत्येक मानव-योग्यता वर्तमान रूपी जीभ से बातें करेगी कि ये उच्च स्तरीय शक्तियों मेरी ओर से नहीं अपितु ख़ुदा तआला की ओर से एक वह्यी है जो प्रत्येक योग्यता पर उसकी अवस्थानुसार उतर रही है। अर्थात् स्पष्ट दिखाई देगा कि मनुष्यों के हृदय और मस्तिष्क जो कुछ कार्य कर रहे हैं ये उनकी ओर से नहीं अपितु एक परोक्ष से प्रेरणा है जो उनसे ये कार्य करा रही है। अत: उस दिन हर प्रकार की शक्तियाँ जोश में दिखाई देंगी, भौतिकवादियों की शक्तियाँ फ़रिश्तों की प्रेरणा से जोश में आकर यद्यपि योग्यता की अपूर्णता के कारण सत्य की ओर मुख नहीं करेंगी परन्तु उनमें एक प्रकार का उबाल उत्पन्न होकर तथा शिथिलता और निराशा दूर होकर अपने रहन-सहन के साधनों में विचित्र प्रकार के उपाय, शिल्पकारियाँ तथा मशीनें आविष्कृत कर लेंगे और सदाचारियों की शक्तियों में अद्‌भुत तौर पर इल्हाम और कश्फ़ों का झरना स्पष्ट तौर पर प्रवाहित दिखाई देगा और यह बात बहुत कम होगी कि मोमिन का स्वप्न झूठा निकले, तब मानव शक्तियों के प्रकट होने का चक्र पूरा हो जाएगा और मानव प्रकार में गुप्त तौर पर जो कुछ रखा गया था वह सब बाह्य रूप में प्रकटित हो जाएगा, तब ख़ुदा तआला के फ़रिश्ते उन समस्त सदात्मा लोगों को जो संसार के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में गुप्त-जीवन व्यतीत करते थे एक समूह की भाँति एकत्र कर देंगे तथा भौतिकवादियों का भी एक समूह दिखाई देगा ताकि प्रत्येक समूह अपने प्रयासों के परिणामों को देख ले तब अन्त हो जाएगा यह अन्तिम लैलतुलक़द्र का प्रतीक है जिसका आधार अभी से डाला गया है जिसको पूर्ण करने के लिए सर्वप्रथम ख़ुदा तआला ने इस ख़ाकसार को भेजा है तथा मुझे सम्बोधित करके फ़रमाया कि

انتَ اشدّ مناسبة بعیسی ابن مریم و اشبه النَّاس به
خُلُقًا و خَلْقًا وَزَمَانًا

परन्तु उस लैलतुल क़द्र के प्रभाव इस के पश्चात् कम न होंगे अपितु जब तक वह सब कुछ पूर्ण न हो जाए निरन्तर कार्य करते रहेंगे जो ख़ुदा तआला आकाश पर निर्धारित कर चुका है।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने उतरने के लिए जो समय इंजील में वर्णन किया है अर्थात् यह कि वह हज़रत नूह के युग की भाँति अमन और शन्ति का युग होगा। वास्तव में इसी विषय पर सूरह 'अज़्ज़िल्ज़ाल' जिसकी अभी व्याख्या की गई है अनिवार्य सबूत के तौर पर साक्ष्य प्रस्तुत कर रही है क्योंकि ज्ञान और कला-कौशलों के फैलने तथा मानव अक़्लों की प्रगति का युग वास्तव में ऐसा ही चाहिए जिसमें अत्यधिक अमन और शान्ति हो क्योंकि लड़ाइयों और उपद्रवों, प्राणों का भय तथा शान्ति के विरुद्ध युग में कदापि संभव नहीं कि लोग बौद्धिक और व्यवहारिक विषयों में प्रगति कर सकें। ये बातें पूर्णतया तभी जन्म लेती हैं कि जब पूर्ण रूपेण शान्ति प्राप्त हो।

हमारे विद्वानों ने जो बाह्य तौर पर इस सूरह 'अज़्ज़िल्ज़ाल' की यह व्याख्या की है कि पृथ्वी पर वास्तव में अन्तिम दिनों में भयंकर भूकम्प आएगा और वह भूकम्प ऐसा होगा कि उस से समस्त पृथ्वी उथल-पुथल हो जाएगी और जो वस्तुएं पृथ्वी के अन्दर हैं वे सब बाहर आ जाएंगी और मनुष्य अर्थात् काफ़िर लोग पृथ्वी से पूछेंगे कि तुझे क्या हुआ, तब उस दिन पृथ्वी बातें करेगी और अपना हाल बताएगी। यह सर्वथा गलत व्याख्या है कि जो पवित्र क़ुर्आन की अगली-पिछली इबारत के विपरीत है। यदि पवित्र क़ुर्आन के इस स्थान पर ध्यापूर्वक विचार करो तो स्पष्टतया प्रकट होता है कि यह दोनों सूरतें अर्थात् अलबय्यिनह और सूरह 'अज़्ज़िल्ज़ाल' सूरह लैलतुलक़द्र के संबंध में हैं और अन्तिम युग तक उसका सम्पूर्ण हाल बता रही हैं सिवाए इसके प्रत्येक सद्बुद्धि विचार कर सकती है कि ऐसे भयंकर भूकम्प के समय कि जब समस्त पृथ्वी उथल-पुथल हो जाएगी ऐसे काफ़िर कहाँ जीवित रहेंगे। जो पृथ्वी से उसकी परिस्थितियों के बारे में पूछेंगे। क्या संभव है कि पृथ्वी तो सारी उथल-पुथल हो जाए यहाँ तक कि ऊपरी तल नीचे और निचला

तल ऊपर आ जाए और फिर लोग जीवित बच जाएं अपितु यहाँ पृथ्वी से अभिप्राय पृथ्वी के निवासी हैं तथा यह पवित्र क़ुर्आन का सामान्य मुहावरा है कि पृथ्वी से मनुष्यों के हृदय तथा उनकी आन्तरिक शक्तियाँ अभिप्राय होती हैं। जैसा कि एक स्थान पर अल्लाह तआला फ़रमाता है

اِعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰہَ یُحۡیِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِہَا ؕ (अलहदीद : 18)

الۡبَلَدُ الطَّیِّبُ یَخۡرُجُ نَبَاتُہٗ بِاِذۡنِ رَبِّہٖ ۚ وَ الَّذِیۡ خَبُثَ لَا یَخۡرُجُ اِلَّا نَکِدًا ؕ (अलआराफ़ : 59)

पवित्र क़ुर्आन में इसी प्रकार बीसियों उदाहरण मौजूद हैं जो पढ़ने वालों पर गुप्त नहीं, सिवाए इसके कि आध्यात्मिक उपदेशकों का प्रकट होना तथा उनके साथ फ़रिश्तों का आना एक आध्यात्मिक प्रलय का नमूना होता है जिस से मुर्दों में हलचल पैदा हो जाती है और जो क़ब्रों के अन्दर हैं वे बाहर आ जाते हैं तथा सदात्मा और दुष्टात्मा लोग प्रतिफल और दण्ड पा लेते हैं। अत: यदि सूरह 'अज़्ज़िल्ज़ाल' को प्रलय के लक्षणें में से ठहराया जाए तो इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि ऐसा समय आध्यात्मिक तौर पर एक प्रकार की प्रलय ही होती है। ख़ुदा तआला के समर्थित बन्दे प्रलय का ही रूप बनकर आते हैं तथा उन्हीं का अस्तित्व प्रलय का नाम दिया जा सकता है, जिनके आने से आध्यात्मिक मुर्दे जीवित होना आरंभ हो जाते हैं तथा इस में भी कुछ सन्देह नहीं कि जब ऐसा युग आ जाएगा कि समस्त मानव शक्तियाँ अपनी विशेषताओं का प्रदर्शन करेंगी और जिस सीमा तक मानव अक़्लों और चिन्तन की उड़ान संभव है उस सीमा तक वे पहुँच जाएंगी तथा जिन गुप्त सच्चाइयों का प्रकट करना प्रारंभ से प्रारब्ध है वे सब प्रकट हो जाएंगी तब उस संसार का चक्र पूरा हो कर सहसा उसकी चादर लपेट दी जाएगी।

كل شيءٍ فَانٍ وَّ يبقٰى وجهُ ربّك ذو الجلال وَالْاكرام

हमारा धर्म

زعشاق فرقان و پیغمبریم بدین آمدیم و بدین بگذریم

हमारे धर्म का सार और निचोड़ यह है कि 'ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह' हमारी आस्था जो हम इस भौतिक जीवन में रखते हैं जिसके साथ हम ख़ुदा की कृपा और सामर्थ्य से इस संसार से कूच करेंगे यह है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. ख़ातमुन्नबिय्यीन तथा समस्त नबियों से श्रेष्ठ हैं जिन के द्वारा धर्म पूर्ण हो चुका और वह ने'मत अपनी चरम सीमा तक पहुँच चुकी जिसके द्वारा मनुष्य सद्मार्ग धारण करके ख़ुदा तआला तक पहुँच सकता है और हम दृढ़ विश्वास के साथ इस बात पर ईमान रखते हैं कि पवित्र क़ुर्आन आकाशीय किताबों का ख़ातम (मुहर) है तथा उसकी शरीअत, इस्लामी दण्ड, आदेशों और आज्ञाओं का एक बिन्दु या अक्षर का अन्तिम भाग से अधिक नहीं हो सकता और न कम हो सकता है और अब कोई ऐसी वह्यी या ऐसा इल्हाम ख़ुदा की ओर से नहीं हो सकता जो क़ुर्आनी आदेशों में संशोधन या निरस्त अथवा किसी एक आदेश में परिवर्तन या बदलाव कर सकता हो। यदि कोई ऐसा विचार करे तो वह हमारे निकट मोमिनों की जमाअत से बहिष्कृत, नास्तिक और काफ़िर है तथा हमारा इस बात पर भी ईमान है कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुसरण के बिना मनुष्य को सद्मार्ग की निम्न श्रेणी भी कदापि प्राप्त नहीं हो सकती, कहाँ यह कि सद्मार्ग की उच्च श्रेणियाँ उस समस्त रसूलों के पेशवा के अनुसरण के अभाव में प्राप्त हो सकें। सम्मान और विशेषता की कोई श्रेणी तथा मान और सानिध्य का कोई स्थान हम अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चे और पूर्ण अनुकरण के अतिरिक्त कदापि प्राप्त कर ही नहीं सकते, हमें जो कुछ प्राप्त होता है प्रतिबिम्ब और माध्यम से प्राप्त होता है तथा हम इस बात पर भी ईमान रखते हैं कि जो सत्यनिष्ठ और अल्लाह वाले लोग आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संगत के सम्मान

से सम्मानित होकर साधना की श्रेणियों को पूर्ण कर चुके हैं उनकी खूबियों की तुलना में भी हमारी ख़ूबियाँ यदि हमें प्राप्त हों बतौर प्रतिबिम्ब के हैं तथा उनमें कुछ ऐसी आंशिक विशेषताएं हैं जो अब हमें किसी प्रकार से प्राप्त नहीं हो सकतीं। अत: हमारा उन समस्त बातों पर ईमान है जिनका पवित्र क़ुर्आन में उल्लेख है और जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुदा तआला की ओर से लाए और समस्त नई निकाली गई बातों तथा बिदअतों को हम एक प्रत्यक्ष पथ-भ्रष्टता और नरक तक पहुँचाने वाला मार्ग विश्वास करते हैं, परन्तु खेद कि हमारी क़ौम में ऐसे लोग बहुत हैं जो कुछ क़ुर्आनी सच्चाइयों और आध्यात्म ज्ञानों तथा नुबुव्वत के लक्षणों की सूक्ष्मताओं को जो यथासमय कश्फ़ और इल्हाम द्वारा अधिक स्पष्टता के साथ प्रकट होती हैं नवीन पैदा की हुई बातों तथा बिद्अतों में ही सम्मिलित कर लेते हैं जब कि क़ुर्आन तथा हदीस के गुप्त आध्यात्मिक ज्ञान हमेशा अहले कश्फ़ पर प्रकट होते रहे हैं तथा समय के विद्वान उन्हें स्वीकार करते रहे हैं, परन्तु इस युग के अधिकांश विद्वानों की यह विचित्र आदत है कि यदि ख़ुदा तआला विलायत का इल्हाम जिसका सिलसिला कभी समाप्त नहीं होता अपने समय पर कुछ संक्षिप्त नुबुव्वत के कश्फ़ों और गुप्त क़ुर्आनी रूपकों की कोई व्याख्या करे तो उसे इन्कार और उपहास की दृष्टि से देखते हैं जबकि सही हदीसों में हमेशा यह हदीस पढ़ते हैं कि पवित्र क़ुर्आन के लिए प्रत्यक्ष और आन्तरिक दोनों हैं उसके चमत्कार प्रलय तक समाप्त नहीं हो सकते, हमेशा अपने मुख से बोलते हैं कि अधिकांश सुप्रसिद्ध हदीसों के ज्ञानी वलियों के कश्फ़ और इल्हामों को प्रमाणित हदीस की श्रेणी के समान समझते रहे हैं।

हमने पुस्तक 'फ़तह इस्लाम' और 'तौज़ीह मराम' में अपनी इस कश्फ़ी और इल्हामी बात को प्रकाशित किया है कि मसीह मौऊद से अभिप्राय यही विनीत है। मैंने सुना है कि हमारे कुछ विद्वान इस पर बहुत आग बबूला हुए हैं और उन्होंने इस वर्णन को ऐसी बिद्अतों में से समझ लिया है कि जो इज्माअ (सर्वसम्मति) से बाहर और सर्वसम्मत धारणा के विपरीत होती हैं यद्यपि कि ऐसा करने में उनकी बड़ी

गलती है।

प्रथम तो यह जानना चाहिए कि मसीह के उतरने की आस्था कोई ऐसी आस्था नहीं है जो हमारे ईमान का कोई भाग या हमारे धार्मिक स्तम्भों में से कोई स्तम्भ हो अपितु सैकड़ों भविष्यवाणियों में से यह एक भविष्यवाणी है जिसका इस्लाम की वास्तविकता से कोई सम्बन्ध नहीं। जिस समय तक यह भविष्यवाणी वर्णन नहीं की गई थी उस समय तक इस्लाम कुछ अपूर्ण नहीं था और जब वर्णन की गई तो इस से इस्लाम कुछ पूर्ण नहीं हो गया तथा भविष्यवाणियों के संबंध में यह आवश्यक नहीं कि वह अवश्य अपने प्रत्यक्ष रूप में पूर्ण हों अपितु अधिकतर भविष्यवाणियों में ऐस-ऐसे गुप्त रहस्य होते हैं कि भविष्यवाणी के प्रकटन से पूर्व स्वयं नबियों को ही जिन पर वह वह्यी उतरे समझ में नहीं आ सकती कहाँ यह कि उन्हें अन्य लोग समझ लें। देखो जिस स्थिति में हमारे सरदार और पेशवा स्वयं इस बात को स्वीकार करते हों कि कुछ भविष्यवाणियों को मैंने किसी और रूप पर समझा और उनका प्रकटन किसी अन्य रूप में हुआ तो फिर दूसरे लोग यद्यपि कल्पनात्मक रूप में समस्त उम्मत ही क्यों न हो कब ऐसा दावा कर सकते हैं कि हमारी समझ में ग़लती नहीं। पूर्व सदात्मा लोग सदैव इस पद्धति को पसन्द करते रहे हैं कि बतौर संक्षेप भविष्यवाणी पर ईमान ले आएं तथा उसका विस्तृत विवरण अथवा इस बात को कि वह किस प्रकार से प्रकट होगी ख़ुदा के सुपुर्द करें। मैं पहले भी लिख चुका हूँ कि सर्वाधिक सुरक्षित धारणा यही है जिस से ईमान सुरक्षित रह सकता है कि मात्र भविष्यवाणी के शब्दों पर बल न दिया जाए तथा दृढ़तापूर्वक यही दावा न किया जाए कि उसका प्रकटन अवश्य प्रत्यक्ष रूप में ही होगा, क्योंकि यदि (ख़ुदा न करे) परिणामस्वरूप ऐसा न हुआ तो फिर भविष्यवाणी की सच्चाई में भिन्न-भिन्न प्रकार के सन्देह उत्पन्न होकर ईमान हाथ से गया ऐसी कोई वसीयत ख़ुदा के पैग़म्बर स.अ.व. की ओर से कदापि सिद्ध नहीं हो सकती कि तुम भविष्यवाणियों को प्रत्यक्ष पर चरितार्थ करते रहना किसी रूपक या व्याख्या इत्यादि को कदापि स्वीकार न करना। अब समझना चाहिए कि जब कि भविष्यवाणियों के समझने के बारे में स्वयं

नबियों से ग़लती की संभावना है तो फिर उम्मत की मात्र सहमति अथवा बहुमत क्या वस्तु है।

इसके अतिरिक्त हम कई बार वर्णन कर चुके हैं कि इस भविष्यवाणी पर उम्मत का बहुमत भी नहीं। पवित्र क़ुर्आन निश्चित तौर पर अपनी नितान्त स्पष्ट आयतों में मसीह की मृत्यु हो जाने को मानने वाला और उसे हमेशा के लिए विदा करता है। बुख़ारी साहिब अपनी सही बुख़ारी में केवल 'इमामोकुम मिन्कुम' (اِمَامُکُمْ مِنْکُمْ) कह कर ख़ामोश हो गए हैं अर्थात् सही बुख़ारी में मसीह का केवल यही विवरण लिखा है कि वह एक व्यक्ति तुम में से होगा और तुम्हारा इमाम होगा, हाँ दमिश्क में मीनार के पास उतरने की हदीस 'मुस्लिम' में मौजूद है, परन्तु इस से उम्मत का बहुमत सिद्ध नहीं हो सकता अपितु यह भी सिद्ध होना कठिन है कि मुस्लिम का वास्तव में यही विचार था कि 'दमिश्क' के शब्द से वास्तव में यही दमिश्क अभिप्राय है और यदि ऐसा मान भी लें तो मात्र एक व्यक्ति की राय सिद्ध हुई, परन्तु भविष्यवाणियों के सम्बन्ध में जबकि ख़ुदा तआला के पवित्र नबियों की राय विवेचन द्वारा परिणाम निकालने की ग़लती से निर्दोष नहीं रह सकती तो फिर मुस्लिम साहिब की राय क्योंकर निर्दोष ठहरेगी।

मैं पुन: कहता हूँ कि इस बारे में मुसलमानों का सामान्य विचार यद्यपि उन में वली भी सम्मिलित हों बहुमत के नाम से निर्दोष नहीं हो सकता। मुसलमानों ने उनकी ओर से यह दावा कदापि नहीं और न होना चाहिए कि ख़ुदा तआला इस बात पर समर्थ नहीं कि कदाचित् इस भविष्यवाणी के ऐसे विवरण गुप्त हों जो अब तक प्रकट नहीं हुए। वास्तव में समस्त नबियों का यही मत रहा है कि वे भविष्यवाणी की मूल वास्तविकता को ख़ुदा तआला के विशाल ज्ञान पर छोड़ते रहे हैं, इसी कारण वे पुनीत लोग शुभ सन्देशों की प्राप्ति के बावजूद फिर भी दुआ से पृथक नहीं होते थे जैसा कि बदर की लड़ाई में विजय का वादा दिया गया था, परन्तु हमारे सरदार एवं पेशवा रो-रो कर दुआएं करते रहे इस विचार से कि कदाचित् भविष्यवाणी में कुछ ऐसी बातें गुप्त हों या वे कुछ ऐसी शर्तों के साथ सम्बद्ध हों जिनका ज्ञान

हमें नहीं दिया गया।

यह दावा कि समस्त सहाबा और अहले बैत इसी प्रकार मानते चले आए हैं जैसा कि हम, यह सर्वथा व्यर्थ और प्रमाणरहित है, एक-एक की राय का ज्ञान तो ख़ुदा ही को होगा। किसी ने उन सब के बयानों को कब लिखित रूप दिया है या कब किसी ने अपने मुख से उनके बयान सुनकर प्रकाशित किए हैं इसके बावजूद कि सहाबा दस हज़ार से भी कुछ अधिक थे, परन्तु इस भविष्यवाणी को वर्णन करने वाले कदाचित् दो या तीन तक निकलें तो निकलें तथा उन की रिवायत भी सामान्यता सिद्ध नहीं होती क्योंकि बुख़ारी जो हदीस की कला में एक दक्ष समीक्षक है उन समस्त रिवायतों को विश्वसनीय नहीं समझता यह विचार कदापि नहीं हो सकता कि बुख़ारी जैसे परिश्रमी और प्रयास करने वाले को वे बुरी-भली समस्त रिवायतें पहुँची ही नहीं अपितु उचित और अनुमान के अनुसार यही है कि बुख़ारी ने उन्हें विश्वसनीय नहीं समझा। उसने देखा कि दूसरी हदीसें अपने प्रत्यक्ष रूप में इमामुकुम मिन्कुम

اِمَامُکُمْ مِنْکُمْ

की हदीस से विरोधी हैं और यह हदीस अपने उचित होने में चरम सीमा तक पहुँच गई है, इसलिए उसने इन विपरीतार्थक हदीसों को अविश्वसनीय समझ कर अपनी सही बुख़ारी को इनके समावेश से पवित्र रखा।

जब पाठकगण समझ सकते हैं कि इस बात पर इस्लाम के उत्तम काल का इस बात पर बहुतम सिद्ध नहीं हो सकता कि हज़रत मसीह अवश्य दमिश्क़ में ही उतरेंगे, क्योंकि हदीसों को एकत्र करने की कला में पारंगत इमाम बुख़ारी ने इस हदीस को नहीं लिया, इब्ने माजा इस हदीस का विरोधी है और दमिश्क के स्थान पर 'बैतुल मुक़द्दस' लिखता है। अत: किसी के मुख से कुछ निकल रहा है और किसी के मुख से कुछ। अत: बहुमत कहाँ है ?

यदि बहुमत की कल्पना भी कर लें तो फिर भी क्या हानि थी क्योंकि इन बुज़ुर्गों ने कब दावा किया है कि इस से अधिक और अर्थ नहीं हो सकते अपितु वे तो सुन्नत के अनुसार विवरण और व्याख्या को ख़ुदा के सुपुर्द करते रहे हैं।

हम यह भी भली भाँति स्पष्ट कर चुके हैं कि इस भविष्यवाणी को मात्र प्रत्यक्ष शब्दों तक सीमित रखने में बड़ी कठिनाइयाँ हैं। पूर्व इसके कि मसीह आकाश से उतरे सैकड़ों आरोप पहले ही से आ रहे हैं। इन कठिनाइयों में पड़ने की आवश्यकता ही क्या है और हमें इस बात की क्या आवश्यकता कि इब्ने मरयम को आकाश से उतारा जाए तथा उनका नुबुव्वत से पृथक होना स्वीकार किया जाए तथा उनका इस प्रकार तिरस्कार किया जाए कि दूसरा व्यक्ति इमामत करे और वह पीछे अनुयायी बनें, दूसरा व्यक्ति उनके समक्ष इमामत और ख़िलाफ़त की बैअत ले और वह हसरत की दृष्टि से देखते रहे तथा एक मुसलमान बन कर अपनी नुबुव्वत की सांस तक न ले सकें और हम इस शिर्क के निकट अपितु सर्वथा शिर्क से भरे वाक्य को मुख से क्यों बोलें कि काना दज्जाल ख़ुदा के समान अपनी शक्ति से मुर्दों को जीवित करेगा और स्पष्टतया ख़ुदाई के लक्षण प्रदर्शित करेगा और कोई उसे यह नहीं कहेगा कि हे काने ख़ुदा पहले तू अपना नेत्र ठीक कर। क्या वह एकेश्वरवाद जिसकी हमें इस्लाम ने शिक्षा दी है ऐसी शक्तियाँ किसी सृष्टि (मख़लूक़) में उचित समझता है, क्या इस्लाम ने इन निरर्थक बातों को अपने पैरों तले कुचल नहीं दिया। विचित्र बात है कि मुसलमानों के निकट दज्जाल का गधा भी जैसे ख़ुदा का ही एक भाग रखता है तथा कहते हैं कि उस गधे का पैदा करने वाला दज्जाल ही है। फिर जबकि वह दज्जाल, जीवित करने वाला, मृत्यु देने वाला और स्रष्टा भी है तो उसके ख़ुदा होने में कमी क्या रह गई। उस गधे की यह परिभाषा करते हैं कि वह पूरब और पश्चिम का भ्रमण एक दिन में कर सकेगा, परन्तु हमारे निकट संभव है कि दज्जाल से अभिप्राय प्रतापी जातियाँ हों और उनका गधा भी रेल हो जो, पूर्वी और पश्चिमी देशों में हज़ारों कोसों तक चलते हुए देखते हों, फिर मसीह के बारे में यह भी सोचना चाहिए कि क्या भौतिक और दार्शनिक लोग इस विचार पर नहीं हँसेंगे कि जब तीस या चालीस हज़ार फुट तक पृथ्वी से ऊपर की ओर जाना मृत्यु का कारण है तो हज़रत मसीह इस पार्थिव शरीर के साथ आकाश तक क्योंकर पहुँच गए और क्या यह विरोधियों के लिए उपहास का स्थान नहीं होगा कि पहली मुखाकृति और बाद

की मुखाकृति में मत भेद का कारण यह वर्णन किया जाए कि आयु के परिवर्तन के कारण मुखाकृति में अन्तर आ गया होगा।

हमारे विद्वानों के लिए एक और बात विचार-योग्य है कि हदीसों में केवल एक दज्जाल का वर्णन नहीं अपितु बहुत से दज्जाल लिखे हैं तथा

لِكُلِّ دَجَّالٍ عِيْسٰى

के उदाहरण पर ध्यानपूर्वक दृष्टि डालकर यह बात सरलतापूर्वक समझ आ सकती है कि ईसा के शब्द से मसील (समरूप) ईसा अभिप्राय होना चाहिए। हमारी इस बात का वह हदीस और भी समर्थन करती है कि मुस्तफ़ा (स.अ.व.) के समरूप के बारे में एक भविष्यवाणी है जिसे दूसरे शब्दों में

مهدی

(महदी) के नाम से पुकारते हैं क्योंकि उस हदीस में ऐसे शब्द हैं जिन में स्पष्टतया यह पाया जाता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भविष्यवाणी में अपने एक समरूप की सूचना दे रहे हैं, क्योंकि वह फ़रमाते हैं कि वह महदी ख़ुल्क़ और ख़ल्क़ में मेरे समान होगा

يُوَاطِی اسْمُهٗ اِسْمِیْ وَاِسْمُ اَبِيْهِ اسْمُ اَبِیْ

अर्थात् मेरे नाम के समान उसका नाम होगा और मेरे बाप के नाम के समान उसके बाप का नाम। अब देखो कि इस हदीस का सार यही है कि वह मेरा समरूप होगा। ऐसी स्थिति में एक बुद्धिमान को नितान्त सरलतापूर्वक यह बात समझ में आ सकती है कि हदीस में जिस प्रकार एक मुस्तफ़ा के समरूप का वर्णन है इसी प्रकार मसीह के समरूप का भी वर्णन है न यह कि एक स्थान पर मुस्तफ़ा का समरूप तथा दूसरे स्थान पर स्वयं हज़रत मसीह ही आ जाएंगे। अत: विचार कर!

अब स्पष्ट है कि हमने अपनी इल्हामी आस्था के समर्थन में जितने बौद्धिक, उद्धृत तथा शरई (धार्मिक विधान से संबंधित) सबूतों का उल्लेख किया है वे हमारे उद्देश्य को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं और यदि यहाँ हम असंभव कल्पना करते

हुए स्वीकार भी कर लें कि हम आने वाले सन्देहों का पूर्णतया निर्णय नहीं कर सके तो इसमें भी हमारी कुछ हानि नहीं क्योंकि ख़ुदा का इल्हाम और सही कश्फ़ हमारा समर्थक है। इसलिए हमारे लिए इतना ही पर्याप्त है। एक ईमानदार विद्वान का यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि इल्हाम और कश्फ़ का नाम सुनकर खामोश हो जाए और लम्बी किस लिए? किस प्रकार से? इत्यादि से रुक जाए। यदि विरोधी विचारधारा रखने वाले लोगों के हाथ में कुछ हदीसों की दृष्टि से कुछ सबूत है तो हमारे पास ऐसे उद्धृत और शरई सबूत उनसे कुछ कम नहीं। पवित्र क़ुर्आन हमारे साथ है, उनके साथ नहीं। सही बुख़ारी की हदीसें हमारी समर्थक हैं उनकी नहीं। इसके अतिरिक्त उसके तर्कशास्त्रीय सबूत जो दर्शनशास्त्र और भौतिकी के अनुभवों से लिए गए हैं वे सब हमारे पास हैं उनके पास एक भी नहीं। इन समस्त बातों के पश्चात् ख़ुदाई इल्हाम तथा आकाशीय कश्फ़ हमारे वर्णन का साक्षी है तथा उनके पास इस आग्रह पर कोई ऐसा साक्षी नहीं।

यहाँ हम इस बात का उल्लेख अनुचित नहीं समझते कि इल्हाम और कश्फ़ का प्रमाण और सबूत होने के मानने वाले यद्यपि कुछ नीरस मीमांसक तथा कट्टरपंथी न हों, परन्तु ऐसे समस्त मुहद्दिस और सूफ़ी जो पूर्ण मा'रिफ़त तथा पूर्ण बुद्धिमत्ता के रंग से रंगीन हुए हैं पूर्ण रुचि के साथ मानते हैं। इस बारे में हमारे मित्र **मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी** ने अपनी पत्रिका इशाअतुस्सुन्न: नं. 11, जिल्द 7, में विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। अत: उन सब में से इमाम **अब्दुल वहाब शे'रानी की पुस्तक मीज़ान कुबरा और फुतूहात शैख़ मुहियुद्दीन** की जो आदरणीय मौलवी साहिब ने अपनी राय के समर्थन में चर्चा की है, उनमें से कुछ हम अपने पाठकों के लिए लिखते हैं -

इमाम साहिब अपनी पुस्तक 'मीज़ान' के पृष्ठ 13 में वर्णन करते हैं कि साहिबे कश्फ़ विश्वास के पद में धर्मशास्त्रविदों के समान होता है तथा कभी धर्मशास्त्रविदों से बढ़ जाता है, क्योंकि वह उसी झरने से अंजली (चुल्लू) भरता है जिस से शरीअत निकलती है।

फ़िर इमाम साहिब यहाँ यह भी फ़रमाते हैं कि साहिबे कश्फ़ उन ज्ञानों का मुहताज नहीं जो धर्मशास्त्रविदों के पक्ष में उन के प्रयास के औचित्य के लिए शर्त ठहराए गए हैं तथा साहिबे कश्फ़ का कथन कुछ विद्वानों के निकट आयत और हदीस के समान है।

फिर पृष्ठ 33 में फ़रमाते हैं कि कुछ हदीसें मुहद्दिसीन (हदीसवेत्ताओं) के नज़दीक आपत्ति योग्य होती हैं परन्तु अहले कश्फ़ को उनके सही होने पर अवगत किया जाता है जिस प्रकार कि

اَصْحَابِیْ کَالنُّجُوْمِ

(अस्हाबी कन्नुजूम) की हदीस मुहद्दिसीन के नज़दीक प्रतिप्रश्न (जिरह) से खाली नहीं, परन्तु अहले कश्फ़ के निकट सही है।

फिर पृष्ठ 34 में फ़रमाते हैं कि हमारे पास कोई ऐसा सबूत नहीं जो अहले कश्फ़ के कलाम का खण्डन करे, न बौद्धिक, न पुस्तकीय न शरई, क्योंकि कश्फ़ की स्वयं शरीअत समर्थक है।

फिर पृष्ठ 48 में फ़रमाते हैं कि बहुत से ख़ुदा के वलियों से प्रसिद्ध हो चुका है कि वे आँहज़रत स.अ.व. से स्वर्ग में या बतौर कश्फ़ एक साथ बैठे तथा उनके समकालीनों ने उनके दावे को स्वीकार किया।

फिर इमान शे'रानी साहिब ने उन लोगों के नाम लिए हैं जिनमें से एक इमाम मुहद्दिस **जलालुद्दीन सुयूती** भी हैं और फ़रमाते हैं कि मैंने एक काग़ज जलालुद्दीन सुयूती का हस्ताक्षरयुक्त उनके साथी शैख अब्दुल क़ादिर शाज़ली के पास पाया जो किसी व्यक्ति के नाम पत्र था जिस ने उन से उस समय के बादशाह के पास सिफ़ारिश का अनुरोध किया था। अत: इमाम साहिब ने इसके उत्तर में लिखा था कि मैं आँहज़रत स.अ.व. की सेवा में हदीसों को सहीं करने के लिए जिन्हें मुहद्दिस लोग कमज़ोर कहते हैं उपस्थित हुआ करता हूँ। अत: उस समय तक पचहत्तर बार जागने की अवस्था में उनकी सेवा में उपस्थित हो चुका हूँ। यदि मुझे यह भय न होता कि मैं समय के बादशाह के पास जाने के कारण इस उपस्थित होने से रुक

जाऊँगा तो क़िले में जाता और तुम्हारी सिफ़ारिश करता।

शैख मुहियुद्दीन इब्ने अरबी ने 'फ़ुतूहात' में इस बारे में जो लिखा है उसमें से बतौर सार यह लेख है कि अहले विलायत (वली) कश्फ़ द्वारा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आदेश पूछते हैं और उनमें से जब किसी को किसी वृत्तान्त में हदीस की आवश्यकता होती है वह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दर्शन से सम्मानित हो जाता है फिर जिब्राईल अलैहिस्सलाम उतरते हैं और आँहज़रत जिब्राईल से वह समस्या जिसकी वली को आवश्यकता होती है पूछ कर उस वली को बता देते हैं अर्थात् प्रतिबिम्ब स्वरूप वह समस्या जिब्राईल के उतरने से प्रकट हो जाती है। फिर शैख इब्ने अरबी ने फ़रमाया है कि हम इस ढंग से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हदीसों को सही करा लेते हैं। **अधिकांश हदीसें ऐसी हैं जो मुहद्दिसीन के निकट सही हैं और वे हमारे निकट सही नहीं तथा बहुत सी हदीसें स्वयंनिर्मित हैं तथा आँहज़रत के कथन से कश्फ़ के माध्यम से सही हो जाती है।** कलाम समाप्त हुआ।

और फ़ुतूहाते मक्किया में इब्ने अरबी साहिब ने यह भी फ़रमाया है एकान्त में ख़ुदा की स्तुति करने वालों पर ख़ुदा के दिए हुए वे ज्ञान प्रकट होते हैं जो प्रतिभाशाली लोगों को भी प्राप्त नहीं होते और ये ईश्वर प्रदत्त ज्ञान और रहस्य और ख़ुदा की मा'रिफ़त नबियों और वलियों से विशेष्य हैं। जुनैद बग़दादी से नक़ल किया गया है कि उन्होंने तीस वर्ष इस श्रेणी में रहकर यह पद प्राप्त किया है तथा बा यज़ीद बुस्तामी से नक़ल किया है भौतिकवादी विद्वानों ने ज्ञान मुर्दों से लिया है और हम ने जीवित से जो कि ख़ुदा तआला है। कलाम समाप्त हुआ!

इसी प्रकार मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब ने मुहद्दिसों के सरदार हज़रत शाह वलीउल्लाह रह. की पवित्र वाणी इस सन्दर्भ में बहुत कुछ लिखे हैं तथा अन्य विद्वानों और फ़क़ीरों की भी साक्ष्य प्रस्तुत की हैं, परन्तु हम उन सब को इस पत्रिका में लिख नहीं सकते और न लिखने की आवश्यकता है। इल्हाम और कश्फ़ का सम्मान और उच्च पद पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध है, वह व्यक्ति जिस ने किश्ती को

तोड़ा और एक निर्दोष बच्चे का वध किया, जिसका वर्णन पवित्र क़ुर्आन में है वह केवल एक मुल्हम ही था, नबी नहीं था। इल्हाम और कश्फ़ का मसअला इस्लाम में ऐसा कमज़ोर नहीं समझा गया कि जिसकी प्रकाशमान ज्वाला केवल जन सामान्य के मुख की फूंकों से बुझ सके। यही एक सच्चाई तो इस्लाम के लिए वह उच्च श्रेणी का निशान है जो प्रलय तक इस्लाम की अद्धितीय प्रतिष्ठा और प्रताप को प्रकट कर रहा है, यही तो वे विशेष बरकतें हैं जो अन्य धर्मावलम्बियों में नहीं पाई जातीं। हमारे विद्वान इस इल्हाम के विरोधी बन कर नबी करीम स.अ.व. की हदीसों को झुठलाने वाले ठहरते हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है कि प्रत्येक सदी (शताब्दी) पर एक मुजद्दिद का आना आवश्यक है। अब हमारे विद्वान कि जो प्रत्यक्ष में हदीस के अनुसरण का दम भरते हैं न्याय से बताएं कि इस सदी के सर पर किस ने इल्हाम पाकर **मुजद्दिद** होने का दावा किया है। यों तो हमेशा धर्म का नवीनीकरण हो रहा है, परन्तु हदीस का आशय तो यह है कि **वह मुजद्दिद ख़ुदा तआला की ओर से आएगा अर्थात् ख़ुदा के प्रदान किए हुए ज्ञानों तथा आकाशीय निशानों के साथ** अब बताएं कि यदि यह विनीत सत्य पर नहीं है तो फिर वह कौन आया जिसने इस चौदहवीं सदी के सर पर मुजद्दिद होने का ऐसा दावा किया जैसा कि इस विनीत ने किया। कोई इल्हामी दावों के साथ समस्त विरोधियों के सामने ऐसा खड़ा हुआ जैसा कि यह विनीत (ख़ाकसार) खड़ा हुआ।

تَفَكَّرُوا وَتَنَدَّمُوا وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تَغْلُوا

और यदि यह ख़ाकसार मसीह मौऊद होने के दावे में ग़लती पर है तो फिर आप लोग कुछ प्रयास करें कि जो मसीह मौऊद आपकी कल्पना में है इन्हीं दिनों में आकाश से उतर आए क्योंकि मैं तो इस समय मौजूद हूँ परन्तु आप लोग जिस की प्रतीक्षा में हैं वह मौजूद नहीं और मेरे दावे के खण्डन की कल्पना केवल इस स्थिति में हो सकती है कि अब वह आकाश से उतर ही आए ताकि मैं दोषी ठहर सकूँ। आप लोग यदि सत्य पर हों तो यह दुआ स्वीकार हो जाएगी, क्योंकि झूठों के मुकाबले पर सदात्माओं की दुआ स्वीकार हो जाया करती है, परन्तु आप निश्चय

ही समझें कि यह दुआ कदापि स्वीकार नहीं होगी, क्योंकि आप ग़लती पर हैं। मसीह तो आ चुका परन्तु आपने उसे पहचाना नहीं, तब आप की कल्पनातीत आशा कदापि पूर्ण नहीं होगी। यह समय गुज़र जाएगा तथा उनमें से कोई मसीह को उतरते हुए नहीं देखेगा। जब कि तेरहवीं सदी के अधिकांश विद्वान उसका प्रकटन चौदहवीं सदी में निर्धारित कर गए हैं और कुछ तो चौदहवीं सदी वालों को बतौर वसीयत यह भी कह गए हैं कि यदि उनका युग पाओ तो उन्हें हमारा अस्सलामो अलैकुम पहुँचाना।

शाह वलीउल्लाह साहिब मुहद्दिसों के सरदार भी उन्हीं में से हैं।

अन्ततः हम यह भी स्पष्ट करना चाहते हैं कि हमें इस से इन्कार नहीं कि हमारे पश्चात कोई अन्य भी मसीह का समरूप बनकर आए क्योंकि नबियों के समरूप संसार में हमेशा होते रहते हैं अपितु ख़ुदा तआला ने एक निश्चित और यक़ीनी भविष्यवाणी में मुझ पर प्रकट कर रखा है कि मेरी ही नस्ल से एक व्यक्ति पैदा होगा जिसकी कई बातों में मसीह से समरूपता होगी, वह आकाश से उतरेगा और पृथ्वी पर रहने वाले लोगों का मार्ग प्रशस्त कर देगा, वह बन्दी बनाए गए लोगों को आज़ादी प्रदान करेगा तथा जो सन्देहों की ज़ंज़ीरों में जकड़े हुए हैं उन्हें मुक्त कराएगा

فرزند دلبند گرامی و ارجمند مظهر الحق و العلاء کانّ اللّٰہ نزل من السماء

(फर्ज़न्द दिलबन्दगिरामी अर्जुमन्द मज़हरुलहक़्क़े वलअला कअन्नलाहा नज़ला मिनस्समाए) परन्तु यह विनीत एक विशेष भविष्यवाणी के अनुसार जो ख़ुदा तआला की पवित्र किताबों में पाई जाती है। मसीह मौऊद के नाम पर आया है।

واللّٰہ اعلم و علمہ احکم

(अल्लाह ही अधिक ज्ञान रखने वाला तथा उका ज्ञान सर्वाधिक सुदृढ़ है)

جائیہ از مسیح و نزولش سخن رود گویم سخن اگرچہ ندارند باورم

अनुवाद :- जहाँ मसीह और उसके उतरने की चर्चा हो, वहाँ मैं यही कहता

हूँ यद्यपि लोग विश्वास न करें।

کاندرآ دلم دمید خداوند کردگار کان برگزیده را ز رہِ صدق مظہرم

कि अल्लाह तआला ने मुझे इल्हाम किया है कि मैं उस का सच्चा द्योतक हूँ।

موعود و بحلیۂ مانور آمدم حیف است گربدیده نہ بینند منظرم

मैं वही हूँ जिसका वादा दिया गया है और मेरी आकृति हदीसों के अनुकूल है। खेद है यदि आँखें खोलकर मुझे न देखें।

رنگم چوگندم است و بمو فرق بین ست ز انسان کہ آمد است در اخبار سرورم

मेरा रंग गेहुँआं है और बालों में स्पष्ट अन्तर है जैसा कि मेरे आक़ा की हदीसों में आता है।

اینؔ مقدمم نہ جائے شکوک ست والتباس سیدؐ جدا کند ز مسیحائے احمرم

मेरे आने में सन्देह और संशय की गुंजायश नहीं, मेरा स्वामी मुझे लाल रंग वाले मसीह से पृथक कर रहा है।

از کلمۂ منارۂ شرقی عجب مدار چون خودز مشرق است تجلی نیّرم

पूर्वी मीनार वाली बात से आश्चर्य न कर जबकि मेरे सूर्य का उदय पूरब से ही है।

اینک منم کہ حسب بشارات آمدم عیسیٰ کجاست تابہ نہد پا بہ منبرم

मैं ही हूँ जो शुभ सन्देश के अनुसार आया हूँ। ईसा कहाँ है जो मेरे मंच पर क़दम रखे।

آنرا کہ حق بجنت خُلدش مقام داد* چون برخلاف وعدہ برون آرد، از ارم

वह जिसे ख़ुदा तआला ने स्थायी स्वर्ग में स्थान दिया वह उसे अपने वादे के विपरीत स्वर्ग से क्यों निकाले।

---

* देखो इन्जील 'मती'

چون کافر از ستم بپرستد مسیح را   غیوریٔ خدا بسرش کرد، ہمسرم

चूँकि काफ़िर अकारण मसीह की उपासना करता है, इसलिए ख़ुदा के स्वाभिमान ने मुझे उस का

رو، یک نظر بجانب فرقان زِغور کُن   تابر تو منکشف شود ایں رازِ مُضمرم*

जा और क़ुर्आन की ओर ध्यानपूर्वक देख ताकि मेरा गुप्त रहस्य तुझ पर खुल जाए।

یاربّ کجاست محرم رازِ مکاشفات   تا نور باطنش خبر آرد ز مُخبرم

हे मेरे प्रतिपालक! कश्फ़ों के रहस्य का ज्ञाता कहाँ है ताकि उसका आन्तरिक प्रकाश आँहज़रत (स.अ.व.) से सूचना लाए।

آں قبلہ رو نمود بگیتی بچار دہم   بعد از ہزار و سہ کہ بُت افگند درحرم

उस क़िब्ले ने चौदहवीं सदी में अपना मुख दिखाया, हरम से मूर्तियाँ निकालने के तेरह सौ वर्ष के पश्चात।

جوشید آں چناں کرم منبع فیوض   کآمدندائے یار زِ ہرکوئے و معبرم

उस वरदानों के उद्‌गम की कृपा इतने जोश में आई कि मेरे प्रत्येक गली कूचे से प्रियतम की आवाज़ आने लगी।

اےؔ معترض بخوفِ الٰہی صبور باش   تاخود خدا، عیاں کُند، آں نور اخترم

हे आरोपित करने वाले ख़ुदा से भयभीत रह और धैर्य से काम ले ताकि ख़ुदा स्वयं मेरे सितारे के प्रकाश को प्रकट कर दे।

آخر نخواندۂ، کہ گمانِ نکو کنید   چوں میروی برون زِ حدودش برادرم

क्या तूने नहीं पढ़ा ? कि नेक नीयती से काम लो। अत: हे भाई तू उसकी सीमाओं से बाहर क्यों जाता है।

---

* अन्त तक ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ

برمن چرا کشی تو چنیں خنجر زباں   از خود نیم زِ قادرِ ذوالمجد اکبرم

तू मुझ पर जीभ की छुरी इस प्रकार क्यों चलाता है, मैं स्वयं नहीं आया अपितु ख़ुदा तआला ने मुझे भेजा है।

مامورم و مراچہ دریں کار اختیار   رَو، ایں سخن بگوبہ خداوندِ آمرم

मैं तो आदिष्ट (मामूर) हूँ मुझे इस कार्य में क्या अधिकार है जा! यह बात मेरे भेजने वाले ख़ुदा से पूछ।

اے آنکہ سوئے من بدویدی بصر تبر   از باغبان بترس کہ من شاخِ مثمرم

हे वह जो मेरी ओर सैकड़ों कुल्हाड़ियाँ लेकर दौड़ा है, माली से डर, क्योंकि मैं एक फलदार ठहनी हूँ।

حکم است ز آسمان بزمیں مے رسانمش   گر بشنوم نگویمش آن را کجا برم

आकाश का आदेश मैं पृथ्वी तक पहुँचाता हूँ, यदि मैं उसे सुनूँ और लोगों को न सुनाऊँ तो उसे कहाँ ले जाऊँ।

اے قوم من بگفتۂ من تنگدل مباش   زِ اوّل چنین مجوش ببین تا بہ آخرم

हे मेरी क़ौम मेरी बातों से उदास न हो, प्रारंभ में ही ऐसा जोश न दिखा अपितु अन्त तक मेरा हाल देख।

من خودنگویم این کہ بہ لوحِ خدا ہمین است   گر طاقتست محو کُن آن نقش داورم

मैं स्वयं यह बात नहीं कहता अपितु लौहे महफ़ूज़ में ही ऐसा लिखा है यदि तुझ में शक्ति है तो ख़ुदा के लिखे हुए को मिटा दे।

در تنگنائے حیرت و فکر زِقوم خویش   یارب عنایتے کہ ازین فکر مضطرم

मैं अपनी क़ौम के कारण आश्चर्य और चिन्ता के कष्ट में हूँ हे मेरे रब्ब! कृपा कर कि मैं इस कष्ट से व्याकुल हूँ।

نے چشم مانده است و نه گوش و، نه نورِ دل   جز یک زبان شان که نیرّ زَد بیکدرم

न उनकी आँखें शेष हैं न कान और न हृदय का प्रकाश सिवाए एक जीभ के जिसका मूल्य एक पैसा भी नहीं।

بد گفتنم، زِ نوع عبادت شُمُر ده اند   در چشم شان پلید ر از ہر مُزوَرم

उन लोगों ने मुझे बुरा, कहना इबादत (उपासना) समझ रखा है उन की दृष्टि में मैं प्रत्येक झूठे से अधिक अपवित्र हूँ।

اے دل تو نیز خاطر اینان نگاه دار   کاخر کنند دعوئے جُبِّ پیمبرم

तथापि हे हृदय तू उन लोगों का ध्यान रख, क्योंकि आख़िर वे मेरे पैग़म्बर से प्रेम का दावा करते हैं।

اے منکرِ پیام سَروش و ندائے حق   از من خطا مبین کہ خطا در تو بنگرم

हे वह जो फ़रिश्ते की सूचना और ख़ुदा की आवाज़ का इन्कारी है दोष मुझ में नहीं अपितु तुझ में है।

جانم گداخت از غمِ ایمانت اے عزیز   و این طرفه ترکه من بگمانِ و کافرم

हे प्रिय मेरे प्राण तेरे ईमान की चिन्ता में घुल गए, परन्तु विचित्र बात यह है कि तेरे विचार में मैं काफ़िर हूँ।

خواہی کہ روشنت شود احوال صدق ما   روشن دلی بخواه ازان ذات ذُو الکرم

यदि तू चाहता है कि हमारे सत्य की वास्तविकता तुझ पर प्रकाशित हो जाए तो उसी दयालु हस्ती से हृदय का प्रकाश माँग।

گوشِ دِلم بجانب تکفیر کس کُجاست   من مست جامہائے عنایاتِ دلبرم

मेरा विचार किसी को काफ़िर बनाने की ओर कब है, मैं तो अपने प्रियतम की अनुकम्पाओं के जाम से सन्तुष्ट हूँ।

از طعن دشمنان خبرے چون شود مرا کاندر خیال دوست بخوابِ خوش اندرم

शत्रुओं के कटाक्ष का मुझ पर क्या प्रभाव हो सकता है मैं तो यार की कल्पना में मदोन्मत हूँ।

من میزیم بوَحیِ خدائے کہ بامن است پیغام اوست چون نفسِ رُوح پرورم

मैं तो उस ख़ुदा की वह्यी के सहारे जीवित हूँ जो मेरे साथ है उसका इल्हाम मेरे लिए जीवनदायिनी सांस की भाँति है।

منّ رخت بُردہ ام بعماراتِ یارِ خویش دیگر خبر مپرس ازین تیرہ کشورم

मैंने तो अपने यार के घर में डेरा डाल दिया है, अत: तू इस अंधकारपूर्ण संसार के बारे में मुझ से कुछ न पूछ।

عشقش بتارو پُو د دل من درون شداست مہرش شد است در رہِ دین مہرِ انورم

उसका प्रेम मेरे हृदय के रोम-रोम में प्रवेश कर गया है और उसका अनुराग धर्म के मार्ग में मेरे लिए चमकता हुआ सूर्य बन गया है।

رازِ محبتِ من و اُو فاش گر شدے بسیار تن کہ جان بفشاندی برین درم

यदि मेरे और उसके प्रेम का रहस्य प्रकट हो जाता तो बहुत सी जनता मेरे द्वार पर अपने प्राण न्यौछावर कर देती।

ابنائے روزگار ندانند راز من من نور خود نہفتہ زِ چشمان شپرم

सांसारिक लोग मेरे रहस्य को नहीं जानते, मैंने अपने प्रकाश को चमगादड़ों की दृष्टि से छुपा रखा है।

بعد از رَہم ہر آنچہ پسندند ہیچ نیست بد قسمت آنکہ در نظرش ہیچ محترم

मेरा मार्ग छोड़कर वे जो भी मार्ग पसन्द करें वह कुछ नहीं। वह व्यक्ति दुर्भाग्यशाली है जो अधम को सम्मान देता है।

ہر لحظہ میخوریم زِجامِ وصالِ دوست   ہر دل انیس یار علٰی رغم منکرم

हम तो प्रतिपल यार के मिलन का जाम पीते हैं और मैं हर क्षण अपने इन्कारी के विरुद्ध अपने यार के साथ रहता हूँ।

بادِ بہشت بردلِ پُر سوز من وَزَد   صد نکہتِ لطیف دہد دُود مجمرم

स्वर्ग की हवाएं मेरे तपन पूर्ण हृदय पर चलती हैं तथा मेरी उस अंगीठी का धुआँ सैकड़ों प्रकार की श्रेष्ठतम सुगन्धें उत्पन्न करता है।

بدبوئے حاسدان نرساند زِیان بمن   من ہر زمان ز نافۂ یادش مُعطّرم

ईर्ष्यालु लोगों की दुर्गन्ध मुझे हानि नहीं पहुँचा सकती, क्योंकि मैं हर समय ख़ुदा के स्मरण की कस्तूरी से सुगंधित रहता हूँ

کارم زِ قرب یار بجائے رسیدہ است   کانجا ز فہم و دانش اغیارِ برترم

प्रियतम के सानिध्य के कारण मेरा मामला उस सीमा तक पहुँच गया है कि मैं अन्य की बुद्धि और विवेक से बहुत श्रेष्ठ हो गया हूँ।

پائم زِ لُطف یار بجنّت خزیدہ است   و ازِ فضل آن حبیب بدستست ساغرم

प्रियतम की कृपा से मेरा क़दम स्वर्ग में प्रवेश कर गया है और उस यार की अनुकम्पा से मेरे हाथ में मिलन का जाम है।

جوشِ اجابتش کہ بوقتِ دعا بود   زان گونہ زاریم نشنید است مادرم

उसकी स्वीकारिता का ज़ोश जो मेरी दुआ के समय प्रकट होता है उतना रोना-धोना मेरी माँ ने भी नहीं सुना।

ہر سوئے وہر طرف رُخِ آن یار بنگرم   آن دیگرے کجاست کہ آید بخاطرم

मैं चारों ओर उस यार का चेहरा देखता हूँ फिर और कौन है जो मेरे ध्यान में आए।

اے حسرت این گروہ عزیزان مراندید وقتے بہ بینِدم کہ ازین خاک بگزم

खेद कि प्रियजनों ने मुझे न पहचाना, ये मुझे उस समय पहचानेंगे जब मैं गुज़र जाऊँगा।

گر خون شداست دل ز غم و درد شان چہ شد ہست آروزو کہ سربرود ہم درین سرم

यदि उनकी पीड़ी और शोक के कारण मेरा हृदय खून हो गया है तो क्या हुआ, मेरी तो इच्छा यह है कि इस लगन में मेरा सर भी क़ुर्बान हो जाए।

ہر شب ہزار غم بمن آید ز درد قوم یا رب نجات بخش ازین روز پُر شرم

प्रत्येक रात क़ौम की पीड़ा से मुझ पर सहस्त्रों चिन्ताएं आती हैं हे रब्ब! मुझे इस उपद्रव और उद्दण्डता के युग से मुक्ति दे।

یا رب بآبِ چشم من این کسل شان بشو کامروز تر شد است ازین درد بسترم

हे रब्ब! मेरी आँख के पानी से उन का यह आलस्य धो दे कि इस पीड़ा के कारण आज मेरा बिछौना तक भीग गया।

دریاب چونکہ آب زبہر و ریختم دریاب چونکہ جز تو نماند است دیگرم

मेरे न्याय के लिए पहुँच क्योंकि मैंने तेरे लिए आँसू बहाए हैं मेरी आर्तनाद सुन।

تاریکئ غموم باآخرنمی رسد این شب مگر تمام شود روز محشرم

ग़मों का अन्धकार समाप्त होने का नाम नहीं लेता, अंधकारमय रात तो कदाचित् प्रलय (क़यामत) तक लम्बी चली जाए।

دل خون شد است از غم این قوم ناشناس و از عالمانِ کج کہ گرفتند چنبرم

इस महत्व को न समझने वाली क़ौम के शोक से मेरा हृदय ख़ून हो गया तथा गुमराह विद्वानों के कारण जो मेरे पीछे पड़ गए हैं।

گر علم خشک و کورئ باطن نہ رہ زدے ہر عالم وفقیہ شدے ہمچو چاکرم

यदि नीरस ज्ञान और हृदय का अंधापन मध्य में न आता तो प्रत्येक विद्वान और

इस्लाम धर्म का ज्ञानी मेरे आगे दासों की भाँति होता।

بر سنگ مے کند اثر این منطقم مگر بے بہرہ این کسان ز کلان موثرم

मेरी ये बातें पत्थर तक पर प्रभाव करती हैं परन्तु ये लोग मेरे प्रभावकारी कलाम से वंचित हैं।

علم آن بود کہ نور فراست رفیق اوست این علم تیرہ رابہ پشیزے نمیخرم

ज्ञान तो वह है कि प्रतिभा का प्रकाश उस के साथ चलता है, इस अंधकारमय ज्ञान को तो मैं एक कौड़ी का भी नहीं खरीदता।

امروز قوم من نشناسد مقام من روز بہ گریہ یاد کند وقت خوشترم

आज के दिन मेरी क़ौम मेरा पद नहीं पहचानती, परन्तु एक दिन आएगा वह रो-रो कर मेरे मुबारक समय को याद करेगी।

اے قوم من بصبر نظر سوئے غیب دار تادست خود بعجز زبہر تو گسترم

हे मेरी क़ौम धैर्य के साथ परोक्ष की ओर दृष्टि रख ताकि मैं अपने हाथ (ख़ुदा के दरबार में) तेरे लिए विनम्रतापूर्वक फैलाऊँ।

گر ہمچو خاک پیش تو قدرم بود، چہ باک چون خاک نے کہ از خس و خاشاک کمترم

यदि तेरी दृष्टि में मेरा महत्व मिट्टी के बराबर भी हो तो क्या हानि है, मिट्टी तो क्या मैं कूड़े-कर्कट से भी अधिक निकृष्ट हूँ।

لطف است و فضل او کہ نوازد و گرنہ من کِرمم نہ آدمی صدف استم نہ گوہرم

यह उसकी कृपा और उपकार है कि वह महत्व देता है अन्यथा मैं तो एक कीड़ा हूँ न कि मनुष्य, सीप हूँ न कि मोती।

زانگونہ دست او دلم از غیر خود کشید کوئی کہے نہ بود دِگر در تصوّرم

उसके हाथ ने मेरे हृदय को अन्य की ओर से इस प्रकार खींच लिया जैसे उसके अतिरिक्त अन्य कोई भी मेरी कल्पना मात्र तक में न था।

بعد از خدا بعشقِ محمدؐ مخمرم　　گر کفر ایں بود بخدا سخت کافرم

ख़ुदा के पश्चात् मैं मुहम्मद के प्रेम में मुग्ध हूँ, यदि यह कुफ़्र है तो ख़ुदा की सौगन्ध मैं अत्यधिक काफ़िर हूँ।

ہر تارو پُودِ من بسرائد بعشق اُو　　از خود تہی و از غمِ آن دِلستان پُرم

मेरे रोम-रोम में उसका प्रेम समा गया है मैं अपनी इच्छाओं से खाली और उस प्रियतम की चिन्ता से भरा हुआ हूँ।

من در حریم قُدس چراغِ صداقتم　　دستش محافظ است زِ ہر بادِ صَر صَرم

मैं ख़ुदा के दरबार में सत्य का दीपक हूँ। हर तेज़ हवा से उसी का हाथ मेरी रक्षा करने वाला है।

ہر دم فلک شہادت صدقم ہمی دہد　　زینم کدام غم کہ زمین گشت منکرم

आकाश प्रतिपल मेरी सच्चाई की साक्ष्य (गवाही) देता है फिर मुझे इस बात की क्या चिन्ता कि पृथ्वी पर रहने वाले मुझे नहीं मानते।

واللہ کہ ہمچو کشتئ نوحم زکردگار　　بے دولت آنکہ دُور بماند ز لنگرم

ख़ुदा की क़सम मैं ख़ुदा की ओर से नूह की नौका के समान हूँ, दुर्भाग्यशाली है वह जो मेरे लंगर (नौका ठहराने का भारी बोझ) से दूर रहता है।

این آتشے کہ دامنِ آخر زمان بسوخت　　از بہرِ چارہ اش بخدا نہرِ کوثرم

यह अग्नि जिसने इस अन्तिम युग का दामन जला दिया है, ख़ुदा की क़सम मैं उसके उपचार के लिए कौसर नहर हूँ।

من نیستم رسول و نیاوردہ ام کتاب　　ہان مُلہم استم و زِ خداوند مُنذرم

मैं रसूल नहीं हूँ और किताब नहीं लाया हूँ, हाँ मुल्हम हूँ और ख़ुदा की ओर से डराने वाला।

یاربّ بزاریم نظرے کن بلطف و فضل   جُز دست رحمتِ تو دگر کیست یاورم

हे मेरे रब्ब मेरे रोने-धोने को देखकर अपना उपकार और कृपा-दृष्टि कर कि तेरी दया के हाथ के अतिरिक्त कौन मेरा सहायक है।

جانم فدا شود برہِ دینِ مصطفٰی   این است کام دل اگر آید مُیسّرم

मेरे प्राण मुस्तफ़ा के धर्म-मार्ग में क़ुर्बान हों, यही मेरा हार्दिक उद्देश्य है काश इसकी प्राप्ति हो जाए।

शान्ति और सौभाग्य के अत्यधिक निकट कौन लोग हैं, क्या वे लोग जिन्होंने इस विनीत का मसीह मौऊद होना स्वीकार कर लिया या वे लोग जो इन्कारी हो गए

स्पष्ट हो कि यह बात अत्यन्त स्पष्ट और प्रकाशमान है कि जिन्होंने इस विनीत (ख़ाकसार) का मसीह मौऊद होना स्वीकार कर लिया है वे लोग प्रत्येक ख़तरे की स्थिति से सुरक्षित और निर्दोष हैं तथा वे कई प्रकार के पुण्य, प्रतिफल तथा ईमानी शक्ति के पात्र ठहर गए हैं।

प्रथम - यह कि उन्होंने अपने भाई पर सुधारणा रखी है तथा उसे झूठ बनाने वाला या झूठा नहीं ठहराया तथा उसके बारे में किसी प्रकार के दूषित सन्देहों को हृदय में स्थान नहीं दिया। इस कारण उन्हें उस प्रतिफल की पात्रता प्राप्त हुई जो भाई पर सुधारणा रखने की स्थिति में प्राप्त होती है।

द्वितीय - यह कि वे सत्य स्वीकार करते समय किसी भर्त्सना करने वाले की भर्त्सना से नहीं डरे और न कामवासना संबंधी भावनाएं उन पर प्रभुत्व जमा सकीं, इस कारण वे पुण्य के पात्र बन गए कि उन्होंने सत्य के निमंत्रण को प्राप्त करके

एक ख़ुदाई उद्घोषक की आवाज़ सुनकर सन्देह को स्वीकार कर लिया तथा किसी प्रकार की बाधा से बाधित नहीं हुए।

तृतीय - यह कि भविष्यवाणी के चरितार्थ पर ईमान लाने के कारण वे उन समस्त भ्रमों से मुक्त हो गए कि जो प्रतीक्षा करते-करते एक दिन पैदा हो जाते हैं और अन्तत: हताशा की अवस्था में ईमान समाप्त हो जाने का कारण बनते हैं तथा उन सौभाग्यशाली लोगों ने न केवल उपरोक्त ख़तरों से मुक्ति पाई अपितु ख़ुदा तआला का एक निशान तथा उस के नबी की भविष्यवाणी अपने जीवन में पूर्ण होती देख कर ईमान की शक्ति में अत्यन्त उन्नति कर गए तथा उन के सुने हुए ईमान पर मा'रिफ़त का एक रंग आ गया, अब समस्त आशंकाएं दूर हो गईं जो उन भविष्यवाणियों के बारे में हृदयों में जन्म लिया करती हैं जो समाप्त होने में नहीं आतीं।

चतुर्थ - यह कि वे ख़ुदा तआला के भेजे हुए बन्दे पर ईमान लाकर ख़ुदा के उस प्रकोप और क्रोध से सुरक्षित हो गए जो उन अवज्ञाकारियों पर होता है कि जिनके भाग में झुठलाने और इन्कार करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

पंचम - यह कि वे उन वरदानों और बरकतों के योग्य ठहर गए, जो उन शुद्ध और निष्कपट लोगों पर उतरते हैं जो सुधारणा से उस व्यक्ति को स्वीकार कर लेते हैं कि जो ख़ुदा की ओर से आता है।

ये तो वे लाभ हैं जो ख़ुदा ने चाहा तो उन सौभाग्यशाली लोगों को प्राप्त होंगे जिन्होंने इस ख़ाकसार को स्वीकार कर लिया है, परन्तु जो लोग स्वीकार नहीं करते वे उन समस्त सौभाग्यों से वंचित हैं तथा उनका यह भ्रम भी व्यर्थ है कि स्वीकार करने की अवस्था में धर्म की हानि की आशंका है। मैं नहीं समझ सकता कि वह धर्म-हानि किस कारण हो सकती है, हानि तो इस स्थिति में होती कि यदि यह ख़ाकसार इस्लामी शिक्षा के विपरीत किसी अन्य नवीन शिक्षा का पालन करने के लिए उन्हें विवश करता उदाहणतया किसी वैध वस्तु को अवैध या अवैध को वैध बताता अथवा उन ईसानी आस्थाओं में जो मुक्ति के लिए आवश्यक हैं कुछ अन्तर

डालता या यह कि नमाज़ और रोज़ा हज और ज़कात इत्यादि शरीअत के कार्यों में कुछ अधिक या कम करता। उदाहरणतया पाँच समय की नमाज़ के स्थान पर दस समय की नमाज़ें कर देता या दो समय की रहने देता या एक माह के स्थान पर दो माह के रोज़े अनिवार्य कर देता, या उस से कम की ओर ध्यान आकर्षित करता तो निस्सन्देह सर्वथा हानि अपितु कुफ्र और क्षति थी, परन्तु जिस अवस्था में यह ख़ाकसार बारम्बार यही कहता है कि हे भाइयों मैं कोई नया धर्म या नई शिक्षा लेकर नहीं आया अपितु मैं भी तुम में से और तुम्हारे समान एक मुसलमान हूँ तथा हम मुसलमानों के लिए पवित्र क़ुर्आन के अतिरिक्त कोई अन्य किताब नहीं जिस का अनुसरण करें या अनुसरण करने के लिए दूसरों को आदेश दें तथा हज़रत ख़तमुलमुर्सलीन अहमद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त हमारे लिए कोई पथ-प्रदर्शक और पेशवा नहीं जिसका हम अनुसरण करें या दूसरों से कराना चाहें, तो फिर एक **ईमानदार** मुसलमान के लिए मेरे इस दावे पर ईमान लाना जिसका आधार ख़ुदा का इल्हाम है आशंका का कौन सा स्थान है। कष्ट कल्पना के तौर पर यदि मेरा यह कश्फ़ और इल्हाम ग़लत है और मुझे जो कुछ आदेश दिया जा रहा है उसके समझने में मैंने धोखा खाया है तो मानने वाले की इसमें हानि ही क्या है क्या उसने कोई ऐसी बात मान ली है जिसके कारण उसके धर्म में कोई विघ्न उत्पन्न हो सकता है। यदि हमारे जीवन में वास्तव में हज़रत मसीह इब्ने मरयम ही आकाश से उतर आए तो सर आँखों पर हम और हमारा सम्प्रदाय उन्हें सर्वप्रथम स्वीकार कर लेगा तथा इस प्रथम बात को स्वीकार करने का भी प्रतिफ़ल पाएगा जिसकी ओर केवल शुभ नीयत तथा ख़ुदा के भय से उसने पग उठाया था। बहर हाल इस ग़लती के रूप में भी (यदि मान लिया जाए) हमारे पुण्य का क़दम आगे ही रहा और हमें दो पुण्य मिले और हमारे विरोधी को मात्र एक, परन्तु यदि हम सत्य पर हैं और हमारे विरोधी भविष्य की आशाएं लगाने में ग़लती पर हैं तो हमारे विरोधियों का ईमान नितान्त ख़तरे की स्थिति में है, क्योंकि यदि उन्होंने वास्तव में अपने जीवन में हज़रत मसीह इब्ने मरयम को बड़ी प्रतिष्ठा और प्रताप के साथ

आकाश से उतरते देख लिया तथा अपनी आँखों से अवलोकन कर लिया कि फ़रिश्तों के साथ उतरते चले आते हैं, तब तो उनका ईमान सुरक्षित रहा अन्यथा दूसरी अवस्था में ईमान सुरक्षित रहने का कोई उपाय दिखाई नहीं देता, क्योंकि यदि जीवन के अन्त तक कोई मनुष्य आकाश से उतरता दिखाई न दिया अपितु आकाश पर जाने की अपनी ही तैयारी हो गई तो स्पष्ट है कि क्या-क्या सन्देह और भ्रम साथ ले जाएंगे और सच्चे नबी की भविष्यवाणी के संबन्ध में हृदय में क्या-क्या सन्देह पड़ेंगे और निकट है कि कोई ऐसा सख़्त भ्रम पड़ जाए कि जिससे ईमान ही का विनाश हो, क्योंकि यह समय इन्जील और हदीसों के संकेतों के अनुसार वही समय है जिसमें मसीह उतरना चाहिए। इसी कारण बुज़ुर्ग पूर्वजनों में से बहुत से अहले कश्फ़ मसीह के आने का समय चौदहवीं शताब्दी हिज्री का प्रारंभिक वर्ष बता गए हैं। अत: शाह वलीउल्लाह साहिब मुहद्दिस देहलवी रह. का भी यही मत है तथा स्वर्गीय मौलवी सिद्दीक़ हसन साहिब ने भी अपनी एक पत्रिका में ऐसा ही लिखा है तथा अधिकांश मुहद्दिस लोग इस हदीस के अर्थ में कि जो

اَلْاٰ یاتُ بَعْدَ الْمِأَتَیْنِ

है इसी ओर गए हैं। यदि यह कहो कि मसीह मौऊद का आकाश से दमिश्क़ के मीनार के पास उतरना समस्त मुसलमानों के बहुमत की आस्था है, तो इसका उत्तर मैं इसी पुस्तक में लिख चुका हूँ कि इस बात पर कदापि बहुमत नहीं, पवित्र क़ुर्आन में इसका कहाँ वर्णन है, वहाँ तो केवल मृत्यु का उल्लेख है। बुख़ारी में हज़रत यह्या की आत्मा के साथ हज़रत ईसा की आत्मा दूसरे आकाश पर वर्णन की गई है और दमिश्क में उतरने से विमुखता की गई है तथा इब्ने माजा साहिब बैतुल मुक़द्दस में उन्हें उतार रहे हैं तथा इन सब में से किसी ने यह दावा नहीं किया कि ये समस्त शब्द और नाम प्रत्यक्ष पर ही चरितार्थ हैं अपितु केवल भविष्यवाणी के प्रत्यक्ष रूप पर ईमान ले आए हैं फिर बहुमत किस बात पर है, हाँ तेरहवीं सदी के अन्त पर मसीह मौऊद का आना एक बहुमत की आस्था मालूम होती है। अत: यदि यह ख़ाकसार मसीह मौऊद नहीं तो फिर आप लोग मसीह मौऊद को आकाश

से उतार कर दिखाएं। सदात्माओं के वंशज हो, मस्जिद में बैठकर विनय और रुदन करो ताकि ईसा इब्ने मरयम आकाश से फ़रिश्तों के कंधों पर हाथ रखे हुए पधारें और तुम सच्चे हो जाओ अन्यथा क्यों अकारण बदगुमानी करते हो तथा इस आयत

لَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ (बनी इस्राईल : 37)

के अन्तर्गत दोषी ठहरते हो, ख़ुदा तआला से डरो।

लतीफ़ा : कुछ दिन पूर्व की बात है कि इस ख़ाकसार ने इस ओर ध्यान किया कि क्या इस हदीस का कि जो **'अलआयात बा'दल मिअतैन'** है एक यही उद्देश्य है कि तेरहवीं सदी के अन्त में मसीह मौऊद का प्रकटन होगा तथा क्या इस हदीस के अर्थ में भी यह ख़ाकसार सम्मिलित है तो मुझे कश्फ़ी तौर पर इस निम्नलिखित नाम के अक्षरों की संख्या की ओर ध्यान दिलाया गया कि देख यही मसीह है जो तेरहवीं सदी के पूरे होने पर प्रकट होने वाला था। हम ने पहले से यही तिथि नाम में निर्धारित कर रखी थी और वह नाम यह है **ग़ुलाम अहमद क़ादियानी** इस नाम की पूरी संख्या तेरह सौ है तथा इस क़ादियान के क़स्बे में इस ख़ाकसार के अतिरिक्त अन्य किसी व्यक्ति का नाम ग़ुलाम अहमद क़ादियानी नहीं, अपितु मेरे हृदय में डाला गया है कि इस ख़ाकसार के अतिरिक्त सम्पूर्ण विश्व में ग़ुलाम अहमद क़ादियानी किसी का भी नाम नहीं तथा इस ख़ाकसार के साथ अधिकतर ख़ुदा का यह स्वभाव जारी है कि वह ख़ुदा कुछ रहस्य अरबी वर्णमाला के अक्षरों के मूल्यों (values) में मुझ पर प्रकट कर देता है। एक बार मैंने आदम के जन्म-वर्ष की ओर ध्यान दिया तो मुझे संकेत किया गया उन मूल्यों पर दृष्टि डाल जो सूरह **'अलअस्त्र'** के अक्षरों में है कि उन्हीं में से वह तिथि निकलती है।

एक बार मैंने इस मस्जिद की तिथि को जिसके साथ मेरा मकान है इल्हामी तौर पर ज्ञात करना चाहा तो मुझे इल्हाम हुआ

مُبَارَكٌ وَّ مُبَارَكٌ وَّ كُلُّ اَمْرٍ مُّبَارَكٍ يُّجْعَلُ فِيْهِ

यह वही मस्जिद है जिसके बारे में इसी पुस्तक में लिख चुका हूँ कि मेरा मकान

इस क़स्बे के पूर्वी ओर आबादी के अन्तिम सिरे पर है इसी मस्जिद के निकट तथा इसके पूर्वी मीनार के नीचे जैसा कि हमारे सय्यद और पेशवा की भविष्यवाणी का अर्थ है, सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम।

और अभी कुछ दिन पूर्व की बात है कि एक व्यक्ति की मृत्यु के बारे में ख़ुदा तआला ने वर्णमाला के अक्षरों के मूल्यों की संख्या में मुझे सूचना दी जिस का सार यह है कि

كلبٌ يموتُ عَلٰی قَلْبٍ

अर्थात् वह कुत्ता है और कुत्ते की संख्या पर मरेगा जो बावन वर्ष को सिद्ध कर रहे हैं अर्थात् उसकी आयु बावन वर्ष से अधिक नहीं होगी। जब बावन वर्ष के अन्दर क़दम रखेगा तब उसी वर्ष के अन्दर-अन्दर ही परलोक सिधारेगा।

अब मैं पुन: उपरोक्त भाषण की ओर लौटते हुए कहता हूँ कि हमारा गिरोह एक भाग्यशाली गिरोह है जिसने अपने समय पर उस ख़ुदा के भेजे हुए बन्दे को स्वीकार कर लिया है जिसे आकाश और पृथ्वी के ख़ुदा ने भेजा है तथा उसके हृदयों ने स्वीकार करने में कुछ संकोच नहीं किया, क्योंकि वे भाग्यशाली थे और ख़ुदा तआला ने उन्हें अपने लिए चुन लिया था। ख़ुदा की कृपा ने उन्हें शक्ति प्रदान की और दूसरों को नहीं दी और उनका सीना खोल दिया और दूसरों का नहीं खोला। अत: जिन्होंने ले लिया उन्हें और भी दिया जाएगा तथा उनकी बढ़ोतरी होगी, परन्तु जिन्होंने नहीं लिया, उन से वह भी लिया जाएगा जो उनके पास पहले था। बहुत से सत्यनिष्ठों ने मनोकामना की कि उस युग को देखें परन्तु देख न सके, परन्तु खेद कि उन लोगों ने देखा परन्तु स्वीकार न किया। उनकी दशा की मैं किस जाति की दशा से उपमा दूँ। उनके बारे में यही उदाहरण चरितार्थ होता है कि एक बादशाह ने अपने वादे के अनुसार एक शहर में अपनी ओर से एक अधिकारी नियुक्त करके भेजा ताकि वह देखे कि वास्तव में आज्ञाकारी कौन है और अवज्ञाकारी कौन और ताकि उन समस्त विवादों का फ़ैसला भी हो जाए जो उनमें पैदा हो रहे हैं। अत: वह अधिकारी ठीक उस समय में जबकि उसके आने की आवश्यकता थी आया और

उसने अपने महान स्वामी का सन्देश पहुँचा दिया और सब लोगों को सद्मार्ग की ओर बुलाया और उन पर अपना हकम (मध्यस्थ) होना प्रकट कर दिया परन्तु वे उसके सरकारी कर्मचारी होने के बारे में सन्देह में पड़ गए, तब उसने ऐसे निशान दिखाए जो कर्मचारियों से ही विशेष्य होते हैं किन्तु उन्होंने न माना तथा उसे स्वीकार न किया वरन् उसे घृणा की दृष्टि से देखा और स्वयं को बड़ा समझा और उसका हकम होना अपने लिए स्वीकार न किया वरन् उसे पकड़ कर अपमानित किया और उसके मुख पर थूका और उसे मारने के लिए दौड़े और अत्यन्त तिरस्कार और अपमानित किया और बड़े कठोर शब्दों के साथ उसे झुठलाया। तब वह उनके द्वारा वे तमाम संकट सहन करके जो उसके पक्ष में प्रारब्ध थे अपने बादशाह की ओर वापस चला गया और वे लोग जिन्होंने उसकी ऐसी दुर्दशा की। किसी अन्य अधिकारी के आने की प्रतिक्षा करते रहे और मूर्खता के कारण ऐसे मिथ्या विचार पर जमे रहे कि यह तो अधिकारी नहीं था अपितु वह अन्य व्यक्ति है जो आएगा, जिसकी हमें प्रतीक्षा करनी चाहिए। अत: वे सारा दिन उस व्यक्ति की प्रतीक्षा करते रहे और उठ-उठ कर देखते रहे कि कब आता है और उस वादे की परस्पर चर्चा करते रहे जो बादशाह की ओर से था, यहाँ तक कि प्रतीक्षा करते करते सूर्य अस्त होने लगा और कोई न आया। अन्त में सायंकाल के निकट बहुत से पुलिस के सिपाही आए जिनके साथ बहुत सी हथकड़ियाँ भी थीं। अत: उन्होंने आते ही उन उपद्रवियों के शहर को भस्म कर दिया और फिर सब को पकड़ कर एक-एक को हथकड़ी लगा दी तथा बादशाह की अदालत की अवमानना के अपराध में तथा सरकारी कर्मचारी का मुक़ाबला करने के कारण चालान कर दिया जहाँ से उन्हें वे दण्ड प्राप्त हुए जिनके वे पात्र थे।

इसलिए मैं सच-सच कहता हूँ कि यही दशा इस युग के अत्याचारी इन्कार करने वालों की होगी। प्रत्येक व्यक्ति अपने मुख और क़लम तथा हाथ के कर्मों के परिणामस्वरूप पकड़ा जाएगा। जिसके कान सुनने के हों सुने।

हिन्दुस्तान के उलेमा की सेवा में विनय-पत्र

हे धार्मिक भाइयो एवं दृढ़ शरीअत के उलेमा! आप लोग मेरी इन याचनाओं को ध्यानपूर्वक सुने कि इस विनीत ने जो मसील मौऊद होने का दावा किया है जिसे मन्दबुद्धि लोग मसीह मौऊद समझ बैठे हैं, यह कोई नया दावा नहीं जो आज ही मेरे मुख से सुना गया हो अपितु यह वही पुराना इल्हाम है जो मैंने ख़ुदा तआला से पाकर **बराहीन अहमदिया** के कई स्थानों पर बड़ी स्पष्टता के साथ लिख दिया था जिसके प्रकाशन पर सात वर्ष से भी कुछ अधिक समय बीत गया होगा। मैंने यह दावा कदापि नहीं किया कि मैं मसीह इब्ने मरयम हूँ। जो व्यक्ति मुझ पर यह आरोप लगाए वह सर्वथा झूठ बनाने वाला और बहुत झूठा है वरन् मेरी ओर से सात या आठ वर्ष से निरन्तर यही प्रकाशित हो रहा है कि मैं मसीह का सदृश हूँ अर्थात् हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के कुछ अध्यात्मिक गुण, स्वभाव और शिष्टाचार इत्यादि ख़ुदा तआला ने मेरी प्रकृति में भी रखे हैं तथा अन्य कई मामलों में जिनकी व्याख्या उन्हीं किताबों में कर चुका हूँ। मेरे जीवन की मसीह इब्ने मरयम से अत्यधिक समरूपता है और यह भी मेरी ओर से कोई नई बात प्रकट नहीं की गई कि मैंने उन किताबों में स्वयं को वह मौऊद ठहराया है जिसके आने का पवित्र क़ुर्आन में संक्षेप में तथा हदीसों में विस्तार से वर्णन किया गया है, क्योंकि मैं तो पहले भी बराहीन अहमदिया में व्याख्या सहित उल्लेख कर चुका हूँ कि मैं वही मसीह मौऊद हूँ जिसके आने की सूचना आध्यात्मिक तौर पर पवित्र क़ुर्आन और हदीसों में पहले से मौजूद है। आश्चर्य कि **मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी** अपनी पत्रिका इशाअतुसुन्नह नं. 6, जिल्द 7 जिसमें बराहीन अहमदिया की समीक्षा लिखी है उन समस्त इल्हामों की यद्यपि आध्यात्मिक तौर पर नहीं, परन्तु संभावित तौर पर पुष्टि कर चुके तथा हार्दिक तौर पर स्वीकार कर चुके हैं परन्तु फिर भी सुना जाता है कि हज़रत मौलवी साहिब को भी अन्य लोगों का

कोलाहल देख कर हृदय में कुछ विरोध का जोश उत्पन्न होता है और यह चमत्कारों में से अद्‌भुत चमत्कार है तथा इस बारे में बराहीन अहमदिया में जिन इल्हामों का उल्लेख किया गया है वे पृष्ठ संख्या 238, 239, 240, 447, 498, 505, 510, 511, 513, 514, 556, 559, 560, 561 में लिखित हैं जिनकी इबारतें ये हैं -

يا احمد بارك الله فيك مارميت اذرميت ولٰكن الله رمٰى الرحمٰن علم القرٰان لتنذر قوما ما انذر اٰباؤهم و لتستبين سبيل المجرمين قل انّى امرت وانا اوّل المؤمنين ياعيسٰى انّى متوفيك ورافعك الىّ وجاعل الذين اتبعوك فوق الذين كفروا الٰى يوم القيٰمة هو الذى ارسل رسوله بالهُدٰى و دين الحق ليظهره على الدّين كلّه لا مبدل لكلمات الله انا انزلناه قريبًا من القاديان وبالحق انزلناه وبالحق نزل صدق الله ورسوله و كان امر الله مفعولا وقالوا ان هو الا افك نافترٰى وما سمعنا بهذا فى اٰبائنا الاوّلين قل هو الله عجيب يجتبٰى من يشآء من عباده لا يسئل عما يفعل و هم يسئلون سنلقى فى قلوبهم الرعب قل جآء كم نور من الله فلاتكفروا ان كنتم مؤمنين والذين اٰمنوا ولم يلبسوا ايمانهم بظلم اولٰئك لهم الامن وهم مهتدون و يخوفونك من دونهٖ ائمة الكفر تبت يدا ابى لهب وتب ما كان له ان يدخل فيها الا خائفا وما اصابك فمن الله الفتنة هٰهنا فاصبر كما صبر اولوالعزم الا انها فتنة من الله ليحب حبا جما حبا من الله العزيز الاكرم فى الله اجرك ويرضٰى عنك ربك ويتم اسمك وان لم يعصمك الناس فيعصمك الله من عنده وما كان الله ليتركك حتى يميز الخبيث من الطيب وعسىٰ ان تكرهوا شيئا وهو خير لكم و

الله يعلم وانتم لا تعلمون ربّ اغفر وار حم من السمآء رب انى مغلوب فانتصر ایلی ایلی لما سبقتنی رب ارنی کیف تحی الموتٰی رب لا تذرنی فردًا وانت خیرا لوارثین ربناافتح بیننا وبین قومنا بالحق وانت خیر الفاتحین بشری لك یا احمدی انت مرادی ومعی غرستُ کرامتك بیدی انت وجیه فی حضرتی اخترتك لنفسی شأنك عجیب واجرك قریب الارض والسمآء معك کما هو معی جری الله فی حلل الانبیآء لا تخف انك انت الاعلیٰ ینصرك الله فی مواطن ان یومی لفصل عظیم کتب الله لاغلبن انا ورسلی الاان حزب الله هم الغالبون۔

हे अहमद ख़ुदा तआला ने तुझ में बरकत डाल दी है, तू ने जो कुछ चलाया यह तूने नहीं अपितु ख़ुदा ने चलाया है, वही दयालु है जिसने तुझे क़ुर्आन सिखाया ताकि तू उन लोगों को डराए जिनके बाप-दादे डराए नहीं गए और ताकि दोषियों का मार्ग स्पष्ट तौर पर प्रकट हो जाए अर्थात् ताकि ज्ञात हो जाए कि कौन लोग तेरी संगत धारण करते हैं और कौन लोग बिना पूर्ण विवेक के विरोध के लिए खड़े हो जाते हैं और सब लोगों को कह दे कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से आदेश दिया गया हूँ और सब से प्रथम वह व्यक्ति हूँ जो इस आदेश पर ईमान लाया। हे ईसा मैं तुझे मृत्यु दूँगा और अपनी ओर उठाऊँगा और तेरे अनुयायियों का तेरे इन्कार करने वालों पर प्रलय के दिन तक प्रभुत्व रखूँगा। ख़ुदा वह शक्तिमान है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सत्य-धर्म देकर भेजा ताकि समस्त धर्मों पर हुज्जत की दृष्टि से विजयी करे। (यह वह भविष्यवाणी है जो पहले से पवित्र क़ुर्आन में इन्हीं दिनों के लिए लिखी गई है) तत्पश्चात ख़ुदा के इल्हाम के उन वादों को जो पहले से उसके पवित्र कलाम में आ चुके हैं कोई परिवर्तन नहीं कर सकता अर्थात् वे कदापि टल नहीं सकते, तत्पश्चात फ़रमाया है कि हमने इस मामूर को अपने निशानों और चमत्कारों

के साथ क़ादियान के निकट उतारा है तथा सच्चाई के साथ उतारा तथा सत्य के साथ उतारा। अल्लाह और उसके रसूल के वादे जो क़ुर्आन और हदीस में थे आज वे सच्चे हो गए और ख़ुदा तआला का वादा और बात एक दिन पूरी होना ही थी, और कहेंगे कि यह सर्वथा झूठ है जो स्वयं बना लिया, हमने अपने पूर्वजों से उसे नहीं सुना। उन्हें कह कि ख़ुदा की शान बड़ी विचित्र है तुम उसके रहस्यों तक पहुँच नहीं सकते, जिसे चाहता है अपने बन्दों में से चुन लेता है, उसके पास अपने बन्दों की कुछ कमी नहीं और उसके कामों के बारे में उससे कोई पूछ-ताछ नहीं कर सकता कि ऐसा क्यों किया और ऐसा क्यों नहीं किया और वह अपने बन्दों के कर्मों और कथनों की पूछ-ताछ करता है और शीघ्र ही हम उनके हृदयों पर भय डाल देंगे। उन्हें कह दे कि यह प्रकाश ख़ुदा की ओर से आया है यदि तुम मोमिन हो तो इस से इन्कार मत करो और वे लोग जो ईमान लाए और अपने ईमान में किसी अन्याय को नहीं मिलाया वे अमन की अवस्था में हैं और वे ही पथ-प्रदर्शन प्राप्त हैं। इन्कारियों के पेशवा तुझे भयभीत करेंगे। अबू लहब के दोनों हाथ तबाह हुए और स्वयं भी तबाह हुआ, उसके लिए उचित नहीं था कि इस मामले में निर्भीकतापूर्वक स्वयं प्रवेश करता अपितु डरता। तुझे लोगों की बातों से जो कुछ कष्ट पहुँचेगा वह वास्तव में ख़ुदा तआला की ओर से होगा। यहाँ अबू लहब से अभिप्राय ऐसे लोग हैं जो विरोधात्मक लेखों के लिए पूर्ण विवेक के बिना खड़े हो जाएंगे और

لَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ (बनी इस्राईल आयत - 37)

की निषेधाज्ञा से नहीं डरेंगे तथा सुधारणा की परवाह नहीं करेंगे तथा विवादित अस्पष्ट मामले को ख़ुदा के सुपुर्द नहीं करेंगे। फिर फ़रमाया कि जब लोग विरोध करने पर तैयार हो जाएंगे तो यह एक परीक्षा का स्थान होगा। अत: इस समय तू धैर्य धारण कर जैसा कि दृढ़ संकल्प रसूल धैर्य करते रहे हैं। स्मरण रख कि यह ख़ुदा की ओर से आज़मायश है ताकि वह पूर्णतया तुझ से प्रेम करे, यह वह प्रेम है जो प्रभुत्वशाली और प्रतिष्ठावान ख़ुदा की ओर से है, तेरा प्रतिफल ख़ुदा देगा और तेरा रब्ब तुझ से प्रसन्न होगा और तेरा नाम पूरा करेगा और ख़ुदा तुझे बचाएगा यद्यपि

लोग तुझे बचाने से संकोच ही करें। और ख़ुदा ऐसा नहीं है कि अपवित्र और पवित्र में अन्तर दिखाने से पूर्व तुझे छोड़ दे और ऐसा हो सकता है कि तुम एक बात जिस का तुम पर आदेश हो उसे तुम उपेक्षित समझो और तुम्हारे हृदय को अच्छी न लगे, परन्तु वास्तव में वह तुम्हारे लिए अच्छी हो, और अल्लाह तआला रहस्यों की वास्तविकता जानता है और तुम नहीं जानते। हे मेरे रब्ब मेरे पापों को क्षमा कर और आकाश से मुझ पर दया कर और मेरे लिए खड़ा हो कि मैं असहाय हूँ। हे मेरे ख़ुदा, हे मेरे ख़ुदा ! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया (यह संकेत उस समानता की ओर है जो इस ख़ाकसार को हज़रत मसीह से है क्योंकि ईली-ईली की दुआ वास्तव में मसीह ने अपनी तंगी के समय की थी) और फिर इस ख़ाकसार की ओर से ख़ुदा तआला ने इल्हामी तौर पर यह दुआ प्रकट की कि मुझे दिखा कि तू क्योंकर मुर्दों को जीवित करता है (यह भी मसीही समानता की ओर संकेत है) फिर इस ख़ाकसार की ओर से इल्हामी तौर पर यह दुआ प्रकट की कि मुझे अकेला मत छोड़ और तू अभिभावकों में सर्वोत्तम है मुझ में और मेरी क़ौम में सच्चा न्याय कर कि तू सर्वोत्तम न्यायकर्ता है। हे मेरे अहमद तुझे ख़ुशखबरी हो, तू मेरा आशय और मेरे साथ है, मैंने तेरी प्रतिष्ठा का वृक्ष सुदृढ़ और स्थापित कर दिया, तू मेरे दरबार में आदरणीय है। मैंने तुझे अपने लिए चयन किया तेरी शान अद्‌भुत और तेरा प्रतिफल निकट है, तेरे साथ पृथ्वी और आकाश इसी प्रकार है जिस प्रकार कि वह मेरे साथ है, तू ख़ुदा का योद्धा है नबियों के लिबास में, न डर कि विजय तुझे ही है, ख़ुदा कई मैदानों में तेरी सहायता करेगा, मेरा दिन बड़े निर्णय का दिन है, मैंने लिख रखा है कि मैं और मेरे रसूल ही हमेशा विजयी रहेंगे। स्मरण रख कि ख़ुदा का (मानने वाला) वर्ग ही सदा विजयी रहा करता है।

ये वे इल्हाम हैं जिनका उल्लेख हम बराहीन अहमदिया में उपरोक्त पृष्ठों में कर चुके हैं जो स्पष्ट तौर पर तथा सांकेतिक तौर भी इस ख़ाकसार प्रतिज्ञात समरूप (मसीले मौऊद) होने को सिद्ध कर रहे हैं। हाँ बराहीन में इस बात का इल्हामी तौर पर कुछ निर्णय नहीं किया गया कि हज़रत मसीह इब्ने मरयम के उतरने के जो लोग

प्रतीक्षक हैं कि वही वास्तव में स्वर्ग से निकलकर फ़रिश्तों के कंधों पर हाथ रखे हुए आकाश से पृथ्वी पर उतर आएंगे, इसकी मूल वास्तविकता क्या है अपितु मैंने बराहीन में मसीह इब्ने मरयम के दोबारा संसार में आने का जो कुछ उल्लेख किया है वह केवल एक प्रसिद्ध आस्थानुसार है जिसकी ओर आजकल हमारे मुसलमान भाइयों के विचारों का झुकाव है। अत: इसी प्रत्यक्ष आस्थानुसार मैंने बराहीन में लिख दिया था कि मैं केवल प्रतिज्ञात समरूप (मसीले मौऊद) हूँ तथा मेरी ख़िलाफ़त (उत्तराधिकार) केवल आध्यात्मिक ख़िलाफ़त है, परन्तु जब मसीह आएगा तो उसकी प्रत्यक्ष और भौतिक दोनों प्रकार पर ख़िलाफ़त होगी यह बयान जो बराहीन अहमदिया में लिखा जा चुका है केवल उस सरसरी अनुकरण के कारण है जो मुल्हम के लिए अपने नबी के वर्णित लक्षणों की दृष्टि से उनकी वास्तविकता के प्रकटन से पूर्व अनिवार्य है, क्योंकि जो लोग ख़ुदा तआला से इल्हाम पाते हैं वे बिना बोलने के आदेश के नहीं बोलते, बिना समझाए नहीं समझते, बिना आदेश कोई दावा नहीं करते तथा अपनी ओर से किसी प्रकार का साहस नहीं कर सकते। यही कारण है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब तक ख़ुदा तआला की ओर से कुछ इबादतों (उपासनाओं) के बारे में वह्यी नहीं उतरती थी तब तक अहले किताब के धार्मिक नियमों पर कार्यरत होना उत्तम समझते थे तथा यथासमय वह्यी के उतरने और वास्तविकता का ज्ञान होने पर उसे त्याग देते थे। अत: इसी के अनुसार हज़रत मसीह इब्ने मरयम के बारे में अपनी ओर से बराहीन अहमदिया में कोई बहस नहीं की गयी थी। अब जो ख़ुदा तआला ने वास्तविकता को इस ख़ाकसार पर प्रकट किया तो सामान्यतया इसकी घोषणा यथाशक्ति आवश्यक थी, परन्तु मुझे यदि कुछ खेद है तो इस युग के उन मौलवी लोगों पर है, जिन्होंने पूर्व इसके कि मेरे लेखों पर चिन्तन-मनन की दृष्टि करें खण्डन लिखने आरंभ कर दिए हैं। लेखक और अन्वेषक भली भाँति समझते हैं कि जितना आज के कुछ मौलवियों ने मुझे अपनी पुरानी राय का विरोधी ठहराया है, विचार करने से विदित होगा कि वास्तव में इतना बड़ा विरोध नहीं है जिस पर इतना शोर मचाया गया। मैंने केवल

मसीले मसीह (मसीह का समरूप) होने का दावा किया है और मेरा यह भी दावा नहीं कि समरूप होना केवल मुझ पर ही समाप्त हो गया है अपितु मेरे निकट संभव है कि भावी युगों में मुझ जैसे अन्य दस हज़ार मसीले मसीह आ जाएं। हाँ इस युग के लिए मैं मसीह का समरूप हूँ तथा अन्य की प्रतीक्षा व्यर्थ है। यह भी स्पष्ट रहे कि यह मात्र मेरा ही विचार नहीं कि मसीह के समरूप बहुत हो सकते हैं अपितु नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों का भी यही आशय पाया जाता है, क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि संसार की समाप्ति होने तक लगभग तीस दज्जाल पैदा होंगे। अब स्पष्ट है कि जब तीस दज्जालों का आना आवश्यक है तो आदेशानुसार

لِكُلِّ دَجَّالٍ عِيْسٰى

तीस मसीह भी आने चाहिए। अत: इस वर्णन की दृष्टि से संभव अपितु नितान्त संभव है कि किसी युग में कोई ऐसा मसीह भी आ जाए जिस पर हदीसों के कुछ प्रत्यक्ष शब्द भी चरितार्थ हो सकें, क्योंकि यह ख़ाकसार इस सांसारिक शासन और बादशाहत के साथ नहीं आया, फ़क़ीरी और निर्धनता के लिबास में आया है और जब कि दशा यह है तो फिर विद्वानों के लिए आपत्ति ही क्या है। संभव है कि किसी समय उनकी यह मनोकामना भी पूरी हो जाए। हाँ उन की यह विशेष मनोकामना **कश्फ़ी, इल्हामी, अक़्ली (बौद्धिक) तथा क़ुर्आनी तौर** पर मुझे पूर्ण होती प्रतीत नहीं होती कि वे लोग वास्तव में किसी दिन हज़रत मसीह इब्ने मरयम को आकाश से उतरते देख लेंगे। अत: उन्हें इस बात पर हठ करना कि हम तभी ईमान लाएंगे जब मसीह को अपनी आँखों से आकाश से उतरता हुआ देख लेंगे, एक भयंकर हठ है। यह कथन उन लोगों के कथन से लगभग समान है जिनका वर्णन अल्लाह तआला ने स्वयं पवित्र क़ुर्आन में किया है कि वे

حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً*

* अलबक़रह, रुकू : 6

कहते रहे तथा ईमान लाने से वंचित रहे।

अब मैं **ख़ुदा के लिए उपदेश** के तौर पर अपने प्रिय विद्वानों (उलेमा) की सेवा में बुख़ारी तथा मुस्लिम (सहीहैन) की वे हदीसें वर्णन करना चाहता हूँ जिनके बारे में उनका विचार यह है कि इन से हमारा मसीह इब्ने मरयम के आकाश से उतरने का दावा भली भाँति सिद्ध होता है और जिन के आधार पर बारम्बार कह रहे हैं कि उन्हें अपने दावे की हदीसों के अनुसार डिग्री मिलती है। अत: वे हदीसें अनुवाद सहित निम्नलिखित हैं -

सही बुख़ारी पृष्ठ 490

والذی نفسی بیدہ لیوشکنّ ان ینزل فیکم ابن مریم حکمًا عدلًا فیکسر الصلیب ویقتل الخنزیر ویضع الحرب۔ کیف انتم اذا نزل ابن مریم فیکم امامکم منکم

अनुवाद :- ''अत: सौगंध है उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं कि तुम में इब्ने मरयम उतरेगा तथा तुम्हारी प्रत्येक विवादित समस्या का न्यायपूर्वक निर्णय करेगा, तथा असत्य और सत्य के पुजारियों (उपासकों) को पृथक-पृथक कर देगा। अत: वह इसी हकम (निर्णायक) होने के कारण सलीब को तोड़ेगा और सुअरों का वध करेगा तथा नित्य-प्रति के विवादों का अन्त कर देगा। उस दिन तुम्हारा क्या हाल होगा जिस दिन तुम में इब्ने मरयम उतरेगा और तुम जानते हो कि इब्ने मरयम कौन है वह तुम्हारा ही एक इमाम होगा और तुम में से ही (हे उम्मती लोगो) पैदा होगा। यहाँ तक बुख़ारी की हदीस का अनुवाद हो चुका तथा आप लोगों ने समझ लिया होगा कि इमाम बुख़ारी साहिब इमामुकुम मिन्कुम के शब्द से किस ओर संकेत कर गए हैं।

اَلْعَاقِلُ یُکْفِیْہِ الْاِشَارَۃ

(बुद्धिमान के लिए इशारा पर्याप्त होता है) अब मुस्लिम की हदीस का अनुवाद ध्यानपूर्वक सुनें और वह यह है -

وعن النواس بن سمعان قال ذكر رسول الله صلى الله عليه وسلم الدجّال فقال ان يخرج و انا فيكم فانا حجيجه دونكم وان يخرج ولست فيكم فكل امرء حجيج نفسه والله خليفتى علىٰ كل مسلم انّه شاب قطط عينه طافية كانّى اُشبِّههٗ بعبد العزّٰى ابن قطن فمن ادركه منكم فليقرء عليه فواتح سورة الكهف فانها جواركم من فتنة انه خارج خلة بين الشام والعراق فعاث يمينًا وعاث شمالًا يا عبادالله فاثبتوا قلنا يا رسول الله ما لبثه فى الارض قال اربعون يومًا، يوم كسنة و يوم كشهر ويوم كجمعة وسائر ايامه كايامكم، قلنا يا رسول الله فذالك اليوم الذى كسنة اتكفينا فيه صلٰوة يومٍ۔ قال لا اقدروا له قدره۔ قلنا يا رسول الله وما اسراعه فى الارض۔ قال كالغيث استدبرته الريح فياتى على القوم فيدعوهم فيؤمنون به۔ فيامر السماء فتمطر والارض فتنبت فتروح عليهم سارحتهم اطول ما كانت ذرىً واسبغه ضروعًا وامده۔ ثم ياتى القوم فيدعوهم فيردون عليه قوله فينصرف عنهم فيصبحون مملحين ليس بايديهم شیء من اموالهم ويمر بالخربة فيقول لها اخرجى كنوزك فتتبعه كنوزها كيعاسيب النحل ثم يدعو رجلًا ممتلئًا شبابًا فيضربه بالسيف فيقطعه جزلتين رمية الغرض ثم يدعوه فيقبل و يتهلل وجهه يضحك فبينما هو كذالك اذ بعث الله المسيح ابن مريم فينزل عند المنارة البيضاء شرقى دمشق، بين مهزودتين واضعًا كفيه على اجنحة ملكين اذا طاطأ رأسه قطر واذا رفعه تحدّر منه

مثل جمان کاللؤلؤ فلا یحل لکافر یجد من ریح نفسہ الا مات ونفسہ ینتھی حیث ینتھی طرفہ فیطلبہ حتی یدرکہ بباب لد فیقتلہ۔

अनुवाद :- और नवास बिन समआन से रिवायत है* कि रसूले ख़ुदा स.अ.व. ने दज्जाल का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि यदि मेरे जीवन में दज्जाल निकल आए तो मैं तुम्हारे सामने उससे झगड़ा करूँगा (यह वाक्य भविष्य की भविष्यवाणी का कि मसीह इब्ने मरयम के उतरने के समय दज्जाल अवश्य निकलेगा कमज़ोर करता है अपितु इस से ज्ञात होता है कि वास्तव में दज्जाल के निकलने का कोई विशेष समय निर्धारित नहीं किया गया, तभी तो स्वयं आँहज़रत स.अ.व. ने इब्ने सय्याद पर भी दज्जाल होने का अनुमान लगाया था। उस समय मसीह कहाँ था?) फिर फ़रमाया - यदि दज्जाल निकला और मैं तुम में न हुआ तो प्रत्येक व्यक्ति स्वयं उससे व्यक्तिगत तौर पर लड़ेगा अर्थात् बौद्धिक और शरई तर्कों के साथ। पुन: फ़रमाया कि मेरे पश्चात् ख़ुदा तआला प्रत्येक मुसलमान पर मेरा ख़लीफ़ा है और फ़िर फ़रमाया कि उसके बाल बहुत मुड़े हुए हैं और आंखें फूली हुई जैसे मैं (कश्फ़ी अवस्था में) अब्दुल उज़्ज़ा बिन क़ुतुन के साथ उसकी उपमा देता हूँ।

व्याख्या :- मुल्लाअली क़ारी ने लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दज्जाल को स्वप्न या कश्फ़ी अवस्था में देखा था और चूँकि वह एक सांसारिक अवस्था है इसलिए आँहज़रत स.अ.व. ने उसकी आकृति वर्णन करते समय कअन्नी अर्थात् जैसे कि का शब्द बता दिया, ताकि इस बात को सिद्ध करे कि यह देखना वास्तविक देखना नहीं अपितु एक व्याख्या चाहने वाली बात है। मैं

* इस सम्पूर्ण रिवायत का कर्त्ता-धर्ता केवल नवास बिन समआन है अन्य कोई नहीं है। यह बात बहुत विचित्र है कि इस रिवायत के बारे में सहाबा के बहुमत का ध्यान रखा जाता है तथा शीघ्र ही ज्ञात होगा कि यह अन्य रिवायतों के विपरीत है। इसी से।

कहता हूँ कि इसी पर सिहाह सित्तह* की बहुत सी हदीसें निश्चित और ठोस तौर पर सिद्ध कर रही हैं कि आँहज़रत स.अ.व. को जो हज़रत ईसा और दज्जाल के बारे में बातों का ज्ञान हुआ था वास्तव में वे सब आँहज़रत स.अ.व. के कश्फ़ थे जो अपने-अपने स्थान पर उचित व्याख्या और विवरण रखते हैं उन्हीं में से यह दमिश्क़ी हदीस भी है जो मुस्लिम ने वर्णन की है जिसका इस समय हम अनुवाद कर रहे हैं तथा हमारे इस वर्णन पर कि ये समस्त भविष्यवाणियाँ नबियों के कश्फ़ हैं और सच्चे स्वप्नों की भाँति क्रम की दृष्टि से व्याख्या के मुहताज हैं, स्वयं आँहज़रत स.अ.व. के पवित्र बयान ठोस गवाह हैं। जैसे कि बुख़ारी और मुस्लिम की यह निम्नलिखित हदीस -

وعن عبداللّٰہ بن عمر اَنّ رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم قال رایتُنی اللیلۃَ عند الکعبۃ فرأیت رجلا ٰادم کاحسن ما انت رأی من اُدم الرجال لہ لِمّۃ کاحسن ماانت راءٍ من اللمم قد رجّلھا فھی تقطر ماءً متکئًا علٰی عواتق رجلین یطوف بالبیت فسألتُ من ھذا فقالوا ھذاالمسیح ابن مریم قال ثم اذا انا برجل جعدٍ قططٍ اعورالعین الیمنٰی کان عینہ عنبۃ طافیۃ کاشبہ من رأیتُ من الناس بابن قطن واضعا یدیہ علٰی منکبی رجلین یطوف بالبیت فسألتُ من ھذا فقالوا ھذا المسیح الدجّال متّفق علیہ وفی روایۃ قال فی الدجا ل رجل احمر جسیم جعد الراس اعور العین الیمنٰی اقرب الناس بہ شبھًا ابن قطن۔

अर्थात् अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया - कि मैंने आज रात स्वप्न या कश्फ़ में स्वयं को काबे के

* हदीस की वे छ: अत्यधिक प्रमाणित पुस्तकें

पास देखा, वहाँ मुझे एक व्यक्ति गेहुएं रंग का दिखाई दिया जिसका रंग गेहुएं रंग वाले पुरुषों में से प्रथम श्रेणी का प्रतीत होता था तथा उसके बाल ऐसे स्वच्छ विदित होते थे कि जैसे कंघी की होती है और उन में से पानी टपकता है तथा मैंने देखा कि वह व्यक्ति दो मनुष्यों के कंधों पर सहारा लेकर काबे का तवाफ़ (परिक्रमा) कर रहा है। अत: मैंने पूछा कि यह कौन है तो मुझे कहा गया कि यह मसीह इब्ने मरयम है फिर उसी स्वप्न में एक व्यक्ति के पास से मैं गुज़रा जिसके बाल मुड़े हुए थे तथा उसकी दायीं आँख कानी थी मानो उसकी आँख अंगूर है फूला हुआ प्रकाश रहित, उन लोगों से बहुत समानता रखता था जो मैंने इब्ने कुतुन के साथ देखे हैं तथा उसने दोनों हाथ दो मनुष्यों के कन्धों पर रखे हुए थे तथा काबे का तवाफ़ कर रहा था, मैंने पूछा कि यह कौन व्यक्ति है, लोगों ने कहा कि यह मसीह का दज्जाल है।

अब इस हदीस पर ध्यान देने से ज्ञात होगा कि दमिश्क़ी हदीस में जो कुछ मुस्लिम ने वर्णन किया है उसकी अधिकतर बातें संक्षिप्त तौर पर इस हदीस में लिखी हुई हैं और ख़ुदा के रसूल स.अ.व. ने साफ़ और स्पष्ट तौर पर इस हदीस में वर्णन कर दिया है कि यह मेरा एक कश्फ़ या एक स्वप्न है। अत: यहाँ से निश्चित और यक़ीनी रंग में सिद्ध होता है कि वह दमिश्क़ वाली हदीस जिसका हमने पूर्व में उल्लेख किया है, वास्तव में वह भी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक स्वप्न ही है जैसा कि उसमें 'कअन्नी' का शब्द वर्णन करके यह संकेत भी किया गया है और यह हदीस जिसमें आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम साफ़ और स्पष्ट तौर पर फ़रमाते हैं कि मेरा यह कश्फ़ या स्वप्न है इसे बुख़ारी और मुस्लिम दोनों ने अपनी 'सही हैन' (सही बुख़ारी और सही मुस्लिम) में लिखा है। विद्वानों ने यहाँ एक आपत्ति प्रस्तुत करके ऐसे उत्तम रंग में इस का उत्तर दिया है जो हमारे दावे का ऐसा समर्थक है कि हम में और हमारे विरोधियों में निर्णायक है और यह है कि इस हदीस में जिस पर सर्व सम्मति है आँहज़रत स.अ.व. फ़रमाते हैं कि मैंने मसीह इब्ने मरयम को काबे का तवाफ़ (परिक्रमा) करते देखा तत्पश्चात् फ़रमाते हैं कि इसी प्रकार मैंने मसीह के दज्जाल को भी काबे का तवाफ़ करते

देखा। इस वर्णन से अनिवार्य होता है कि मसीह इब्ने मरयम और मसीह के दज्जाल का उद्देश्य एक ही हो और वे दोनों सद्मार्ग पर चलने वाले तथा इस्लाम के सच्चे अनुयायी हों हालाँकि अन्य हदीसों से यह सिद्ध होता है कि दज्जाल ख़ुदाई का दावा करेगा फिर उसे काबे के तवाफ़ से क्या काम है। इसका इस्लामी पंडितों ने यह उत्तर दिया है कि ऐसे शब्द और वाक्यों को प्रत्यक्ष पर चरितार्थ करना बहुत बड़ी भूल है। यह तो वास्तव में कश्फ़ और स्वप्नों की शैली में वर्णन है जिनकी व्याख्या करना चाहिए जैसा कि सामान्यतया स्वप्नों की की जाती है। अत: इसकी व्याख्या यह है कि तवाफ़ शब्दकोश में किसी के चारों ओर चक्कर लगाने को कहते हैं और इस में सन्देह नहीं कि जिस प्रकार हज़रत ईसा अपने उतरने के समय धर्म प्रचार के कार्य के इर्द-गिर्द परिक्रमा करेंगे और उसके सम्पन्न होने की इच्छा करेंगे। इसी प्रकार मसीह का दज्जाल भी अपने प्रकट होने के समय अपने उपद्रव फैलाने के कार्य के इर्द-गिर्द फिरेगा तथा उसकी सम्पन्नता चाहेगा। अब कहाँ हैं वे मौलवी लोग जो इन हदीसों के शब्दों को वास्तविकता पर चरितार्थ करना चाहते हैं तथा उनके अर्थों को प्रत्यक्ष इबारत से फेरना कुफ्र और नास्तिकता समझते हैं। तनिक अपने गिरेबान में मुँह डालकर देखें कि हमारे पूर्व बुज़ुर्गों ने इस हदीस का अर्थ करते समय मसीह के दज्जाल के तवाफ़ करने को एक स्वपन का मामला समझकर उसकी कैसी व्याख्या कर दी है जो प्रत्यक्ष शब्दों से बहुत दूर है, फिर जिस अवस्था में विवश होकर इन कश्फ़ों के एक भाग की व्याख्या की गई तो फिर क्या कारण कि ठोस अनुकूलताएं विद्यमान होने के बावजूद अन्य भागों की व्याख्या न की जाए।

स्पष्ट हो कि जिस प्रकार हमारे विद्वानों ने मसीह के दज्जाल के तवाफ़ को एक कश्फ़ी बात समझ कर उसकी एक आध्यात्मिक व्याख्या कर दी है, इसी प्रकार स्वयं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कई स्थानों पर स्पष्ट कर दिया है कि मुझ पर जो कुछ कश्फ़ी तौर पर प्रकट होता है जब तक ख़ुदा की ओर से उसके निश्चित और यक़ीनी अर्थ मालूम न हों मैं प्रत्यक्ष पर चरितार्थ नहीं कर सकता। उदाहरणतया इस हदीस को देखो जो सही बुख़ारी के पृष्ठ 551 में लिखित

है और वह यह है -

حدثنا معلی قال حدثنا وهیب عن هشام ابن عروة عن ابیه عنِ عائشة ان النبیّ صلی اللّٰہ علیه وسلم قال لَها اریتك فی المنام مرتین اریٰ انك فی سرقة من حریر ویقول هٰذه امرأتك فاكشف عنها فاذا هی انت فاقول ان یك هٰذا من عند اللّٰہ یمضه

अर्थात् हज़रत आइशा रज़ि. से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हे आइशा तू स्वप्न में मुझे दो बार दिखाई गई मैंने तुझे एक रेशम के टुकड़े पर देखा और कहा गया कि यह तेरी स्त्री है और मैंने उसे खोला तो क्या देखता हूँ कि तू ही है और मैंने कहा कि यदि ख़ुदा की ओर से यही व्याख्या है जो मैंने समझी है तो होकर रहेगी अर्थात् स्वप्नों और कश्फ़ों की व्याख्या आवश्यक नहीं कि प्रत्यक्ष पर ही चरितार्थ हो। कभी तो प्रत्यक्ष पर ही घटित हो जाती है कभी अप्रत्यक्ष पर घटित हो जाती है। अत: यहां आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वप्न की सच्चाई पर सन्देह नहीं किया, क्योंकि नबी का स्वप्न तो एक प्रकार की वह्यी होती है अपितु उसके घटित होने की पद्धति में सन्देह वर्णन किया है कि ख़ुदा जाने कि अपने प्रत्यक्ष रूप के अनुसार घटित हो या उसकी अन्य कोई व्याख्या पैदा हो और जिस पैग़म्बर ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह भी भली भांति सिद्ध हो गया कि जो वह्यी, कश्फ़ या स्वप्न के माध्यम से किसी नबी को हो उसकी व्याख्या करने में भूल ही हो सकती है जिस प्रकार कि इसी पृष्ठ 551 में एक अन्य हदीस में ऐसी भूल के बारे में स्वयं आँहज़रत स.अ.व. ने फ़रमा दिया है और वह यह है -

قال ابو موسی عن النبی صلی اللّٰہ علیه وسلم رأیت فی المنام انی اهاجر من مكة الی الارض بها نخل فذهب وهل الی انها

اليمامة او هجر فاذا هى المدينة يثرب

अर्थात् अबू मूसा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स.अ.व. ने फ़रमाया कि - मैंने स्वप्न में देखा कि मैं मक्का से ऐसे भू-भाग की ओर प्रवास करता हूँ जिसमें खजूरें हैं। अत: मेरी कल्पना इस ओर गई कि वह यमामा या हज़र होगा, परन्तु वह मदीना निकला जिसे 'यसरब' भी कहते हैं। इस हदीस में भी आँहज़रत स.अ.व. ने स्पष्ट तौर पर फ़रमा दिया कि कश्फ़ी बातों की व्याख्या में नबियों से भी गलती हो सकती है। इन हदीसों से भली भाँति स्पष्ट हो गया कि आँहज़रत स.अ.व. ने मसीह इब्ने मरयम और मसीह के दज्जाल के बारे में जो कुछ भविष्यवाणियां की हैं, वास्तव में वे सब नबी करीम स.अ.व. के कश्फ़ में नितान्त स्पष्ट तौर पर इस बात की ओर संकेत भी कर दिया कि इन कश्फ़ों को केवल प्रत्यक्ष पर चरितार्थ न करना, इनकी आध्यात्मिक व्याख्याएं हैं और ये समस्त बातें प्राय: आध्यात्मिक हैं जो प्रत्यक्ष रूपों में साकार करके दिखाई गई हैं, परन्तु खेद कि हमारे आजकल के विद्वान हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पद-चिन्हों पर चलना नहीं चाहते और अकारण कश्फ़ी रूपकों को वास्तविकता पर चरितार्थ करना चाहते हैं।

स्पष्ट हो कि कश्फ़ी अवस्था में बड़े-बड़े चमत्कार होते हैं और नाना प्रकार की समरूपताएं दृष्टिगोचर होती हैं। कश्फ़ी अवस्था में प्राय: ऐसी वस्तुएं साकार होकर दिखाई दे जाती हैं जब कि वास्तव में वे आध्यात्मिक होती हैं तथा प्राय: मनुष्य के रूप पर कोई आकृति दिखाई देती है और वास्तव में वह मनुष्य नहीं होता। उदाहरणतया ज़िरारह सहाबी का नौमान बिन अलमुन्ज़िर को जो अरब का एक राजा था भव्य वैभव के साथ स्वप्न में देखा, उसकी व्याख्या आँहज़रत स.अ.व. ने यह की कि इस से अभिप्राय अरब देश है जो फिर अपने सौन्दर्य और प्रतिष्ठा की ओर लौटकर आया है। यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि कश्फ़ी बातों में व्याख्या (ता'बीर) कहीं से कहीं चली जाती है। अत: इस ख़ाकसार को भी इस बात का व्यक्तिगत अनुभव है कि प्राय: स्वप्न या कश्फ़ी अवस्था में आध्यात्मिक बातें भौतिक रूप में साकार होकर मनुष्य के समान दिखाई दे जाती हैं। मुझे स्मरण है कि

जब मेरे पिता जी, अल्लाह तआला उन्हें क्षमा करे जो एक सम्माननीय रईस और अपने क्षेत्र में सम्मान के साथ प्रसिद्ध थे स्वर्गवासी हो गए तो उनके स्वर्गास के पश्चात् दूसरे या तीसरे दिन एक नितान्त सुन्दर स्त्री मैंने स्वप्न में देखी जिसकी आकृति अभी तक मेरी आँखों के सामने है, उसने कहा कि मेरा नाम रानी है तथा मुझे संकेतों द्वारा कहा कि मैं इस घर का सम्मान और प्रतिष्ठा हूँ और कहा कि मैं जाने को थी परन्तु तेरे लिए रह गई। उन्हीं दिनों में मैंने एक सुन्दर पुरुष देखा, मैंने उस से कहा कि तुम अद्‌भुत तौर से सुन्दर हो, तब उसने संकेत द्वारा मुझ पर प्रकट किया कि मैं तेरा जागृत-भाग्य हूँ तथा मेरे उस प्रश्न के उत्तर में कि तू अद्‌भुत सुन्दर व्यक्ति है उत्तर दिया कि हाँ मैं दर्शनीय व्यक्ति हूँ। अभी थोड़े दिन हुए कि मुझे एक यक्ष्मा रोग से पीड़ित तथा मृत्यु के निकट पहुँचा हुआ व्यक्ति दिखाई दिया तथा उसने प्रकट किया कि मेरा नाम दीन मुहम्मद है, मेरे हृदय में डाला गया कि यह मुहम्मद का धर्म है जो साकार रूप में दृष्टिगोचर हुआ है। मैंने उसे सांत्वना दी कि तू मेरे हाथ से स्वस्थ हो जाएगा। अत: इसी प्रकार कभी शुभ कर्म या दुष्कर्म भी साकार होकर दृष्टिगोचर हो जाया करते हैं और क़ब्र में कर्मों का साकार होकर दिखाई देना मुसलमानों की सामान्य आस्था है। इसी आधार पर आँहज़रत स.अ.व. स्वप्नों में दृष्टिगोचर होने वाले व्यक्तियों के नामों से मिलाकर अच्छाई या बुराई का स्वप्नफल लिया करते थे।

अब हम पुन: दमिश्क़ी हदीस के शेष अनुवाद की ओर लौटते हुए लिखते हैं कि आँहज़रत स.अ.व. ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति तुम में से उसे अर्थात् दज्जाल को पाए तो चाहिए कि उसके सामने सूरह 'कहफ़' की प्रारंभिक आयतें पढ़े कि इनमें इसके उपद्रव से अमन है। यह इस बात की ओर संकेत है कि यथासंभव 'अस्हाबे कहफ़' की भाँति स्थायित्व धारण करे, क्योंकि इन आयतों में उन लोगों के स्थायित्व का ही वर्णन है जो एक मुश्रिक राजा के अत्याचार से भयभीत होकर एक गुफ़ा में छुप गए थे (हे मेरे मित्रो! अब तुम भी इन आयतों को पढ़ा करो कि बहुत से दज्जाल तुम्हारे सामने हैं)।

फिर फ़रमाया अनपढ़ नबी रसूल ने 'उस पर मेरे माता-पिता बलिदान हों' कि दज्जाल उस मार्ग से निकलने वाला है कि जो शाम और इराक़ के मध्य स्थित है और दाएं-बाएं उपद्रव फैला देगा (यह भी एक रूपक है जैसा कि कश्फ़ों में सामान्यतया रूपक और संकेत हुआ करते हैं।) तत्पश्तचात् फ़रमाया कि - हे अल्लाह के बन्दो! तुम उस समय दृढ़ रहना अर्थात् जैसे 'अस्हाबे कहफ़' दृढ़ रहे थे। रिवायत कर्ता (वर्णनकर्ता) कहता है कि हे रसूलुल्लाह! दज्जाल संसार में कितने समय तक ठहरेगा, तो आपने फ़रमाया कि चालीस दिन, परन्तु 'शरह अस्सुन्नह' में अस्माबिन्त यज़ीद से रिवायत है कि चालीस वर्ष ठहरेगा, परन्तु वास्तव में इन रिवायतों में किसी प्रकार का मतभेद अथवा विरोधाभास नहीं समझना चाहिए तथा इस बात का ज्ञान ख़ुदा के सुपुर्द करना चाहिए कि इन चालीस दिन अथवा चालीस वर्ष से क्या अभिप्राय है।

मुस्लिम की हदीस का शेष अनुवाद यह है कि दज्जाल का एक दिन एक वर्ष के बराबर होगा और एक दिन एक माह के बराबर और एक दिन एक सप्ताह के बराबर, शेष दिन सामान्य दिनों के अनुसार (ये सब रूपक और संकेत हैं) फिर रावी (वर्णनकर्ता) कहता है कि हमने पूछा कि क्या उन लम्बे* दिनों में एक दिन की नमाज़ पढ़ना पर्याप्त होगा तो आप ने फ़रमाया कि नहीं अपितु नमाज़ के समयों की संख्यानुसार अनुमान लगा लिया करना (स्पष्ट हो कि नबी करीम स.अ.व. का यह बयान अनुमान पर

---

* लम्बे दिनों से अभिप्राय कष्ट और संकटों के दिन भी होते हैं। कुछ संकट ऐसे कष्टदायक होते हैं कि एक दिन एक वर्ष के समान दिखाई देता है और कुछ संकट ऐसे कि एक दिन एक माह के समान मालूम होता है और कुछ संकटों में एक दिन एक सप्ताह जैसा लम्बा समझा जाता है फिर शनै: शनै: धैर्य उत्पन्न हो जाने से ही लम्बे दिन साधारण दिखाई देने लगते हैं और धैर्य धारण करने वालों के लिए अन्तत: वे घटाए जाते हैं। अत: यह एक रूपक है। इस पर विचार करो कि वास्तव में ये लम्बे दिन ऐसे ही हैं जैसे आपने फ़रमाया था कि मेरी पत्नियों में से पहले उसका निधन होगा जिसके हाथ लम्बे हैं। इसी से।

आधारित है अर्थात् आँहज़रत स.अ.व. ने अल्लाह तआला की विशाल क़ुदरत की दृष्टि से कश्फ़ी बात को प्रश्नकर्ता के प्रश्न के अनुसार प्रत्यक्ष पर चरितार्थ करके उत्तर दे दिया है अन्यथा आँहज़रत स.अ.व. बुख़ारी में पृष्ठ 551 में वर्णित हज़रत आइशा रज़ि. की हदीस में स्पष्ट तौर पर व्याख्या कर चुके हैं कि कश्फ़ों की ताबीर कभी तो प्रत्यक्ष पर और कभी अप्रत्यक्ष पर घटित हो जाया करती है और वास्तव में यही मत आजतक समस्त नबियों और वलियों के अनुमान लगा लेने का उत्तर प्रश्नकर्ता के बोध और योग्यता और विचार की पुनरावृत्ति के अनुसार इस बात

تُكَلِّمُوا النَّاسَ عَلٰى قَدْرِ عُقُوْلِهِمْ

को दृष्टिगत रखते हुए दिया है अन्यथा आँहज़रत स.अ.व. किसी कश्फ़ी बात को जब तक ख़ुदा तआला विशेषतौर पर प्रकट न करे कभी प्रत्यक्ष अर्थों तक सीमित नहीं समझते थे जैसा कि सैकड़ों हदीसों में नबी करीम स.अ.व. की यह पवित्र पद्धति और शैली सिद्ध हो रही है।)

फिर रिवायत कर्ता कहता है कि हम ने पूछा कि हे रसूलुल्लाह! दज्जाल पृथ्वी पर कितनी शीघ्रता से चलेगा तथा उसके शीघ्र चलने का विवरण क्या है, तो आप ने फ़रमाया कि उस वर्षा की भाँति तेज़ चलेगा जिसके पीछे वायु हो अर्थात् एक पल में सहस्त्रों कोस फिर जाएगा तथा एक जाति पर गुज़र कर उसको अपने धर्म की ओर बुलाएगा और वे उस पर ईमान ले आएंगे तब वह बादल को आदेश देगा ताकि वह उनके लिए वर्षा करे और पृथ्वी को आदेश करेगा कि वह उनके लिए खेतियाँ उगाए। (ये सारे रूपक हैं, सतर्क रहो, धोखा न खाना) पुन: फ़रमाया कि ऐसा होगा कि यथासमय वर्षा होने के कारण जो जानवर सुबह चरने के लिए जाएंगे वे शाम को एक स्वस्थ और मोटे होकर आएंगे कि मोटापे के कारण उनके कोहान लम्बे हो जाएंगे और थन दूध से भर जाएंगे और अधिक पेट भर जाने के कारण कोखें खिंची हुई होंगी।

फिर दज्जाल एक और जाति की ओर जाएगा और अपनी ख़ुदाई की ओर उन्हें बुलाएगा, फिर वे लोग उसके निमंत्रण को स्वीकार नहीं करेंगे तथा उस पर ईमान नहीं लाएंगे। अत: दज्जाल उन से वर्षा को रोक लेगा और पृथ्वी को खेती निकालने

से बन्द कर देगा और वे दुर्भिक्ष की आपदा में ग्रस्त हो जाएंगे तथा उनके पास खान-पान के लिए कुछ न रहेगा, फिर दज्जाल एक सुनसान स्थान से गुज़रेगा तथा उसे कहेगा कि अपने भण्डारों को निकाल। तब तुरन्त सब भण्डार उस सुनसान स्थान से निकल कर उसके पीछे-पीछे हो लेंगे तथा उसके पीछे ऐसे चलेंगे जैसे मधु-मक्खियाँ उस बड़ी मक्खी के पीछे चलती हैं जो उनकी सरदार होती हैं, फिर दज्जाल एक ऐसे व्यक्ति को बुलाएगा जो अपनी युवावस्था में भरा हुआ होगा उसका तलवार से वध कर देगा तथा उस के दो टुकड़े करके तीर की मार पर अलग-अलग फेंक देगा, फिर उसके शव को बुलाएगा, तब वह व्यक्ति जीवित होकर एक प्रकाशमान और चमकते चेहरे के साथ उसके समक्ष आएगा और उसकी ख़ुदाई से इन्कार करेगा। अत: दज्जाल इसी प्रकार की गुमराह करने वाली प्रयासों में प्रयासरत होगा कि सहसा मसीह इब्ने मरयम प्रकट हो जाएगा, वह दमिश्क के पूरब में सफेद मीनार के पास उतरेगा, परन्तु इब्ने माजा का कथन है कि वह बैतुल मक़दस में उतरेगा, कुछ कहते हैं कि न बैतुल मक़द्दस में और न दमिश्क अपितु मुसलमानों की सेना में उतरेगा जहाँ हज़रत महदी होंगे।

फिर फ़रमाया कि जिस समय वह उतरेगा उस समय उन का लिबास पीला होगा अर्थात् उसने पीले रंग के दो वस्त्र पहने हुए होंगे (यह इस बात की ओर संकेत ज्ञात होता है कि उस समय उसकी स्वास्थ्य की दशा अच्छी नहीं होगी), उसकी दोनों हथेलियाँ दो फ़रिश्तों के बाज़ुओं पर होंगी, परन्तु बुख़ारी की एक अन्य हदीस में है कि आँहज़रत स.अ.व. ने इब्ने मरयम के स्थान पर दो फ़रिश्तों की बजाए दो मनुष्यों के कंधों पर हाथ रख कर तवाफ़ करते देखा। अत: इस हदीस में अत्यन्त स्पष्टता के साथ यह बात प्रकट होती है कि दमिश्क़ी हदीस में जो दो फ़रिश्ते लिखे हैं वे वास्तव में वही दो व्यक्ति हैं जो दूसरी हदीस में वर्णन किए गए हैं और उनके कन्धों पर हाथ रखने से तात्पर्य यह है कि वे मसीह के सहायक और मददगार होंगे।

फिर फ़रमाया कि मसीह जिस समय अपना सर झुकाएगा तो उसके पसीने की बूँदें टपकेंगी और जब ऊपर उठाएगा तो बालों से पसीने की बूँदें चाँदी के दानों की

तरह गिरेंगी जैसे मोती होते हैं और किसी काफ़िर के लिए संभव नहीं होगा कि उनकी सांस की वायु पाकर जीवित रहे अपितु तुरन्त मर जाएगा। और उनकी सांस उनकी दृष्टि की अन्तिम सीमा तक पहुँचेगी फिर हज़रत इब्ने मरयम दज्जाल को ढूँढने लगेंगे और 'लुद्द' के द्वार जो बैतुल मक़द्दस के देहात में से एक गाँव है उसे जा पकड़ेंगे और वध कर डालेंगे। हदीस का अनुवाद समाप्त हुआ। यह वह हदीस हैं जो सही मुस्लिम में इमाम मुस्लिम साहिब ने लिखी है जिसे कमज़ोर समझकर मुहद्दिसों के प्रमुख इमाम मुहम्मद इस्माईल बुख़ारी ने छोड़ दिया है। यहाँ आश्चर्य का स्थान यह है कि दज्जाल की जिन परिस्थितियों और विशेषताओं का इस हदीस में उल्लेख किया गया है और जिस प्रकार से उसके आने की सूचना दी गई है यह बयान दूसरी हदीसों के बयान से बिल्कुल विपरीत और विरुद्ध पाया जाता है, क्योंकि बुख़ारी और मुस्लिम में यह हदीस भी है -

وعن محمد بن المنكدر قال رأيت جابر ابن عبداللّٰہ يَحلف باللّٰہ ان ابن صيّاد الدجال قلت تحلف باللّٰہ قال انی سمعت عمر يحلف علٰى ذلك عند النبی صلی اللّٰہ علیه وسلم فلم ينكره النبی صلی اللّٰہ علیه وسلم متفق عليه

और एक अन्य हदीस यह भी है -

عن نافع قال كان ابن عمر يقول واللّٰہ ما اشك ان المسيح الدجّال ابن صيّاد رواه ابوداؤد والبيهقی فی كتاب البعث والنشور

प्रथम हदीस का अनुवाद यह है कि मुहम्मद बिन मुन्कदिर ताबिई* से रिवायत है कि कहा कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह को देखा कि ख़ुदा की सौगंध खाता था कि इब्ने सय्याद ही कथित दज्जाल है और मुहम्मद बिन मुन्कदिर कहता है कि मैंने

* ताबिई -वे लोग जो सहाबा रज़ि. के बाद आए जिन्होंने आँहरत स.अ.व. को नहीं देखा। (अनुवादक)

जाबिर को कहा कि क्या तू ख़ुदा तआला की क़सम खाता है अर्थात् यह बात तो काल्पनिक है न कि यक़ीनी फिर क़सम क्यों खाता है। जाबिर ने कहा कि मैंने उमर को हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने इसी बारे में क़सम खाते सुना अर्थात् उमर रज़ि. पैग़म्बर स.अ.व. के समक्ष क़सम खा कर कहा करता था कि इब्ने सय्याद ही कथित दज्जाल है। फिर दूसरी हदीस का अनुवाद यह है कि नाफ़िअ से रिवायत है कि इब्ने उमर रज़ि. कहते थे कि मुझे क़सम है अल्लाह की कि मैं इब्ने सय्याद को मसीह का दज्जाल होने में सन्देह नहीं करता। फिर एक और हदीस में जो 'शरह अस्सुन्नह' में लिखी है, यह वाक्य लिखा है

لم يزل رسول الله صلى الله عليه وسلم مشفقا انه هو رجال

अर्थात् आँहज़रत स.अ.व. हमेशा इस भय में थे कि इब्ने सय्याद दज्जाल होगा अर्थात् आँहज़रत स.अ.व. का हमेशा अधिकतर यही विचार रहा कि इब्ने सय्याद ही दज्जाल है। अब जबकि सही बुख़ारी में विशेषतया तथा सही मुस्लिम के बयान से सिद्ध हो गया कि इब्ने सय्याद ही कथित दज्जाल है अपितु सहाबा ने क़समें खा कर कहा कि यही कथित दज्जाल होने में कुछ सन्देह रह गया है। अब इब्ने सय्याद का हाल सुनिए कि उसका परिणाम क्या हुआ। अत: यह मुस्लिम की हदीस से स्पष्ट है और वह यह है -

وعن ابی سعید الخدری قال صحبت ابن صیّاد الی مکّة فقال لی مالقیت من الناس یزعمون انی الدجّال الست سمعت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یقول انہ لا یولد لہ وقد ولد لی اَلَیْسَ قد قال وھو کافر وانا مسلم اولیس قد قال لا یدخل المدینة ولَا مکّہ وقد اقبلت من المدینة وانا ارید مکّة*

---

* इब्ने सय्याद का यह बयान कि लोग मुझे कथित दज्जाल समझते हैं इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि समस्त सहाबा रज़ि. उसे कथित दज्जाल समझते थे न

और अबू सईद ख़ुदरी से रिवायत है कि मैंने मक्का का इरादा करते हुए इब्ने सय्याद के साथ यात्रा की। उस यात्रा में इब्ने सय्याद ने मुझे कहा कि लोगों की अर्थात् सहाबा रज़ि. की इन बातों से मुझे बहुत कष्ट पहुँचता है कि वे सोचते हैं कि वादा दिया गया दज्जाल मैं ही हूँ और तुम जानते हो कि वास्तविकता इसके विपरीत है। तू ने सुना होगा कि रसूलुल्लाह स.अ.व. फ़रमया करते थे कि दज्जाल बे औलाद रहेगा और मैं औलाद वाला हूँ एवं आँहज़रत स.अ.व. ने फ़रमाया था कि दज्जाल मदीना और मक्का में प्रवेश नहीं कर सकेगा और मैं मदीना से तो आया हूँ और मक्का की ओर चला जा रहा हूँ।

अब देखना चाहिए कि यह कैसा विचित्र मामला है कि कुछ सहाबा क़समें खा कर कहते हैं कि इब्ने सय्याद ही दज्जाल है आर सहीहैन (बुख़ारी तथा मुस्लिम) में जाबिर की रिवायत से लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर के क़सम खाने पर कि कथित दज्जाल यही व्यक्ति है खामोशी धारण करके अपनी राय प्रकट कर दी कि वास्तव में कथित दज्जाल इब्ने सय्याद ही था और सही मुस्लिम में इब्ने सय्याद का इस्लाम स्वीकार करना और औलाद वाला होना तथा मक्का और मदीना में जाना पूर्ण स्पष्टता के साथ लिखा है और न केवल यही अपितु उन्हीं हदीसों में यह भी लिखा है कि इब्ने सय्याद मदीना मुनव्वरा में मृत्यु को प्राप्त हो गया तथा उस पर नमाज़ पढ़ी गई। अब प्रत्येक न्यायकर्ता न्याय की दृष्टि से देख सकता है कि जिन किताबों में दज्जाल के अन्तिम युग में प्रकट होने और हज़रत ईसा के हाथ से मारे जाने की सूचना का उल्लेख है, उन्हीं किताबों में यह भी लिखा हुआ मौजूद है कि वादा दिया गया दज्जाल आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में ही प्रकट हो गया था तथा इस्लाम से सम्मानित होकर मृत्यु पा गया था तथा उसका इस्लाम स्वीकार करना उस भविष्यवाणी के अनुसार आवश्यक था जो बुख़ारी और मुस्लिम में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ से

कोई अन्य दज्जाल। इससे यह भी सिद्ध होता है कि सहाबा रज़ि. का इसी बात पर बहुमत हो गया था कि इब्ने सय्याद ही वादा दिया गया दज्जाल है।

एक स्वप्न के रूप में वर्णन हो चुकी है क्योंकि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे स्वप्न की अवस्था में काबा का तवाफ़ (परिक्रमा) करते देखा था। दज्जाल का इस तौर पर निर्णय किया गया है तो फिर दूसरी हदीसों पर जो उनके विपरीत हैं क्योंकर विश्वास किया जाए। हाँ यदि इस्लामी विद्वान इन हदीसों को सही बुख़ारी और सही मुस्लिम तथा दूसरी सिहाह से बनावटी ठहरा कर निकाल दें तो यद्यपि उन के दावे के लिए एक आधार पैदा हो सकता है अन्यथा

اِذَا تعارَضا تساقطا

पर कार्यरत होते हुए दोनों प्रकार की हदीसों को विश्वसनीयता के स्तर से गिरा देना चाहिए। यहाँ सर्वाधिक आश्चर्य का स्थान यह है कि इमाम मुस्लिम साहिब तो यह लिखते हैं कि कथित दज्जाल के मस्तक पर क फ़ र लिखा हुआ होगा, परन्तु यह दज्जाल तो उन्हीं की हदीस की दृष्टि से इस्लाम से सम्मानित हो गया, फिर मुस्लिम साहिब लिखते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि वादा दिया गया दज्जाल बादल की तरह जिसके पीछे वायु होती है पूरब-पश्चिम में फिर जाएगा, परन्तु यह दज्जाल तो जब मक्का से मदीना की ओर गया तो अबू सईद से कुछ अधिक नहीं चल सका कि मुस्लिम की हदीस से स्पष्ट है। ऐसा ही किसी ने उसके मस्तक पर क फ़ र लिखा हुआ नहीं देखा। यदि इब्ने सय्याद के मस्तक पर क फ़ र लिखा हुआ होता तो आँहज़रत स.अ.व. हज़रीत उमर रज़ि. को उसका वध करने से क्यों रोकते और क्यों फ़रमाते कि हमें इस के हाल में अभी तक सन्देह है। यदि यही वादा दिया गया दज्जाल है तो इसका साहिब मरयम पुत्र ईसा है जो इसका वध करेगा, हम इसका वध नहीं कर सकते। आश्चर्य तो यह है कि यदि इब्ने सय्याद के मस्तक पर क फ़ र लिखा हुआ नहीं था तो उस पर सन्देह करने का क्या कारण था और यदि लिखा हुआ था तो उसे वादा दिया गया दज्जाल विश्वास न करने का क्या काराण था, परन्तु दूसरी हदीसों से प्रकट है कि अन्ततः उस पर विश्वास किया गया कि यही कथित दज्जाल है। अतः सहाबा रज़ि. ने क़समें खा कर कहा कि हमें अब इसमें सन्देह नहीं कि यही कथित दज्जाल है और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी अन्ततः

विश्वास कर लिया, परन्तु यह विचार करने का स्थान है कि यदि यह हदीस सही है कि दज्जाल के मस्तक पर क फ़ र लिखा हुआ होगा तो फिर प्रारम्भिक दिनों में इब्ने सय्याद के बारे में स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सन्देह और असमंजस में क्यों रहे और यह क्यों फ़रमाया कि कदाचित् यही कथित दज्जाल हो और या शायद कोई अन्य हो। अनुमान लगाया जाता है कि कदाचित् उस समय तक क फ़ र उसके मस्तक पर नहीं होगा। मैं नितान्त आश्चर्यचकित हूँ कि यदि वास्तव में वादा दिया गया दज्जाल अन्तिम युग में पैदा होना था अर्थात् उस युग में कि जब मसीह इब्ने मरयम ही आकाश से उतरें तो समय से पूर्व यह सन्देह और शंकाएं उत्पन्न ही क्यों हुईं और सब से विचित्र बात यह कि इब्ने सय्याद ने कोई ऐसा कार्य भी नहीं दिखाया कि जो कथित दज्जाल की निशानियों में से समझा जाता अर्थात् यह कि स्वर्ग और नर्क का साथ होना और ख़ज़ानों का पीछे-पीछे चलना, मुर्दों का जीवित करना, अपने आदेश से वर्षा करना, खेतों को उगाना तथा सत्तर गज़ के गधे पर सवार होना।

अब बड़ी कठिनाइयाँ ये सामने आती हैं कि यदि हम बुख़ारी और मुस्लिम की उन हदीसों को सही समझें जो दज्जाल को अन्तिम युग में उतार रही हैं तो उनकी ये हदीसें बनावटी ठहरती हैं और यदि इन हदीसों को सही ठहराएं तो फिर उनका बनावटी होना मानना पड़ता है। यदि सहीहैन में ये हदीसें परस्पर विपरीतार्थक और परस्पर टकराव वाली न होतीं, केवल दूसरी सिहाह में होतीं तो कदाचित् हम इन दोनों किताबों को अत्यधिक महत्व देकर उन दूसरी हदीसों को बनावटी ठहरा देते, परन्तु अब कठिनाई तो यह आ पड़ी है कि इन्हीं दोनों किताबों में ये दोनों प्रकार की हदीसें विद्यमान हैं।

अब हम जब इन दोनों प्रकार की हदीसों पर दृष्टि डालकर आश्चर्य के भंवर में पड़ जाते हैं कि किसे उचित समझें और किसे अनुचित। तब ख़ुदा की प्रदत्त बुद्धि निर्णय का यह उपाय बताती है कि जिन हदीसों पर बुद्धि और शरीअत का कुछ ऐतराज़ नहीं उन्हीं को उचित समझना चाहिए। अत: निर्णय की इस पद्धति के अनुसार ये हदीसें जो इब्ने सय्याद के बारे में आई हैं अनुमान संगत ज्ञात होती हैं, क्योंकि इब्ने सय्याद

अपने प्रारंभिक दिनों में निस्सन्देह एक दज्जाल ही था तथा कुछ शैतानों के संबंध में से उससे अद्भुत मामले प्रकट होते थे जिससे अधिकांश लोग फ़ितने में पड़ जाते थे, परन्तु इसके पश्चात् ख़ुदा के द्वारा मार्ग-दर्शन से वह इस्लाम से सम्मानित हो गया और शैतानी मार्गों से मुक्ति पा गया और जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे काबे का तवाफ़ करते देखा था ऐसा ही उसने तवाफ़ भी कर लिया तथा उसके मामले में ऐसी कोई बात नहीं जो प्रकृति के नियम और बुद्धि से बाहर हो। और न उसकी प्रशंसा में ऐसी अतिशयोक्ति की गई है जो शिर्क में गिनी जाए, परन्तु जब हम उन दूसरी हदीसों को देखते हैं जो कथित दज्जाल के प्रकट होने का समय इस संसार का अन्तिम युग बताती हैं तो वे सर्वथा ऐसे विषयों से भरी हुई दिखाई देती हैं कि जो न बौद्धिक दृष्टि से उचित ठहर सकती हैं और न इस्लामी शरीअत की दृष्टि से एकेश्वरवाद के अनुकूल हैं। अत: हमने इस दूसरी प्रकार के दज्जाल के प्रकट होने के बारे में मुस्लिम की एक लम्बी हदीस लिखकर उसके अनुवाद सहित पाठकों के समक्ष रख दी। पाठक स्वयं अध्ययन करके विचार कर सकते हैं कि कथित दज्जाल के बारे में लिखित विशेषताएं कहाँ तक बुद्धि और शरीअत के विपरीत हैं। यह बात बहुत स्पष्ट और उज्जवल है कि यदि हम उस दमिश्क़ी हदीस को उसके प्रत्यक्ष अर्थों पर चरितार्थ करके उसे उचित और ख़ुदा तथा रसूल का कथन स्वीकार कर लें तो हमें इस बात पर ईमान लाना होगा कि वास्तव में दज्जाल को एक प्रकार की ख़ुदाई शक्ति दी जाएगी और पृथ्वी-आकाश उसका आदेश मानेंगे और ख़ुदा तआला की तरह मात्र उसके इरादे से सब कुछ होता जाएगा। वर्षा को कहेगा कि हो तो हो जाएगी, बादलों को आदेश देगा कि अमुक देश की ओर चले जाओ तो तुरन्त चले जाएंगे, पृथ्वी की वाष्प उसके आदेश से आकाश की ओर उठेंगी और पृथ्वी यद्यपि कैसी ही अनुपजाऊ और शोरे वाली हो, उसके संकेत मात्र से उत्तम और उच्च श्रेणी की खेती उत्पन्न करेगी। अत: जिस प्रकार ख़ुदा तआला की यह शान है कि

إِنَّمَآ أَمْرُهُۥٓ إِذَآ أَرَادَ شَيْـًٔا أَن يَقُولَ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ*

* यासीन : 83

इसी प्रकार वह भी 'कुन फ़यकून' (हो जा , अत: हो जाएगा) से सब कुछ कर दिखाएगा, मारना, जीवित करना उसके अधिकार में होगा, स्वर्ग-नर्क उसके साथ होंगे। अत: पृथ्वी और आकाश दोनों उसकी मुट्ठी में आ जाएंगे और एक अवधि तक जो चालीस वर्ष या चालीस दिन हैं, ख़ुदाई का कार्य भली भाँति चलाएगा और ख़ुदाई के समस्त अधिकार और सत्ता उस से प्रकट होंगी।

अब मैं पूछता हूँ कि क्या यह विषय जो इस हदीस के प्रत्यक्ष शब्दों से निकलता है उस एकेश्वरवादी शिक्षा के अनुसार और अनुकूल है जो पवित्र क़ुर्आन हमें देता है, क्या सैकड़ों क़ुर्आनी आयतें सदैव के लिए यह निर्णय नहीं सुना देतीं कि किसी युग में भी ख़ुदाई के अधिकार मनुष्य जो स्वयं में विनाशी, तथा वास्तविकता रहित है को प्राप्त नहीं हो सकते। यदि यह विषय प्रत्यक्ष पर चरितार्थ किया जाए तो क़ुर्आनी एकेश्वरवाद पर क्या एक काला धब्बा नहीं लगाता? आश्चर्य कि एक ओर तो हमारे एकेश्वरवादी भाई इस बात की शेखी बघारते हैं कि हमने शिर्क से पूर्णतया किनारा कर लिया है और दूसरे लोग मुश्रिक और बिद्अती, और हम एकेश्वरवादी और सुन्नत के अनुयायी हैं तथा प्रत्येक के सामने अपने इस एकेश्वरवादी पद्धति की पूर्ण गर्व के साथ प्रशंसा भी करते हैं। फिर ऐसी शिर्क से भरपूर आस्थाएं उनके हृदयों में घर कर चुकी हैं कि एक तिरस्कृत काफ़िर को ख़ुदाई का सम्पूर्ण ताज और सिंहासन दे रखा है और एक नितान्त कमज़ोर मनुष्य को अपनी श्रेष्ठताओं और क़ुदरतों में ख़ुदा तआला के समान समझ लिया है वलियों के चमत्कारों से इन्कारी हो बैठे, परन्तु दज्जाल के चमत्कारों का कलिमा पढ़ रहे हैं। यदि एक व्यक्ति उन्हें कहे कि सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी रह. ने डूबी हुई नौका को बारह वर्ष के पश्चात् जीवित मनुष्यों से भरी हुई निकाली थी और एक बार मृत्यु के फ़रिश्ते की टांग तोड़ी थी इस क्रोध से कि वह बिना आज्ञा उनके किसी अनुयायी की आत्मा निकाल कर ले गया था तो इन चमत्कारों को कदापि स्वीकार नहीं करेंगे अपितु ऐसे यशोगान वालों को मुश्रिक बनाएंगे, परन्तु ला'नती दज्जाल के बारे में अत्यन्त स्पष्टतापूर्वक यह आस्था रखते हैं कि मृत्यु का फ़रिश्ता क्या धरती और आकाश

के समस्त फ़रिश्ते जो सूर्य, चन्द्रमा, बादलों, हवाओं और नदियों इत्यादि पर अधिकारी हैं सब उसके आदेश के अधीन हो जाएंगे और उसके पूर्ण आज्ञाकारी बन कर उसके आगे सज्दह में गिरेंगे। विचार करना चाहिए कि यह कितना बड़ा शिर्क है कुछ अन्त भी है। खेद कि इन लोगों के हृदयों पर कैसे पर्दे पड़ गए कि इन्होंने रूपकों को वास्तविकता पर चरितार्थ करके शिर्क का एक तूफान खड़ा कर दिया है तथा शक्तिशाली लक्षणों के उन रूपकों को स्वीकार करना न चाहा जिनके समर्थन में पवित्र क़ुर्आन एकेश्वरवाद की नंगी तलवार लेकर खड़ा है।

खेद कि अधिकांश लोग नीरस मुल्लाओं का अनुसरण करते हैं और नहीं जानते कि ऐसे लेखों को प्रत्यक्ष पर चरितार्थ करने से क्या-क्या खराबियाँ फैलेंगी। वह रसूले करीम (उस पर मेरे मां बाप न्यौछावर हों) जिसने हमें ''लाइलाहा इल्लल्लाह सिखा कर अल्लाह के अतिरिक्त की समस्त शक्तियाँ हमारे पैरों के नीचे रख दीं और एक ज़बरदस्त उपास्य का दामन पकड़ा कर हमारी दृष्टि में अल्लाह के अतिरिक्त का महत्व एक मरे हुए कीड़े से कम कर दिया। क्या वह पवित्र नबी हमें डराने हेतु अन्तिम युग के लिए यह **हौवा** छोड़ गया। फिर मैं पुन: कहता हूँ कि वह एकेश्वरवादियों का राजा जिसने हमारे रोम-रोम में यह गाड़ दिया कि स्रष्टा की शक्तियाँ किसी सृष्टि में आ ही नहीं सकतीं। क्या वह निरन्तर अपनी शिक्षाओं के विरुद्ध हमें ऐसा पाठ पढ़ाने लगा। अत: हे भाइयो निश्चय समझो कि इस हदीस और इसी प्रकार उसकी तरह की हदीसों के प्रत्यक्ष अर्थ कदापि अभिप्राय नहीं हैं और एक नंगी तलवार लेकर इस कूचे की ओर जाने से रोक रहे हैं अपितु ये समस्त हदीसें उन कश्फ़ों के प्रकारों में से हैं जिन का एक-एक शब्द ताबीर के योग्य होता है जैसा कि मैं मुस्लिम की एक अन्य, हदीस लिख कर अभी सिद्ध कर आया हूँ कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं इस बात का इक़रार करते हैं कि ये समस्त बयान मेरे कश्फ़ों में से हैं। इस दमिश्की हदीस में भी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से كأنّي (कअन्नी) का शब्द विद्यमान है वह भी ऊँचे स्वर में कह रहा है कि ये सब बातें स्वप्न और कश्फ़ी अवस्था में से हैं जिनकी

उचित रंग में व्याख्या होनी चाहिए। अत: मुल्ला अली क़ारी ने भी यही लिखा है और ख़ुदा तआला का प्रकृति का नियम जो इस आयत के अनुसार

خُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا (यासीन - 83)

मनुष्य की कमज़ोरी पर ज़िन्दा साक्षी है। किसी मनुष्य के लिए ऐसी शक्ति और ताक़त स्वीकार नहीं करता कि वह वायु की भाँति एक पल में पूरबों और पश्चिमों का भ्रमण कर सके तथा आकाश के समस्त ग्रह और पृथ्वी के सब कण उसके अधीन हों। आश्चर्य कि जब स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि इस हदीस का विषय सच्चे स्वप्न और कश्फ़ों की श्रेणी में से है अर्थात् व्याख्या - योग्य है, तो फिर क्यों अकारण उसके प्रत्यक्ष अर्थों पर बल दिया जाता है और क्यों स्वप्नों की भाँति इस की व्याख्या नहीं की जाती ? या सदृश्य कश्फ़ों की तरह इस की वास्तविकता ख़ुदा के सुपुर्द नहीं की जाती ? 'ज़करिया' की किताब को देखो जो 'मलाकी' से पूर्व है कि उसमें इसी प्रकार के कितने कश्फ़ों का उल्लेख है परन्तु कोई बुद्धिमान उन्हें प्रत्यक्ष पर चरितार्थ नहीं करता, इसी प्रकार हज़रत याक़ूब का ख़ुदा तआला से कुश्ती करना जिसका तैरात में उल्लेख है कोई बुद्धिमान इस कश्फ़ को वास्तविक अर्थों पर चरितार्थ नहीं कर सकता।

अत: हे भाइयो मैं **मात्र ख़ुदा के लिए उपदेश के तौर पर** पूर्ण सहानुभूति के जोश से जो मुझे आप से और अपने प्रिय इस्लाम धर्म से है आप लोगों को समझाता हूँ कि आप लोग ग़लती कर रहे हैं और बहुत बड़ी ग़लती कर रहे हैं कि मात्र ज़बरदस्ती के कारण नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कश्फ़ों को केवल प्रत्यक्ष शब्दों पर सीमित समझ बैठे हैं। निश्चित समझो क इन बातों को वास्तविकता पर चरितार्थ करना मानो अपनी इमारत की ईंटें उखाड़ना है। मैं आश्चर्यचकित हूँ कि यदि आप रूपकों को स्वीकार नहीं कर सकते तो इन बोध से श्रेष्ठ बातों की व्याख्या को क्यों ख़ुदा के सुपुर्द नहीं करते, इसमें आप का या आपके धार्मिक जोश की क्या हानि है ? आप पर किसने बल दिया है अथवा कब और किस समय आप को रसूले करीम की ओर से ऐसा आग्रह किया गया है कि ऐसे शब्दों को अवश्य वास्तविकता पर ही चरितार्थ करो ?

आप लोगों का यह बहाना कि इस पर पूर्व बुज़ुर्गों का बहुमत है यह एक विचित्र बहाना है जिसे प्रस्तुत करते समय आप लोगों ने नहीं सोचा कि यदि मान भी लें कि बहुमत भी हो जो किसी भी प्रकार सिद्ध नहीं हो सकता, फिर भी प्रत्यक्ष शब्दों पर बहुमत होगा न यह कि एक एक व्यक्ति ने शपथ उठा कर इस बात का इक़रार किया है कि इस हदीस के शब्दों से जो अर्थ प्रत्यक्ष तौर पर निकलते हैं वास्तव में वही अभिप्राय हैं। उन बुज़ुर्गों ने तो इन हदीसों को अमानत के तौर पर पहुँचा दिया और इनकी मूल वास्तविकता को ख़ुदा के सुपुर्द करते रहे, बहुमत का आरोप उन बुज़ुर्गों पर अत्यन्त निराधार आरोप है जिसका कोई प्रमाण नहीं दे सकता। मैं कहता हूँ कि बहुमत तो एक ओर इस प्रकार की हदीसें भी सामान्य तौर पर सहाबा में नहीं फैली थीं। स्पष्ट है कि यदि आदरणीय सहाबा का इस बात पर एक मत होता कि वादा दिया गया दज्जाल अन्तिम युग में निकलेगा और हज़रत मसीह उसका वध करेंगे तो फिर हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह और हज़रत उमर रज़ि. हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समक्ष क्यों क़सम खा कर कहते कि वादा दिया गया दज्जाल जो आने वाला था वह यही इब्ने सय्याद है जो अन्ततः इस्लाम स्वीकार करके मदीना मुनव्वरा में मृत्यु पा गया। भाइयो ! यह हदीस सही बुख़ारी और सही मुस्लिम दोनों में मौजूद है तथा 'अबू दाऊद' और 'बैहक़ी' में भी नाफ़िज़ की रिवायत से यह हदीस मौजूद है कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि. क़सम खा कर कहा करते थे कि मुझे ख़ुदा तआला की क़सम है कि मुझे इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि मसीह का दज्जाल यही इब्ने सय्याद है। भला इस वर्णित हदीस को जाने दो, क्योंकि यह एक सहाबी हैं। संभव है कि उन्होंने ग़लती की हो, परन्तु उस हदीस के बारे में क्या बहाना प्रस्तुत करोगे जिसका अभी मैं वर्णन कर चुका हूँ जो हज़रत उमर रज़ि. ने स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समक्ष क़सम का कर कहा था कि कथित दज्जाल यही इब्ने सय्याद है और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खामोश रहने और इन्कार न करने के कारण उस क़सम पर मुहर लगा दी और हज़रत उमर के विचार से अपनी सहमति जता दी।

हज़रत उमर रज़ि. का पद जानते हो कि सहाबा में कितना महान है यहाँ तक कि प्राय: उनके मतानुसार पवित्र क़ुर्आन उतर जाया करता था और उन के पक्ष में यह हदीस है कि शैतान उमर की छाया से भागता है, दूसरी हदीस यह है कि यदि मेरे बाद कोई नबी होता तो उमर होता, तीसरी हदीस यह है कि पूर्वकालीन उम्मतों में मुहद्दिस होते रहे हैं, यदि इस उम्मत में कोई मुहद्दिस है तो वह उमर है। अब सोचो, और विचार करो कि 'नवास बिन समआन' की उमर के श्रेष्ठ मर्तबा से क्या तुलना है ? जो बोध क़ुर्आन और हदीस का हज़रत उमर को दिया गया था उससे नवास की क्या तुलना है। इसके अतिरिक्त हदीस पर सहमति है जो बुख़ारी और मुस्लिम दोनों ने लिखी है और नवास की दमिश्क़ी हदीस जिसमें दज्जाल की विशेषताएं बुद्धि के विरुद्ध और एकेश्वरवाद के विपरीत लिखी गई हैं, केवल मुस्लिम में लिखी गई है। इसके अतिरिक्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो का क़सम खाना तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कुछ इन्कार न करना इस बात का निर्णय देता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दृष्टि में अवश्य तथा आदरणीय सहाबा की दृष्टि में कथित दज्जाल इब्ने सय्याद ही था और हदीस 'शरह अस्सुन्नह' से भी यही सिद्ध होता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सदैव और जीवन-पर्यन्त अपनी उम्मत पर इसी बात से परेशान थे कि इब्ने सय्याद कथित दज्जाल है। अब जबकि इब्ने सय्याद का कथित दज्जाल होना ऐसा निश्चित और यक़ीनी तौर पर सिद्ध हो गया कि उस में किसी प्रकार के सन्देह और भ्रम की गुंजायाश नहीं तो यहाँ स्वाभाविक तौर पर यह प्रश्न पैदा होता है कि जब दज्जाल स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में पैदा होकर और इस्लाम स्वीकार करके और अन्तत: मदीने में मृत्यु को भी प्राप्त हो गया तो हज़रत मसीह के हाथ से जिनके आने का मुख्य उद्देश्य दज्जाल का वध करना प्रकट किया जाता है किसका वध किया जाएगा, क्योंकि दज्जाल तो मौजूद ही नहीं जिन को वह वध करें और यही एक सेवा थी जो उनके सुपुर्द की गई थी। इस प्रश्न का उत्तर हम इस प्रकार के अतिरिक्त किसी ढंग से भी नहीं दे सकते कि अन्तिम युग में कथित दज्जाल का आना बिल्कुल गलत है। अब कथन का तात्पर्य यह है कि

वह दमिश्की हदीस जो इमाम मुस्लिम ने प्रस्तुत की है स्वयं मुस्लिम की दूसरी हदीस से विश्वसनीयता के स्तर से नीचे ठहरती है और स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि रिवायत कर्ता नवास ने इस हदीस का वर्णन करने में धोखा खाया है। यह मुस्लिम के लेखक का कर्तव्य था कि वह अपनी वर्णित हदीस का टकराव स्वयं दूर करते, परन्तु उन्होंने जब ऐसे टकराव की चर्चा तक नहीं की तो इस से यह ज्ञात होता है कि वह मुहम्मद बिन अलमुनकदिर की हदीस को नितान्त निश्चित, विश्वसनीय, शुद्ध और स्पष्ट समझते थे और नवास बिन समआन की हदीस को रूपकों और संकेतों की श्रेणी से समझते थे और उसकी वास्तविकता को ख़ुदा पर छोड़ते थे।

अत: हे भाइयो इन हदीसों पर दृष्टि डालकर प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि कभी प्राथमिक युग के लोगों ने कथित दज्जाल के बारे में इस बात पर कदापि सहमति व्यक्त नहीं की कि वह अन्तिम युग में आएगा तथा मसीह इब्ने मरयम प्रकट होकर उस का वध करेगा अपितु वे तो इब्ने सय्याद को ही वादा दिया गया दज्जाल समझते रहे और यह बात स्वयं स्पष्ट है कि जब उन्होंने इब्ने सय्याद के कथित दज्जाल होने पर विश्वास किया फिर अपने जीवन में यह भी देख लिया कि उसकी मदीने में मृत्यु भी हो गई तथा मुसलमानों ने उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ी, फिर ऐसी अवस्था में उन बुज़ुर्गों का इस बात पर क्यों कर ईमान या आस्था हो सकती थी कि अन्तिम युग में मसीह इब्ने मरयम वादा दिया गया दज्जाल का वध करने के लिए आकाश से उतरेंगे, क्योंकि वे बुज़ुर्ग लोग तो पहले ही वादा दिया गया दज्जाल का मृत्यु प्राप्त होना स्वीकार कर चुके थे, फिर उस आस्था के साथ यह दूसरी आस्था क्योंकर समान हो सकती है कि उन्हें मसीह इब्ने मरयम के आकाश से उतरने और वादा दिया गया दज्जाल का वध करने की प्रतीक्षा लगी हुई थी, यह तो स्पष्ट तौर पर दो विपरीतार्थक बातों को मिलाना है। कोई मनीषी और होश में रहने वाला व्यक्ति ऐसी दो परस्पर विपरीत आस्थाएं कदापि नहीं रख सकता। अत: विचार करना चाहिए कि यह वर्णन कि आदरणीय सहाबा का कथित दज्जाल और मसीह इब्ने मरयम का अन्तिम युग में प्रकट होने की एक सामूहिक आस्था थी, उन बुज़ुर्गों पर

कितना बड़ा आरोप है।

फिर यह भी विचार करना चाहिए कि यदि यह बात सत्य है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि प्रत्येक नबी अपनी क़ौम को दज्जाल के निकलने से भयभीत करता चला आया है और मैं भी तुम सब को डराता हूँ कि दज्जाल अन्तिम युग में निकलेगा, तो उचित था कि समस्त सहाबा इस उपदेश और सन्देश को अपना अनिवार्य कर्त्तव्य समझ कर अपने बाद आने वाले लोगों तक पहुँचाते और आज सहस्त्रों सहाबा की रिवायतों से बुख़ारी और मुस्लिम में यह हदीस मौजूद होती, हालाँकि 'नवास बिन समआन' तथा एक दो और लोगों के अतिरिक्त किसी ने इस हदीस की रिवायत नहीं की अपितु नवास बिन समआन अपनी सम्पूर्ण रिवायत में अकेला है। अब विचार करो कि एक ओर तो यह बताया जाता है कि इस हदीस के बारे में सामान्यतया समस्त सहाबा को चेतावनी दी गई थी कि तुम ने इस विषय को ताबिईन (वे मुसलमान जिन्होंने सहाबा आंहज़रत को देखा) तक पहुँचा देना है तथा दूसरी ओर जब हम देखते हैं तो दो एक लोगों के अतिरिक्त कोई पहुँचाने वाला दिखाई नहीं देता। ऐसी स्थिति में जितनी अविश्वसनीयता इस हदीस में पाई जाती है वह अन्वेषकों की दृष्टि से गुप्त नहीं रह सकती। फिर निरन्तरता का दावा करना यदि परले स्तर का पक्षपात नहीं तो और क्या है।

अब हे लोगो ख़ुदा तआला से डरो तथा सहाबा और ताबिईन (उनके पश्चात आने वाले लोगों) पर आरोप मत लगाओ कि उन सब का इस बात पर सर्वसम्मति थी कि मसीह इब्ने मरयम आकाश से उतरेंगे तथा ख़ुदाई का चमत्कार प्रदर्शन करने वाले एक नेत्रीय दज्जाल का वध करेंगे, उन बुज़ुर्गों को तो इस आस्था का ज्ञान तक न था यदि उन्हें ज्ञान होता और जैसा कि कुछ हदीसों में उल्लेख है ख़ुदा के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें वसीयत की होती तो क्या यह संभव था कि सहाबा रज़ियल्लाहो अन्हुम इस पहुँचाने योग्य बात को ताबिईन तक न पहुँचाते और ताबिईन अपने पश्चात आने वाले लोगों को इसकी सूचना न देते। बिल्कुल स्पष्ट है कि आँहज़रत स.अ.व. की वसीयत का पालन न करना नितान्त अवज्ञा है, फिर

क्योंकर संभव था कि ऐसी अवज्ञा का काम महान सहाबा करते। अत: स्पष्ट है कि इस सन्देह के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से कोई ताकीद नहीं हुआ और न बुज़ुर्ग सहाबा रज़ि. इसे अपने बाद आने वाले लोगों तक पहुँचाने के लिए अपने सामूहिक जोश से इस ओर अग्रसर हुए तथा इस हदीस का विषय यहाँ तक दुर्लभ और बहुत कम प्रचारित रहा कि इमाम बुख़ारी जैसे मुहद्दिसों के प्रमुख को यह हदीस नहीं मिली कि मसीह इब्ने मरयम दमिश्क के पूरबी किनारे पर मीनार के पास उतरेगा और संसार में ख़ुदा तआला के जितने कार्य हो रहे हैं दज्जाल वे सब दिखाएगा। अब विचार करना चाहिए कि इस हदीस के विषय पर बहुमत का दावा करना और यह कहना कि आँहज़रत स.अ.व. के युग से आज तक इस्लाम के महान बुज़ुर्गों की सहमति रही है कितना झूठ है अपितु यह हदीस तो उन निरन्तरता वाली हदीसों से ही समाप्त हो जाती है जिनमें प्रमाणित सहाबा की रिवायत द्वारा दज्जाल के बारे में यह निर्णय कर दिया गया है कि वह वास्तव में इब्ने सय्याद ही था जिसका अपवित्र यज़ीद के शासन के समय में मदीना में निधन हो गया तथा उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ी गई।

यह एक विचित्र बात है कि पवित्र क़ुर्आन तो उच्च स्वर में मसीह इब्ने मरयम का मर जाना वर्णन कर रहा है और मुस्लिम तथा बुख़ारी की सही हदीसें पूर्ण सहमति से प्रकट कर रही हैं कि वास्तव में इब्ने सय्याद ही कथित दज्जाल था और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहो अन्हो जैसे महान सहाबी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समक्ष ख़ुदा तआला की क़सम खा रहे हैं कि वास्तव में कथित दज्जाल इब्ने सय्याद ही है और स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी इसका सत्यापन कर रहे हैं कि वास्तव में इब्ने सय्याद ही कथित दज्जाल है जो अन्तत: मुसलमान हो गया और इस्लाम की स्थिति में ही मदीना में मृत्यु पाई और मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में दफ़्न किया गया परन्तु फिर भी हमारे मुसलमान भाई अपनी हठधर्मी का परित्याग नहीं करते। भाइयो!!! इस विवाद की दो टांगें थीं (1) एक तो

मसीह इब्ने मरयम का अन्तिम युग में पार्थिव शरीर के साथ आकाश से उतरना। अत: इस टांग को तो पवित्र क़ुर्आन तथा कुछ हदीसों ने भी मसीह इब्ने मरयम के मर जाने की सूचना देकर तोड़ दिया।

(2) दूसरी टांग कथित दज्जाल का अन्तिम युग में प्रकट होना था। अत: उस टांग को सही मुस्लिम और सही बुखारी की सहमत हदीसों ने जो महान सहाबा की रिवायतों से हैं दो टुकड़े कर दिए और इब्ने-सय्याद को कथित दज्जाल बता कर अन्तत: मुसलमानों की जमाअत में सम्मिलित करके मार भी दिया। अब जबकि इस विवाद की दोनों टांगें टूट गईं तो फिर अब तेरह सौ वर्ष के पश्चात् यह मुर्दा जिसके दोनों पैर नहीं क्यों और किस के सहारे से खड़ा हो सकता है ?

اِتَّقُوا اللّٰہ! اِتَّقُوا اللّٰہ!! اِتَّقُوا اللّٰہ!!!

(ख़ुदा से डरो ! ख़ुदा से डरो !! ख़ुदा से डरो !!! - अनुवादक)

मसीह इब्ने मरयम के मृत्यु को प्राप्त हो जाने के बारे में हमारे पास इतने ठोस और निश्चित प्रमाण हैं कि उन्हें विस्तारपूर्वक लिखने के लिए इस संक्षिप्त पुस्तक में स्थान नहीं। प्रथम पवित्र क़ुर्आन पर दृष्टि डालो और तनिक आँख खोलकर देखो कि वह नितरन्त स्पष्ट तौर पर ईसा बिन मरयम के मर जाने की कैसी सूचना दे रहा है जिसकी हम कोई भी वास्तविकता से हट कर व्याख्या नहीं कर सकते! उदाहरणतया ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में हज़रत ईसा की ओर से यह जो फ़रमाता है

فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ*

क्या हम यहाँ तवफ़्फ़ा से नींद अभिप्राय ले सकते हैं? क्या ये अर्थ यहाँ यथोचित होंगे कि जब तूने मुझे सुला दिया और मुझ पर नींद का प्रभुत्व कर दिया तो मेरे सोने के बाद तू इनका संरक्षक था, कदापि नहीं। अपितु तवफ़्फ़ा का सीधा और स्पष्ट

* अलमाइदह, रुकू : 16

अर्थ मौत है वही यहाँ चरितार्थ होता है* परन्तु मृत्यु से अभिप्राय वह मृत्यु नहीं जो आकाश से उतरने के पश्चात फिर आए क्योंकि उनसे जो प्रश्न किया गया है अर्थात् उनकी उम्मत का बिगड़ जाना इस समय की मृत्यु से इसका कोई संबंध नहीं। क्या ईसाई अब सद्मार्ग पर हैं? क्या यह सच नहीं कि जिस बात के बारे में ख़ुदा तआला ने ईसा बिन मरयम से प्रश्न किया है वह बात तो स्वयं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग तक ही कमाल को पहुँच चुकी है।

इसके अतिरिक्त हदीस के अनुसार भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु हो जाना सिद्ध है। अत: तफ़्सीर 'मआलिम' के पृष्ठ 162 में आयत

يٰعِيْسٰۤى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَىَّ

के अन्तर्गत लिखा है कि अली बिन तल्हा बिन अब्बास से रिवायत करते हैं कि इस आयत के ये अर्थ हैं कि

اِنِّىْ مُمِيْتُكَ

(इन्नी मुमीतुका) अर्थात् मैं तुझे मृत्यु देने वाला हूँ। इस पर अल्लाह तआला के दूसरे कथन सिद्ध करते हैं

قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَلَكُ الْمَوْتِ۔**

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ***

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِىْٓ اَنْفُسِهِمْ****

अत: हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. की आस्था यही थी कि हज़रत ईसा मृत्यु पा

* हाशिया - पवित्र क़ुर्आन में आदि से अन्त तक जिस-जिस स्थान पर तवफ़्फ़ा का शब्द आया है उन समस्त स्थानों में तवफ़्फ़ा के अर्थ मृत्यु ही लिए गए हैं।

** अस्सज्दह, 32 : 12

*** नहल, 16 : 33

**** नहल, 16 : 29

चुके हैं। दर्शकों पर स्पष्ट होगा कि हज़रत इब्ने अब्बास पवित्र क़ुर्आन के समझने में प्रथम श्रेणी वालों में से हैं और इस बारे में उनके पक्ष में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक दुआ भी है।

फिर इसी 'मआलिम' में लिखा है कि बहब से यह रिवायत है कि हज़रत ईसा तीन घंटे के लिए मर गए थे तथा मुहम्मद बिन इस्हाक़ से रिवायत है कि नसारा (ईसाई) की यह धारणा है साठ घंटे तक मरे रहे, परन्तु इस पुस्तक के लेखक को आश्चर्य है कि मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने सात घंटे तक मरने की बात की रिवायत ईसाइयों की किन किताबों से ली है, क्योंकि ईसाइयों के समस्त सम्प्रदाय इसी कथन पर सहमत दिखाई देते हैं कि हज़रत ईसा तीन दिन तक मरे रहे और फिर क़ब्र में से आकाश की ओर उठाए गए तथा चारों इंजीलों से भी यही सिद्ध होता है कि स्वयं हज़रत ईसा इंजीलों में अपनी तीन दिन की मौत का इक़रार भी करते हैं। बहरहाल उनकी मृत्यु प्रमाणित है। इन उपरोक्त सबूतों के अतिरिक्त मृत्यु पर निरन्तरता के साथ ऐतिहासिक प्रमाण साक्षी है और पूर्वकालीन किताबों में भी बतौर भविष्यवाणी उनके मरने की सूचना दी गई थी।

अब यह विचार कि मृत्योपरांत फिर उनकी आत्मा फिर उसी पार्थिव शरीर में प्रवेश कर गई और वह शरीर जीवित होकर आकाश की ओर उठाया गया, यह सर्वथा गलत धारणा है। यह बात समस्त ख़ुदाई किताबों की सहमति से सिद्ध है कि नबी और वली के मरने के पश्चात् फिर जीवित हो जाया करते हैं अर्थात् उन्हें एक प्रकार का जीवन प्रदान किया जाता है जो दूसरों का प्रदान नहीं किया जाता। इसी ओर आँहज़रत स.अ.व. की वह हदीस संकेत करती है जिसमें आप (स.अ.व.) फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला मुझे क़ब्र में मृत्यावस्था में नहीं रहने देगा* तथा जीवित

---

* **हाशिया :-** हदीस का मूल अनुवाद यह है कि मेरा सम्मान ख़ुदा तआला के दरबार में इससे अधिक है कि मुझे चालीस दिन तक क़ब्र में रखे अर्थात् मैं इस अवधि के अन्दर-अन्दर जीवित होकर आकाश की ओर उठाया जाऊँगा। अब देखना चाहिए कि हमारे सरदार और पेशवा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़ब्र

करके अपनी ओर उठा लेगा। ज़बूर संख्या-16 में भी हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ख़ुदा की वह्यी के माध्यम से यह फ़रमाते हैं कि तू मेरे प्राण को क़ब्र में नहीं रहने देगा और अपने पवित्र को सड़ने नहीं देगा अर्थात् तू मुझे जीवित करेगा और अपनी ओर उठायेगा। इसी प्रकार शहीदों के पक्ष में भी पवित्र क़ुर्आन फ़रमाता है

शेष हाशिया :- में जीवित हो जाने और फिर आकाश की ओर उठाए जाने के बारे में मसीह के उठाए जाने में कौन सी श्रेष्ठता है अपितु सच तो यह है कि ईसा बिन मरयम का जीवन हज़रत मूसा के जीवन से भी श्रेणी में बहुत कम है और सही आस्था जिस पर पूर्व बुज़ुर्गों की भी सहमति है एवं मे'राज की हदीस भी उसकी ज़िन्दा साक्षी है। यही है कि नबी शारीरिक जीवन के साथ सांसारिक जीवन के रूप में जीवित हैं तथा शहीदों की तुलना में उनका जीवन पूर्ण और सुदृढ़ है अपितु सर्वाधिक पूर्ण, सुदृढ़ और सम्माननीय जीवन हमारे सरदार एवं स्वामी 'जिन पर मैं, मेरे माता-पिता न्यौछावर हों' स.अ.व. का है। हज़रत मसीह तो केवल दूसरे आसमान में अपने मौसेरे भाई तथा अपने पथ-प्रदर्शक हज़रत यह्या के साथ ठहरे हुए हैं परन्तु हमारे सरदार एवं स्वामी स.अ.व. आसमान की सर्वोच्च श्रेणी जिस से अधिक अन्य कोई श्रेणी नहीं विराजमान हैं। सिदरतुल मुन्तहा, सर्वोच्च मित्र के साथ तथा उम्मत के सलाम और रहमत की दुआएं आँहज़रत स.अ.व. की सेवा में निरन्तर पहुँचाई जाती हैं

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ اَكْثَرَ مِمَّا
صَلَّيْتَ عَلٰى اَحَدٍ مِّنْ اَنْبِيَائِكَ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

और यह विचार कि नबी जीवित होकर क़ब्र में रहते हैं उचित नहीं है। हाँ क़ब्र से उनका एक प्रकार का सम्बन्ध शेष रहता है और इसी कारण वह कश्फ़ी तौर पर अपनी क़ब्रों में दिखाई देते हैं, परन्तु यह नहीं कि वे क़ब्रों में होते हैं अपितु वे तो फ़रिश्तों की तरह आकाशों में जो स्वर्ग की धरती है अपने-अपने पदानुसार स्थान रखते हैं तथा जागने की अवस्था में पवित्रात्मा लोगों से कभी-कभी पृथ्वी पर आकर

وَلَا تَحۡسَبَنَّ الَّذِیۡنَ قُتِلُوۡا فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ اَمۡوَاتًا

بَلۡ اَحۡیَآءٌ عِنۡدَ رَبِّہِمۡ یُرۡزَقُوۡنَ (आलेइमरान, 3/170)

अर्थात् जो लोग ख़ुदा तआला के मार्ग में क़त्ल किए गए तुम उन्हें मुर्दे न समझो अपितु वे तो जीवित हैं और उन्हें अपने रब्ब की ओर से रिज़्क़ प्राप्त हो रही है।

एक अन्य हदीस भी मसीह इब्ने मरयम की मृत्यु हो जाने को सिद्ध करती है और वह यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा गया कि प्रलय कब आएगी तो आप ने फ़रमाया कि आज की तिथि से सौ वर्ष तक समस्त लोगों पर प्रलय आ जाएगी तथा यह इस बात की ओर संकेत था कि सौ वर्ष की अवधि से अधिक कोई मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। इसी कारण अधिकांश विद्वान और ख़ुदा के पुजारी इस ओर गए हैं कि ख़िज़्र की भी मृत्यु हो चुकी, क्योंकि सच्चे संदेशक के कलाम में झूठ वैध नहीं, परन्तु खेद कि हमारे विद्वानों ने इस प्रलय से भी मसीह को बाहर रख लिया। आश्चर्य है कि बनी इस्राईल के अन्य नबियों की तुलना में मसीह को क्यों अधिक महत्व दिया जाता है। प्रत्यक्षतया यों ज्ञात होता है कि हमारे मुसलमान भाई किसी ऐसे युग से कि जब वे बहुत से ईसाई

शेष हाशिया :- भेंट भी कर लेते हैं। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अधिकांश वलियों से बिल्कुल जागते हुए भेंट करना किताबों में भरा पड़ा है तथा इस पुस्तक का लेखक (विनीत) भी कई बार इस सम्मान से सम्मानित हो चुका है। इस पर ख़ुदा की प्रशंसा और आभार। हदीस का यह वाक्य कि मैं चालीस दिन तक क़ब्र में नहीं रह सकता, यह इस बात की ओर संकेत है कि प्रथम कुछ दिन यद्यपि कैसा ही पुनीत व्यक्ति हो क़ब्र से और इस पार्थिव संसार से एक बढ़ा हुआ सम्बन्ध रखता है। कोई धार्मिक सेवा की अत्यधिक प्यास के कारण, कोई अन्य-अन्य कारणों से और फिर वह सम्बन्ध ऐसा कम हो जाता है कि जैसे वह क़ब्र का मनुष्य क़ब्र में से निकल जाता है अन्यथा आत्मा तो मृत्योपरान्त उसी समय अविलम्ब आकाश पर अपने व्यक्तिगत केन्द्र पर जा ठहरती है। इसी से।

इस्लाम धर्म में सम्मिलित हुए होंगे तथा हज़रत मसीह के बारे में कुछ-कुछ मुश्रिकों वाले विचार साथ लाए होंगे, इस अनुचित धार्मिक श्रेष्ठता के अभ्यस्त हो गए हैं जिसे पवित्र क़ुर्आन स्वीकार नहीं करता। इसलिए विशेषकर मसीह की प्रशंसा के बारे में उनमें उचित सीमा से अधिक अतिशयोक्ति पाई जाती है। न्याय की दृष्टि से देखना चाहिए कि पुस्तक बराहीन अहमदिया में ख़ुदा तआला ने इस ख़ाकसार को **आदम सफ़ीउल्लाह** का समरूप ठहराया और विद्वानों (उलेमा) में से किसी को इस बात पर हृदय में तनिक क्रोध नहीं आया, फिर नूह का समरूप बताया और किसी मौलवी साहिब को इस से ग़ुस्सा नहीं आया, फिर हज़रत दाऊद का समरूप वर्णन किया, परन्तु विदानों में से कोई दु:खी नहीं हुआ और फिर मूसा का समरूप करके भी इस ख़ाकसार को सम्बोधित किया तो फ़क़ीहों (इस्लामी शरीअत के ज्ञाता - अनुवादक) और हदीस के ज्ञाताओं में से कोई उत्तेजित नहीं हुआ यहाँ तक कि फिर ख़ुदा तआला ने इस ख़ाकसार को इब्राहीम का समरूप भी कहा तो किसी व्यक्ति ने लेशमात्र भी क्रोध और आक्रोश व्यक्त नहीं किया फिर अन्तत: समरूप ठहराने की नौबत यहाँ तक पहुँची कि बार-बार हे अहमद की उपाधि से सम्बोधित करके प्रतिबिम्ब स्वरूप समस्त नबियों तथा पवित्रात्मा लोगों के पेशवा हज़रत अक़्दस मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. का समरूप ठहराया तो हमारे भाष्यकारों, हदीस के विद्वानों में से कोई आवेग और उत्तेजना में नहीं आया और जब ख़ुदा तआला ने इस विनीत को ईसा या ईसा का समरूप करके पुकारा तो क्रोध, आक्रोश की अधिकता के कारण सब के चेहरे लाल हो गए तथा अत्यन्त उत्तेजित होकर किसी ने इस विनीत को काफ़िर ठहराया, किसी ने इस विनीत का नाम नास्तिक रखा जैसा कि **मौलवी अब्दुर्रहमान साहिब पुत्र मौलवी मुहम्मद लखूके वाले ने इस विनीत का नाम नास्तिक रखा और स्थान-स्थान पर यह भी चर्चा की कि यह व्यक्ति बहुत ख़राब आदमी है।** अत: अब्दुल क़ादिर नामक एक व्यक्ति शरक़पुर ज़िला-लाहौर के निवासी के पास भी यही चर्चा की कि यह व्यक्ति नास्तिक, अधर्मी, खराब और भेंट करने

योग्य नहीं। इसके अतिरिक्त इन लोगों ने आवेग की स्थिति में इसी को पर्याप्त नहीं समझा अपितु यह भी चाहा कि ख़ुदा की ओर से भी इस बारे में कोई साक्ष्य मिले तो अत्यन्त उचित हो। अत: उन्होंने क्रोधित हृदय के साथ इस्तिख़ारे* किए तथा चूँकि अनादिकाल से ख़ुदा तआला का प्रकृति का नियम यही है कि जो व्यक्ति कामवासना की कामना से किसी परोक्ष की बात को ज्ञात करना चाहता है तो शैतान उसकी कामना में अवश्य हस्तक्षेप करता है सिवाए नबियों और मुहद्दिसों के कि उनकी वह्यी शैतान के हस्तक्षेप से पवित्र रखी जाती है। अत: इसी कारण हज़रत अब्दुर्रहमान साहिब तथा उनके मनोरथ के सहयोगी मियाँ अब्दुल हक़ ग़ज़नवी के इस्तिख़ारे पर वह **बुराई का सहयोगी** तुरन्त उपस्थित हो गया तथा उनकी जीभ पर जारी करा दिया कि वह व्यक्ति अर्थात् यह विनीत नारकी है, नास्तिक है तथा ऐसा काफ़िर है कि कभी सद्‌मार्ग प्राप्त नहीं कर सकता। मैं पूछता हूँ कि क्या विद्वानों (उलेमा) के लिए शरीअत के अनुसार यह वैध है कि किसी ऐसे विषय में कि इस्लाम के श्रेष्ठतम लोग ही सहमत न हों तथा सहाबा रज़ि. का उस पर बहुमत सिद्ध न हो, एक ऐसे मुल्हम के बारे में जो कुछ हदीसें और पवित्र क़ुर्आन संभावित तौर पर उसके सत्य पर साक्षी हो कुफ़्र का फ़त्वा लगा दें। यह बात समझने वाले समझ सकते हैं कि कथित समरूप होने के बारे में इस विनीत का इल्हाम हदीस और क़ुर्आन के कदापि विपरीत नहीं और हदीस की किताबों को निरर्थक और व्यर्थ नहीं करता अपितु उनका सत्यापनकर्ता तथा उनके सत्य को प्रदर्शित करने वाला है। क्या यह सत्य नहीं कि पवित्र क़ुर्आन मसीह इब्ने मरयम का निधन हो जाना वर्णन कर रहा है और कथित दज्जाल का मर जाना स्वयं सही मुस्लिम की कुछ हदीसें सिद्ध कर रही हैं। फिर क़ुर्आन और कुछ हदीसों में एकरूपता करने के लिए इसके अतिरिक्त और कौन सा मार्ग है कि इब्ने

* इस्तिख़ार: - किसी काम में ख़ुदा से उस के शुभ पहलू की दुआ करना अथवा एक निर्धारित नियम द्वारा किसी कार्य के शुभ या अशुभ का ज्ञान होने के लिए दुआ करना। (अनुवादक)

मरयम (मरयम के पुत्र) के उतरने से उसके किसी समरूप या कई समरूपों का उतरना अभिप्राय लिया जाए, फिर जबकि इल्हाम भी इसी मार्ग की ओर मार्ग-दर्शन करे तो क्या वह हदीस और क़ुर्आन के अनुकूल हुआ या प्रतिकूल?

अब रही यह बात कि किसी नबी का स्वयं को समरूप ठहराना शरीअत के अनुसार वैध है या नहीं। अत: स्पष्ट हो कि वास्तव में यदि विचार करके देखो तो संसार में समस्त नबी इसी उद्देश्य से भेजे गए हैं ताकि लोग उनके समरूप बनने के लिए प्रयास करें। यदि हम उनका अनुसरण करने से उनके समरूप नहीं बन सकते अपितु ऐसे विचार से मनुष्य काफिर तथा नास्तिक हो जाता है तो ऐसी अवस्था में नबियों का आना व्यर्थ तथा उन पर हमारा ईमान लाना निरर्थक है। पवित्र क़ुर्आन स्पष्ट तौर पर यही निर्देश देता है और हमें सूरह फ़ातिहा उम्मुल किताब में समरूप बन जाने को आशान्वित करता है और हमें सतर्क करता है कि तुम मेरे सामने पांच समय खड़े होकर अपनी नमाज़ में मुझ से यह दुआ माँगो कि

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ۙ

अर्थात् हे मेरे दयालु, कृपालु ख़ुदा! हमें ऐसी हिदायत (मार्ग-दर्शन) प्रदान कर कि हम आदम सफ़ीउल्लाह के समरूप हो जाएं, ख़ुदा के नबी 'शीस के समरूप बन जाएं, द्वितीय आदम हज़रत नूह के समरूप हो जाएं, इब्राहीम ख़लीलुल्लाह के समरूप हो जाएं, मूसा कलीमुल्लाह के समरूप हो जाएं, ईसा रूहुल्लाह के समरूप हो जाएं और जनाब अहमद मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा हबीबुल्लाह के समरूप हो जाएं तथा संसार के प्रत्येक सदात्मा, शहीद के समरूप हो जाएँ। अब हमारे विद्वान जो मसील (समरूप) होने के दावे को कुफ्र और नास्तिकता समझते हैं तथा जिस व्यक्ति को ख़ुदा के इल्हाम के माध्यम से इस पद की संभावित प्राप्ति का शुभ सन्देश दिया जाए उसे नास्तिक और काफ़िर तथा नारकी ठहराते हैं। तनिक विचार करके बताएं कि यदि इस आयत के ये अर्थ नहीं हैं जिनका मैंने वर्णन किया है तो अन्य क्या अर्थ हैं और यदि ये अर्थ सही नहीं हैं तो फिर अल्लाह तआला क्यों

फ़रमाता है -

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ*

अर्थात् उन्हें कह दो कि यदि तुम ख़ुदा तआला से प्रेम रखते हो तो आओ मेरा अनुसरण करो ताकि ख़ुदा तआला भी तुम से प्रेम रखे और तुम्हें अपना प्रियतम बना ले। अब विचार करना चाहिए कि जिस समय मनुष्य एक प्रियतम के अनुसरण से स्वयं भी प्रियतम बन गया तो क्या उस प्रियतम का समरूप ही हो गया या अभी समरूपता रहित ही रहा। खेद! हमारे द्वेष रखने वाले विरोधी तनिक नहीं सोचते कि ख़ुदा के अभिलाषी के लिए यही तो उत्तम और उच्च कामना है जो उसे कठोर जप-तप की ओर प्रेरित करती है और यही तो एक शक्तिशाली **इंजन** है जो संयम और शुद्धता, निष्कपटता, निष्ठा और श्रद्धा तथा दृढ़ता के उच्च पदों की ओर आकर्षित करता चला जाता है और यही तो वह प्यास लगाने वाली अग्नि है जिससे साधक का बाह्य और आन्तरिक भड़क उठता है। यदि इस उद्देश्य की प्राप्ति में पूर्ण निराशा हो तो फिर उस सच्चे प्रियतम के सच्चे अभिलाषी जीवित ही मर जाएं। आज तक जितने बुज़ुर्ग **सूफ़िया** गुज़रे हैं उनमें से एक को भी इसमें मतभेद नहीं कि इस सुदृढ़ धर्म में नबियों के समरूप बनने का मार्ग खुला हुआ है, जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आध्यात्मिक तथा ख़ुदाई विद्वानों के लिए यह शुभ सन्देश दे गए हैं कि

عُلَمَاءُ اُمَّتِیْ كَاَنْبِيَاءِ بَنِیْ اِسْرَائِيْل

और हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रह. के निम्नलिख्ति पवित्र वाक्य जो पुस्तक 'तज़्किरतुल औलिया' में हज़रत **फरीदुद्दीन अत्तार** साहिब ने भी लिखे हैं और दूसरी विश्वसनीय पुस्तकों में भी पाए जाते हैं इसी कारण हैं जैसा कि वह फ़रमाते हैं कि **मैं ही आदम हूँ, मैं ही शीस हूँ, मैं ही नूह हूँ, मैं ही इब्राहीम हूँ, मैं ही मूसा हूँ, मैं ही ईसा हूँ, मैं ही मुहम्मद हूँ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व अला**

---

* आले इमरान, 3 : 32

इख़्वानिही अज्मईन और यद्यपि इन्हीं वाक्यों के कारण हज़रत बायज़ीद बुस्तामी सत्तर बार काफ़िर ठहराए जाकर बुस्ताम से जो उनका निवास स्थान था शहर से निष्कासित किए गए तथा मियाँ अब्दुर्रहमान पुत्र मौलवी मुहम्मद की तरह उन लोगों ने भी बायज़ीद बुस्तामी को काफ़िर और नास्तिक बनाने में नितान्त अतिशयोक्ति की, परन्तु उस युग के गुज़रने के पश्चात् फिर ऐसे अनुयायी हो गए कि जिसकी सीमा नहीं और उनके मुख से अनायास शरीअत के विरुद्ध निकलने वाले वाक्यों की भी प्रत्यक्ष से हटकर व्याख्याएं करने लगे।

इसी प्रकार **सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी** रज़ि. अपनी पुस्तक 'फुतूहुल ग़ैब' में इस बात की ओर संकेत करते हैं कि मनुष्य मनोवृत्ति के त्याग और ख़ुदा में तल्लीनता की अवस्था में समस्त नबियों का समरूप अपितु उन्हीं की तरह का हो जाता है तथा इस विनीत के मित्र **मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी** ने भी अपनी पत्रिका इशाअतुसुन्नह संख्या-7, जिल्द-7 में समरूपता के वैध होने तथा इसकी संभावना के बारे में बहुत कुछ लिखा है और यद्यपि इस विनीत के इस दावे के बारे में जो कथित समरूप होने के सन्दर्भ में बराहीन अहमदिया में लिखित है और विस्तृत तौर पर प्रकट किया गया है कि पवित्र क़ुर्आन और हदीस में इस ख़ाकसार के बारे में बतौर भविष्यवाणी सूचना दी गई है कि मौलवी साहिब ने स्पष्ट तौर पर कोई इक़रार नहीं किया, परन्तु संभावित तौर पर स्वीकार कर गए हैं क्योंकि उनका इस वर्णन को प्रस्तुत करने में जो समीक्षा लिखने के पद के लिए आवश्यक था खामोश रहना तथा इन्कार और अस्वीकृति के लिए मुख न खोलना इस बात का ठोस प्रमाण है कि वह इस बात के भी कदापि विरोधी नहीं कि यह ख़ाकसार अवास्तविक और आध्यात्मिक तौर पर वही मसीह मौऊद है जिस की क़ुर्आन और हदीस में सूचना दी गई है क्योंकि बराहीन अहमदिया में इस बात का स्पष्ट तौर पर उल्लेख कर दिया गया था कि यह ख़ाकसार आध्यात्मिक तौर पर वही मसीह मौऊद है जिसकी अल्लाह और रसूल ने सूचना दे रखी है। हाँ उस समय इस बात का इन्कार नहीं हुआ और न अब इन्कार है कि कदाचित्

भविष्यवाणियों के प्रत्यक्ष अर्थों की दृष्टि से कोई अन्य मसीह भी भविष्य में किसी समय पैदा हो परन्तु इस समय के वर्णन और बराहीन अहमदिया के वर्णन में अन्तर केवल इतना है कि उस समय इल्हाम की संक्षिप्तया के कारण तथा प्रत्येक पहलू के ज्ञात न होने के कारण संक्षिप्त तौर पर लिखा गया था और अब विस्तृत तौर पर लिखा गया। बहरहाल आदरणीय मौलवी साहिब ने इस ख़ाकसार के मसीह के समरूप होने के बारे में संभावित प्रमाण पैदा करने के लिए बहुत बल दिया है। अत: वह एक स्थान पर मुहियुद्दीन इब्ने अरबी साहिब के कलाम को इस उद्देश्य के समर्थन में ''फ़ुतूहाते मक्किया'', बाब-223 से उद्धृत करते हैं और वह इबारत अनुवाद सहित निम्नलिखित है :-

غاية الوصلة ان يكون الشّئى عين ماظهرو لَا يعرف
كمارأيت رسول الله صلّى الله عليه وسلم وقد عانق ابن
حزم المحدث فغاب احد هما فى الاخرفلم نرا لا واحدا
وهو رسول الله صلعم فهذه غاية الوصلة وهوا المعبر عنه
بالاتحاد (فتوحات مكيه)

अर्थात् नितान्त श्रेणी की एकता यह है कि एक वस्तु ठीक वही वस्तु हो जाए जिसमें वह प्रकट हो और स्वयं वह दिखाई न दे जैसा कि मैंने स्वप्न में आँहज़रत(स) को देखा कि आप ने अबू मुहम्मद बिन हज़्म मुहद्दिस से गले मिले और एक दूसरे में अदृश्य हो गया सिवाए एक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिखाई न दिया। तत्पश्चात् आदरणीय मौलवी साहिब ने अपने इस वर्णन के समर्थन में स्वर्गीय नवाब सिद्दीक़ हसन साहिब की पुस्तक ''इत्तिहाफ़ुनूनबला'' में से एक अरबी चौपाई अनुवाद सहित उद्धृत करते हैं और वह यह है

تو هم واشينا بليل مزاره   فهم ليسعى بيننا بالتباعد
فعانتة حتى اتحدنا تعانقا   فلما اتانا ماراى غير واحد

जिसका अनुवाद यह है - हमारे बुरा कहने वाले प्रतिद्वन्दी ने रात को हमारे पास हमारे प्रियतम के आने का गुमान किया तो हमारे मध्य पृथकता डालने का प्रयास करने लगा। अत: मैंने अपने प्रियतम को गले से लगा लिया। फिर वह प्रतिद्वन्दी आया तो उसने मुझ एक के अतिरिक्त किसी को न देखा। फिर यह फ़ारसी शेर नक़ल किया है :-

جذبۂ شوق بحدیست میانِ من و تو   کہ رقیب آمد و نشناخت نشانمنو تو

तत्पश्चात् यह दुआ का वाक्य लिखा है :-

رزقنا اللّٰہ مِن ھذا الاتحاد فی الدنیا و الاخرۃ

अर्थात् ख़ुदा तआला हमें भी ऐसी ही एकता इस लोक और परलोक में प्रदान करे।

मैं पुन: मसीह इब्ने मरयम की मृत्यु हो जाने के बारे में वर्णन का परिशिष्ट वर्णन करना चाहता हूँ और वह यह है कि यदि यह आरोप प्रस्तुत किया जाए कि यद्यपि हदीसें और क़ुर्आन तथा इंजील की दृष्टि से मसीह इब्ने मरयम का मृत्यु पा जाना सिद्ध होता है परन्तु साथ ही पवित्र क़ुर्आन में राफ़िउका इलय्या का शब्द भी तो विद्यमान है जिस से यह समझा जाता है कि वह जीवित होकर फिर आकाश की ओर उठाया गया।

इस भ्रम का उत्तर यह है कि आकाश का तो यहाँ किसी स्थान पर उल्लेख भी नहीं। इसके अर्थ तो केवल इतने हैं कि मैं अपनी ओर तुझे उठा लूँगा और स्पष्ट है कि जो नेक आदमी मरता है उसकी ओर आध्यात्मिक तौर पर उठाया जाता है। क्या ख़ुदा तआला दूसरे आकाश पर बैठा हुआ है, जहाँ हज़रत यह्या और ईसा की रूह है? अतएव जिस स्थिति में क़ुर्आन और हदीस की दृष्टि से सिद्ध होता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम निस्सन्देह मृत्यु को प्राप्त हो गए थे तो फिर इस प्रमाण के पश्चात् रफ़ा से अभिप्राय शरीर के साथ उठाया जाना बहुत बड़ी गलती है अपितु पवित्र क़ुर्आन की अगले-पिछले वाक्यों को देखने से नितान्त स्पष्ट तौर पर सिद्ध हो

रहा है कि हज़रत ईसा की मृत्यु होने के पश्चात् उनकी आत्मा (रूह) आकाश की ओर उठाई गई। कारण यह कि पवित्र क़ुर्आन में स्पष्ट तौर पर लिखा गया है कि प्रत्येक मोमिन जिसकी मृत्यु होती है तो उसकी आत्मा ख़ुदा की ओर उठाई जाती है तथा स्वर्ग में दाख़िल की जाती है जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

يَاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ارْجِعِىٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً

فَادْخُلِىْ فِىْ عِبَادِىْ وَادْخُلِىْ جَنَّتِىْ (अलफज्र - 28 से 30)

हे वह आत्मा जो ख़ुदा तआला से आराम प्राप्त है अपने प्रतिपालक की ओर चली आ तू उस से प्रसन्न वह तुझ से प्रसन्न। अत: मेरे बन्दों में सम्मिलित हो जा और मेरे स्वर्ग में अन्दर आ। यहां 'मआलिम' के भाष्यकार इस आयत की व्याख्या करके अपनी पुस्तक के पृष्ठ 975 में लिखते हैं कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. से रिवायत करते हैं कि जब मोमिन बन्दा मृत्यु के निकट होता है तो अल्लाह तआला उसकी ओर दो फ़रिश्ते भेजता है तथा उनके साथ स्वर्ग का कुछ उपहार भी भेजता है और वे फ़रिश्ते आकर उसकी आत्मा से कहते हैं कि हे सात्विकवृत्ति तू आराम और सुगन्ध और अपने रब्ब की ओर जो तुझ से प्रसन्न है निकल आ। तब वह आत्मा कस्तूरी की उस सुगन्ध की भाँति जो बहुत उत्तम और प्रसन्न करने वाली हो जो नाक में पहुँच कर मस्तिष्क को सुगंधित कर देती हो, बाहर निकल आती है और फ़रिश्ते आकाश के किनारों पर कहते हैं कि एक आत्मा चली आती है जो बहुत पवित्र और सुगंधित है, तब आकाश का कोई द्वार ऐसा नहीं होता जो उसके लिए खोला न जाए और कोई फ़रिश्ता आकाश का नहीं होता जो उसके लिए दुआ न करे यहाँ तक कि वह आत्मा ख़ुदा के सिंहासन (अर्श) तक पहुँच जाती है, तब ख़ुदा तआला को सज्दह करती है फिर मीकाईल फ़रिश्ते को आदेश होता है कि जहाँ और आत्माएं हैं वही इसे भी ले जा।

अब पवित्र क़ुर्आन की इस आयत और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर की

रिवायत से भली भाँति सिद्ध हो गया कि मोमिन की आत्मा उस की मृत्यु के पश्चात् अविलम्ब आकाश पर पहुँचाई जाती है जबकि वास्तविकता यह है तो फिर पवित्र क़ुर्आन की इस आयत को कि

يٰعِيۡسٰۤى اِنِّىۡ مُتَوَفِّيۡكَ وَرَافِعُكَ اِلَىَّ (आले इमरान- 56)

है या इस आयत को कि

بَلۡ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيۡهِ (अन्निसा - 159)

है इस ओर खींचना कि जैसे हज़रत ईसा पार्थिव शरीर के साथ आकाश की ओर उठाए गए थे स्पष्ट आदेश और ज़बरदस्ती होगी क्योंकि जब इब्ने अब्बास की रिवायत और ख़ुदा के कलाम के आगे-पीछे के परिपेक्ष्य में **मुतवफ़्फ़ीका** के अर्थ यही हैं कि मैं तुझे मारूँगा। अत: फिर नितान्त स्पष्ट है जैसा कि अभी हम ख़ुदा के कलाम के उद्धरण से लिख चुके हैं कि मौत के पश्चात सदात्माओं की आत्मा अविलम्ब आकाश की ओर जाती है यह तो नहीं कि मौत का फ़रिश्ता आत्मा को निकाल कर कई घंटे तक वहीं खड़ा रहता है। अब यदि हम कल्पना के तौर पर वहब की रिवायत को स्वीकार कर लें कि हज़रत ईसा तीन घंटे तक मरे रहे तो क्या हम यह भी स्वीकार कर सकते हैं कि तीन घंटे तक या सात घंटे तक मौत का फ़रिश्ता उन की आत्मा अपनी मुट्ठी में लेकर उसी स्थान पर बैठा रहा अथवा लोग लाश को जहाँ-जहाँ ले जाते रहे साथ फिरता रहा और उस आत्मा को उठा कर आकाश की ओर नहीं ले गया, ऐसा भ्रम तो स्पष्ट क़ुर्आनी आदेशों, हदीस तथा समस्त इल्हामी किताबों के विपरीत है और जबकि अनिवार्य तौर पर यही स्वीकार करना पड़ा कि प्रत्येक मोमिन की आत्मा मृत्योपरान्त आकाश की ओर उठाई जाती है तो इस से बिल्कुल स्पष्ट हो गया कि राफिओका इलय्या رَافِعُكَ اِلَىَّ के यही अर्थ हैं कि जब हज़रत ईसा की मृत्यु हो चुकी तो उनकी आत्मा आकाश की ओर उठाई गई, निस्सन्देह प्रत्येक व्यक्ति का हार्दिक प्रकाश और अन्तरात्मा बिना संकोच इस बात को समझ लेती और स्वीकार कर लेती है

कि एक व्यक्ति मोमिन की मृत्यु के पश्चात शरीअत और स्वभाविक तौर पर यही आवश्यक बात है कि उसकी आत्मा आकाश की ओर उठाई जाए और इस प्रकार का इन्कार करना जैसे धर्म की आधारभूत बातों का इन्कार है, क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशों और हदीस से इसका कोई प्रमाण नहीं मिल सकता। यदि ईसा वास्तव में मृत्योपरान्त फिर पार्थिव शरीर के साथ उठाए गए थे तो पवित्र क़ुर्आन में इबारत इस प्रकार से होनी चाहिए थी

يَاعِيْسٰى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ ثُمَّ مُحِيِّيْكَ ثُمَّ رَافِعُكَ مَعَ جَسَدِكَ اِلَى السَّمَآءِ

अर्थात् हे ईसा मैं तुझे मृत्यु दूँगा फिर जीवित करूँगा फिर तुझे तेरे पार्थिव शरीर के साथ आकाश की ओर उठा लूँगा, परन्तु अब तो अकेले राफ़िउका के जो مُتَوَفِّىْ (मुतवफ़्फ़ी) के बाद है, कोई अन्य शब्द رَافِعُكَ का सम्पूर्ण पवित्र क़ुर्आन में दिखाई नहीं देता जो ثُمَّ مُحِيِيكَ के बाद हो। यदि किसी स्थान पर है तो वह दिखाना चाहिए। मैं दावे के साथ कहता हूँ कि इस प्रमाण के पश्चात् कि हज़रत ईसा वास्तव में मृत्यु पा चुके थे, निश्चित तौर पर यही स्वीकार करना पड़ेगा कि जहाँ-जहाँ رَافِعُكَ अथवा بَلْ رَفَعَهُ اللّٰهِ اِلَيْهِ है उससे अभिप्राय उनकी आत्मा का उठाया जाना है जो प्रत्येक मोमिन के लिए आवश्यक है। आवश्यक को छोड़कर हृदय में अनावश्यक का विचार लाना सर्वथा मूर्खता है। हम वर्णन कर चुके हैं कि समस्त नबी अल्लाह तआला की ओर ही उठाए जाते हैं?

अब हम भली भाँति सिद्ध कर चुके हैं कि यह आस्था कि मसीह शरीर के साथ आकाश पर चला गया था, पवित्र क़ुर्आन और सही हदीसों से कदापि सिद्ध नहीं होता, केवल बेहूदा और निराधार तथा परस्पर विपरीत रिवायतों पर उस का आधार मालूम होता है, परन्तु इस दार्शनिकतापूर्ण युग में कि जो बौद्धिक योग्यता और मानसिक निपुणता अपने अन्दर रखता है ऐसी आस्थाओं के साथ धार्मिक सफलता की आशा रखना एक बड़ी भारी भूल है। यदि अफ़्रीका के मरुस्थल या अरब के जंगल में रहने वाले अनपढ़ तथा बद्दुओं में

या समुद्री द्वीपों के और जंगली लोगों की जमाअतों में ये व्यर्थ बातें फैलाएं तो कदाचित् सरलतापूर्वक फैल सकें, परन्तु हम ऐसी शिक्षाओं को जो बुद्धि, अनुभव, भौतिकी और दर्शन से पूर्णतया विपरीत तथा हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से सिद्ध नहीं हो सकतीं अपितु उनके विपरीत हदीसें सिद्ध हो रही हैं, शिक्षित वर्ग कदापि फैला नहीं सकते और न यूरोप-अमरीका के अन्वेषकों की ओर जो अपने धर्म की व्यर्थ बातों से पृथक हो रहे हैं बतौर उपहार भेज सकते हैं। जिन लोगों के हृदय और मस्तिष्क को आधुनिक विद्याओं के प्रकाश के मानव-शक्तियों में उन्नति में उन्नति प्रदान कर दी है वे ऐसी बातों को क्योंकर स्वीकार कर लेंगे, जिनमें सर्वथा ख़ुदा तआला का अपमान और तथा उसके एकेश्वरवाद के अपमान तथा उसके प्रकृति के नियम का खंडन और उसकी किताब के सिद्धान्त का रद्द करना पाया जाता है।

यहाँ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि मसीह का शरीर के साथ आकाश से उतरना उसके शरीर के साथ चढ़ने का एक भाग है। अत: यह बहस भी कि मसीह उसी शरीर के साथ आकाश से उतरेगा जो उसे संसार में प्राप्त था इस दूसरी बहस का भाग होगा कि मसीह शरीर के साथ आकाश पर उठाया गया था, जब कि यह बात सिद्ध हुई तो प्रथम हमें उस आस्था पर विचार करना चाहिए जो मूल ठहराई गई है कि वह कहाँ तक क़ुर्आन और हदीस से सिद्ध है क्योंकि यदि मूल का यथोचित् निर्णय हो जाएगा तो फिर उसका भाग स्वीकार करने में कुछ संकोच नहीं होगा और कम से कम संभावित तौर पर हम स्वीकार कर सकेंगे कि जब एक व्यक्ति का पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चला जाना सिद्ध हो गया है तो फिर उसका उसी शरीर के साथ वापस आना क्या कठिन है, परन्तु यदि मूल विवाद क़ुर्आन और हदीस से सिद्ध न हो सके अपितु वास्तविकता उसके विपरीत सिद्ध हो तो हम भाग को किसी भी प्रकार से स्वीकार नहीं कर सकते। यदि भाग के समर्थन में कुछ हदीसें भी होंगी तो हम पर अनिवार्य होगा कि उन्हें मूल से अनुकूलता देने के लिए प्रयास करें और यदि मूल की दृष्टि से वे हदीसें वास्तविकता पर चरितार्थ

न हो सकें तो हम पर अनिवार्य होगा कि उन्हें रूपकों और कल्पनाओं में सम्मिलित कर लें और मसीह के उतरने के स्थान पर कि मसीह के समरूप का उतरना स्वीकार कर लें जैसा कि स्वयं हज़रत मसीह ने एलिया नबी के बारे में मान लिया, हालाँकि समस्त यहूदियों की इस बात पर सर्वसम्मति थी और अब तक है कि एलिया आकाश से उतर आएगा।

स्मरण रखना चाहिए कि एलिया का आकाश पर जाना और फिर किसी युग में आकाश से उतरना बतौर भविष्यवाणी एक वादा था तथा यहूदियों की सामूहिक आस्था मुसलमानों की भाँति अब तक यही है कि हज़रत एलिया शरीर के साथ आकाश पर जीवित उठाए गए और फिर अन्तिम युग में उसी पार्थिव शरीर के साथ आकाश से पुन: उतरेंगे। अत: एलिया का शरीर के साथ आकाश पर जाना 'सलातीन'-2, बाब-2, आयत-11 में लिखित है और फिर उसके उतरने का वादा मलाकी के सहीफे के बाब-4, आयत-5 में बतौर भविष्यवाणी दिया गया है जिसके यहूदी लोग अब तक प्रतीक्षक हैं तथा हज़रत मसीह ने जो हज़रत यह्या के बारे में कहा कि एलिया जो आने वाला था वह यही है। यह वाक्य यहूदी लोगों की सर्वसम्मति के विपरीत था इसी कारण उन्होंने न मसीह को स्वीकार किया और न यह्या को, क्योंकि वे तो आकाश का मार्ग देख रहे थे कि एलिया कब फ़रिश्तों के कन्धों पर उतरता है। उसके समक्ष बहुत बड़ी कठिनाईयाँ ये आ गई थीं कि इस प्रकार के उतरने पर उनकी सर्वसम्मति हो चुकी थी तथा 'सलातीन' और 'मलाकी' सहीफ़ों (ग्रन्थों) के प्रत्यक्ष आदेश इसी को सिद्ध कर रहे थे। अत: उन्होंने इस परीक्षा में पड़कर हज़रत यह्या अलैहिस्सलाम को स्वीकार न किया अपितु मसीह की नुबुव्वत से भी इन्कारी रहे, क्योंकि उनकी किताबों में लिखा था कि आवश्यक है कि मसीह के आने से पूर्व एलिया आकाश से उतरे। अत: एलिया का आकाश से उतरना जिस प्रकार उन्होंने अपने हृदयों में सोच रखा था उस प्रकार प्रकटन में नहीं आया, इसलिए प्रत्यक्ष को ही

स्वीकार करने की धारणा के दण्ड स्वरूप दो नबियों की नुबुव्वत से इन्कारी रहना पड़ा, अर्थात् मसीह और यह्या से यदि वे लोग उस प्रत्यक्ष का ही अनुसरण करने से हट कर 'सलातीन' और 'मलाकी' की इबारतों को रूपक और लाक्षणिक रूपों पर चरितार्थ कर लेते तो आज संसार में एक भी यहूदी दिखाई न देता सब के सब ईसाई हो जाते क्योंकि 'सलातीन' और 'मलाकी' की इंजीलों में एलिया नबी के दोबारा आने से वास्तव में अभिप्राय यही था कि प्रतिबिम्ब के तौर पर और समतुल्य अस्तित्व के साथ एलिया पुन: संसार में आएगा, जिससे अभिप्राय हज़रत यह्या का आना था जो अपने आध्यात्मिक गुणों के अनुसार एलिया के समरूप थे परन्तु यहूदियों ने अपने दुर्भाग्य और अभागेपन के कारण इन आध्यात्मिक अर्थों की ओर ध्यान न दिया और भौतिकवाद में फंसे रहे। वास्तव में थोड़ा ध्यान दें तो यहूदियों को हज़रत यह्या को स्वीकार करने के बारे में जो कठिनाइयाँ सामने आ गई थीं उतनी कठिनाइयाँ हमारे मुसलमान भाइयों के सामने कदापि नहीं आईं क्योंकि सलातीन-2, अध्याय-2 में स्पष्ट तौर पर लिखा हुआ अब तक मौजूद है कि एलिया नबी शरीर के साथ आकाश की ओर उठाया गया और उसकी चादर पृथ्वी पर गिर पड़ी और फिर 'मलाकी' बाब-4, आयत-5 में ऐसी ही स्पष्टता के साथ वादा दिया गया है कि पुन: वह संसार में आएगा तथा मसीह के लिए मार्ग प्रशस्त करेगा, परन्तु हमारे मुसलमान भाई इन समस्त कठिनाइयों से बिल्कुल सुरक्षित हैं, क्योंकि पवित्र क़ुर्आन में पार्थिव शरीर के साथ उठाए जाने का संकेत तक भी नहीं अपितु मसीह की मृत्यु हो जाने का स्पष्ट वर्णन है, यद्यपि हदीसों की अनर्थक रिवायतों में खंडित प्रमाण के साथ ऐसी चर्चा बहुत से विरोधाभास से भरपूर कहीं-कहीं पाई जाती है, परन्तु इसके साथ उन्हीं हदीसों में मसीह की मृत्यु हो जाना भी वर्णन किया गया है। अब स्पष्ट है कि इस वाद-विवाद और विरोधाभास के बावजूद की आवश्यकता ही क्या है कि अनुचित विवाद की ओर ध्यान दिया जाए। जिस

परिस्थिति में क़ुर्आन और हदीस के अनुसार वह मार्ग भी खुला दिखाई देता है जिस पर कोई बुद्धि, और शरीअत का कोई आरोप नहीं अर्थात् मसीह का मृत्यु पा जाना और रूह का उठाया जाना। तो हम क्यों उसी मार्ग को स्वीकार न करें जिस पर क़ुर्आन के नितान्त स्पष्ट आदेश बल दे रहे हैं ?

हमने एलिया के उठाए जाने और उतरने का वृत्तान्त का यहाँ इस उद्देश्य से उल्लेख किया है ताकि हमारे मुसलमान भाई तनिक ध्यानपूर्वक विचार करें कि जिस मसीह इब्ने मरयम के लिए वे लड़-मर रहे हैं उसी ने यह निर्णय दिया है और उसी निर्णय का पवित्र क़ुर्आन ने भी पुष्टि की है। यदि आकाश से उतरना इस प्रकार से वैध नहीं जिस प्रकार से हज़रत मसीह ने एलिया का उतरना वर्णन किया है तो फिर मसीह ख़ुदा की ओर से नबी नहीं है अपितु 'हम खुदा की शरण चाहते हैं' पवित्र क़ुर्आन पर भी आरोप आता है कि मसीह की नुबुव्वत का सत्यापनकर्ता है। अब यदि मसीह को सच्चा नबी मानना है तो उसके निर्णय को भी मान लेना चाहिए। हठपूर्वक यह नहीं कहना चाहिए कि ये समस्त पुस्तकें अक्षरांतरित और परिवर्तित हैं। निस्सन्देह इन स्थानों से अक्षरांतरण का कोई संबंध नहीं तथा यहूदी और ईसाई दोनों वर्ग इन इबारतों के उचित होने को स्वीकार करते हैं और फिर हमारे इमामुल मुहद्दिसीन हज़रत इस्माईल साहिब अपनी सही बुख़ारी में यह भी लिखते हैं कि इन किताबों में कोई शाब्दिक अक्षरांतरण नहीं।

यह बात स्मरण रखने योग्य है और पहले भी हम अनेक बार वर्णन कर चुके हैं कि ख़ुदा तआला की किताबों में जितनी भविष्यवाणियाँ मौजूद हैं उन सब में एक प्रकार की परीक्षा निहित है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि कोई भविष्यवाणी साफ और स्पष्ट तौर पर किसी नबी के बारे में वर्णन की जाती तो सर्वप्रथम ऐसी भविष्यवाणी के पात्र हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे, क्योंकि यदि मसीह के उतरने से इन्कार किया जाए तो यह बात कुछ कुफ्र का कारण नहीं परन्तु यदि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रसूल होने से

इन्कार किया जाए तो निस्सन्देह वह इन्कार हमेशा के नर्क तक पहुँचाएगा। परन्तु दर्शकों को ज्ञात होगा कि सम्पूर्ण तौरात और इंजील में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में और इसी प्रकार हज़रत मसीह के बारे में भी कोई ऐसी स्पष्ट भविष्यवाणी नहीं पाई जाती जिसके द्वारा हम जाकर यहूदियों की गर्दन पकड़ लें। हज़रत मसीह भी बार-बार यहूदियों को कहते रहे कि मेरे बारे में मूसा ने तौरात में लिखा है, परन्तु यहूदियों ने उन्हें हमेशा यही उत्तर दिया कि यद्यपि यह सत्य है कि हमारी किताबों में एक मसीह के आने की भी सूचना दी गई है, परन्तु तुम स्वयं देख लो कि हमें मसीह के आने का यह निशान दिया गया है कि आवश्यक है कि उस से पूर्व एलिया आकाश से उतरे जिस का आकाश पर जाना सलातीन की किताब में वर्णन किया गया है इसके उत्तर में हज़रत मसीह निरन्तर यही कहते रहे कि वह एलिया यूहन्ना अर्थात् यह्या ज़करिया का बेटा है। परन्तु इस जटिल व्याख्या को कौन सुनता था और प्रत्यक्ष वर्णन के अनुसार यहूदी लोग इस आपत्ति में सच्चे मालूम होते थे। अत: यद्यपि ख़ुदा तआला समर्थ था कि एलिया नबी को आकाश से उतारता और यहूदियों के समस्त भ्रमों का पूर्णतया निवारण कर देता, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया ताकि सच्चा और झूठा दोनों की परख हो जाए क्योंकि दुष्ट मनुष्य केवल प्रत्यक्ष प्रमाण के अनुसार निस्सन्देह ऐसे स्थान पर सख़्त इन्कार कर सकता है परन्तु एक सच्चे व्यक्ति को समझने के लिए यह मार्ग खुला था कि आकाश से उतरने की किसी अन्य प्रकार से व्याख्या की जाए और एक नबी जो अपनी सच्चाई के अन्य लक्षण अपने साथ रखता है उन लक्षणों के अनुसार उस पर ईमान लाया जाए। हाँ यह सत्य और बिल्कुल सत्य है कि यदि 'सलातीन' और मलाकी के बयानों को मुसलमान लोग भी यहूदियों की भाँति प्रत्यक्ष पर चरितार्थ करें तो वह भी किसी प्रकार यह्या बिन ज़करिया को उसकी भविष्यवाणी का चरितार्थ नहीं ठहरा सकते और इस जटिलता में आकर मसीह इब्ने मरयम की नुबुव्वत भी कदापि सिद्ध नहीं हो सकती। पवित्र क़ुर्आन ने मसीह की व्याख्या जो एलिया

नबी के आकाश से उतरने के बारे में उन्होंने की थी स्वीकार कर लिया और मसीह को तथा यह्या को सच्चा नबी ठहराया अन्यथा यदि पवित्र क़ुर्आन एलिया का आकाश से उतरना उसी प्रकार विश्वसनीय समझता अर्थात् प्रत्यक्ष तौर पर जिस प्रकार कि हमारे मुसलमान भाई मसीह के उतरने के बारे में समझते हैं तो मसीह को कदापि नबी न ठहराता, क्योंकि 'सलातीन' और 'मलाकी' आसमानी किताबें हैं। यदि इन स्थानों में उनके प्रत्यक्ष अर्थ विश्वसनीय हैं तो इन अर्थों के छोड़ने से वे समस्त पुस्तकें व्यर्थ और बेकार ठहरेंगी। **मेरे मित्र मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब इस स्थान में भी विचार करें?** और यदि यह कहा जाए कि क्या यह संभव नहीं कि 'सलातीन' और 'मलाकी' के वे स्थान अक्षरांतरित और परिवर्तित हों अत: जैसा कि अभी मैं उल्लेख कर चुका हूँ तो यह भ्रम और विचार ग़लत है, क्योंकि यदि वे स्थान अक्षरांतरित और परिवर्तित होते तो मसीह इब्ने मरयम का यहूदियों के समक्ष उत्तम उत्तर यह था कि तुम्हारी किताबों में एलिया के आकाश पर जाने और फिर उतरने का जो वादा लिखा है, यह बात ही ग़लत है और ये स्थान परिवर्तित किए हुए हैं अपितु मसीह ने तो ऐसा बहाना प्रस्तुत न करके उनके सत्य होने की पुष्टि कर दी। इसके अतिरिक्त जिस प्रकार वे किताबें यहूदियों के पास थीं उसी प्रकार हज़रत मसीह और उनके हवारी उन किताबों का अध्ययन करते थे तथा उनके संरक्षक हो गए थे और यहूदियों के लिए हम कोई बुद्धिसंगत ऐसा कारण नहीं बता सकते जो इन स्थानों को परिवर्तित और अक्षारांतरित करने के लिए बेचैन करता। अब कथन का अभिप्राय यह है कि मसीह की भविष्यवाणी के बारे में एलिया की कहानी ने यहूदियों के मार्ग में ऐसी बाधाएं डाल दीं कि वे अब तक अपने उस मार्ग को प्रशस्त नहीं कर सके और उनकी असंख्य आत्माएं कुफ़्र की अवस्था में इस संसार से कूच कर गईं।

अब हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में तौरात की भविष्यवाणियों पर दृष्टि डालें कि यद्यपि तौरात के दो स्थानों में ऐसी भविष्यवाणियाँ

मिलती हैं कि जो विचार करने वालों पर बशर्ते कि न्यायवान भी हों स्पष्ट करते हैं कि वास्तव में वे हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में लिखी गई हैं, परन्तु अनुचित वाद-विवाद के लिए उनमें गुंजायश ही बहुत है। उदाहरणतया तौरात में उल्लेख है कि हज़रत मूसा ने बनी इस्राईल से कहा कि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरे लिए, तेरे ही मध्य से, तेरे ही भाइयों में से मेरे समान एक नबी भेजेगा। इस भविष्यवाणी में कठिनाइयाँ ये हैं कि इसी तौरात के कुछ स्थानों में बनी-इस्राईल को ही बनी इस्राईल के भाई लिखा है तथा कुछ स्थानों पर बनी इस्माईल को भी बनी इस्राईल के भाई लिखा है, इसी प्रकार दूसरे भाइयों का भी वर्णन है। अब इस बात का निश्चित और स्पष्ट तौर पर क्योंकर निर्णय हो कि बनी इस्राईल के भाइयों में से अभिप्राय केवल बनी इस्माईल ही हैं, अपितु यह शब्द कि "तेरे ही अन्दर से" लिखा है इबारत को अधिक संदिग्ध करता है और यद्यपि हम लोग बहुत से सबूत और लक्षणों को एक स्थान पर एकत्र करके तथा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत मूसा में जो समरूपता है उसे प्रमाणित करके एक सत्याभिलाषी के लिए काल्पनिक तौर पर यह बात सिद्ध कर दिखाते हैं कि यहाँ वास्तव में इस भविष्यवाणी का चरितार्थ हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति नहीं, परन्तु यह भविष्यवाणी ऐसी साफ स्पष्ट तो नहीं कि प्रत्येक मूर्ख और धूर्त को उसके द्वारा हम स्वीकार करा सकें अपितु उसका समझना भी पूर्ण बुद्धि का मुहताज है। और फिर समझाना भी पूर्ण बुद्धि का मुहताज है। यदि ख़ुदा तआला को ख़ुदा की प्रजा की परीक्षा अभीष्ट न होती तथा हर प्रकार से खुले खुले तौर पर भविष्यवाणी का वर्णन करना ख़ुदा की इच्छा होती तो फिर इस प्रकार वर्णन करना चाहिए था कि हे मूसा मैं तेरे बाद बाईसवीं सदी में अरब देश में बनी इस्माईल में से एक नबी पैदा करूँगा जिसका नाम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम होगा और उनके बाप का नाम अब्दुल्लाह और दादा का नाम अब्दुल मुत्तलिब और मां का नाम आमिना होगा और वह मक्का नगर में पैदा होंगे और उनकी ऐसी आकृति होगी। अब स्पष्ट है कि यदि ऐसी भविष्यवाणी तौरात में लिखी जाती तो किसी को वाद-विवाद करने की आवश्यकता न रहती और समस्त उपद्रवियों के हाथ-

पैर बांधे जाते, परन्तु ख़ुदा तआला ने ऐसा नहीं किया। अब प्रश्न यह है कि क्या ख़ुदा तआला ऐसा करने पर समर्थ न था। इसका उत्तर यही है कि निस्सन्देह समर्थ था अपितु यदि चाहता तो इससे बढ़कर ऐसे साफ और स्पष्ट निशान लिख देता कि उनकी ओर समस्त गर्दनें झुक जातीं और संसार में कोई इन्कारी न रहता, परन्तु उसने इस विस्तार और व्याख्या के साथ लिखना इसलिए पसन्द नहीं किया कि भविष्यवाणियों में उसे सदैव एक प्रकार की परीक्षा भी निहित होती है ताकि समझने वाले और वास्तविक सत्याभिलाषी उसे समझ लें और जिनके हृदयों में अहंकार, अभिमान, जल्दबाज़ी तथा बाह्यरूप पर मुग्धता है वे उसे स्वीकार करने से वंचित रह जाएं।

अब निश्चय समझो कि यही दशा उस भविष्यवाणी की है जिसमें कहा गया है कि इब्ने मरयम दो फ़रिश्तों के कन्धों पर हाथ रखे हुए दमिश्क के पूरब की ओर मीनार के पास उतरेगा, क्योंकि यदि इसी तौर और इसी प्रत्यक्ष रंग में भविष्यवाणी ने पूर्ण होना है तो फिर ऐसे तौर पर उतरने के समय संसार के बसने वालों में से कौन इन्कारी रह सकता है ? समस्त क़ौमों को जो अब संसार में रहती हैं, क्या यहूदी और क्या ईसाई और क्या हिन्दू और बुद्ध-धर्म वाले और मजूसी (अग्निपूजक) अत: समस्त सम्प्रदायों को पूछकर देख लो कि यदि इस प्रकार से उतरता कोई नबी तुम्हें दिखाई दे तो क्या फिर भी तुम उसकी नुबुव्वत और उसके धर्म में कुछ सन्देह और शंका रखते रहोगे ? तो निसन्देह समस्त लोग यही उत्तर देंगे कि यदि हम ऐसा बुज़ुर्ग फ़रिश्तों के कंधों पर हाथ रखे हुए आकाश से उतरता हुआ देख लें तो निस्सन्देह ईमान ले आएंगे, हालाँकि अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन में यह फ़रमाता है :-

يٰحَسۡرَةً عَلَى الۡعِبَادِ ۚ مَا يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ رَّسُوۡلٍ
اِلَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿۳۱﴾ *

अर्थात् हाय अफ़सोस बन्दों पर कि ऐसा कोई नबी नहीं आता जिस से वे उपहास न करें। इसी प्रकार पवित्र क़ुर्आन के अन्य स्थानों में यदा-कदा उल्लेख है

* सूरह यासीन आयत -31

कि कोई नबी ऐसा नहीं आया जिसे लोगों ने संयुक्त रूप से स्वीकार कर लिया हो। अब यदि हज़रत मसीह इब्ने मरयम ने वास्तव में इसी प्रकार उतरना है जिस प्रकार हमारे धर्माचार्य विश्वास किए बैठे हैं। अत: स्पष्ट है .कि इससे कोई मनुष्य इन्कार नहीं कर सकता परन्तु हमारे धर्माचार्यों को स्मरण रखना चाहिए कि ऐसा कभी नहीं होगा क्योंकि ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में स्पष्ट तौर पर फ़रमाता है कि यदि मैं फ़रिश्तों को भी पृथ्वी पर नबी नियुक्त करके भेजता तो उन्हें भी सन्देह और शंका से रिक्त न रखता अर्थात् उन में भी सन्देह और शंका करने का स्थान शेष रहता है। स्पष्ट है कि आकाश से यही चमत्कार उतरने का हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी मांगा गया था उस समय इस चमत्कार को प्रदर्शित करने की नितान्त आवश्यकता थी, क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत के इन्कार पर हमेशा के नर्क का दण्ड था, परन्तु फिर भी ख़ुदा तआला ने यह चमत्कार नहीं दिखाया तथा प्रश्न करने वालों को साफ़ उत्तर दिया कि इस परीक्षा-गृह (संसार) में ऐसे स्पष्ट चमत्कार ख़ुदा तआला कदापि नहीं दिखाता ताकि परोक्ष पर ईमान (ईमान बिलग़ैब) लाने की स्थिति में अन्तर न आए, क्योंकि जब ख़ुदा तआला की ओर से एक बन्दा उतरता हुआ देख लिया और फ़रिश्ते भी आकाश से उतरते हुए दिखाई दिए तो फिर तो बात का ही पूर्णतया निर्णय हो गया। फिर कौन दुर्भाग्यशाली है जो उस का इन्कारी रहेगा ? पवित्र क़ुर्आन इस प्रकार की आयतों से भरा हुआ है जिनमें लिखा है कि ऐसे चमत्कार दिखाना ख़ुदा तआला का स्वभाव नहीं है। मक्का के काफ़िर हमेशा ऐसे ही चमत्कार मांगा करते थे और ख़ुदा तआला उन्हें निरन्तर यह कहता था कि यदि हम चाहें तो आकाश से कोई ऐसा निशान उतारें जिसकी ओर समस्त इन्कार करने वालों और कुफ्र करने वालों की गर्दनें झुक जाए, परन्तु इस परीक्षा-गृह (संसार) में ऐसा निशान प्रकट करना हमारी आदत नहीं, क्योंकि इस से परोक्ष पर ईमान जिस पर सम्पूर्ण पुण्य प्राप्त होता है नष्ट और दूर हो जाता है। अत: हे भाइयो ! मैं केवल ख़ुदा के लिए आप लोगों को समझाता हूँ कि इस असंभव विचार को त्याग दें। इन दो लक्षणों पर ध्यानपूर्वक

विचार करो कि कितने शक्तिशाली और स्पष्ट हैं प्रथम एलिया नबी का आकाश से उतरना कि अन्तत: वह उतरे तो किस प्रकार उतरे। दूसरा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यही प्रश्न होना तथा उसका उत्तर قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ(बनी इस्राईल - 94) मिलना अपने हृदयों में विचार करो कि क्या यह इस बात को समझने के लिए शक्तिशाली लक्षण और पर्याप्त सबूत नहीं कि आकाश से उतरने से अभिप्राय निश्चित और वास्तविक तौर पर उतरना नहीं अपितु नमूने और प्रतिबिम्ब के तौर पर उतरना अभिप्राय है। संसार की उत्पत्ति के प्रारंभ से आज तक पवित्रात्मा लोग आकाश से इसी प्रकार उतरते रहे हैं और नमूने के तौर पर यह कहते आए हैं कि यह आदम द्वितीय आया है और यह यूसुफ द्वितीय और यह इब्राहीम द्वितीय, परन्तु मानव का पार्थिव शरीर के साथ आकाश से उतरना अब तक किसी ने देखा नहीं। अत: जो बात संसार की व्यवस्था के विपरीत तथा प्रकृति के नियम के विरुद्ध और वर्तमान अनुभवों के उलट है, उसे स्वीकार करने के लिए केवल कमज़ोर और विरोधाभासी और घटिया रिवायतों से काम नहीं चल सकता। अत: यह आशा न रखो कि सचमुच और वास्तव में समस्त संसार को हज़रत मसीह इब्ने मरयम आकाश से फ़रिश्तों के साथ उतरते हुए दिखाई देंगे। यदि इसी शर्त से इस भविष्यवाणी पर ईमान लाना है तो फिर सच मानो, कि वह उतर चुके और तुम ईमान ला चुके। **ऐसा न हो कि किसी ग़ुब्बारे (बेलून) पर चढ़ने वाले और फिर तुम्हारे सामने उतरने वाले के धोखे में आ जाओ।** अत: सतर्क रहना कि भविष्य में अपने इस दृढ़ विचार के कारण किसी ऐसे उतरने वाले को इब्ने मरयम न समझ लेना। यह नियम की बात है कि जो व्यक्ति सत्य को स्वीकार नहीं करता फिर दूसरे समय में उसे झूठ को स्वीकार करना पड़ता है। जिन अभागे और दुर्भाग्यशाली लोगों ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को स्वीकार नहीं किया था उन्हीं ने मुसैलिमा कज़्ज़ाब को स्वीकार कर लिया, यहाँ तक कि छ: सात सप्ताह के मध्य ही उस पर एक लाख से अधिक लोग ईमान ले आए। अत: ख़ुदा तआला से डरो तथा पृथक-पृथक कोनों में बैठ कर विचार करो कि अब तक सुन्नत और ख़ुदा का स्वभाव किस तौर पर

चला आया है और यह भी विचार कर लो कि सही हदीसों में आकाश से उतरने की भी कहीं चर्चा नहीं और केवल نزل या ينزل का शब्द आकाश से उतरने को कदापि सिद्ध नहीं करता और यदि कल्पना के तौर पर आकाश का शब्द भी होता तब भी हमारे उद्देश्य में हानिप्रद और बाधक नहीं था क्योंकि तौरात और इंजील में ऐसी बहुत सी आयतें पाई जाती हैं जिनमें नबियों के बारे में लिखा है कि वे आकाश से ही उतरते हैं। उदाहरणतया यूहन्ना की इंजील में हज़रत यह्या की ओर से यह कथन लिखा है कि - वह जो पृथ्वी से आता है वह पार्थिव है और पृथ्वी से कहता है, वह जो आकाश से आता है सबके ऊपर है (अर्थात् नबियों का कथन अन्य बुद्धिमानों के कथन पर प्रमुख है क्योंकि नबी आकाश से उतरता है। देखो 'यूहन्ना' बाब-3, आयत-31, फिर द्वितीय कथन यह है - मैं आकाश पर से इसलिए नहीं उतरा कि अपनी मर्ज़ी (इच्छा) पर चलूँ। यूहन्ना बाब-6, आयत-11, फिर तृतीय कथन यह है कि - कोई आकाश पर नहीं गया सिवाए उस व्यक्ति के जो आकाश पर से उतरा। 'यूहन्ना' बाब-3, आयत-13 और केवल यह कहना कि हमने उतारा या उतरा इस बात को कदापि सिद्ध नहीं करता कि आकाश से उतारा गया है क्योंकि पवित्र क़ुर्आन में यह भी* फ़रमाया गया है कि हमने लोहा उतारा और चौपाए (पशु) उतारे।

---

* **हाशिया** :- अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

وَاَنۡزَلۡنَا الۡحَدِیۡدَ (सूरह-अल हदीद - 26)

قَدۡ اَنۡزَلۡنَا عَلَیۡکُمۡ لِبَاسًا (सूरह आराफ़ - 27)

وَاَنۡزَلۡنَا لَکُمۡ مِنَ الانعام (सूरह अज़्ज़ुमर - 7)

अर्थात् हम ने लोहा उतारा और हमने तुम पर लिबास उतारा तथा तुम्हारे लिए चौपाए उतारे। इसी प्रकार तौरात में ये वाक्य हैं - हमारा उतरना बियाबान में - 'गिनती' बाब-10, आयत-31, मुझे यरदन के पार उतरना न होगा। 'इस्तिस्ना', बाब-4, आयत-22, हमारे उतरने का स्थान है। पैदायश बाब-23, 24 अब इन

अब स्पष्ट है कि ये समस्त पशु नस्ल बढ़ाने के द्वारा पैदा होते हैं। किसी व्यक्ति ने कोई घोड़ा या बैल या गधा आदि आकाश से उतरता हुआ कभी नहीं देखा होगा, हालाँकि यहाँ स्पष्ट नुज़ूल (उतरने) का शब्द मौजूद है और कोई व्यक्ति इस आयत को प्रत्यक्ष पर चरितार्थ नहीं करता। अत: जबकि यह ज्ञात हो गया कि ख़ुदा तआला के कलाम में ऐसे-ऐसे रूपक, कल्पनाएं और संकेत भी विद्यमान हैं जिन्हें प्रत्यक्ष शब्दों में स्पष्ट तौर पर वर्णन किया गया है कि लोहा और समस्त पशु हमने उतारे हैं तथा अभिप्राय उस से कुछ और लिया गया है तो इस से स्पष्ट है कि ख़ुदा का नियम इसी प्रकार जारी है कि किसी वस्तु का उतरना वर्णन करता है और उस उतरने से मूल उद्देश्य कुछ और ही होता है। न्याय करना चाहिए कि क्या हज़रत मसीह का आकाश से उतरना इन आयतों की तुलना में अधिक स्पष्टता के साथ वर्णन किया गया है ? अपितु मसीह का उतरना केवल कुछ हदीसों की दृष्टि से विचार किया जाता है और हदीसें भी ऐसी हैं जिनमें आकाश का नाम ही नहीं, केवल उतरना लिखा है, परन्तु गधों आरै बैलों का आकाश से उतरना पवित्र क़ुर्आन स्वयं वर्णन कर रहा है। अत: विचार करके देखो कि किस ओर को प्रधानता है। यदि हज़रत मसीह का आकाश से उतरना केवल इस दृष्टि से आवश्यक समझा जाता है तो इससे अधिक स्पष्ट गधों और बैलों का उतरना है। यदि प्रत्यक्ष तौर पर ही ईमान लाना है तो पहले गधों और बैलों पर ईमान लाओ कि वे वास्तव में आकाश से उतरते हैं अथवा अपना पीछा छुड़ाने के लिए यों करो कि اَنْزَلْنَا (अन्ज़ल्ना) के शब्द को भविष्य काल को प्रदर्शित करने वाली क्रिया के अर्थों पर चरितार्थ करके आयत की व्याख्या इस प्रकार से कर लो कि अन्तिम युग में जब हज़रत मसीह आकाश से उतरेंगे तो साथ ही बहुत से गधे विशेषकर सवारी का गधा इसी प्रकार

शेष हाशिया :- समस्त आयतों से स्पष्ट है कि उतरने का शब्द आकाश से उतरने को कदापि सिद्ध नहीं करता तथा उतरने के साथ आकाश का शब्द अधिक कर लेना ऐसा है जैसे किसी भूखे से पूछा जाए कि दो और दो कितने होते हैं तो वह उत्तर दे कि चार रोटियाँ। इसी से।

बहुत से बैल और घोड़े और खच्चर तथा लोहा भी आकाश से उतरेगा ताकि आयतों और हदीस के अर्थों में पूर्ण अनुकूलता हो जाए वरन् प्रत्येक व्यक्ति आरोप का अधिकार रखता है कि पवित्र क़ुर्आन में आयतों के अर्थ प्रत्यक्ष से आन्तरिक की ओर क्यों फेरे जाते हैं और हदीसों में जो हज़रत ईसा के उतरने के बारे में वही शब्द है क्यों उनके प्रत्यक्ष अर्थ अपनी सीमा से बढ़कर स्वीकार किए जाते हैं, जबकि शक्तिशाली लक्षणों से सिद्ध हो रहा है कि मसीह शरीर के साथ आकाश पर कदापि नहीं गया और न इस आयत में, आकाश का शब्द मौजूद है अपितु शब्द तो केवल यह है -

يَا عِيْسٰى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَىَّ*

फिर दूसरे स्थान पर है

بَلْ رَفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ**

जिसके अर्थ ये हैं कि ख़ुदा तआला ने मसीह को मृत्यु देकर फिर अपनी ओर उठा लिया जैसा कि यह सामान्य बोलचाल की भाषा में नेक लोगों के बारे में उनकी मृत्यु के पश्चात् यही कहा करते हैं कि अमुक बुज़ुर्ग को ख़ुदा तआला ने अपनी ओर उठा लिया है जैसा कि आयत

اِرْجِعِىْ اِلٰى رَبِّكِ***

इसी की ओर संकेत कर रही है। ख़ुदा तआला तो हर स्थान पर मौजूद और दृष्टा है तथा शरीर और साकार नहीं और कोई तरफ़ नहीं रखता फिर क्योंकर कहा जाए कि जो व्यक्ति ख़ुदा तआला की ओर उठाया गया, उसका शरीर आकाश में अवश्य पहुँच गया होगा। यह बात सत्य से कितनी दूर है। सदात्मा लोग आत्मा और आध्यात्मिक दृष्टि से ख़ुदा तआला की ओर उठाए जाते हैं, न यह कि उनका मांस,

* आले इमरान आयत - 56

** अन्निसा आयत -159

*** अलफ़ज्र - 29

त्वचा और उनकी हड्डियाँ ख़ुदा तआला तक पहुँच जाती हैं। ख़ुदा तआला स्वयं एक आयत में फ़रमाता है -

لَنۡ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوۡمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰـكِنۡ يَّنَالُهُ التَّقۡوٰى مِنۡكُمۡ*

अर्थात् ख़ुदा तआला तक क़ुरबानियों का माँस और ख़ून कदापि नहीं पहुँचता अपितु शुभ कर्मों की भावना जो संयम और शुद्धता है वह तुम्हारी ओर से पहुँचती है।

इस समस्त वर्णन से एक सत्याभिलाषी को पूर्ण सन्तोष और शान्ति प्राप्त होती है कि जहां-जहां पवित्र क़ुर्आन और हदीस में किसी साकार वस्तु का आकाश से उतारा जाना लिखा है चाहे हज़रत मसीह हैं या अन्य वस्तुएं वे समस्त शब्द प्रत्यक्ष पर कदापि चरितार्थ नहीं हैं। अत: हमारे उलेमा भी एक मसीह को बाहर निकाल कर शेष समस्त स्थानों में प्रत्यक्ष अर्थों को केवल मसीह के बारे में कुछ ऐसी हठ और चिढ़ उनके हृदयों में बैठ गई है कि इसके अतिरिक्त मानते ही नहीं कि उनके पार्थिव शरीर को आकाश पर पहुँचा दें और फिर किसी अज्ञात युग में उसी शरीर का आकाश से उतरना स्वीकार करें।

हमारे उलेमा ख़ुदा तआला इन के हाल पर दया करे हमारे पेशवा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के स्थान और प्रतिष्ठा को नहीं देखते कि ख़ुदा तआला की सर्वाधिक कृपा इन्हीं पर थी, परन्तु बावजूद इसके कि आँहज़रत के शारीरिक रफ़ा के बारे में अर्थात् इस बारे में कि वह शरीर के साथ मे'राज की रात में आकाश की ओर उठाए गए थे। लगभग समस्त सहाबा की यही आस्था थी जैसा कि मसीह के उठाए जाने के बारे में इस युग के लोग आस्था रखते हैं अर्थात् शरीर के साथ उठाया जाना और फिर शरीर के साथ उतरना, परन्तु फिर भी हज़रत आइशा रज़ि. इस बात को स्वीकार नहीं करतीं और कहती हैं कि वह एक सच्चा स्वप्न था तब किसी ने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा का नाम (खुदा से शरण याचक) अधर्मियों या पथ-भ्रष्टा नहीं रखा और न सर्वसम्मति के विपरीत बात करने से उन पर टूट पड़े। अब हे

* अलहज्ज आयत - 38

न्यायकर्ताओ, हे सत्याभिलाषियो, हे ख़ुदा से भयभीत रहने वाले लोगो ! इस स्थान में तनिक ठहर जाओ!!! तथा गंभीरता और दूरदर्शिता से भली भांति विचार करो कि क्या हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चढ़ जाना और फिर शरीर के साथ उतरना ऐसी आस्था नहीं है जिस पर प्रथम मुख्य स्थान की सर्वसम्मति थी और कुछ सहाबी जो इस सर्व सम्मति के विरोधी स्वीकार कर बैठे किसी ने उनका तिरस्कार नहीं किया, न उन का नाम अधर्मी, पथ-भ्रष्ट प्रत्यक्ष से हटकर व्याख्या करने वाला और दोषी रखा तत्पश्चात् यह भी देखना चाहिए कि हमारे नबी स.अ.व. के शारीरिक मे'राज की समस्या बिल्कुल मसीह के शरीरिक तौर पर आकाश पर चढ़ने और आकाश से उतरने जैसा है और एक समान मुक़द्दमे के बारे में कुछ महान सहाबा का हमारी राय के अनुसार राय प्रकट करना वास्तव में एक अन्य पद्धति में हमारी राय का समर्थन है अर्थात् हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि. का हमारे नबी स.अ.व. के शरीर के साथ मे'राज के बारे में इन्कार करना वास्तव में गुप्त तौर मसीह के शारीरिक तौर पर उठाए जाने और मे'राज से भी इन्कार है। अत: प्रत्येक ऐसे मोमिन के लिए जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की श्रेष्ठता और सम्मान से उत्कृष्ट और श्रेष्ठतम समझता है शिष्टता का नियम यही है कि यह आस्था रखे कि सानिध्य और कमाल का जो स्थान आँहज़रत स.अ.व. के लिए वैध नहीं वह मसीह के लिए भी सबसे पहले वैध नहीं होगा, क्योंकि जिस स्थिति में मुसलमानों की सामान्य तौर पर यह धारणा है कि **मसीह इब्ने मरयम अन्तिम युग में एक उम्मती बन कर आएगा और अनुकरणकर्ता होगा न कि अनुकरणीय अर्थात् नमाज़ में।** अत: इस स्थिति में स्पष्ट है कि उस व्यक्ति की श्रेणी कि जो अन्तिम उम्मती बन कर आएगा उस दूसरे व्यक्ति की श्रेणी से नितान्त निम्नस्तर होनी चाहिए जिसे उम्मती नबी, रसूल और पेशवा ठहराया गया है अर्थात् हमारे सरदार-स्वामी हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। बड़ी आश्चर्यजनक बात होगी कि एक उम्मती की वे प्रशंसाएं की जाएं जो उसके रसूल की नहीं की गईं और वह श्रेष्ठता उस उम्मती को दी जाए

जो उसके रसूल को नहीं दी गई।

और यदि यह कहो कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को उम्मती करके कहाँ पुकारा गया है तो मैं कहता हूँ कि सही बुख़ारी की वह हदीस देखो जिसमें اِمَامُكُمْ مِنْكُمْ (इमामुकुम मिन्कुम) मौजूद है। इस में कुछ सन्देह नहीं कि मिन्कुम के सम्बोधन के सम्बोधित उम्मती लोग हैं जो आँहज़रत स.अ.व. के युग से संसार के अन्त तक होते रहेंगे। अब स्पष्ट है कि जब सम्बोधित केवल उम्मती लोग हैं और उम्मतियों को यह खुशख़बरी दी गई कि इब्ने मरयम (ईसा) जो आने वाला है वह तुम में से ही होगा तथा तुम में से ही पैदा होगा। अत: अन्य शब्दों में इस वाक्य के यही अर्थ हुए कि वह इब्ने मरयम जो आने वाला है कोई नबी नहीं होगा अपितु केवल उम्मती लोगों में से एक व्यक्ति होगा।

अब सोचना चाहिए कि इस से बढ़ कर इस बात के लिए और क्या लक्षण होगा कि यहाँ इब्ने मरयम से अभिप्राय वह नबी नहीं है जिस पर इंजील उतरी थी, क्योंकि नुबुव्वत एक **असीमित दान** है तथा नबी का उस दान से वंचित किया जाना कदापि वैध नहीं और यदि मान लें कि वह नबी होने की दशा में ही आएंगे और नबी की हैसियत में ही उतरेंगे तो खतम-ए-नुबुव्वत इसकी बाधक है। अत: यह अनुकूलता बहुत बड़ी अनुकूलता है इस शर्त के साथ कि किसी के हृदय और मस्तिष्क में ईश्वर प्रदत्त संयम और विवेक हो।

मेरे मित्र **मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब** मुझे अपने एक पत्र में लिखते हैं कि यदि आप का कथित मसील (समरूप) होना मान लिया जाए तो फिर बुख़ारी और मुस्लिम तथा अन्य सही हदीसें निरर्थक और बेकार हो जाएंगी तथा धर्म की प्रमुख और आधारभूत बातों में मत-भेद खड़ा हो जाएगा। अत: सर्व प्रथम मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ कि यह मेरे मित्र वही मौलवी साहिब है कि जो अपने ''इशाअतुस्सुन्नह'' नं. 7, जिल्द 7, में संभावित तौर पर इस ख़ाकसार का **मसीले मसीह और फिर मौऊद होना** भी स्वीकार कर चुके हैं क्योंकि बराहीन अहमदिया में जिसकी मौलवी साहिब ने समीक्षा (रीवियू) लिखी है इन दोनों दावों का वर्णन है

अर्थात् इस ख़ाकसार ने बराहीन अहमदिया में स्पष्ट तौर पर लिखा है कि यह ख़ाकसार मसीले मसीह (मसीह का समरूप) है एवं मौऊद (जिसका वादा दिया गया) भी है जिसके आने का वादा पवित्र क़ुर्आन और हदीस में आध्यात्मिक तौर पर दिया गया है।

अब मुझे मौलवी साहिब के इस बयान पर कि इस ख़ाकसार के मसीले मसीह मानने से 'सही बुख़ारी' और 'सही मुस्लिम' बेकार हो जाएंगी, धार्मिक आस्थाएं ख़राब हो जाएंगी नितान्त आश्चर्य है, क्योंकि मैंने अब इन पुस्तकों में कोई नई बात तो नहीं लिखी, ये तो वही पुरानी बातें हैं जो मैं इससे पूर्व 'बराहीन अहमदिया' में लिख चुका हूँ, जिनके बारे में आदरणीय मौलवी साहिब अपनी समीक्षा के मध्य ख़ामोशी धारण करके इस ख़ाकसार के दावे की सच्चाई के बारे में साक्ष्य दे चुके हैं अपितु संभावित तौर पर इस ख़ाकसार का मसीले मसीह होना अपने स्पष्ट बयान से स्वीकार कर चुके हैं। हाँ इस पुस्तक में मैंने ख़ुदा तआला से यथार्थ और नितान्त विश्वसनीय ज्ञान पाकर बराहीन अहमदिया के लेख से इतना अधिक लिखा है कि मसीह इब्ने मरयम समरूपी और प्रतिविम्बित अस्तित्व के साथ आएगा न कि वही वास्तविक मसीह। अत: मैंने सामूहिक आस्था की (यदि सर्वसम्मति मान ली जाए) एक व्याख्या की है, न उसके विपरीत कुछ कहा है और मौलवी साहिब को ज्ञात होगा कि सहाबा की सर्वसम्मति के विपरीत हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि. हज़रत रसूलुल्लाह स.अ.व. के मे'राज के दोनों भागों के बारे में यही राय प्रकट करती हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शरीर के साथ न बैतुल मक़दस में गए न आकाश पर अपितु वह एक सच्चा स्वप्न था। अत: स्पष्ट है कि आइशा सिद्दीक़ा का बुख़ारी और मुस्लिम का यह कथन कुछ विघ्न डालने वाला नहीं हुआ और न उसने 'सिहाह सित्तह' (हदीस की मान्य छ: किताबें) को व्यर्थ और बेकार कर दिया तो फिर इस ख़ाकसार के इस दावे और इस इल्हाम से सिहाह सित्तह क्योंकर व्यर्थ और बेकार हो जाएंगी ? मसीह का शरीर के साथ आकाश पर जाना कहाँ ऐसा सिद्ध है जैसा कि हमारे नबी स.अ.व. का। अत: हे मेरे प्रिय भ्राता इस स्थान में विचार

कर और जल्दी कर

تامّل کناں درخطا و صواب　　　به از ژاژ خایان حاضر جواب

और यदि मौलवी साहिब यह बहाना प्रस्तुत करें कि हमने यद्यपि अपनी समीक्षा में संभावित तौर आपका मसीले मसीह होना मान लिया है और ऐसा ही प्रतिबिम्बित और आध्यात्मिक तौर पर मसीह मौऊद होना भी मान लिया, परन्तु हमने यह कब माना है कि आप उन भविष्यवाणियों के उन समस्त लक्षणों सहित पूर्ण चरितार्थ जो मसीह इब्ने मरयम के बारे में सिहाह(हदीस की पुस्तकें) में मौजूद हैं।

इस बहाने का उत्तर यह है कि इस ख़ाकसार की ओर से भी यह दावा नहीं है कि मसीहियत का मेरे अस्तित्व पर ही अन्त है तथा भविष्य में कोई मसीह नहीं आएगा अपितु मैं तो मानता हूँ और बारम्बार कहता हूँ कि एक क्या दस हज़ार से भी अधिक मसीह आ सकता है तथा संभव है कि प्रत्यक्ष तौर पर प्रताप और तेज के साथ भी आए और संभव है कि प्रथम वह दमिश्क में ही उतरे, परन्तु हे मेरे मित्र मुझे इस बात के मानने और स्वीकार करने से असमर्भ समझें कि वही मसीह इब्ने मरयम जो मृत्यु पा चुका है अपने पार्थिव शरीर के साथ पुन: आकाश से उतरेगा। इस्लाम यद्यपि ख़ुदा तआला को सर्वशक्तिमान वर्णन करता है तथा ख़ुदा और रसूल के आदेश को बुद्धि पर श्रेष्ठता देता है, परन्तु फिर भी वह बुद्धि को निलंबित और बेकार ठहराना नहीं चाहता और यदि साफ़ और स्पष्ट तौर पर कोई बात बुद्धि के विपरीत किसी इल्हामी किताब में मौजूद हो और हम उसके चारों ओर दृष्टि डाल कर इस वास्तविकता तक पहुँच जाएं कि वास्तव में यह बात बुद्धि के विपरीत है बुद्धि से श्रेष्ठ नहीं तो हमें शरीअत और ख़ुदा की किताब कदापि अनुमति नहीं देती कि हम इस अनुचित बात को यथार्थ पर चरितार्थ कर बैठें अपितु पवित्र क़ुर्आन में हमें स्पष्ट आदेश दिया है कि संदिग्ध आयतों अर्थात् जिन का समझना बुद्धि पर संदिग्ध रहे उनके प्रत्यक्ष अर्थों पर कदापि बल नहीं देना चाहिए कि वास्तव में ख़ुदा तआला का यही उद्देश्य है* अपितु उस पर ईमान लाना चाहिए तथा उसकी मूल

वास्तविकता को ख़ुदा के सुपुर्द कर देना चाहिए। अत: देखो कि यह ख़ुदा तआला की ओर से यह एक ऐसी पूर्ण शिक्षा है कि हम इसी की बरकत से सहस्त्रों ऐसे विवादों से मुक्ति पा सकते हैं जो पूर्वकालीन कहानियों अथवा भविष्यवाणियों के बारे में इस युग में पैदा हो रहे हैं। क्योंकि प्रत्येक आरोप बुद्धि के विपरीत अर्थ पर चरितार्थ करने से पैदा होता है। अत: जब कि हम ने इस हठ को ही त्याग दिया और अपने स्वामी के निर्देशानुसार समस्त संदिग्ध आयतों में जिनका समझना बुद्धि पर संदिग्ध रहता है यही नियम निर्धारित कर रखा है कि उन पर संक्षिप्त तौर पर ईमान लाएं और उनकी मूल वास्तविकता ख़ुदा के सुपर्द करें तो फिर आरोप के लिए कोई

---

* **हाशिया** :- एकेश्वरवादियों में से कुछ लोग क़ुर्आनी आयत के हवाले से यह आस्था रखते हैं कि हज़रत मसीह इब्ने मरयम भाँति-भाँति के पक्षी बना कर तथा उनमें फूँक मारकर जीवित कर दिया करते थे। अत: इसी आधार पर इस ख़ाकसार पर आरोप लगाया है कि जिस परिस्थिति में मसीले मसीह होने का दावा है तो फिर आप भी मिट्टी का कोई पक्षी बना कर फिर उसे जीवित करके दिखाइए, क्योंकि जिस परिस्थिति में हज़रत मसीह के बनाए हुए करोड़ों पक्षी अब तक मौजूद हैं जो हर ओर उड़ते हुए दिखाई देते हैं तो फिर मसीले (समरूप) मसीह भी किसी पक्षी का स्रष्टा होना चाहिए।

इन समस्त मिथ्या भ्रमों का उत्तर यह है कि वे आयतें जिन में ऐसा उल्लेख है मुतशाबिहात (क़ुर्आन की वे आयतें जिनके अर्थ स्पष्ट न हों) आयतों में से हैं तथा उनके ये अर्थ करना कि जैसे ख़ुदा तआला ने अपनी इच्छा और आज्ञा से हज़रत ईसा को अपनी सृजनशक्ति में भागीदार कर रखा था, सर्वथा नास्तिकता और नितान्त बेईमानी है, क्योंकि यदि ख़ुदा तआला अपनी ख़ुदाई की विशिष्ट विशेषताएं भी दूसरों को दे सकता है तो इस से उसकी खुदाई खंडित हो जाती है तथा एकेश्वरवादी साहिब का यह बहाना कि हम ऐसी आस्था तो नहीं रखते कि अपनी व्यक्तिगत शक्ति से हज़रत ईसा पक्षियों के स्रष्टा थे अपितु हमारी आस्था यह है कि यह शक्ति ख़ुदा तआला ने अपने आदेश और इरादे से उन्हें दे रखी थी और अपनी इच्छा से उन्हें अपनी सृजन शक्ति में भागीदार

आधार पैदा नहीं हो सकता। उदाहरणतया एक सही हदीस में यह लिखा हो कि यदि दस और दस को जोड़ें तो वे बीस नहीं अपितु पन्द्रह होंगे, तो हमें क्या आवश्यकता है कि इस हदीस के लेख को यथार्थ पर चरितार्थ कर बैठें और अकारण अनुचित हठ करके विरोधियों से हंसी कराएं। हमारे लिए पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा के माध्यम से यह मार्ग ख़ुला है कि हम इस हदीस को संदिग्ध हदीसों में सम्मिलित करें तथा स्वयं को उपद्रव से बचाएं, परन्तु यदि हम ज्ञान में ऐसे सुदृढ़ किए जाएं कि हमें इल्हामी तौर पर वह उचित मार्ग दिखाया जाए जिस से लोग संतुष्ट हो सकते हैं तो फिर कुछ आवश्यकता नहीं कि हम ऐसी आयत या हदीस को संदिग्ध में सम्मिलित

शेष हाशिया :- बना दिया था और उसे यह अधिकार है जिसे चाहे अपना मसील (सदृश) बना दे, सर्वशक्तिमान जो हुआ। यह सर्वथा शिर्क की बातें हैं तथा कुफ्र से अधिक निकृष्ट। इस एकेश्वरवादी को यह भी कहा गया क क्या तुम अब पहचान सकते हो इन पक्षियों में से कौन से ऐसे पक्षी हैं जो ख़ुदा तआला के बनाए हुए हैं और कौन से ऐसे पक्षी हैं जो उन पक्षियों की नस्ल हैं जिनके स्रष्टा हज़रत ईसा हैं ? तो उसने अपने ख़ामोश रहने से यही उत्तर दिया कि मैं पहचान नहीं सकता।

अत: स्पष्ट रहे कि इस युग के कुछ एकेश्वरवादियों की यह आस्था कि पक्षियों के प्रकार में से कुछ तो ख़ुदा तआला की सृष्टि (मख़लूक़) तथा कुछ हज़रत ईसा की सृष्टि (मख़लूक़) है सर्वथा विकृत और मुश्रिकों वाला विचार है तथा ऐसा विचार रखने वाला निस्सन्देह इस्लाम से बहिष्कृत है तथा यह बहाना कि हम हज़रत ईसा को ख़ुदा तो नहीं मानते अपितु यह मानते हैं कि ख़ुदा तआला ने उन्हें अपनी कुछ ख़ुदाई विशेषताएं प्रदान कर दी थीं, नितान्त घृणित और मिथ्या बहाना है, क्यों कि यदि ख़ुदा तआला अपनी आज्ञा और इच्छा से अपनी ख़ुदाई के गुण मनुष्यों को दे सकता है तो निस्सन्देह वह अपनी ख़ुदाई के समस्त गुण एक मनुष्य को देकर पूर्ण ख़ुदा बना सकता है। अत: इस स्थिति में सृष्टि पूजकों के समस्त धर्म सच्चे ठहर जाएंगे, क्योंकि यदि ख़ुदा तआला किसी मनुष्य को अपनी आज्ञा और इच्छा से सृजन करने की विशेषता प्रदान कर सकता है तो फिर वह इसी प्रकार किसी को

रखें अपितु उन उचित अर्थों को जो इल्हाम के माध्यम से प्रकट हुए हैं हम कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार कर लेंगे।

यदि यह कहा जाए कि पवित्र क़ुर्आन के ऐसे अर्थ करना कि जो पूर्वजों से प्रतिलिपित नहीं हैं, जैसे मौलवी अब्दुर्रहमान, साहिबज़ादा मौलवी मुहम्मद लखूखेवाला ने इस ख़ाकसार के बारे में लिखा है। मैं कहता हूँ कि मैंने कोई ऐसे अपरिचित अर्थ नहीं किए जो उन अर्थों के विपरीत हों, जिन पर आदरणीय सहाबा और सहाबा के बाद आने वालों तथा इन बाद आने वालों के पश्चात आने वाले

शेष हाशिया :- आज्ञा और इच्छा से अपनी भांति अन्तर्यामी भी बना सकता है जो ख़ुदा तआला की तरह प्रत्येक स्थान पर मौजूद और दृष्टा हो। स्पष्ट है कि यदि ख़ुदाई गुण भी मनुष्यों में वितरित हो सकते हैं तो फिर ख़ुदा तआला का भागीदार रहित 'एक' होना मिथ्या है। संसार में जितने सृष्टि-पूजक हैं वे भी यह तो नहीं कहते कि हमारे उपास्य ख़ुदा हैं अपितु उन एकेश्वरवादियों की भांति उनका भी वास्तव में यही कथन है कि हमारे उपास्यों को ख़ुदा तआला ने ख़ुदाई शक्तियाँ दे रखी हैं श्रेष्ठ और उच्चतम तो वही है तथा ये केवल छोटे-छोटे ख़ुदा हैं। आश्चर्य कि ये लोग **हे रसूलुल्लाह** कहना शिर्क का वाक्य समझ कर रोकते हैं, परन्तु मरयम के एक असहाय बेटे को ख़ुदाई का भागीदार बना रहे हैं। भाइयो! यदि आप लोगों का वास्तव में यही धर्म है कि ख़ुदाई भी सृष्टि में वितरित हो सकती है तथा ख़ुदा तआला जिसे चाहता है अपनी सृजन, आजीविका प्रदान करने, ज्ञान तथा शक्तिशाली होने की विशेषता इत्यादि में सदा के लिए भागीदार बना देता है तो फिर आप लोगों ने अपने बिअदती (धर्म में नई बात शामिल करने वाला - अनुवादक) भाइयों से इतना लड़ाई-झगड़ा क्यों आरंभ कर रखा है, वे बेचारे भी तो अपने वलियों को ख़ुदा समझ कर नहीं मानते केवल यही कहते हैं कि ख़ुदा तआला ने अपनी आज्ञा और इच्छा से कुछ-कुछ ख़ुदाई शक्तियाँ उन्हें दे रखी हैं तथा उन्हीं शक्तियों के कारण जो उन्हें ख़ुदा की आज्ञा से प्राप्त हैं वे किसी को बेटा देते हैं तथा किसी को बेटी तथा प्रत्येक

लोगों की सर्वसम्मति हो। अधिकांश सहाबा मसीह का मृत्यु पा जाना मानते रहे कथित दज्जाल की मृत्यु हो जाना स्वीकार करते रहे फिर विपरीत सर्वसम्मति कहाँ से सिद्ध हो। पवित्र क़ुर्आन में तीस के लगभग ऐसी साक्ष्य हैं जो मसीह इब्ने मरयम की मृत्यु को स्पष्ट तौर पर सिद्ध कर रही हैं। अत: यह बात कि मसीह पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चढ़ गया तथा उसी शरीर के साथ उतरेगा, नितान्त निरर्थक और निराधार है। सहाबा की उस पर कदापि सर्वसम्मति नहीं और यदि है तो कम से कम तीन-चार सौ सहाबा का नाम लीजिए जो इस बारे में गवाही दे गए हैं अन्यथा

शेष हाशिया :- स्थान पर मौजूद और दृष्टा है, भेटें और प्रसाद लेते हैं और मनोकामनाएं पूरी करते हैं अब यदि कोई सत्याभिलाषी यह प्रश्न करे कि यदि ऐसी आस्थाएं सर्वथा मिथ्या और मुश्रिकों जैसे विचार हैं तो इन क़ुर्आनी आयतों के उचित अर्थ क्या हैं जिनमें लिखा है कि मसीह इब्ने मरयम मिट्टी के पक्षी बनाकर उनमें फूंक मारता था तो वे ख़ुदा की आज्ञा से उड़ने लग जाते थे।

अत: स्पष्ट हो कि नबियों के चमत्कार दो प्रकार के होते हैं (1) प्रथम - वे जो मात्र आकाशीय मामले होते हैं जिनमें मनुष्य की युक्ति और बुद्धि का कुछ हस्तक्षेप नहीं होता, जैसे शक़्क़ुल क़मर (चन्द्रमा का फटना) जो हमारे सरदार हज़रत नबी करीम स.अ.व. का चमत्कार था तथा ख़ुदा तआला की असीमित शक्ति ने एक सच्चे और पूर्ण नबी की श्रेष्ठता प्रकट करने के लिए उसका प्रदर्शन किया था।

(2) द्वितीय - बौद्धिक चमत्कार हैं जो उस विलक्षण (स्वभाव से हटकर) बुद्धि के द्वारा प्रकट होते हैं जो ख़ुदा के इल्हाम द्वारा मिलती हैं। जैसे हज़रत सुलेमान का वह चमत्कार صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ (जो शीशों के टुकड़े लगाया गया महल) है जिसे देखकर बिल्क़ीस को ईमान लाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

अत: ज्ञात होना चाहिए कि प्रत्यक्षतया ऐसा प्रतीत होता है कि यह हज़रत मसीह का चमत्कार हज़रत सुलेमान के चमत्कार की भाँति केवल बौद्धिक था। इतिहास से सिद्ध है कि उन दिनों में ऐसी बातों की ओर लोगों के विचार झुके हुए थे कि जो

एक-दो व्यक्तियों के बयान का नाम सर्वसम्मति रखना नितान्त बेईमानी है। इसके अतिरिक्त उन लोगों की यह भी सर्वथा गलती है कि पवित्र क़ुर्आन के अर्थों को पूर्व युग के साथ सीमित और प्रतिबंधित समझते हैं। यदि इस विचार को मान लिया जाए तो फिर पवित्र क़ुर्आन चमत्कार नहीं रह सकता और यदि हो भी तो कदाचित् इन अरबियों के लिए जो सरस और सुगम शैली को पहचानने की योग्यता रखते हैं। जानना चाहिए कि पवित्र क़ुर्आन का खुला-खुला चमत्कार जो हर जाति और हर मातृ-भाषा के माहिर पर स्पष्ट हो सकता है जिसे प्रस्तुत करके हम प्रत्येक देश के

शेष हाशिया :- बाज़ीगरी के प्रकार में से तथा वास्तव में निरर्थक तथा जन सामान्य को आकर्षित करने वाले थे। वे लोग जो फ़िरऔन के समय में मिस्र में ऐस-ऐसे कर्तब करते थे कि सांप बना कर दिखा देते थे तथा कई प्रकार के जानवर तैयार करके उन्हें जीवित प्राणियों की तरह चला देते थे। वे हज़रत मसीह के समय में सामान्यतया यहूदियों के देशों में फैल गए थे तथा यहूदियों ने उनके बहुत से जादूगरी के काम सीख लिए थे, जैसे कि पवित्र क़ुर्आन भी इस बात का साक्षी है। अत: आश्चर्य की बात नहीं कि ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह को बौद्धिक तौर पर ऐसे रंग में सूचित कर दिया हो कि एक मिट्टी का खिलौना किसी पुर्ज़े के दबाने अथवा किसी फूंक मारने पर इस प्रकार उड़ता हो जिस प्रकार पक्षी उड़ता है या यदि उड़ता नहीं तो पैरों से चलता हो, क्योंकि हज़रत मसीह इब्ने मरयम अपने पिता हज़रत यूसुफ़ के साथ बाईस वर्ष की अवधि तक बढ़ई का काम भी करते रहे हैं। और स्पष्ट है कि बढ़ई का काम वास्तव में एक ऐसा कार्य है जिसमें उपकरणों के आविष्कार तथा अनेक प्रकार की कलाकारियों के करने में बुद्धि कुशाग्र हो जाती हैं तथा मनुष्य में जैसी शक्तियाँ विद्यमान हों उन्हीं के अनुसार चमत्कार के तौर पर भी सहायता मिलती है जिस प्रकार हमारे सरदार एवं पेशवा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आध्यात्मिक शक्तियां जो बारीकियों और आध्यात्म ज्ञानों तक पहुँचाने में नितान्त तीव्र और शक्तिशाली थीं। अत: उन्हीं के अनुसार पवित्र क़ुर्आन का चमत्कार दिया गया जो ख़ुदा तआला के सम्पूर्ण मर्म और मआरिफ़ का संग्रहीता है।

मनुष्य को चाहे वह हिन्दुस्तानी हो, पारसी हो, यूरोपियन या अमरीकन अथवा किसी अन्य देश का निवासी हो को दोषी और निरुत्तर कर सकते हैं वह असीमित आध्यात्म ज्ञानों, सच्चाईयों, तथा पवित्र क़ुर्आन के दर्शन संबंधी ज्ञान हैं तथा प्रत्येक युग की विचारधारा का सामना करने के लिए हथियारबन्द सिपाहियों की भाँति खड़े हैं। यदि करीम अपनी सच्चाइयों और बारीकियों की दृष्टि से एक सीमित वस्तु होती तो कदापि वह पूर्ण चमत्कार नहीं ठहराया जा सकता था। सरस और सुबोध शैली ऐसी बात नहीं है जिसका चमत्कारी विवरण प्रत्येक शिक्षित और अशिक्षित को ज्ञात हो

शेष हाशिया :- अत: इस से कुछ आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि हज़रत मसीह ने अपने दादा सुलेमान की तरह तत्कालीन विरोधियों को यह बौद्धिक चमत्कार दिखाया हो तथा ऐसा चमत्कार दिखाना बुद्धि से दूर भी नहीं क्योंकि वर्तमान युग में भी देखा जाता है कि अधिकांश शिल्पी ऐसी-ऐसी चिड़ियाँ बना लेते हैं कि वह बोलती भी हैं और हिलती भी हैं तथा पूंछ भी हिलाती हैं तथा मैंने सुना है कि कुछ चिड़ियां मशीन द्वारा उड़ती भी हैं। बम्बई और कलकत्ता में ऐसे खिलौने बहुत बनते हैं तथा यूरोप और अमरीका के देशों में बहुतात के साथ हैं, और प्रतिवर्ष नवीन से नवीन निकल रहे हैं और चूँकि पवित्र क़ुर्आन अत्यधिक रूपकों से भरपूर है इसलिए आयतों के अर्थ आध्यात्मिक तौर पर भी कर सकते हैं कि मिट्टी की चिड़ियों से अभिप्राय वे अनपढ़ और अज्ञान लोग हैं जिन्हें हज़रत ईसा ने अपना मित्र बनाया, मानो अपनी संगत में लेकर पक्षियों के रूप की आकृति बनाई फिर उनमें हिदायत की रूह फूँक दी, जिससे वे उड़ने लगे इसके अतिरिक्त यह भी अनुमान के अनुसार है कि ऐसे-ऐसे चमत्कार **अमलुत्तिर्ब** अर्थात मस्मरेज़म की प्रक्रिया द्वारा बतौर खेल-तमाशे के न कि वास्तविक तौर पर प्रकटन में आ सकें क्योंकि अमलुत्तिर्ब में जिसे वर्तमान युग में मस्मरेज़म कहते हैं ऐसी-ऐसी अद्‌भुत बातें हैं कि उसमें पूरा-पूरा अभ्यास करने वाले अपनी रूह की गर्मी दूसरी वस्तुओं पर डालकर उन वस्तुओं को जीवित प्राणियों की भाँति दिखाते हैं। मानव आत्मा में कुछ ऐसी विशेषता है कि वह अपने जीवन की गर्मी (ऊर्जा) एक स्थूल पदार्थ पर जो बिल्कुल निष्प्राण है डाल सकती

जाए। उनका नितान्त स्पष्ट चमत्कार तो यही है कि वह अपने अन्दर असीमित आध्यात्म ज्ञान और बारीकियाँ रखता है, जो व्यक्ति पवित्र क़ुर्आन के इस चमत्कार को नहीं मानता वह क़ुर्आन के ज्ञान से सर्वथा वंचित है :-

ومن لم یومن بذلك الاعجاز فو الله ما قدر القُرآن حق قدره
وما عرف الله حقّ معرفته وما وقر الرّسول حق توقیره

हे ख़ुदा के बन्दो निश्चित ही स्मरण रखो कि पवित्र क़ुर्आन में असीमित

शेष हाशिया :- है, तब स्थूल वस्तु से वे कुछ गतियाँ होती हैं जो जीवित प्राणियों से हुआ करती हैं। इस पुस्तक के लेखक ने इस ज्ञान के कुछ अभ्यास करने वालों को देखा है कि उन्होंने एक लकड़ी की तिपाई पर हाथ रख कर उसे अपनी हैवानी रूह से उसे गर्म किया कि उसने चौपायों की भांति गति करना आरंभ कर दिया तथा कितने मनुष्य घोड़े की तरह उस पर सवार हुए, उसकी तेज़ी और गति में कुछ कमी न हुई। अत: निश्चित तौर पर सोचा जाता है कि यदि एक व्यक्ति इस कला में पूर्ण निपुणता रखता हो तो मिट्टी का एक पक्षी बना कर उसे उड़ता हुआ भी दिखा दे तो कुछ बड़ी बात नहीं, क्योंकि कुछ अनुमान नहीं किया गया कि इस कला का अन्त कहाँ तक है और जब कि हम स्वयं देखते हैं कि इस कला के माध्यम से एक स्थूल पदार्थ में गति उत्पन्न हो जाती है और वह प्राणियों की भांति चलने लगता है तो फिर यदि उड़ने भी लगे तो असंभव क्या है। परन्तु स्मरण रखना चाहिए कि ऐसा प्राणी जो मिट्टी या लकड़ी इत्यादि से बनाया जाए तथा **मस्मरेज़मी** पद्धति द्वारा अपनी रूह की गर्मी उसे पहुँचाए। वह वास्तव में जीवित नहीं होता अपितु यथावत् निष्प्राण और स्थूल होता है, केवल इस प्रक्रिया करने वाले की रूह की गर्मी बारूद की तरह उसे गति में लाती है तथा यह भी स्मरण रखना चाहिए कि उन पक्षियों का उड़ना पवित्र क़ुर्आन से कदापि सिद्ध नहीं होता, अपितु उनका गतिशील होना भी पूर्ण रूप से सिद्ध नहीं होता और न वास्तव में उनका जीवित हो जाना सिद्ध होता है। यहाँ यह भी ज्ञात होना चाहिए रोगों का दूर करना अथवा अपनी रूह की गर्मी

आध्यात्म ज्ञानों तथा सच्चाइयों का चमत्कार ऐसा पूर्ण चमत्कार है जिसने प्रत्येक युग में तलवार से अधिक कार्य किया है और प्रत्येक युग अपनी नई परिस्थिति के साथ जो कुछ सन्देह प्रस्तुत करता है या जिस प्रकार के उच्च ज्ञानों का दावा करता है उसका पूर्ण निवारण और पूर्ण इल्हाम और पूरा-पूरा मुक़ाबला पवित्र क़ुर्आन में मौजूद है। कोई व्यक्ति ब्रह्म समाजी हो, बौद्ध धर्म वाला हो अथवा आर्य या किसी अन्य प्रकार का दार्शनिक कोई ऐसी सच्चाई नहीं निकाल सकता जो पवित्र क़ुर्आन में पहले से मौजूद न हो। पवित्र क़ुर्आन के चमत्कार कभी समाप्त नहीं हो सकते

शेष हाशिया :- स्थूल पदार्थ में डाल देना, वास्तव में ये सब **मस्मरेज़म** की शाखाएं हैं। प्रत्येक युग में ऐसे लोग होते रहते हैं और अब भी हैं जो इस आध्यात्मिक अमल द्वारा रोगों का निवारण करते रहे हैं तथा लक़्वा, फुलबहरी और यक्ष्मा इत्यादि के रोगी उनके ध्यान शक्ति से स्वस्थ होते रहे हैं। जिन लोगों की जानकारियाँ विशाल हैं, वे मेरे इस बयान पर साक्ष्य दे सकते हैं कि कुछ नक़्शबन्दी और सहरवर्दी फ़क़ीरों इत्यादि ने भी इन अभ्यासों की ओर बहुत ध्यान दिया था और कुछ उन में से इतने माहिर गुज़रे हैं कि सैकड़ों रोगियों को अपने दाएं-बाएं बैठा कर केवल दृष्टि डालने से ठीक कर देते थे और मुहियुद्दीन इब्ने अरबी साहिब को भी इस विद्या में विशेष श्रेणी की महारत थी। वलियों और साधकों के इतिहास और जीवनियों पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि वली लोग ऐसे कृत्यों से बचते रहे हैं, परन्तु कुछ लोग अपने वली होने को सिद्ध करने के उद्देश्य से या किसी अन्य नीयत से इन कृत्यों में लिप्त हो गए थे और अब यह बात निश्चित और यक़ीनी तौर पर सिद्ध हो चुकी है कि हज़रत मसीह इब्ने मरयम ख़ुदा की आज्ञा और आदेश से **अलयसआ** नबी की तरह इस **मस्मरेज़म** के अमल के पारंगत थे, यद्यपि अलयसआ की पूर्ण श्रेणी से कम रहे हुए थे क्योंकि अलयसआ की लाश ने भी वह चमत्कार दिखाया कि उसकी हड्डियों के लगने से एक मुर्दा जीवित हो गया, परन्तु चोरों की लाशें मसीह के शरीर के साथ लगने से कदापि जीवित न हो सकीं अर्थात् वे दो चोर जो मसीह के साथ सलीब पर चढ़ाए गए थे। बहरहाल मसीह की यह मस्मरेज़मी कार्यवाहियां उस युग की परिस्थितियों के

और जिस प्रकार प्रकृति की अद्‌भुत और अलौकिक विशेषताएं किसी पूर्वयुग तक समाप्त नहीं हो चुकीं अपितु नवीन से नवीन उत्पन्न होती जाती हैं, यही हाल इन पवित्र ग्रन्थों का है ताकि ख़ुदा तआला के कथन और कर्म में अनुकूलता सिद्ध हो तथा मैं इस से पूर्व उल्लेख कर चुका हूँ कि पवित्र क़ुर्आन के चमत्कार मुझ पर अधिकतर इल्हाम के माध्यम से प्रकट होते रहते हैं और अधिकतर ऐसे होते हैं कि व्याख्याओं (तफ़्सीरों) में उनका नाम और निशान नहीं पाया जाता। उदाहरणतया जो इस ख़ाकसार पर प्रकट हुआ है कि आदम की पैदायश के प्रारंभ से आँहज़रत

शेष हाशिया :- अनुकूल विशेष हित के अन्तर्गत थीं, परन्तु स्मरण रखना चाहिए कि यह अमल ऐसा सराहनीय नहीं जैसा कि जन साधारण इसको समझते हैं। यदि यह ख़ाकसार इस अमल को घृणित और नफ़रत के योग्य न समझता तो ख़ुदा तआला की कृपा और सामर्थ्य से दृढ़ आशा रखता था कि इन अद्‌भुत बातों के प्रदर्शन में हज़रत इब्ने मरयम से कम न रहता, परन्तु मुझे वह आध्यात्मिक ढंग पसन्द है जिस पर हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़दम मारा है तथा हज़रत मसीह ने भी इस शारीरिक अमल को यहूदियों के शारीरिक और अधम विचारों के कारण जो उनके स्वभाव में समाए हुए थे ख़ुदा की आज्ञा और आदेश से धारण किया था, वरन् वास्तव में मसीह को भी यह अमल पसन्द न था। स्पष्ट हो कि इस शारीरिक अमल का बड़ा अवगुण यह है कि जो व्यक्ति स्वयं को इस प्रक्रिया में डाले तथा शारीरिक रोगों के निवारण हेतु अपनी हार्दिक और मानसिक शक्तियों को व्यय करता रहे, वह अपने उन आध्यात्मिक प्रभावों में जो रूह (आत्मा) पर प्रभाव डालकर आध्यात्मिक रोगों का निवारण करती हैं बहुत निर्बल और निकम्मा हो जाता है तथा अन्त:करण को प्रकाशित करने और आत्माओं की शुद्धि का जो मुख्य उद्‌देश्य है उसके हाथ से बहुत कम ही पूर्ण होता है। यही कारण है कि यद्यपि हज़रत मसीह शारीरिक रोगियों को इस अमल के द्वारा अच्छा करते रहे, परन्तु पथ-प्रदर्शन और एकेश्वरवाद तथा हृदयों में धार्मिक दृढ़ताओं को स्थापित करने के सम्बन्ध में उनकी कार्यवाहियों की संख्या इतने कम स्तर की रही कि

स.अ.व. के अवतरण के युग तक जितनी अवधि गुज़री थी वह समस्त अवधि सूरह 'वलअस्र' के अक्षरों की शक्तियों की संख्या में चन्द्रमा के हिसाब से लिखित है अर्थात् चार हज़ार सात सौ चालीस, अब बताओ कि क़ुर्आन की ये बारीकियाँ जिन में पवित्र क़ुर्आन का चमत्कार प्रकट है किस भाष्य (तफ़्सीर) में लिखी हैं। ख़ुदा तआला ने इसी प्रकार मुझ पर क़ुर्आनी ज्ञानों का यह रहस्य प्रकट किया कि

اِنَّا اَنۡزَلۡنٰہُ فِیۡ لَیۡلَۃِ الۡقَدۡرِ

शेष हाशिया :- लगभग-लगभग असफल रही, परन्तु हमारे नबी स.अ.व. ने इन शारीरिक बातों की ओर ध्यान नहीं दिया तथा रूह की सम्पूर्ण शक्ति हृदयों में हिदायत (मार्ग-दर्शन) पैदा होने के लिए लगा दी। इसी कारण लोगों को पूर्ण बनाने में सर्वश्रेष्ठ रहे तथा सहस्त्रों लोगों को कमाल की श्रेणी तक पहुँचा दिया तथा प्रजा के सुधार और आन्तरिक परिवर्तनों में वह चमत्कार दिखाया कि जिसका उदाहरण संसार के आरंभ से आज तक उपलब्ध नहीं। हज़रत मसीह के **अमलुत्तिर्ब** से वे मुर्दे जीवित होते थे अर्थात् मृत्यु के निकट पहुँचा हुआ व्यक्ति जो मानो नए सिरे से जीवित हो जाते थे वे **अविलम्ब** कुछ मिनट में मर जाते थे, क्योंकि **मस्मरेज़म** का अमल रूह की गर्मी और जीवन उनमें केवल अस्थायी तौर पर पैदा हो जाता था, जिन्हें हमारे नबी स.अ.व. ने जीवित किया वे सदैव जीवित रहेंगे। यह जो मैंने **मस्मरेज़मी** प्रणाली को **अमलुत्तिर्ब** का नाम दिया जिसमें हज़रत मसीह भी किसी सीमा तक अभ्यस्थ थे यह इल्हामी नाम है तथा ख़ुदा तआला ने मुझ पर प्रकट किया कि यह अमलुत्तिर्ब है तथा इस अमल की अद्भुत बातों के बारे में यह भी इल्हाम हुआ -

هٰذَا هُوَ التِّرْبُ الَّذِیْ لَا یَعْلَمُوْنَ

अर्थात् यह वह अमलुत्तिर्ब है जिसकी मूल वास्तविकता की वर्तमान युग के

के केवल यही अर्थ नहीं कि एक मुबारक रात है जिसमें पवित्र क़ुर्आन उतारा अपितु बावजूद इन अर्थों के जो स्वयं में ठीक हैं इस आयत के अन्दर दूसरे अर्थ भी हैं जो 'फ़तह इस्लाम' पुस्तक में लिखे गए हैं। अब बताइए कि ये सत्य आध्यात्म ज्ञान किस व्याख्या में विद्यमान हैं और यह भी स्मरण रखें कि पवित्र क़ुर्आन के एक अर्थ के साथ अन्य अर्थ भी हों तो इन दोनों अर्थों में कोई टकराव उत्पन्न नहीं होता और न क़ुर्आनी निर्देशों में कोई विकार आता है अपितु एक प्रकाश के साथ दूसरा प्रकाश मिलकर क़ुर्आनी श्रेष्ठता का प्रकाश स्पष्ट तौर पर दिखाई देता है और युग

शेष हाशिया :- लोगों को कुछ खबर नहीं अन्यथा ख़ुदा तआला अपनी प्रत्येक विशेषता में अकेला है और उसका कोई भागीदार नहीं है अपनी ख़ुदाई की विशेषताओं में किसी को भागीदार नहीं बनाता। पवित्र क़ुर्आन की नितान्त स्पष्ट आयतों में इस विषय का इतना समर्थन पाया जाता है जो किसी पर गुप्त नहीं जैसा कि वह महान ख़ुदा फ़रमाता है :-

الَّذِیۡ لَہٗ مُلۡکُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَلَمۡ یَتَّخِذۡ وَلَدًا وَّلَمۡ یَکُنۡ لَّہٗ شَرِیۡکٌ فِی الۡمُلۡکِ وَخَلَقَ کُلَّ شَیۡءٍ فَقَدَّرَہٗ تَقۡدِیۡرًا ۝ وَاتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِہٖۤ اٰلِہَۃً لَّا یَخۡلُقُوۡنَ شَیۡـًٔا وَّہُمۡ یُخۡلَقُوۡنَ وَلَا یَمۡلِکُوۡنَ لِاَنۡفُسِہِمۡ ضَرًّا وَّلَا نَفۡعًا وَّلَا یَمۡلِکُوۡنَ مَوۡتًا وَّلَا حَیٰوۃً وَّلَا نُشُوۡرًا ۝

(सूरह अल-फ़ुर्क़ान, आयत 3,4)

अर्थात् ख़ुदा वह ख़ुदा है जो समस्त पृथ्वी और आकाश का अकेला स्वामी है उसका कोई भागीदार नहीं, उसका कोई बेटा नहीं और न उसके शासन में कोई उसका हिस्सेदार है तथा उसी ने प्रत्येक वस्तु को उत्पन्न किया है और फिर एक सीमा तक उसके शरीर और उसकी शक्तियों तथा उसकी आयु को सीमित कर दिया और मुश्रिकों ने उस वास्तविक ख़ुदा के अतिरिक्त और-और ऐसे-ऐसे ख़ुदा निर्धारित

असीमित परिवर्तनों के कारण स्वाभाविक तौर पर असीमित विचारों का प्रेरक है। अत: उसका नवीन रूप में प्रकट होना अथवा नवीन से नवीन ज्ञानों को प्रकटन में लाना या नए-नए अर्थों और नई-नई बातों को प्रदर्शित करना उसके लिए एक आवश्यक बात है। अब इस स्थिति में ऐसी किताब जो समस्त इल्हामी किताबों (ईश्वर की ओर से आई हुई किताबें) की मुहर होने का दावा करती है यदि समय की प्रत्येक परिस्थिति के अनुसार उसका निवारण न करे तो वह कदापि ख़ातमुल कुतुब (समस्त इल्हामी किताबों की मुहर) नहीं ठहर सकती और यदि किताब में

शेष हाशिया :- कर रखे हैं जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकते अपितु स्वयं उत्पत्त और सृष्टि है अपनी लाभ-हानि पर अधिकार नहीं रखते हैं। अब देखो ख़ुदा तआला स्पष्ट तौर पर कह रहा है कि मेरे अतिरिक्त कोई स्रष्टा नहीं अपितु एक अन्य आयत में कहता है कि समस्त विश्व सामूहिक रूप से भी एक मक्खी उत्पन्न नहीं कर सकता और स्पष्ट रूप से वर्णन करता है कि कोई व्यक्ति मृत्यु और जीवन, हानि और लाभ का मालिक नहीं हो सकता। यहाँ स्पष्ट है कि यदि किसी सृष्टि (मख़लूक़) को मृत्यु और जीवन का मालिक बना देना तथा अपनी विशेषताओं में भागीदार कर देना उसके स्वभाव में शामिल होता तो वह अपवाद स्वरूप ऐसे लोगों को अवश्य बाहर रख लेता और हमें ऐसी उच्च स्तर के एकेश्वरवाद की शिक्षा न देता। यदि हृदय में यह भ्रम आए कि फिर अल्लाह तआला ने मसीह इब्ने मरयम के बारे में उस वृत्तान्त में जहाँ पक्षी बनाने का वर्णन है تَخْلُقُ का शब्द क्यों प्रयोग किया जिसका प्रत्यक्षतया यह अर्थ है कि तू पैदा करता है ? इसका उत्तर यह है यहाँ ईसा को स्रष्टा ठहराना बतौर रूपक है जैसा कि इस दूसरी आयत में वर्णन किया है

فَتَبَارَكَ اللّٰهُ اَحۡسَنُ الۡخَالِقِيۡنَ (अल मोमिनून- 15)

निस्सन्देह वास्तविक और सच्चा स्रष्टा ख़ुदा तआला है तथा जो लोग मिट्टी या लकड़ी के खिलौने बनाते हैं वे भी स्रष्टा हैं, परन्तु झूठे स्रष्टा जिनके कार्य की वास्तविकता कुछ भी नहीं।

यदि यह कहा जाए कि क्यों चमत्कार के तौर पर उचित नहीं कि हज़रत

गुप्त तौर पर वह सब सामान मौजूद है जो युग की प्रत्येक परिस्थिति के अनुसार आवश्यक है तो ऐसी परिस्थिति में हमें स्वीकार करना पड़ेगा कि पवित्र क़ुर्आन निस्सन्देह असीम आध्यात्म ज्ञानों पर आधारित है तथा हर युग की संलग्न आवश्यकता का पूर्णतया अभिभावक है।

अब यह भी स्मरण रहे कि प्रत्येक पूर्ण मुल्हम (जिसे इल्हाम होता हो) के साथ अल्लाह तआला का नियम यही रहा है कि उस पर क़ुर्आनी गुप्त चमत्कार प्रकट होते रहे हैं अपितु प्राय: एक मुल्हम के हृदय पर पवित्र क़ुर्आन की आयत इल्हाम

शेष हाशिया :- मसीह अलैहिस्सलाम ख़ुदा की आज्ञा और इच्छा से वास्तव में पक्षी बना लेते हों और वे पक्षी उनकी चमत्कारिक फूंक से उड़ने लगते हों तो उसका उत्तर यह है कि ख़ुदा तआला अपनी आज्ञा और इच्छा से किसी मनुष्य को मृत्यु और जीवन, हानि और लाभ का मालिक नहीं बनाता। नबी लोग दुआ और विनय से चमत्कार मांगते है, चमत्कार-प्रदर्शन की ऐसी शक्ति नहीं रखते जैसा कि मनुष्य को हाथ पैर हिलाने की शक्ति होती है। अत: चमत्कार की वास्तविकता और पद से श्रेष्ठतम और ख़ुदा तआला के उन विशेष गुणों में से है जो किसी की परिस्थिति में मनुष्य को प्राप्त नहीं हो सकते। चमत्कार की वास्तविकता यह है कि ख़ुदा तआला एक स्वभाव के विपरीत विलक्षण मामला अथवा एक बात विचार और गुमान से बाहर और आशा से बढ़कर अपने एक रसूल के सम्मान और सत्य को प्रकट करने के लिए तथा उसके विरोधियों की विवशता और असमर्थता का बोध कराने के उद्देश्य से अपनी विशेष इच्छा अथवा रसूल की दुआ और याचना से स्वयं प्रकट करता है, परन्तु इस ढंग से जो उसके एकेश्वरवाद की विशेषताओं, पवित्रता और कमाल के विपरीत और विरुद्ध न हो और उसमें किसी अन्य की वकालत या कृत्य का कुछ हस्तक्षेप न हो।

अब प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति सोच सकता है कि यह स्थिति चमत्कार की स्थिति कदापि नहीं कि ख़ुदा तआला अनादि तौर पर एक मनुष्य को आज्ञा और

के तौर पर इल्क़ा होती है तथा मूल अर्थों से हट कर उस से कोई अन्य उद्देश्य होता है जैसा कि स्वर्गीय मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी अपने एक पत्र में लिखते हैं कि मुझे एक बार इल्हाम हुआ

قُلْنَا يَا نَارُ كُوْنِیْ بَرْدًا وَّسَلَامًا

परन्तु मैं उसके अर्थ न समझा, पुन: इल्हाम हुआ

قُلْنَا يَاصَبْرُ كُوْنِیْ بَرْدًا وسلامًا

शेष हाशिया :- अनुमति दे दे कि तू मिट्टी से पक्षी बना कर फूंक मारा कर वे वास्तव में प्राणी बन जाया करेंगे तथा उनमें मांस और हड्डी, रक्त और समस्त अंग जानवरों (प्राणियों) के बन जाएंगे। स्पष्ट है कि यदि ख़ुदा तआला पक्षियों के बनाने में अपनी सृजन-शक्ति का किसी को वकील बना सकता है तो समस्त सृजनात्मक बातों में किसी को पूर्ण वकालत का पद भी दे सकता है। इस स्थिति में ख़ुदा तआला की विशेषताओं में भागीदार होना वैध होगा, यद्यपि उसकी आज्ञा और आदेश से ही हो एवं ऐसे सृजन-कर्ताओं के सामने तथा تَشَابَهَ الْخلقُ عَلَيْهِمْ की विवशता से वास्तविक स्रष्टा की पहचान संदिग्ध हो जाएगी। अत: यह चमत्कार की स्थिति नहीं यह तो ख़ुदाई का भागीदार बनाना है।

कुछ बुद्धिमान लोग शिर्क से बचने के लिए यह बहाना प्रस्तुत करते हैं कि हज़रत मसीह जो पक्षी बनाते थे वे अधिक समय तक जीवित नहीं रहते थे, उनकी आयु थोड़ी होती थी, कुछ दूरी तक जाकर फिर गिर कर मर जाते थे। परन्तु यह बहाना सर्वथा व्यर्थ है और केवल इस स्थिति में स्वीकार करने योग्य है कि जब यह आस्था रखी जाए कि उन पक्षियों में वास्तविक जीवन पैदा नहीं होता था अपितु केवल प्रतिबिम्बित और अवास्तविक और मिथ्या जीवन जो मस्मरेज़म की प्रक्रिया द्वारा पैदा हो सकता है एक झूठी झलक की तरह उनमें प्रकट हो जाता था। अत: यदि इतनी ही बात है तो हम इसे पहले से ही स्वीकार कर चुके हैं। हमारे निकट संभव है कि मस्मरेज़मी प्रक्रिया के द्वारा फूंकी वायु

तब मैं समझ गया कि यहाँ अग्नि से अभिप्राय सब्र (धैर्य) है और फिर फ़रमाते हैं कि एक बार मुझे इल्हाम हुआ :-

رَبِّ اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ صِدْقٍ

और इस से अभिप्राय मूल अर्थ नहीं थे अपितु अभिप्राय यह था कि मौलवी साहिब रियासत कोहिस्तान काबुल से पंजाब देश में बर्तानवी शासन के अधीन आ जाएंगे। इसी प्रकार उन्होंने अपने इल्हामों में कई क़ुर्आनी आयतें लिखीं हैं तथा उनके

शेष हाशिया :- में वह शक्ति उत्पन्न हो जाए जो उस भाप में उत्पन्न होती है जिसके द्वारा ग़ुब्बारा ऊपर को चढ़ता है। प्रकृति के स्रष्टा ने इस सृष्टि में बहुत कुछ ऐसे गुण गुप्त रखे हुए हैं कि ख़ुदा के गुणों में भागीदार होना संभव नहीं और कौन सी कारीगरी है जो असंभव है।

और यदि यह आस्था रखी जाए कि उन पक्षियों में वास्तविक और यक़ीनी तौर पर जीवन पैदा हो जाता था तथा उनमें यथार्थ रूप में हड्डियाँ, माँस, खाल, रक्त इत्यादि अंग बनकर प्राण पड़ जाते थे तो ऐसी अवस्था में यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि उन में प्राणी होने के समस्त लक्षण उत्पन्न हो जाते होंगे तथा वे खाने के योग्य भी होते होंगे और उनकी नस्ल के भी आज तक करोड़ों पक्षी पृथ्वी पर मौजूद होंगे तथा किसी रोग अथवा शिकारी के हाथ से मरते होंगे। अत: ऐसी आस्था नि:सन्देह शिर्क है। अधिकांश लोग इस भ्रम में ग्रस्त हो जाते हैं कि यदि किसी नबी के दुआ करने से कोई मुर्दा जीवित हो जाए या कोई स्थूल वस्तु प्राणी (जानदार) बन जाए तो इसमें कौन सा शिर्क है। ऐसे लोगों को जानना चाहिए कि यहाँ दुआ की कुछ चर्चा नहीं तथा दुआ का स्वीकार करना या न करना अल्लाह तआला के अधिकार में होता है और दुआ पर जो कार्य सम्पादित होता है, वह ख़ुदा का कार्य होता है नबी का उसमें कुछ हस्तक्षेप नहीं होता और नबी चाहे दुआ करने के पश्चात् मृत्यु पा जाए, उसमें नबी के मौजूद होने या न होने की कुछ आवश्यकता नहीं होती। अत: नबी की

मूल अर्थ छोड़ कर कोई अन्य अर्थ लिए हैं। उन के कुछ पत्र इस विनीत के पास मौजूद हैं। ख़ुदा ने चाहा तो यथा समय प्रकाशित किए जाएंगे। अब मौलवी अब्दुर्रहमान साहिब कृपा करके वर्णन करें कि जब पूर्व बुज़ुर्गों के विचारों के विरुद्ध पवित्र क़ुर्आन के अर्थ करने से मनुष्य अधर्मी, हो जाता है और इसी कारण यह विनीत भी उनकी दृष्टि में अधर्मी है कि ख़ुदा तआला के इल्हाम से कुछ आयतों के गुप्त अर्थ प्रकट करता है, तो फिर स्वर्गीय मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी के बारे में जो उनके पेशवा हैं क्या फ़त्वा है जिन्हें ऐसे ऐसे इल्हाम भी हो गए कि जो

शेष हाशिया :- ओर से केवल दुआ होती है जो कभी स्वीकार और कभी अस्वीकार भी हो जाती है, परन्तु यहाँ वह स्थिति नहीं। चारों इंजीलों के देखने से स्पष्ट तौर पर प्रकट है कि मसीह जो-जो कार्य अपनी जाति को दिखाता था वे दुआ के माध्यम से कदापि नहीं थे तथा पवित्र क़ुर्आन में भी किसी स्थान पर यह वर्णन नहीं कि मसीह रोगियों को स्वस्थ करने अथवा पक्षियों के बनाने के समय दुआ करता था अपितु वह अपनी रूह द्वारा जिसे पवित्र रूह के वरदान से बरकत प्रदान की गई थी। अधिकारिक तौर पर ऐस-ऐसे कार्यों का प्रदर्शन करता था। अत: जिस व्यक्ति ने कभी अपने जीवन में ध्यानपूर्वक इन्जील का अध्ययन किया होगा वह हमारे इस वर्णन की पूर्ण विश्वास के साथ पुष्टि करेगा तथा पवित्र क़ुर्आन की आयतें भी उच्च स्वर में यही पुकार रही हैं कि मसीह के ऐसे चमत्कारिक कार्यों में उसे शक्ति प्रदान की गई थी, और ख़ुदा तआला ने स्पष्ट तौर पर फ़रमा दिया है कि वह एक स्वाभाविक शक्ति थी जो प्रत्येक मानव स्वभाव में प्रदत्त है, मसीह की इसमें कुछ विशेषता नहीं। अत: इस बात का अनुभव इसी युग में हो रहा है। मसीह के चमत्कार तो उस तालाब के कारण बेरौनक और महत्वहीन थे जो मसीह के जन्म से भी पूर्व चमत्कारों का द्योतक था जिसमें हर प्रकार के रोगी तथा समस्त, कोढ़ी, लक़्वाग्रस्त और फुलबहरी ग्रस्त इत्यादि एक ही डुबकी लगाकर अच्छे हो जाते थे, परन्तु बाद के युगों में लोगों ने जब इस प्रकार के अद्भुत और स्वभाव से हटकर चमत्कारों

आयतें विशेष पैग़म्बरों (नबियों) के लिए थीं वे उम्मती लोगों के लिए ठहरा दीं। अत: दो बार कुछ वे आयतें जो पवित्र क़ुर्आन में बुज़ुर्ग सहाबा के पक्ष में थीं अपने पत्र में लिख कर इस ख़ाकसार की ओर भेज दीं कि आप के बारे में मुझे यह इल्हाम हुआ है उन्हीं में से ये आयतें भी हैं।

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا ۔ اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِيْنَ

तथा यह ख़ाकसार कि जो मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी (स्वर्गीय) से प्रेम और सद्भावना रखता है तो वास्तव में उसका यही कारण है कि उन्हें ख़ुदा तआला की ओर से इल्हाम हुआ कि यह ख़ाकसार ख़ुदा की ओर से मामूर होने वाला है तथा उन्होंने कई पत्र लिखे तथा अपने मुबारक इल्हाम प्रकट किए तथा कुछ लोगों के पास इस बारे में वर्णन भी किए और कश्फ़ी अवस्था में भी अपनी यह मनोकामना प्रकट की।

शेष हाशिया :-

का प्रदर्शन किया तो उस समय तो कोई तालाब भी मौजूद नहीं था।

अत: यह धारणा सर्वथा ग़लत, व्यर्थ और शिर्कपूर्ण विचार है कि मसीह मिट्टी के पक्षी बना कर और उनमें फूंक मार कर उन्हें वास्तविक प्राणी बना देता था, नहीं अपितु मिट्टी का अमल था जो रूह की शक्ति से उन्नतिशील हो गया था। यह भी संभव है कि मसीह ऐसे कार्य के लिए उस तालाब की मिट्टी लाता था जिसमें रुहुलक़ुदुस का प्रभाव रखा गया था। बहरहाल यह चमत्कार एक खेल का प्रकार था और वह मिट्टी वास्तव में एक मिट्टी ही रहती थी, जैसे सामिरी की गोशाला। विचार करो। अत: यह एक महान रहस्य है जिसका ज्ञान केवल भाग्यशाली को ही दिया जाता है। इसी से।

उन प्रश्नों के उत्तर जिन्हें लोग भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रस्तुत करते हैं।

प्रश्न - मसीह इब्ने मरयम की मृत्यु पवित्र क़ुर्आन से कहाँ सिद्ध होती है अपितु ये दोनों वाक्य आयतों के अर्थ अर्थात् رَافِعُكَ اِلَیَّ और بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ सिद्ध कर रहे हैं कि मसीह पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर उठाया गया। इसी प्रकार यह आयत कि-

وَ مَا قَتَلُوْهُ وَ مَا صَلَبُوْهُ وَ لٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ*

इसी को सिद्ध कर रही हैं कि मसीह न सूली दिया गया न क़त्ल किया गया।

उत्तर - अत: स्पष्ट हो कि ख़ुदा तआला की ओर उठाए जाने के यही अर्थ हैं कि मृत्यु हो जाना। ख़ुदा तआला का यह कहना कि اِرْجِعِیْ اِلٰی رَبِّكِ(अलफ़ज्र - 29)और यह कहना कि اِنِّیْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَیَّ(आले इमरान-56)एक ही अर्थ रखता है। इसके अतिरिक्त जिस स्पष्ट और विस्तार के साथ पवित्र क़ुर्आन में मसीह की मृत्यु हो जाने का वर्णन है इससे अधिक की कल्पना नहीं, क्योंकि ख़ुदा तआला ने सामान्य और विशेष दोनों प्रकार से मसीह की मृत्यु हो जाना वर्णन किया है। सामान्य तौर पर जैसा कि वह फ़रमाता है :-

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلِ اَفَاِنْ مَّاتَ
اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰی اَعْقَابِكُمْ (आले इमरान - 145)

अर्थात मुहम्मद (स.अ.व.) केवल एक रसूल है और उस से पूर्व प्रत्येक रसूल जो आया वह गुज़र गया और मृत्यु को प्राप्त हो गया, अब क्या तुम इस रसूल के मरने या क़त्ल हो जाने के कारण इस्लाम धर्म त्याग दोगे ? अब देखो कि यह आयत जो सबूत के तौर प्रस्तुत की गई है स्पष्टतया सिद्ध करती है कि प्रत्येक रसूल को मृत्यु आती रही है चाहे वह मृत्यु स्वाभाविक तौर पर हो या क़त्ल इत्यादि से। पूर्व

* अन्निसा आयत - 158

नबियों में से कोई ऐसा नबी नहीं जो मरने से सुरक्षित रह गया हो। अत: यहां पाठकगण नितान्त स्पष्ट तौर पर समझ सकते हैं कि यदि हज़रत मसीह जो पूर्व रसूलों में से एक रसूल हैं अब तक मरे नहीं अपितु जीवित आकाश पर उठाए गए तो इस स्थिति में इस आयत का विषय जो सामान्य तौर पर प्रत्येक पूर्व नबी के मृत्यु पा जाने को सिद्ध कर रहा है उचित नहीं ठहर सकता अपितु यह सबूत देना ही व्यर्थ और प्रतिप्रश्न योग्य होगा, फिर दूसरी आयत जो सामान्य सिद्ध करने की प्रणाली से मसीह इब्ने मरयम के मृत्यु पा जाने को सिद्ध करती है यह आयत है :-

وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَأْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ۝

(अल अंबिया - 9)

अर्थात् हमने किसी नबी के शरीर को ऐसा नहीं बनाया कि जो खाने का मुहताज न हो और वे सब मर गए, उनमें से कोई शेष नहीं। इसी प्रकार सामान्य तौर पर यह भी फ़रमाया :-

وَ مَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ؕ اَفَاۡئِنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ۝٣٥
كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ

(अल अंबिया - 35, 36)

फिर तीसरी आयत जो सामान्य सिद्ध करने की पद्धति से मसीह की मृत्यु हो जाने को सिद्ध करती है, यह आयत है :-

وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا
يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ

(सूरह अल हज्ज - 6)

अर्थात् हे मनुष्यो तुम दो समूह हो। एक वह जो वृद्धावस्था से पूर्व मृत्यु पा जाते हैं अर्थात् वयोवृद्ध हो कर नहीं मरते अपितु पहले ही मर जाते हैं। दूसरा - वह समूह जो इतने बूढ़े हो जाते हैं कि जीवन की नितान्त जीर्ण अवस्था जो घृणा-योग्य होती

है उन में पैदा हो जाती है यहाँ तक कि विद्वान और बुद्धिमान होने के पश्चात् बिलकुल अबोध बालक के समान बन जाते हैं और जीवन भर का पढ़ा हुआ अचानक सब भूल जाता है।

अब चूँकि ख़ुदा तआला ने जीवन-क्रम के बारे में मानव जीवन का विभाजन दो समूहों में सीमित कर दिया, तो बहरहाल हज़रत मसीह इब्ने मरयम ख़ुदा तआला के सम्पूर्ण पार्थिव बन्दों की तरह इस विभाजन से बाहर नहीं रह सकते। यह दार्शनिकों का प्रकृति का नियम नहीं जिसे कोई खंडित कर देगा, यह तो ख़ुदा का नियम है जिसे स्वयं ख़ुदा तआला ने स्पष्ट तौर पर वर्णन कर दिया है।

अत: ख़ुदा के इस विभाजन के कारण अनिवार्य है कि या तो हज़रत मसीह

منکم من یتوفی

में सम्मिलित हों और मृत्यु पाकर श्रेष्ठ श्रेणी के स्वर्ग में उस सिंहासन पर बैठे हों जिसके बारे में उन्होंने स्वयं ही इंजील में वर्णन किया है और या इतनी अवधि तक मृत्यु को प्राप्त नहीं हुए तो युग के प्रभाव से उसे बहुत ही नीच आयु को पहुँच गए हों जिसमें ज्ञानेन्द्रियों के बेकार होने के कारण उनका होना न होना समान है।

जो स्पष्ट आयतें विशेष तौर पर मसीह की मृत्यु को सिद्ध कर रही हैं कुछ आवश्यक नहीं कि हम उनका बारम्बार वर्णन करें। यह बात स्पष्ट है कि यदि मसीह उस ख़ुदा की ओर उठाई जाने वाली जमाअत से पृथक है जो संसार से सदैव के लिए कूच करके ख़ुदा तआला की ओर उठाई गई है तो उनमें जो परलोक में पहुँच गए कदापि सम्मिलित नहीं हो सकता अपितु मृत्योपरान्त फिर सम्मिलित होगा और यदि यह बात हो कि उनमें जा मिला और इस आयत के अनुसार

فَادۡخُلِیۡ فِیۡ عِبٰدِیۡ (अलफज्र - 30)

उन मृत्यु-प्राप्त बन्दों में सम्मिलित हो गया तो फिर उन्हीं में से माना जाएगा तथा मे'राज की हदीस से स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि मसीह उन मृत्यु प्राप्त नबियों में जा मिला और यह्या नबी के निकट उसे स्थान मिला। इस स्थिति में स्पष्ट

है कि इस आयत

اِنِّیْ مُتَوَفِّیْکَ وَرَافِعُکَ اِلَیَّ (आले इमरान - 56)

के अर्थ ये होंगे कि :-

اِنِّیْ مُتَوَفِّیْکَ وَرَافِعُکَ اِلٰی عِبَادِیَ الْمُتَوَفِّیْنَ الْمُقَرَّبِیْنَ
وَمُلْحِقُکَ بِالصَّالِحِیْنَ

अत: बुद्धिमान के लिए जो द्वेष भावना न रखता हो इतना ही पर्याप्त है कि यदि मसीह जीवित ही उठाया गया तो फिर मुर्दों में क्यों जा घुसा। हाँ इतनी चर्चा करना और भी आवश्यक है कि जैसे कुछ अज्ञान लोग यह विचार करते हैं कि वे आयतें द्विअर्थीय हैं, यह विचार सर्वथा ग़लत है। मोमिन का यह कार्य नहीं कि राय के साथ व्याख्या करे अपितु पवित्र क़ुर्आन के कुछ स्थान कुछ अन्य स्थानों के लिए स्वयं भाष्यकार तथा व्याख्याकार हैं। यदि बात सत्य नहीं कि मसीह के पक्ष में जो ये आयतें हैं कि اِنِّیْ مُتَوَفِّیْکَ और فَلَمَّا تَوَفَّیْتَنِیْ ये वास्तव में मसीह की मृत्यु को ही सिद्ध करती हैं अपितु इनके कोई अन्य अर्थ हैं तो इस विवाद का निर्णय क़ुर्आन मजीद से ही कराना चाहिए और यदि पवित्र क़ुर्आन समान रूप से कभी इस शब्द को मृत्यु के लिए प्रयोग करता है और कभी उन अर्थों के लिए जो मृत्यु से कुछ सम्बन्ध नहीं रखते। अत: विवादित स्थान पर समान रूप से संभावना रहेगी और यदि एक विशेष अर्थ अधिकतर पवित्र क़ुर्आन में प्रयोग होने वाले अर्थों में से हैं तो उन्हीं अर्थों को इस बहस में प्रमुखता होगी और यदि पवित्र क़ुर्आन प्रारंभ से अन्त तक अपने कुल स्थानों में एक ही अर्थ में प्रयोग करता है तो विवादित स्थान में भी यही निश्चित निर्णय होगा कि सम्पूर्ण क़ुर्आन में توفّی के जो अर्थ लिए गए हैं यहाँ भी वही अभिप्राय हैं, क्योंकि यह बिल्कुल असंभव है और कल्पना से परे हैं कि ख़ुदा तआला अपने सरस और सुबोध कलाम में ऐसे विवाद के स्थान में जो उसके ज्ञान में एक महत्वपूर्ण स्थान है ऐसे थोड़े और अपरिचित शब्द प्रयोग करे जो उसके सम्पूर्ण कलाम में कदापि प्रयोग नहीं हुए। यदि वह ऐसा करे तो मानो वह प्रजा को

स्वयं सन्देहों के भंवर में डालने का इच्छुक है। स्पष्ट है कि उसने कदापि ऐसा न किया होगा। यह क्योंकर संभव है कि ख़ुदा तआला अपने पवित्र क़ुर्आन के तेईस स्थानों पर तो एक शब्द के एक ही अर्थ अभिप्राय लेता है और फिर दो स्थानों में जो वर्णन की स्पष्टता के अत्यधिक मुहताज थे कुछ और का और अभिप्राय लेकर स्वयं ही लोगों को पथ-भ्रष्टता में डाल दे।

अत: हे पाठको ! आप पर स्पष्ट हो कि इस ख़ाकसार ने प्रारंभ से अन्त तक समस्त वे शब्द जिनमें توفّی (तवफ़्फ़ा) का शब्द विभिन्न विभक्तियों में आ गया है, पवित्र क़ुर्आन में यदि ध्यानपूर्वक देखें तो स्पष्ट तौर पर प्रकट हो गया कि पवित्र क़ुर्आन में विवादित स्थान के अतिरिक्त यह توفّی शब्द का उल्लेख तेईस स्थान पर है और प्रत्येक स्थान पर मौत और रूह निकालने के अर्थों में प्रयोग किया गया है तथा एक भी ऐसा स्थान नहीं जिसमें توفّی (तवफ़्फ़ी) का शब्द किन्हीं अन्य अर्थों में प्रयोग किया गया हो और वे ये हैं :-

नाम सूरह	संख्या (सरह/आयत)	पवित्र क़ुर्आन की आयत
अन्निसा	4/16	حَتّٰى يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ
आले इमरान	3/194	وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ
सज्दह	32/12	قُلْ يَتَوَفّٰكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِىْ وُكِّلَ بِكُمْ
अन्निसा	4/98	اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِىْٓ اَنْفُسِهِمْ
मोमिन	40/78	فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ
अन्नहल	16/29	الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِىْٓ اَنْفُسِهِمْ
अन्नहल	16/33	تَتَوَفّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ

नाम सूरह	संख्या (सरह/ आयत)	पवित्र क़ुर्आन की आयत
बक़रह	2/235	يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ
बक़रह	2/241	يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ
अन्आम	6/62	تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا
आ'राफ़	7/38	رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ
आ'राफ़	7/127	تَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ
अल अन्फ़ाल	8/51	يَتَوَفَّى
सूरह मुहम्मद (स.अ.व.)	47/28	فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ
यूनुस	10/47	وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ
यूसुफ़	12/102	تَوَفَّنِىْ مُسْلِمًا وَّ اَلْحِقْنِىْ بِالصّٰلِحِيْنَ
रअद	13/41	اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ
मोमिन	40/68	وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى
नहल	16/71	ثُمَّ يَتَوَفّٰكُمْ
हज	22/6	وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى
ज़ुमर	39/43	اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِىْ لَمْ تَمُتْ فِىْ مَنَامِهَا فَيُمْسِكُ الَّتِىْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰٓى اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى۔

नाम सूरह	संख्या (सरह/ आयत)	पवित्र क़ुर्आन की आयत
अन्आम	6/59	هُوَ الَّذِیْ یَتَوَفّٰکُمْ بِالَّیْلِ وَ یَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ یَبْعَثُکُمْ فِیْهِ لِیُقْضٰی اَجَلٌ مُّسَمًّی

*

अब स्पष्ट है कि इन समस्त स्थानों पर पवित्र क़ुर्आन में تَوَفِّی के शब्द से मृत्यु और रूह (आत्मा) का निकाला जाना ही अभिप्राय है और अन्तिम वर्णित आयतें यद्यपि प्रत्यक्षत: नींद से संबंधित हैं, परन्तु वास्तव में इन दोनों आयतों में भी नींद अभिप्राय नहीं ली गई अपितु उस स्थान पर भी मुख्य उद्देश्य और लक्ष्य मृत्यु है और यह प्रकट करना निहित है कि नींद भी एक प्रकार की मृत्यु ही है और जिस प्रकार मृत्यु में रूह निकाली जाती है नींद में भी रूह (आत्मा) निकाली जाती है। अत: इन दोनों स्थानों में नींद पर تَوَفِّی के शब्द का चरितार्थ करना एक रूपक है जो नींद के अनुकूलता के कारण प्रयोग किया गया है ताकि प्रत्येक व्यक्ति समझ ले कि यहाँ تَوَفِّی से अभिप्रय वास्तविक मृत्यु नहीं है अपितु अवास्तविक (कल्पनात्मक) मृत्यु अभिप्राय है जो नींद है। यह बात थोड़ा सा भी ज्ञान रखने वाले को भी ज्ञात होगी कि जब कोई शब्द मान्य सत्य के तौर पर प्रयोग किया जाता है अर्थात् ऐसे अर्थों पर जिनके लिए वह सामान्य रूप से बनाया गया अथवा सामान्यतया प्रचलित हो गया हो तो वहां वक्ता के लिए कुछ आवश्यक नहीं होता कि उसकी पहचान के लिए कोई अनुकूलता स्थापित करे क्योंकि वह उन अर्थों में प्रसिद्ध और प्रकाशित तथा शीघ्र मस्तिष्क में आने वाला है, परन्तु जब एक वक्ता किसी शब्द के अर्थ मान्य वास्तविकता से हटकर किसी कल्पनात्मक अर्थों की ओर ले जाता है तो उस स्थान पर स्पष्ट या सांकेतिक तौर पर अथवा किसी अन्य रूप की शैली में उसे कोई

* इस सूची में सूरह यूनुस की आयत 105 (اَلَّذِیْ یَتَوَفّٰکُمْ) लिखने से रह गई है। (प्रकाशक)

सन्दर्भ बनाना पड़ता है ताकि उसका समझना संदिग्ध न हो तथा इस बात को मालूम करने के लिए कि वक्ता ने एक शब्द बतौर मान्य यथार्थ प्रयोग किया है अथवा कल्पनात्मक तौर पर तथा दुर्लभ रूपक का भी स्पष्ट लक्षण होता है कि वह मान्य यथार्थ को भी एक शीघ्र समझ आने वाला प्रकाशित और प्रसिद्ध शब्द समझ कर अनुकूलता की आवश्यकता के बिना यों ही संक्षिप्त रूप में वर्णन कर देता है, परन्तु कल्पना या दुर्लभ रूपक के समय ऐसी संक्षिप्त रूप पसन्द नहीं करता अपितु उसका कर्तव्य होता है कि किसी ऐसे लक्षण से जिसे एक मनीषी समझ सके अपने इस उद्देश्य को स्पष्ट कर जाए कि यह शब्द अपने अर्थों पर प्रयोग नहीं हुआ।

अब चूँकि यह वास्तविकता और अवास्तविकता का अन्तर स्पष्ट तौर पर वर्णन हो चुका है तो जिस व्यक्ति ने पवित्र क़ुर्आन पर प्रारंभ से अन्त तक दृष्टि डाली होगी और जहाँ-जहाँ तवफ़्फ़ी تَوَفِّیْ का शब्द मौजूद है, ध्यानपूर्वक देखा होगा वह ईमानदारी से हमारे बयान के समर्थन में साक्ष्य दे सकता है। अत: बतौर नमूना देखना चाहिए कि ये आयतें :-

(١) اِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِیْ نَعِدُهُمْ اَو نَتَوَفَّيَنَّكَ (यूनुस-47)

(٢) تَوَفَّنِیْ مُسْلِمًا (यूसुफ़-102)

(٣) وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى (अल हज्ज-6)

(٤) تَوَفّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ (अन्निसा-98)

(٥) يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ (अलबक़रह-241)

(٦) تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا (अल अन्आम-62)

(٧) رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ (अल आराफ़-38)

(٨) تَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ (अल आराफ़-127)

(٩) وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ (आले इमरान-194)

(अन्नहल-71) ثُمَّ يَتَوَفّٰكُمْ (١٠)

कैसी व्यापक तथा स्पष्ट तौर पर मौत के अर्थों में प्रयोग की गई हैं, परन्तु क्या पवित्र क़ुर्आन में कोई ऐसी आयत भी है कि इन आयतों की तरह अकेला توفى का शब्द लिखने से उस से कोई और अर्थ अभिप्राय लिए गए हों, मौत अभिप्राय न ली गई हो। निस्सन्देह निश्चित और यक़ीनी तौर पर प्रारंभ से अन्त तक क़ुर्आनी मुहावरे से यही सिद्ध है कि प्रत्येक स्थान पर वास्तव में توفى के शब्द से मौत ही अभिप्राय है तो फिर विवादित दो आयतों के बारे में जो فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ और اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ हैं, अपने दिल से कोई अर्थ क़ुर्आन के सामान्य मुहावरे के विपरीत गढ़ना यदि नास्तिकता और अक्षरान्तरण नहीं तो और क्या है ?

यहाँ यह रहस्य वर्णन करने योग्य है कि पवित्र क़ुर्आन में प्रत्येक स्थान पर मौत के स्थान पर تَوَفِّىْ का शब्द क्यों प्रयोग किया है, اِمَاتت का शब्द क्यों प्रयोग नहीं किया? इसमें भेद यह है कि मौत का शब्द ऐसी वस्तुओं के विनाश के बारे में भी बोला जाता है जिन पर फ़ना व्याप्त होने के पश्चात् उन की कोई आत्मा (रूह) शेष नहीं रहती। इसी कारण जब वनस्पतियां और खनिज अपने रूप और आकृति को त्याग कर कोई अन्य रूप धारण कर लें तो उन पर भी मौत का शब्द बोला जाता है। जैसे कहते हैं कि यह लोहा मर गया और भस्म हो गया और यह चांदी का टुकड़ा मर गया और भस्म हो गया, इसी प्रकार समस्त प्राणी और कीड़े-मकोड़े जिनकी रूह मृत्योपरान्त शेष नहीं रहती तथा प्रतिफल और दण्ड के पात्र नहीं होते, उनके मरने पर भी تَوَفِّىْ का शब्द नहीं बोलते अपितु केवल यही कहते हैं कि अमुक जानवर मर गया या अमुक कीड़ा मर गया। अत: ख़ुदा तआला को अपने प्रिय कलाम में यह स्वीकार है कि स्पष्ट तौर पर यह प्रकट करे कि मनुष्य एक ऐसा प्राणी है कि जिसकी मृत्यु के पश्चात् उसकी पूर्ण रूप से मृत्यु नहीं होती अपितु उसकी रूह शेष रह जाती है जिसे रूह निकालने वाला अपने अधिकार में ले लेता है। इसी कारण मृत्यु के शब्द को त्याग कर उसके स्थान पर تَوَفِّىْ का शब्द प्रयोग किया है ताकि इस बात को सिद्ध करे कि हमने इस पर मौत लाकर उसे पूर्णरूप से

मौत नहीं दी अपितु केवल शरीर को मौत दी है और आत्मा (रूह) को अपने अधिकार में कर लिया है तथा इस शब्द को ग्रहण करने में नास्तिकों का खण्डन भी अभीष्ट है जो शरीर की मृत्यु के पश्चात् रूह की अनश्वरता के योग्य नहीं है। ज्ञात होना चाहिए कि पवित्र क़ुर्आन में प्रारंभ से लेकर अन्त तक تَوَفِّ के अर्थ रूह निकालने और शरीर को बेकार छोड़ देने के लिए गए हैं और मनुष्य की मौत की वास्तविकता भी केवल इतनी ही है कि रूह को ख़ुदा तआला निकाल लेता है और शरीर को बेकार छोड़ देता है। अत: नींद की अवस्था भी एक सीमा तक इस वास्तविकता में भागीदारी रखती है। इसी कारण उपरोक्त दो आयतों में नींद को ही रूपक के तौर पर تَوَفِّ की अवस्था से अभिप्राय लिया है, क्योंकि कुछ सन्देह नहीं कि नींद में भी एक विशेष सीमा तक आत्मा निकाली जाती है तथा शरीर को बेकार और निलंबित किया जाता है परन्तु تَوَفِّ की पूर्ण स्थिति जिसमें पूर्ण तौर पर आत्मा निकाली जाए और शरीर पूर्णतया बेकार कर दिया जाए वह व्यक्ति की मृत्यु है इसी कारण تَوَفِّ (तवफ़्फ़ा) का शब्द सामान्य तौर पर पवित्र क़ुर्आन में व्यक्ति की मृत्यु के बारे में ही प्रयोग किया गया है और प्रारंभ से अन्त तक पवित्र क़ुर्आन इसी प्रयोग से भरा पड़ा है तथा नींद के स्थान पर तवफ़्फ़ा का शब्द पवित्र क़ुर्आन में दो स्थान पर आया है और वह भी अनुकूलता स्थापित करने के साथ और उन आयतों में स्पष्ट तौर पर वर्णन कर दिया गया है कि उस स्थान पर भी तवफ़्फ़ा के शब्द से अभिप्राय नींद नहीं है अपितु मृत्यु ही अभिप्राय है तथा इस बात को प्रकट करना अभीष्ट है कि नींद भी मृत्यु ही का एक प्रकार है जिसमें आत्मा (रूह) निकाली जाती है और शरीर निलंबित किया जाता है, अन्तर केवल इतना है कि नींद एक अपूर्ण मृत्यु है और वास्तविक मृत्यु एक पूर्ण मृत्यु है।

यह बात स्मरण रखने के योग्य है कि **तवफ़्फ़ा** का शब्द पवित्र क़ुर्आन में प्रयोग किया गया है चाहे वह अपने यथार्थ अर्थों में प्रयोग किया गया है अर्थात् मृत्यु पर अथवा अवास्तविक अर्थों पर अर्थात् नींद पर प्रत्येक स्थान पर, उस शब्द से अभिप्राय यही है कि रूह निकाली जाए तथा शरीर निलंबित और बेकार कर दिया

जाए। अब जबकि उपरोक्त अर्थ एक मान्य नियम बन चुका जिस पर पवित्र क़ुर्आन की समस्त आयतें जिनमें **तवफ़्फ़ा** का शब्द विद्यमान है साक्ष्य दे रही हैं तो इस स्थिति में यदि असंभावित रूप से एक क्षण के लिए यह मिथ्या विचार भी स्वीकार कर लें कि اِنِّیۡ مُتَوَفِّیۡكَ का अर्थ اِنِّی مُنِیۡمُكَ है, अर्थात् यह कि मैं तुझे सुलाने वाला हूँ तो इस से भी शरीर का उठाया जाना ग़लत सिद्ध होता है, क्योंकि यहाँ اِنِّیۡ مُتَوَفِّیۡكَ के अर्थ उपरोक्त नियमानुसार यही करेंगे कि मैं तुझ पर निद्रावस्था का प्रभुत्व करके तेरी रूह (आत्मा) निकालने वाला हूँ। अब स्पष्ट है कि इन्नी मुतवफ़्फ़ीका के पश्चात जो राफ़िओका इलय्या फ़रमाया है, अर्थात् मैं तेरी रूह को निकाल कर फिर अपनी ओर उठाऊँगा यह राफ़िओका رَافِعُكَ का शब्द इन्नी मुतवफ़्फ़ीका اِنِّیۡ مُتَوَفِّیۡكَ के शब्द से सम्बन्ध रखता है जिससे स्पष्ट तौर पर ये अर्थ निकलते हैं कि ख़ुदा तआला ने रूह को निकाला और रूह को ही अपनी ओर उठाया, क्योंकि जो वस्तु निकाली गई वही उठाई जाएगी, शरीर के निकालने का तो कहीं वर्णन नहीं। अत: दूसरी आयतों में जो नींद के बारे में है, ख़ुदा तआला नितान्त स्पष्ट तौर पर फ़रमा चुका है कि नींद में भी मृत्यु की भाँति रूह (आत्मा) ही निकाली जाती है, शरीर नहीं निकाला जाता। अब प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि जो निकाला जाता है उठाया भी वही जाएगा यह नहीं कि निकाली जाए रूह और फिर उठाया जाए शरीर। ऐसे अर्थ तो पवित्र क़ुर्आन की समस्त आयतों और ख़ुदाई इच्छा से सर्वथा विपरीत हैं। पवित्र क़ुर्आन नींद के स्थानों में भी तवफ़्फ़ा के शब्द को रूपक के तौर पर प्रयोग करता है वहां भी स्पष्ट तौर पर फ़रमाया है कि हम रूह को निकाल लेते हैं और शरीर को बेकार छोड़ देते हैं तथा मृत्यु और नींद में अन्तर केवल इतना है कि मृत्यु की अवस्था में हम रूह को निकालकर फिर छोड़ते नहीं अपितु अपने पास रखते हैं और नींद की अवस्था में एक अवधि तक रूह को निकालकर फिर उस रूह को छोड़ देते हैं और फिर वह शरीर से सम्बद्ध हो जाती है।

अब विचार करना चाहिए कि क्या पवित्र क़ुर्आन का यह वर्णन इस बात को

समझने के लिए पर्याप्त नहीं कि ख़ुदा तआला को शरीर के निकालने और उठाने से मृत्यु और नींद दोनों अवस्थाओं में कुछ सम्बन्ध नहीं अपितु जैसा कि उस ने स्वयं फ़रमाया है - यह शरीर मिट्टी से पैदा किया गया है और अन्त में मिट्टी में ही विलीन होता है। ख़ुदा तआला संसार के प्रारंभ से केवल रूहों को निकालता आया है तथा रूहों को ही अपनी ओर उठाता है। जब यही बात निश्चित और यही उचित तथा सत्य है तो इस अवस्था में हम यदि मान भी लें कि اِنِّیْ مُتَوَفِّیْکَ के यही अर्थ हैं कि मैं तेरी रूह को उसी प्रकार से निकालने वाला हूँ जिस प्रकार सोने वाले की रूह निकाली जाती है तो फिर भी शरीर को इस निकालने से कुछ सम्बन्ध नहीं होगा तथा इस प्रकार की व्याख्या से यदि कुछ सिद्ध होगा तो यह होगा कि हज़रत मसीह की रूह स्वप्न के तौर पर निकाली गई और शरीर यथावत पृथ्वी पर पड़ा रहा और फिर किसी समय रूह शरीर में प्रवेश कर गई। ऐसे अर्थ सर्वथा मिथ्या और दोनों सदस्यों के उद्देश्य के विपरीत हैं, क्योंकि केवल कुछ समय के लिए हज़रत मसीह का सो जाना फिर जाग उठना हमारी इस बहस से कोई सम्बन्ध नहीं रखता तथा पवित्र क़ुर्आन की उपरोक्त आयत स्पष्ट तौर पर उच्च स्वर में पुकार रही है कि हज़रत मसीह की रूह जो निकाली गई तो फिर सोने वाले की रूह की तरह शरीर की ओर नहीं छोड़ी गई अपितु ख़ुदा तआला ने उसे अपनी ओर उठा लिया जैसा कि स्पष्ट तौर पर सिद्ध करने वाले शब्दों اِنِّیْ مُتَوَفِّیْکَ وَرَافِعُکَ اِلَیَّ से स्पष्ट है। न्यायपूर्वक देखना चाहिए कि जिस प्रकार हज़रत मसीह के पक्ष में अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुर्आन में اِنِّیْ مُتَوَفِّیْکَ फ़रमाया है उसी प्रकार हमारे सरदार एवं पेशवा नबी स.अ.व. के पक्ष में फ़रमाया है -

وَاِمَّا نُرِیَنَّکَ بَعۡضَ الَّذِیۡ نَعِدُھُمۡ اَوۡ نَتَوَفَّیَنَّکَ (सूरह यूनुस - 47)

अर्थात् दोनों स्थान पर मसीह के पक्ष में तथा हमारे सरदार एवं पेशवा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पक्ष में تَوَفِّی का शब्द मौजूद है। अत: कितनी अन्यायपूर्ण बात है कि हमारे सरदार एवं पेशवा के बारे में जो تَوَفِّی का शब्द आया है तो वहाँ तो हम मौत के ही अर्थ करें तथा उसी शब्द को हज़रत ईसा के बारे में अपने यथार्थ

और प्रचलित और परिचित अर्थों से फेर कर और उन सर्वसम्मत अर्थों से जो प्रारंभ से अन्त तक पवित्र क़ुर्आन से प्रकट हो रहे हैं से हट कर स्वयं ही कुछ और के और अर्थ बना लें। यद्यपि कि यह अधर्म और अक्षरांतरण नहीं तो फिर अधर्म और अक्षरांतरण किसे कहते हैं !!! जितने विस्तृत भाष्य (तफ़्सीरे) संसार में उपलब्ध हैं जैसे कश्शाफ़, मआलिम, तफ़्सीर राज़ी 'इब्ने कसीर', 'मदारिक' और 'फ़त्हुल बयान' में يَاعِيْسٰى اِنِّیْ مُتَوَفِّيْكَ आयत की व्याख्या के अन्तर्गत यही लिखा है कि -

اِنِّیْ مُمِيْتُكَ حتف الفك

अर्थात् हे ईसा मैं तुझे स्वाभाविक मौत से मारने वाला हूँ इसके बिना कि तू सूली दी जा चुकी या वध की जा चुकी अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हो... इस अध्याय के अन्त तक। कुछ भाष्यकारों ने अपनी अदूरदर्शिता से इस आयत के अन्य कारणों पर भी व्याख्याएं की हैं, परन्तु अपने ही निराधार विचार से न कि किसी आयत या सही हदीस के अनुसार। यदि वे जीवित होते तो उन से पूछा जाता कि तुम ने सत्य के साथ असत्य को क्यों और किस सबूत से मिलाया ? बहरहाल जब वे इस बात का इक़रार कर गए अन्य विभिन्न कथन में से, यह भी एक कथन है कि हज़रत मसीह अवश्य मृत्यु को प्राप्त हो गए थे और उन की रूह उठाई गई थी तो उनके अन्य दोष क्षमायोग्य हैं। उनमें से कुछ जैसा कि कश्शाफ़ के लेखक स्वयं अपनी क़लम से अन्य कथनों को क़ील (व्यर्थ बातें) के शब्द से कमज़ोर बता गए हैं।

अब जबकि تَوَفِّى के शब्द की भली भांति जांच-पड़ताल हो चुकी और सिद्ध हो गया कि सम्पूर्ण पवित्र क़ुर्आन में प्रारंभ से अन्त तक यह शब्द केवल रूह को निकालने के लिए प्रयोग किया गया है। अत: अब यह देखना शेष रहा कि इसके पश्चात् رفع का शब्द है यह किन अर्थों में पवित्र क़ुर्आन में प्रयोग हुआ है।

जानना चाहिए कि رفع का शब्द पवित्र क़ुर्आन में जहां कहीं नबियों, सदात्माओं और वलियों के बारे में प्रयोग किया गया है सामान्यतया उस से अभिप्राय यही है कि उन श्रेष्ठ लोगों को ख़ुदा के समक्ष अपने आध्यात्मिक स्थान तथा

व्यक्तिगत केन्द्र की दृष्टि से आकाशों में कोई श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है उसे प्रकट कर दिया जाए और उन्हें शुभ सन्देश दिया जाए कि मृत्यु और शरीर की पृथकता के पश्चात् उनकी रूह उस स्थान तक, जो उनके लिए सानिध्य का स्थान है उठाई जाएगी, जैसा कि अल्लाह तआला हमारे सरदार और पेशवा का सर्वोच्च स्थान प्रकट करने के उद्देश्य से पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता है :-

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَ رَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ (अलबक़र: - 2/254)

अर्थात् ये समस्त रसूल अपने पद में समान नहीं, कुछ उन में से वे हैं जिन्हें आमने-सामने वार्तालाप करने से सम्मानित किया गया तथा कुछ वे हैं जिन की श्रेणियों में बढ़ोतरी सब से बढ़कर है।

इस आयत की व्याख्या हदीस में यही वर्णन की गई है कि मृत्योपरांत प्रत्येक नबी की रूह आकाश की ओर उठाई जाती है और अपने पद के अनुसार उस रूह को आकाश में से किसी आकाश में कोई स्थान (पद) मिलता है, जिसके बारे में कहा जाता है कि इस स्थान तक उस रूह का रफ़ा हुआ है ताकि जैसा कि आन्तरिक तौर पर उस रूह की श्रेणी थी बाह्य तौर पर वह श्रेणी सिद्ध करके दिखाई जाए। अत: यह रफ़ा जो आकाश की ओर होता है श्रेणियों की जांच-पड़ताल के लिए होता है और उपरोक्त आयत में जो رَفَعَ بَعْضُهُمْ دَرَجَات है, यह संकेत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रफ़ा समस्त नबियों के रफ़ा से उच्चतम है और उनकी रूह मसीह की रूह की तरह दूसरे आकाश में नहीं और न हज़रत मूसा की रूह की तरह छठे आकाश में नहीं अपितु उच्चतम है। इसी की ओर मे'राज की हदीस विवरण सहित सिद्ध कर रही है अपितु 'मआलिमुन्नुबुव्वत' में पृष्ठ 570 पर इस हदीस का उल्लेख है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मे'राज की रात में छठे आकाश से आगे गुज़र गए तो हज़रत मूसा ने कहा

رَبِّ لَمْ اَظنّ اَنْ يَرفَعَ عَلَيَّ احد

अर्थात हे मेरे ख़ुदा मुझे यह गुमान नहीं था कि कोई नबी मुझ से ऊपर उठाया जाएगा और अपने رَفع में मुझ से आगे बढ़ जाएगा। अब देखो कि رفع (रफ़ा) का शब्द पदों को सिद्ध करने के लिए प्रयोग किया गया है तथा उपरोक्त वर्णित आयत की नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों के अनुसार ये अर्थ स्पष्ट हुए कि प्रत्येक नबी अपनी श्रेणी के अनुसार आकाशों की ओर उठाया जाता है तथा अपनी सानिध्य के अनुसार رفع (रफ़ा) से भाग प्राप्त करता है तथा नबियों और वलियों की रूह यद्यपि सांसारिक जीवन के युग में पृथ्वी पर हो, परन्तु फिर भी उस आकाश से उसका संबंध होता है जो उसकी रूह के लिए رفع (रफ़ा) की सीमा निर्धारित की गई है और मृत्योपरान्त वह रूह (आत्मा) उस आकाश में जा ठहरती है। अत: वह हदीस जिस में सामान्य तौर पर मृत्योपरान्त रूहों के उठाए जाने का वर्णन है इस वर्णन की समर्थक है और चूँकि यह बहस नितान्त साफ और स्पष्ट है और एक सीमा तक पहले हम उल्लेख भी कर चुके हैं, इसलिए उसे, अधिक विस्तार देने की आवश्यकता नहीं।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि कुछ भाष्यकारों (मुफ़स्सिरों) ने जब देखा कि वास्तव में اِنِّیْ مُتَوَفِّیْكَ में 'तवफ़्फ़ी' के अर्थ, मृत्यु देने के हैं, तत्पश्चात् जो رَافِعُكَ اِلَیَّ (राफिओका इलैया) आया है वह स्पष्ट तौर पर मृत्यु के पश्चात् आत्मा (रूह) के رفع (रफ़ा) को सिद्ध कर रहा है तो उन्हें यह चिन्ता हुई कि यह स्पष्टता हमारी राय के विपरीत है। इसलिए उन्होंने मानो स्वयं को क़ुर्आनी व्यवस्था का सुधारक बन कर या अपने लिए उस्तादी (गुरू) का पद प्रस्तावित करके यह सुधार किया कि यहाँ 'राफ़िओका' رَافِعُكَ पहले और **इन्नी मुतवफ़्फ़ीका** اِنِّیْ مُتَوَفِّیْكَ बाद में है, परन्तु पाठकगण जानते हैं कि ख़ुदा तआला के इतने सरस सुबोध कलाम में यह बात कितनी अनुचित और उस कलाम की शान को कम करने का कारण है। यहाँ यह भी ज्ञात होना चाहिए कि ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह के पक्ष में जो यह फ़रमाया कि مَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ (सूरह निसा- 158) इस से यह अभिप्राय कदापि नहीं कि मसीह की मृत्यु नहीं हुई। क्या मरने के लिए

यही एक मार्ग है कि मनुष्य क़त्ल किया जाए या सलीब पर खींचा जाए अपितु इस नकारने का उद्देश्य यह है कि तौरात 'इस्तिस्ना' अध्याय-41, आयत-23 में लिखा है - जो फांसी दिया जाता है वह ख़ुदा का धिक्कृत (मलऊन) है और यहूदी, जिन्होंने अपने विचार में हज़रत ईसा को फांसी दे दी थी। वे इस आयत को दृष्टिगत रखते हुए यह विचार रखते थे कि मसीह इब्ने मरयम न नबी था और न ख़ुदा का मान्य, क्योंकि वह फांसी दिया गया तथा तौरात वर्णन कर रही है कि जो व्यक्ति फांसी दिया जाए वह ला'नती (धिक्कृत) होता है। अत: ख़ुदा तआला चाहता था कि मूल वास्तविकता प्रकट करके उन के इस कथन का खण्डन करे। इसलिए उसने फ़रमाया कि मसीह इब्ने मरयम वास्तव में सलीब पर नहीं मरा और न ही क़त्ल किया गया अपितु अपनी स्वाभाविक मृत्यु से मृत्यु को प्राप्त हुआ।

(2) प्रश्न - यह कहाँ और किस किताब में लिखा है कि मसीह इब्ने मरयम जिसके आने का वादा दिया गया है वह वास्तव में मसीह इब्ने मरयम नहीं है अपितु उस का कोई मसील (समरूप) अभिप्राय है।

उत्तर - इस बात को पहले तो पवित्र क़ुर्आन ही विस्तारपूर्वक वर्णन कर चुका है, जब कि उसने स्पष्ट शब्दों में फ़रमा दिया कि कोई नबी नहीं आया जिसकी मृत्यु न हुई हो।

مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ اَفَاِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ۔*

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ۔**

وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خَالِدِيْنَ***

* आले इमरान - 145

** अंबिया - 35

*** अंबिया - 9

अब स्पष्ट है कि इन समस्त आयतों के बावजूद जो उच्च स्वर में, मसीह की मौत पर गवाही दे रही हैं, फिर भी मसीह को जीवित समझना और यह आस्था रखना कि इस आयत के अर्थ के विपरीत وَمَا جَعَلْنَاهُمْ جَسَدًا لَا يَأْكُلُوْنَ الطَّعَامَ मसीह पार्थिव शरीर के साथ दूसरे आकाश में भोजन की आवशयकता के बिना यों हीं फ़रिश्तों की भांति जीवित है। वास्तव में ख़ुदा तआला के पवित्र कलाम से विमुखता है।

मैं पुन: कहता हूँ कि मसीह इसी पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर जीवित है तो ख़ुदा तआला का उपरोक्त आयत में यह सबूत प्रस्तुत करना कि यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यदि मृत्यु को प्राप्त हो गया तो उसकी नुबुव्वत पर कोई आरोप नहीं आ सकता, क्योंकि प्रारंभ से समस्त नबी मरते ही आए हैं बिल्कुल व्यर्थ और निरर्थक अपितु घटना के विपरीत ठहर जाएंगी तथा ख़ुदा की शान इस से श्रेष्ठ है कि झूठ बोले या घटना की विपरीत कहे।

अत: स्पष्ट है कि **जब मसीह की मृत्यु हो चुकी** तो अब वह **मृत्यु** के पश्चात् आ नहीं सकता और न उसके मरने के पश्चात् पवित्र क़ुर्आन में उसके पुन: जीवित होने की सूचना दी गई है। अत: निस्सन्देह आने वाला मसीह उसका कोई मसील (समरूप) होगा। इसके अतिरिक्त स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी पवित्र हदीसों में इस बात की ओर संकेत भी कर दिया है कि आने वाला मसीह वास्तव में मसीह इब्ने मरयम नहीं है अपितु उस का मसील (समरूप) है, क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जाने वाले मसीह की आकृति और बताई है और आने वाले मसीह की और आकृति प्रकट की है तथा पूर्व मसीह के बारे में निश्चित तौर पर कहा है कि वह नबी था, परन्तु आने वाले मसीह को उम्मती करके पुकारा है जैसा कि हदीस اِمَامُكُمْ مِّنْكُمْ से प्रकट है तथा हदीस عُلَمَآءُ اُمَّتِيْ كَاَنْبِيَاءِ بَنِيْ اِسْرَائِيْلَ में सांकेतिक तौर पर मसीह के समरूप के आने की सूचना दी है। अत: उसके अनुसार आने वाला मसीह मुहद्दिस होने के कारण लाक्षणिक तौर पर नबी भी है। अत: इस से अधिक और क्या वर्णन होगा।

इसके अतिरिक्त हज़रत मसीह इब्ने मरयम जिसकी रूह उठाई गई इस आयत के अनुसार :-

يَاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٨﴾ ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿٢٩﴾
فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ﴿٣٠﴾ وَ ادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ﴿٣١﴾ (अल फज्र- 28-31)

स्वर्ग में प्रवेश कर चुकी, अब क्योंकर इस शोकागार में आ जाएं, यद्यपि इसे हमने स्वीकार किया कि स्वर्ग में प्रवेश करने की वह पूर्ण श्रेणी जो भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार से होगी वह शरीर को एकत्र करने के पश्चात् प्रत्येक पात्र को प्रदान की जाएगी, परन्तु अब भी स्वर्ग के जितने आनन्द प्राप्त हो चुके उस से सानिध्य प्राप्त लोग बाहर नहीं किए जाते और प्रलय के दिन समस्त लोकों के प्रतिपालक के समक्ष उनका उपस्थित होना उन्हें स्वर्ग से नहीं निकालता, क्योंकि यह तो नहीं कि स्वर्ग से बाहर कोई लकड़ी, लोहे या चांदी का तख़्त बिछाया जाएगा और ख़ुदा तआला अधिकृत शासकों तथा बादशाहों की भांति उस पर विराजमान हो जाए और कुछ दूरी तय करके उसके समक्ष उपस्थित होना होगा ताकि यह आरोप अनिवार्य हो जाए कि यदि स्वर्गीय लोग स्वर्ग में प्रवेश कर चुके माने जाएं तो तलब (बुलाने) करने के समय उन्हें स्वर्ग से निकलना पड़ेगा और उस विशाल जंगल में जहाँ समस्त लोकों के प्रतिपालक का तख़्त (सिंहासन) बिछाया गया है उपस्थित होना पड़ेगा। ऐसा विचार तो सर्वथा शारीरिक और यहूदियत के स्वभाव से निकला हुआ है और सत्य यही है कि हम न्याय के दिन पर ईमान तो लाते हैं और ख़ुदा के सिंहासन को स्वीकार करते हैं, परन्तु शारीरिक तौर पर उसकी रूप-रेखा नहीं बनाते तथा इस बात पर विश्वास रखते हैं कि जो कुछ अल्लाह और रसूल ने फ़रमाया है वह सब कुछ होगा, परन्तु इतनी पवित्रता के साथ कि जो ख़ुदाई पुनीतथा, पवित्रता तथा उसकी समस्त कामिल विशेषताओं के विरुद्ध और विपरीत न हो। स्वर्ग का प्रकटन मंच सत्य है, यह क्योंकर कह सकें कि उस दिन ख़ुदा तआला एक साकार व्यक्ति की भांति स्वर्ग से बाहर अपना तम्बू या यों कहो कि अपना तख़्त (सिंहासन) लगा देगा अपितु

सत्य तो यह है कि उस दिन भी स्वर्गीय लोग स्वर्ग में होंगे और नारकी नरक में परन्तु ख़ुदा के सदात्मा लोगों और ईमानदारों पर ख़ुदा तआला की दया रूपी श्रेष्ठतम झलक नूतन तौर पूर्ण आनंदों की वर्षा करके, तथा उन्हें स्वर्गीय जीवन की समस्त उपलब्धियां अनुभूति और शरीरिक तौर पर दिखा कर उस नवीनतम शान्ति-कुंज में प्रवेश करा देगी। इसी प्रकार ख़ुदा तआला की प्रकोपी झलक हिसाब-किताब तथा स्पष्ट तौर पर दोषी ठहराने के पश्चात् नर्क को भी नए रूप में दिखाकर जैसे नारकी लोगों को नए सिरे से नर्क में प्रवेश कराएगी। स्वर्गीयों का आध्यात्मिक तौर पर मृत्योपरान्त अविलम्ब स्वर्ग में प्रवेश कर जाना और नारकी लोगों का नर्क में गिराया जाना पवित्र क़ुर्आन और सही हदीसों की निरन्तरता से सिद्ध है। हम इस पुस्तक को कहाँ तक विस्तृत करते जाएं। हे सामर्थ्यवान ख़ुदा इस क़ौम पर दया कर जो तेरे कलाम को पढ़ते हैं परन्तु वह पवित्र कलाम उन के कंठ से आगे नहीं जाता।

(3) प्रश्न - मसीह के दोबारा आने के खण्डन में जो यह सबूत प्रस्तुत किया गया है कि मसीह की **मृत्यु** होना सिद्ध है तथा प्रत्येक ईमानदार मोमिन मृत्योपरान्त स्वर्ग में प्रवेश कर जाता है और प्रत्येक जो स्वर्ग में प्रवेश कर जाता है वह इस आयत के अनुसार (सूरह हज्र - 49) وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ सदैव स्वर्ग में रहने का अधिकार रखता है यह सबूत और तर्क उचित नहीं है, क्योंकि यदि यह उचित है तो इस से अनिवार्य हो जाता है कि वह वृत्तान्त सही न हो जो उज़ैर नबी के बारे में पवित्र क़ुर्आन में वर्णन किया गया है कि वह सौ वर्ष तक मरा रहा और फिर ख़ुदा तआला ने उसे जीवित किया, कारण यह कि उपरोक्त काल्पनिक नियामानुसार जीवित होने से यह स्वीकार करना पड़ता है कि वह स्वर्ग से निकाल दिया गया। इसी प्रकार इस आयत को प्रत्यक्ष पर चरितार्थ करने से मुर्दों का क़ब्रों से जीवित हो जाना तथा हिसाब के मैदान में समस्त लोकों के प्रतिपालक के समक्ष आना, ये समस्त बातें इस आयत के ऐसे अर्थ करने से कि सदात्मा पुरुष मृत्योपरान्त स्वर्ग में अविलम्ब प्रवेश कर जाता है और फिर उस से कभी नहीं निकलता असत्य हो जाती हैं तथा इस्लाम की मान्य आस्था में एक बहुत बड़ी क्रान्ति उत्पन्न हो जाती है।

उत्तर - अत: स्पष्ट हो कि वास्तव में यह सत्य है कि जो व्यक्ति स्वर्ग में प्रवेश कर जाता है फिर उसे उस से कभी बाहर नहीं निकाला जाता, जैसा कि ख़ुदा तआला मोमिनों को सच्चा आश्वासन देते हुए फ़रमाता है

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ

(सूरह अलहज्र - 49) अर्थात् स्वर्ग में प्रवेश करने वाले प्रत्येक चिन्ता और कष्ट से मुक्त हो गए और वे उससे कभी निकाले नहीं जाएंगे। फिर एक अन्य स्थान पर फ़रमाता है :-

وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِى الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ
السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ عَطَاءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ

(सूरह हूद आयत-109) सौभाग्यशाली लोग मृत्योपरान्त स्वर्ग में दाख़िल किए जाते हैं तथा सदैव उसी में रहेंगे जब तक कि आकाश और पृथ्वी हैं। यदि ये आकाश और पृथ्वी परिवर्तित भी किए जाएं जैसा कि प्रलय आने के समय होगा, तब भी सौभाग्यशाली लोग स्वर्ग से बाहर नहीं हो सकते और न इन वस्तुओं के बिगाड़ से स्वर्ग में कुछ बिगाड़ हो सकता है, क्योंकि स्वर्ग इनके लिए एक ऐसा अनुदान है कि पल भर के लिए भी उस से वंचित नहीं रह सकते।

इसी प्रकार पवित्र क़ुर्आन के अन्य स्थानों में भी स्वर्गीय लोगों के स्वर्ग में हमेशा रहने का वर्णन है और सम्पूर्ण पवित्र क़ुर्आन इस से भरा पड़ा है, जिस प्रकार कि फ़रमाता है :-

وَلَهُمْ فِيْهَا اَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيْهَا خَالِدُوْنَ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ

इत्यादि-इत्यादि*

यह भी स्पष्ट है कि मोमिन की **मृत्यु** के पश्चात् अविलम्ब स्वर्ग में स्थान प्राप्त

* अलबक़रह - 26, अलबक़रह - 83

होता है जैसा कि इन आयतों से प्रकट हो रहा है :-

قِيۡلَ ادۡخُلِ الۡجَنَّةَ ؕ قَالَ يٰلَيۡتَ قَوۡمِىۡ يَعۡلَمُوۡنَ ۙ﴿۲۶﴾
بِمَا غَفَرَ لِىۡ رَبِّىۡ وَ جَعَلَنِىۡ مِنَ الۡمُكۡرَمِيۡنَ ﴿۲۸﴾*

तथा दूसरी यह आयत :-

فَادۡخُلِىۡ فِىۡ عِبٰدِىۡ ۙ﴿۳۰﴾ وَ ادۡخُلِىۡ جَنَّتِىۡ ﴿۳۱﴾**

और तीसरी यह आयत :-

وَ لَا تَحۡسَبَنَّ الَّذِيۡنَ قُتِلُوۡا فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ اَمۡوَاتًا ؕ
بَلۡ اَحۡيَآءٌ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ يُرۡزَقُوۡنَ ۙ﴿۱۷۰﴾
فَرِحِيۡنَ بِمَاۤ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنۡ فَضۡلِهٖ ۙ***

तथा हदीसों में तो इसका इस सीमा तक वर्णन है जिसका पूर्ण रूपेण वर्णन करना विस्तार का कारण होगा, अपितु आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्वयं अपना चश्मदीद वृत्तान्त वर्णन करते हैं कि ''मुझे नर्क दिखाया गया तो मैंने उसमें अधिकतर स्त्रियां देखीं, स्वर्ग दिखाया गया तो मैंने उसमें अधिकतर फ़कीर (ग़रीब) देखे'' तथा इन्जील लूक़ा, बाब-16 में एक कहानी के तौर पर वर्णन किया गया है **ला'ज़र** जो एक निर्धन व्यक्ति था, मृत्यु के पश्चात् **अब्राहाम** की गोद में बैठाया गया अर्थात् नेमतों वाले स्वर्ग से लाभान्वित हुआ परन्तु एक धनवान जिसका उन्हीं दिनों में देहान्त हुआ नर्क में डाला गया और उसने ला'ज़र से ठंडा पानी मांगा, परन्तु उसे दिया न गया।

इसके अतिरिक्त ऐसी आयतें भी हैं जो प्रकट करती है कि शरीरों को उठाया जाएगा और हिसाब के पश्चात् स्वर्गीय लोग स्वर्ग में प्रविष्ट किए जाएंगे और नारकी

* यासीन आयत 27, 28

** अलफ़ज्र 30-31

*** आले इमरान आयत 170-171

नर्क में। प्रत्यक्षतया इन दोनों प्रकार की आयतों पर दृष्टि डालने से विरोधाभास विदित होता है। पवित्र क़ुर्आन और हदीसों में पवित्र आत्माओं का मृत्योपरान्त स्वर्ग में प्रवेश करना तो नितान्त असंदिग्ध तौर सिद्ध है परन्तु ऐसी एक भी आयत या हदीस नहीं मिलेगी जिस से यह सिद्ध हो सके कि हिसाब के दिन में स्वर्ग वाले लोग स्वर्ग से बाहर निकाल दिए जाएंगे अपितु ख़ुदा के वादे के अनुसार स्वर्ग में स्वर्गीय लोगों का हमेशा रहने का पवित्र क़ुर्आन और हदीसों में अनेकों स्थान पर उल्लेख है। हाँ दूसरी ओर यह भी सिद्ध है कि क़ब्रों में से मुर्दे जीवित हो जाएंगे तथा प्रत्येक व्यक्ति आदेश सुनने के लिए ख़ुदा तआला के समक्ष खड़ा होगा तथा प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों और ईमान का अनुमान उस पर ख़ुदा की तराज़ू से प्रकट किया जाएगा, तब जो लोग स्वर्ग के पात्र हैं उन्हें स्वर्ग में प्रवेश दिया जाएगा और जो नर्काग्नि में जलने के पात्र हैं वे नर्क में डाल दिए जाएंगे।

अत: स्पष्ट हो कि इस विरोधाभास को दूर करने के लिए क़ुर्आन की आयतों और हदीसों में परस्पर जो वर्णन हुआ है यह समाधान नहीं है कि यह आस्था प्रकट की जाए कि मृत्योपरान्त समस्त रूहें एक मृत्यु की अवस्था में रहती हैं, न उन्हें किसी प्रकार का आराम प्राप्त होता है और न किसी प्रकार के दण्ड में गिरफ़्तार होती हैं और न स्वर्ग की शीतल समीर उन्हें पहुँचती है और न नर्क की वाष्प उन्हें जलाती है, क्योंकि ऐसी आस्था पवित्र क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशों और हदीसों से पूर्णतया विपरीत है। मरने वाले के लिए जो दुआ की जाती है या दान-पुण्य किए जाते हैं और मरने वाले की नीयत से निर्धनों का भोजन खिलाया जाता है या कपड़ा दिया जाता है यदि इस मध्यवर्ती अवधि में जो शरीरों को क़ब्रों से उठाने से पूर्व है स्वर्ग और नर्क से मरने वाले का कोई सम्बन्ध नहीं तो ये समस्त कर्म एक लम्बे समय तक निरर्थक समझे जाएंगे और यह स्वीकार करना पड़ेगा कि इस मध्यवर्ती अवधि में मरने वाले का आराम, कष्ट, पुण्य और दण्ड से कुछ संबंध नहीं होता, हालांकि ऐसा विचार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिक्षा के सर्वथा विपरीत है।

अत: वह निश्चित बात जिससे इन दोनों प्रकार की आयतों का विरोधाभास दूर होता है यह है कि स्वर्ग और नर्क तीन श्रेणियों पर विभाजित है :-

प्रथम श्रेणी - जो एक निम्न श्रेणी है उस समय से प्रारंभ होती है कि जब मनुष्य इस संसार से कूच करके अपने स्वप्नागार क़ब्र में जा लेटता है। इस कमज़ोर श्रेणी को रूपक के तौर पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों में अनेक शैलियों में वर्णन किया गया है, उनमें से एक शैली यह भी है कि नेक पुरुष के मृत शरीर के लिए क़ब्र में स्वर्ग की ओर एक खिड़की खोली जाती है जिसके मार्ग से वह स्वर्ग की हरियाली और शोभा देखता है तथा उसकी मनमोहक वायु से लाभान्वित होता है तथा उस खिड़की की विशालता उस मरने वाले के ईमान के स्तर के अनुसार होती है, परन्तु इसके साथ यह भी लिखा है कि जो लोग ख़ुदा में इस प्रकार लीन होने की अवस्था में संसार से कूच करते हैं कि अपने प्रिय प्राण को अपने सच्चे प्रियतम के मार्ग में समाप्त कर देते हैं जैसे शहीद या वे सदात्मा लोग जो शहीदों से भी बढ़कर अग्रसर होते हैं उनके लिए उनकी मृत्यु के पश्चात् स्वर्ग की ओर खिड़की ही नहीं खोली जाती अपितु वे अपने सम्पूर्ण अस्तित्व और अपनी समस्त शक्तियों के साथ स्वर्ग में प्रवेश कर जाते हैं, परन्तु फिर भी प्रलय के दिन से पूर्व पूर्ण रूप से स्वर्ग के आनन्द प्राप्त नहीं कर सकते।

इसी प्रकार इस श्रेणी में बुरे मुर्दे के लिए नर्क की ओर एक खिड़की खोली जाती है जिससे नर्क की जलाने वाली भाप आती रहती है और उसकी ज्वाला से हर समय वह दुष्ट आत्मा जलती रहती है, परन्तु इसके साथ यह भी है कि जो लोग अपनी अत्यधिक अवज्ञा के कारण शैतान में लीन होने की अवस्था में संसार से ऐसे कूच करते हैं कि शैतान की आज्ञाकारिता के कारण अपने सच्चे स्वामी (ख़ुदा) से सम्बन्ध विच्छेद कर लेते हैं कि उनके लिए उनकी मृत्यु के पश्चात् नर्क की ओर केवल खिड़की ही नहीं खोली जाती अपितु वह अपने अस्तित्व और समस्त शक्तियों के साथ विशेष नर्क में डाल दिए जाते हैं जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है -

مِمَّا خَطِيْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا نَارًا

(सूरह नूह आयत 26) परन्तु फिर भी वे लोग प्रलय (क़यामत) के दिन से पूर्व पूर्णतया नर्क के दण्डों का स्वाद नहीं चखते।

द्वितीय श्रेणी - इस श्रेणी से ऊपर जिसे अभी हमने स्वर्गीय और नारकी लोगों के लिए वर्णन किया है एक और श्रेणी स्वर्ग और नर्क में प्रवेश करने की है जिसे मध्य श्रेणी कहना उचित होगा और वह शरीरों को उठाने के पश्चात् तथा श्रेष्ठतम स्वर्ग और विशालतम नर्क में प्रवेश करने से पूर्व प्राप्त होती है तथा पूर्ण शक्तियों वाले शरीर में संबंध होने के कारण एक उच्च स्तर की उत्तेजना पैदा हो कर तथा ख़ुदा तआला की दया की झलक अथवा प्रकोप की झलक अपनी कर्मों की परिस्थिति के अनुकूल पूर्णरूप से अवलोकन हो कर तथा स्वर्ग को बहुत निकट पाकर या विशालतम नर्क को बहुत ही निकट देखकर वे आनन्द अथवा प्रकोप उन्नत हो जाते हैं जैसा कि अल्लाह तआला स्वयं फ़रमाता है :-

وَ اُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۔ وَ بُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ۔ *
وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ۔ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ۔ وَ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ
عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۔ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ۔ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ۔ **

इस द्वितीय श्रेणी में भी लोग एक समान नहीं होते अपितु उच्च श्रेणी के भी होते हैं जो स्वर्गीय अवस्था में अपने साथ स्वर्गीय प्रकाश रखते हैं, उन्हीं की ओर अल्लाह तआला संकेत करता है :-

نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ بِاَيْمَانِهِمْ***

ऐसा ही नारकी होने की अवस्था में उच्च श्रेणी के काफ़िर होते हैं कि पूर्ण रूप

---

* अश्शुअरा 91-92

** सूरह अबस 39-43

*** अत्तहरीम आयत 9

से नर्क में जा पड़ने से पूर्व उनके हृदयों पर नर्काग्नि भड़काई जाती है जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ الَّتِیْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْئِدَةِ*

फिर इस श्रेणी के ऊपर जो अन्तिम श्रेणी है वह **तृतीय श्रेणी** है जो श्रेणियों की चरम सीमा है जिसमें हिसाब के दिन के पश्चात् लोग प्रवेश करेंगे तथा पूर्णतया सौभाग्य या दुर्भाग्य का स्वाद चख लेंगे।

कथन का सारांश यह है कि मनुष्य इन तीनों श्रेणियों में एक प्रकार के स्वर्ग या एक प्रकार के नर्क में होता है और जब परिस्थिति यह है तो इस परिस्थिति में से किसी भी श्रेणी पर होने की अवस्था में मनुष्य स्वर्ग या नर्क में से निकाला नहीं जाता, हां जब इस श्रेणी से उन्नति करता है तो निम्नश्रेणी से उच्च श्रेणी में आ जाता है।

इस उन्नति का एक रूप यह भी है कि जब उदाहरणतया एक व्यक्ति ईमान और कर्म की निम्नावस्था में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है तो उसके लिए थोड़ा सा छेद स्वर्ग की ओर निकाला जाता है, क्योंकि उसमें स्वर्गीय झलक को देखने की इसी सीमा तक सामर्थ्य मौजूद होती है। तत्पश्चात् यदि वह नेक संतान छोड़ कर मरा है जो कठिन परिश्रम और प्रयास के साथ उसके लिए क्षमा की दुआ करते हैं और उसकी क्षमा की नियत से दरिद्रों को दान देते हैं या ऐसे किसी वली से उसे प्रेम था जो गिड़गिड़ा कर ख़ुदा से उसकी क्षमा चाहता है या ऐसे ख़ुदा की प्रजा को किसी प्रकार की सहायता या आराम पहुँचाता है तो इस जारी रहने वाली भलाई की बरकत से उसकी वह खिड़की जो स्वर्ग की ओर खोली गई दिन-प्रतिदिन अपने विस्तार में अधिक होती जाती हैं और سَبَقَتْ رحمتی عَلٰی غَضَبِی का उद्देश्य उसे और भी अधिक करता जाता है, यहां तक कि वह खिड़की एक विशाल दरवाज़ा हो कर अन्त में नौबत यहां तक पहुँचती है कि शहीदों और सिद्दीक़ों की भांति वह स्वर्ग में ही प्रवेश कर जाता है। इस बात को समझने वाले समझ सकते हैं कि यह बात शरीअत, न्याय और बौद्धिक तौर पर निरर्थक है कि ऐसा विचार किया जाए कि इसके बावजूद

* सूरह अलहमज़: 7-8

एक मुस्लिम मृत्यु प्राप्त मर्द के पश्चात् उसके लिए एक प्रकार की भलाई जारी रहे और पुण्य और शुभ कर्मों के कुछ कारण उसके लिए खुले रहें परन्तु फिर भी वह खिड़की जो उसके लिए स्वर्ग की ओर खोली गई है हमेशा उतनी की उतनी ही रहे जो पहले दिन खोली गई थी।

स्मरण रखना चाहिए कि ख़ुदा तआला ने उस खिड़की को खोलने के लिए पहले से इतने साधन कर रखे हैं जिन से पूर्णरूपेण ज्ञात होता है कि उस दयावान का उद्देश्य ही यही है कि यदि कोई कण भर भी ईमान और कर्म के साथ भी उसकी ओर चले तो वह कण भी फलता-फूलता रहेगा और यदि किसी संयोगवश उस भलाई का सम्पूर्ण सामान जो मरने वाले को उस लोक की ओर से पहुँचता है अप्राप्य रहें फिर भी ये सामान किसी भी प्रकार अप्राप्य और लुप्त नहीं हो सकता कि जो समस्त मोमिनों सौभाग्यशालियों, हदीसों और सदात्माओं के लिए दृढ़ तौर पर यह आदेश दिया गया कि वे अपने उन भाइयों के लिए तन-मन से क्षमा की प्रार्थना करते रहें जो उन से पूर्व इस संसार से गुज़र चुके हैं। स्पष्ट है कि जिन लोगों के लिए मोमिनों का एक विशाल समूह दुआ कर रहा है वह दुआ कभी भी ख़ाली नहीं जाएगी अपितु वह प्रतिदिन काम कर रही है और पापी और ईमानदार जिनकी मृत्यु हो चुकी है उनकी उस खिड़की को जो स्वर्ग की ओर थी बड़े ज़ोर से खुल रही है इन दुआओं ने अब तक असंख्य खिड़कियों को इस सीमा तक विशाल कर दिया है कि असंख्य ऐसे लोग स्वर्ग में पहुँच चुके हैं जिन्हें प्राथमिक दिनों में उन्हें स्वर्ग देखने के लिए केवल एक छोटी सी खिड़की प्रदान की गई थी।

इस युग के उन समस्त मुसलमानों को जो एकेश्वरवादी कहलाते हैं यह धोखा भी लगा हुआ है कि वे विचार करते हैं कि मृत्योपरान्त स्वर्ग में प्रवेश करने वाले केवल शहीद लोग हैं और शेष समस्त मोमिन, यहाँ तक कि नबी और रसूल भी हिसाब के दिन तक स्वर्ग से बाहर रखे जाएंगे, उनके लिए केवल एक खिड़की स्वर्ग की ओर खोली जाएगी, परन्तु उन्होंने अब तक इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया कि क्या अंबिया (नबी) और समस्त सदात्मा लोग आध्यात्मिक तौर पर शहीदों से

बढ़कर नहीं हैं और क्या स्वर्ग से दूर रहना एक प्रकार का प्रकोप नहीं कि क्षमा प्राप्त लोगों के पक्ष में प्रस्तावित नहीं हो सकता ? जिसके पक्ष में ख़ुदा तआला यह कहे कि رَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجَات (सूरह अल बक़रह - 254) क्या ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली होने और उद्‌देश्य की सफलता में शहीदों से पीछे रह सकता है? खेद कि इन लोगों ने अपनी अज्ञानता से प्रकाशमान शरीअत को उल्टा दिया है। उनके विचार में स्वर्ग में सब से पहले प्रवेश करने वाले शहीद हैं और कदाचित् कहीं असंख्य वर्षों के पश्चात् नबियों, और सदात्मा लोगों की भी बारी आए। इस अपमान का आरोप इन लोगों पर बड़ा भारी है जो कमज़ोर बहानों से दूर नहीं हो सकता। निस्सन्देह यह बात प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि जो लोग ईमान और कर्म में अग्रसर हैं वही लोग स्वर्ग के प्रवेश में भी अग्रसर होने चाहिएं न यह कि उनके लिए कमज़ोर ईमान वालों की भांति खिड़की खोली जाए तथा शहीद पुरुष संसार से कूच करते ही स्वर्ग का प्रत्येक फल चुन-चुन कर खाने लगें। यदि स्वर्ग में प्रवेश होना पूर्ण ईमान, पूर्ण निष्कपटता और पूर्ण पराक्रम पर निर्भर है तो निस्सन्देह नबियों और सदात्मा पुरुषों से बढ़कर और कोई नहीं जिनका सम्पूर्ण जीवन ख़ुदा तआला के लिए समर्पित हो जाता है और जो ख़ुदा के मार्ग में ऐसे मुग्ध होते हैं कि जैसे मर ही जाते हैं और अभिलाषी हैं कि ख़ुदा तआला के मार्ग में शहीद किए जाएं फिर जीवित हों और फिर शहीद किए जाएं और पुन: जीवित हों और फिर शहीद किए जाएं।

अत: हमारे इस पूर्ण वर्णन से भली भांति सिद्ध हो गया कि स्वर्ग में प्रवेश के लिए ऐसे शक्तिशाली साधन मौजूद हैं कि लगभग समस्त मोमिन हिसाब के दिन से पूर्व उसमें पूर्ण रूप से प्रवेश कर जाएंगे तथा हिसाब का दिन उन्हें स्वर्ग से बहिष्कृत नहीं करेगा अपितु उस समय स्वर्ग और भी निकट हो जाएगा। खिड़की के उदाहरण से समझ लेना चाहिए कि स्वर्ग को कब्र से क्योंकर निकट किया जाता है। क्या क़ब्र से संलग्न जो पृथ्वी पड़ी हुई है उसमें स्वर्ग आ जाता है? नहीं अपितु आध्यात्मिक तौर पर निकट किया जाता है। इसी प्रकार आध्यात्मिक तौर पर स्वर्गीय लोग हिसाब के मैदान में भी होंगे और स्वर्ग में भी होंगे। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

फ़रमाते हैं कि मेरी क़ब्र के नीचे स्वर्ग का उद्यान है इस बात पर भली भांति विचार करो कि किस बात की ओर संकेत है?

उज़ैर अलैहिस्सलाम के निधन और सौ वर्ष पश्चात् जीवित होने का जो प्रमाण प्रस्तुत किया गया है यह प्रमाण विरोधी के लिए कुछ लाभकारी नहीं है क्योंकि कदापि वर्णन नहीं किया गया कि **उज़ैर**अ. को जीवित करके पुन: संसार के शोकागार में भेजा गया ताकि यह खराबी अनिवार्य हो कि वह स्वर्ग से निकाला गया अपितु यदि इन आयतों को उनके प्रत्यक्ष अर्थों पर चरितार्थ किया जाए तो मात्र यह सिद्ध होगा कि ख़ुदा तआला की क़ुदरत के चमत्कार ने एक पल के लिए उज़ैरअ. को जीवित करके दिखा दिया ताकि उसे अपनी शक्ति पर विश्वास दिलाए परन्तु वह संसार में आगमन केवल अस्थायी था और उज़ैरअ. वास्तव में स्वर्ग में ही मौजूद था। ज्ञात होना चाहिए कि समस्त नबी और सदात्मा लोग मृत्योपरान्त फिर जीवित हो जाते हैं और उन्हें एक प्रकाशमय शरीर भी प्रदान किया जाता है और कभी-कभी जागने की अवस्था में सदात्मा लोगों से भेंट भी करते हैं। अत: इस बारे में यह ख़ाकसार स्वयं अनुभव रखता है। फिर यदि ख़ुदा तआला ने 'उज़ैरअ.' को इसी प्रकार जीवित कर दिया हो तो आश्चर्य क्या है, परन्तु इस जीवन से यह परिणाम निकालना कि वह जीवित हो कर स्वर्ग से निकाल दिए गए, यह विचित्र प्रकार की अज्ञानता है अपितु इस जीवन से तो स्वर्ग की झलक कुछ अधिक बढ़ जाती है।

(4) प्रश्न - पवित्र क़ुर्आन की निम्नलिखित आयत मसीह इब्ने मरयम के जीवित रहने पर प्रकाश डालती है और वह यह है -

وَاِنۡ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤۡمِنَنَّ بِهٖ قَبۡلَ مَوۡتِهٖ*

क्योंकि इसके अर्थ यह हैं कि मसीह की मृत्यु से पूर्व समस्त अहले किताब (यहूदी) उस पर ईमान ले आएंगे। अत: इस आयत के भाव से विदित होता है कि आवश्यक है कि मसीह उस समय तक जीवित रहे जब तक कि समस्त अहले किताब उस पर ईमान ले आएं।

---

* अन्निसा आयत 160

उत्तर - स्पष्ट हो कि प्रश्नकर्ता को यह धोखा लगा है कि उसने अपने हृदय में यह सोच लिया है कि क़ुर्आनी आयत का उद्देश्य यह है कि मसीह की मृत्यु से पूर्व समस्त अहले किताब के सम्प्रदायों का उस पर ईमान लाना आवश्यक है क्योंकि हम कल्पना के तौर पर स्वीकार कर लें कि उपरोक्त आयत के यही अर्थ हैं जैसा कि प्रश्नकर्ता ने समझा है तो इससे यह अनिवार्य होता है कि मसीह के उत्थान के समय से उस समय तक कि मसीह उतरे संसार में जितने अहले किताब गुज़रे हैं या अब मौजूद हैं अथवा भविष्य में होंगे वे सब मसीह पर ईमान लाने वाले हों, हालांकि यह विचार स्पष्ट रूप से मिथ्या है। प्रत्येक व्यक्ति भली भांति जानता है कि असंख्य अहले-किताब मसीह की नुबुव्वत का इन्कार करके अब तक नर्क में प्रवेश कर चुके हैं और ख़ुदा जाने भविष्य में भी कितने लोग इस इन्कार के कारण उस अग्नि की भट्टी में पड़ेंगे। यदि ख़ुदा तआला की यह इच्छा होती कि वह समस्त अहले किताब मृत्यु प्राप्त मसीह के उतरते समय उस पर ईमान लाएंगे तो वह उन सब को उस समय तक जीवित रखता जब तक कि मसीह आकाश से उतरता, परन्तु अब मरणोपरान्त उनका ईमान लाना क्योंकर संभव है ?

कुछ लोग नितान्त बनावट के साथ यह उत्तर देते हैं कि संभव है कि मसीह के उतरने के समय ख़ुदा तआला उन सब अहले किताब को पुन: जीवित करे जो मसीह के अवतरण होने से दोबारा उतरने तक कुफ्र की अवस्था में मर गए हैं तो इस का उत्तर यह है कि यों तो ख़ुदा तआला से कोई कार्य असंभव नहीं, परन्तु बहस के अन्तर्गत तो यह बात है कि क्या पवित्र क़ुर्आन और सही हदीसों में इन विचारों का कुछ निशान पाया जाता है। यदि पाया जाता है तो वह क्यों प्रस्तुत नहीं किया जाता ?

कुछ लोग कुछ लज्जित से होकर डरते-डरते यह व्याख्या प्रस्तुत करते हैं कि अहले किताब से अभिप्राय वे लोग हैं जो मसीह के दोबारा आने के समय संसार में मौजूद होंगे और वे सब के सब मसीह को देखते ही ईमान ले आएंगे और इससे पूर्व कि मसीह की मृत्यु हो वे सब मोमिनों की सेना में शामिल हो जाएंगे, परन्तु यह विचार भी ऐसा मिथ्या है कि अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं। प्रथम तो उपरोक्त कथित आयत स्पष्ट तौर पर सामान्य होने का लाभ दे रही है, जिस से विदित होता है कि

अहले किताब के शब्द से समस्त वे अहले किताब अभिप्राय हैं जो मसीह के समय में अथवा मसीह के पश्चात् निरन्तर होते रहेंगे और आयत में एक भी ऐसा शब्द नहीं जो आयत को किसी विशेष सीमित समय से सम्बद्ध करता हो। इसके अतिरिक्त ये प्रस्तुत किए गए अर्थ भी स्पष्ट तौर पर ग़लत हैं, क्योंकि सही हदीस उच्च स्वर में बता रही हैं कि मसीह की फूंक से उसके इन्कार करने वाले चाहे वे अहले-किताब है अथवा अहले किताब नहीं हैं कुफ्र की अवस्था में मरेंगे* और कुछ आवश्यक नहीं कि हम बार-बार उन हदीसों को नक़ल करें। इस पुस्तक में यथा स्थान देख लेना चाहिए। इसके अतिरिक्त मुसलमानों की मान्य आस्था है कि दज्जाल भी अहले किताब में से ही होगा और यह भी मानते हैं कि वह मसीह पर ईमान नहीं लाएगा। अब मैं अनुमान नहीं लगा सकता कि इस विचार के अनुयायी इन हदीसों का अध्ययन करके कितने लज्जित होंगे। यह भी माना गया और मुस्लिम में मौजूद है कि मसीह के पश्चात् उपद्रवी रह जाएंगे जिन पर क़यामत (प्रलय) आएगी। यदि कोई काफिर नहीं रहेगा तो वह कहां से आ जाएगी।

अब स्वाभाविक तौर पर यह प्रश्न उत्पन्न होगा कि यदि उपरोक्त कथित आयत के वे अर्थ उचित नहीं हैं तो फिर कौन से अर्थ सही हैं ? इसके उत्तर में स्पष्ट हो कि सही अर्थ वही हैं जो उस स्थान की समस्त संबंधित आयतों पर दृष्टि डालने से अनिवार्य रूप से स्वीकार करने योग्य मालूम होते हैं जिन्हें स्वीकार करने से किसी प्रकार का दोष अनिवार्य नहीं आता। अत: प्रथम निम्नलिखित उन समस्त आयतों का वर्णन करता हूँ, तत्पश्चात वे वास्तविक अर्थ जो उन आयतों के अनुसार सिद्ध होते हैं सिद्ध करूंगा और वे आयतें ये हैं :-

---

* मसीही फूंक से मर जाने के वास्तविक अर्थ हम वर्णन कर चुके हैं कि उस से अभिप्राय सबूतों और स्पष्ट निशानों की दृष्टि से मरना है अन्यथा सभ्यता से दूर की बात है कि यह विचार किया जाए कि कोई विषाक्त और संक्रामक तत्त्व मसीह के मुख से निकलकर वायु में मिश्रित होकर कमज़ोर काफ़िरों को मारेगा, परन्तु दज्जाल को नहीं मार सकेगा। इसी से।

وَّ قَوۡلِہِمۡ اِنَّا قَتَلۡنَا الۡمَسِیۡحَ عِیۡسَی ابۡنَ مَرۡیَمَ رَسُوۡلَ اللّٰہِ ۚ وَ مَا قَتَلُوۡہُ وَ مَا صَلَبُوۡہُ وَ لٰکِنۡ شُبِّہَ لَہُمۡ ؕ وَ اِنَّ الَّذِیۡنَ اخۡتَلَفُوۡا فِیۡہِ لَفِیۡ شَکٍّ مِّنۡہُ ؕ مَا لَہُمۡ بِہٖ مِنۡ عِلۡمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَ مَا قَتَلُوۡہُ یَقِیۡنًۢا ﴿۱۵۸﴾ بَلۡ رَّفَعَہُ اللّٰہُ اِلَیۡہِ ؕ وَ کَانَ اللّٰہُ عَزِیۡزًا حَکِیۡمًا ﴿۱۵۹﴾ وَ اِنۡ مِّنۡ اَہۡلِ الۡکِتٰبِ اِلَّا لَیُؤۡمِنَنَّ بِہٖ قَبۡلَ مَوۡتِہٖ ۚ وَ یَوۡمَ الۡقِیٰمَۃِ یَکُوۡنُ عَلَیۡہِمۡ شَہِیۡدًا ﴿۱۶۰﴾ (सूरह अन्निसा 158-160)

अनुवाद - और यहूदी जो ख़ुदा तआला की दया और ईमान से वंचित हो गए उसका कारण उनके वे दुष्कर्म हैं जो उन्होंने किए। उन समस्त में से एक यह है कि उन्होंने कहा कि लीजिए कि हमने उस मसीह ईसा इब्ने मरयम को क़त्ल कर दिया जो रसूलुल्लाह होने का दावा करता था (यहूदियों का यह कहना कि हमने ईसा रसूलुल्लाह को क़त्ल कर दिया। इसके ये अर्थ नहीं हैं कि वह हज़रत मसीह को रसूल जानते थे क्योंकि यदि वे उसे सच्चा नबी जानते तो सूली देने के लिए क्यों तैयार होते, अपितु उन का यह कथन कि लो हमने इस रसूल को फांसी दे दी बतौर उपहास के था और इस उपहास का आधार तौरात का वह कथन था जहाँ लिखा है कि जो फांसी दिया जाए वह मलऊन (धिक्कृत) है अर्थात ख़ुदा तआला की दया और सानिध्य से दूर और पृथक है। यहूदियों के इस कथन से उद्देश्य यह था कि यदि ईसा इब्ने मरयम सच्चा रसूल होता तो हम उसे फांसी देने पर कदापि समर्थ न हो सकते, क्योंकि तौरात उच्च स्वर से कह रही है कि सलीब पर मृत्यु पाने वाला ला'नती होता है।) अत: पवित्र क़ुर्आन इस आयत के पश्चात् फ़रमाता है कि यहूदियों ने वास्तव में मसीह इब्ने मरयम को क़त्ल नहीं किया और न फांसी दी अपितु उनके हृदयों में यह विचार सन्देह के तौर पर है यक़ीनी नहीं तथा ख़ुदा तआला ने उन्हें स्वयं ही सन्देह में डाल दिया है ताकि उनकी मूर्खता उन पर तथा अपनी सामर्थ्य उन पर प्रकट करे। फिर फ़रमाया कि वे लोग जो इस सन्देह में पड़े हुए हैं कि कदाचित् मसीह सलीब पर ही मर गया हो इस बात पर उन के पास कोई

निश्चित और यक़ीनी सबूत नहीं केवल एक भ्रम का अनुसरण कर रहे हैं और वे भली भांति जानते हैं कि उन्हें निश्चित तौर पर इस बात का ज्ञान नहीं कि मसीह फांसी दिया गया अपितु निश्चित बात यह है कि वह **मृत्यु पा गया** और अपनी स्वाभाविक मृत्यु से मरा और ख़ुदा तआला ने उसे सच्चे लोगों की भांति अपनी तरफ उठा लिया और ख़ुदा अज़ीज़ है उन्हें इज़्ज़त देता है, जो उसके हो रहते हैं और नीतिवान है अपनी नीतियों से उन लोगों को लाभान्वित करता है जो उस पर भरोसा करते हैं। फिर फ़रमाया कि कोई अहले किताब (यहूदी-ईसाई) में से ऐसा नहीं जो हमारे उपरोक्त वर्णन पर (जो हमने अहले किताब के विचारों के बारे में प्रकट किया है) ईमान न रखता हो इससे पूर्व कि वह इस वास्तविकता पर ईमान लाए कि मसीह अपनी स्वाभाविक मौत से मर गया, अर्थात् हम जो पहले वर्णन कर आए हैं कि कोई अहले किताब इस बात पर हार्दिक विश्वास नहीं रखता कि वास्तव में मसीह सलीब पर मर गया है, क्या ईसाई और क्या यहूदी केवल सन्देह और भ्रम के तौर पर उन के सलीब पर मरने का विचार रखते हैं। हमारा यह वर्णन सही है, इसका कोई इन्कार नहीं कर सकता। हां उसकी मृत्यु के बारे में उन्हें खबर नहीं कि उसकी कब मृत्यु हुई। अत: हम उसकी सूचना देते हैं कि उसकी मृत्यु हो गई तथा उसकी रूह सम्मान पूर्वक हमारी ओर उठाई गई।

यहां स्मरण रहे कि ख़ुदा तआला का यह कहना कि कोई अहले किताब में से ऐसा नहीं कि हमारे इस बयान पर जो उन के विचारों के बारे में हमने प्रकट किया कि ईमान न रखता हो। यह एक चमत्कारिक बयान है और यह इस बात के अनुकूल है जैसा कि यहूदियों को फ़रमाया था :-

فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صَادِقِيْنَ*

अत: इस कहने का उद्देश्य यह था कि वास्तव में यहूदियों का यह बयान कि हमने निश्चय ही मसीह को फांसी दे दी जिस से यह परिणाम निकालना अभीष्ट था कि नाऊज़ुबिल्लाह मसीह मलऊन है और सच्चा नबी नहीं है और ऐस ही ईसाइयों

* अलबक़रह आयत 95

का यह बयान कि वास्तव में मसीह सलीब की मौत से मर गया जिससे यह परिणाम निकालना अभीष्ट था कि मसीह ईसाइयों के पाप के लिए कफ़्फ़ारा हुआ। ये दोनों विचार यहूदियों और ईसाइयों के ग़लत हैं और इन दोनों गिरोहों में से किसी को इन विचारों पर हार्दिक विश्वास नहीं अपितु उनका हार्दिक ईमान केवल इसी पर है कि मसीह निश्चित तौर पर सलीब पर नहीं मरा। इस वर्णन से ख़ुदा तआला का उद्देश्य यह था कि यहूदियों और ईसाइयों की ख़ामोशी से न्याय-प्रिय निश्चित तौर पर समझ लें कि इस बारे में उनके पास सन्देह के अतिरिक्त कुछ नहीं तथा यहूदी और ईसाई जो इस आयत के लिए न आए तो उसका कारण यह था कि वे भली भांति जानते थे कि यदि हम सामने आए और वे दावे किए जो हमारे हृदय में नहीं तो हम बहुत बदनाम किए जाएंगे तथा कोई ऐसा निशान ख़ुदा तआला की ओर से प्रकट हो जाएगा जिससे हमारा झूठा होना सिद्ध हो जाएगा, इसलिए उन्होंने सांस तक न लिया और चुप रहे। यद्यपि वे भली-भांति जानते थे कि हमारी इस ख़ामोशी से हमारा मान लेना सिद्ध हो जाएगा, जिससे एक ओर तो इन काफ़िरों की आस्था का समूल विनाश होगा और दूसरी ओर यह यहूदी आस्था मिथ्या सिद्ध हो जाएगी कि मसीह ख़ुदा तआला का सच्चा और सत्यानिष्ठ रसूल नहीं तथा और उनमें से नहीं जिनका ख़ुदा तआला की ओर सम्मानपूर्वक रफ़ा होता है, परन्तु **मुहम्मद रसूलुल्लाह** सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सत्य की चमकती हुई तलवार उनकी आंखों को चुंधिया रही थी। अत: जैसा कि उन्हें पवित्र क़ुर्आन में कहा गया कि यदि तुम सच्चे हो तो मृत्यु की इच्छा करो भय के कारण किसी ने यह इच्छा न की। इसी प्रकार यहाँ भी भय के कारण इन्कार न कर सके अर्थात् यह दावा न कर सके कि हम तो मसीह के सलीब पर मरने पर विश्वास रखते हैं, हमें क्यों अविश्वास करने वालों में शामिल किया जाता है ? अत: उनका नबी के युग में खामोश रहना हमेशा के लिए सबूत हो गया और उनके स्वयं के बनाए हुए का प्रभाव भावी पीढ़ी पर भी पड़ा क्योंकि उनके पूर्वज और बाद में आने वालों के लिए बतौर वकील के होते हैं और उनकी गवाहियां भावी नस्लों को स्वीकार करना पड़ती हैं।

अब पाठक समझ सकते हैं ख़ुदा तआला ने जो इस बहस को उठाया कि मसीह सलीब पर नहीं मरा अपितु अपनी स्वाभविक मृत्यु से मरा। इस सम्पूर्ण बहस का आशय यही था कि मसीह के सलीब पर मरने से दो अलग-अलग अर्थ अर्थात् यहूदी और ईसाई दो पृथक-पृथक परिणाम अपने उद्देश्य के समर्थन में निकालते थे। यहूदी कहते थे कि मसीह सलीब पर मारा गया तथा तौरात के अनुसार सलीब पर मारा गया ला'नती होता है अर्थात् ख़ुदा के सानिध्य से दूर और रफ़ा (उठाया जाना) के सम्मान से वंचित रहता है और नुबुव्वत की प्रतिष्ठा इस अपमानपूर्ण अवस्था से श्रेष्ठ और उच्चतर है और ईसाइयों ने यहूदियों की ला'नत और फटकार से घबराकर यह उत्तर बना लिया था कि मसीह का सलीब पर मरना उसके लिए हानि का कारण नहीं अपितु उसने यह ला'नत अपने ज़िम्मे इसलिए ले ली ताकि पापियों को ला'नत से मुक्ति दिलाए। अत: ख़ुदा तआला ने ऐसा निर्णय किया कि इन दोनों वर्गों के उपरोक्त बयानों को समाप्त कर दिया और स्पष्ट कह दिया कि इन दोनों वर्गों में से किसी को मसीह के सलीब पर मरने पर विश्वास नहीं और यदि है तो सामने आए अत: वे पलायन कर गए और किसी ने सांस भी न ली और यह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और पवित्र क़ुर्आन का एक चमत्कार है जो इस युग के मूर्ख मौलिवों की दृष्टि से छुपा हुआ है और मुझे उस हस्ती की सौगन्ध है कि जिसके अधिकार में मेरे प्राण हैं कि **अभी और इसी समय उपरोक्त कथित सच्चाई मुझ पर कश्फ़ी तौर पर प्रकट की गई है और उसी सच्चे शिक्षक की शिक्षा से मैंने वह सब लिखा है जो अभी लिखा है। इस पर ख़ुदा का आभार और प्रशंसा।**

यदि बौद्धिक तौर पर भी देखा जाए तो इस वर्णन के सत्य पर प्रत्येक सद्बुद्धि साक्ष्य देगी, क्योंकि ख़ुदा तआला का कलाम निरर्थक बातों से पवित्र होना चाहिए और प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि यदि इस बहस में से महान उद्देश्य मध्य में न हों तो यह सम्पूर्ण वर्णन ऐसा निरर्थक होगा जिसकी कोई वास्तविकता नहीं, क्योंकि इस अवस्था में यह विवाद कि कोई नबी फांसी से मरा अथवा अपनी

स्वभाविक मृत्यु से मरा सर्वथा सारहीन विवाद है जिस से कोई उत्तम परिणाम नहीं निकल सकता। अत: ध्यानपूर्वक देखना चाहिए कि ख़ुदा तआला अपने इस जोश से भरपूर तथा वैभवपूर्ण वर्णन में कि किसी यहूदी या ईसाई को निश्चित तौर पर मसीह की सलीब पर मौत पर ईमान नहीं कौन सा बड़ा उद्देश्य रखता है ? तथा कौन सा भारी लक्ष्य उसके दृष्टिगत है जिसे सिद्ध करने के लिए उसने यहूदी और ईसाई दोनों वर्गों को खामोश और निरुत्तर कर दिया है। अत: यही उद्देश्य है जिसे ख़ुदा तआला ने **अपने इस विनीत बन्दे पर कि जो मौलवियों की दृष्टि में काफ़िर और अधर्मी है अपने विशेष कश्फ़ के माध्यम से स्पष्ट कर दिया है :-**

اے خدا جانم براسرارت فدا   اُمّیاں راے دہی فہم و ذکا

در جہانت ہیچو من امّی کجاست   در جہالت ہا مرا نشو و نماست

کِر مکے بودم مرا کردی بشر   من عجب تراز مسیحے بے پدر

अनुवाद - (1) हे ख़ुदा मेरे प्राण तेरे रहस्यों पर न्योछावर कि तू अपनढ़ों को बुद्धि और विवेक प्रदान करता है।

(2) तेरे इस संसार में मुझ जैसा अनपढ़ कहां है, मेरा तो पालन-पोषण ही अनाड़ियों के मध्य हुआ है।

(3) मैं एक तुच्छ कीड़ा था तूने मुझे इन्सान बना दिया मैं तो बिना बाप मसीह से भी विचित्र हूँ। (अनुवादक)

और यदि यह प्रश्न किया जाए कि मसीह की सलीब पर मृत्यु न होने पर इंजील के अनुसार कोई प्रमाण पैदा हो सकता है या नहीं अर्थात् यह सिद्ध हो सकता है या नहीं कि यद्यपि प्रत्यक्षतया तो मसीह को सलीब ही दी गई परन्तु वह कार्यवाही सम्पन्न न हो सकी हो अर्थात् मसीह की उस सलीब के कारण मृत्यु न हुई हो।

तो इसका उत्तर यह है कि चारों इंजीलें पवित्र क़ुर्आन के इस कथन पर कि **مَاقَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ** स्पष्ट साक्ष्य प्रस्तुत कर रही हैं क्योंकि पवित्र क़ुर्आन का उद्देश्य **مَا صَلَبُوْهُ** के शब्द से यह कदापि नहीं है कि मसीह सलीब पर चढ़ाया

नहीं गया अपितु उद्देश्य यह है कि सलीब पर चढ़ाने का जो मूल उद्देश्य था अर्थात् क़त्ल करना ख़ुदा तआला ने उससे मसीह को सुरक्षित रखा और यहूदियों की ओर से उस कृत्य से अर्थात् जान-बूझ कर मार डालने में **अग्रसरता** तो हुई, परन्तु ख़ुदा की युक्ति और क़ुदरत से वह कृत्य, सम्पन्न न हो सका और जैसा कि इंजीलों में लिखा है कि घटना-चक्र इस प्रकार हुआ कि जब पैलातूस से यहूदियों ने मसीह को सलीब देने के लिए मांगा जो कि उस समय हवालात में था तो पैलातूस ने बहुत प्रयत्न किया कि मसीह को किसी प्रकार छोड़ दे, क्योंकि वह स्पष्ट तौर पर देखता था कि मसीह निर्दोष है, परन्तु यहूदियों ने बहुत आग्रह किया कि इसे सलीब दे, सलीब दे तथा समस्त यहूदी मौलवी और विद्वान एकत्र होकर सामूहिक तौर पर कहने लगे कि यह काफ़िर है और तौरात के आदेशों से लोगों, को विमुख करता है। पैलातूस अपने हृदय में अच्छी तरह जानता था कि इन आंशिक मतभेदों के कारण एक सत्यनिष्ठ व्यक्ति को क़त्ल कर देना निस्सन्देह बहुत बड़ा पाप है इसी कारण वह बहाने पैदा करता था कि किसी प्रकार मसीह को छोड़ दिया जाए, परन्तु मौलवी लोग कब पीछे हटने वाले थे उन्होंने तुरन्त एक बात बना ली कि यह व्यक्ति यह भी कहता है कि मैं यहूदियों का बादशाह हूँ और गुप्त तौर पर क़ैसर की सरकार से बाग़ी है। यदि तूने इसे छोड़ दिया तो फिर स्मरण रख कि एक **देश-द्रोही** को तूने शरण दी। तब पैलातूस डर गया क्योंकि वह क़ैसर के अधीन था, परन्तु विदित होता है कि फिर भी उस निर्दोष के खून करने से भयभीत रहा तथा उसकी पत्नी ने स्वप्न देखा कि यह व्यक्ति सच्चा है यदि पैलातूस इसे क़त्ल करेगा तो फिर इसी में उसका विनाश है। अत: पैलातूस इस स्वप्न को सुनकर और भी ढीला हो गया। इस स्वप्न पर विचार करने से जो इंजील में लिखा है प्रत्येक दर्शक समझ सकता है कि ख़ुदा का इरादा यही था कि मसीह को क़त्ल हो जाने से बचाए। अत: ख़ुदाई इच्छा का प्रथम संकेत उस स्वप्न से ही निकलता है इस पर **भली भांति विचार करो**।

तत्पश्चात् ऐसा हुआ कि पैलातूस ने अन्तिम निर्णय के लिए सभा बुलाई और यहूदी अधम मौलवियों और विद्वानों को बहुत समझाया कि मसीह के खून से रुक

जाओ परन्तु वह अड़े रहे, अपितु चिल्ला-चिल्ला कर बोलने लगे कि अवश्य सलीब दिया जाए धर्म से विमुख हो गया है। तब पैलातूस ने पानी मंगाकर हाथ धोए कि देखो कि मैं इसके ख़ून से हाथ धोता हूँ तब सब यहूदियों और धर्माचार्यों और मौलवियों ने कहा कि इसका खून हम पर और हमारी औलाद पर।

तत्पश्चात् मसीह उनके सुपुर्द किया गया और उसे कोड़े लगाए गए और उसके लिए जितनी गालियाँ सुनना, तथा धर्माचार्यों और मौलवियों के संकेत से थप्पड़ खाना, उपहास उड़ाया जाना उसके लिए नियति थी उसने सब देखा, अन्तत: सलीब देने के लिए तैयार हुए, यह शुक्रवार का दिन था और तीसरे पहर का समय और संयोग से यह यहूदियों का ईद-ए-फसह का दिन भी था, इसलिए फ़ुरसत बहुत कम थी और आगे 'सब्त' का दिन आने वाला था जिस का प्रारंभ सूर्यास्त से ही समझा जाता था, क्योंकि यहूदी लोग मुसलमानों की भांति पहली रात को अगले दिन के साथ सम्मिलित कर लेते थे और यह एक धार्मिक आदेश था कि सब्त में कोई शव सलीब पर लटका न रहे। तब यहूदियों ने बड़ी शीघ्रता से मसीह को दो चोरों के साथ सलीब पर चढ़ा दिया ताकि सांय-काल से पूर्व ही लाशें उतारी जाएं, परन्तु संयोग से उसी समय एक सख़्त आंधी आई जिससे घोर अंधकार हो गया। यहूदियों को यह चिन्ता हो गई कि अब यदि आंधी में ही शाम हो गई तो हम इस अपराध को करने वाले हो जाएंगे जिस का अभी वर्णन किया गया है। अत: उन्होंने इस चिन्ता के कारण तीनों सलीबों पर चढ़ाए व्यक्तियों को सलीब से उतार लिया। और स्मरण रखना चाहिए कि यह सर्व सम्मति से स्वीकार कर लिया गया है कि वह सलीब इस प्रकार की नहीं थी जैसा कि आजकल की फांसी होती है और गले में रस्सी डालकर एक घंटे में काम समाप्त कर दिया जाता है अपितु इस प्रकार की कोई रस्सी गले में नहीं डाली जाती थी केवल कुछ अंगों में कीलें ठोकते थे और फिर सावधानी को दृष्टिगत रखते हुए सलीब पर चढ़ाए लोगों को तीन-तीन दिन तक भूखा-प्यासा लटकने देते थे तत्पश्चात् उसकी हड्डियां तोड़ीं जाती थीं और फिर विश्वास किया जाता था कि अब सलीब पर चढ़ाया गया व्यक्ति मर गया, परन्तु ख़ुदा तआला की

क़ुदरत से मसीह के साथ ऐसा न हुआ। ईद-ए-फ़सख़ की फ़ुरसत का अभाव और तीसरे पहर का थोड़ा सा समय और आगे 'सब्त' के दिन का भय और फिर आंधी का आना, अचानक ऐसे कारण उत्पन्न हो गए जिसके कारण कुछ मिनटों में ही मसीह को सलीब से उतार लिया गया और दोनों चोर भी उतारे गए और फिर हड्डियों को तोड़ने के समय ख़ुदा तआला ने अपनी पूर्ण क़ुदरत का यह नमूना दिखाया कि पैलातूस के कुछ सिपाही जिन्हें गुप्त तौर पर स्वप्न का भयानक परिणाम समझाया गया था वे उस समय उपस्थित थे जिनका उद्देश्य यही था कि किसी प्रकार यह विपत्ति मसीह के सर से टल जाए, ऐसा न हो कि मसीह के क़त्ल होने के कारण वह स्वप्न सच्चा हो जाए जो पैलातूस की पत्नी ने देखा था और ऐसा न हो कि पैलातूस किसी विपत्ति में पड़े। अत: पहले उन्होंने चोरों की हड्डियां तुड़वाईं और चूंकि आंधी तीव्र थी तथा अंधकार हो गया था और वायु में तीव्रता थी, इसलिए लोग घबराए हुए थे कि शीघ्र घरों को जाएं। अत: इस अवसर पर सिपाहियों का खूब दाव लगा। जब चारों की हड्डियां तोड़ चुके और मसीह की बारी आई तो एक सिपाही ने यों ही हाथ रखकर कह दिया कि यह तो मर चुका है, कुछ आवश्यक नहीं कि इसकी हड्डियाँ तोड़ी जाएं और एक ने कहा कि मैं ही इस लाश को दफ़्न कर दूँगा और आंधी ऐसी चली कि उसने यहूदियों को धक्के देकर उस स्थान से निकाला। अत: इस प्रकार मसीह जीवित बच गया, फिर वह हवारियों को मिला और उन से मछली लेकर खाई, परन्तु यहूदी जब घरों में पहुँचे और आंधी जाती रही तो अपनी अपूण कार्यवाही से सन्देह में पड़ गए और सिपाहियों के बारे में भी उनके हृदयों में शंका उत्पन्न हो गई। अत: अब तक ईसाइयों और यहूदियों की यही दशा है कि उनमें से कोई शपथ खा कर तथा स्वयं के लिए विपत्ति और अज़ाब का वादा देकर नहीं कह सकता कि मुझे वास्तव में यही विश्वास है कि मसीह निश्चित रूप से क़त्ल किया गया। ये सन्देश उसी समय उत्पन्न हो गए थे और पुलिस ने अपनी चालाकी से यह प्रयास भी किया कि इन सन्देहों को समाप्त कर दे, परन्तु वे और भी बढ़ते गए। अत: पुलिस के कुछ पत्रों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि मसीह को जब

सलीब से उतारा गया तो उसके जीवित होने पर एक और पक्का सबूत यह पैदा हो गया कि उसकी पसली के छेदने से उसमें से तुरन्त खून जारी हो गया। यहूदी अपनी जल्दबाज़ी के कारण और ईसाई इंजील के वर्तमान वृत्तान्त के अनुसार इस सन्देह में भागीदार हैं तथा कोई ईसाई ऐसा नहीं जो इंजील पर विचार करे फिर विश्वसनीयता के साथ यह आस्था रखे कि मसीह वस्तव में सलीब द्वारा मृत्यु पा गया अपितु उनके हृदय आज तक संदेह में ग्रस्त हैं और वे जिस कफ़्फ़ारा को लिए फिरते हैं उसका आधार रेत के ऐसे ढेर पर है जिसे इन्जील के वर्णनों ने ही बरबाद कर दिया है। अत: पवित्र क़ुर्आन की उपरोक्त कथित आयत अर्थात् यह कि :-

اِنۡ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤۡمِنَنَّ بِهٖ قَبۡلَ مَوۡتِهٖ (अन्निसा - 160)

भविष्यवाणी के रूप में नहीं जैसा कि हमारे मौलवी भाई जो बहुत ज्ञानवान होने का दम भरते हैं विचार कर रहे हैं अपितु यह तो उस घटना का वृत्तान्त है जो आँहज़रत स.अ.व. के समय में मौजूद था अर्थात् यहूदियों और ईसाइयों के विचारों की जो उस समय स्थिति थी अल्लाह तआला सबूत को पूर्ण करने के लिए उन्हें सुना रहा है और उनके हृदयों का यथार्थ उन पर प्रकट कर रहा है तथा उन्हें दोषी ठहरा कर उन्हें यह समझा रहा है कि यदि हमारा यह वर्णन सही नहीं है तो सामने आकर स्पष्ट तौर पर दावा करो कि यह ख़बर गलत बताई गई है और हम लोग सन्देह और शंकाओं में ग्रस्त नहीं हैं अपितु निश्चित तौर पर समझ बैठे हैं कि मसीह वास्तव में सलीब पर मृत्यु पा गया है।

यहां यह भी स्मरण रहे कि आयत के अन्त में जो यह शब्द आया है कि قَبۡلَ مَوۡتِهٖ इस कलाम से अल्लाह तआला का आशय यह है कि कोई व्यक्ति मसीह के सलीब पर न मरने से यह परिणाम न निकाल ले कि चूँकि मसीह सलीब के द्वारा नहीं मारा गया, इसलिए वह मरा भी नहीं। अत: वर्णन किया कि मृत्यु से पूर्व का समस्त घटनाक्रम स्वाभाविक है। इस से उस मृत्यु का न होना न निकाल लेना कि तत्पश्चात् मसीह को स्वाभाविक तौर पर जिसका सामना करना पड़ा जैसे इस आयत में यों फ़रमाता है कि यहूदी और ईसाई हमारे इस बयान पर सर्वसम्मत्ति से ईमान

रखते हैं कि मसीह निश्चित तौर पर सलीब की मृत्यु से नहीं मरा मात्र संदेह और संशय है। अत: इससे पूर्व कि वे लोग मसीह की स्वाभाविक मृत्यु पर ईमान लाएं जो वास्तव में हो चुकी है उस मृत्यु की घटना पर उन्हें ईमान है क्योंकि जब मसीह सलीब पर नहीं मरा जिस से यहूदी और ईसाई अपने-अपने उद्देश्यों के हितार्थ पृथक-पृथक परिणाम निकालना चाहते थे। अत: उनके लिए उसकी स्वाभाविक मृत्यु पर भी ईमान लाना आवश्यक है, क्योंकि पैदा होने के लिए मृत्यु अनिवार्य है। अत: قَبْلَ مَوْتِهٖ (क़ब्ला मौतिही) की व्याख्या यह है कि قَبْلَ اِيْمَانِهٖ بِمَوْتِهٖ (क़ब्ला ईमानिही बि मौतिही)।

दूसरी प्रकार से आयत के अर्थ ये भी हैं कि मसीह तो अभी मरा भी नहीं था कि तभी से यहूदी और ईसाइयों के हृदयों में से सन्देहपूर्ण विचार चले आते हैं। अत: इन अर्थों के अनुसार भी पवित्र क़ुर्आन स्पष्ट संकेत के तौर पर मसीह की मृत्यु की गवाही दे रहा है। अतएव पवित्र क़ुर्आन में तीन स्थानों पर मसीह की मृत्यु हो जाने का वर्णन किया गया है। खेद कि हमारे मौलवी साहिबान इन स्थानों पर दृष्टि नहीं डालते और उनमें से कुछ बड़ी चतुराई से कहते हैं कि हमने यह तो स्वीकार किया कि पवित्र क़ुर्आन यही फ़रमाता है कि मसीह मर गया। परन्तु क्या अल्लाह तआला इस बात पर समर्थ नहीं कि पुन: जीवित करके उसे संसार में लाए। अत: इन मौलवियों के ज्ञान और विवेक पर रोना आता है। हे सज्जनो ! हमने यह भी माना कि ख़ुदा तआला प्रत्येक बात पर सामर्थ्यवान है, चाहे तो समस्त नबियों को जीवित कर दे, परन्तु आप से प्रश्न तो यह किया था कि पवित्र क़ुर्आन तो हज़रत मसीह को मृत्यु तक पहुँचाकर फिर ख़ामोश हो गया है, यदि आप की दृष्टि में पवित्र क़ुर्आन में कोई ऐसी आयत है जिसमें यह वर्णन हो कि मसीह को मृत्यु देने के पश्चात् फिर हमने जीवित कर दिया तो वह आयत प्रस्तुत कीजिए अन्यथा पवित्र क़ुर्आन से यह विरोधात्मक मुक़ाबला है कि वह तो मसीह का मृत्यु पा जाना वर्णन करे और आप उसके विपरीत यह दावा करें कि मसीह मरा नहीं अपितु जीवित है।

कुछ उलमा बड़ी सादगी से यह बहाना प्रस्तुत कर देते हैं कि اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ के आगे जो رَافِعُكَ (राफ़िओका) और بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ पवित्र क़ुर्आन में

आया है इस से जीवित हो जाना सिद्ध होता है तथा कहते हैं कि यह अर्थ सही नहीं तो फिर मसीह के अतिरिक्त अन्य किसी के पक्ष में رَافِعُكَ (राफ़िओका) का शब्द क्यों नहीं आया, परन्तु मैं इसी पुस्तक **इज़ाला औहाम** में इन समस्त भ्रमों का विस्तृत उत्तर लिख चुका हूँ कि رَفَع (रफ़ा) से अभिप्राय आत्मा का सम्मानपूर्वक उठाया जाना है जैसा कि मृत्योपरान्त क़ुर्आन और हदीस सही के स्पष्ट आदेशानुसार प्रत्येक मोमिन की आत्मा सम्मानपूर्वक ख़ुदा तआला की ओर उठाई जाती है और मसीह के رَفع (रफ़ा) का यहाँ जो वर्णन किया गया है उसका कारण यह है कि मसीह को लोगों को सत्य का निमंत्रण देने में असफलता रही और यहूदियों ने सोचा कि यह झूठा है क्योंकि आवश्यक था कि सच्चे मसीह से पूर्व एलिया आकाश से उतरे। अत: उन्होंने इस से इन्कार किया कि मसीह का अन्य नबियों की भांति सम्मानपूर्वक अल्लाह तआला की ओर رَفع (रफ़ा) हो, अपितु ख़ुदा की पनाह उसे ला'नती ठहराया। ला'नती उसे कहते हैं जो सम्मानूपर्वक رَفع (रफ़ा) से वंचित रहे। अत: ख़ुदा तआला की यही इच्छा थी कि यह आरोप मसीह के ऊपर से दूर कर दे। अत: प्रथम उसने इस आधार को असत्य ठहराया, जिस आधार पर मसीह का ला'नती होना अधम यहूदियों और ईसाइयों ने अपने-अपने हृदयों में समझ लिया था। तत्पश्चात् स्पष्ट तौर पर यह भी वर्णन कर दिया कि मसीह नाऊज़ुबिल्लाह (ख़ुदा की शरण) लानती नहीं कि رَفع (रफ़ा) से रोका गया है अपितु उसका رَفع सम्मानपूर्वक हुआ है। अत: मसीह संसार में एक असहाय की भांति थोड़े दिन का जीवन व्यतीत करके चला गया और यहूदी उनको अपमानित करने के लिए सीमा से गुज़र गए, उसकी मां पर अनुचित आरोप और लांछन लगाए तथा उसे मलऊन ठहराया और सत्यनिष्ठ लोगों के रफा رفع की भांति उसके रफ़ा से इन्कार किया और न केवल यहूदियों ने अपितु ईसाई भी अन्तिम कथित विचार में ग्रस्त हो गए और कमीनगी से अपनी मुक्ति का यह बहाना निकाला कि एक सच्चे को ला'नती ठहराएं और यह न सोचा कि यदि मसीह के ला'नती होने पर ही मुक्ति

निर्भर है और तब ही मुक्ति प्राप्त होती है कि मसीह जैसे एक सत्यनिष्ठ, सदाचारी ख़ुदा तआला के प्रिय को ला'नती ठहराया जाए। अत: अफ़सोस है ऐसी मुक्ति पर, इस से तो नर्क हज़ार गुना उत्तम है। अत: जब मसीह के लिए यहूदी और ईसाई दोनों सदस्यों ने ऐसी अशिष्टता और अनादरपूर्ण सम्बोधन उचित रखे तो ख़ुदा तआला के स्वाभिमान ने न चाहा कि उस सदाचारी के सम्मान को बिना साक्ष्य के छोड़ दे। अत: उसने इंजील में पूर्व वर्णित वादे के अनुसार हमारे सरदार एवं पेशवा ख़तमुल मुर्सलीन को अवतरित करके मसीह के सम्मान और रफ़ा की पवित्र क़ुर्आन में साक्ष्य दी। رفع (रफ़ा) का शब्द पवित्र क़ुर्आन में कई स्थान पर आया है। एक स्थान पर 'बलअम' के वृत्तान्त में भी है कि हमने उसका रफ़ा चाहा, परन्तु वह पृथ्वी की ओर झुक गया और उसने एक असफल नबी के बारे में कहा

وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا*

वास्तव में यह भी एक ऐसा नबी है जिसकी रफ़अत से लोगों ने इन्कार किया था और चूंकि इस विनीत का भी मसीह की तरह अनादर किया गया है कोई काफ़िर कहता है, कोई नास्तिक और कोई बेईमान नाम रखता है। उलेमा और मौलवी सलीब देने को भी तैयार हैं जैसा कि मियाँ अब्दुल हक़ अपने विज्ञापन में लिखते हैं कि इस व्यक्ति के लिए मुसलमानों को कुछ हाथ से भी काम लेना चाहिए, परन्तु पैलातूस से अधिक यह सरकार निर्दोष का ध्यान रखती है और पैलातूस की तरह प्रजा के भय में नहीं आती, परन्तु हमारी इस क़ौम ने अपमानित करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी ताकि दोनों ओर से समरूपता सिद्ध करके दिखा दे, उन्हें इल्हाम भी हो गए कि **यह नारकी है आख़िर नर्क में जाएगा और उन में सम्मिलित नहीं होगा जिनका रफ़ा ख़ुदा तआला की ओर सम्मानपूर्वक होता है। अत: आज मैं उस इल्हाम के अर्थ समझा जो इस से कई वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में लिखा जा चुका है और वह यह है :-**

---

* मरयम - 58

يَاعِيْسٰى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَيَّ وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ
فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ (आले इमरान - 56)

अर्थात् ये मौलवी साहिबान अब्दुर्रहमान और अब्दुल हक़ तो मुझे निश्चित नारकी बनाते हैं, परन्तु उनके इस बयान से दस वर्ष पूर्व ख़ुदा तआला मुझे स्वर्ग में रहने वाला होने का आश्वासन दे चुका है और जिस प्रकार यहूदियों ने विचार किया था कि नाऊज़ुबिल्लाह ईसा मसीह ला'नती है और सम्मानपूर्वक कदापि उसका रफ़ा नहीं होगा, उनके खण्डन में यह आयत उतरी थी اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَيَّ इसी प्रकार ख़ुदा तआला ने यहाँ भी पूर्व से ही अपने अनादि ज्ञान के कारण यह इल्हाम बतौर भविष्यवाणी इस विनीत के हृदय पर इल्क़ा* किया। चूँकि वह जानता था कुछ वर्षों के पश्चात मियां अब्दुल हक़ और मियाँ अब्दुर्रहमान इस विनीत को उसी प्रकार ला'नती ठहराएंगे जिस प्रकार यहूदियों ने हज़रत मसीह को ठहराया था। इसलिए उसने घटना पूर्व इस भविष्यवाणी को बराहीन अहमदिया में लिखवाकर जैसे समस्त संसार में प्रसिद्ध कर दिया ताकि उसकी क़ुदरत और नीति प्रकट हो और ताकि यह भी विदित हो कि जिस प्रकार मसीह के युग के मौलवियों ने उसे ला'नती समझा और उसके जन्नती होने से इन्कार किया और ख़ुदा तआला की ओर उसका सम्मानपूर्वक 'रफ़ा' होना तथा सदात्माओं की जमाअत में उसका जा मिलना स्वीकार न किया, इसी प्रकार इस विनीत के ही धर्म के मानने वाले मौलवियों ने इस निष्कर्म को ख़ुदा तआला की दया से वंचित करना चाहा और बहुत बड़े पापी मोमिन का भी कुछ सम्मान होता है, परन्तु उन्होंने कुछ भी परवाह न करते हुए सामान्य तौर पर ये भाषण दिए और पत्र लिखे और विज्ञापन प्रकाशित किए। अत: ख़ुदा तआला ने इस समानता को उत्पन्न करने के लिए उन से यह काम लिया है तथा नारकी या स्वर्गीय होने की वास्तविकता तो मृत्योपरान्त ही प्रत्येक को ज्ञात होगी जिस समय

---

* परोक्ष से किसी बात का हृदय में आना - अनुवादक

कुछ लोग सैकड़ों उत्कंठाओं के साथ नर्क में पड़े हुए कहेंगे :-

مَالَنَا لَا نَرٰی رِجَالًا کُنَّا نَعُدُّھُمۡ مِّنَ الۡاَشۡرَار*

عیب رنداں مکن اے زاہد پاکیزہ سرشت   توچہ دانی کہ پس پردہ چہ خوب است وچہ زشت

अब सारांश यह है कि जो रफ़ा का शब्द हज़रत मसीह के लिए पवित्र क़ुर्आन में आया है वही शब्द इल्हाम के तौर पर इस विनीत के लिए भी ख़ुदा तआला ने फ़रमाया है :-(आले इमरान - 56)

यदि कोई यह कठिनाई प्रस्तुत करे कि मसीह तो इंजील में कहता है कि आवश्यक है कि मैं मारा जाऊँ और तीसरे दिन जीवित हो जाऊँ तो उपरोक्त वर्णन में एकरूपता क्योंकर हो। इसका उत्तर यह है कि इस मौत से वास्तविक मौत अभिप्राय नहीं है अपितु कल्पित मौत अभिप्राय है। यह सामान्य मुहावरा है कि जो व्यक्ति मृत्यु के निकट होकर फिर बच जाए उसके बारे में यही कहा जा सकता है कि वह नए सिरे से जीवित हुआ। मसीह पर जो यह संकट आया कि वह सलीब पर चढ़ाया गया और उसके अंगों में कीलें ठोकी गईं जिनसे वह मूर्च्छावस्था में हो गया। यह संकट मौत से कुछ कम न था और सामान्य तौर पर यह मुहावरा है कि जो व्यक्ति ऐसे संकट तक पहुँच कर बच जाए उसके बारे में यही कहते हैं कि वह मरकर बचा और यदि वह कहे कि मैं तो नए सिरे से जीवित हुआ हूँ तो इस बात को कुछ झूठ या अतिशयोक्ति नहीं कहा जा सकता।

यदि यह प्रश्न हो कि कौन सी अनुकूलता मसीह के शब्द की इस बात पर है कि इस मौत से अभिप्राय वास्तविक मृत्यु नहीं है तो इसका उत्तर यह है कि यह अनुकूलता भी स्वयं हज़रत मसीह ने वर्णन की है जबकि यहूदी धर्माचार्य, फ़रीसी (प्राचीन परम्परावादी यहूदी वर्ग) और यहूदियों के मौलवी लोग एकत्र होकर उसके पास गए कि तूने मसीह होने का दावा तो किया परन्तु हम इस दावे को बिना चमत्कार के क्योंकर स्वीकार कर लें तो हज़रत मसीह ने उन धर्माचार्यों और

* सूरह साद - 63

मौलवियों को उत्तर दिया कि इस युग के हरामकार (दुराचारी) लोग मुझ से चमत्कार मांगते हैं, परन्तु उनको यूनुस नबी के चमत्कार के अतिरिक्त अन्य कोई चमत्कार नहीं दिखाया जाएगा।

अर्थात् यह चमत्कार दिखाया जाएगा कि जिस प्रकार यूनुस नबी तीन दिन मछली के पेट में रहा और मरा नहीं, इसी प्रकार ख़ुदा की क़ुदरत से मसीह भी तीन दिन तक जीवित अवस्था में क़ब्र में रहेगा और नहीं मरेगा।

अब विचार करना चाहिए कि यदि मसीह के उपरोक्त शब्दों को वास्तविक मृत्यु पर चरितार्थ कर लें तो यूनुस से समानता का यह चमत्कार झूठा हो जाएगा, क्योंकि यूनुस मछली के पेट में जीवित अवस्था में रहा था न कि मृत होकर। अत: यदि मसीह मर गया था और मृत्यु की अवस्था में क़ब्र में दाख़िल किया गया तो उसे यूनुस की इस घटना से क्या समानता और मुर्दों की जीवितों से क्या एकरूपता। अत: यह पर्याप्त और पूर्ण अनुकूलता है कि मसीह का यह कहना कि मैं तीन दिन तक मरूँगा यथार्थ पर चरितार्थ नहीं अपितु इस से अभिप्राय कल्पनात्मक मृत्यु है जो कि अत्यधिक मूर्च्छावस्था थी।

यदि यह बहाना प्रस्तुत हो कि मसीह ने फांसी दिए जाने के समय यह भी कहा था कि आज में स्वर्ग में प्रवेश करूँगा। अत: इससे स्पष्टता के साथ मसीह का मृत्यु पाना सिद्ध होता है। अत: स्पष्ट हो कि मसीह का स्वर्ग में प्रवेश करने और ख़ुदा तआला की ओर उठाए जाने का वादा दिया गया था, परन्तु वह किसी अन्य समय पर निर्भर था जो मसीह पर प्रकट नहीं किया गया था, जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में :-

اِنِّیۡ مُتَوَفِّیۡکَ وَرَافِعُکَ اِلَیَّ (आले इमरान - 56)

आया है। अत: उस अत्यधिक घबराहट के समय में मसीह ने विचार किया कि शायद वह वादा आज ही पूरा होगा। चूंकि मसीह एक मनुष्य था और उसने देखा कि मेरी मौत के समस्त सामान एकत्र हो गए हैं इसलिए उसने सामानों को देखते हुए विचार किया कि कदाचित् आज मैं मर जाऊँगा। अत: भयानक तेजस्वी झलक की वर्तमान परिस्थिति को देख कर उस पर मानवीय-कमज़ोरी का प्रभुत्व हो गया

था तभी उसने उदास मन से कहा ईली ईली लिमा सबक़तनी अर्थात् हे मेरे ख़ुदा, हे मेरे ख़ुदा ! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया और क्यों उस वादे को न निभाया जो तूने पहले से कर रखा था कि तू मरेगा नहीं अपितु तेरा हाल यूनुस की तरह होगा। यदि कहा जाए कि ख़ुदा तआला के सुरक्षा के वादे में मसीह ने क्यों सन्देह किया। अत: स्पष्ट हो कि यह सन्देह इन्सानी कमज़ोरी के कारण है। प्रतापी झलक के सामने इन्सानियत का कुछ बस नहीं चलता। प्रत्येक नबी को ख़ुदा तआला यह दिन दिखाता है प्रथम वह अपने नबी को कोई ख़ुशख़बरी का वादा देता है और फिर जब वह नबी उस वादे पर प्रसन्न हो जाता है तो परीक्षा के तौर पर चारों ओर से ऐसी बाधाएं खड़ी कर देता है कि जो निराशा और निष्फलता को सिद्ध करती हों अपितु निश्चय और विश्वास की सीमा तक पहुँच गई हों। जैसा कि ख़ुदा तआला ने एक ओर तो हमारे सरदार हज़रत नबी करीम स.अ.व. को बद्र की लड़ाई में विजय और सहायता की शुभ सूचना दी तथा दूसरी ओर जब युद्ध का समय आया तो मालूम हुआ कि विरोधियों की संख्या इतनी अधिक है कि सामान्यतया सफलता की आशा नहीं, तब आँहज़रत स.अ.व. को अत्यन्त बेचैनी और व्याकुलता हुई और ख़ुदा के समक्ष रो-रो कर दुआएं कीं कि हे मेरे ख़ुदा! इस जमाअत को विजय प्रदान कर और यदि तू विजय प्रदान नहीं करेगा और नष्ट कर देगा तो फिर प्रलय तक कोई तेरी उपासना नहीं करेगा। अत: ये शब्द वास्तव में इस बात को सिद्ध नहीं करते कि आँहज़रत स.अ.व. ख़ुदा की भविष्यवाणी के बारे में संदेह ग्रस्त हो गए थे अपितु वर्तमान परिस्थितियों को विपरीत देख कर ख़ुदा की निस्पृहता पर दृष्टि थी और उसके प्रतापी भय से प्रभावित हो गए थे और वास्तव में आँहज़रत स.अ.व. को पवित्र क़ुर्आन में प्रत्येक स्थान पर कहा गया है कि तू हमारे वादे में सन्देह न कर वे समस्त स्थान इसी प्रकार के हैं जिनमें प्रत्यक्ष तौर पर असफलता की परिस्थितियां उत्पन्न हो गई थीं तथा विपरीत परिस्थितियों ने अपना ऐसा भयानक चेहरा दिखाया था कि जिसे देख कर प्रत्येक मनुष्य मानवीय-कमज़ोरी के कारण हैरान हो जाता है। अत: इन अवसरों पर नबी करीम (स.अ.व.) को बतौर सांत्वना के फ़रमाया गया कि यद्यपि

परिस्थिति नितान्त गंभीर है, परन्तु तू इन्सानी कमज़ोरी के कारण सन्देह मत कर अर्थात् यह विचार मत कर कि कदाचित् इस भविष्यवाणी के कुछ और अर्थ होंगे।

इस पुस्तक का लेखक ऐसी परस्थिति में स्वयं अनुभव प्राप्त है। तीन वर्ष का समय हुआ है कि कुछ प्रेरणाओं के कारण जिनका विस्तृत वर्णन 10 जुलाई 1888 ई. के विज्ञापन में है, ख़ुदा तआला ने भविष्यवाणी के तौर पर इस विनीत पर प्रकट किया है **मिर्ज़ा अहमद बेग पुत्र मिर्ज़ा गामां बेग़ होशियारपुरी** की बड़ी पुत्री अन्ततः तुम्हारे निकाह में आएगी और वे लोग बहुत शत्रुता करेंगे और बहुत से विघ्न आएंगे और प्रयास करेंगे कि ऐसा न हो, परन्तु अन्ततः ऐसा ही होगा और फ़रमाया कि ख़ुदा तआला हर प्रकार से उसे तुम्हारी ओर लाएगा कुंवारी होने की अवस्था में अथवा विधवा करके तथा प्रत्येक विघ्न को मध्य से हटा देगा और इस कार्य को अवश्य पूर्ण करेगा। कोई नहीं जो उसे रोक सके। अतः इस भविष्यवाणी का विस्तृत वर्णन उसकी विशेष अवधि के साथ तथा उसके निर्धारित समयों के और उसके उन समस्त संसाधनों के साथ जिन्होंने मानव-शक्ति से उसे बाहर कर दिया है। 10 जुलाई 1888 ई. के विज्ञापन में लिखा है और वह विज्ञापन सामान्य तौर पर प्रकाशित होकर प्रसारित हो चुका है जिसके बारे में आर्यों के कुछ न्याय-प्रिय लोगों ने भी गवाही दी कि यदि यह भविष्यवाणी पूरी हो जाए तो निस्सन्देह यह ख़ुदा तआला का काम है और यह भविष्यवाणी एक कट्टर विरोधी क़ौम के मुक़ाबले पर है जिन्होंने मानो शत्रुता और बैर की तलवारें खींची हुई हैं और प्रत्येक को जिसे इनकी सूचना होगी वह इस भविष्यवाणी की श्रेष्ठता भली भांति समझता होगा । हमने इस भविष्यवाणी को यहाँ विस्तारपूर्वक नहीं लिखा ताकि बार-बार किसी संबंधित भविष्यवाणी के हृदय को ठेस न पहुँचे, परन्तु जो व्यक्ति विज्ञापन पढ़ेगा वह चाहे जैसा भी द्वेष रखने वाला होगा उसे स्वीकार करना पड़ेगा कि इस भविष्यवाणी का विषय मानव शक्ति से बाहर है और इस बात का उत्तर भी पूर्ण और निरुत्तर करने वाला उसी विज्ञापन से मिलेगा कि ख़ुदा तआला ने क्यों यह भविष्यवाणी वर्णन की और इसमें क्या हित हैं और क्यों और किस सबूत से यह मानव-शक्तियों से श्रेष्ठतम है।

अब यहाँ अभिप्राय यह है कि जब यह भविष्यवाणी मालूम हुई और अभी पूर्ण नहीं हुई थी (जैसा कि अब तक भी जो 16, अप्रैल 1891 ई. है पूर्ण नहीं हुई) तो इसके पश्चात् इस विनीत को एक बड़ा रोग लगा यहां तक कि स्थिति मृत्यु के निकट तक पहुँच गई अपितु मृत्यु को सामने देख कर वसीयत भी कर दी गई। उस समय जैसे यह भविष्यवाणी आंखों के सामने आ गई और यह ज्ञात हो रहा था कि अब अन्तिम क्षण हैं और कल जनाज़ा निकलने वाला है। तब मैंने इस भविष्यवाणी के बारे में सोचा कि कदाचित् इसके और अर्थ होंगे जो मैं समझ नहीं सका। तब उसी मृत्यु के निकट के क्षणों में मुझे इल्हाम हुआ :-

اَلْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ

अर्थात् यह बात तेरे रब की ओर से सच है तू क्यों सन्देह करता है। अत: मुझ पर उस समय यह भेद खुला कि ख़ुदा तआला ने क्यों अपने रसूले करीम को पवित्र क़ुर्आन में कहा कि तू सन्देह मत कर। अत: मैंने समझ लिया कि यह आयत वास्तव में ऐसे ही अवसर से विशेष्य है जैसा कि तंगी और निराशा का यह समय मुझ पर है तथा मेरे हृदय में विश्वास हो गया कि जब नबियों पर ऐसा ही समय आ जाता है जैसा मुझ पर आया तो ख़ुदा तआला ताज़ा विश्वास दिलाने के लिए उन्हें कहता है कि तू क्यों संदेह करता है और संकट ने तुझे क्यों निराश कर दिया। तू निराश मत हो।

(5) प्रश्न - इब्ने मरयम (मरयम के पुत्र) के उतरने का वर्णन जो हदीसों में मौजूद है पूर्वजों और बाद में आने वालों में से किसी ने इस की यह व्याख्या नहीं की कि इब्ने मरयम के शब्द से जो प्रत्यक्ष तौर पर हज़रत ईसा मसीह समझा जाता है वास्तव में यह अभिप्राय नहीं है अपितु उसका कोई समरूप अभिप्राय है। इसके अतिरिक्त इस बात पर सर्वसम्मति है कि स्पष्ट आदेशों को प्रत्यक्ष पर चरितार्थ किया जाए और शक्तिशाली लक्षणों के बिना आन्तरिक अर्थों की ओर नहीं फेरना चाहिए।

उत्तर - अत: स्पष्ट हो कि पूर्वजनों और बाद में आने वालों के लिए यह एक ईमानी बात थी कि भविष्यवाणी को संक्षिप्त तौर पर मान लिया जाए। उन्होंने यह

दावा कदापि नहीं किया कि हम इस भविष्यवाणी की तह तक पहुँच गए हैं और वास्तव में इब्ने मरयम से इब्ने मरयम ही अभिप्राय है। यदि उनकी ओर से ऐसा दावा होता तो वे दज्जाल के मर जाने को स्वीकार करने वाले न होते और न पवित्र क़ुर्आन के उन स्थानों को जिनमें मसीह की मृत्यु का वर्णन है यों ही बहस से बाहर समझ कर खामोशी धारण करते और यदि कल्पना के तौर पर यह भी मान लें कि सहाबा में से कोई यही समझ बैठा था कि इब्ने मरयम से इब्ने मरयम ही अभिप्राय है तो तब भी कोई समस्या खड़ी नहीं होती, क्योंकि भविष्यवाणियों के समझने में इस से पूर्व कि भविष्यवाणी प्रकटन में आए प्राय: नबियों से भी गलती हुई है। अत: यदि किसी सहाबी ने गलती की तो कौन से अधिक आश्चर्य की बात है। हमारे रसूलुल्लाह स.अ.व. की बुद्धि और विवेक समस्त उम्मत की सामूहिक बुद्धि और विवेक से अधिक है, अपितु यदि हमारे भाई शीघ्रता से जोश में न आ जाएं तो मेरा तो यही मत है जिसे सबूत के साथ प्रस्तुत कर सकता हूँ कि समस्त नबियों की बुद्धि और विवेक आपकी बुद्धि और विवेक के बराबर नहीं, परन्तु फिर भी कुछ भविष्यवाणियों के बारे में आँहज़रत स.अ.व. ने स्वयं इक़रार किया है कि मुझ से उन की मूल वास्तविकता समझने में गलती हुई। मैं इससे पूर्व कई बार लिख चुका हूँ कि आँहज़रत स.अ.व. ने स्पष्ट तौर पर फ़रमा दिया था कि मेरी मृत्यु के पश्चात् मेरी पत्नियों में से पहले वह मुझ से मिलेगी जिसके हाथ लम्बे होंगे। अत: आँहज़रत स.अ.व. के सामने ही पत्नियों ने परस्पर हाथ नापने आरंभ कर दिए। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी इस भविष्यवाणी की मूल वास्तविकता की ख़बर न थी इसलिए मना न किया कि तुम्हारा यह विचार ग़लत है, अन्तत: उस ग़लती को भविष्यवाणी के प्रकटन के समय ने निकाला। यदि समय उन मोमिनों की माताओं अर्थात नबी (स.अ.व.) की पत्नियों को ढील देता और वे सबकी सब हमारे इस युग तक जीवित रहतीं तो बिल्कुल स्पष्ट है कि सहाबा के युग से लेकर आज तक समस्त उम्मत की इसी बात पर सहमति हो जाती कि पहले लम्बे हाथ वाली पत्नी की मृत्यु होगी और फिर प्रकटन के समय जब किसी और ही पत्नी की मृत्यु

हो जाती जिसके हाथ अन्य पत्नियों की तुलना में लम्बे न होते तो इससे पूर्ण सहमति को कैसी शर्मिन्दगियां उठानी पड़तीं और किस प्रकार अकारण नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपमान कराते तथा अपने ईमान को सन्देहों में डालते।

इस समय मुझे अपने एक मित्र की बात याद आई है ख़ुदा उसे रहमत की चादर से ढक ले। उस स्वर्गीय का नाम **हाफ़िज़ हिदायत अली** था और यह किसी समय में गुरदासपुर ज़िले के अतिरिक्त असिसटेन्ट थे और लम्बे समय तक बटाला में तहसीलदार भी रहे। एक जलसे में उन्होंने कहा कि अन्तिम युग के बारे में कुछ बातों के प्रकट होने का जितना वादा दिया गया है तथा कुछ भविष्यवाणियां की गई हैं। हमें उनके बारे में यह धारणा नहीं रखना चाहिए कि वह अपने बाह्य रूप में ही प्रकटति होंगी ताकि यदि भविष्य में उनकी वास्तविकता किसी अन्य प्रकार पर प्रकट हो तो हम ठोकर न खाएं और हमारा ईमान सुरक्षित रह जाए और कहा कि कदाचित् हम उसी युग में पैदा हुए हैं जिसे आज से तेरह सौ से कुछ कम वर्ष पूर्व अन्तिम युग के नाम से याद किया गया है। इसलिए कोई आश्चर्य नहीं कि उनमें से कुछ भविष्यवाणियां हमारे ही जीवन में प्रकट हो जाएं। अत: हमें संक्षिप्त ईमान के दृढ़ सिद्धान्त पर चलना चाहिए और किसी भाग पर ऐसा बल नहीं देना चाहिए जैसा कि उस व्यवस्था में दिया जाता है कि जब हम एक वास्तविकता की तह तक पहुँच जाते हैं। लेख समाप्त हुआ।

तथा यह वास्तविक तौर पर बिल्कुल सत्य है कि उम्मत की सर्वसम्मति का भविष्यवाणियों के मामलों से कुछ सरोकार नहीं और हमारे वर्तमान मौलवियों को यह बहुत बड़ा धोखा लगा है कि वे उन भविष्यवाणियों को भी जिनकी वास्तविकता अभी परोक्ष के परदे में है सर्वसम्मति के शिकंजे में क्यों कसना चाहते हैं।

वास्तव में भविष्यवाणियाँ गर्भवती स्त्रियों के समान होती हैं और उदाहरणतया एक गर्भवती स्त्री के बारे में यह तो कह सकते हैं कि उसके पेट में कोई बच्चा अवश्य है और निश्चित ही वह नौ माह और दस दिन के अन्दर-अन्दर पैदा ही हो

जाएगा, परन्तु यह नहीं कह सकते कि वह क्या रूप रखता है और उसकी शारीरिक स्थिति कैसी है और उसके चेहरे के निशान कैसे हैं, लड़का है या निस्सन्देह लड़की है।

कदाचित् यहाँ किसी हृदय में यह शंका जन्म ले कि यदि भविष्यवाणियों का यही हाल है तो विश्वसनीय न रही और इस योग्य न रहीं कि नबी की नुबुव्वत की सच्चाई पर बतौर सबूत और यक़ीनी गवाह समझी जाएं अथवा किसी इन्कारी विरोधी के सामने प्रस्तुत की जाएं। इस बात का उत्तर यह है कि भविष्यवाणियां कभी अपने प्रत्यक्ष पर ही पूर्ण हो जाती हैं और कभी आन्तरिक तौर पर उन का प्रकटन होता है। इस से ख़ुदाई भविष्यवाणियों की श्रेष्ठता में कुछ भी अन्तर नहीं आता बल्कि सूक्ष्मदर्शियों की नज़र में और भी श्रेष्ठता प्रकट होती है। क्या यदि एक दार्शनिक का कथन कोई मोटी बुद्धि वाला उल्टे तौर पर समझ ले और फिर उसके उचित अर्थ जो नितान्त तर्कपूर्ण और प्रमाणित हैं प्रकट हो जाएं तो उस ग़लती से उन सही अर्थों को कुछ क्षति पहुँच सकती है ? कदापि नहीं।

इसके अतिरिक्त भविष्यवाणियों में एक समानता बहरहाल ऐसी रहती है कि चाहे वे वास्तविकता पर चरितार्थ समझी जाएं और या अन्ततः कोई काल्पनिक अर्थ निकल आएं वही समानता स्पष्ट तौर पर प्रकट कर देती है कि यह भविष्यवाणी वास्तव में सच्ची और मानव-शक्तियों से श्रेष्ठतम है।

इसके अतिरिक्त भविष्यवाणियों को विरोधी के समक्ष दावे के तौर पर प्रस्तुत किया जाता है वह अपने अन्दर एक विशेष प्रकार का प्रकाश और स्पष्टता रखती हैं तथा मुल्हम लोग ख़ुदा के दरबार में विशेष तौर पर ध्यान करके उनका अधिकतर प्रकटन करा लेते हैं, परन्तु साधारणतया भविष्यवाणियों के बहुत से गुप्त पहलू होते हैं और यह सर्वथा मूर्खतापूर्ण हठधर्मी है कि अकारण ऐसा विचार किया जाए कि भविष्यवाणी प्रत्यक्ष अर्थों पर चरितार्थ हुआ करती है। जिस व्यक्ति ने यहूदियों और ईसाइयों की किताबों को देखा होगा वह इस बात को भली भांति जानता होगा कि उन किताबों में भविष्यवाणियों में कितने अधिक रूपकों का प्रयोग किया है यहाँ तक

कि कुछ स्थानों में दिन का वर्णन करके उससे एक वर्ष अभिप्राय लिया है। वास्तव में भविष्यवाणियां कश्फ़ों का एक प्रकार हैं जो उस झरने से निकलती हैं जो रूपकों के रंग से भरा हुआ है। अपने स्वप्नों को देखो, क्या कोई सीधे तौर पर भी स्वप्न आता है परन्तु न होने के बराबर। इसी प्रकार ख़ुदा तआला कश्फ़ों को रूपकों के लिबास से सजाकर अपने नबियों के माध्यम से प्रकट करता है। अत: इस सच्चाई को स्वीकार करने का नाम नास्तिकता रखना स्वयं नास्तिकता है क्योंकि नास्तिकता उसी को कहते हैं कि एक अर्थ को उसके मूल अर्थ से फेरा जाए। अत: जबकि ख़ुदा तआला के प्रकृति के नियम ने कश्फ़ और सच्चे स्वप्नों के लिए यही नियम निर्धारित कर दिया है कि वे प्राय: रूपकों पे परिपूर्ण होते हैं तो इस नियम से अर्थ को फेरना और यह दावा करना कि भविष्यवाणियाँ हमेशा प्रत्यक्ष पर ही चरितार्थ होती हैं यदि नास्तिकता नहीं तो और क्या है ? रोज़ा-नमाज़ की भांति भविष्यवाणी को भी एक प्रकटित वास्तविकता समझना भारी भूल और बहुत बड़ा धोखा है। ये तो वे आदेश हैं जो आँज़रत स.अ.व. ने करके दिखाए और उन्हें पूर्णतया स्पष्ट कर दिया, परन्तु क्या इन भविष्यवाणियों के पक्ष में भी आँहज़रत स.अ.व. ने यही फ़रमाया है कि ये पूर्ण रूप से प्रकटित हैं और उनमें ऐसी कोई वास्तविकता और विवरण गुप्त नहीं जो प्रकटन के समय समझ में आ सके। यदि ऐसी कोई सही हदीस मौजूद है तो क्यों प्रस्तुत नहीं की जाती। आप लोग हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अधिक ज्ञान और प्रतिभा नहीं रखते। सही बुख़ारी की हदीस को देखो कि जब आँहज़रत स.अ.व. को एक कच्चे रेशम के टुकड़े पर हज़रत आइशा सिद्दीक़ा का चित्र दिखाया गया कि यह तेरे निकाह में आएगी तो आपने कदापि यह दावा न किया कि आइशा से वास्तव में आइशा ही अभिप्राय है अपितु आपने फ़रमाया कि यदि वास्तव में इस आइशा से आइशा ही अभिप्राय है तो वह मिल ही जाएगी अन्यथा संभव है कि आइशा से अभिप्राय कोई अन्य स्त्री हो। आप ने यह भी फ़रमाया कि मुझे अबू जहल के लिए अंगूर का एक गुच्छा दिया गया, परन्तु इस भविष्यवाणी का चरितार्थ इकरिमा (अबू जहल का पुत्र) निकला और जब तक ख़ुदा तआला ने

आप पर विशेष तौर पर किसी भविष्यवाणी के समस्त पहलू प्रकट नहीं किए तब तक आपने उस के किसी विशेष पहलू का कभी दावा न किया।

आप लोग जानते हैं कि जब अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि. ने अबू जहल से शर्त लगाई तथा पवित्र क़ुर्आन की वह भविष्यवाणी शर्त का आधार रखी कि :-

الٓـمّٓ ۚ﴿۲﴾ غُلِبَتِ الرُّوۡمُ ۙ﴿۳﴾ فِیۡۤ اَدۡنَی الۡاَرۡضِ وَ ہُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ غَلَبِہِمۡ سَیَغۡلِبُوۡنَ ۙ﴿۴﴾ فِیۡ بِضۡعِ سِنِیۡنَ*

और तीन वर्ष का समय ठहराया तो आप भविष्यवाणी के अवस्था को देखकर तुरन्त दूरदर्शिता को काम में लाए और शर्त में कुछ परिवर्तन करने के लिए अबू बकर सिद्दीक़ को आदेश दिया कि بِضۡعِ سِنِیۡنَ (कुछ वर्षों) का शब्द संक्षिप्त है और प्राय: नौ वर्ष तक बोला जाता है।

इसी प्रकार आप ने उम्मत को समझाने के लिए कुछ भविष्यववाणियों के समझने में स्वयं अपनी ग़लती को भी प्रकट किया। अब क्या यह नबी करीम (स.अ.व.) की शिक्षा प्रर्याप्त नहीं और क्या यह शिक्षा उच्च स्वर में नहीं बता रही कि भविष्यवाणियों पर सामान्य रूप पर ईमान लाओ और उनकी मूल वास्तविकता को ख़ुदा के सुपुर्द कर दो। उम्मते मुहम्मदिया में फूट मत डालो और संयम धारण कर लो।

हे सज्जनो ! अकेले-अकेले अपने घरों में बैठकर विचार करो और अपने विस्तरों पर लेटे हुए गंभीरता से मेरी बात पर विचार करो, क़ब्रिस्तान में जाओ और अपनी मृत्यु को स्मरण करके स्वयं के लिए एक शुद्ध दृष्टि लाओ और भली भांति देख लो कि संयम का कौन सा मार्ग है तथा सावधानी और ख़ुदा से भय के कौन से उपाय हैं। यदि आप पर यह बात संदिग्ध है जो मैंने प्रस्तुत की है तो क्या आप लोगों की इस बात में भी कुछ हानि है कि आप संक्षिप्त रूप से अपने ईमान पर दृढ़ रहें और उसके गुप्त विवरणों में अकारण हस्तक्षेप न करें और मुझे मेरे ख़ुदा तआला के

---

* अर्रूम 2 से 5

साथ छोड़ दें। मैं किसी पर ज़बरदस्ती नहीं करता एक ख़ुदाई आदेश को पहुँचाना है कोई सुने या न सुने। यदि ख़ुदा तआला किसी को विश्वास प्रदान करे और वह मुझे पहचान ले और मेरी बातों को स्वीकार कर ले तो वह विशेष तौर पर मेरा भाई है और निस्सन्देह उसे अपने ईमान का प्रतिफल मिलेगा, परन्तु यदि आप लोग इतना भी करें कि इस भविष्यवाणी की गुप्त बारीकियों को ख़ुदा के सुपुर्द रखें और ईमान की सीमा पर ठहरे रहें और अकारण पूर्ण ज्ञान का दावा न करें तो तनिक विचार करो कि इसमें आप के लिए ख़राबी क्या है और ख़ुदा के निकट कौन सी पकड़ है ? क्या यदि आप लोग ऐसा करें तो इससे आप की पकड़ होगी ? परन्तु यदि आप लोग अपने ईमान की सीमा से बढ़कर कदम उठाएं और वह दावा करें जिसका आप को ज्ञान नहीं दिया गया तो निस्सन्देह इस अनुचित हस्तक्षेप पर आप से पूछ-ताछ होगी।

हे सज्जनो ! मौलवी साहिबान ! लोगों को क्यों परीक्षा में डालते हो और क्यों अपने ज्ञान से बढ़कर दावे करते हो। यदि इब्ने मरयम के उतरने की हदीस में कोई विरोधात्मक समानता न रही होती और केवल इल्हाम ही के माध्यम से एक मुसलमान इसके अर्थ आप पर खोलता कि यहां इब्ने मरयम (मरयम का बेटा) से वास्तव में इब्ने मरयम अभिप्राय नहीं है तब भी इस के मुकाबले पर आप लोगों पर अनिवार्य नहीं था कि इब्ने मरयम से वास्तव में वही इब्ने मरयम है, क्योंकि कश्फ़ों में रूपकों का प्रभुत्व है और वास्तविकता से फेरने के लिए ख़ुदा का इल्हाम शक्तिशाली अनुकूलता का काम दे सकता है और आप सुधारणा के लिए मामूर हैं।

परन्तु यहाँ केवल इल्हाम ही नहीं अन्य शक्तिशाली लक्षण भी विद्यमान हैं। क्या यह लक्षण कम है कि ख़ुदा तआला ने मसीह की मृत्यु के बारे में तो कई आयतें वर्णन कीं, परन्तु उनके जीवित रहने और जीवित उठाए जाने पर संकेत तक नहीं किया। क्या यह लक्षण कम है कि आँहज़रत स.अ.व. ने आने वाले इब्ने मरयम की वह आकृति वर्णन नहीं की जो जाने वाले की वर्णन की। क्या यह बुद्धि संगत नहीं कि आँहज़रत स.अ.व. ने आने वाले मसीह को एक उम्मती ठहराया और उसे काबे की परिक्रमा (तवाफ़) करते देखा।

यह बहाना कि इस बात पर सर्वसम्मत्ति हो चुकी है कि स्पष्ट आदेशों को प्रत्यक्ष पर चरितार्थ किया जाए अर्थात् क़ुर्आन तथा हदीस से प्रत्यक्ष अर्थ लेने चाहिए। अत: स्पष्ट हो कि यह बहाना वास्तव में ऐसा बहाना है जिससे हमारे विरोधियों पर हमारे समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण होता है, क्योंकि यह अवैध मार्ग उन्हीं लोगों ने धारण किया है कि ख़ुदा के कलाम के नितान्त स्पष्ट आदेशों को बिना किसी अनुकूलता के आन्तरिक की ओर फेर रहे हैं। पवित्र क़ुर्आन ने अपने पच्चीस स्थानों में تَوَفِّیْ के शब्द को आत्मा (रूह) के निकालने के अर्थों में प्रयोग किया है और स्पष्ट तौर पर जगह-जगह प्रकट कर दिया है कि تَوَفِّیْ के अर्थ ये हैं कि रूह को निकाल लिया जाए और शरीर को छोड़ दिया जाए, परन्तु ये लोग (ख़ुदा इन्हें हिदायत दे) तेईस स्थानों में तो यही उपरोक्त वर्णित अर्थ करते हैं तथा दो विवादास्पद स्थानों में जहाँ मसीह की मृत्यु की चर्चा है अपनी ओर से और अर्थ गढ़ते हैं। अत: देखना चाहिए कि प्रत्यक्ष स्पष्ट आदेशों से इन्होंने मुख फेरा या हमने ? हां इब्ने मरयम के उतरने से जिनका हदीसों में वर्णन है हमारे निकट वास्तव में इब्ने मरयम अभिप्राय नहीं है परन्तु इससे अनिवार्य नहीं होता कि हमने स्पष्ट बात को प्रत्यक्ष से आन्तरिक की ओर फेरा है अपितु ख़ुदा के इल्हाम से दृष्टि हटाते हुए यह रूपक इसलिए स्वीकार करना पड़ा कि क़ुर्आन और हदीसों के स्पष्ट आदेश इसे वास्तविकता (प्रत्यक्ष) पर चरितार्थ करने से रोकते हैं। अत: हम बार-बार इन स्पष्ट सबूतों का वर्णन कर चुके हैं। वर्णन की पुनरावृत्ति कहां तक करें।

(6) प्रश्न - मसीह मौऊद के साथ हदीसों में मसील का शब्द कहीं देखा नहीं जाता अर्थात् यह किसी स्थान पर नहीं लिखा कि मसील मसीह इब्ने मरयम आएगा अपितु यह लिखा है कि मसीह इब्ने मरयम आएगा।

उत्तर - अत: विचार करना चाहिए कि जब ख़ुदा तआला ने आने वाले मसीह के समरूप (मसील) का नाम इब्ने मरयम ही रख दिया तो फिर वह उसे मसील (समरूप) इब्ने मरयम करके क्यों लिखता। उदाहरणतया तुम विचार करो कि जो लोग अपने बच्चों के नाम मूसा, दाऊद और ईसा इत्यादि रखते हैं यद्यपि उनका

उद्देश्य तो यही होता है कि वह नेकी और भलाई में उन नबियों के समरूप हो जाएं, परन्तु फिर वे अपने बच्चों को इस प्रकार से तो नहीं पुकारते कि हे मसीले मूसा, हे मसीले दाऊद, हे मसीले ईसा अपितु मूल नाम ही बतौर शगुन पुकारा जाता है। अत: क्या जो बात मनुष्य शगुन के तौर पर कर सकता है वह सर्वशक्तिमान ख़ुदा नहीं कर सकता, क्या उसे शक्ति नहीं कि एक व्यक्ति की आध्यात्मिक स्थिति को दूसरे व्यक्ति के समरूप करके वही नाम उसका भी रख दे ? क्या उसने इसी आध्यात्मिक अवस्था के कारण हज़रत यह्या का नाम एलिया नहीं रख दिया था ? क्या इसी आध्यात्मिक समानता के कारण हज़रत मसीह इब्ने मरयम का नाम तौरात 'पैदायश' बाब-49 सैला नहीं रखा गया और सैला यहूदा इब्ने या'क़ूब अलैहिस्सलाम के पोते का नाम था। यहूदा को इसी बाब में मसीह इब्ने मरयम के आने के इन शब्दों में ख़ुशखबरी दी गई कि **यहूदा शासन की बागडोर से वंचित न होगा जब तक सैला न आए,** यह नहीं कहा गया कि जब तक इब्ने मरयम न आए। चूँकि मसीह इब्ने मरयम के उस ख़ानदान से पैदा होने के कारण यहूदा का पोता ही था, इस कारण उसका नाम सैला ही रख दिया गया। इसी तौरात पैदायश बाब-48, आयत-15 में या'क़ूब की इस दुआ का उल्लेख किया है कि उसने यूसुफ़ के लिए बरकत चाही और यूसुफ़ के लड़कों के लिए दुआ करके कहा कि **वह ख़ुदा जिसने जीवन पर्यन्त आज के दिन तक मेरी रखवाली करने वाले इन युवाओं को बरकत दे तथा जो मेरे और मेरे पूर्वजों अब्राहाम और इस्हाक़ का नाम है जो उनका रखा जाए।** अत: अल्लाह तआला के इस अनादि नियम से इन्कार नहीं हो सकता कि आध्यात्मिक समानता के कारण जो एक का नाम है वह दूसरे का रख देता है। इब्राहीम के धर्म से संबंध रखने वाला उसके निकट इब्राहीम है और संबंध रखने वाला उसके निकट इब्राहीम है और मूसा के धर्म से संबंध रखने वाला उसके निकट मूसा है तथा ईसा का धर्मावलम्बी उसके निकट ईसा है और जो इन सभी धर्मों से भाग प्राप्त है वह इन समस्त नामों का चरितार्थ है। हां यदि कोई बात बहस के योग्य है तो यह है कि इब्ने मरयम के शब्द को उसके प्रत्यक्ष और शीघ्र समझ आने

वाले अर्थों से क्यों फेरा जाए? तो इसका उत्तर यह है कि पवित्र क़ुर्आन और रसूले करीम स.अ.व. की हदीस पूर्ण स्पष्टता के साथ सुदृढ़ और निश्चित है कि मसीह इब्ने मरयम ख़ुदा का रसूल मृत्यु को प्राप्त हुआ और ख़ुदा तआला की ओर उठाया गया और अपने भाइयों में जा मिला तथा अन्तिम युग के मान्य रसूल स.अ.व. ने अपनी मे'राज की रात में शहीद नबी यह्या के साथ दूसरे आसमान में उसे देखा अर्थात् गुज़रे हुए तथा मृत्यु प्राप्त लोगों की जमाअत में उसे पाया। पवित्र क़ुर्आन और सही हदीस निरन्तर यह साक्ष्य दे रही है कि मसील (समरूप) इब्ने मरयम तथा अन्य समरूप भी आएंगे, परन्तु किसी स्थान पर यह नहीं लिखा कि कोई पूर्व या मृत्यु-प्राप्त नबी भी दोबारा संसार में आ जाएगा। अत: यह बात नितान्त स्पष्ट तौर पर सिद्ध है कि इब्ने मरयम से वह ख़ुदा का रसूल इब्ने मरयम अभिप्राय नहीं है जिसकी मृत्यु हो चुकी है और मृत्यु प्राप्त जमाअत में जा मिला तथा ख़ुदा तआला की इस अद्भुत नीति पर भी दृष्टि डालो कि उस ने आज से लगभग दस वर्ष पूर्व इस विनीत का नाम ईसा रखा और ख़ुदा की कृपा और उसकी दी हुई सामर्थ्य से बराहीन अहमदिया में स्वयं छपवाकर समस्त संसार में इस नाम को प्रसिद्ध कर दिया। अब एक दीर्घ अन्तराल के पश्चात अपने विशेष इल्हाम द्वारा प्रकट किया कि यह वही ईसा है जिसके आने का वादा था। लोग इस नाम को बराहीन अहमदिया में निरन्तर दस वर्ष तक पढ़ते रहे और ख़ुदा तआला ने दस वर्ष तक इस दूसरे इल्हाम को जो पहले इल्हाम के लिए बतौर विवरण था गुप्त रखा ताकि उसके नीति-संगत कार्य एक विचार शील व्यक्ति की दृष्टि में बनावट से रहित सिद्ध हो जाएं क्योंकि बनावट का सिलसिला इतना लम्बा नहीं हो सकता जिसकी नींव एक दीर्घ अवधि से पूर्व ही रखी गई हो। हे प्रतिभावान लोगो अच्छी तरह विचार करो।

(7) प्रश्न - यह जो वर्णन किया गया है कि संभव है कि मसीह के अन्य समरूप भी आएं तो क्या उनमें से मौऊद (जिसका वादा दिया गया) एक ही है जो आप हैं या सब मौऊद होंगे और हम किन-किन को सच्चा मौऊद मानें?

उत्तर - अत: स्पष्ट हो कि वह मौऊद मसीह जिसका आगमन इंजील और सही

हदीसों के अनुसार आवश्यक तौर पर निश्चित हो चुका था वह तो अपने समय पर अपने निशानों के साथ आ गया और आज वह वादा पूरा हो गया जो ख़ुदा तआला की पवित्र भविष्यवाणियों में पहले से किया गया था, परन्तु यदि किसी के हृदय में यह दुविधा पैदा हो कि कुछ हदीसों की इस आने वाले मसीह की अवस्था से प्रत्यक्षतया अनुकूलता प्रतीत नहीं होती जिस प्रकार मुस्लिम की दमिश्क़ वाली हदीस। प्रथम तो उसका यही उत्तर है कि वास्तव में ये सभी रूपक हैं और कश्फ़ों में रूपकों की बहुतात होती है, वर्णन कुछ किया जाता है और उससे अभिप्राय कुछ और लिया जाता है। अत: यह एक बड़ा धोखा और ग़लती है कि उन्हें प्रत्यक्ष पर अनुकूल करने के लिए प्रयास किया जाए और या स्वयं को इस असमंजस, चिन्ता और आश्चर्य में डाल दिया जाए कि ये निशान प्रत्यक्ष तौर पर अनुकूल क्यों नहीं होते। क्या यह सच नहीं कि इन हदीसों की व्याख्या के समय विरोधी सदस्य को भी अधिकांश स्थानों में व्याख्या (तावीलों) की आवश्यकता पड़ी है और बड़ी आडम्बरयुक्त व्याख्याएं (तावीलें) की हैं। जैसे मसीह इब्ने मरयम का यह उत्तम कार्य जो वर्णन किया गया है कि वह संसार में आकर सुअरों का वध करेगा। देखना चाहिए कि इसकी व्याख्या में धर्माचार्यों ने शब्दों को प्रत्यक्ष से आन्तरिक की ओर फेरने के लिए कितना अधिक प्रयास किया है। इसी प्रकार दज्जाल का काबे का तवाफ़ (परिक्रमा) करने के सन्दर्भ में बुद्धि से दूर तावीलों (व्याख्याओं) से काम लिया है। अत: यदि विरोधी सदस्य इन स्थानों में तावीलों से पूर्णतया पृथक रहते तो यद्यपि वे हमें तावील कर्त्ता (बात को प्रत्यक्ष अर्थों से फेर कर अन्य अर्थों में प्रयोग करने वाला) समझने में एक सीमा तक असमर्थ ठहरते, परन्तु अब वे स्वयं ही इस मार्ग पर चल कर हमें किस मुंह से दोषी ठहराते हैं। सत्य तो यह है कि वास्तव में ये कश्फ़ी इबारतें रूपकों से भरी हैं, इसलिए किसी सदस्य के लिए संभव नहीं कि उन्हें हर जगह प्रत्यक्ष पर चरितार्थ कर सके। लम्बे हाथों की हदीस लम्बे हाथ करके बता रही है कि इन कश्फ़ों में प्रत्यक्ष पर बल मत दो अन्यथा धोखा खाओगे, परन्तु कोई उसके निर्देश को स्वीकार नहीं करता। क़ब्र के अज़ाब से संबंधित हदीसों में अधिकतर यह वर्णन पाया जाता है कि उनमें पापी

होने की स्थिति में बिच्छू होंगे, सांप होंगे, और आग होगी। यदि हदीसों को प्रत्यक्ष पर ही चरितार्थ करना है तो ऐसी कुछ क़ब्रें खोदो तथा उनमें सांप और बिच्छू दिखाओ।

तत्पश्चात् हम यह भी कहते हैं कि यदि प्रत्यक्ष पर ही इन कुछ हदीसों को जो अभी हमारी वर्तमान स्थिति से अनुकूलता नहीं रखतीं चरितार्थ किया जाए तब भी कोई हानि की बात नहीं, क्योंकि संभव है कि ख़ुदा तआला इन भविष्यवाणियों को इस विनीत के एक ऐसे पूर्ण अनुयायी के द्वारा किसी युग में पूरा कर दे जो ख़ुदा की ओर से मसीह के समरूप का पद रखता हो। प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि अनुयायियों के माध्यम से कुछ कार्यों का पूर्ण होना वास्तव में ऐसा ही है कि जैसे हमने अपने हाथ से वे कार्य पूर्ण किए, विशेषकर जब कुछ अनुयायी शैख में विरक्त होकर हमारा ही रूप ले लें तथा ख़ुदा तआला की कृपा प्रतिबिम्ब स्वरूप वह पद उन्हें प्रदान कर दे जो हमें प्रदान किया तो इस अवस्था में निस्सन्देह उन का बनाया हुआ हमारा बनाया हुआ है, क्योंकि जो हमारे मार्ग का अनुसरण करता है वह हम से पृथक नहीं और जो हमारे उद्देश्यों को हम में होकर पूरा करता है वह वास्तव में हमारे ही अस्तित्व में शामिल है क्योंकि वह कोई पृथक व्यक्ति नहीं। अत: यदि प्रतिबिम्ब के तौर पर (ज़िल्ली तौर पर) वह भी ख़ुदा तआला की ओर से मसीले (समरूप) मसीह का नाम पाए और मौऊद भी हो तो कोई हानि नहीं, क्योंकि यद्यपि मसीह मौऊद एक ही है परन्तु इस एक में होकर सब मौऊद ही हैं क्योंकि वह एक ही वृक्ष की शाखाएं और एक ही कथित उद्देश्य की आध्यात्मिक एकता के मार्ग से परिपूर्ण हैं और उन्हें उनके पूर्वजों से पहचानोगे। स्मरण रखना चाहिए कि ख़ुदा तआला के वादे जो उसके रसूलों और नबियों और मुहद्दिसों के बारे में होते हैं। कभी तो सीधे तौर पर पूर्ण होते हैं और कभी ये माध्यम के द्वारा सम्पन्न होते हैं। हज़रत मसीह इब्ने मरयम को भी जो विजय और सहायता के वादे दिए गए थे वे उनके जीवन में पूर्ण नहीं हुए अपितु एक अन्य नबी के द्वारा जो सम्पूर्ण नबियों का सरदार है अर्थात् हमारे सरदार एवं पेशवा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ख़ातमुल अंबिया के अवतरित होने से पूर्ण हुए और इसी प्रकार हज़रत मूसा कलीमुल्लाह को जो किनआन की विजय के शुभ

संदेश दिए गए थे अपितु मान्यवर को स्पष्ट रूप से वादा दिया गया था कि तू अपनी जाति को किन्आन में ले जाएगा और किन्आन की हरी-भरी पृथ्वी का उन्हें स्वामी बना देगा। यह वादा हज़रत मूसा के जीवन में पूर्ण न हो सका और वह मार्ग में मृत्यु पा गए, परन्तु यह नहीं कह सकते कि वह भविष्यवाणी ग़लत निकली जो अब तक तौरात में मौजूद है क्योंकि मूसा की मृत्यु के पश्चात् मूसा की शक्ति और मूसा की रूह उसके शिष्य **यूशा** को प्रदान हुई और वह ख़ुदा तआला के आदेश और उसके रूह फूंकने से मूसा में होकर और मूसा का रंग धारण करके वह कार्य किया जो मूसा का कार्य था। अत: ख़ुदा तआला के निकट वह मूसा ही था, क्योंकि उसने मूसा में होकर तथा मूसा के अनुसरण में पूर्णतया विलीन होकर और ख़ुदा तआला से मूसा की रूह पाकर उस कार्य को किया था इसी प्रकार हमारे सरदार एवं पेशवा नबी करीम स.अ.व. के बारे में तौरात में कुछ भविष्यवाणियां हैं जो आँहज़रत स.अ.व. के द्वारा सीधे तौर पर पूर्ण नहीं हो सकीं, अपितु वे उन आदरणीय ख़लीफ़ों के माध्यम से पूरी की गईं जो आप स.अ.व. के प्रेम और अनुसरण में लीन थे। इसमें कौन ऐतराज़ कर सकता है कि एक ख़ुदा की ओर से आने वाले रसूल के बारे में जिन-जिन विजयों और महान कार्यों की चर्चा भविष्यवाणी के रूप में होती है, इसमें यह कदापि आवश्यक नहीं समझा जाता कि वह सब कुछ उसी के द्वारा पूरा भी हो जाए अपितु उसके निष्कपट अनुयायी उसके हाथों और पैरों की तरह समझे जाते हैं और उनकी समस्त कार्यवाहियां उसी की ओर सम्बद्ध होती हैं, जैसे एक सेनापति किसी युद्ध के मैदान में उत्तम सैनिकों तथा कूटनीतिज्ञों की सहायता से किसी शत्रु को गिरफ़्तार करता है या वध कर देता है तो वह समस्त कार्यवाही उसी से सम्बद्ध की जाती है और बिना किसी दुविधा के कहा जाता है कि उसने गिरफ़्तार किया या वध किया। अत: जबकि वार्तालाप की यह शैली परिचित और प्रचलित है तो इस बात में कौन सी बनावट है कि यदि इस बात को मान भी लें कि कुछ भविष्यवाणियों का अपने प्रत्यक्ष रूप में पूर्ण होना भी आवश्यक है तो उसके साथ यह भी स्वीकार कर लेना चाहिए कि वे भविष्यवाणियां अवश्य पूरी होंगी तथा ऐसे लोगों के द्वारा उनको पूर्ण

कराया जाएगा जो पूर्णरूप से अनुसरण के मार्गों में लीन होने के कारण एवं आसमानी रूह को लेने के कारण इस विनीत के अस्तित्व के ही आदेश में होंगे और एक भविष्यवाणी भी जो **बराहीन अहमदिया** में लिखी जा चुकी है इसी की ओर संकेत कर रही है और वह इल्हाम यह है :-

يَاعِيْسٰى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَيَّ وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ

उस मसीह को भी स्मरण रखो जो इस विनीत की नस्ल में से है जिसका नाम इब्ने मरयम भी रखा गया है क्योंकि इस विनीत को **बराहीन अहमदिया** में मरयम के नाम से भी पुकारा है।

(8) प्रश्न - आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में ईसाइयों की यही आस्था थी कि वास्तव में मसीह इब्ने मरयम ही पुन: संसार में आएंगे। अत: यदि यह आस्था उचित नहीं थी तो क्यों ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में उसका खण्डन न किया अपितु हदीसों में इब्ने मरयम के आने का वादा दिया गया।

उत्तर - अत: स्पष्ट हो कि ख़ुदा तआला ने तो पवित्र क़ुर्आन में उस आस्था को असत्य ठहरा दिया जबकि वर्णन कर दिया कि मसीह इब्ने मरयम वास्तव में मृत्यु पा गया है और फिर मसीह के दोबारा जीवित होने की कहीं चर्चा नहीं की और हदीसों में भी इस उद्देश्य के बारे में पवित्र क़ुर्आन का कहीं विरोध नहीं किया गया, एक हदीस भी ऐसी नहीं मिलेगी जो मसीह इब्ने मरयम का पार्थिव शरीर के साथ आकाश की ओर जीवित उठाया जाना सिद्ध करती हो। अतएव आँहज़रत स.अ.व. ने भी इस आस्था को झूठा बताने में कोई कमी नहीं रखी। आने वाले मसीह को उम्मती ठहराया प्रथम और अन्तिम आकृति में अन्तर डाल दिया और मसीह का मृत्यु पा जाना वर्णन कर दिया। अत: इतना वर्णन पर्याप्त था और चूँकि भविष्यवाणियों में लोगों की परीक्षा के लिए यह भी निहित होता है कि इस का कुछ विवरण गुप्त रखा जाए, इसलिए कुछ गुप्त भी रखा गया ताकि यथा अवसर सच्चों और झूठों की

परीक्षा हो जाए तथा यह वर्णन भी सही नहीं है कि ईसाइयों की सर्वसम्मत आस्था यही है कि हज़रत मसीह संसार में पुन: आएंगे, क्योंकि उनके कुछ सम्प्रदाय मसीह के मृत्यु पा जाने को स्वीकार करते हैं और हवारियों की दोनों इन्जीलों ने अर्थात् मती और यूहन्ना ने इस बयान का कदापि सत्यापन न किया कि मसीह वास्तव में आकाश पर उठाया गया हां 'मरक़स' और 'लूक़ा' की इंजील में लिखा है परन्तु वे हवारी नहीं हैं और न किसी हवारी की रिवायत से उन्होंने लिखा।

(9) प्रश्न - लैलतुल क़द्र के अन्य अर्थ करके नेचरियत और आन्तरिकता का द्वार खोल दिया है।

उत्तर - ऐतराज़कर्ता ने इस ऐतराज़ से लोगों का धोखा दिया है। यहाँ मूल वास्तविकता यह है कि ख़ुदा तआला ने इस विनीत पर प्रकट किया है कि लैलतुल क़द्र के प्रथम अर्थ जो विद्वान लोग करते हैं वे भी मान्य और उचित हैं तथा इसके साथ ये अर्थ भी हैं और इन दोनों में कुछ विरोधाभास नहीं। पवित्र क़ुर्आन बाह्य भी रखता है और आन्तरिक भी तथा उसके सैकड़ों ज्ञान उसके अन्दर गुप्त हैं। अत: यदि इस विनीत ने ख़ुदा के द्वारा बोध कराने से लैलतुल क़द्र के ये अर्थ किए तो कहाँ से समझा गया कि पहले अर्थों से इन्कार किया गया है, क्या आँहज़रत स.अ.व. का युग सर्वोत्तम युग नहीं कहलाता? क्या उस युग की इबादतें (उपासनाएं) पुण्य की दृष्टि से बढ़कर नहीं थीं? क्या उस युग में धर्म की सहायता के लिए फरिश्ते नहीं उतरते थे? क्या रूहुल अमीन (जिब्राईल) नहीं उतरता था? अत: स्पष्ट है कि लैलतुल क़द्र के समस्त लक्षण प्रकाश और बरकतें उस युग में मौजूद थीं , एक अंधकार भी विद्यामान था जिसे दूर करने के लिए ये प्रकाश, फ़रिश्ते और रूहुल अमीन (जिब्राईल) और भिन्न-भिन्न प्रकार का प्रकाश उतर रहा था फिर यदि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वस्सलाम के उस पवित्र युग का नाम भी ख़ुदा के इल्हाम द्वारा 'लैलतुलक़द्र' प्रकट किया गया तो इस से कौन कठिनाई सामने आ गई ? जो व्यक्ति पवित्र क़ुर्आन के एक अर्थ को मान कर उसका एक अन्य सूक्ष्म रहस्य वर्णन करता है तो क्या उस का नाम, नास्तिक रखना चाहिए?

इस विचार के लोग निस्सन्देह पवित्र क़ुर्आन के शत्रु और उसके चमत्कार के इन्कारी हैं।

(10) प्रश्न - फ़रिश्ते और जिब्राईल अलैहिस्सलाम के अस्तित्व से इन्कार किया है और उनको 'तौज़ीहे मराम' में केवल तारों की शक्तियां ठहराया है।

उत्तर - यह आप का धोखा है। मूल बात यह है कि यह विनीत फ़रिश्तों और हज़रत जिब्राईल के अस्तित्व को उसी प्रकार मानता है जिस प्रकार क़ुर्आन और हदीस में आया है और जैसा कि पवित्र क़ुर्आन और सही हदीसों के अनुसार आकाशीय पिण्डों से फ़रिश्तों के सेवकीय संबंध पाए जाते हैं अथवा जो-जो कार्य विशेष तौर पर उनके सुपुर्द हो रहा है उसी की व्याख्या तौज़ीहे मराम में है।

چو بشنوی سخن اہلِ دل مگو کہ خطاست   سخن شناس نہ دلبرا خطا اینجاست

(11) प्रश्न - पुस्तक 'फ़तह इस्लाम' में नुबुव्वत का दावा किया है।

उत्तर - नुबुव्वत का दावा नहीं अपितु मुहद्दिसियत का दावा है जो ख़ुदा तआला के आदेश से किया गया है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि मुहद्दिसियत (मुहद्दिस होना) भी अपने अन्दर नुबुव्वत का एक दृढ़ भाग रखती है, जिस प्रकार सच्चे स्वप्न नुबुव्वत के छियालीस भागों में से एक भाग है। अत: मुहद्दिसियत जो पवित्र क़ुर्आन में नुबुव्वत के साथ और रिसालत (रसूल होना) के समान वर्णन की गई है जिसके लिए सही बुख़ारी में हदीस भी मौजूद है। इसे यदि एक लाक्षणिक नुबुव्वत कहा जाए या नुबुव्वत का एक शक्तिशाली भाग ठहराया जाए तो क्या इस से नुबुव्वत का दावा अनिवार्य हो गया ? पवित्र क़ुर्आन की वह क़िरअत स्मरण करो जो इब्ने अब्बास ने ली है और वह यह है :-

وَمَا اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ وَّلَا مُحَدَّثٍ اِلَّا اِذَا تَمَنّٰۤى اَلْقَى الشَّيْطَانُ فِيْۤ اُمْنِيَّتِهٖ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِى الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ

ख़ुदा की वह्यी पर केवल पूर्ण नुबुव्वत की सीमा तक कहाँ मुहर लग गई है

और यदि ऐसा ही है तो फिर इस आयत के क्या अर्थ हैं :-

اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَاءً فَسَالَتۡ اَوۡدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا (अर्रअद - 18)

हे असावधान लोगो! इस दयनीय उम्मत में वह्यी की नालियां प्रलय तक जारी हैं परन्तु पदों के अनुसार।

(12) प्रश्न - सूरह 'ज़ुख़रुफ़' में यह आयत मौजूद है-

وَاِنَّهٗ لَعِلۡمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمۡتَرُنَّ بِهَا (अज़्ज़ुख़रुफ़ - 62)

अर्थात् वह प्रलय के अस्तित्व पर निशान है। अत: तुम निशान मौजूद होने के बावजूद प्रलय के बारे में सन्देह मत करो। निशान से अभिप्राय हज़रत ईसा है जो प्रलय के निकट उतरेंगे और इस आयत से उनका उतरना सिद्ध होता है।

उत्तर - स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला इस आयत को प्रस्तुत करके प्रलय के इन्कारियों को दोषी करना चाहता है कि तुम उस निशान को देखकर कि फिर मुर्दों के जीवित हो जाने से शंका में क्यों पड़े हो। अत: इस आयत पर विचार करके प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि उसका हज़रत ईसा के उतरने से कोई सम्बन्ध नहीं। आयत तो यह बता रही है कि मुर्दों के जीवित होकर उठने का वह निशान अब तक मौजूद है तथा इन्कार करने वालों को आरोपित कर रही है कि तुम अब भी क्यों सन्देह करते हो। अत: प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि यदि इस आयत में ख़ुदा तआला का यह उद्देश्य है कि जब हज़रत मसीह आकाश से उतरेंगे तब उन का आकाश से उतरना मुर्दों के जीवित होने के लिए बतौर सबूत के प्रकटन से पूर्व ख़ुदा तआला लोगों को क्योंकर आरोपित कर सकता है। क्या इस प्रकार समझाने का अन्तिम प्रयास सफल हो सकता है? कि सबूत तो अभी प्रकट नहीं हुआ तथा उसका कोई लक्षण पैदा नहीं हुआ परन्तु इन्कार करने वालों को पहले से ही कहा जाता है कि अब भी तुम क्यों विश्वास नहीं करते, क्या उन की ओर से यह बहाना उचित तौर पर नहीं हो सकता कि हे ख़ुदा अभी सबूत अथवा प्रलय का निशान कहां प्रकट हुआ जिसके कारण فَلَا تَمۡتَرُنَّ بِهَا की हमें धमकी दी जाती है। क्या यह समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने का ढंग है? कि सबूत तो अभी ग़ैब के पर्दे में हो

और यह समझा जाए कि आरोप पूरा हो गया है। ऐसे अर्थ पवित्र क़ुर्आन की ओर सम्बन्ध करना मानो उसकी सरस और सुबोध शैली तथा नीतिपूर्ण वर्णन पर धब्बा लगाना है। सत्य है कि कुछ लोगों ने यही अर्थ लिए हैं, परन्तु उन्होंने बड़ी भूल की अपितु सत्य बात तो यह है कि اِنَّهٗ (इन्नहू) का सर्वनाम (ज़मीर) पवित्र क़ुर्आन की ओर फिरता है और आयत के अर्थ ये हैं कि पवित्र क़ुर्आन मुर्दों के जीवित हो उठने के लिए निशान है क्योंकि इससे मुर्दा दिल जीवित हो रहे हैं, क़ब्रों में गल-सड़ रहे बाहर आते जाते हैं और शुष्क हड्डियों में प्राण पड़ते जाते हैं। अत: पवित्र क़ुर्आन स्वयं प्रलय का दृश्य प्रस्तुत करता है, जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

وَ اَنۡزَلۡنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوۡرًا ۙ﴿۴۸﴾ لِّنُحۡیِۦَ بِهٖ بَلۡدَةً مَّیۡتًا

(सूरह फ़ुरक़ान आयत 49,50)

अर्थात् हमने आकाश से स्वच्छ पानी उतारा (अर्थात् क़ुर्आन) ताकि हम उस के द्वारा मुर्दा पृथ्वी को जीवित करें। फिर फ़रमाता है :-

وَاَحۡیَیۡنَا بِهٖ بَلۡدَةً مَّیۡتًا كَذٰلِكَ الۡخُرُوۡجُ

(सूरह काफ़ आयत 12)

प्रथम भाग समाप्त

भाग - द्वितीय

दुनिया में एक नज़ीर आया, पर दुनिया ने उसे स्वीकार न किया, लेकिन ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े ज़ोरआवर (शाक्तिशाली) आक्रमणों से उसकी सच्चाई प्रकट करेगा।

इज़ाला औहाम

(भ्रान्तियों का निराकरण)

فِيْهِ بَاسٌ شَدِيْدٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ

लेखक

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

घोषणा

स्पष्ट हो कि इस पुस्तक 'इज़ाला औहाम' (भ्रान्तियों का निराकरण) में उन समस्त प्रश्नों का उत्तर है कि जो अधिकतर लोग अदूरदर्शिता के कारण हज़रत मसीह के जीवन और मृत्यु के बारे में किया करते हैं और कुछ सन्देह नहीं कि जो व्यक्ति इस पुस्तक का प्रारंभ से अन्त तक ध्यानपूर्वक अध्ययन करेगा उस का कोई सन्देह शेष नहीं रहेगा। अत: उस का यह कर्तव्य है कि यदि ख़ुदा तआला इस पुस्तक द्वारा उसे हिदायत (मार्ग-दर्शन) प्रदान करे और उसके सीने को खोल दे तो वह अपनी जानकारियों से अन्य लोगों को भी लाभान्वित करे। प्रत्येक जो इस पुस्तक की हिदायत को अपनी पूर्ण निष्कपटता से स्वीकार करे उस पर यह भी अनिवार्य होगा कि इसके सामान्य प्रकाशन हेतु प्रयास करे और इस पुस्तक के प्रकाशित होने के पश्चात् इन्कार करने वालों के लिए उचित और प्रमुख मार्ग यही है कि मौखिक शास्त्रार्थों का द्वार बन्द रख कर इस पुस्तक के अर्थों को ध्यानपूर्वक पढ़ें, तत्पश्चात् यदि हिदायत प्राप्त न हो तो इसके प्रमाणों का खंडन करके दिखा दें और उन के पक्ष में हमारी अन्तिम नसीहत यही है कि ख़ुदा तआला से डरें कि ख़ुदा तआला का क्रोध उनके क्रोध से बहुत अधिक है। सलामती उस पर जिसने हिदायत का अनुसरण किया।

घोषणाकारी

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी,

लुधियाना, मुहल्ला इक़बालगंज

अर्थात् क़ुर्आन के साथ हम ने मृत पृथ्वी को जीवित किया, इसी प्रकार समस्त शरीरों को जीवित करके उठाया जाएगा। फिर फ़रमाता है :-

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ*

अर्थात् हम क़ुर्आन के द्वारा मुरदों को जीवित कर रहे हैं। फिर फ़रमाता है :-

اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا**

अर्थात् हे लोगो जान लो कि पृथ्वी मृत हो गई थी तथा ख़ुदा अब नए सिरे से उसे जीवित कर रहा है। अत: अनेकों स्थानों पर पवित्र क़ुर्आन को प्रलय का नमूना ठहराया गया है, अपितु एक हदीस में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि क़यामत (प्रलय) मैं ही हूँ। जैसा कि फ़रमाया है :-

وَاَنَا الحاشِرُ الَّذِىْ يُحْشَرُ النَاسُ عَلٰى قَدَمِى

अर्थात् मैं ही प्रलय हूँ मेरे क़दमों पर लोग उठाए जाते हैं अर्थात् मेरे आने से लोग जीवित हो रहे हैं, मैं क़ब्रों से उन्हें उठा रहा हूँ और मेरे क़दमों पर जीवित होने वाले एकत्र होते जाते हैं तथा वास्तव में जब हम एक न्याय संगत दृष्टि से अरब की आबादियों पर दृष्टि डालें कि वे अपनी अध्यात्मिक दशा के अनुसार कैसे क़ब्रिस्तान के तुल्य हो गए थे तथा किस श्रेणी तक सत्य और ख़ुदा के भय की भावना उनके अन्दर से निकल गई थी और कैसी नाना प्रकार की ख़राबियों के कारण जो उनके शिष्टाचार, कर्मों और आस्थाओं को प्रभावित कर गई थीं सड़-गल गए थे तो सहसा हमारे अन्दर से यह साक्ष्य निकलती है कि उनका जीवित करना शारीरिक तौर पर मुर्दों के जीवित होने से अत्यन्त अद्‌भुत श्रेणी पर है जिसकी श्रेष्ठता ने असंख्य बुद्धिमानों की दृष्टि को आश्चर्य में डाल दिया है।

अब सारांश यह कि उपरोक्त आयत के वास्तविक अर्थ ये हैं जो हम ने वर्णन किए हैं अर्थात् ख़ुदा तआला शारीरिक तौर पर मुर्दों को जीवित होने पर आध्यात्मिक

* यासीन - 13

** अल हदीद - 18

तौर पर मुर्दों का जीवित हो जाना असंदिग्ध निशान के तौर पर प्रस्तुत करता है जो वास्तव में हृदयों पर अत्यन्त प्रभावकारी हुआ तथा असंख्य काफ़िर इस निशान को मान गए और मानते जाते हैं तथा अन्वेषकों का भी एक वर्ग उपरोक्त कथित आयत का यही अर्थ लेता है। अत: तफ़्सीर '**मआलिम**' में इस आयत की व्याख्या के अन्तर्गत ये अर्थ लिखे हैं। जैसा कि व्याख्या की इबारत यह है :-

وَقالَ الحسن و جماعة و انّه يعنى و ان القرآن لعلم للسَّاعة يعلمكم قيامها و يخبر كم باحوالها و اهوالها فلا تمترنَّ بِها يعنى فلا تشكن فيها بعد القرآن

अर्थात् हसन और एक जमाअत ने इस आयत के यही अर्थ किए हैं कि क़ुर्आन प्रलय के लिए एक निशान है तथा मौखिक तौर पर और परिस्थिति द्वारा सूचित कर रहा है कि प्रलय और उसकी परिस्थितियां तथा उसके भयंकर निशान प्रकट होने वाले हैं। अत: इसके पश्चात् कि क़ुर्आन प्रलय के आने पर अपने चमत्कारिक वर्णनों तथा मुर्दों को जीवित करने के प्रभावों से ठोस सबूत स्थापित कर रहा है। तुम संदेह न करो।

(13) प्रश्न - इल्हाम जिसके आधार पर उम्मत की सर्वसम्मति की परिधि से निकलना धारण किया गया है स्वयं निराधार, अवास्तविक और व्यर्थ वस्तु है जिसकी हानि उसके लाभ से बढ़कर है।

उत्तर - अत: स्पष्ट हो कि हम पहले उल्लेख कर चुके हैं कि सर्वसम्मति का भविष्यवाणियों से कोई संबंध नहीं, सर्वसम्मति उन बातों पर होती है जिन की वास्तविकता भली भांति समझी गई और देखी गई और ज्ञात की गई और शारिअ (शरीअत लाने वाले) अलैहिस्सलाम ने उन की छोटी-छोटी बातों को समझा दिया सिखा दिया जैसे रोज़ा-नमाज़, ज़कात, हज, एकेश्वरवाद की आस्थाएं, पुण्य और दण्ड। परन्तु ये संसार संबंधी भविष्यवाणियाँ तो अभी गुप्त बातें हैं जिनकी शारिअ अलैहिस्सलाम ने कुछ व्याख्या का भी वर्णन किया तो ऐसी कि जो रुपक की ओर

ध्यानाकर्षण करती है। उदाहरणतया क्या उन हदीसों पर 'सर्वसम्मति' सिद्ध हो सकती है कि मसीह आकर जंगलों में सुअरों का शिकार खेलता फिरेगा और दज्जाल 'काबे' की परिक्रमा (तवाफ़) करेगा और इब्ने मरयम (मरयम का बेटा) रोगियों की भांति दो व्यक्तियों के कंधे पर हाथ रख कर 'काबे' के तवाफ़ (परिक्रमा) के कर्तव्य को पूरा करेगा। क्या ज्ञात नहीं कि जो लोग इन हदीसों के व्याख्याकार हुए हैं वे कैसी-कैसी अपनी-अपनी अनुचित अटकलें लगा रहे हैं। यदि कोई बात सर्वसम्मति के तौर पर निर्णय प्राप्त होती तो वे लोग क्यों भिन्न-भिन्न विचारों को प्रकट करते, क्या कुफ्र का भय नहीं था?

अब रही यह बात कि इल्हाम, निराधार, व्यर्थ और निरर्थक वस्तु है जिस की हानि उसके लाभ से बढ़कर है। अत: जानना चाहिए कि ऐसी बातें वही व्यक्ति करेगा जिसने कभी इस पवित्र शराब का स्वाद नहीं चखा और न यह इच्छा रखता है कि उसे सच्चा ईमान प्राप्त हो अपितु रीति-रिवाज पर प्रसन्न है और कभी उस ओर दृष्टि उठा कर नहीं देखता कि मुझे ख़ुदा तआला पर कहां तक विश्वास प्राप्त है तथा मेरे आध्यात्म ज्ञान की श्रेणी किस सीमा तक है तथा मुझे क्या करना चाहिए ताकि मेरी आन्तरिक कमियां दूर हों तथा मेरे शिष्टाचार, कर्म और इरादे में एक जीवित परिवर्तन उत्पन्न हो जाए और मुझे वह प्रेम और अनुराग प्राप्त हो जाए जिसके कारण मैं सरलतापूर्वक आख़िरत का सफ़र कर सकूँ तथा मुझ में एक अतिउत्तम उन्नति योग्य तत्व उत्पन्न हो जाए।

निस्सन्देह यह बात सब की समझ में आ सकती है कि मनुष्य अपने इस संज्ञाहीन जीवन में जो प्रतिपल रसातल की ओर खींच रहा है और इसके अतिरिक्त स्त्री, पुत्र और मान-मर्यादा के संबंध बोझल और भारी पत्थर की भांति प्रति क्षण नीचे की ओर ले जा रहे हैं एक उच्च शक्ति का अवश्य मुहताज है जो उसे सच्ची दृष्टि और सच्चा कश्फ़ प्रदान कर ख़ुदा तआला की विशेषताओं से परिपूर्ण सौन्दर्य का अभिलाषी बना दे। अत: ज्ञात होना चाहिए कि वह उच्च शक्ति **ख़ुदा का इल्हाम** है जो ठीक कष्ट के समय आनन्द पहुँचाता है तथा संकटों के टीलों और पर्वतों के

नीचे बड़े आराम और आनन्द के साथ खड़ा कर देता है, वह सूक्ष्म से सूक्ष्म अस्तित्व जिसने बौद्धिक शक्तियों को चुंधिया दिया है, समस्त दार्शनिकों की बुद्धि और विवेक को मूर्च्छावस्था में डाल दिया है वह इल्हाम ही के माध्यम से अपना कुछ पता देता है और **मैं मौजूद हूँ** कह कर साधकों के हृदयों को सांत्वना प्रदान करता है और चैन उतारता है और नितान्त मिलन की शीतल समीर से उदासीन प्राण को नवीनता प्रदान करता है। यह बात तो सत्य है कि पवित्र क़ुर्आन मार्ग-दर्शन हेतु पर्याप्त है, परन्तु पवित्र क़ुर्आन जिसे हिदायत के झरने तक पहुँचाता है उसमें प्रथम लक्षण यही पैदा हो जाता है कि उससे ख़ुदा का पवित्र वार्तालाप आरंभ हो जाता है जिससे नितान्त उच्च स्तर की प्रत्यक्ष मा'रिफ़त, चश्मदीद बरकत और आभा उत्पन्न हो जाती है तथा वह इरफ़ान (परमेश्वर को पहचानने का ज्ञान) प्राप्त होना आरंभ हो जाता है जो मात्र अनुसरणात्मक अटकलों या बौद्धिक ढकोसलों से कदापि नहीं मिल सकता क्योंकि अनुसरणात्मक ज्ञान सीमित और संदिग्ध हैं और बौद्धिक विचार अधूरे और अपूर्ण हैं तथा हमें निश्चय ही आवश्यकता है कि सीधे तौर पर अपने इरफ़ान को विकसित करें क्योंकि जितना हमारा इरफ़ान होगा उतना ही हमारे अन्दर उत्साह, रुचि और जोश पैदा होगा। क्या हमें अपूर्ण इरफ़ान के बावजूद पूर्ण उत्साह की रुचि की कुछ आशा है? नहीं, कुछ भी नहीं, अत: आश्चर्य और विस्मय है कि लोग कैसे विवेकहीन हैं जो ख़ुदा तक पहुँचने के ऐसे पूर्ण माध्यम से स्वयं को नि:स्पृह समझते हैं जिससे आध्यात्मिक जीवन सम्बद्ध है।

स्मरण रखना चाहिए कि आध्यात्मिक ज्ञान और आध्यात्मिक कौशल केवल इल्हामों और कश्फ़ों (दिव्य-दृष्टि के ज्ञान) के माध्यम से ही प्राप्त होते हैं तथा जब तक हम प्रकाश का वह पद प्राप्त न कर लें तब तक हमारी मानवता किसी सच्ची मा'रिफ़त या वास्तविक विशेषता से लाभान्वित नहीं हो सकती, केवल कौवे और भेड़ की भांति एक गन्दगी को हम हल्वा समझते रहेंगे तथा हमारे अन्दर ईमानी दक्षता भी नहीं आएगी, केवल लोमड़ी की तरह दाव-पेच बहुत याद होंगे।

हम एक अत्यन्त महत्वपूर्ण उद्देश्य के लिए जो वास्तविक मा'रिफ़त उत्पन्न

किए गए हैं और वही मा'रिफ़त हमारी मुक्ति का आधार भी है जो प्रत्येक अधम और कपटपूर्ण मार्ग से हमें मुक्त करके एक पवित्र और निर्मल दरिया के किनारे पर हमारा मुख रख देती है और वह केवल ख़ुदा के **इल्हाम द्वारा** हमें प्राप्त होती है। जब हम स्वयं से पूर्णतया विरक्त होकर हमदर्द हृदय के साथ अदृश्य अस्तित्व में एक गहरी डुबकी लगाते हैं तो हमारी मानवता ख़ुदा के दरबार में पड़ने से लौटने पर उस लोक के कुछ लक्षण और प्रकाश साथ ले आती है। अत: जिस वस्तु को इस संसार के लोग तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं वह वास्तव में वही एक वस्तु है जो एक लम्बे समय के बिछड़े हुए को एक पल में अपने प्रियतम से मिलाती है। वही है जिस से ख़ुदा के प्रेमी सन्तोष पाते हैं और नाना प्रकार की कामभावनाओं के बन्धनों से अनायास अपना पैर बाहर निकाल लेती है। जब तक वह सच्चा प्रकाश हृदयों पर न उतरे कदापि संभव नहीं कि कोई हृदय प्रकाशित हो सके। अत: मानव बुद्धि की अयोग्यता और प्रचलित विद्याओं का सीमित होना इल्हाम की आवश्यकता पर साक्ष्य दे रहा है। संसार सें जितने बुद्धिमान हैं या ऐसे विरक्त जिनके हृदय वास्तव में इस पवित्र सिलसिले से वंचित है उनको आचरण और उनके नैतिक संकोच, उनके अधम विचार और उनके समस्त निर्लज्जता पूर्ण कृत्य मेरे इस वर्णन पर साक्षी हैं कि वे इस पवित्र झरने के अभाव में कितनी घृणित अपवित्रताओं में लिप्त हैं तथा जिस प्रकार दूषित कुएं के पानी की एक बूंद से उसकी समस्त गन्दगी सिद्ध हो जाती है, इसी प्रकार उनके गन्दे विचार अपने बुरे आदर्श से पहचाने जाते हैं।

यद्यपि ऐसे लोगों का दर्शन सामान्य विचारों में हलचल मचाने वाला हो, परन्तु चूंकि **प्रकाश** उसके साथ नहीं इसलिए वह अति शीघ्र अपना अंधकार दिखा देता है और बावजूद सम्पूर्ण सर्वज्ञता की शेखी बघारने के ऐसे लोगों की आन्तरिक स्थिति हाथ फैला-फैला कर अपनी दरिद्रता प्रकट करती रहती है और प्राय: **आध्यात्मिक सन्तुष्टि** न मिलने के कारण ऐसे दार्शनिकों, वैज्ञानिकों, मौलवियों और विद्वानों से ऐसे कृत्य हो जाते हैं जिनसे स्पष्ट साक्ष्य मिलती है कि वे सन्तोषजनक झरने से कैसे और कितने दूर और पृथक हैं और वास्तविक समृद्धि की प्राप्ति के

अभाव के कारण एक भयंकर प्रकोप या यों कहो कि एक पीड़ा, जलन और व्याकुलता में **दिन-रात ग्रसित** हैं।

यहां कुछ हृदयों में स्वाभाविक तौर पर यह प्रश्न उत्पन्न होगा कि अधिकांश लोग इल्हाम का दावा करते हैं अपितु इल्हामी वाक्य सुनाते भी रहते हैं परन्तु उनकी मा'रिफ़त में कुछ भी उन्नति दृष्टिगोचर नहीं होती तथा साधारण मानवता से उनकी आध्यात्म अवस्था का स्तर बढ़ा हुआ विदित नहीं होता अपितु वही मोटी समझ, वही क्षुद्र विचार, स्वभाव का अंधापन और अध:पतन उनमें दृष्टि गोचर होता है और उनकी नैतिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों में कोई बात सामान्य स्वभाव से बढ़कर दृष्टिगोचर नहीं होती। फिर ऐसे लोगों को हम क्योंकर **मुल्हम** समझें और इस वरदान के झरने का वार्तालापकर्ता स्वीकार कर लें, जिसके सानिध्य और वार्तालाप के सम्मान से अद्भुत परिवर्तन उत्पन्न हो जाना आवश्यक है कम से कम इतना परिवर्तन कि कुछ बातें उस मुल्हम में ऐसी हों कि वे अन्य में न पाई जाएं।

अत: जानना चाहिए कि यथार्थ में ऐसे लोग निश्चित तौर पर मुल्हम नहीं होते अपितु एक प्रकार की कठिन परीक्षा में पड़े होते हैं जिसे वे अपनी मूर्खता से इल्हाम समझ लेते हैं। ख़ुदा तआला का वास्तविक और निश्चित तौर पर वार्तालाप कुछ मामूली सी बात नहीं। जिस प्रकार तुम देखते हो कि जब एक अंधकार में बैठे हुए व्यक्ति के लिए अचानक सूर्य की ओर खिड़की खुल जाए तो अनायास उसकी दशा कैसी परिवर्तित हो जाती है तथा क्योंकर आकाशीय प्रकाश उसकी ज्ञानेन्द्रियों पर काम करके उसके लिए एक परिवर्तित जीवन उत्पन्न कर देता है, तथा क्योंकर अंधकार से जो स्वभाविक उदासीनता का कारण है बाहर निकलकर उसके हृदय में एक आनन्द और रुचि और उसकी आंखों में एक चमक तथा उसकी दशा में एक स्थायित्व पैदा हो जाता है, ठीक यह दशा उस खिड़की की है जो आकाश की ओर से खुलती है और बहुत ही कम लोग हैं जो निश्चित और यथार्थ तौर पर उसे पाते हैं और तुम उन्हें अद्भुत लक्षणों से पहचानोगे।

(14) प्रश्न - पवित्र क़ुर्आन से यद्यपि मसीह की मृत्यु सिद्ध होती है, परन्तु इस

मृत्यु का कोई समय विशेष तो सिद्ध नहीं होता। अत: हदीस और क़ुर्आन का परस्पर विवाद दूर करने के लिए इसके अतिरिक्त और क्या मार्ग है कि इस मृत्यु का युग वह ठहराया जाए कि जब पुन: हज़रत मसीह उतरेंगे।

उत्तर - अत: स्पष्ट हो कि पवित्र क़ुर्आन के स्पष्ट आदेश स्पष्टतया इसी बात को सिद्ध कर रहे हैं कि मसीह अपने उसी युग में मृत्यु को प्राप्त हो गया है जिस युग में वह बनी इस्राईल के उपद्रवी सम्प्रदायों के सुधार के लिए आया था जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

يٰعِيۡسٰۤى اِنِّىۡ مُتَوَفِّيۡكَ وَرَافِعُكَ اِلَىَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَجَاعِلُ الَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡكَ فَوۡقَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ *

अब यहां स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला ने اِنِّىۡ مُتَوَفِّيۡكَ (इन्नी मुतवफ़्फ़ीका) पहले लिखा है और رَافِعُكَ (राफ़िओका) उसके बाद वर्णन किया है, जिससे सिद्ध हुआ कि मृत्यु पहले हुई और रफ़ा मृत्योपरांत हुआ, फिर अन्य सबूत यह है कि इस भविष्यवाणी में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं तेरी मृत्यु के पश्चात् तेरे अनुयायियों को तेरे विरोधियों पर जो यहूदी हैं प्रलय के दिन तक विजयी रखूंगा। अत: स्पष्ट है तथा समस्त ईसाई और मुसलमान इस बात को स्वीकार करते हैं कि यह भविष्यवाणी हज़रत मसीह के बाद इस्लाम के प्रकटन तक भली भांति पूर्ण हो गई क्योंकि ख़ुदा तआला ने यहूदियों को उन लोगों की प्रजा और उनके अधीन कर दिया जो ईसाई या मुसलमान हैं और आज तक सैकड़ों वर्षों से वे अधीन चले आते हैं यह तो नहीं कि हज़रत मसीह के उतरने के पश्चात् फिर अधीन होंगे। ऐसे अर्थ स्पष्ट तौर पर ग़लत हैं।

देखना चाहिए कि पवित्र क़ुर्आन में यह आयत भी है कि हज़रत मसीह के मुख से अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

---

* आले इमरान - 56

وَ اَوۡصٰنِیۡ بِالصَّلٰوۃِ وَ الزَّکٰوۃِ مَا دُمۡتُ حَیًّا ﴿۳۱﴾ وَّ بَرًّۢا بِوَالِدَتِیۡ *

अर्थात् हज़रत मसीह फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला ने मुझे फ़रमाया है कि नमाज़ पढ़ता रह और ज़कात देता रह और अपनी माता पर उपकार करता रह जब तक जीवित है। अत: स्पष्ट है कि शरीअत के इन समस्त आदेशों का क्रियात्मक रूप में पालन करना आकाश पर असंभव है और जो व्यक्ति मसीह के बारे में यह आस्था रखता है कि वह पार्थिव शरीर के साथ जीवित आकाश की ओर उठाया गया उसे इस उपरोक्त आयत के आशय के अनुसार यह भी मानना होगा कि शरीअत के समस्त आदेश जिनका इन्जील और तौरात की दृष्टि से पालन करना मनुष्य पर अनिवार्य होता है। वे हज़रत मसीह पर अब भी अनिवार्य हैं हालांकि यह कष्ट सामर्थ्य से अधिक है। बड़ी विचित्र बात है कि एक ओर तो ख़ुदा तआला यह आदेश दे कि हे ईसा जब तक तू जीवित है तुझ पर अनिवार्य है कि तू अपनी माता की सेवा करता रहे फिर स्वयं ही उसके जीवित होने की अवस्था में ही उसे माता से पृथक कर दे तथा जीवन पर्यन्त ज़कात का आदेश दे और फिर जीवित होने की अवस्था में ही ऐसे स्थान पर पहुँचा दे जहाँ न वह स्वयं ज़कात दे सकते हैं और न ज़कात के लिए किसी को नसीहत कर सकते हैं और नमाज़ पर ज़ोर दे तथा मोमिनों की जमाअत से दूर फेंक दे जिनका साथ नमाज़ की पूर्णता के लिए आवश्यक था। क्या ऐसे उठाए जाने से बहुत सी हानि, लोगों के अधिकार के नष्ट होने, नेक और अच्छी बातों के आदेश और बुराइयों से रोकने से वंचित होने के अतिरिक्त कुछ और भी लाभ हुआ ? यदि यही अठारह सौ इक्यानवे वर्ष जीवित रहते तो उन की समस्त बरकतों से परिपूर्ण हस्ती से लोगों का क्या लाभ प्राप्त होता, परन्तु उनके ऊपर चले जाने से इसके अतिरिक्त और कौन सा परिणाम निकला कि उनकी उम्मत बिगड़ गई और वह नुबुव्वत के कार्यों को करने से पूर्णतया वंचित रह गए।

फिर जब हम इस आयत पर भी दृष्टि डालें जो अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता हैं कि हमने किसी मनुष्य का कोई शरीर ऐसा नहीं बनाया कि बिना रोटी

* मरयम - 32, 33

के जीवित रह सके। अत: हमारे विरोधियों की आस्थानुसार यह भी अनिवार्य हुआ कि वह आकाश पर रोटी भी खाते हों, शौचादि कर्म भी करते हों तथा मानव आवश्यकता जैसे कपड़े, बर्तन तथा खाने की वस्तुएं सब मौजूद हों परन्तु क्या ये सब कुछ क़ुर्आन और हदीस से सिद्ध हो जाएगा कदापि नहीं। अत: हमारे विरोधी यही उत्तर देंगे कि जिस ढंग से वह आकाश पर जीवन व्यतीत करते हैं वह मनुष्य के सामान्य जीवन से अनोखा है और वे मानव आवश्यकताएं जो पृथ्वी पर जीवित मनुष्यों के लिए आवश्यक हैं वे सब उन से दूर कर दी गई हैं तथा उनका शरीर अब एक ऐसा शरीर है जो न भोजन का मुहताज है, न कपड़ों का, न उन्हें शौचादि कर्मों की आवश्यकता होती है और न मूत्रादि की, न पृथ्वी के शरीरों की भांति उनके शरीर पर समय का कोई प्रभाव पड़ता है और न वह अब शरीअत के आदेशों के पाबन्द हैं। इसका उत्तर यह है कि ख़ुदा तआला तो स्पष्ट फ़रमाता है कि इन समस्त पार्थिव शरीरों के लिए जब तक वे जीवित हैं ये समस्त संसाधन अनिवार्य हैं जैसा कि उनसे फ़रमाया :-

وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَأْكُلُوْنَ الطَّعَامَ*

स्पष्ट है कि इस आयत में 'अंश' के वर्णन से अभिप्राय 'कुल' है अर्थात् यद्यपि इतना ही वर्णन किया कि किसी नबी का शरीर ऐसा नहीं बनाया गया जो भोजन के बिना रह सके, परन्तु इसके सन्दर्भ में वे सम्पूर्ण संसाधन और परिणाम जो भोजन से संलग्न हैं वे सब स्पष्ट आदेशों के संकेत के तौर पर वर्णन कर दिए। अत: यदि मसीह इब्ने मरयम इस पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर गया है तो आवश्यक है कि भोजन खाता हो तथा शौचादि के समस्त आवश्यक कर्म उसके साथ लगे हों, क्योंकि ख़ुदा की वाणी में झूठ वैध नहीं और यदि यह कहो कि वास्तविकता यह है कि मसीह इस पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर नहीं गया अपितु यह शरीर तो पृथ्वी में दफ़्न किया गया तथा मसीह को एक अन्य नूरानी (प्रकाशयुक्त) शरीर प्राप्त हुआ जो खाने-पीने से पवित्र था, उस शरीर के साथ उठाया गया तो जनाब **यही तो**

* अल अंबिया - 9

मृत्यु है जिसको अन्ततः आप ने स्वीकार कर लिया, हमारा भी तो यही मानना है कि पवित्रतात्माओं को मृत्योपरान्त एक **नूरानी शरीर** प्राप्त होता है और वही नूर (प्रकाश) जो वे साथ रखते हैं उनके लिए शरीर की भांति हो जाता है। अत: वे उसके साथ आकाश की ओर उठाए जाते हैं। इसी की ओर संकेत है जो अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

اِلَیۡهِ یَصۡعَدُ الۡکَلِمُ الطَّیِّبُ وَ الۡعَمَلُ الصَّالِحُ یَرۡفَعُهٗ*

अर्थात् पवित्र रूहें जो नूरानी अस्तित्व हैं ख़ुदा तआला की ओर चढ़ती हैं और शुभ कर्म उनको ऊपर ले जाता है अर्थात् जितना शुभ कर्म हो उतना ही रूह (आत्मा) का रफ़ा होता है।

यहां ख़ुदा तआला ने रूह का नाम **कलिमा** रखा। यह इस बात की ओर संकेत है कि वास्तव में समस्त आत्माएं ख़ुदा के कलिमात ही हैं जो एक ऐसे अज्ञात रहस्य के तौर पर कि जिसकी तरह तक मानव-बुद्धि नहीं पहुँच सकती आत्माएं बन गई हैं। इसी आधार पर इस आयत का विषय भी है

وَ کَلِمَتُهٗۤ اَلۡقٰهَاۤ اِلٰی مَرۡیَمَ**

और चूँकि यह प्रतिपालन का रहस्य है इसलिए किसी में शक्ति नहीं कि इस से बढ़कर कुछ बोल सकें कि ख़ुदा के कलिमात ही अपने रब्ब के आदेश और आज्ञा से आत्मा रूपी लिबास धारण कर लेते हैं और उनमें वे समस्त शक्तियां तथा विशेषताएं उत्पन्न हो जाती हैं जो आत्माओं में पाई जाती हैं और फिर चूंकि पवित्र आत्माएं **ख़ुदा तआला में फना** (आसक्त) होने की अवस्था में अपनी समस्त शक्तियां छोड़ देती हैं और ख़ुदा के आज्ञापालन में लीन हो जाती हैं तो जैसे वह आत्मा की अवस्था से निकल कर ख़ुदा का कलिमा ही बन जाती हैं जिस प्रकार कि वे प्रारंभ में ख़ुदा का कलिमा थीं। अत: ख़ुदा के कलिमा के नाम से उन पवित्र

* फ़ातिर -11

** अन्निसा -172

आत्माओं को याद करना उनकी उच्च श्रेणी की ओर संकेत है। अत: उन्हें प्रकाश रूपी लिबास मिलता है और शुभ-कर्मों की शक्ति से उनका ख़ुदा तआला की ओर रफ़ा (ऊपर जाना) होता है।

हमारे भौतिकवादी विद्वान अपने सीमित विचारों के कारण पवित्र कलिमात से अभिप्राय मात्र आस्थाएं अथवा ख़दा की स्तुति और ध्यान हैं तथा शुभ कर्मों से अभिप्राय भी ख़ुदा की स्तुति तथा दान इत्यादि हैं तो जैसे वह इस व्याख्या से कारण और जिसके लिए वह कारण है को एक कर देते हैं यद्यपि पवित्र कलिमात भी ख़ुदा तआला की ओर ही लौटते हैं, परन्तु आध्यात्म ज्ञानियों के लिए ये आन्तरिक अर्थ हैं जिन पर पवित्र क़ुर्आन के सूक्ष्म संकेत आधारित हैं।

(15) प्रश्न - मसीह इब्ने मरयम ने तो अनेकों चमत्कारों से अपने ख़ुदा की ओर से होने का सबूत दिया था, आपने क्या सबूत दिया, क्या कोई मुर्दा जीवित किया,या कोई जन्मजात अन्धा आप से अच्छा हो सका? यदि हम मान भी लें कि आप मसील-ए-मसीह हैं तो हमें आपके अस्तित्व से क्या लाभ हुआ?

उत्तर - अत: स्पष्ट हो कि इंजील का अध्ययन करके देख लो कि यही आरोप हमेशा मसीह पर रहा कि उसने कोई चमत्कार तो दिखाया ही नहीं, यह कैसा मसीह है, क्योंकि ऐसा मुर्दा तो कोई जीवित न हुआ कि वह बोलता और उस संसार का कोई हाल सुनाता और अपने परिजनों को नसीहत करता कि मैं तो नर्क में से आया हूँ तुम शीघ्र ईमान ले आओ। यदि मसीह स्पष्ट तौर पर यहूदियों के बाप-दादे जीवित करके दिखा देता और उन से गवाही दिलवाता तो भला किस में इन्कार करने की शक्ति थी। अत: नबियों ने निशान तो दिखाए, परन्तु फिर भी बेईमानों से गुप्त रहे। इसी प्रकार यह विनीत भी खाली नहीं आया अपितु मुर्दों के जीवित होने के लिए ख़ुदा तआला ने इस विनीत को भी बहुत सा अमृत प्रदान किया है। निस्सन्देह जो व्यक्ति उसमें से पिएगा जीवित हो जाएगा। निस्सन्देह मैं इक़रार करता हूँ कि यदि मेरे कलाम से मुर्दे जीवित न हों और अन्धे आंखें न खोलें और कोढ़ी ठीक न हों तो मैं ख़ुदा तआला की ओर से नहीं आया, क्योंकि ख़ुदा तआला ने स्वयं अपनी पवित्र

वाणी में मेरी ओर संकेत करके फ़रमाया है :-

नासिरी नबी के नमूने पर यदि देखा जाए तो मालूम होगा कि वह ख़ुदा की प्रजा को बहुत शुद्ध कर रहा है उस से अधिक कि कभी शरीरिक रोगों को ठीक किया गया हो।

निश्चित समझो कि आध्यात्मिक जीवन का बीज एक राई के बीज की भांति बोया गया है परन्तु निकट है हां बहुत निकट है कि एक विशाल वृक्ष होकर दिखाई देगा। भौतिक विचारधारा रखने वाला मनुष्य भौतिक बातों को पसन्द करता है और उन्हें बहुत महत्व देता है, परन्तु जिसे कुछ आध्यात्मिकता का भाग दिया गया है वह आध्यात्मिक जीवन का अभिलाषी होता है। ख़ुदा तआला के सत्यनिष्ठ बन्दे संसार में इसलिए नहीं आते कि लोगों को तमाशे दिखाएं अपितु उन का मुख्य उद्देश्य ख़ुदा की ओर आकर्षित करना होता है और अन्तत: वे उसी पवित्र शक्ति के कारण पहचाने जाते हैं। वह प्रकाश जो उनके अन्दर आकर्षण शक्ति रखता है यद्यपि कोई व्यक्ति परीक्षा के तौर पर उसे देख नहीं सकता अपितु ठोकर खाता है, परन्तु वह प्रकाश स्वयं ही एक ऐसी जमाअत को अपनी ओर खींचकर जो खींचे जाने के योग्य है अपना अद्‌भुत प्रभाव प्रकट कर देता है।

(1) - ख़ुदा तआला के शुद्ध निष्कपट बन्दों के ये लक्षण हैं कि उन्हें एक शुद्ध प्रेम प्रदान किया जाता है जिसका अनुमान लगाना इस संसार के लोगों का कार्य नहीं।

(2) - उनके हृदयों पर एक भय भी होता है जिसके कारण वे आज्ञापालन की बारीकियों का ध्यान रखते हैं। ऐसा न हो कि अनादि प्रियतम अप्रसन्न हो जाए।

(3) - उन्हें अद्‌भुत दृढ़ता प्रदान की जाती है कि अपने समय पर देखने वालों को हैरान कर देती है।

(4) - जब उन्हें कोई अत्यधिक सताता है तथा रुकता नहीं तो उनके लिए उस शक्तिशाली हस्ती का प्रकोप जो उनका अभिभावक है अचानक भड़कता है।

(5) - जब उन से कोई बहुत मित्रता करता है तथा सच्ची वफ़ादारी और

निष्कपटता के साथ उनके मार्ग में न्यौछावार हो जाता है तो ख़ुदा उसे अपनी ओर खींचता है और उस पर एक विशेष दया उतारता है।

(6) - उसकी दुआएं अन्य लोगों की तुलना में अधिक स्वीकार होती हैं यहां तक वे गिन नहीं सकते कि कितनी स्वीकार हुई।

(7) - उन पर अधिकतर परोक्ष के रहस्य प्रकट किए जाते हैं और वे बातें जो अभी प्रकट नहीं हुईं उन पर प्रकट की जाती हैं यद्यपि और मोमिनों को भी सच्चे स्वप्न आरै सच्चे कश्फ़ ज्ञात हो जाते हैं, परन्तु ये लोग सम्पूर्ण संसार में प्रथम नम्बर पर होते हैं।

(8) - ख़ुदा तआला इनका विशेष तौर पर अभिभावक हो जाता है और जिस प्रकार कोई अपने बच्चों का पालन-पोषण करता है उन पर उस से भी अधिक दया-दृष्टि रखता है।

(9) - जब इन पर किसी बड़े संकट का समय आता है तो इन से दो प्रकार में से एक प्रकार का व्यवहार होता है या तो अद्भुत तौर पर उसे संकट से मुक्ति प्रदान की जाती है और या एक ऐसा उत्तम धैर्य प्रदान किया जाता है जिसमें आनन्द, हर्ष और उल्लास हो।

(10) - उनकी नैतिक स्थिति एक ऐसी उच्च स्तर की की जाती है जो अहंकार, अभिमान, और अधमता, घमंड, दिखावा, ईर्ष्या,कृपणता तथा हार्दिक संकीर्णता सब दूर की जाती है तथा हार्दिक प्रफुल्लता और प्रसन्नता प्रदान की जाती है।

(11) - इनका ख़ुदा तआला पर भरोसा नितान्त उच्च श्रेणी का होता है और उसके परिणाम प्रकट होते रहते हैं।

(12) - इन को उन शुभ कर्मों को करने की शक्ति प्रदान की जाती है कि दूसरे उन में कमज़ोर होते हैं।

(13) - इन में ख़ुदा की प्रजा से सहानुभूति का तत्व बहुत बढ़ाया जाता है तथा किसी प्रतिफल या पुण्य की आशा के बिना उनमें ख़ुदा की प्रजा की भलाई का असाधारण जोश होता है तथा वे स्वयं भी नहीं समझ सकते कि इतना जोश किस

कारण है क्योंकि यह बात स्वाभाविक होती है।

(14) - ख़ुदा तआला के साथ इन लोगों का संबंध नितान्त वफ़ादारी का होता है तथा उनके अन्दर प्राण देने की एक अद्भुत मस्ती होती है और उनकी आत्मा को ख़ुदा तआला की आत्मा के साथ वफ़ादारी का एक रहस्य होता है जिसे कोई वर्णन नहीं कर सका। इसलिए ख़ुदा के निकट उन का एक पद होता है जिसे प्रजा नहीं जानती। वह वस्तु जो विशेष तौर पर उनमें अधिक है तथा जो समस्त बरकतों का उद्गम है, जिसके कारण ये डूबते हुए फिर निकल आते हैं और मृत्यु तक पहुँच कर पुन: जीवित हो जाते हैं तथा अपमान सहन करके फिर सम्मान का ताज दिखा देते हैं, वियोगी और अकेले होकर सहसा एक जन समूह के साथ दिखाई देते हैं। वह यही वफ़ादारी का रहस्य है जिसके दृढ़ संबंध को न तलवारें काट सकतीं हैं और न संसार का कोई विद्रोह, भय और उपद्रव उसे ढीला कर सकता है। उन पर अल्लाह, उसके फ़रिश्तों और सम्पूर्ण सदात्मा लोगों की ओर से सलामती।

(15) - उनका पन्द्रहवां लक्षण पवित्र क़ुर्आन का ज्ञान है। पवित्र क़ुर्आन के ज्ञान, **सच्चाइयां और रहस्य** जितने इन लोगों को दिए जाते हैं अन्य लोगों को कदापि नहीं दिए जाते। ये लोग वे ही पवित्रात्मा हैं जिनके बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

لَا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ*

(16) - उनके भाषण और लेख में अल्लाह तआला एक प्रभाव रख देता है जो भौतिकवादी विद्वानों के लेखों और भाषणों से निराले होते हैं तथा उसमें एक रोब और श्रेष्ठता पाई जाती है और इस शर्त पर कि आवरण न हो हृदयों को पकड़ लेता है।

(17) - उनमें एक रोब भी होता है जो ख़ुदा तआला के रोब से रंगीन होता है क्योंकि ख़ुदा तआला एक विशेष तौर पर उनके साथ होता है और उनके चेहरों पर ख़ुदाई-प्रेम का एक प्रकाश होता है। जो व्यक्ति उसे देख ले उस पर नर्काग्नि अवैध

* अलवाक़िया - 80

की जाती है। उन से कोई अपराध और भूल भी हो सकती है, परन्तु उनके हृदयों में एक अग्नि होती है जो अपराध और भूल को भस्म कर देती है और उनकी भूल कोई स्थिर रहने वाली वस्तु नहीं अपितु उस वस्तु के समान है जो एक तीव्र बहने वाले पानी में बहती हुई चली जाती है। अत: उनका आलोचक हमेशा ठोकर खाता है।

(18) - ख़ुदा तआला उन्हें नष्ट नहीं करता और अपमानित और लज्जित भी नहीं होने देता क्योंकि वे उसके प्रिय और उसके द्वारा लगाए गए पौधे हैं। उन्हें ऊँचाई से इसलिए नहीं गिराता ताकि तबाह करे अपितु इसलिए गिराता है ताकि उनका स्वभाव के विपरीत अद्भुत तौर पर सुरक्षित रहना प्रदर्शित करे। इसलिए उन्हें अग्नि में धक्का नहीं देता कि उनको जला कर राख कर दे अपितु इसलिए धक्का देता है ताकि लोग देख लें कि पहले तो अग्नि थी, परन्तु अब कैसा मनोहर उद्यान है।

(19) - उन्हें मृत्यु नहीं देता जब तक कार्य पूर्ण न हो जाए जिसके लिए वे भेजे गए हैं और जब तक पवित्र हृदयों में उनकी मान्यता का प्रसार न हो जाए तब तक उन पर मृत्यु नहीं आती।

(20) - इन के शुभ लक्षण शेष रखे जाते हैं और ख़ुदा तआला कई पीढ़ियों तक उनकी सन्तान और उनके घनिष्ठ मित्रों की सन्तान पर विशेष कृपा-दृष्टि रखता है और संसार से उनका नाम नहीं मिटाता।

ख़ुदा के वलियों के ये लक्षण हैं तथा इन में प्रत्येक प्रकार का लक्षण जब यथा समय प्रकट होता है तो बड़े चमत्कार की भांति झलक दिखाता है, परन्तु उसका प्रकट करना ख़ुदा की ही अधिकार में होता है।

अब यह ख़ाकसार

وَاَمَّا بِنِعۡمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثۡ*

के आदेशानुसार इस बात को प्रकट करने में कोई हानि नहीं देखता कि दयालु और कृपालु ख़ुदा ने ख़ाकसार को मात्र अपनी कृपा से इन समस्त बातों से भरपूर हिस्सा दिया है तथा इस बेकार को ख़ाली हाथ नहीं भेजा और न निशानों के बिना

* अज़्ज़ुहा - 12

अवतरित किया। अपितु वे समस्त निशान दिए हैं जो प्रकट हो रहे हैं और होंगे और ख़ुदा तआला जब तक स्पष्ट तौर पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण न कर ले तब तक इन निशानों को प्रकट करता जाएगा और यह जो कहा कि तुम्हारे होने से हमें क्या लाभ ? अत: इस के उत्तर में स्मरण रखना चाहिए कि जो व्यक्ति अवतरित होकर आकाश से आता है उसके अस्तित्व से अपनी-अपनी योग्यतानुसार सब को अपितु समस्त संसार को लाभ पहुँचता है और वास्तव में वह एक आध्यात्मिक सूर्य निकलता है जिसका प्रकाश थोड़ा बहुत दूर-दूर तक पहुँचता है और जिस प्रकार सूर्य के भिन्न-भिन्न प्रभाव प्राणियों, वनस्पतियों और जड़ पदार्थों तथा प्रत्येक प्रकार के शरीर पर पड़ रहे हैं और बहुत कम लोग हैं जो उन प्रभावों पर पूर्ण रूप से अवगत हैं। इसी प्रकार वह व्यक्ति जो अवतार होकर आता है समस्त स्वभाव के लोगों तथा संसार के प्रत्येक कोने पर उसके प्रभाव पड़ते हैं और तभी से उसकी दयापूर्ण नियुक्ति आकाश पर प्रकट होती है, सूर्य की किरणों की भांति फ़रिश्ते आकाश से उतरने प्रारंभ होते हैं तथा संसार के सुदूर किनारों तक जो लोग सत्यनिष्ठ होने की येग्यता रखते हैं उन्हें सत्य की ओर पग उठाने की शक्ति देते हैं और फिर नाम के सदाचारी लोगों के स्वभाव सत्य की ओर झुक जाते हैं। अत: यह सब उस ख़ुदाई मनुष्य की सच्चाई के निशान होते हैं जिसके प्रकटन के युग में आकाशीय शक्तियां तेज़ की जाती हैं। ख़ुदा तआला ने सच्ची वह्यी का यही निशान दिया है कि जब वह उतरती है तो उसके साथ फ़रिश्ते भी अवश्य उतरते हैं और संसार दिन-प्रतिदिन सच्चाई की ओर पलटा खाता जाता है। अत: यह समस्त लक्षण उस ख़ुदा के मामूर की सच्चाई के हैं जो ख़ुदा की ओर से आता है और विशेष लक्षण वे हैं जिनका अभी हम वर्णन कर चुके हैं।

(16) प्रश्न - इन्जील में लिखा है कि मसीह प्रताप के साथ संसार में आएगा और संसार उसे स्वीकार कर लेगा, परन्तु यहां प्रतापी प्रकटन का कोई लक्षण नहीं और न संसार ने स्वीकार किया है।

उत्तर - यह वर्णन जो इन्जील मती बाब-25 आयत 31 से 46 तक है कि जब

इब्ने आदम अपने प्रताप के साथ आएगा और समस्त पवित्र फ़रिश्ते उसके साथ होंगे, यह वास्तव में इस संसार के बारे में नहीं अपितु इस प्रकार का आना इस संसार के क्रम के समाप्त होने के पश्चात है जो मुर्दों को उठाए जाने के पश्चात घटित होगा जब प्रत्येक पवित्र नबी अपने प्रताप में प्रकट होगा और अपनी उम्मत के सदात्मा लोगों को शुभ समाचार देगा और अवज्ञाकारियों को दोषी ठहराएगा, परन्तु इन्हीं आयतों में मसीह ने बता दिया कि मेरा आना ग़रीबी की अवस्था में भी होगा जैसा कि इसी इन्जील की चौंतीसवीं आयत में लिखा है :-

हे मेरे बाप के मुबारक लोगो! उस बादशाहत को जो संसार की नींव डालने से तुम्हारे लिए तैयार की गई विरासत में लो, क्योंकि मैं भूखा था तुमने मुझे खाना खिलाया, मैं प्यासा था तुम ने मुझे पानी पिलाया, मैं परदेसी था तुमने मुझे अपने घर में उतारा, नंगा था तुमने मुझे कपड़ा पहनाया, बीमार था तुमने मेरी देखभाल की, क़ैद में था तुम मेरे पास आए। सदात्मा लोग उसके उत्तर में उसे कहेंगे - हे ख़ुदावन्द ! कब हमने तुझे भूखा देखा और खाना खिलाया या प्यासा और पानी पिलाया, कब हमने तुझे परदेसी देखा और अपने घर में उतारा अथवा नंगा और कपड़ा पहनाया, हम कब तुझे बीमार और क़ैद में देखकर तेरे पास आए। तब बादशाह उन से उत्तर में कहेगा मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि जब तुम ने मेरे उन सबसे छोटे भाइयों में से एक के साथ किया तो मेरे साथ किया तब वह बाईं ओर वालों से भी कहेगा - हे धिक्कृत लोगो! मेरे सामने से उस हमेशा की अग्नि में जाओ जो शैतान और उसके फ़रिश्तों के लिए तैयार की गई है, क्योंकि मैं भूखा था, परन्तु तुमने मुझे खाने को न दिया, प्यासा था तुमने मुझे पानी न पिलाया, परदेसी था तुम ने मुझे अपने घर में न उतारा, नंगा था तुम ने मुझे कपड़ा न पहनाया, बीमार और क़ैद में था तुम ने मेरी ख़बर न ली। तब वे भी उत्तर में उसे कहेंगे - हे ख़ुदावन्द! कब हमने तुझे भूखा या प्यासा या परदेसी या नंगा या बीमार या क़ैदी देखा और तेरी सेवा न की, तब वह उन्हें उत्तर में कहेगा - मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तुम ने मेरे इन सब छोटे भाइयों में से एक के साथ न किया तो मेरे साथ भी न किया

और वे हमेशा के अज़ाब में जाएंगे परन्तु सत्यनिष्ठ लोग हमेशा के जीवन में।

अब विचार करना चाहिए कि इन समस्त आयतों से स्पष्ट है कि मसीह ने अपने कुछ समरूपों का वर्णन करके उनका संसार में आना और कष्ट उठाना मानो अपना आना और कष्ट उठाना बताया है और छोटे भाइयों से अभिप्राय उनके अतिरिक्त और कौन लोग हो सकते हैं जो एक सीमा तक मसीह के पद और मसीह के स्वभाव और मसीह की श्रेणी से भाग प्राप्त करें और उनके नाम पर अवतरित होकर आएं ईसाई तो नहीं कह सकते कि हम मसीह के भाई हैं और कुछ सन्देह नहीं कि मुहद्दिस नबी का छोटा भाई होता है और समस्त नबी इल्लती भाई (मां की ओर से सौतेले भाई) कहलाते हैं और यह नितान्त सूक्ष्म संकेत है कि मसीह ने उनके आगमन को अपना आगमन ठहराया है और यह भी स्मरण रखना चाहिए कि इस विनीत का यह आना तुलनात्मक तौर पर प्रतापी आना भी है क्योंकि ख़ुदा तआला की ओर से एकेश्वरवाद के प्रचार के लिए यह बड़ी-बड़ी सफलताओं की भूमिका है तथा प्रतापी रंग में आने से अभिप्राय यदि राजनीतिक पद्धति रखा जाए तो यह उचित नहीं। यह बात न्याय से दूर है कि कोई व्यक्ति असावधान लोगों को जागरूक करने के लिए अवतरित होकर आए और आते ही मार-पीट हिंसा और रक्त बहाने का कार्य करे। जब तक समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्णतया सम्पन्न न हो ख़ुदा तआला किसी क़ौम पर अज़ाब नहीं उतारता। अत: मसीह का प्रतापी रंग में आना ईसाई जिन अर्थों में वर्णन करते हैं वह इस संसार से संबंधित नहीं। इस संसार में मसीह के आगमन का वादा है उस वादे का ऐसे प्रतापी रंग से कुछ संबंध नहीं। ईसाइयों ने बात को कहीं का कहीं मिला दिया है और वास्तविकता को स्वयं पर संदिग्ध कर दिया है। अत: मती की उपरोक्त आयतें तो स्पष्ट वर्णन कर रही हैं कि प्रतापी रूप का आगमन उस समय होगा कि जब शरीरों को उठाने के पश्चात् प्रत्येक का हिसाब होगा क्योंकि शरीरों को उठाने के अतिरिक्त उद्दण्डों और सत्यनिष्ठों की जमाअतें जो मृत्यु पा चुकी हैं एक स्थान पर क्योंकर एकत्र हो सकती हैं परन्तु इस लेख के विपरीत कि जो मती बाब-25 उपरोक्त आयतों से स्पष्ट होता है मती के

चौबीसवें अध्याय से इसी संसार में मसीह का आगमन भी समझा जाता है और दोनों प्रकार के वर्णनों में अनुकूलता इस प्रकार हो सकती है कि आख़िरत में जो शरीरों को उठाने के पश्चात आएगा वह स्वयं मसीह है, परन्तु संसार में मसीह के नाम पर आने वाला मसीह का समरूप है जो उसका छोटा भाई और उसी के कथनानुसार उसके अस्तित्व में शामिल है। संसार में आने के बारे में मसीह ने स्पष्ट तौर पर कह दिया कि फिर मुझे नहीं देखोगे। अत: वह संसार में कैसे आ सकता है जबकि वह स्वयं कह गया कि फिर मुझे नहीं देखोगे।

यह भी स्मरण रखना चाहिए कि संसार के स्वीकार करने के लिए यह आवश्यक नहीं कि वह उसी समय स्वीकार कर ले। संसार हमेशा शनै: शनै: स्वीकार करता है, उन लोगों का होना भी तो आवश्यक है कि जो ईमान नहीं लाएंगे, परन्तु मसीह की फूंक की वायु से मरेंगे। फूंक की वायु से मरना अकाट्य तर्कों द्वारा मरना है। इन्जीलों में भी उल्लेख है कि मसीह के उतरने के समय कुछ लोग पकड़े जाएंगे और कुछ छोड़े जाएंगे अर्थात् कुछ पर अज़ाब उतारने के लिए सबूत स्थापित हो जाएगा मानो वे पकड़े गए और कुछ लोग मुक्ति प्राप्त करने के लिए अधिकार प्राप्त कर लेंगे मानो मुक्ति पा गए।

(17) प्रश्न - इस समय मसीह के समरूप के आने की क्या आवश्यकता थी?

उत्तर - इस समय मसीह के समरूप की नितान्त आवश्यकता थी और उन फरिश्तों की जो जीवित करने के लिए उतरा करते हैं, अत्यन्त आवश्यकता थी, क्योंकि आध्यात्मिक मृत्यु और लापरवाही एक संसार पर छा गई है और ख़ुदा तआला का प्रेम ठण्डा हो गया तथा निर्दयता और लोलुपता फैल गई और वे समस्त कारण पैदा हो गए जिनके कारण तौरात के समर्थन में मसीह इब्ने मरयम संसार में आया था और दज्जाल भी बड़े ज़ोर के साथ निकला तथा आदम की पैदायश के हिसाब से सोलह सौ का अन्तिम भाग आ गया जो इस आयत के अनुसार

اِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ *

---

* अलहज्ज - 48

छठे दिन के स्थान पर है। अत: आवश्यक था कि इस छठे दिन में आदम पैदा होता जो अपनी आध्यात्मिक पैदायश की दृष्टि से मसीह का समरूप है, इसलिए ख़ुदा तआला ने इस विनीत को मसीह का समरूप तथा छठे हज़ार का आदम अलिफ़ शशम करके भेजा जैसा कि उसने फ़रमाया जो बराहीन अहमदिया में प्रकाशित हो चुका है और वह यह है اَرَدْتُّ اَنْ اَسْتَخْلِفَ فَخَلَقْتُ اٰدَم अर्थात् मैंने इरादा किया कि अपना ख़लीफ़ा पैदा करूँ। अत: मैंने आदम को पैदा किया फिर दूसरे स्थान पर फ़रमाता है -

خلق اٰدَم فَا كرَمه

अर्थात् आदम को पैदा किया फिर उसे सम्मान प्रदान किया और जैसा कि आदम को तिरस्कार की दृष्टि से देखा गया और उपद्रवी ठहरा दिया गया। यही स्थिति यहां भी सामने आई और चूँकि आदम और मसीह में परस्पर समानता है। अत: इस विनीत का नाम आदम भी रखा गया और मसीह भी।

(18) प्रश्न - इब्ने सय्याद को यदि मसीह का दज्जाल ठहराया गया है तो इस से मुस्लिम की दमिश्क वाली हदीस को क्या हानि पहुँचती है क्योंकि कुछ रिवायतों से ज्ञात होता है कि इब्ने सय्याद लुप्त हो गया तथा प्रलय के निकट फिर प्रकट होगा।

उत्तर - इब्ने सय्याद का लुप्त होना सही रिवायत से कदापि सिद्ध नहीं, परन्तु उसका ईमान लाना और मरना सिद्ध है जैसा कि हम पूर्व में भी उल्लेख कर चुके हैं और उसकी मदीना में मृत्यु होना सिद्ध हो चुका है। इस के अतिरिक्त दुर्लभ की कल्पना के तौर पर यदि वह अज्ञात भी हो तो क्या इस से अब तक उसका जीवित रहना सिद्ध हो जाएगा ? क्या अब आपको वे सही हदीसें भी याद नहीं कि जो आँहज़रत स.अ.व. फ़रमाते हैं कि हमारे युग से सौ वर्ष तक पृथ्वी पर कोई मनुष्य जीवित नहीं रहेगा।

यह बात स्मरण रहे कि शिया लोग इमाम मुहम्मद महदी के बारे में भी यह आस्था रखते हैं कि वह जीवित अवस्था में ही एक गुफा में छुप गए और अज्ञात हैं और प्रलय के निकट प्रकट होंगे तथा सुन्नत जमाअत के लोग उनके इस विचार को

मिथ्या ठहराते हैं और ये हदीसें प्रस्तुत करते हैं कि आँहज़रत स.अ.व. ने फ़रमाया है कि सौ वर्ष के पश्चात् पृथ्वी पर कोई व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता। अत: सुन्नत जमाअत की यह विचारधारा है कि इमाम मुहम्मद महदी मृत्यु पा चुके हैं और अन्तिम युग में उन्हीं के नाम पर एक और इमाम पैदा होगा, परन्तु अन्वेषकों के निकट महदी का आना कोई निश्चित बात नहीं है।

यहां मुझे विचार करने से ज्ञात होता है कि वास्तव में इस मामले में शिया और सुन्नत जमाअत में जो मतभेद है उसमें किसी ऐतिहासिक गलती का हस्तक्षेप नहीं अपितु वास्तविकता यह है कि शियों की रिवायतें कुछ आदरणीय सादात के सूक्ष्म कश्फ़ों पर आधारित विदित होती हैं। चूंकि बारह इमाम नितान्त पवित्र श्रेणी के पवित्र, सत्यनिष्ठ तथा उन लोगों में से थे जिन पर सच्चे कश्फ़ों के द्वार खोले जाते हैं, इसलिए संभव और अनुमान के अनुसार है कि कुछ बुज़ुर्ग इमामों ने ख़ुदा तआला से इल्हाम पाकर इस मामले को उसी शैली और ऐसे रूप में वर्णन किया हो जैसा कि मलाकी की किताब में मलाकी नबी ने एलिया नबी के दोबारा आने का हाल वर्णन किया था और जैसा कि मसीह के दोबारा आने का शोर मचा हुआ है और वास्तव में कश्फ़ वाले का अभिप्राय यह होगा कि किसी युग में उस इमाम के सदृश एक और इमाम आएगा जो उसका समनाम, समशक्ति और समगुण होगा मानो वही आएगा। फिर यह सूक्ष्म रहस्य जब भौतिकवादी विचारधारा वाले लोगों में फैला तो उन लोगों ने अपनी मन्दबुद्धि के अनुसार वास्तव में यही आस्था रख ली होगी कि वह इमाम सैकड़ों वर्ष से किसी गुफ़ा में छुपा हुआ है और अन्तिम युग में बाहर निकल आएगा, परन्तु स्पष्ट है कि ऐसा विचार सही नहीं है। यह सामान्य बोल चाल की बात है कि जब कोई व्यक्ति किसी का समरूप और समगुण होकर आता है तो कहते हैं कि मानो वही आ गया। सूफी लोग भी इन बातों को सामान्यतया स्वीकार करते हैं और कहते हैं कि कुछ पूर्वकालीन वलियों (ऋषियों) की आत्माएं उनके पश्चात् आने वाले वलियों में समावेश करती रही हैं तथा इस कथन से उनका तात्पर्य यह है कि कुछ वली कुछ वलियों की शक्ति और स्वभाव लेकर आते हैं, मानो वही होते हैं।

(19) प्रश्न - यदि मसीह इब्ने मरयम वास्तव में मृत्यु पा चुका है तो फिर क्या यह बात जो तेरह सौ वर्ष से आज तक प्रसिद्ध चली आती है कि मसीह जीवित आकाश की ओर उठाया गया आज ग़लत सिद्ध हो गई?

उत्तर - अत: स्पष्ट हो कि यह सर्वथा झूठ है कि तेरह सौ वर्ष से सर्वसम्मति द्वारा यही माना गया है कि मसीह पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर उठाया गया है। स्पष्ट है कि यदि पूर्वकालीन और बाद में आने वालों की किसी एक बात पर सर्वसम्मति होती तो व्याख्याकार विभिन्न कथनों को न लिखते, परन्तु ऐसी कौन सी तफ़्सीर (व्याख्या) है जो इस बारे में जो भिन्न-भिन्न कथनों से रिक्त है। कभी कहते हैं कि मसीह निद्रावस्था में उठाया गया, कभी कहते हैं कि वह मर गया और उसकी रूह उठाई गई और कभी पवित्र क़ुर्आन की गलती निकालते हैं और कहते हैं कि आयत

اِنِّیْ مُتَوَفِّیْكَ وَرَافِعُكَ اِلَیَّ*

में वास्तव में मुतवफ़्फ़ीका बाद में होना चाहिए और राफ़िओका इलैया (رَافِعُكَ اِلَیَّ) इस से पहले। अब स्पष्ट है कि यदि उनकी सर्वसम्मति एक भाग विशेष पर होती तो अपनी व्याख्याओं (तफ़्सीरों) में विभिन्न कथन क्यों संकलित करते और जब एक विशेष बात पर विश्वास ही नहीं तो फिर सर्वसम्मति कहां। और यह आरोप कि तेरह सौ वर्ष के पश्चात् यह बात तुम्हें ही ज्ञात हुई। इसका उत्तर यह है कि वास्तव में यह कथन नया तो नहीं। इसके प्रथम रावी (वर्णनकर्ता) तो इब्ने अब्बास ही थे, परन्तु अब ख़ुदा तआला ने इस विनीत पर इस कथन की वास्तविकता प्रकट कर दी और दूसरे कथनों का असत्य होना सिद्ध कर दिया ताकि इस प्रकार मौखिक तौर पर अपने एक असहाय बन्दे का चमत्कार दिखाए और ताकि बुद्धिमान लोग समझ जाएं कि यह विशेष मार्ग-दर्शन ख़ुदा तआला की ओर से है क्योंकि यदि यह सामान्य बुद्धि और विवेक का कार्य होता तो अन्य लोग भी इस सत्य को उसके उन समस्त सबूतों सहित जिनका उन पुस्तकों में उल्लेख हो चुका है वर्णन कर सकते।

अब ये समस्त प्रश्न समाप्त हुए तथा इन प्रश्नों से इसके अतिरिक्त कि सत्य और

---

* आले इमरान-56

भी प्रकट हो और चमके कोई हानि नहीं पहुँची। इस पुस्तक के पाठक जो इसको प्रारंभ से अन्त तक अध्ययन करेंगे भली भांति विश्वास कर लेंगे कि हमारे विरोधियों के हाथ में भ्रमों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं और वे हर ओर से पराजित होकर बार-बार यह भ्रम प्रस्तुत करते हैं कि **इब्ने मरयम** का उतरना पुस्तकों में लिखा हुआ है और हमारी इस बात को समझ नहीं सकते कि क्या ख़ुदा तआला कुछ विशेष गुणों के अनुसार किसी दूसरे का नाम इब्ने मरयम नहीं रख सकता। आश्चर्य कि आप तो हमेशा अपनी सन्तान के नबियों वाले नाम रखते हैं अपितु एक-एक नाम में दो-दो नबियों के नाम होते हैं जैसे मुहम्मद या'क़ूब, मुहम्मद इब्राहीम, मुहम्मद मसीह, मुहम्मद ईसा, मुहम्मद इस्माईल, अहमद हारून, परन्तु यदि ख़ुदा तआला किसी अपने बन्दे को इन नामों में से किसी नाम के साथ पुकारे या उन नबियों के नामों और उपाधियों में से कोई नाम या उपाधि अपने किसी अवतार को प्रदान करे तो यह कुफ्र समझते हैं। मानो जो कार्य करना उनके लिए वैध है वह ख़ुदा तआला को करना वैध नहीं। यह नहीं देखते कि नबी करीम स.अ.व. फ़रमा गए हैं कि इस उम्मत में बनी इस्राईल के नबियों के मसील (सदृश) आएंगे तो क्या आवश्यक न था कि वे मसील (सदृश) संसार में आते फिर यदि ख़ुदा तआला ने मसीह का मसील होने के कारण किसी का नाम **इब्ने मरयम** रख दिया तो क्या बुरा किया और अनुकूलता स्पष्ट है कि मृत्यु प्राप्त दोबारा संसार में नहीं आ सकता और न ख़ुदा तआला नबियों पर दो मौतें लाता है और उसका आदेश भी है कि जो व्यक्ति इस संसार से गया वह गया जैसा कि वह फ़रमाता है :-

فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ*

अर्थात् जिस पर मृत्यु आ गई वह फिर कभी संसार में नहीं आ सकता। फिर फ़रमाया :-

لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى**

---

* अज़्ज़ुमर-43

** अद्दुख़ान-57

अर्थात् स्वर्ग वालों पर दूसरी मौत नहीं आएगी। एक मौत जो आ चुकी वह आ चुकी। अब जो लोग कहते हैं कि मसीह जो मर गया, क्या ख़ुदा तआला समर्थ नहीं कि उससे फिर जीवित करके भेजे जैसे उनके निकट मसीह स्वर्गीय नहीं कि उसके लिए दो मौतें प्रस्तावित करते हैं। सज्जनो ! अपनी बात की हठ के लिए मसीह को बार-बार क्यों मारना चाहते हो, उसका कौन सा पाप है कि उस पर दो मौतें आएं और फिर इन दो मौतों का हदीस और क़ुर्आन की दृष्टि से सबूत क्या है कुछ प्रस्तुत तो करो और यदि अब भी हमारे विरोधी मौलवी लोग मानने में नहीं आते तो हम उन्हें ग़लती पर होने के कारण मुबाहला के लिए नहीं बुलाते, क्योंकि परस्पर मतभेदों के कारण मुसलमानों का परस्पर मुबाहला वैध हो तो उस का परिणाम यह हो कि मुसलमानों पर अज़ाब आना प्रारंभ हो जाए और किसी विशेष व्यक्ति के अतिरिक्त जो ग़लती से पूर्णतया रिक्त हो समस्त मुसलमान नष्ट किए जाएं। अत: ख़ुदा तआला का यह इरादा नहीं। इसलिए केवल मतभेद के आधार पर मुबाहला भी वैध नहीं। हां यदि हमारे विरोधी स्वयं को सत्य पर समझते हैं और इस बात पर वास्तव में निश्चित तौर पर ईमान रखते हैं कि वास्तव में वही मसीह इब्ने मरयम आकाश से उतरेगा जिस पर इन्जील उतरी थी तो इस निर्णय के लिए एक यह भी उत्तम उपाय है कि वह एक बड़ी जमाअत एकत्र होकर नितान्त नम्रता और विनीतता से अपने काल्पनिक मसीह के उतरने के लिए दुआ करें। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि सच्चे लोगों की दुआ स्वीकार हो जाती है, विशेषकर ऐसे सत्यनिष्ठ कि जिनमें मुल्हम भी हों। अत: यदि वे सच्चे हैं तो मसीह अवश्य उतर आएगा और वह दुआ भी अवश्य करेंगे और यदि वे सत्य पर नहीं तथा स्मरण रहे कि वे सत्य पर कदापि नहीं हैं तो वे दुआ भी नहीं करेंगे, क्योंकि वे हृदयों में विश्वास रखते हैं कि दुआ स्वीकार नहीं होगी। हां हमारे इस निवेदन को व्यर्थ बहानों द्वारा टाल देंगे ताकि ऐसा न हो कि अपमानित होना पड़े। यदि कोई कहे कि सदात्मा लोगों की दुआ झूठे लोगों के मुकाबले पर स्वीकार होना आवश्यक नहीं अन्यथा अनिवार्य हो जाता है कि हिन्दुओं के मुकाबले पर मुसलमानों की दुआ प्रलय के बारे में स्वीकार होकर अभी प्रलय आ जाए। इसका

उत्तर यह है कि यह निर्धारित हो चुका है कि प्रलय सात हज़ार वर्ष गुज़रने से पूर्व नहीं आ सकती तथा आवश्यक है कि ख़ुदा उसे रोके रखे जब तक वे समस्त लक्षण पूर्ण रूप से प्रकट न हो जाएं जिन का हदीसों में उल्लेख है, परन्तु मसीह के प्रादुर्भाव का समय तो यही है जिसके बारे में उस स्वर्गीय मौलवी ने भी साक्ष्य दिया है जिसके मुजद्दिद होने का मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी सत्यापन कर चुके हैं और वे समस्त लक्षण भी प्रकट हो गए हैं जिनका मसीह के समय प्रकट होना आवश्यक था जैसा कि इसी पुस्तक में हम ने सिद्ध कर दिया है। अत: यदि अब भी मसीह के उतरने के लिए दुआ स्वीकार न हो तो स्पष्ट तौर पर सिद्ध होगा कि वह दुआ पहले से प्राप्त को प्राप्त करने में सम्मिलित है इसी कारण स्वीकार नहीं हुई।

हमारे मित्र मौलवी अबू सईद **मुहम्मद हुसैन** साहिब अपने एक पत्र में लिखते हैं कि मैं बौद्धिक तौर पर इस बात **(मसीह की मृत्यु)** को सिद्ध करके दिखाउँगा, परन्तु कुछ मालूम नहीं हुआ कि मौलवी साहिब के बौद्धिक तौर से क्या अभिप्राय है। क्या **ग़ुब्बारे** में चढ़कर आकाश की ओर चढ़कर दर्शकों को कोई कर्तब (तमाशा) दिखाना चाहते हैं। हज़रत मौलवी साहिब पर अनिवार्य है कि बौद्धिक तौर का नाम न लें ताकि नवीन दर्शनशास्त्र वाले उनके पीछे न पड़ जाएं अपितु यह कहा करें कि जो व्यक्ति बुद्धि का नाम ले वह काफ़िर है। यदि कुछ दिन ऐसी ही आस्थाओं के साथ काम चलाना है तो काफ़िर कहने के अतिरिक्त अन्य कोई सफल प्रहार नहीं, परन्तु हमारा तो इस बात पर ईमान है कि ख़ुदा तआला ने मनुष्य के अस्तित्व में बुद्धि को भी व्यर्थ पैदा नहीं किया। यदि मुसलमानों के दो पक्षों में से जो किसी आंशिक समस्या पर झगड़ते हैं और परस्पर मतभेद रखते हैं। एक पक्ष ऐसा है कि शरई सबूतों, क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशों और हदीस की बुद्धि को भी अपने साथ रखता है तो निस्सन्देह वही पक्ष सच्चा है क्योंकि उस के दावे के समर्थन के लिए गवाह बहुत हैं। अत: अब देखना चाहिए कि मसीह की मृत्यु के बारे में पवित्र क़ुर्आन, हदीस, बुद्धि और अनुभव हमारा किस प्रकार सहायक हो रहा है। परन्तु हमारे विरोधियों को इन समस्त गवाहों में से कोई सहायता नहीं देता। पवित्र क़ुर्आन

के सामने जाते हैं तो पवित्र क़ुर्आन कहता है कि चल दूर हो मेरी नीति के ख़ज़ाने में तेरे विचार की समर्थक कोई बात नहीं, फिर वहां से वंचित होकर हदीसों की ओर आते हैं तो हदीसें कहती हैं कि हे उद्दण्ड क़ौम हमें सामूहिक दृष्टि से देख तथा कुछ पर ईमान लाने वाला और कुछ का इन्कारी न हो ताकि तुझे ज्ञात हो कि मैं पवित्र क़ुर्आन की विरोधी नहीं, फिर हदीसों से निराश होकर पहले और पीछे आने वालों के विभिन्न कथनों की ओर आते हैं तो उनको किसी एक विशेष भाग पर स्थापित नहीं देखते अपितु व्याख्याओं (तफ्सीरों) का भण्डार पाते हैं और जब देखना चाहते हैं कि मज़बूत तफ़्सीरों (व्याख्याओं) में اِنِّیۡ مُتَوَفِّیۡکَ (इन्नीमुतवफ़्फ़ीका) के क्या अर्थ निकलते हैं तो प्रथम बिस्मिल्लाह करके इब्ने अब्बास से यही हदीस निकलती है कि हज़रत मसीह मृत्यु पा चुके हैं, फिर क़ुर्आन और हदीस से निराश होकर बुद्धि की ओर दौड़ते हैं तो बुद्धि एक स्पष्ट सबूत का थप्पड़ मार कर दूसरी ओर मुँह फेर देती है, फिर अन्तरात्मा और हृदय के प्रकाश की ओर आते हैं तो वह अपने निकट आने से धक्के देता है। अत: इससे अधिक दुर्भाग्य क्या होगा कि कोई इन लोगों को स्वीकार नहीं करता और किसी स्थान पर अपने **मोर्चे** स्थापित नहीं कर सकते।

कुछ लोग होशियारी से पवित्र क़ुर्आन के स्पष्ट सबूत पर पर्दा डालना चाहते हैं और कहते हैं कि تَوَفِّی (**तवफ़्फ़ा**) का शब्द शब्द कोशों में कई अर्थों में आया है, हालांकि अपने हृदयों में भली भांति जानते हैं कि जिन शब्दों को पवित्र क़ुर्आन परिभाषिक तौर पर कुछ अर्थों के लिए विशेष कर लेता है और अपने वर्णन की निरन्तरता से भलीभांति समझा देता है कि अमुक अर्थ के लिए उसने अमुक शब्द विशेष कर रखा है उस शब्द को उस अर्थ से इस विचार से फेरना कि किसी डिक्शनरी में इसके अन्य अर्थ भी आए हैं सर्वथा नास्तिकता है। उदाहरणतया शब्दकोश को पुस्तकों में अंधकारमय रात का नाम भी काफ़िर है,परन्तु सम्पूर्ण पवित्र क़ुर्आन में काफ़िर का शब्द धर्म का काफ़िर अथवा ने'मत का काफ़िर पर बोला गया है। अब यदि कोई व्यक्ति कुफ्र का शब्द क़ुर्आन के प्रचलित शब्दों से

फेर कर उस से अभिप्राय अंधकारमय रात ले और यह सबूत दे कि शब्दकोशों में ये अर्थ भी लिखे हैं तो सच बताइए कि उसका यह नास्तिकतापूर्ण ढंग है अथवा नहीं ? इसी प्रकार शब्द कोशों में सौम (उपवास) का शब्द उपवास में सीमित नहीं अपितु ईसाइयों के गिरजाघर का नाम भी सौम है तथा शुतुरमुर्ग की लीद को भी सौम कहते हैं, परन्तु पवित्र क़ुर्आन की परिभाषा में 'सौम' केवल उपवास (रोज़ा) का नाम है। इसी प्रकार 'सलात' शब्द के अर्थ भी शब्दकोश में अनेक हैं, परन्तु पवित्र क़ुर्आन की परिभाषा में केवल नमाज़, दरूद और दुआ का नाम है। यह बात मनीषी लोग जानते हैं कि प्रत्येक कला को एक परिभाषा की आवश्यकता होती है और इस कला को जानने वाले आवश्यकताओं के अनुसार कुछ शब्दों को कई अर्थों से पृथक करके किसी एक अर्थ से विशेष्य कर लेते हैं। उदाहरणतया उपचार की कला को देखिए कि कुछ शब्द जो अनेक अर्थ रखते थे परन्तु पारिभाषिक के तौर पर केवल एक अर्थ में सीमित रखे गए हैं तथा सत्य तो यह है कि कोई विद्या परिभाषित शब्दावाली के अभाव में चल ही नहीं सकती। अत: जो व्यक्ति नास्तिकता का इरादा नहीं रखता उसके लिए सीधा मार्ग यही है कि पवित्र क़ुर्आन के अर्थ उसके प्रचलित और परिभाषित शब्दों के अनुसार करे अन्यथा व्याख्या राय द्वारा होगी।

यदि यह कहा जाए कि تَوَفّٰ (तवफ़्फ़ा) के अर्थ क़ुर्आन के प्रचलित शब्दों में सामान्य तौर पर रूह को निकालना है तो फिर व्याख्याकारों ने इसके विपरीत कथनों का उल्लेख क्यों किया। इसका उत्तर यह है कि मृत्यु के अर्थ भी तो वे निरन्तर लिखते आए हैं । यदि एक क़ौम की इन अर्थों पर सर्वसम्मति न होती तो आँहज़रत स.अ.व. के युग से आज तक जो तेरह सौ वर्ष व्यतीत हो गए। इन अर्थों का तफ़्सीरों (व्याख्याओं) में उल्लेख होता चला आया। अत: इन अर्थों का निरन्तर प्रयोग होते चले आना इस बात का स्पष्ट सबूत है कि सहाबा के समय से आज तक इन अर्थों पर सर्वसम्मति चली आई है। रही यह बात कि फिर उन्हीं तफ़्सीरों में दूसरे अर्थ क्यों लिखे गए। इसका उत्तर यह है कि वह कुछ लोगों का ग़लत विचार है और उस विचार की ग़लती सिद्ध करने के लिए यह पर्याप्त है कि वह विचार पवित्र क़ुर्आन

के उद्देश्य के सर्वथा विपरीत है तथा यह भी कह सकते हैं कि उनमें से कुछ वे लोग भी हैं जो विचार करते हैं कि हज़रत ईसा तीन घण्टे, सात घण्टे अथवा तीन दिन तक मृत रहे और फिर जीवित करके आकाश की ओर उठाए गए। इस विचार पर तुच्छ रूप से दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि जिन्होंने प्रारंभ में यह राय स्थापित की है उनका यह आशय होगा जैसा कि कुछ हदीसों में आया है और मौलवी **अब्दुलहक़** साहिब देहलवी ने भी इस बारे में अपनी पुस्तकों में बहुत कुछ लिखा है और सूफी लोग भी इसे मानते हैं कि जब कोई पवित्र और सदात्मा पुरुष मृत्यु पा जाए तो उसे जीवित किया जाता है तथा ख़ुदा की क़ुदरत से उसे एक प्रकार का नूरानी (प्रकाशीय) शरीर प्रदान किया जाता है और वह शरीर के साथ आकाश पर अपने पद के अनुसार रहने लगता है। अत: मसीह के उठाए जाने का क्यों एक अनोखा मामला बनाएं। हम स्वीकार करते हैं कि वह एक नूरानी शरीर के साथ आकाश की ओर उठाया गया जिस प्रकार कि अन्य नबी उठाए गए। उसे नूरानी शरीर दिया गया तभी तो वह खाने-पीने और शौच आदि करने का मुहताज न हुआ। यदि यह भारी और पार्थिव शरीर होता तो उसके लिए आकाश पर एक बावर्चीखाना (किचन) और एक शैचालय भी चाहिए था क्योंकि इस पार्थिव शरीर के लिए ख़ुदा तआला ने ये समस्त आवश्यकताएं ठहराई हैं जैसा कि पवित्र क़ुर्आन की स्पष्ट आयतों से प्रकट है।

हे मौलवी साहिबान ! जब सामान्य तौर पर पवित्र क़ुर्आन से मसीह की मृत्यु सिद्ध हो चुकी है और प्रारंभ से आज तक सहाबा के कुछ कथन तथा व्याख्याकार भी उसे मृत्यु प्राप्त ही कहते चले आए हैं तो अब आप लोग व्यर्थ की हठ क्यों करते हैं। **कहीं ईसाइयों के ख़ुदा को मरने भी तो दो।** उसे कब तक 'जीवित जिस पर मृत्यु नहीं आ सकती' कहते जाओगे कुछ अन्त भी है। फिर यदि आप केवल हठधर्मी से यह कहें कि मसीह इब्ने मरयम मृत्यु तो अवश्य पा गया था, परन्तु उसी पार्थिव शरीर में उसकी आत्मा आ गई तो क्या इसका सबूत भी है। इसके अतिरिक्त इस स्थिति में उसके लिए दो मौतें प्रस्तावित करोगे। यह कहां लिखा है और किसका

निर्देश है कि ख़ुदा तआला प्रथम मृत्यु को पर्याप्त न समझे और सारे संसार के लिए एक मृत्यु और निर्दोष मसीह पर दो मौतों का कष्ट उतरे। क्या कोई हदीस है अथवा पवित्र क़ुर्आन की आयत है जो इन दो मौतों के बारे में आप के पास है। यों तो आप हज़रत मसीह के शव को बड़े सम्मान के साथ दफ़्न करना चाहते हैं जब कि कहते हैं कि हज़रत सय्यिदिना जनाब रसूलुल्लाह स.अ.व. की क़ब्र में दफ़्न किए जाएंगे, परन्तु यह नहीं सोचते कि यह दूसरी मौत उनके लिए किस बड़े पाप के दण्डस्वरूप होगी। स्पष्ट है कि आँहज़रत स.अ.व. की क़ब्र में उनका अन्तिम युग में दफ़्न होना यह इस बात का एक भाग है कि प्रथम उन का इसी पार्थिव शरीर के साथ जीवित उठाया जाना सिद्ध हो अन्यथा कल्पना के तौर पर यदि इस हदीस को जो क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशों के सर्वथा विरुद्ध है सही भी मान लें तथा उसके अर्थ को प्रत्यक्ष पर ही चरितार्थ करें तो संभव है कि कोई मसीह का सदृश ऐसा भी हो जो आँहज़रत स.अ.व. की क़ब्र के निकट दफ़्न हो, क्योंकि इस हदीस के अनुसार कि जो

عُلَمَآءُ اُمَّتِیْ کَاَنْبِیَاءِ بَنِیْۤ اِسْرَاۤئِیْل

(उलमाओ उम्मती कअम्बियाए बनी इस्राईल) है सदृशों की कमी नहीं और इसी प्रकार यह आयत भी सदृशों (मसीलों) की ओर संकेत कर रही है :-

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ*

तथा ठोस अनुकूलताओं के कारण उसे सही मानते हुए उसे एक रूपक स्वीकार करके ये अर्थ भी हो सकते हैं कि यह एक संकेत साथ और एकता की ओर है। उदाहणतया जो शत्रु है उसके लिए मनुष्य कहता है कि इसकी क़ब्र भी मेरे निकट न हो परन्तु मित्र के लिए क़ब्र का भी साथ चाहता है और कश्फ़ों में प्राय: ऐसी बातें देखी जाती हैं। बहुत समय पूर्व की बात है कि इस विनीत ने स्वप्न में देखा कि मैं आँहज़रत स.अ.व. की मुबारक क़ब्र पर खड़ा हूँ और कई लोग मर गए हैं या क़त्ल किए गए हैं उन्हें लोग दफ़्न करना चाहते हैं, इसी बीच क़ब्र के अन्दर से

* अलफ़ातिह:-6,7

एक मनुष्य निकला, उसके हाथ में एक सरकण्डा था, वह उस सरकण्डे को पृथ्वी पर मारता था और प्रत्येक से कहता था कि यहां तेरी क़ब्र होगी। तब वह यही काम करता करता मेरे निकट आया और मुझे दिखा कर और मेरे सामने खड़ा होकर क़ब्र के पास की पृथ्वी पर उसने अपना सरकण्डा मारा और कहा कि तेरी क़ब्र इस स्थान पर होगी। तब आंख खुल गई और मैंने अपनी चिन्तन शक्ति द्वारा उस की यह व्याख्या की कि यह आख़िरत के साथ की ओर संकेत है क्योंकि जो व्यक्ति मृत्योपरान्त आध्यात्मिक तौर पर किसी पवित्र के निकट हो जाए तो मानो उसकी क़ब्र उस पवित्रता के निकट हो गई।

नूर अफ़्शां में प्रकाशित 23 अप्रैल का आरोप

अख़बार 'नूर अफ़्शां' में मसीह के आकाश पर चढ़ने के बारे में यह सबूत प्रस्तुत किया गया है कि मसीह के आकाश की ओर चढ़ने के बारे में ग्यारह शिष्य बतौर चश्मदीद गवाह मौजूद हैं जिन्होंने उसे दृष्टि की सीमा तक आकाश की ओर जाते देखा। अत: आरोपक साहिब ने अपने दावे के समर्थन में 'रसूलों के आ'माल' बाब प्रथम की ये आयतें प्रस्तुत की हैं :-

(3) उन पर (अर्थात् अपने ग्यारह शिष्यों पर) उसने (अर्थात् मसीह) ने अपने मृत्योपरान्त स्वयं को बहुत से ठोस तर्कों द्वारा जीवित सिद्ध किया कि वह चालीस दिन तक उन्हें दिखाई देता रहा और ख़ुदा की बादशाहत की बातें कहता रहा और उनके साथ मिलकर आदेश दिया कि यरोशलम से बाहर न जाओ और वह यह कह कर उनके देखते हुए ऊपर उठाया गया और बदली ने उन्हें उनकी दृष्टि से छुपा लिया और उसके जाते हुए जब वे आकाश की ओर निहार रहे थे देखो दो मर्द सफेद लिबास पहने हुए उनके पास खड़े थे (11) और कहने लगे हे जलीली पुरुषो तुम क्यों खड़े आकाश की ओर देखते हो। यही यसू जो तुम्हारे पास से आकाश की ओर उठाया गया है उसी प्रकार जिस प्रकार तुम ने उसे आकाश की ओर जाते देखा फिर आएगा।

अब पादरी साहिब केवल इस इबारत पर प्रसन्न हो कर समझ बैठे हैं कि वास्तव में इसी पार्थिव शरीर के साथ मसीह अपनी मृत्यु के पश्चात् आकाश की ओर उठाया गया, परन्तु उन्हें ज्ञात है कि यह बयान लूक़ा का है जिसने न मसीह को देखा और न उसके शिष्यों से कुछ सुना, फिर ऐसे व्यक्ति का बयान क्योंकर विश्वसनीय हो सकता है जो चश्मदीद साक्ष्य नहीं और न किसी देखने वाले के नाम का उसमें हवाला है। इसके अतिरिक्त यह बयान सर्वथा बोध भ्रम से भरा हुआ है।

यह तो सत्य है कि मसीह अपने देश गलील में जाकर मृत्यु पा गया परन्तु यह कदापि सत्य नहीं कि वही शरीर जो दफ़्न हो चुका था पुन: जीवित हो गया अपितु इसी बाब (अध्याय) की तीसरी आयत प्रकट कर रही है कि मृत्यु के पश्चात् कश्फ़ी तौर पर मसीह चालीस दिन तक अपने शिष्यों को दिखाई देता रहा। यहां कोई यह न समझ ले कि मसीह सलीब पर चढ़ाए जाने के कारण मृत्यु को प्राप्त हुआ, क्योंकि हम सिद्ध कर आए हैं कि ख़ुदा तआला ने सलीब से मसीह के प्राण बचाए थे अपितु, 'आ'माल' प्रथम अध्याय की यह तीसरी आयत मसीह की स्वाभाविक मृत्यु के संबंध में साक्ष्य दे रही है जो गलील में उसके सामने आई। इस मृत्यु के पश्चात् मसीह चालीस दिन तक कश्फ़ी तौर पर अपने शिष्यों को दिखाई देता रहा। जो लोग कश्फ़ की वास्तविकता को नहीं समझते वे ऐसे स्थानों में बड़ा धोखा खाते हैं। इसी कारण वर्तमान ईसाई भी जो आध्यात्मिक प्रकाश से अनभिज्ञ हैं इस कश्फ़ी अवस्था को वास्तव में भौतिक अवस्था समझ बैठे हैं। मूल बात यह है कि पवित्र और सदात्मा लोग मृत्योपरान्त पुन: जीवित हो जाया करते हैं और प्राय: हार्दिक शुद्धता रखने तथा प्रेम से ओत-पोत लोगों को कश्फ़ी अवस्था में जो बिल्कुल जागने की अवस्था है दिखाई दे जाया करते हैं। अत: इस बारे में स्वयं **यह विनीत** इस का अनुभव रखता है। अनेकों बार जागने की अवस्था में कुछ पुनीत लोग दिखाई दिए हैं तथा कश्फ़ की कुछ कुछ श्रेणियां ऐसी हैं कि मैं किसी प्रकार से कह नहीं सकता कि उनमें कोई भाग ऊंघ, स्वप्न या अचेतना का है अपितु पूर्णतया जागने की अवस्था होती है और जागने की अवस्था में पूर्वकालीन सदात्मा पुरुषों से भेंट होती है और बातें भी होती हैं। यही हाल हवारियों के देखने का है कि उन्हें कश्फ़ी अवस्था में मसीह इब्ने मरयम मृत्योपरान्त जबकि वह जलील में जाकर कुछ समय पश्चात मृत्यु पा गया, चालीस दिन निरन्तर दिखाई देता रहा और उन्होंने उस कश्फ़ी अवस्था में केवल मसीह को नहीं देखा अपितु दो फ़रिश्ते भी देखे जो सफेद लिबास पहने हुए खड़े थे जिस से और अधिक सिद्ध होता है कि वह कश्फ़ की ही अवस्था थी। इन्जील में यह भी आया है कि एक बार उन्होंने कश्फ़ी अवस्था में हज़रत मूसा और

हज़रत यह्या को भी स्वप्न में देखा था। अत: उच्च स्तर का कश्फ़ बिल्कुल जागने की अवस्था होती है और यदि किसी को इस कूचे में कुछ अनुभव हो तो हम बड़ी सरलता से उसे स्वीकार करा सकते हैं, परन्तु मात्र अपरिचितों और अज्ञानियों के सामने क्या किया जाए।

मैं कई बार लिख चुका हूँ तथा पुन: लिखता हूँ कि कश्फ़ वालों की दृष्टि में यह बात प्रमाणित है कि पवित्र और सत्यनिष्ठ लोग मृत्योपरान्त पुन: जीवित हो जाया करते हैं तथा उन्हें एक प्रकार का आध्यात्मिक शरीर प्राप्त हो जाता है तथा उस शरीर के साथ वे आकाश की ओर उठाए जाते हैं। कुछ हदीसों में आता है कि मृत्योपरान्त पवित्र लोगों का पृथ्वी पर रहने का अत्यधिक समय चालीस दिन है। आँहज़रत स.अ.व. फ़रमाते हैं कि कोई नबी मृत्यु के पश्चात् चालीस दिन से अधिक पृथ्वी पर नहीं ठहरता अपितु इस समय के अन्दर अन्दर आकाश की ओर उठाया जाता है। अत: आँहज़रत अपने बारे में फ़रमाते हैं कि मुझे कदापि आशा नहीं कि ख़ुदा तआला मुझे चालीस दिन से अधिक क़ब्र में रखे। अत: समझना चाहिए कि हज़रत मसीह का पार्थिव शरीर के साथ आकाश की ओर उठाया जाना जिसके बारे में क्या ईसाई और क्या मुसलमान शोर मचा रहे हैं। वास्तव में यही अर्थ रखता है और इस बारे में मसीह की कुछ भी विशेषता नहीं। प्रत्येक पवित्र और पूर्ण सत्यनिष्ठ का रफ़ा (ऊपर उठाया जाना) इसी प्रकार होता है। यह बात कश्फ़ वालों के निकट मान्य और अवलोकनों में से है। पवित्र क़ुर्आन में मसीह के रफ़ा का वर्णन उस के सत्यनिष्ठ होने के सत्यापन के लिए है तथा मसीह के शिष्यों को उसका उठाया जाना जो कश्फ़ी तौर पर दिखाया गया यह उनके ईमान की दृढ़ता के लिए था क्योंकि उस समय के मौलवियों तथा विद्वानों की भांति उस युग के विद्वानों और धर्माचार्यों ने भी हज़रत मसीह पर कुफ्र का फ़त्वा लगाया था और निकट था कि वे लोग अपने छल-कपट से हृदयों में बहुत से सन्देह डाल देते। अत: ख़ुदा तआला ने मसीह के शिष्यों की कश्फ़ी आंख खोल दी और उन्होंने देखा कि वह विशेष सानिध्यप्राप्त लोगों की तरह आकाश की ओर उठाया गया। यदि यह कश्फ़ न होता तो अजनबी,

कुधारणा रखने वाले और अपरिचित लोग भी उस दशा को देखते क्योंकि वह कोई ऐसा स्थान न था कि जहां दूसरों का आना जाना अवैध था। अत: अपरिचित लोग जो आ जा रहे थे केवल इसी कारण नहीं देख सके कि वह एक कश्फ़ी मामला था और फिर अन्त में आयत ग्यारह में लिखा है कि फ़रिश्तों ने जो वहाँ खड़े थे यह कहा कि हे गलील के पुरुषो! यही यसू जो तुम्हारे पास से आकाश पर उठाया गया है इसी प्रकार जिस प्रकार तुम ने उसे आकाश की ओर जाते देखा फिर आएगा। यह इस बात की ओर एक सूक्ष्म संकेत है जो तुम ने कश्फ़ी अवस्था में जो भौतिक संसार है मसीह को आकाश की ओर जाते देखा उसी प्रकार भौतिक तौर पर भौतिक अस्तित्व के साथ मसीह फिर आएगा जिस प्रकार कि **एलिया** आया तथा स्मरण रहे कि ये व्याख्याएं उस अवस्था में हैं कि हम इन इबारतों को सही और अनाक्षरांतरित स्वीकार कर लें, परन्तु इस स्वीकार करने में बड़ी कठिनाइयां हैं। बुद्धिमान भली भांति जानते हैं कि मसीह का आकाश की ओर उठाया जाना इन्जील की किसी इल्हामी इबारत से सिद्ध नहीं हो सकता और जिन्होंने अपनी अटकल से बिना देखे कुछ लिखा उनके बयानों में इस दोष के अतिरिक्त कि उनका बयान चश्मदीद नहीं इतना विपरीत है कि हम उन में से लेश मात्र भी साक्ष्य के तौर पर नहीं ले सकते।

मसीह दज्जाल का गिरजे से ही निकलना आवश्यक था

हम वर्णन कर आए हैं कि मसीह दज्जाल का निर्धारण और पहचान में इस्लाम के प्रथम शताब्दी के बुज़ुर्गों में मतभेद रहा है। कुछ सहाबा रज़ि. निश्चित और वास्तविक तौर पर इब्ने सय्याद को मसीह दज्जाल समझ बैठे थे। अत: हज़रत उमर रज़ि. ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समक्ष क़सम खाकर कहा कि **अद्दज्जाल** यही है अर्थात् मसीह दज्जाल क्योंकि **अद्दज्जाल** मसीह **दज्जाल** के अतिरिक्त अन्य किसी को नहीं कहा जाता। इसी प्रकार इब्ने उमर रज़ि. ने भी स्पष्ट

शब्दों में कहा कि मसीहुद्दज्जाल यही है। और हम इससे पूर्व उल्लेख कर चुके है कि कुछ हदीसों से सिद्ध होता है कि इब्ने सय्याद मुसलमान होने के पश्चात् मदीना में मृत्यु पा गया और मुसलमानों ने उसका जनाज़ा पढ़ा। कुछ यह कहते हैं कि वह लुप्त हो गया, परन्तु प्रथम कथन प्रमुख है क्योंकि मृत्यु की ख़बर में ज्ञान की अधिकता है जो ठोस विश्वास का कारण है। बहरहाल जबकि मुस्लिम की हदीस से इब्ने सय्याद का इस्लाम सिद्ध है और इस्लाम से विमुखता सिद्ध नहीं तो अकारण एक मुसलमान के पीछे पड़ना और उसको दज्जाल-दज्जाल करके पुकारना और फिर उसके बारे में यह विश्वास रखना कि वही इब्ने सय्याद यहूदी मूल अन्तिम युग में पुन: कुफ्र का लिबास धारण करके तथा ख़ुदा होने का दावा करके निकलेगा। मेरे विचार में सर्वथा अनुचित और एक मुसलमान भाई की व्यर्थ की पिशुनता और निन्दा है जो इस आयत لَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ (बनी इस्राईल - 37) के अन्तर्गत आती है। इसके अतिरिक्त इब्ने सय्याद से उसकी कुफ्र की अवस्था में भी कोई ऐसा काम, उपद्रव या उत्पात का नहीं हुआ जिससे वह अपने समय में उपद्रव फैलाने में अद्वितीय समझा गया हो। फिर जब उसके हृदय में لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ का प्रकाश समावेश कर गया और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रसूल होने के सत्यापन से उसका सीना प्रकाशित किया गया तो फिर सन्देह करने का कोई कारण भी शेष नहीं रहा। निस्सन्देह वे हदीसें नितान्त आश्चर्यजनक हैं जिन में विश्वास के तौर पर वर्णन किया गया है कि मसीह दज्जाल यही व्यक्ति है और अब हम उनकी कोई व्याख्या नहीं कर सकते इसके अतिरिक्त यह कहें कि जो अन्तिम युग में दज्जाल पैदा होने की सूचना दी गई है उस दज्जाल में कुछ विशेषताएं इब्ने सय्याद की भी होंगी और कुफ्र की अवस्था में जो कुछ छल-कपट करने का इब्ने सय्याद को अभ्यास था और जो असावधानी और निर्भीकता तथा धोखा देने का चरित्र उसमें विद्यमान था वही विशेषताएं और आदतें उस आने वाले दज्जाल में भी होंगी जैसे वह उसका समरूप होगा और उसके कुफ्र की अवस्था का रंग उसमें पाया जाएगा।

परन्तु **गिरजे से निकलने वाला दज्जाल** जिसके बारे में इमाम मुस्लिम ने अपनी

सही मुस्लिम में फातिमा बिन्त क़ैस से रिवायत की है और जिसे नितान्त शक्तिशाली, बलिष्ठ और ज़ंजीरों से जकड़ा हुआ वर्णन किया है और उसके एक **जस्सासा** की सूचना भी लिखी है और यह दज्जाल वह है जिसे **तमीमदारी** ने किसी द्वीप के एक **गिरजा** में देखा कि खूब दृढ़ता से बंधां हुआ था और उसके हाथ उसकी गर्दन की ओर जकड़े हुए थे। उस दज्जाल पर विद्वानों की बहुत दृष्टि है कि वास्तव में यही दज्जाल है जो अन्तिम युग में निकलेगा और यह तो किसी का भी मत नहीं कि अन्तिम युग में दज्जाल पैदायश के तौर पर स्त्री के पेट से जन्म लेगा अपितु पूर्वकालीन और बाद में आने वाले विद्वान यही कहते आए हैं कि वादा दिया गया दज्जाल आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में मौजूद था और फिर अन्तिम युग में बड़ी शक्ति के साथ निकलेगा और अब तक वह किसी द्वीप में जीवित मौजूद है, परन्तु यह विचार कि अब तक वह जीवित है कदापि सही नहीं है। मुस्लिम* की निम्नलिखित दो हदीसें इस विचार का पूर्णतया खण्डन करती हैं और वह ये हैं :-

عَنْ جَابِرٍ قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَبْلَ اَنْ يَّمُوْتَ بِشَهْرٍ تَسْئَلونى عَنِ السَّاعَةِ وَاِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَاُقْسِمُ بِاللّٰه مَاعَلَى الْاَرْضِ مِنْ نَفْسٍ مَنْفُوْسَةٍ يَّاتِىْ عَلَيْهَا مِائَة سَنَة وَهِىَ حَيَّة يَوْمَئِذٍ رَوَاهُ مُسْلِمٌ

अर्थात् जाबिर से रिवायत है कि उसने कहा कि मैंने ख़ुदा के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना। फ़रमाते थे अपनी मृत्यु से महीने भर पूर्व कि धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति और शेष रहस्यों के प्रकटन का समय था कि तुम मुझ से पूछते हो कि क़यामत कब आएगी और ख़ुदा तआला के अतिरिक्त उसका किसी को ज्ञान नहीं और मैं अल्लाह तआला की क़सम खाता हूँ कि समस्त पृथ्वी पर कोई ऐसा प्राणी नहीं जो पैदा हो गया हो और मौजूद हो और उस पर आज से सौ वर्ष गुज़रे और वह जीवित रहे।

---

* मिश्कातुल मसाबीह किताबुल फ़ितन बाब क़ुर्बुस्साअत - प्रकाशक

(2) फिर सही मुस्लिम की दूसरी हदीस यह है :-

عَنْ اَبِیْ سَعِیْدٍ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ لَا یَاتِیْ مِائَۃِ سَنَۃ
وَعَلَی الْاَرْضِ نَفْسٌ منفوسۃٌ رَوَاہُ مُسْلِمٌ

अर्थात् अबू सईद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सौ वर्ष नहीं आएंगे इस अवस्था में कि पृथ्वी पर कोई व्यक्ति भी आज के लोगों में से जीवित मौजूद हो।

अब इन दोनों हदीसों की दृष्टि से जिनमें से एक में हमारे मौला नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़सम भी खाई है। यदि हम बनावट और प्रत्यक्ष से हटकर व्याख्याएं न करें तो स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि जस्सासा वाला दज्जाल भी इब्ने सय्याद की तरह मृत्यु पा गया है। उसी के बारे में विद्वानों का विचार है कि अन्तिम युग में निकलेगा जबकि हाल यह है कि यदि उसे आज तक जीवित समझा जाए तो रसूलुल्लाह स.अ.व. की ठोस हदीसों का झूठा होना अनिवार्य हो जाता है और इस हदीस में दज्जाल का यह कथन

انی انا المسیح و انی ان یوشك ان یوذن لی فی الخروج

उसके मसीह दज्जाल होने को अधिक सिद्ध करता है। प्रत्यक्षत: इस सन्देह में डालता है कि अन्तिम युग में वह निकलने वाला है परन्तु बहुत सरलतापूर्वक यह सन्देह दूर हो सकता है जबकि इस प्रकार पर समझ लें कि उस दज्जाल के लिए यह ईसाई दज्जाल वह प्रथम व्यक्ति जिसका विरसा मिला हो के तौर पर है जो ईसाई समुदाय में ही पैदा होगा और गिरजा में से ही निकलेगा। स्पष्ट है कि उत्तराधिकारी और वह व्यक्ति जिससे विरसा (उत्तराधिकार) प्राप्त हो का अस्तित्व एक ही आदेश रखता है तथा संभव है कि इस वर्णन में रूपक हों और जंज़ीरों से अभिप्राय वे बाधाएं हों जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में ईसाई धर्मोपदेशकों को रोक रही थीं और वे विवश होकर जैसे वे एक स्थान पर बन्द थे और यह संकेत हो कि वे अन्तिम युग में बड़ी शक्ति के साथ

निकलेंगे जैसा कि आजकल है। यहां यह भी स्मरण रहे कि उपरोक्त हदीस में इस दज्जाल ने ख़ुदाई का दावा नहीं किया अपितु वाक्य وانی یوشک اَنْ یوذَن لِی स्पष्ट तौर पर सिद्ध करता रहा है कि दज्जाल को ख़ुदा तआला के अस्तित्व का इक़रार है और हदीसों में ऐसा कोई शब्द नहीं पाया जाता जिस से ज्ञात हो कि जस्सासा वाला दज्जाल अपने अन्तिम प्रकटन के समय में उच्च स्वर में आकाशों और पृथ्वी का स्रष्टा होने का दावा करेगा, परन्तु ज्ञात होता है कि अहंकार पूर्वक ख़ुदा कहलाएगा, जिस प्रकार उन लोगों का ढंग होता है जो ख़ुदा तआला को पूर्णतया भुला देते हैं तथा उसकी उपासना और आज्ञाकारिता से कुछ मतलब नहीं रखते और चाहते हैं कि लोग उन्हें रब्बी, रब्बी कहें अर्थात् मेरे ख़ुदा, मेरे ख़ुदा करके पुकारें और उनका इस प्रकार अनुसरण करें जैसा ख़ुदा तआला का करना चाहिए और यही दुष्चरित्रता और लापरवाही की उच्च श्रेणी है कि हृदय में ख़ुदा तआला का तिरस्कार घर कर जाए। उदाहरणतया एक ऐसा धनाढ्य है कि नमाज़ पढ़ने से मना करता है कि व्यर्थ कार्य है इस से क्या लाभ और रोज़े पर उपहास करता है और ख़ुदा तआला की महानता को कुछ वस्तु नहीं समझता और उसके आकाशीय तक़दीरों को नहीं मानता अपितु अपने उपायों और छल-कपटों का समस्त सफ़लताओं का आधार समझता है और चाहता है कि लोग उसके समक्ष इस प्रकार झुकें जिस प्रकार ख़ुदा तआला के आगे झुकना चाहिए, ख़ुदा की आज्ञाकारिता पर खिन्न होता है और उसके आदेशों को तिरस्कृत और अधम समझता है और अपने आदेशों को सम्मानजनक समझता है और अपनी आज्ञाकारिता को प्राथमिकता देना चाहता है। वह वास्तव में ख़ुदा होने का दावा कर रहा है यद्यपि मुख से नहीं परन्तु शारीरिक भाषा से उस से यह दावा अवश्य जारी हो रहा है अपितु मुख से भी दावा करता है क्योंकि चाहता है कि लोग उसे मेरे ख़ुदा मेरे ख़ुदा कहें। अत: दज्जाल का इसी प्रकार का दावा मालूम होता है।

इस सम्पूर्ण वर्णन से मालूम हुआ कि मसीह इब्ने मरयम के समरूप की भांति दज्जाल का भी समरूप है, आने वाला है अर्थात् ऐसा गिरोह जो अपने चरित्र और गुण की दृष्टि से प्रथम दज्जाल के रंग में रंगीन हो परन्तु वर्णन की इस शैली को

धारण करने में कि मसीह का समरूप उतरेगा और दज्जाल निकलेगा यह नीति है ताकि स्पष्ट किया जाए कि दज्जाल का आना बतौर विपत्ति और परीक्षा के होगा तथा मसीह का आगमन ऐसी ने'मत के तौर पर जो ख़ुदा तआला की विशेष इच्छा द्वारा मोमिनों की सहायता के लिए उतरती है जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में है कि हमने तुम्हारे लिए लोहा उतारा और तुम्हारे लिए चौपाए उतारे अर्थात् तुम्हारे लाभ के लिए ये वस्तुएं बतौर दया पैदा कीं और यह भी कि जो वस्तु पृथ्वी से निकलती है वह अंधकार और मलिनता रखती है और जो ऊपर से आती है उसके साथ प्रकाश और बरकत होती है एवं ऊपर से आने वाली नीचे वाली पर प्रभुत्व रखती है। अत:जो व्यक्ति आकाशीय बरकतें और प्रकाश साथ रखता है उसके आने के लिए नुज़ूल (उतरना) का शब्द यथोचित है और जिसके अस्तित्व में पार्थिव अंधकार और मलिनता और गन्दगी भरी हुई है। उसके प्रकटन के लिए निकलने (खुरूज) का शब्द अनुकूलता रखता है क्योंकि प्रकाशीय वस्तुएं आकाश से ही उतरती हैं जो अंधकार पर विजय पाती हैं। अब इस जांच-पड़ताल से स्पष्ट हो गया कि जिस प्रकार मसीह के समरूप को मसीह इब्ने मरयम कहा गया, इस बात को दृष्टिगत रख कर कि उसने मसीह इब्ने मरयम की आध्यात्मिकता को लिया और मसीह के अस्तित्व को आन्तरिक तौर पर स्थापित किया। इसी प्रकार वह दज्जाल जो आंहज़रत स.अ.व. के युग में मृत्यु पा चुका है उसके प्रितिबिम्ब और समरूप ने इस अन्तिम युग में उसका स्थान लिया और **गिरजा से निकलकर पूर्बों और पश्चिमों में फैल गया।** इस वर्णन से समरूपता का मुहावरा और भी सिद्ध होता है जो दोनों प्रकार के मसीहों पवित्र और अपवित्र में जारी तथा प्रचलित है। यदि यह कहा जाए कि हदीसों में तो केवल इतना शब्द आया है कि मसीह इब्ने मरयम उतरेगा और दज्जाल निकलेगा, फिर इन दोनों के साथ मसील (समरूप) का शब्द क्यों मिलाया जाता है? क्या यह नास्तिकता नहीं है? इसका उत्तर यह है कि इसके पश्चात कि हम ठोस और नितान्त स्पष्ट आदेशों द्वारा सिद्ध कर चुके हैं कि हज़रत मसीह इब्ने मरयम जिन पर इंजील उतरी थी मृत्यु पा चुके हैं और इसी प्रकार दज्जाल भी मृत्यु पा चुका

है और उनके जीवित होने का कोई वर्णन पवित्र क़ुर्आन तथा हदीसों में मौजूद नहीं अपितु स्पष्ट आयतें उसके संसार में पुनरागमन का बड़ी दृढ़तापूर्वक इन्कार करती हैं। अत: इस स्थिति में यदि हम आने वाले मसीह और दज्जाल से उनके मसील (समरूप) अभिप्राय न लें तो और क्या करें। हां यदि हदीसों में ये शब्द आते कि यह मसीह इब्ने मरयम जो मृत्यु पा चुका है जिस पर इन्जील उतरी थी और वह दज्जाल जो द्वीप में बन्धक था जिसके साथ जस्सासा थे वही दोनों जीवित होकर अन्तिम युग में आ जाएंगे तो फिर व्याख्या करने की गुंजायश न होती परन्तु अब व्याख्या न केवल उचित अपितु अनिवार्य है और चूंकि عُلَمَاءُ اُمَّتِیْ کَاَنْبِیَاءِ بَنِیْ اِسْرَائِیل के आदेशानुसार इब्ने मरयम के नाम पर किसी को आना चाहिए था और आना भी वह चाहिए था जो वास्तव में उम्मती हो न कि वास्तविक तौर पर नबी। अत: यह आवश्यक था कि इब्ने मरयम के स्थान पर कोई ऐसा उम्मती प्रकट हो जो ख़ुदा तआला के निकट इब्ने मरयम के रूप में है। अत: ख़ुदा तआला ने मसीह इब्ने मरयम का मसील (समरूप) यथा समय भेजकर उसी मसील के माध्यम से मसीह इब्ने मरयम का वास्तव में मृत्यु पा जाना प्रकट कर दिया और उसके समस्त सबूत प्रकट कर दिए। ख़ुदा न करे यदि वास्तव में पवित्र क़ुर्आन में लिखा होता कि मसीह ख़ुदा के उस नियम के विपरीत जो समस्त लोगों के लिए जारी है जीवित आकाश की ओर उठाया गया और प्रलय के निकट तक जीवित ही रहेगा तो लोगों को बहकाने के लिए बड़े-बड़े साधन ईसाइयों के हाथ आ जाते। **अत: बहुत ही अच्छा हुआ कि ईसाइयों का ख़ुदा मृत्यु पा गया और यह प्रहार एक बरछी के प्रहार से कम नहीं जो इस विनीत ने ख़ुदा तआला की ओर से मसीह इब्ने मरयम के रंग में होकर उन दज्जाल चरित्र लोगों पर किया है जिन्हें पवित्र वस्तुएं दी गईं थीं, परन्तु उन्होंने उसके साथ अपवित्र वस्तुएं मिला दीं और वह कार्य किया जो दज्जाल को करना चाहिए था।**

अब यह प्रश्न भी समाधान योग्य है कि मसीह इब्ने मरयम तो दज्जाल के लिए आएगा, आप यदि मसीह इब्ने मरयम के रंग में होकर आए हैं तो आपके मुक़ाबले

पर दज्जाल कौन है ? इस प्रश्न का उत्तर मेरी ओर से यह है कि यद्यपि मैं इस बात को तो स्वीकार करता हूँ कि संभव है कि मेरे बाद कोई अन्य मसीह इब्ने मरयम भी आए और कुछ हदीसों के अनुसार वह वादा दिया गया भी हो और कोई ऐसा दज्जाल भी आए जो मुसलमानों में उपद्रव पैदा करे परन्तु मेरा मत यह है कि इस युग के पादरियों की भांति कोई दज्जाल अब तक पैदा नहीं हुआ और न क़यामत तक पैदा होगा मुस्लिम की हदीस में है -

وعن عمران ابن حصین قالَ سمعتُ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم
یقول مابین خلق اٰدم الی قیام الساعۃ امر اکبر من الدّجّال

अर्थात् इमरान इब्ने हसीन से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आदम की पैदायश से क़यामत तक कोई बात उपद्रव और परीक्षा की दृष्टि से दज्जाल के अस्तित्व से बढ़कर नहीं। अब प्रथम तो स्मरण रखना चाहिए कि शब्दकोश में दज्जाल झूठों के गिरोह को कहते हैं जो असत्य को सत्य के साथ मिला देते हैं और अल्लाह की सृष्टि को पथभ्रष्ट करने के लिए छल और कपट को काम में लाते हैं। अब मैं दावे के साथ कहता हूँ कि मुस्लिम की हदीस के आशय के अनुसार जिसका मैं अभी वर्णन कर चुका हूँ यदि हम हज़रत आदम की पैदायश से आज तक उन समस्त लिखित माध्यमों के द्वारा जो हमें मिले हैं संसार के समस्त ऐसे लोगों की हालत पर दृष्टि डालें जिन्होंने दज्जालियत का काम अपने दायित्व में लिया था तो उस युग के पादरियों की दज्जालियत का उदाहरण हमें कदापि नहीं मिलेगा। उन्होंने एक काल्पनिक और ख़्याली मसीह अपनी दृष्टि के सामने रखा हुआ है जो उनके कथनानुसार जीवित है और ख़ुदाई का दावा कर रहा है। अत: हज़रत मसीह इब्ने मरयम ने ख़ुदाई का दावा कदापि नहीं किया। ये लोग स्वयं उसकी ओर से वकील बन कर ख़ुदाई का दावा कर रहे हैं और इस दावे को फलीभूत करने के लिए उन्होंने क्या कुछ अक्षरान्तरण नहीं किए और क्या कुछ छल-कपट पूर्ण प्रपंच प्रयोग में नहीं लाए तथा मक्का और मदीना छोड़ कर और

कौन सा स्थान है जहां ये लोग नहीं पहुँचे। क्या कोई धोखा देने का कार्य या पथ-भ्रष्ट करने की योजना या बहकाने का कोई उपाय ऐसा भी है जो इन से प्रकट नहीं हुआ। क्या यह सत्य नहीं कि ये लोग अपनी दज्जालपूर्ण योजनाओं के कारण एक संसार पर वृत्त की भांति व्याप्त हो गए हैं जहाँ ये लोग जाएं और जहाँ अपना मिशन स्थापित करें एक संसार को अस्त-व्यस्त कर देते हैं। धनाढ्य इतने कि जैसे विश्व के समस्त ख़ज़ाने इन के साथ-साथ फिरते हैं यद्यपि अंग्रेज़ी सरकार को धर्मों से कोई मतलब नहीं अपने बादशाहों जैसी व्यवस्था से मतलब है, परन्तु वास्तव में पादरी लोगों की भी एक पृथक सरकार है जो असंख्य रुपयों की मालिक और जैसे समस्त संसार में अपना ताना-बाना फैला रही है और एक प्रकार का स्वर्ग और नर्क अपने साथ-साथ लिए फिरते हैं। जो व्यक्ति उनके धर्म में आना चाहता है उसको वह स्वर्ग दिखाया जाता है और जो व्यक्ति इनका घोर विरोधी हो जाए उसके लिए नर्क की धमकी है। इनके घर में रोटियां बहुत हैं जैसे रोटियों का एक पर्वत जिस स्थान पर रहें उनके साथ रहता है और अधिकांश खाऊ लोग इन की सफेद-सफेद रोटियों पर दीवाने होकर 'हमारा रब्ब मसीह' कहना आरंभ कर देते हैं। मसीह दज्जाल का कोई भी ऐसा लक्षण नहीं जो इनमें न पाया जाए, एक प्रकार से ये मुर्दों को भी जीवित करते हैं और जीवितों को मारते हैं (समझने वाला समझ ले) और इसमें कोई सन्देह नहीं कि इनकी आंख एक ही है जो बायीं है यदि इनकी दायीं आंख मौजूद होती तो ये लोग ख़ुदा तआला से डरते और ख़ुदाई के दावे से रुक जाते। निस्सन्देह यह भी सत्य है कि पूर्वकालीन पुस्तकों में इस दज्जाल जाति की चर्चा है। हज़रत मसीह इब्ने मरयम ने भी इंजील में पर्याप्त वर्णन किया है और पहले ग्रन्थों में भी अनेकों स्थान पर इनकी चर्चा पाई जाती है। निस्सन्देह ऐसा ही चाहिए था कि प्रत्येक नबी इस मसीह दज्जाल के आने की पूर्व सूचना देता। अत: प्रत्येक ने विस्तृत और संक्षिप्त तथा सांकेतिक तौर पर सूचना दी है हज़रत नूह से लेकर हमारे सरदार एवं पेशवा ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक युग तक इस मसीह दज्जाल की सूचना मौजूद है जिसे मैं सबूतों के साथ सिद्ध कर सकता हूँ।

इस्लाम को जितनी इन लोगों के द्वारा क्षति पहुँची है और इन्होंने जितना सत्य और न्याय का ख़ून किया है इन समस्त ख़राबियों का कौन अनुमान लगा सकता है। पवित्र हिजरत की तेरहवीं सदी से पूर्व इन समस्त उपद्रवों का नाम और निशान न था और जब तेरहवीं सदी कुछ आधे से अधिक गुज़र गई तो सहसा यह दज्जाली समूह निकला और फिर उन्नति होती गई यहां तक कि इस सदी के अन्त में पादरी हैकर साहिब के कथनानुसार केवल हिन्दुस्तान में ही पांच लाख तक धर्मांतरित ईसाइयों तक नौबत पहुँच गई और अनुमान लगाया गया कि लगभग बारह साल में एक लाख लोग ईसाई धर्म में सम्मिलित हो जाते हैं जो एक असहाय बन्दे को ख़ुदा, ख़ुदा करके पुकारते हैं। इस बात से कोई मनीषी अपरिचित नहीं कि इस्लाम की एक बड़ी जमाअत या यों कहो कि इस्लाम के भूखों और नंगों का एक वर्ग पादरी लोगों ने केवल रोटियां और कपड़े दिखा कर अपने अधिकार में कर लिया है और जो रोटियों के द्वारा अधिकार में न आए वे स्त्रियों के द्वारा अपने पंजे में किए गए और जो इस प्रकार भी जाल में न फंस सके उनके लिए नास्तिक और अधर्मी करने वाला फ़लसफ़ा फ़ैलाया गया जिसमें आज मुसलमानों के लाखों नवोदित बच्चे ग्रस्त और लिप्त पाए जाते हैं जो नमाज़ पर हंसते और ज़कात को उपहास से याद करते और ख़ुदा की वह्यी को एक अस्त-व्यस्त स्वप्न समझते हैं और जो लोग इस योग्य भी नहीं थे कि अंग्रेज़ी दर्शन की शिक्षा प्राप्त करें उनके लिए बहुत से कृत्रिम क़िस्से जो पादरी लोगों के मात्र बाएं हाथ का खेल था जिनमें किसी इतिहास या कहानी की शैली में इस्लाम की भर्त्सना का उल्लेख था सामान्यतया प्रकाशित कर दिए गए और फिर इस्लाम के खण्डन में तथा हमारे सरदार एवं पेशवा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झूठा कहने में असंख्य पुस्तकें लिख कर इन लोगों ने एक संसार में मुफ़्त वितरण किया और अधिकतर पुस्तकों के बहुत सी भाषाओं में अनुवाद करके प्रकाशित किए। पुस्तक ''फ़तह इस्लाम'' में पृष्ठ-46 के हाशिए को पढ़कर देखो कि इक्कीस वर्ष में इन लोगों ने अपने छल-कपट पूर्ण विचारों के प्रसार के लिए सात करोड़ से कुछ अधिक पुस्तकें मुफ़्त बांटी हैं ताकि किसी प्रकार मुसलमान लोग इस्लाम से पृथक हो जाएं और हज़रत मसीह को ख़ुदा

मान लिया जाए। **अल्लाहो अकबर यदि अब भी हमारी क़ौम की दृष्टि में ये लोग प्रथम श्रेणी के दज्जाल नहीं और इनके दोष के लिए एक सच्चे मसीह की आवश्यकता नहीं तो फिर इस क़ौम का क्या हाल होगा।**

देखो! हे लापरवाह लोगो देखो!! कि इस्लामी इमारत को ध्वस्त करने के लिए ये किस स्तर का प्रयास कर रहे और किस अधिकता से ऐसे साधन उपलब्ध किए गए हैं और उन्हें प्रसारित करने में अपने प्राणों को भी ख़तरे में डालकर और अपने धन को पानी की तरह बहा कर वे प्रयास किए हैं कि मानव-शक्तियों का अन्त कर दिया है यहां तक कि नितान्त लज्जाजनक साधन और इस मार्ग में पवित्रता के विपरीत योजनाएं कार्यान्वित की गईं, सत्य और ईमानदारी उड़ाने के लिए भांति-भांति की सुरंगें तैयार की गईं, इस्लाम के विनाश के लिए झूठ और आडम्बर की समस्त बारीक बातें नितान्त कठोर परिश्रम द्वारा पैदा की गईं, सहस्त्रों क़िस्से और शास्त्रार्थ की पुस्तकें मात्र मनघडन्त तौर पर और मात्र इस उद्देश्य से बनाई गईं ताकि यदि अन्य उपाय से नहीं तो इसी उपाय से हृदयों पर दुष्प्रभाव पड़े। क्या कोई ऐसा बटमारी का उपाय है जो आविष्कृत नहीं किया गया ? क्या पथ-भ्रष्ट करने का ऐसा मार्ग शेष है जिसके ये आविष्कारक नहीं। अत: स्पष्ट है कि ये ईसाई जातियों और तीन ख़ुदाओं की आस्था रखने वालों के समर्थकों की ओर से वे जादुई कार्यवाहियां हैं और जादू की उस पूर्ण श्रेणी का नमूना है जो प्रथम श्रेणी के दज्जाल के अतिरिक्त जो **वादा दिया गया दज्जाल** है और किसी से प्रकटन में नहीं आ सकतीं। अत: इन्हीं लोगों को जो पादरियों का समूह है वादा दिया गया दज्जाल मानना पड़ा और जबकि हम संसार के उस अधिकांश भाग की ओर दृष्टि डाल कर देखते हैं जो गुज़र चुका तो हमारी दृष्टि इस खोज वाली साक्ष्य को साथ लेकर लौटती है कि युग के पूर्वकालीन सिलसिले में जहां तक पता मिल सकता है दज्जालियत की विशेषता और उस की सफलताओं में इन लोगों का सदृश नहीं और इनके इन जादुई कार्यों में कोई इनके समान नहीं और चूंकि सही हदीसों में कथित दज्जाल का यही लक्षण लिखा है कि वह ऐसे उपद्रव फैलाएगा कि उस समय के आरंभ से संसार के अन्त तक जहां तक दृष्टि दौड़ाएं

उसका सदृश नहीं मिलेगा। अत: इस बात पर दृढ़ विश्वास करना चाहिए कि **वह मसीह दज्जाल जो गिरजा से निकलने वाला है यही लोग हैं** जिनके जादू के सामने चमत्कार की आवश्यकता थी और यदि इन्कार है तो फिर पूर्व कालीन युग के दज्जालों में से इनका उदाहरण प्रस्तुत करो।

अब जो यह प्रश्न किया जाता है कि आवश्यक है कि मसीह इब्ने मरयम से पूर्व दज्जाल आ गया हो। इसका उत्तर स्पष्ट हो गया और पूर्ण रूप से सिद्ध हो गया कि मसीह दज्जाल जिसके आने की प्रतीक्षा थी। यही पादरियों का समूह है जो टिड्डी दल की भांति संसार में फैल गया है। अत: हे बुज़ुर्गो ! वादा दिया गया दज्जाल यही है जो आ चुका, परन्तु तुम ने उसे नहीं पहचाना। हाथ में तराज़ू लो और तोल करके देखो कि क्या इन से बढ़कर कोई अन्य ऐसा दज्जाल आना संभव है जो छल-कपट में इन से अधिक हो। उस दज्जाल के लिए जो तुम्हारे भ्रम में है, तुम लोग बार-बार यह हदीस प्रस्तुत करते हो कि उसका उपद्रव इतना बड़ा होगा कि सत्तर हज़रत मुसलमान उसके अनुयायी हो जाएंगे, परन्तु यहां तो लाखों लोग इस्लाम धर्म को छोड़ गए और छोड़ते जाते हैं। तुम्हारी स्त्रियां, तुम्हारे बच्चे, तुम्हारे प्रिय मित्र, तुम्हारे बड़े-बड़े बुज़ुर्गों और वलियों की सन्तान तुम्हारे बड़े-बड़े खानदानों के लोग इस दज्जाली धर्म में प्रवेश करते जाते हैं। क्या यह इस्लाम के लिए नितान्त शोक का स्थान नहीं। विचार करके देखो कि इन लोगों के उपद्रवों ने किस प्रकार दामन फैला रखा है और इन लोगों के प्रयास चरम सीमा तक पहुँच गए हैं। क्या छल-कपट की कोई ऐसी भी कसर है जो इन्होंने बटमारी के लिए प्रयोग नहीं की। करोड़ों पुस्तकें इसी उद्देश्य से देशों में प्रसारित कीं, सहस्त्रों उपदेशक और प्रचारक इसी उद्देश्य से जगह जगह फैला दिए। करोड़ों रुपया इसी मार्ग में व्यय हो रहा है, नितान्त दुर्गम मार्गों, खतरों से भरे पर्वतों, अफ़गानिस्तान के देश केयाग़िस्तान क्षेत्र, काफ़िरस्तान के असभ्य लोगों तथा अफ्रीक़ा के जंगली लोगों के पास जाते हैं तथा इसी उद्देश्य से जल-थल की यात्राएं करते रहते हैं ताकि किसी व्यक्ति को अपने जाल में फंसा लें। हज़रत आदम से लेकर आज तक लोगों को पथ-भ्रष्ट करने के लिए जो छल भिन्न-भिन्न तौर पर

किए हैं इन मिशनों में उन सब का सार पाया जाता है कोई व्यक्ति यदि एक साल तक सोचता रहे और गुमराह करने के नए नए धोखे निकाले तो अन्त में जब ध्यानपूर्वक देखेगा तो वे सब धोखे इन मिश्नों में पाएगा। अधिकांश स्थानों पर इन लोगों ने डाक्टरी पद भी प्राप्त किए हैं ताकि यदि और नहीं तो आपदा ग्रस्त रोगी ही काबू में आएं, बहुत सा अनाज इस उद्देश्य से खरीदा जाता है ताकि यदि अकाल पड़े तो अकाल ग्रस्त लोगों को वह अनाज मुफ़्त दिया जाए और कुछ उपदेश भी सुना दिया जाए। अधिकांश स्थानों पर देखा गया है कि पादरी लोगों का इतवार के दिन दान-गृह खुलता है और बहुत सारे अनाथ एकत्र हो जाते हैं और उचित अवसर पर कुछ-कुछ उपदेश उन्हें सुना कर फिर कुछ धन-राशि उन्हें दी जाती है बहुत सी ऐसी मिसों ने जो पादरी का पद रखती हैं दोनों समय लोगों के घरों में जाना अपनी दिनचर्या बना रखी है और अच्छे खानदान वाले लोगों की लड़कियों को सीना-पिरोना तथा अन्य कई प्रकार के सुई के कार्य सिखाती हैं और बटमारी के लिए बग़ल में सेंध लगाने का उपकरण भी होता है। अवसर पाकर वह उपाय भी प्रयोग में लाया जाता है। अत: अच्छे-अच्छे ख़ानदानों की लड़कियां सय्यद, शैख, मुग़ल, नवाबों और शाहज़ादों की सन्तान कहला कर फिर मिसों के प्रयासों से ईसाई सम्प्रदाय में सम्मिलित हो चुकी हैं और जिन पर्दे वाली खानदानी स्त्रियों ने जीवन पर्यन्त कभी ग़ैर पुरुष की शक्ल भी नहीं देखी थी। अब वे ईसाई होकर अन्य लोगों के हाथ में हाथ डाल कर फिरती हैं। पवित्र प्रेम के विचार से ग़ैर लोग यदि चुम्बन भी ले लें तो कुछ बुरा नहीं समझा जाता। या तो उन्होंने शराब का नाम भी नहीं सुना था और या इस दुष्ट रस का दिन-रात खूब अभ्यास चल रहा है तथा **बरांडी, शैरी, व्हिस्की, रम, पोर्टवाइन** इत्यादि शराबों के नाम मुंह पर चढ़े हुए है। इसी प्रकार मुसलमानों के सहस्त्रों अनाथ बच्चे इन लोगों के क़ब्ज़े में आकर तथा इनकी छल-कपट की शिक्षा प्राप्त करके अब इस्लाम के पक्के शत्रु दिखाई देते हैं। क्या कोई उपद्रवपूर्ण कार्य कल्पना में आ सकता है जो इन लोगों ने नहीं किया, क्या इस्लाम धर्म को मिटाने वाले उपाय कुछ ऐसे भी शेष रह गए हैं जो इन के द्वारा प्रकटन में नहीं आए। अत:

न्याय करना चाहिए कि जिस अवस्था में संसार के प्रारंभ से आज तक छल-कपट के समस्त कार्यों में तथा दज्जालियत के समस्त उपायों में इन्हीं लोगों का नम्बर सर्वप्रथम विदित होता है और इस प्रकार की आपदा को फैलाने में संसार के प्रत्येक कोने में प्रारंभ से आज तक इनका कोई उदाहरण नहीं मिलता तथा इन लोगों के विषाक्त प्रभावों ने कुछ लोगों का तो पूर्णतया विनाश कर दिया है और कुछ का लक़्वाग्रस्त की भांति आधा भाग बेकार कर दिया है और कुछ के रक्त में कोढ़ियों की भांति विकार पैदा कर दिया है जिनके चेहरों पर कोढ़ के बड़े-बड़े धब्बे दिखाई देते हैं और कुछ की आंखों पर ऐसा हाथ फेरा है कि अब उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता और नए ईसाइयों की नस्ल के फैलने के कारण जन्मजात अंधों का भी वर्ग बढ़ता जाता है और करोड़ों दुर्भाग्यशाली लोगों में अपवित्र आत्माएं शोर मचा रही हैं। अत: इस आपदा फैलाने वाली वायु के कारण ऐसा युग आ गया है कि करोड़ों कोढ़ी और करोड़ों जन्मजात अंधे, करोड़ों लक़्वाग्रस्त तथा करोड़ों मुर्दों के शव सड़े-गले दिखाई दे रहे हैं। **अब मैं पुन: कहता हूँ कि क्या इनके लिए कोई मसीह इब्ने मरयम मुर्दों को जीवित करने वाला नहीं आना चाहिए था, जिस अवस्था में ऐसा मसीह दज्जाल आ गया तो क्या मसीह इब्ने मरयम न आता ?**

अब ये सन्देह प्रस्तुत किए जाते हैं कि दज्जाल दायीं आंख से काना होगा और याजूज-माजूज उसी युग में प्रकट होंगे और दाब्बतुलअर्ज़ (ज़मीन का कीड़ा) भी आएगा, धुआं भी तथा पश्चिम से सूर्य उदय होगा तथा इमाम मुहम्मद महदी भी उसी समय प्रकटन करेगा और दज्जाल के साथ स्वर्ग और नर्क होगा तथा पृथ्वी के खज़ाने भी उसके साथ होंगे और रोटियों का एक पर्वत भी साथ होगा, एक गधा भी होगा और दज्जाल अपने जादुई कर्तब दिखाएगा तथा आकाश और पृथ्वी दोनों उसके अधीन होंगे जिस जाति पर चाहे वर्षा करे और जिसको चाहे अनावृष्टि द्वारा तबाह कर दे और इन्हीं दिनों याजूज-माजूज की क़ौमें उन्नतिशील होंगी और पृथ्वी को दबाती चली जाएंगी और प्रत्येक ऊँची पृथ्वी से दौड़ेगी तथा दज्जाल लाल रंग का मोटा और भारी व्यक्ति होगा। ये समस्त लक्षण अब कहां पाए जाते हैं।

इन सन्देहों का निवारण इस प्रकार है कि एक आंख वाले से अभिप्राय वास्तव में एक आंख वाला नहीं। अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता है :-

مَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى (बनी इस्राईल - 72)

क्या यहां अन्धे से अभिप्राय शारीरिक अंधापन है अपितु आध्यात्मिक अंधापन अभिप्राय है और आशय यह है कि दज्जाल में धार्मिक बुद्धि नहीं होगी और यद्यपि उनमें भौतिक बुद्धि तीव्र होगी और ऐसी युक्तियों का आविष्कार करेगा और ऐसे अद्भुत कार्य दिखाएगा जैसे ख़ुदाई का दावा कर रहा है परन्तु धार्मिक आंख बिल्कुल नहीं होगी जैसा कि आजकल यूरोप और अमरीका के लोगों का हाल है कि उन्होंने भौतिक खोजों का अन्त कर दिया है। हदीस में जो كَاَنَّ का शब्द मौजूद है वह भी सिद्ध कर रहा है कि यह एक कश्फ़ी और व्याख्यायोग्य बात है। जैसा कि मुल्ला अली क़ारी ने इसी की ओर संकेत किया है।

और याजूज-माजूज के बारे में तो फैसला हो चुका है कि संसार की ये जो दो प्रतिष्ठित क़ौमें हैं जिनमें से एक अंग्रेज़ और दूसरे रूस हैं। ये दोनों जातियां ऊँचाई से नीचाई की ओर प्रहार कर रही हैं अर्थात् अपनी ख़ुदा की प्रदान की हुई शक्तियों द्वारा होती जाती हैं, मुसलमानों के दुष्कृत्यों ने मुसलमानों को नीचे गिरा दिया। उनकी सभ्यता, सुशीलता, साहस, दृढ़ संकल्प तथा रहन-सहन के उच्च सिद्धान्तों ने सर्वशक्तिमान ख़ुदा के आदेश और हित के अन्तर्गत उन्हें सौभाग्य प्रदान कर दिया। इन दोनों क़ौमों का बाइबल में भी वर्णन है।

'दाब्बतुलअर्ज़' से अभिप्राय कोई निर्बुद्ध जानवर नहीं अपितु हज़रत अली रज़ि. के कथनानुसार व्यक्ति का नाम ही 'दाब्बतुलअर्ज़' है* और यहां दाब्बतुलअर्ज़ शब्द

* **नोट :-** ''आसारुल क़ियामह'' में लिखा है कि हज़रत अली कर्मल्लाहो वज्हहू से पूछा गया कि लोग सोचते हैं कि दाब्बतुलअर्ज़ आप ही हैं तब आप ने उत्तर दिया कि दाब्बतुलअर्ज़ में तो कुछ चौपायों और कुछ पक्षियों की भी एकरूपता होगी मुझ में वह कहां है और यह भी लिखा है कि दाब्बतुलअर्ज़ व्यक्तिवाचक संज्ञा है जिस से अभिप्राय एक वर्ग है। इसी से।

से अभिप्राय मनुष्यों का एक ऐसा वर्ग है जो अपने अन्दर आकाशीय रूह नहीं रखता, परन्तु भौतिक विद्याओं और कलाओं के माध्यम से इस्लाम के इन्कार करने वालों को निरुत्तर करते हैं और अपनी धार्मिक बहसों के ज्ञान और शास्त्राथों को समर्थनों के मार्ग में व्यय करके तन-मन से प्रकाशमान शरीअत की सेवा करते हैं। अत: चूंकि वास्तव में भौतिक (पार्थिव) हैं आकाशीय नहीं तथा आकाशीय रूह पूर्णरूपेण अपने अन्दर नहीं रखते इसलिए **दाब्बतुलअर्ज़** कहलाते हैं और चूंकि पूर्ण आत्मशुद्धि नहीं रखते और न पूर्ण वफ़ादारी इसलिए उनका चेहरा तो मनुष्यों का है परन्तु उनके कुछ अंग कुछ दूसरे प्राणियों से एकरूपता रखते हैं। इसी की ओर अल्लाह तआला संकेत फ़रमाता है :-

وَ اِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٨٣﴾*

अर्थात् जब ऐसे दिन आएंगे कि काफ़िरों पर अज़ाब आए और उनका निर्धारित समय निकट आ जाएगा तो हम एक गिरोह दाब्बतुलअर्ज़ का पृथ्वी में से निकालेंगे वह गिरोह कलाम के पारंगत लोगों का होगा जो इस्लाम के समर्थन में आस्थाओं को भुला चुके धर्मों पर प्रहार करेगा अर्थात् वे भौतिकवादी विद्वान होंगे जिन्हें कलाम और दर्शनशास्त्र में महारत होगी। वे जगह-जगह इस्लाम के समर्थन में खड़े हो जाएंगे और इस्लाम की सच्चाइयों को तार्किक तौर पर पूरबों और पश्चिमों में फैलाएंगे। यहां اخرجنا (अख़रज्ना) का शब्द इस कारण लिया कि अन्तिम युग में उन का निकलना होगा न कि नए सिरे से पैदा होना अर्थात् बीज के तौर पर या कम मात्रा के तौर पर तो वे पहले ही से थोड़े बहुत प्रत्येक युग में पाए जाएंगे, परन्तु अन्तिम युग में बाहुल्य के साथ और अपनी पूर्ण योग्यता के साथ पैदा होंगे और इस्लाम के समर्थन में जगह-जगह उपदेशकों के पद पर खड़े हो जाएंगे और संख्या में बहुत बढ़ जाएंगे।

स्पष्ट हो कि यह ख़ुरूज (निकलना) का शब्द पवित्र क़ुर्आन में दूसरे रूप में याजूज-माजूज के लिए भी आया है और दुख़ान (धुआं) के लिए भी पवित्र क़ुर्आन

* अन्नम्ल-83

में ऐसा ही शब्द प्रयुक्त किया गया है जिसके अर्थों का सार ख़ुरूज (निकलना) ही है तथा दज्जाल के लिए भी हदीसों में यही ख़ुरूज का शब्द प्रयुक्त हुआ है। अत: इस शब्द के प्रयुक्त करने का कारण यह है ताकि इस बात की ओर संकेत हो कि ये बातें जो अन्तिम युग में प्रकट होंगी वे प्रारंभिक युगों में पूर्णतया समाप्त नहीं होंगी अपितु अपने प्रकार या नमूने के अस्तित्व के साथ जो अन्तिम अस्तित्व का समरूप और सदृश होगा। पहले भी कुछ लोगों में उनका अस्तित्व पाया जाएगा, परन्तु वह अस्तित्व एक कमज़ोरी और असफलता की अवस्था में होगा, परन्तु दूसरा अस्तित्व जिसका ख़ुरूज शब्द से चरितार्थ किया गया है उसमें एक प्रतापी अवस्था होगी अर्थात् पहले अस्तित्व की भांति कमज़ोरी नहीं होगी और एक शक्ति के साथ उसका प्रकटन होगा, जिसे प्रकट करने के लिए ख़ुरूज का शब्द प्रयुक्त किया गया। इसी आधार पर मुसलमानों में यह विचार चला आता है कि मसीह दज्जाल आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय से मौजूद है तथा फिर उनके विचारों में ऐसी ग़लती पक गई है कि अब तक मसीह इब्ने मरयम की तरह उसे जीवित समझा हुआ है जो किसी द्वीप में बन्दी और जकड़ा हुआ है और उसकी जस्सासा भी अब तक जीवित है जो उसे ख़बरें पहुँचा रही है। खेद कि ये लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस में कुधारणा स्वरूप कैसे संकटों में फंस गए, इसी प्रकार ये लोग याजूज-माजूज को भी व्यक्तिगत अस्तित्व के साथ जीवित समझते हैं अर्थात् व्यक्तिगत अनश्वरता को मानते हैं। अब जब कि दज्जाल और उसका जस्सासा और याजूज-माजूज के करोड़ों लोग और 'दाब्बतुलअर्ज़' तथा कुछ के विचारानुसार इब्ने सय्याद भी अभी तक जीवित हैं तो हज़रत मसीह यदि जीवित न हों तो उन का अधिकार मारना है। मेरे निकट प्रमाण का सरल उपाय यह है कि मौलवी लोग प्रयास करके याजूज माजूज का कोई व्यक्ति अथवा दज्जाल की जस्सासा या इब्ने सय्याद को ही किसी जंगल से पकड़ कर ले आएं, फिर क्या है सभी मान जाएंगे कि इसी प्रकार हज़रत मसीह भी आकाश पर जीवित हैं, मुफ़्त में विजय हो जाएगी। सज्जनो! अब साहस कीजिए कहीं से दुष्ट दज्जाल की जस्सासा को ही पकड़िए, हिम्मत न

हारें, ये सब पृथ्वी पर ही हैं। इब्ने तमीम की हदीस को मुस्लिम में पढ़कर उसी पते से दज्जाल की जस्सासा का पता लगाइये या दुष्ट दज्जाल को ही जो ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ है स्वयं अपनी आंखों से देखकर फिर दूसरों को दिखाइए। बात तो उत्तम है, अंग्रेज़ों ने साहस और प्रयास करके **नई दुनिया** को खोज ही लिया, आप इस व्यर्थ काम में ही सफलता प्राप्त कीजिए। शायद इन लोगों में से किसी का पता चले :-

بہرکارے کہ ہمت بستہ گردد   اگر خارے بود گلدستہ گردد

(**अनुवाद** - प्रत्येक कार्य के लिए साहस की आवश्यकता है यदि कांटे भी हों तो वे फूल बन जाएंगे - अनुवादक)

और यदि ऐसा नहीं करोगे तो फिर भलाई इसमें है कि इन निरर्थक विचारों से रुक जाएं। नबी करीम स.अ.व. ने क़समें खाकर फ़रमाया है कि कोई प्राणी इस समय से सौ वर्ष तक पृथ्वी पर जीवित नहीं रह सकता, परन्तु आप अकारण इन सब प्राणियों को उस युग से आज तक जीवित समझ रहे हैं। यह शोध और खोज का युग है। इस्लाम का ऐसा चित्र खींचकर न दिखाइए जिस पर एक-एक बच्चा हंसे। विचार कीजिए कि ये करोड़ों लोग जो सैकड़ों वर्षों से जीवित माने गए हैं जो अब तक मरने में नहीं आते किस देश और किस शहर में रहते हैं। आश्चर्य कि आबाद संसार की वास्तविकता भली भांति प्रकट हो गई, पर्वतों और द्वीपों की दशा भी अच्छी तरह विदित हो गई और अन्वेषकों ने अपनी खोज को चरम सीमा तक पहुँचा दिया कि ऐसी आबादियां जो संसार के प्रारंभ से ज्ञात न थीं वे अब ज्ञात हो गईं, परन्तु अब तक उस जस्सासा, दज्जाल, इब्ने सय्याद, दाब्बतुलअर्ज़ तथा याजूज-माजूज के करोड़ों लोगों का कुछ पता नहीं मिलता। अत: हे सज्जनो ! निश्चय समझो कि वे सब प्राणी जो मानव जाति में से थे इस संसार से कूच कर गए पृथ्वी में कहीं छुप गए तथा मुस्लिम की सौ वर्ष वाली हदीस ने अपनी तेजस्वी सच्चाई से उन्हें मृत्यु का स्वाद चखा दिया। अब उनकी प्रतीक्षा आप का व्यर्थ विचार है। अब तो इन्ना लिल्लाह कह कर उनको मृत्यु प्राप्त समझिए।

यदि आप के हृदय में यह दुबिधा हो कि नबी करीम स.अ.व. की हदीसों में उनके निकलने (खुरूज) का वादा है इसके इस स्थिति में क्या अर्थ होंगे। अत: सुनो, इसके सच्चे अर्थ जो अल्लाह तआला ने मुझ पर प्रकट किए हैं, वे ये हैं कि अन्तिम युग में इन सभी वस्तुओं का उदाहरण स्वरूप प्रतापी तौर पर प्रकट होना अभिप्राय है। उदाहरणतया प्रथम - दज्जाल को इस प्रकार देखा गया कि वह ज़ंज़ीरों में जकड़ा हुआ कमज़ोर और अशक्त है किसी पर आक्रमण नहीं कर सकता, परन्तु इस अन्तिम युग में ईसाई मिशन का दज्जाल उसी दज्जाल से एकरूप होकर शक्तिपूर्वक ख़ुरूज कर रहा है और जैसे कि आदर्श और प्रतिबिम्बित अस्तित्व के साथ वही है तथा जैसा कि वह प्रारंभिक युग में गिरजे में जकड़ा हुआ दिखाई दिया था अब वह उस बन्धन से आज़ाद होकर ईसाइयों के गिरजे से ही निकला है और संसार में एक संकट पैदा कर रखा है।

इसी प्रकार याजूज-माजूज का हाल भी समझ लीजिए। ये दोनों पुरातन जातियां हैं जो आरंभिक युगों में दूसरों पर स्पष्ट तौर पर विजयी नहीं हो सकीं तथा उनकी स्थिति में कमज़ोरी रही, परन्तु ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि अन्तिम युग में ये दोनों जातियां निकलेंगी अर्थात् अपनी प्रतापी शक्ति के साथ प्रकट होंगी जैसा कि सूरह कहफ़ में फ़रमाता है

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ (सूरह अल क़हफ़ - 100)

अर्थात् ये दोनों क़ौमें दूसरों को पराजित करके फिर एक-दूसरे पर आक्रमण करेंगी और जिसे ख़ुदा चाहेगा विजय प्रदान करेगा।

चूंकि दोनों जातियों (क़ौमों) से अभिप्राय अंग्रेज़ और रूस हैं **इसलिए प्रत्येक सौभाग्यशाली मुसलमान को दुआ करनी चाहिए कि उस समय अंग्रेज़ों की विजय हो क्योंकि ये लोग हमारे उपकारी हैं तथा बर्तानवी सरकार के हम पर बहुत उपकार हैं। बहुत अज्ञान, मूर्ख और अयोग्य वे मुसलमान है जो इस सरकार से द्वेष रखें। यदि हम इनके कृतज्ञ न हों तो फिर हम ख़ुदा तआला के भी कृतघ्न हैं क्योंकि हमने इस सरकार की छत्र-छाया में जो आराम पाया**

और पा रहे हैं वह आराम हम किसी इस्लामी सरकार में भी नहीं पा सकते, कदापि नहीं पा सकते।

इसी प्रकार दाब्बतुलअर्ज़ अर्थात् वे उलमा और उपदेशक जो आकाशीय क़ुदरत अपने अन्दर नहीं रखते आरंभ से चले आते हैं परन्तु क़ुर्आन का आशय यह है कि अन्तिम युग में इनका अत्यधिक बाहुल्य होगा और इनके निकलने (ख़ुरूज) से अभिप्राय इन का बाहुल्य ही है।

यह भी स्मरण रखने योग्य है कि जिस प्रकार उन वस्तुओं के संबंध में जो अपने अन्दर आकाशीय शक्ति नहीं रखतीं तथा अन्तिम युग में पूरे जोश और शक्ति के साथ प्रकट होंगी 'ख़ुरूज' का शब्द प्रयुक्त हुआ है, इसी प्रकार हदीसों में उस व्यक्ति के बारे में लिखा है कि वह आकाशीय वह्यी और शक्ति के साथ प्रकटन करेगा, नुज़ूल (उतरना) का शब्द प्रयोग किया गया है। अत: इन दोनों शब्दों 'ख़ुरूज' और 'नुज़ूल' में वास्तव में एक ही बात दृष्टिगत रखी गई है अर्थात् इस बात का समझना अभीष्ट है कि ये समस्त वस्तुएं जो अन्तिम युग में प्रकट होने वाली हैं अपनी प्रकटन-शक्ति के ख़ुरूज और नुज़ूल की विशेषता की दृष्टि से विशिष्ट की गई हैं, जो आकाशीय शक्ति के साथ आने वाला था उसे 'नुज़ूल' के शब्द से याद किया गया और जो भौतिक शक्ति के साथ निकलने वाला था उसे ख़ुरूज के शब्द से पुकारा गया ताकि नुज़ूल के शब्द से आने वाले की एक श्रेष्ठता समझी जाए तथा ख़ुरूज के शब्द से एक लज्जा और तिरस्कार सिद्ध हो तथा यह भी ज्ञात हो कि 'नाज़िल' ख़ारिज पर भारी है।

इसी प्रकार 'दुख़ान' (धुआं) जिसका पवित्र क़ुर्आन में वर्णन है कुछ अन्तिम युग से ही विशिष्ट नहीं है। हां अन्तिम युग में जो हमारा युग है उसका स्पष्ट और खुले तौर पर प्रकटन हुआ है जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

حٰمٓ ﴿۲﴾ وَ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿۳﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ﴿۴﴾
فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ﴿۵﴾ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ؕ اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿۶﴾

رَحۡمَةً مِّنۡ رَّبِّكَ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيۡعُ الۡعَلِيۡمُ ۙ﴿۷﴾ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ وَ مَا بَيۡنَهُمَا ۘ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّوۡقِنِيۡنَ ﴿۸﴾ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحۡيٖ وَ يُمِيۡتُ ؕ رَبُّكُمۡ وَ رَبُّ اٰبَآئِكُمُ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿۹﴾ بَلۡ هُمۡ فِيۡ شَكٍّ يَّلۡعَبُوۡنَ ﴿۱۰﴾ فَارۡتَقِبۡ يَوۡمَ تَاۡتِي السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِيۡنٍ ۙ﴿۱۱﴾ يَّغۡشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۱۲﴾ رَبَّنَا اكۡشِفۡ عَنَّا الۡعَذَابَ اِنَّا مُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱۳﴾ (अद्दुख़ान - 2 से 13)

अर्थात् इस प्रकाशमान और खुली खुली किताब की क़सम है कि हम ने इस पवित्र क़ुर्आन को एक मुबारक रात में उतारा है क्योंकि हम चाहते थे कि अवज्ञा के परिणामों से डराएं। वह रात एक ऐसी मुबारक रात है कि समस्त नीतिपूर्ण बातें उसमें प्रकट की जाती हैं और ऐसा ही हमने चाहा है। तेरे रब्ब ने दया के मार्ग से ऐसा ही इरादा किया है कि कुल आध्यात्मिक ज्ञान तथा ख़ुदाई सूक्ष्म बातों का तेरे शुभ अवतरण पर ही अन्त हो और वही कलाम (वाणी) सम्पूर्ण नीतिपूर्ण आध्यात्म ज्ञानों का संग्रहीता हो जो तुझ पर उतरा है और यह बात हम पहले ही लिख चुके हैं कि उस बरकत वाली रात से अभिप्राय एक तो वही अर्थ हैं जो प्रसिद्ध हैं और दूसरे आँहज़रत स.अ.व. के अवतरित होने के युग की रात है जिसका दामन क़यामत के दिन तक फैला हुआ है और आयत فِيۡهَا يُفۡرَق كُلُّ اَمۡرٍ حكيمٍ (अद्दुख़ान - 5) में इस बात की ओर संकेत है कि वह समस्त युग जो क़यामत तक आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नुबुव्वत के युग के अन्तर्गत है क़ुर्आन के फ़ैज़ों से बहुत लाभ उठाएगा और वे समस्त ख़ुदाई मआरिफ़ जो संसार में गुप्त चले आते थे इस युग में समय-समय पर प्रकट होते रहेंगे और साथ ही आयत فِيۡهَا يُفۡرَقُ كُلُّ اَمۡرٍ حَكِيۡمٍ में यह भी संकेत है कि उस मुबारक युग की विशेषताओं में से यह भी होगा कि लोक और परलोक के समस्त ज्ञान अपनी उच्च स्तर की विशेषताओं के साथ प्रकट होंगे और कोई नीति संबंधी बात ऐसी नहीं रहेगी जिसका विवरण और व्याख्या न की जाए। फिर आगे फ़रमाया कि ख़ुदा वह ख़ुदा है जिसने पृथ्वी और आकाश को बनाया और जो कुछ उसके मध्य है सब

उसी ने पैदा किया ताकि तुम उसी वास्तविक रचयिता पर विश्वास करो और सन्देह का कोई कारण न रहे तथा उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, वह जीवित करता है और मृत्यु देता है, तुम्हारा प्रतिपालक है और तुम्हारे उन बाप-दादाओं का प्रतिपालक जो तुम से पूर्व गुज़र चुके हैं अपितु वे तो सन्देह और शंकाओं में पड़े हुए हैं। इन सबूतों की ओर उनकी कहां दृष्टि है। अत: तू उन दिन का आशान्वित रह जिस दिन आकाश एक खुला-खुला धुआं लाएगा जिसे देखकर कहेंगे कि यह अज़ाब दर्दनाक है और कहेंगे कि हे हमारे ख़ुदा यह अज़ाब हम से दूर कर हम ईमान लाए।

यहां दुख़ान (धुआं) से अभिप्राय भयंकर और भीषण दुर्भिक्ष है जो सात वर्ष तक आँहज़रत स.अ.व. के युग में पड़ा, यहां तक कि लोगों ने मुर्दे और हड्डियां खाई थीं जैसा कि इब्ने मसऊद की हदीस में इसका विस्तृत वर्णन है, परन्तु अन्तिम युग के लिए भी जो हमारा युग है इस भयंकर दुख़ान का वादा था, इस प्रकार कि मसीह के प्रकटन से पूर्व नितान्त भयंकरता के साथ इसका प्रकटन होगा। अब समझना चाहिए कि यह अन्तिम युग का दुर्भिक्ष (अकाल) भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार से घटित हुआ। भौतिक तौर पर इस प्रकार कि यदि अब से पचास वर्ष पूर्व पर दृष्टि डाली जाए तो ज्ञात होगा कि जैसे अब अनाज और प्रत्येक वस्तु का भाव सामान्यतया सदैव कम रहता है, उसका उदाहरण पूर्व कालीन युगों कहीं उपलब्ध नहीं। कभी स्वप्न और विचार की भांति कुछ दिन अनाज की मंहगाई रहती थी और फिर वे दिन गुज़र जाते थे, परन्तु अब तो यह महंगाई कभी पृथक न होने वाली अनिवार्यता की भांति है तथा अकाल की भयंकरता अन्दर ही एक संसार का विनाश कर रही है।

और आध्यात्मिक तौर पर सच्चाई, अमानत और ईमानदारी का अकाल पड़ गया है, छल, कपट, विद्याएं और कलाएं अंधकारमय धुएं की भांति संसार में फैल गई हैं तथा दिन-प्रतिदिन उन्नति पर हैं। इस युग की ख़राबियों का रूप पूर्वकालीन युगों की खराबियों से बिल्कुल भिन्न है। पूर्वकालीन युगों में अज्ञानता और अनपढ़ता बटमार थी, इस युग में विद्याओं की प्राप्ति बटमार हो रही है। हमारे युग का नवीन प्रकाश जिसे दूसरे शब्दों में धुएं का नाम देना चाहिए विचित्र रूप से ईमान, और

ईमानदारी तथा आन्तरिक सादगी को क्षति पहुंचा रहा है। सोफ़िस्ताई भाषणों की धूल ने सत्य के सूर्य को छुपा दिया है और दर्शनशास्त्रीय धोखों ने अल्प बुद्धि वाले लोगों को नाना प्रकार के सन्देहों में डाल दिया है, मिथ्या विचारों को महत्व दिया जाता है और वास्तविक सच्चाइयां अधिकांश लोगों की दृष्टि में कुछ तुच्छ सी विदित होती हैं। अत: ख़ुदा तआला ने चाहा कि बुद्धि के बटमारों को बुद्धि से ठीक करे और दर्शनशास्त्रीय मार्ग भटके हुए लोगों को आकाशीय दर्शन के बल से सद्मार्ग पर लाए। अत: यह पूर्ण स्तर का धुआं है जो इस युग में प्रकट हुआ है।

इसी प्रकार सूर्योदय जो पश्चिम की ओर से उदय होगा हम उस पर बहरहाल ईमान लाते हैं, परन्तु इस विनीत पर जो एक स्वप्न में प्रकट किया गया वह यह है कि पश्चिम की ओर से सूर्य का उदय होना यह अर्थ रखता है कि पश्चिमी देश जो हमेशा से कुफ़्र के अन्धकार और पथभ्रष्टता में हैं सत्य के सूर्य से प्रकाशित किए जाएंगे और उन्हें इस्लाम से भाग मिलेगा तथा मैंने देखा कि मैं लन्दन शहर में एक मंच पर खड़ा हूं और अंग्रेज़ी भाषा में एक नितान्त तर्कपूर्ण वर्णन द्वारा इस्लाम की सच्चाई व्यक्त कर रहा हूं तत्पश्चात् मैंने बहुत से पक्षी पकड़े जो छोटे-छोटे वृक्षों पर बैठे हुए थे और उनके रंग सफ़ेद थे और कदाचित् तीतर के शरीर के समान उनका शरीर होगा। अत: मैंने इसकी यह व्याख्या की कि यद्यपि मैं नहीं अपितु मेरे लेख इन लोगों में फैलेंगे और बहुत से सत्यनिष्ठ अंग्रेज़ सत्य के शिकार हो जाएंगे। वास्तव में आज तक पश्चिमी देशों का धार्मिक सच्चाइयों के साथ समन्वय बहुत कम रहा है। यद्यपि ख़ुदा तआला ने धर्म की बुद्धि समस्त एशिया को दे दी और संसार की बुद्धि समस्त यूरोप और अमरीका को। नबियों का सिलसिला भी आदि से अन्त तक एशिया के ही भाग में रहा और वली होने के सौभाग्य भी इन्हीं लोगों को प्राप्त हुए। अब ख़ुदा तआला इन लोगों पर दया-दृष्टि डालना चाहता है।

स्मरण रहे कि मुझे इस बात से इन्कार नहीं कि पश्चिम से सूर्योदय के कुछ और अर्थ भी हों। मैंने केवल उस कश्फ़ द्वारा जो ख़ुदा तआला ने मुझे प्रदान किया है उपरोक्त अर्थों का वर्णन किया है। यदि कोई मुल्ला-मौलवी इन ख़ुदाई कश्फ़ों को नास्तिकता की ओर सम्बद्ध करे तो वह जाने और उसका काम। मैंने अपनी ओर से

कुछ नहीं कहा अपितु मुझ पर जो प्रकट किया गया था मैंने उसी का अनुसरण किया है, अल्लाह मेरे हाल का देखने वाला और मेरे कथन का सुनने वाला है। हे धर्माचार्यो! ख़ुदा का संयम धारण करो।

परन्तु यहां यदि कोई यह प्रश्न करे कि जब पश्चिम की ओर से सूर्य उदय करेगा तो जैसा कि उल्लेख किया गया है तौबा (पश्चाताप) का द्वार बन्द हो जाएगा। यदि यही अर्थ सच हैं तो ऐसे इस्लाम से क्या लाभ जो मान्य ही नहीं।

इसका उत्तर यह है कि तौबा का द्वार बन्द होने से यह अभिप्राय तो नहीं कि तौबा स्वीकार ही नहीं होगी अपितु अभिप्राय यह है कि जब पश्चिमी देशों के लोग समूह के समूह इस्लाम-धर्म में प्रवेश करेंगे तब धर्मों में एक महान क्रान्ति जन्म लेगी और जब यह सूर्य पूर्ण रूपेण पाश्चात्य देशों में उदय होगा तो वही लोग इस्लाम से वंचित रह जाएंगे जिन पर तौबा का द्वार बन्द है अर्थात् जिनके स्वभाव इस्लाम के अनुकूल बिल्कुल नहीं। अत: तौबा का द्वार बन्द होने का यह अभिप्राय नहीं कि लोग तौबा करेंगे परन्तु स्वीकार न होगी तथा विनय और विनम्रतापूर्वक रोएंगे, परन्तु अस्वीकार किए जाएंगे, क्योंकि यह तो इस संसार में उस दयालु और कृपालु की शान से सर्वथा दूर है अपितु अभिप्राय यह है कि उनके हृदय कठोर हो जाएंगे और उन्हें तौबा की सामर्थ्य नहीं दी जाएगी और वे वही दुष्ट हैं जिन पर प्रलय आएगी। अत: सोच-विचार कर।

इसी प्रकार महदी के बारे में जो वर्णन किया जाता है कि अवश्य है कि प्रथम इमाम महदी आएं तत्पश्चात् मसीह इब्ने मरयम का प्रकटन हो। यह विचार चिन्तन की कमी के कारण पैदा हुआ है। यदि महदी का आगमन मसीह इब्ने मरयम के युग के लिए एक पृथक न हो सकने वाली अनिवार्यता होती और मसीह के प्रकटन के क्रम में सम्मिलित होता तो दो महानुभाव शैख और हदीस के इमाम अर्थात् मुहम्मद इस्माईल साहिब सही बुख़ारी और हज़रत इमाम मुस्लिम साहिब सही मुस्लिम अपनी सहीहों से उस घटना को बाहर न रखते, परन्तु जिस अवस्था में उन्होंने उस युग की पूर्ण रूप-रेखा खींच कर सामने रख दी और अवलंबन के तौर पर दावा करके बता

दिया कि उस समय अमुक-अमुक बात का प्रकटन होगा, परन्तु इमाम मुहम्मद महदी का नाम तक भी तो नहीं लिया। अत: इस से समझा जाता है कि उन्होंने अपनी सही और पूर्ण जांच-पड़ताल के अनुसार उन हदीसों को उचित नहीं समझा जो मसीह के आने के साथ नितान्त अनिवार्य ठहरा रही हैं। वास्तव में यह विचार बिल्कुल व्यर्थ और निरर्थक विदित होता है कि इसके बावजूद कि एक ऐसी प्रतिष्ठा रखने वाला व्यक्ति कि जिसे उसके आन्तरिक रूप और विशेषता के अनुसार मसीह इब्ने मरयम कहना चाहिए संसार में प्रकट हो और फिर उसके साथ किसी अन्य महदी का आना भी आवश्यक हो। क्या वह स्वयं महदी नहीं है? क्या वह ख़ुदा तआला की ओर से हिदायत पाकर नहीं आया !! क्या उसके पास इतने मूल्यवान रत्न, ख़ज़ाने, माल, आध्यात्म ज्ञान और सूक्ष्मताएं नहीं हैं कि लोग लेते-लेते थक जाएं तथा उनका दामन इतना भर जाए कि स्वीकार करने का स्थान न रहे। अत: यदि यह सत्य है तो उस समय दूसरे महदी की आवश्यकता ही क्या है। यह केवल दोनों इमामों का ही मत नहीं है अपितु इब्ने माजा और हाकिम ने भी अपनी सही में लिखा है कि لَا مَهْدِیْ اِلَّا عِیْسٰی अर्थात् ईसा के अतिरिक्त उस समय कोई महदी न होगा और यों तो हमें इस बात का इक़रार है कि पहले भी कई महदी आए हों और संभव है कि भविष्य में भी आएं और संभव है कि इमाम मुहम्मद के नाम पर भी कोई महदी प्रकट हो, परन्तु जिस प्रकार से लोगों के विचार में है उसका सबूत नहीं पाया जाता। अत: यह केवल हमारा ही मत नहीं अधिकांश अन्वेषक यही मत प्रकट करते आए हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि अच्छा महदी का क़िस्सा जाने दो, परन्तु यह जो बार-बार हदीसों में वर्णन किया गया है कि ईसा आएगा, मसीह इब्ने मरयम उतरेगा, इन स्पष्ट शब्दों की क्यों व्याख्या की जाए। यदि अल्लाह तआला के ज्ञान और इरादे में इब्ने मरयम से अभिप्राय इब्ने मरयम नहीं था तो उसने लोगों को जानबूझ कर इन कठिनाइयों में क्यों डाला तथा सीधे तौर पर यह क्यों न कह दिया कि कोई मसीह का मसील (समरूप) आएगा अपितु इस बात की ओर कौन सी आवश्यकता

बुलाती थी कि अवश्य मसीह का मसील आता कोई और न आता। अब खुले खुले शब्दों से क्योंकर इन्कार करें, यह इन्कार तो वास्तव में रसूलुल्लाह स.अ.व. को झूठा कहना है और परिदृश्य में इस इन्कार के अर्थ ये हैं कि आंहज़रत स.अ.व. की यह भविष्यवाणी ग़लत है।

परन्तु स्पष्ट हो कि ये समस्त भ्रम मिथ्या हैं। पवित्र क़ुर्आन और हदीसों में ख़ुदा की प्रजा की परीक्षा लेने के लिए इस प्रकार के रूपकों का प्रयोग कोई अनोखी और निर्मूल बात नहीं तथा पूर्वकालीन किताबों में ऐसे रूपकों का उदाहरण मौजूद है -

فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ (अन्नहल - 44)

एलिया के वृत्तान्त को देखो जिसे यूहन्ना कहा गया है जबकि पवित्र क़ुर्आन ने निश्चित और ठोस तौर पर प्रकट कर दिया कि हज़रत मसीह इब्ने मरयम मृत्यु पा चुके हैं तो अब व्याख्या के लिए इस से अधिक और क्या अनुकूलता होगी। उदाहरणतया कल्पना करते हुए वर्णन करता हूँ कि एक प्रमाणित पत्र द्वारा ज्ञात हुआ कि कलकत्ता में रहने वाला एक अब्दुर्रहमान नामक व्यक्ति जिसकी गवाही किसी मुक़द्दमे के लिए आवश्यक थी मृत्यु पा गया है, तत्पश्चात हमने एक एक ऐसा इक़रार नामा देखा जिस पर कलकत्ता निवासी अब्दुर्रहमान नामक व्यक्ति की गवाही मृत्यु की तिथि के पश्चात् में लिखी थी तो क्या हमें यह समझ लेना चाहिए कि वही अब्दुर्रहमान जो मृत्यु पा चुका था जीवित होकर अपनी गवाही लिख गया है। अत: चूंकि उस अब्दुर्रहमान के जीवित हो जाने का हमारे पास कोई भी सबूत नहीं तो क्या केवल ख़ुदा तआला की क़ुदरत के हवाले से हम किसी इस प्रकार के मुक़द्दमे में जो अदालत में प्रस्तुत है इस बात का सबूत दिए बिना कि वास्तव में वही अब्दुर्रहमान जीवित होकर अपनी साक्ष्य लिख गया है डिग्री पाने के पात्र हो सकते हैं, कदापि नहीं।

यह सन्देह कि मसीह इब्ने मरयम के शब्द का क्यों प्रयोग किया गया। इसका उत्तर यह है कि यह उसी प्रकार का मुहावरा है जिस प्रकार ज़करिया के पुत्र यह्या के लिए एलिया का शब्द प्रयोग किया गया है। ख़ुदा तआला चाहता था कि अन्तिम युग में कोई व्यक्ति मसीह की शक्ति और स्वभाव पर पैदा हो और वह उस झूठे

गिरोह का मुक़ाबला करे जिनका स्वभाव इस स्वभाव के विरुद्ध और विपरीत है। अत: झूठे गिरोह का नाम उसने मसीह दज्जाल रखा और सत्य के समर्थक का नाम मसीह इब्ने मरयम रख दिया और उसे भी एक गिरोह बनाया जो मसीह इब्ने मरयम के नाम से सत्य की विजय के लिए संसार के अन्त तक प्रयासरत रहेगा। अत: आवश्यक था कि यह आने वाला मसीह इब्ने मरयम के नाम से ही आता क्योंकि जिस मुर्दे को जीवित करने के प्रभाव को मसीह दज्जाल ने फैलाना चाहा है उस प्रभाव के विपरीत मसीह इब्ने मरयम को प्रभाव प्रदान किया गया है जो रूहुल क़ुद्दुस के माध्यम से उसे प्राप्त हुआ है। अत: जो व्यक्ति मसीह के पदचिन्हों पर वह प्रभाव लेकर आया और विषाक्त वायु के मुकाबले पर जो विनाशकारी है या विनाश तक पहुंचाती है उसे एक विषनाशक मनोवृत्ति प्राप्त हुई, इस कारण वह मसीह इब्ने मरयम कहलाया क्योंकि वह आध्यात्मिक तौर पर मसीह के रूप में होकर आया। मसीह क्योंकर आ सकता है वह रसूल था और ख़ातमुन्नबिय्यीन की धातु की दीवार उसे आने से रोकती है। अत: उसका समरूप आया, वह रसूल नहीं, परन्तु रसूलों के समरूप है और समतुल्य है। क्या सामान्य शब्दों में किसी हदीस में यह भी वर्णन किया गया है कि कुछ पहले रसूलों में से फिर इस उम्मत में आएंगे। जिस प्रकार कि यह वर्णन किया गया है कि उनके मसील (समरूप) आएंगे और समतुल्य होंगे जो स्वभाव में नबियों से अत्यधिक निकट हैं। अत: जिसके आने का बिना किसी बाधा के स्पष्ट तौर पर वादा दिया गया है उनसे मुख मत फेरो और उनके इल्हाम से भी साक्ष्य का लाभ उठाओ क्योंकि उनकी गवाही इस बात को स्पष्ट करती है जिसे तुम अपनी अक़्लों से स्पष्ट नहीं कर सकते। आकाशीय साक्ष्य को खण्डन करने का साहस न करो क्योंकि यह भी उसी पवित्र झरने से निकली है जिस से नुबुव्वत की वह्यी निकली है। अत: यह वह्यी के अर्थ की व्याख्या करने वाली और सद्मार्ग दिखाने वाली है।

वसीयतुल हक़ (सत्य की वसीयत)

हे दर्शको! अब ख़ाकसार इस लेख को समाप्त कर चुका और इस सम्पूर्ण जांच-पड़ताल से ज्ञात हुआ कि शरीअत से तथा किताबों के हवालों से हमारे इस इल्हाम का सत्यापन अथवा उसे झूठा कहने के लिए जो मसीह इब्ने मरयम मृत्यु पा चुका है तीन मार्ग हैं :-

(1) पवित्र क़ुर्आन (2) हदीसें (3) पूर्व कालीन और बाद में आने वाले बुज़ुर्गों के कथन।

इन तीनों मार्गों द्वारा हमारे इल्हाम का सत्यापन हो रहा है। सब से सीधा मार्ग और बड़ा साधन जो विश्वास के प्रकाशों और निरन्तरता से भरा हुआ तथा हमारी आध्यात्मिक भलाई और ज्ञान संबंधी उन्नति के लिए पूर्ण पथ-प्रदर्शक है। पवित्र क़ुर्आन है जो समस्त संसार के धार्मिक विवादों का निर्णय करने का अभिभावक होकर आया है जिसकी एक-एक आयत और एक-एक शब्द अपने साथ सहस्त्रों प्रकार की निरन्तरता रखता है तथा जिसमें हमारे जीवन के लिए बहुत सा अमृत भरा हुआ है और बहुत से बहुमूल्य और दुर्लभ रत्न अपने अन्दर गुप्त रखता है जो प्रतिदिन प्रकट होते जाते हैं। यही एक उत्तम मापदण्ड है जिसके द्वारा हम सत्य और असत्य में अन्तर कर सकते हैं। यही एक प्रकाशमान दीपक है जो सत्य मार्गों की ओर मार्ग दर्शन करता है। निस्सन्देह जिन लोगों की सद्मार्ग से अनुकूलता और एक प्रकार का संबंध है उनका हृदय पवित्र क़ुर्आन की ओर खिंचा चला आता है और दयालु ख़ुदा ने उनके हृदय ही इस प्रकार के बना रखे हैं कि वह प्रेमी की भांति अपने उस प्रियतम की ओर झुकते हैं और उसके बिना किसी स्थान पर चैन नहीं पाते तथा उससे एक साफ़ और स्पष्ट बात सुनकर फिर किसी दूसरे की नहीं सुनते। उसकी प्रत्येक सच्चाई को प्रसन्नतापूर्वक और शीघ्र स्वीकार कर लेते हैं और अन्ततः वही है जो चमकने और हृदय की बात जानने का कारण हो जाता है और अद्‌भुत से

अद्‌भुत प्रकटनों का माध्यम ठहरता है तथा प्रत्येक को उसकी योग्यतानुसार उन्नति पर पहुंचाता है। सदात्माओं को पवित्र क़ुर्आन के प्रकाशें के अधीन चलने की सदैव आवश्यकता रही है तथा जब कभी युग की किसी नवीन अवस्था ने इस्लाम को किसी अन्य धर्म के साथ टकरा दिया है तो वह तेज़ और काम आने वाला अस्त्र जो तुरन्त काम आया है पवित्र क़ुर्आन ही है। इसी प्रकार जब कहीं दार्शनिक विचार विरोधी रूप में प्रचारित होते रहे तो उस अपवित्र पौधे का समूल विनाश अन्ततः पवित्र क़ुर्आन ही ने किया और उसे ऐसा तिरस्कृत और अपमानित करके दिखाया कि दर्शकों के आगे दर्पण रख दिया कि **सच्चा दर्शन यह है न कि वह**। वर्तमान युग में भी जब पहले-पहले ईसाई धर्मोपदेशकों ने सर उठाया और निर्बुद्धि तथा मूर्ख लोगों को एकेश्वरवाद से हटाकर एक असहाय व्यक्ति का उपासक बनाना चाहा और अपनी अशुद्ध पद्धति को अपने वास्तविकता से दूर भाषणों से सुजज्जित करके उनके आगे रख दिया और हिन्दुस्तान में एक तूफ़ान मचा दिया। अन्ततः पवित्र क़ुर्आन ही था जिसने उन्हें ऐसा पराजित किया कि अब वे लोग किसी परिचित व्यक्ति को मुंह ही नहीं दिखा सकते और उनके लम्बे-चौड़े बहानों को यों पृथक करके रख दिया जिस प्रकार कोई काग़ज़ का तख़्ता लपेटे। पवित्र क़ुर्आन ने उनकी एक सबसे बड़ी आस्था को जो कफ़्फ़ारे की आस्था थी **मा क़तलूहो व मा सलबूहो** का सबूत देकर समाप्त कर दिया और मानव-मुक्ति के लिए वह स्वाभाविक और भौतिक ढंग बताया जो आदम के जन्म से प्रत्येक मनुष्य के स्वभाव को अनिवार्य है। अब वे लोग इस बात से तो रहे कि अपना अन्यायपूर्ण और निष्प्रभावी कफ़्फ़ारा बुद्धिमान लोगों के समक्ष प्रस्तुत कर सकें। हां यह संभव है कि अब जिन्नों की ओर जिनका अस्तित्व इन्जील की दृष्टि से सिद्ध है इस कफ़्फ़ारा के लिए कोई मिशन भेजें क्योंकि उनको भी तो ख़ुदा तआला ने विनाश के लिए पैदा नहीं किया, परन्तु कठिनाई तो यह है कि यह अलाभकारी झूठ उसी सीमा तक बुना गया था कि मसीह इब्ने मरयम मानव जाति के कफ़्फ़ारा के लिए आया है और इब्ने आदम (आदम का पुत्र) कहला कर और मनुष्य का सजातीय होकर उसे प्रजा की हमदर्दी

का यह अधिकार प्राप्त हो गया है। हां यह संभव है कि यह तर्क प्रस्तुत किया जाए कि मसीह का एक और भाई था कि जो मनुष्य नहीं अपितु इब्ने जिन्न (जिन्न का पुत्र) कहलाता था वह जिन्नों के कफ़्फ़ारा के लिए सलीब पर मरा था, परन्तु फिर भी इंजील के अनुसार कोई सबूत प्रस्तुत करना पड़ेगा।

इसी प्रकार पवित्र क़ुर्आन ने हिन्दुओं पर भी बहुत सी सच्चाइयां प्रकट की हैं और वह समस्त लोकों को स्थापित रखने वाला जिस से वे अनभिज्ञ थे उनका उन्हें पता दिया है। यदि वे लोग इस सच्चाई को स्वीकार करते तो उस ख़ुदा को देख लेते जिसकी श्रेष्ठता और क़ुदरत से वे लापरवाह हैं, परन्तु उन्होंने अंग्रेज़ों के नवीन दर्शनशास्त्र को देखकर दार्शनिक बनना चाहा और प्रत्येक वस्तु के कारणों की खोज आरंभ की ताकि पवित्र क़ुर्आन की सच्ची दार्शनिकता के साथ मुक़ाबला करें, परन्तु उनका यह कृत्य उनके लिए पथभ्रष्टता का बहुत बड़ा कारण हुआ और यहां तक नौबत पहुंची कि उन्होंने अपनी आस्थाओं और कर्मों के सन्दर्भ में जो वेद की शिक्षा की दृष्टि से उनके ईमान में सम्मिलित हैं दो बुरे नमूने प्रकट कर दिए। आस्था के संबंध में यह नमूना कि ख़ुदा तआला के स्रष्टा होने के संबंध में इन्कार करके उसके अस्तित्व का पता लगने के मार्ग स्वयं पर बन्द कर दें और संसार का कण-कण और समस्त आत्माओं को स्वयंभू और अनादि और अनिवार्य अस्तित्व समझ कर एकेश्वरवाद के उस सूक्ष्म रहस्य को त्याग दिया जिस पर ख़ुदा को पहचानने का ज्ञान और वास्तविक मुक्ति निर्भर है। कर्मों के संबंध में यह नमूना जो नियोग की एक लज्जाजनक समस्या जो वेदों में गुप्त चली आती थी जिसके अनुसार एक पति वाली स्त्री किसी आर्य की सन्तान प्राप्त करने के लिए किसी अन्य पुरुष से सहवास कर सकती है अपनी पुस्तकों में प्रकाशित किया यदि ऐसी आस्था को एक सामयिक कानून की भांति समझते तो शायद उसकी खराबी कुछ कम हो जाती, परन्तु अब तो यह समस्या सदा के लिए और हर युग के लिए एक अपरिवर्तनीय कानून की भांति समझी गयी है जो वेदों की तरह अनादि चली आयी और अनादि ही रहेगी। अत: यह पवित्र क़ुर्आन के विरोधी का दण्ड है जिसे हम यदि ख़ुदा ने चाहा तो बराहीन

अहमदिया के शेष भागों में स्पष्टतापूर्वक और विस्तार से वर्णन करेंगे। अत: इसी पवित्र क़ुर्आन ने हज़रत मसीह की मृत्यु के इन्कार करने वालों को ऐसी पराजय दी है कि वे बिल्कुल ठहर नहीं सकते और इस युद्ध में अज्ञानी लोगों को ऐसी पराजय मिली है कि उस पराजय का आघात उन्हें जीवन-पर्यन्त नहीं भूलेगा। अत: पवित्र क़ुर्आन धक्के देकर उन्हें अपने दरबार से बहिष्कृत कर रहा है।

अब रही हदीसें तो सर्वप्रथम यह बात विचारणीय है कि पवित्र क़ुर्आन के मुक़ाबले पर हदीसों का क्या महत्व और स्थान है और जब पवित्र क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशों से कोई हदीस विपरीत हो तो उस पर कहां तक विश्वास कर सकते हैं।

अत: ज्ञात होना चाहिए कि पवित्र क़ुर्आन वह निश्चित और अन्तिम ख़ुदाई कलाम है जिसमें मनुष्य का लेशमात्र भी हस्तक्षेप नहीं और वह अपने शब्दों और अर्थों के साथ ख़ुदा तआला का ही कलाम है और इस्लाम के किसी सम्प्रदाय को स्वीकार करने से चारा नहीं। इसकी एक-एक आयत अपने साथ उच्च स्तर की निरन्तरता रखती है, वह तिलावत की जाने वाली वह्यी है जिसका एक-एक अक्षर गिना हुआ है, वह अपने चमत्कार के कारण भी परिवर्तन और अक्षरांतरण से सुरक्षित है परन्तु हदीसें तो मनुष्यों के हस्तक्षेप से भरी हुई हैं जो उनमें से सही कहलाती हैं उनका इतना भी महत्व नहीं कि एक आयत की तुलना में उनमें से एक करोड़ भी वह रंग और शान पैदा कर सके जो अल्लाह तआला के अद्वितीय कलाम को प्राप्त है। यद्यपि सही हदीस भी जो आँहज़रत स.अ.व. से मुत्तसिल के प्रमाण के साथ सिद्ध हो, एक प्रकार की वह्यी है परन्तु वह ऐसी तो नहीं जो पवित्र क़ुर्आन का स्थान ले सके इसी कारण पवित्र क़ुर्आन के स्थान पर केवल हदीस पढ़कर नमाज़ नहीं हो सकती। हदीसों में कमज़ोरी के इतने कारण हैं कि एक बुद्धिमान व्यक्ति उन पर दृष्टि डाल कर हमेशा इस बात का मुहताज होता है कि इन्हें दृढ़ता देने के लिए कम से कम क़ुर्आनी स्पष्ट आदेश का कोई संकेत ही हो। यह सत्य है कि हदीसें सहाबा के मुख से कई रावियों (वर्णन कर्ताओं) के माध्यम से सिहाह (हदीस की प्रसिद्ध छ: पुस्तकें) के लेखकों तक पहुंची हैं और यह भी सत्य है कि जहां तक

संभव है सिहाह के लेखकों ने हदीसों की समालोचना और जांच-पड़ताल में बड़े-बड़े प्रयास किए हैं परन्तु हमें फिर भी उन पर वह विश्वास नहीं करना चाहिए जो अल्लाह तआला के कलाम पर किया जाता है क्योंकि वे कई माध्यमों से और साधारण मनुष्यों के हाथों से हाथ पोंछने का रुमाल होकर हदीस के इमामों को मिली हैं। उदाहरणतया एक हदीस का रावी उमर रज़ि. है जो रसूलुल्लाह का ख़लीफ़ा और विश्वस्त लोगों का सरदार है। चूंकि मध्य में छ: सात रावी ऐसे हैं जिनकी आत्मशुद्धि और पूर्ण पवित्रता सिद्ध नहीं तथा उनकी सत्यनिष्ठा और ख़ुदा का भय तथा ईमानदारी यद्यपि सरसरी दृष्टि से सुधारणा के तौर स्वीकार की गई हो परन्तु पूर्ण तौर पर कुछ सिद्ध नहीं। अत: वे सत्यनिष्ठा में क्योंकर हज़रत उमर के प्रतिनिधि समझे जाएंगे, क्यों वैध नहीं कि उन्होंने जान-बूझ कर या भूल से कुछ हदीसों के पहुंचाने में ग़लती की हो। इसी दृष्टि से कुछ इमामों ने हदीसों की ओर कम ध्यान दिया है कि इमाम **आज़म** कूफ़ी रज़ि. जिन्हें उन दार्शनिकों में गिना जाता है जो समस्याओं को निकालने में अनुमान और राय से काम लेते हैं और उनके परिश्रमों को समय के माध्यम से सही हदीसों के अर्थों के विपरीत समझा गया है, परन्तु मूल वास्तविकता यह है कि कथित इमाम साहिब अपने कठिन परिश्रम द्वारा शरीअत की समस्याओं का समाधान निकालने की प्रयास-शक्ति, अपने ज्ञान, बुद्धि, बोध और विवेक में शेष तीनों इमामों में से श्रेष्ठ और उच्च थे तथा उन की ख़ुदा की प्रदान की हुई निर्णय-शक्ति इतनी बढ़ी हुई थी कि वे प्रमाण और प्रमाणरहित में भली भांति अन्तर करना जानते थे और उनकी वस्तुओं के मर्म को मालूम करने की शक्ति को पवित्र क़ुर्आन को समझने में एक विशेष योग्यता थी और उनके स्वभाव को ख़ुदा के कलाम से एक विशेष अनुकूलता थी और ख़ुदा को पहचानने के ज्ञान में उच्च स्तर तक पहुंच चुके थे। इसी कारण उनके लिए सोच-विचार करके किसी बात का परिणाम निकालने में वह उच्च श्रेणी मान्य थी जिस तक पहुंचने से दूसरे सब लोग असमर्थ थे। सुब्हान अल्लाह इस निपुण और ख़ुदाई इमाम ने एक आयत के एक संकेत का उच्च और श्रेष्ठ सम्मान करते हुए बहुत सी हदीसों को जो उसके विपरीत थीं रद्दी

की तरह समझ कर छोड़ दिया और अज्ञानियों की भर्त्सना का कुछ भय न किया, परन्तु खेद कि आज वह युग है कि व्यर्थ कथनों को पवित्र क़ुर्आन पर प्रमुखता देते हैं और एक निर्मूल रेखा को सर्व सम्मत्ति का रूप दिया जाता है और यद्यपि पवित्र क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशों के सामने हदीसों की चर्चा करना ऐसा ही है जैसे सूर्य के सामने जुगनू को प्रस्तुत किया जाए; परन्तु फिर भी हमारे विरोधियों का दुर्भाग्य है कि इस प्रकार की हदीसें भी तो नहीं मिलतीं जिन से यह सिद्ध हो कि मसीह इब्ने मरयम वास्तव में इसी पार्थिव शरीर के साथ आकाश की ओर जीवित उठाया गया। हां इस प्रकार की हदीसें बहुत हैं कि इब्ने मरयम आएगा परन्तु यह तो कहीं नहीं लिखा कि वही इस्राईली इब्ने मरयम जिस पर इंजील उतरी थी, जिसे पवित्र क़ुर्आन मार चुका है वही जीवित होकर पुन: आ जाएगा। हां यह भी सत्य है कि आने वाले मसीह को नबी करके भी वर्णन किया गया है, परन्तु उसे उम्मती करके भी तो वर्णन किया गया है अपितु ख़बर दी गई कि हे उम्मती लोगो! वह तुम में से ही होगा और तुम्हारा इमाम होगा न केवल कथन के तौर पर उसका उम्मती होना प्रकट किया अपितु क्रियात्मक तौर पर भी दिखा दिया कि वह उम्मती लोगों की भांति केवल अल्लाह और रसूल (स.अ.व.) के कथनों का अनुयायी होगा और धर्म की सूक्ष्म और रहस्यात्मक बातों का समाधान नुबुव्वत से नहीं अपितु अपने सोच-विचार द्वारा करेगा और नमाज़ दूसरों के पीछे पढ़ेगा। अब इन समस्त संकेतों से स्पष्ट है कि वह निश्चित और वास्तविक तौर पर पूर्ण नुबुव्वत की विशेषता से विशेष्य नहीं होगा हां उसमें अपूर्ण नुबुव्वत पाई जाएगी जो दूसरे शब्दों में मुहद्दिसियत कहलाती है और पूर्ण नुबुव्वत की शानों (वैभवों) में से एक शान अपने अन्दर रखती है। अत: यह बात कि उसे उम्मती भी कहा और नबी भी। इस बात की ओर संकेत है कि उसमें उम्मती होने और नबी होने के दोनों वैभव पाए जाएंगे जैसा कि मुहद्दिस में इन दोनों वैभवों का पाया जाना आवश्यक है, परन्तु पूर्ण नुबुव्वत वाला तो केवल एक नुबुव्वत का वैभव ही रखता है जबकि मुहद्दिसियत दोनों रंगों से रंगीन होती है। इसीलिए ख़ुदा तआला ने बराहीन अहमदिया में भी इस ख़ाकसार का नाम उम्मती

भी रखा और नबी भी। यह भी विचार करना चाहिए कि जब इस्राईली नबी मसीह इब्ने मरयम मृत्यु पा चुका और फिर उसके जीवित होने का पवित्र क़ुर्आन में कहीं वर्णन नहीं तो इसके अतिरिक्त और क्या समझ में आ सकता है कि यह आने वाला इब्ने मरयम और ही है। कुछ कहते हैं कि क्या ख़ुदा तआला समर्थ नहीं कि मसीह इब्ने मरयम को जीवित करके भेज दे। मैं कहता हूँ कि यदि केवल सामर्थ्य को देखना है तथा क़ुर्आन के नितान्त स्पष्ट आदेशों से कोई मतलब नहीं कि स्पष्ट है तो ख़ुदा तआला की क़ुदरत (शक्ति) दोनों प्रकार से संबंधित है चाहे तो जीवित करके भेज दे और चाहे तो कदापि जीवित न करे और न संसार में भेजे तथा देखना तो यह चाहिए कि इन दोनों प्रकार की क़ुदरतों में से उसके मनोरथ के अनुसार कौन सी क़ुदरत है। अत: थोड़े से विचार से प्रकट होगा कि यह क़ुदरत कि जिसे एक बार मार दिया फिर अकारण उस पर दो मौतों का अज़ाब उतारे उसके मनोरथ के अनुसार कदापि नहीं जैसा कि वह स्वयं इस संबंध में फ़रमाता है -

فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ*

अर्थात् जिसे एक बार मार दिया फिर उसे संसार में भेजेगा और जैसा कि केवल एक मृत्यु की ओर संकेत करके फ़रमाता है -

لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى**

अत: यह बात उसके सच्चे वादे के विपरीत है कि मुर्दों को पुन: संसार में भेजना आरंभ कर दे तथा क्योंकर संभव था कि ख़ातमुन्नबिय्यीन के बाद कोई अन्य नबी उसी पूर्ण अर्थ के साथ जो पूर्ण नुबुव्वत की शर्तों में से है क्योंकर आ सकता। क्या यह आवश्यक नहीं कि ऐसे नबी की पूर्ण नुबुव्वत के साधन जो वह्यी और जिब्राईल का उतरना है उसके अस्तित्व के साथ अनिवार्य होना चाहिए क्योंकि जब पवित्र क़ुर्आन की व्याख्या में रसूल उसी को कहते हैं जिसने धार्मिक आदेश और आस्थाएं

---

* अज़्ज़ुमर-43

** अद्दुख़ान-57

जिब्राईल के माध्यम से प्राप्त की हों, परन्तु नुबुव्वत की वह्यी पर तो तेरह सौ वर्ष से मुहर लग गई है। क्या यह मुहर उस समय टूट जाएगी और यदि कहो कि मसीह इब्ने मरयम पूर्ण नुबुव्वत से निलंबित करके भेजा जाएगा तो इस दण्ड का कोई कारण भी तो होना चाहिए। कुछ लोग कहते हैं कि इसका कारण यह है कि वह बिना पात्रता के उपास्य बना दिया गया था अत: ख़ुदा तआला ने चाहा कि उसके दण्डस्वरूप उसे नुबुव्वत से पृथक कर दिया जाए और वह पृथ्वी पर आकर दूसरों के अनुयायियों में दूसरों के पीछे नमाज़ पढ़ें और इमाम आज़म की तरह केवल अपने सोच-विचार से काम लें और हनफ़ियों के सहपंथी होकर हनफ़ी मत का समर्थन करें, परन्तु यह उत्तर उचित नहीं है। ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में उन्हें इस आरोप से मुक्त कर दिया है और उनकी नुबुव्वत को एक शाश्वत नुबुव्वत ठहरा दिया है।

भ्राताओ ! क्यों खिसियाकर व्यर्थ बातें करते हो और अकारण पापी बनते हो। ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में उस मसीह इब्ने मरयम को मार चुका जो इस्राईली नबी था जिस पर इन्जील उतरी थी। अब यह शब्द अपनी ओर से हदीसों में न बढ़ाओ कि वही मृत्यु प्राप्त मसीह पुन: आएगा। हे ख़ुदा के बन्दो कुछ तो ख़ुदा से भय करो, क्या ख़ुदा तआला आप के विचार में समर्थ नहीं कि वह अपने एक बन्दे में ऐसी रूह (आत्मा) डाल दे जिस से वह इब्ने मरयम के रूप में ही जाए, क्या इसके उदाहरण ख़ुदा तआला की किताबों में नहीं कि उसने एक नबी का नाम दूसरे पर रख दिया, क्या हदीसों में यह चर्चा नहीं कि मसील (समरूप) इब्ने मरयम इत्यादि इस उम्मत में पैदा होंगे। अत: जब पवित्र क़ुर्आन मसीह इब्ने मरयम को मारता है और हदीसें मसील इब्ने मरयम के आने का वादा देती हैं तो इस अवस्था में क्या कठिनाई शेष रही, क्या इसमें कुछ झूठ है कि जो इब्ने मरयम का चरित्र रखता है वह इब्ने मरयम ही है

درآں ابن مریم خدائی نبود زموت وزفوتش رہائی نبود
رہا کرد خود راز شرک و دوئی تو ہم کن چنیں ابن مریم توئی

हे मौलवी साहिबान ! व्यर्थ बातों को छोड़ो और मुझे कोई एक ही हदीस ऐसी दिखाओ जो सही हो और जो मसीह का पार्थिव शरीर के साथ जीवित उठाया जाना और अब तक आकाश पर जीवित होना सिद्ध करती हो और निरन्तरता की सीमा तक पहुंची हो और सबूत की उस मात्रा तक पहुंच गई हो जो बुद्धि के अनुसार निश्चित विश्वास का लाभ पहुंचाए और केवल सन्देह की सीमा तक सीमित न रहे। आप जानते हैं कि पवित्र क़ुर्आन की समस्त स्पष्ट आयतें कैसा विश्वास का लाभ देती हैं। अत: जबकि क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशों पर आधारित हमारा दावा है और उसके समर्थन में हमारे पास सही हदीसें भी हैं, इसी प्रकार पूर्वकालीन और बाद में आने वाले बुज़ुर्गों के कथन भी हमारे समर्थन में कुछ कम नहीं और इल्हामी साक्ष्य इन सब के अतिरिक्त है। अत: अब तुम न्याय के तराज़ू लेकर बैठ जाओ और एक पलड़े में अपने विचार रखो और दूसरे पलड़े में हमारे ये सब कारण, फिर स्वयं ही न्याय कर लो, भली भांति विचार कर लो कि यदि हमारे पास केवल पवित्र क़ुर्आन के स्पष्ट आदेश ही होते तो केवल वही पर्याप्त थे। अत: जिस स्थिति में कुछ हदीसें भी इन स्पष्ट क़ुर्आनी आदेशों के अनुकूल हों तो फिर वह विश्वास सोने पर सुहागा है जिन से जान-बूझ कर विमुखता एक प्रकार की बेईमानी है और निस्सन्देह जो हदीसें इस उच्च स्तरीय सबूत के विपरीत होंगी तो यदि हम उन्हें ग़लत न कहें और न उन का नाम गढ़ी हुई (लोगों की स्वयं निर्मित) (मौज़ू) नाम न रखें तो उन हदीसों के संबंध में हमारी अधिकाधिक नर्मी यह होगी कि हम उनकी व्याख्या करें अन्यथा हमारा अधिकार तो यही है कि उन्हें निश्चय ही अविश्वसनीय समझें। कुछ लोग यह भ्रम प्रस्तुत करते हैं कि पवित्र क़ुर्आन में मसीह की मृत्यु के बारे में केवल तवफ़्फ़ा का शब्द मौजूद है परन्तु शब्दकोश में यह शब्द अनेक अर्थों में आया है। अत: इस भ्रम का उत्तर यह है कि आपत्ति तो इस बात में है कि यह शब्द पवित्र क़ुर्आन में कई अर्थों में आया है या एक अर्थ पर। वास्तव में बात यह है कि पवित्र क़ुर्आन ने कुछ शब्द शब्दकोश से लेकर पारिभाषिक तौर पर एक अर्थ के लिए विशेष कर दिए हैं जैसे - सौम (रोज़ा), सलात (नमाज़), रहमानियत (कृपालुता), रहीमियत

(दयालुता), तवफ़्फ़ा (मृत्यु देना) और इसी प्रकार अल्लाह का शब्द तथा कई अन्य शब्द। अत: पारिभाषिक बात में शब्दकोश की ओर लौटना मूर्खता है। पवित्र क़ुर्आन की व्याख्या पवित्र क़ुर्आन से ही करो और देखो कि वह एक ही अर्थ को अनिवार्य करता है या भिन्न-भिन्न अर्थ लेता है तथा पूवर्कालीन और बाद में आने वाले बुज़ुर्गों के कथन वास्तव में कोई स्थायी सबूत नहीं तथा उन के मतभेद की अवस्था में वह वर्ग सत्य पर होगा जिनकी राय पवित्र क़ुर्आन के अनुकूल है। यदि ये समस्त कथन जो तफ़्सीरों में लिखे हुए हैं कुछ दृढ़ता रखते तो इन तफ़्सीरों में एक-दूसरे के विपरीत कथनों का क्यों उल्लेख होता। यदि सर्वसम्मत्ति का स्रोत यही मत-भेदीय कथन हैं तो सर्वसम्मत्ति की वास्तविकता ज्ञात हो चुकी।

अब हम इस वसीयत में यह दिखाना चाहते हैं कि पवित्र क़ुर्आन अपने ठोस सबूतों के साथ हमारे दावे का सत्यापनकर्ता और हमारे विरोधियों के मिथ्या भ्रमों का समूल विनाश कर रहा है तथा पूर्वकालीन नबियों के पुनरागमन का द्वार बन्द करता है तथा बनी इस्राईल के मसीलों (समरूपों) के आगमन का द्वार खोलता है। उसी ने इस दुआ की शिक्षा दी है :-

اِهۡدِ نَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۙ﴿۶﴾ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ

(अल फ़ातिहा- 6,7) इस दुआ का निष्कर्ष क्या है यही तो है कि हे हमारे ख़ुदा हमें नबियों और रसूलों का मसील बना। फिर हज़रत यह्या के पक्ष में फ़रमाता है :-

لَمۡ نَجۡعَلۡ لَّهٗ مِنۡ قَبۡلُ سَمِيًّا*

अर्थात् यह्या से पूर्व हमने उसका कोई मसील संसार में नहीं भेजा जिसे उन विशेषताओं के अनुसार यह्या कहा जाए। यह आयत हमारे बयान के सत्यापन के लिए क़ुर्आनी संकेत है क्योंकि ख़ुदा तआला ने यहां कथित आयत में 'क़ब्ल' (पूर्व) की शर्त लगाई 'बाद' की नहीं लगाई ताकि विदित हो कि बाद में इस्राईली नबियों के समनामों के आगमन का द्वार खुला है जिनका नाम ख़ुदा तआला के निकट वही

* मरयम-8

होगा जो उन नबियों का नाम होगा जिनके वे मसील हैं अर्थात् जो मूसा का मसील है उस का नाम मूसा होगा और जो ईसा का मसील है उसका नाम ईसा या इब्ने मरयम होगा तथा ख़ुदा तआला ने इस आयत में 'समी' कहा मसील नहीं कहा ताकि मालूम हो कि अल्लाह तआला का आशय यह है कि जो व्यक्ति किसी इस्राईली नबी का मसील (समरूप) बन कर आएगा वह मसील के नाम से नहीं पुकारा जाएगा अपितु पूर्ण अनुकूलता के कारण उसी नाम से पुकारा जाएगा जिस नबी का मसील बन कर आएगा।

और मसीह इब्ने मरयम की मृत्यु के संबंध में यदि ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में किसी ऐसे शब्द का प्रयोग करता जिसे उसने भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयोग किया होता तो किसी बेईमान को बेईमानी करने की गुंजायश होती। अत: बेईमानी करने वाले लोगों का ख़ुदा तआला ने ऐसा प्रबंध किया कि **तवफ़्फ़ा** के शब्द को जो हज़रत ईसा की मृत्यु के लिए प्रयोग किया गया था पच्चीस स्थानों पर एक ही अर्थ में प्रयोग किया और उसे एक पारिभाषिक शब्द बना कर प्रत्येक स्थान में उसके ये अर्थ लिए हैं कि रूह को निकाल लेना और शरीर को बेकार छोड़ देना ताकि यह शब्द इस बात को सिद्ध करे कि रूह एक शेष रहने वाली चीज़ है जो मृत्योपरान्त और इसी प्रकार स्वप्नावस्था में भी ख़ुदा तआला के क़ब्ज़े में आ जाती है और शरीर पर नश्वरता व्याप्त हो जाती है परन्तु रूह पर नहीं और चूंकि यही अर्थ अनिवार्य तौर पर प्रत्येक स्थान में जहां **तवफ़्फ़ा** का शब्द आया है, लिए गए और इन से बाहर नहीं निकला गया। इसलिए ये अर्थ पवित्र क़ुर्आन के स्पष्ट प्रत्यक्ष और व्यापक आदेशों में निश्चित हो गए जिनसे विमुख होना नास्तिकता होगी क्योंकि यह मान्य है कि क़ुर्आन के स्पष्ट आदेश प्रत्यक्षपर चरितार्थ होते हैं। अत: पवित्र क़ुर्आन ने तवफ़्फ़ा के शब्द को विवादित स्थान में अर्थात् मसीह की मृत्यु के संबंध में है, तेईस स्थानों पर एक ही अर्थ पर चरितार्थ करके ऐसा स्पष्ट कर दिया है कि अब इसके इन अर्थों में कि रूह क़ब्ज़ करना (अधिकार में लेना) और शरीर को छोड़ देना है, थोड़ा सा भी सन्देह और संशय का स्थान नहीं अपितु यह प्रथम श्रेणी के

स्पष्ट आदेशों और व्यापक एवं, प्रत्यक्ष निर्विवाद अर्थों में से हो गया जिसे निश्चित और ठोस अर्थों की उच्च श्रेणी प्राप्त है और जिस से इन्कार करना भी प्रथम श्रेणी की मूर्खता है।

अब पवित्र क़ुर्आन में इस शब्द की व्याख्या करने में केवल दो मार्ग हैं तीसरा कोई मार्ग नहीं।

(1) रूह को स्थायी तौर पर क़ब्ज़ करके शरीर को बेकार छोड़ देना जिसका दूसरे शब्दों में इमातत नाम है अर्थात मार देना।

(2) दूसरे कुछ थोड़े समय के लिए रूह का क़ब्ज़ करना और शरीर को बेकार छोड़ देना जिसका दूसरे शब्दों में इनामत नाम है अर्थात सुला देना। परन्तु स्पष्ट है कि विवादित स्थान से दूसरे प्रकार के अर्थ का कुछ संबंध नहीं क्योंकि सोना और फिर जाग उठना एक साधारण बात है जब तक मनुष्य सोया रहा उसकी रूह (आत्मा) ख़ुदा तआला के अधिकार में रही और जब जाग उठा तो फिर रूह उस शरीर में आ गई जिसे बतौर बेकार छोड़ा गया था। यह बात स्पष्ट तौर पर समझ में आ सकती है कि जब तवफ़्फ़ा के शब्द से केवल रूह का अधिकार में ले लेना अभिप्राय है इसके बिना कि शरीर से कोई संबंध हो अपितु शरीर का बेकार छोड़ देना तवफ़्फ़ा के अर्थ में सम्मिलित है। अत: इस अवस्था में इस से बड़ी और कोई मूर्खता नहीं कि तवफ़्फ़ा के ये अर्थ किए जाएं कि ख़ुदा तआला शरीर को अपने अधिकार में ले ले, क्योंकि यदि ये अर्थ सही हैं तो नमूने के तौर पर पवित्र क़ुर्आन के किसी अन्य स्थान में भी ऐसे ही अर्थ होने चाहिए। परन्तु अभी हम स्पष्ट कर चुके हैं कि पवित्र क़ुर्आन के प्रारंभ से अन्त तक प्रत्येक स्थान पर केवल यही अर्थ अभिप्राय लेना है कि रूह को अधिकार में ले लेना और शरीर से कुछ संबंध न रखना अपितु उसे बेकार छोड़ देना, परन्तु कल्पना के तौर पर यदि मसीह इब्ने मरयम की मृत्यु के स्थान में दूसरे अर्थ अभिप्राय लें तो इस का सारांश यह होगा कि मसीह कुछ समय तक सोया रहा और फिर जाग उठा। अत: इससे तो सिद्ध न हो सका कि शरीर आकाश पर चला गया। क्या जो लोग रात को या दिन को सोते हैं तो उनका

शरीर आकाश पर चला जाया करता है। सोने की अवस्था में जैसा कि अभी मैं वर्णन कर चुका हूँ केवल थोड़े समय तक रूह क़ब्ज़ कर ली जाती है शरीर के उठाए जाने से उसका संबंध ही क्या है। अभी मैं वर्णन कर चुका हूँ कि पवित्र क़ुर्आन के प्रत्यक्ष स्पष्ट और प्रचलित आदेशों ने तवफ़्फ़ा के शब्द को केवल रूह तक सीमित रखा है अर्थात् रूह को अपने अधिकार में कर लेना और शरीर को बेकार छोड़ देना और जब कि स्थिति यह है तो फिर तवफ़्फ़ा के शब्द से यह निकालना कि जैसे ख़ुदा तआला ने न केवल मसीह इब्ने मरयम की रूह को अपनी ओर उठाया अपितु उसके पार्थिव शरीर को भी साथ ही उठा लिया। यह कैसा मूर्खतापूर्ण विचार है जो स्पष्ट और निर्विवाद तौर पर क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशों के विपरीत है। पवित्र क़ुर्आन ने न एक बार, न दो बार अपितु पच्चीस बार फ़रमा दिया कि तवफ़्फ़ा के शब्द से केवल रूह का क़ब्ज़ करना अभिप्राय है शरीर से कुछ मतलब नहीं। अत: यदि अब भी कोई न माने जो उसे पवित्र क़ुर्आन से क्या मतलब उसे तो स्पष्ट यह कहना चाहिए कि मैं अपने कुछ काल्पनिक बुज़ुर्गों की लकीर को किसी भी अवस्था में छोड़ना नहीं चाहता।

अत: पवित्र क़ुर्आन के पश्चात् हदीसों का स्थान है और लगभग समस्त हदीसें जो स्पष्ट तौर पर पवित्र क़ुर्आन के वर्णन के अनुकूल हैं तथा एक भी ऐसी हदीस नहीं जिसमें यह लिखा हो कि वही मसीह इब्ने मरयम इस्राईली नबी जिसे पवित्र क़ुर्आन मार चुका है, जिस पर इंजील उतरी थी पुन: संसार में आएगा। हां बार-बार लिखा है कि इन इस्राईली नबियों के समनाम आएंगे, सत्य है कि हदीसों में उल्लेख है कि इब्ने मरयम आएगा, परन्तु उन्हीं हदीसों ने हुलिया (आकृति) में मत-भेद डाल कर तथा आने वाले इब्ने मरयम को उम्मती ठहरा कर स्पष्ट बता दिया है कि यह इब्ने मरयम और है और फिर यदि इस प्रकार की विवादित हदीसों की व्याख्या के लिए दूसरी हदीसों से सहायता लेना चाहें तो फिर कोई ऐसी हदीस नहीं मिलती जिस से यह सिद्ध हो कि पूर्वकालीन नबियों में से कभी कोई नबी भी संसार में आएगा। हां यह सिद्ध होता है कि उनके मसील (समरूप) आएंगे और उन्हीं के नाम से पुकारे

जाएंगे।

और यह बात हम कई बार लिख चुके हैं कि ख़ातमुन्नबिय्यीन के बाद मसीह इब्ने मरयम रसूल का आना बहुत बड़े उपद्रव का कारण है। इस से या तो यह स्वीकार करना पड़ेगा कि नुबुव्वत की वह्यी का सिलसिला फिर जारी हो जाएगा और या यह स्वीकार करना पड़ेगा कि ख़ुदा तआला मसीह इब्ने मरयम को नुबुव्वत की अनिवार्यताओं से पृथक करके मात्र एक उम्मती बना कर भेजेगा और ये दोनों ही रूप निषेधक हैं।

यहां यह वर्णन करना भी अनुचित न होगा कि जिस अवस्था में लगभग समस्त हदीसें पवित्र क़ुर्आन के अनुसार तथा हमारे वर्णन की समर्थक हैं। फिर यदि दुर्लभ के तौर पर कोई ऐसी हदीस भी हो जो इस विश्वसनीय संग्रह के विपरीत हो तो हम ऐसी हदीस को या तो स्पष्ट आदेशों में से बाहर कर देंगे और या उसकी व्याख्या करना होगी, क्यों कि यह तो संभव नहीं कि एक कमज़ोर और एक आधी हदीस से वह दृढ़ इमारत गिरा दी जाए जिसे क़ुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेशों ने तैयार किया है अपितु ऐसी हदीस उन की विरोधी हो कर स्वयं ही मिटेगी अथवा व्याख्या-योग्य ठहरेगी। प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि अकेली एक ख़बर अन्ततः कल्पना का लाभ दे सकती है। अतः वह निश्चित और ठोस सबूत को कुछ भी क्षति नहीं पहुँचा सकती। बहुत सी हदीसें मुस्लिम और बुख़ारी की हैं जिन्हें इमाम आज़म साहिब जो इमामों के सरदार हैं ने स्वीकार नहीं किया, कुछ हदीसों को शाफ़ई ने नहीं लिया, कुछ हदीसों को जो बहुत सही समझी जाती हैं इमाम मालिक ने छोड़ दिया। कुछ मुहद्दिसीन ने लिखा है कि जब संसार में मसीह मौऊद आएगा तो वह अधिकांश सबूत पवित्र क़ुर्आन से देगा तथा कुछ ऐसी हदीसों को छोड़ देगा जिन पर समय के विद्वानों का दृढ़ विश्वास होगा तथा **मुजद्दिद अलिफ़ सानी** (बारहवीं सदी के मुजद्दिद) साहिब अपने मकतूबात (पत्रों) की जिल्द द्वितीय, पत्र संख्या 55 में लिखते हैं कि जब मसीह मौऊद संसार में आएगा तो उस समय के विद्वान (उलेमा) उसके सामने विरोध पर तत्पर हो जाएंगे, क्योंकि वह जो बातें अपनी जांच-

पड़ताल और सोच विचार द्वारा वर्णन करेगा वे अत्यधिक सूक्ष्म और समझ से बाहर होंगी तथा स्रोत की गहराई और कठिनाई के कारण उन समस्त मौलवियों की दृष्टि में किताब और सुन्नत के विपरीत दिखाई देंगी, जबकि वास्तव में विपरीत नहीं होंगी। देखो पृष्ठ संख्या 107, मक्तूबात इमाम रब्बानी अहमदी प्रेस देहली।

अत: अब हे भाइयो! ख़ुदा के लिए धक्के और ज़बरदस्ती से काम न लो। आवश्यक था कि मैं ऐसी बातें प्रस्तुत करता जिसके समझने में तुम्हें ग़लती लगी हुई थी। यदि तुम पहले ही सद्‌भार्ग पर होते तो मेरे आने की आवश्यकता ही क्या थी। मैं कह चुका हूँ कि मैं इस उम्मत के सुधार के लिए इब्ने मरयम होकर आया हूँ और उसी प्रकार आया हूं जिस प्रकार हज़रत मसीह इब्ने मरयम यहूदियों के सुधार के लिए आए थे। मैं इसी कारण तो उनका मसील (समरूप)हूँ कि मुझे वही और उसी प्रकार का कार्य सपुर्द हुआ है जैसा कि उनके सुपुर्द हुआ था। मसीह ने अवतिरत होकर यहूदियों की बहुत सी ग़लतियों और निराधार बातों से मुक्ति दी थी। इन के अतिरिक्त एक यह भी था कि यहूदी लोग एलिया नबी के संसार में पुनरागमन की ऐसी ही आशा बांधे बैठे थे जैसे आजकल मुसलमान ख़ुदा के रसूल मसीह इब्ने मरयम के पुनरागमन की आशा बांधे बैठे हैं। अत: मसीह ने यह कह कर कि एलिया अब आकाश से उतर नहीं सकता ज़करिया का बेटा यह्या एलिया है जिसने स्वीकार करना है करे। उस पुरानी ग़लती को दूर किया और यहूदियों के मुख से स्वयं को नास्तिक और किताबों से विमुख कहलाया, परन्तु जो सत्य था वह प्रकट कर दिया। यही हाल उस के मसील का भी हुआ और हज़रत मसीह की भांति उसे भी नास्तिक का सम्बोधन दिया गया। क्या यह उच्च स्तर की समरूपता नहीं।

इस सूक्ष्म रहस्य को स्मरण रखो कि मुसलमानों को यह शुभ सन्देश क्यों दिया गया कि तुम में मसीह इब्ने मरयम उतरेगा। वास्तव में इसमें रहस्य यह है कि हमारे सरदार और पेशवा हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मूसा(अ) के मसील हैं और यह उम्मते मुहम्मदिया बनी इस्राईली उम्मत की मसील है तथा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूचना दी थी कि यह उम्मत अन्तिम युग

में ऐसी ही बिगड़ जाएगी जैसे यहूदी अपने अन्तिम समय में बिगड़ गए थे तथा से वास्तविक नेकी और सच्चाई तथा वास्तविक ईमानदारी उठ गई थी तथा अधर्म और उनमें निराधार झगड़े खड़े हो गए थे और ईमानी प्रेम ठण्डा पड़ गया था। फ़रमाया - तुम वही समस्त कार्य करोगे जो यहूदियों ने किए यहां तक कि यदि यहूदियों ने गोह के बिल में प्रवेश किया है तो तुम भी उसी बिल में प्रवेश करोगे अर्थात् पूर्ण रूप से यहूदी हो जाओगे और चूंकि यहूदियों की इस नष्ट हो चुकी दशा में ख़ुदा तआला ने उन्हें भुलाया नहीं था अपितु उनके आचरण और कर्मों के सुधार हेतु तथा उनके दोषों का सुधार करने के लिए मसीह इब्ने मरयम को उन्हीं में से भेजा था। अत: इस उम्मत को भी खुशखबरी दी गई कि जब तुम्हारी दशा उन कठोर हृदय यहूदियों की भांति हो जाएगी और तुम भी भौतिकवादी, दुराचारी और सांसारिक हो जाओगे तथा तुम्हारे भिक्षुओं, विद्वानों और सांसारिक लोगों में अपनी अपनी पद्धति पर छल-कपट और दुराचार फैल जाएगा और वह वस्तु जिसका नाम एकेश्वरवाद और ख़ुदा की उपासना, ख़ुदा का भय तथा ख़ुदा को प्राप्त करने की अभिलाषा है, बहुत ही कम रह जाएगी तो समरूप के रंग में तुम्हें भी एक इब्ने मरयम तुम में से ही दिया जाएगा ताकि तुम्हारी नैतिक, क्रियात्मक तथा ईमानी दशा को सुधारने के लिए ऐसा ही ज़ोर लगाए जैसा कि मसीह इब्ने मरयम ने लगाया था।

अब स्पष्ट और नितान्त खुली-खुली अनुकूलता है कि चूंकि इस युग के मुसलमान वास्तव में यहूदी नहीं हैं अपितु उन्होंने अपनी कठोरता और सृष्टि पूजा के कारण यहूदियों से एक समानता पैदा कर ली है इसलिए जो मसीह इब्ने मरयम उनके लिए उतारा वह भी वास्तव में मसीह इब्ने मरयम नहीं है अपितु अपने इस पद से संबंधित कार्य में जो उसके सुपुर्द हुआ है मसीह से समरूपता रखता है।

निश्चय समझो कि मसीह इब्ने मरयम ख़ुदा का रसूल मृत्यु पा चुका है और ख़ुदा तआला ने उसे मृत्योपरान्त उसी प्रकार का जीवन प्रदान किया जो वह हमेशा नबियों, सदात्माओं और शहीदों को प्रदान करता आया है। अत: वह ख़ुदा तआला की ओर एक पवित्र और उत्तम जीवन के साथ जो पार्थिव शरीर, उसकी संबंधित

मलिन और अपवित्र वस्तुओं से पवित्र है उठाया गया और उसी प्रकार के जीवितों में जा मिला। यदि वह पार्थिव शरीर के साथ उठाया जाता तो उस पार्थिव शरीर के सामान भी उसके साथ रहते क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हमने कोई ऐसा पार्थिव शरीर नहीं बनाया कि वह जीवित तो हो परन्तु रोटी न खाता हो, परन्तु आप लोग स्वीकार करते हैं कि अब मसीह इब्ने मरयम का शरीर आकाश पर ऐसा है कि उसमें पार्थिव शरीर के सामान कदापि नहीं पाए जाते, वह बूढ़ा नहीं होता, उस पर समय का कुछ प्रभाव नहीं होता, वह अनाज और पानी का मुहताज नहीं। अत: आपने जो एक प्रकार से स्वीकार भी कर लिया कि वह किसी अन्य प्रकार का और अन्य शान का शरीर है। आप जानते हैं कि मे'राज की रात में जो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आकाशों पर नबियों को देखा तो क्या विशेषकर मसीह को ही शरीर के साथ देखा और दूसरों की केवल रूहें देखीं। अपितु स्पष्ट है कि सब को रूह और शरीर दोनों के साथ देखा और सब की शारीरिक आकृति भी वर्णन की और मसीह की वह आकृति (हुलिया) वर्णन की जो आने वाले मसीह से बिल्कुल विपरीत थी। अत: क्या यह इस बात का ठोस सबूत नहीं है कि मसीह को उसकी मृत्योपरान्त उसी रंग का शरीर मिला जो यह्या नबी, इदरीस, यूसुफ, हज़रत मूसा तथा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को मिला था। क्या मसीह में कोई अनोखी बात देखी गई जो दूसरों में नहीं थी। अत: जबकि ऐसी स्पष्टता से मसीह का मृत्यु पा जाना और फिर दूसरे नबियों, सदात्माओं और शहीदों की भांति जीवित होकर आकाश की ओर उठाया जाना सिद्ध होता है तो अकारण मसीह के अधम और मलिन शरीर और अस्थिर जीवन के लिए क्यों हठ की जाती है तथा सब के लिए एक मौत और उसके लिए दो मौतें वैध रखी जाती हैं। पवित्र क़ुर्आन में इदरीस नबी के पक्ष में है - وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا (सूरह मरयम - 58) और उसके साथ तवफ़्फ़ा का शब्द कहीं नहीं तथापि विद्वान इदरीस के मृत्यु को मानते हैं और कहते हैं कि वह इस संसार से ऐसा उठाया गया कि फिर नहीं आएगा अर्थात् मर गया क्योंकि मृत्यु के बिना कोई इस संसार से

हमेशा के लिए कूच नहीं कर सकता। कारण यह कि इस संसार से निकलने और स्वर्ग में प्रवेश करने का द्वारा मृत्यु ही है - كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْت (सूरह अलअन्कबूत - 58) और यदि उन्हें कहा जाए कि क्या इदरीस आकाश पर मर गया या फिर यदि मरेगा या आकाश पर ही उसकी रूह क़ब्ज़ की जाएगी तो इदरीस के दोबारा संसार में आने से स्पष्ट इन्कार करते हैं और चूंकि स्वर्ग में प्रवेश से पूर्व मृत्यु एक अनिवार्य बात है। अत: इदरीस का मृत्यु पा जाना मान लेते हैं तथा कहते हैं कि यहां रफ़ा के अर्थ मृत्यु ही हैं, फिर जबकि मसीह के रफ़ा के साथ तवफ़्फ़ा का शब्द भी मौजूद है तो क्यों और किस सबूत से उसके जीवित रहने के लिए एक प्रलय के समान शोर मचा रखा है। खेद कि इस समय के मौलवी जब देखते हैं कि पवित्र क़ुर्आन मसीह इब्ने मरयम को मृत्यु दे चुका है और इसके विपरीत कोई सही हदीस नहीं तो विवशतापूर्वक सर्वसम्मत्ति की और दौड़ते हैं। यद्यपि कि इन लोगों को अनेक बार कहा जाता है कि सज्जनो! सर्वसम्मत्ति (इज्माअ) का शब्द भविष्यवाणियों के संबंध में कदापि नहीं हो सकता। प्रकट होने से पूर्व एक नबी के अपने विचार और विवेचन द्वारा की गई व्याख्या में भी गलती संभव है, परन्तु ये लोग नहीं जानते कि इज्माअ (सर्व सम्मति) का आधार विश्वास तथा पूर्ण प्रकटन पर हुआ करता है, परन्तु पूर्वकालीन और बाद में आने वाले बुज़ुर्गों के हाथ में जिनकी ओर सर्वसम्मत्ति का दावा सम्बद्ध किया जाता है न पूर्ण विश्वास था न पूर्ण प्रकटन। यदि उनके विचारों का आधार एक पूर्ण विश्वास पर होता तो उन से भिन्न-भिन्न प्रकार के कथन जारी न होते और **तफ़्सीर** (व्याख्या) की पुस्तकों में आयत की व्याख्या के अन्तर्गत - يَا عِيْسٰى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ छ: छ: सात, सात परस्पर विपरीत कथन न लिखे जाते अपितु एक ही मान्य भाग को मानते चले आते और यदि पूर्ण प्रकटन उन के भाग्य में होता तो वे पवित्र क़ुर्आन और सही हदीसों के हवाले के साथ अवश्य लिखते कि आने वाला मसीह इब्ने मरयम वास्तव में वही मसीह इब्ने मरयम ख़ुदा का रसूल है, जिस पर इंजील उतरी थी जो इस्राईली नबी था अपितु उन्होंने इस स्थान की व्याख्या में दम तक नहीं मारा और मूल वास्तविकता को ख़ुदा के हवाले करके

गुज़र गए जैसा कि पवित्रात्मा लोगों का चरित्र होता है, यहां तक कि वह युग आ गया कि ख़ुदा तआला ने वह मूल वास्तविकता अपने एक बन्दे पर प्रकट कर दी और जो रहस्य गुप्त चला आता था उस पर प्रकट कर दिया ताकि उसके पक्ष में यह अद्भुत बोध जिसे ज्ञात करने से समस्त विद्वानों की अक़्लें समर्थ रहीं एक चमत्कार में गणना की जाए। यह अल्लाह की कृपा है जिसे चाहता है देता है।

अत: हे भ्राताओ! ख़ुदा के लिए शीघ्रता न करो तथा अपने ज्ञान और प्रतिज्ञा पर धब्बा न लगाओ। निश्चय समझो कि उपेक्षा के समस्त मार्ग बन्द हैं तथा इन्कार के सभी रास्ते अवरुद्ध हैं। यदि यह कारोबार मनुष्य की ओर से होता या इस का आधार किसी झूठ पर होता तो ये स्पष्ट सबूत उसके साथ कदापि न होते। कुछ कहते हैं कि यदि हम स्वीकार भी कर लें कि मसीह इब्ने मरयम ख़ुदा का रसूल मृत्यु पा चुका है तो इस बात का सबूत क्या है कि तुम ही हो जो उसके स्थान पर भेजे गए हो। इसका उत्तर यह है कि प्रत्येक मनुष्य अपने कार्यों से पहचाना जाता है, यद्यपि जनसामान्य की दृष्टि में यह सूक्ष्म और गंभीर बात है, परन्तु दक्ष लोग इसे भली भांति जानते हैं कि ख़ुदा की ओर से ऐसे मामूर (अवतार) की सच्चाई का इस से बढ़कर अन्य कोई सबूत संभव नहीं कि जिस सेवा के लिए उसका दावा है कि उसको पूर्ण करने के लिए मैं भेजा गया हूँ, यदि वह उस सेवा को ऐसी रुचिकर पद्धति तथा चुने हुए उपाय से सम्पन्न कर दे कि अन्य उसके भागीदार न हो सकें तो निश्चित समझा जाएगा कि वह अपने दावे में सच्चा था क्योंकि प्रत्येक वस्तु अपने मुख्य कारण से पहचानी जाती है तथा यह विचार बिल्कुल व्यर्थ है कि जो मसीह का मसील (समरूप) कहलाता है वह मसीह की भांति मुर्दों को जीवित करके दिखाए अथवा रोगियों को अच्छा करके दिखाए, क्योंकि समरूपता मुख्य उद्देश्य में होती है मध्य में किए गए कार्यों की समरूपता विश्वसनीय नहीं होती। बाइबल के अध्ययनकर्ता जानते हैं कि जो चमत्कार मसीह से सम्बद्ध किए गए हैं अर्थात् मुर्दों का जीवित करना या रोगियों का स्वस्थ करना यह मसीह से विशेष्य नहीं है अपितु कुछ बनी इस्राईली ऐसे भी हुए हैं कि इन सब कार्यों में न केवल मसीह इब्ने मरयम के समान अपितु उससे भी आगे बढ़े हुए

थे, परन्तु फिर भी उनको मसीले मसीह नहीं कहा जाता और न मसीह को उनका मसील ठहराया जाता है। इसी प्रकार हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मूसा के मसील ठहराए गए हैं। पवित्र क़ुर्आन इस पर अटल है परन्तु कभी किसी ने नहीं सुना होगा कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने डंडे से हज़रत मूसा की तरह सांप बनाया हो या आकाश से ख़ून, जुएं और मेंढक बरसाए हों अपितु यहां भी मुख्य उद्देश्य में समरूपता अभिप्राय है। चूंकि हज़रत मूसा बनी इस्राईल को आज़ादी दिलाने के लिए अवतरित किए गए थे। अत: यही सेवा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुपुर्द हुई ताकि उस समय के फ़िरऔनों से शक्तिशाली हाथ के साथ ईमान लाने वालों को मुक्ति दिलाएं और जैसा कि ख़ुदा की सहायता एक विशेष रूप में हज़रत मूसा के साथ रही, इसी प्रकार ख़ुदा की सहायता एक अन्य रूप में हमारे नबी स.अ.व. के साथ रही। वास्तव में वही सहायता है जो अपने-अपने स्थान पर भांति-भांति के चमत्कारों के नाम से नामित होती है। अत: मैं भली भांति जानता हूँ कि जिस प्रकार ख़ुदा की सहायता हज़रत मसीह के साथ रही थी मैं भी उस सहायता से वंचित नहीं रहूंगा, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि यह सहायता शारीरिक रोगियों को स्वस्थ करने के द्वारा प्रकट हो अपितु ख़ुदा तआला ने एक इल्हाम में मुझ पर प्रकट किया है कि प्रजा के आध्यात्मिक रोगों तथा सन्देह और शंकाओं का वह सहायता निवारण करेगी जैसा कि मैं इससे पूर्व उल्लेख कर चुका हूँ और मैं देखता हूं कि तत्पर हृदयों पर प्रभाव होता जाता है और पुराने रोग दूर होते जाते हैं और ख़ुदाई सहायता अन्दर ही अन्दर कार्यरत है और ख़ुदा तआला ने अपने विशेष कलाम से मेरी और संकेत करके फ़रमाया यदि नासिरी नबी के नमूने पर देखा जाए जो ज्ञात होगा कि वह आध्यात्मिक रोगों को बहुत साफ कर रहा है उस से अधिक कि कभी शारीरिक रोगों का साफ़ किया गया हो।

वर्तमान युग के नेचरी जिन के हृदयों में ख़ुदा और उसके रसूल के आदेशों का कुछ भी महत्व शेष नहीं रहा। यह निराधार विचार प्रस्तुत करते हैं कि जो मसीह इब्ने मरयम के आने का ख़बरें हदीसों की सही पुस्तकों में मौजूद हैं। ये समस्त ख़बरें ही

ग़लत हैं। कदाचित् ऐसी बातों से उनका तात्पर्य यह है ताकि इस ख़ाकसार के दावे का तिरस्कार करके किसी प्रकार से उसे ग़लत ठहराया जाए, परन्तु ने इतनी निरन्तरताओं से इन्कार करके अपने ईमान को ख़तरे में डालते हैं। यह बात स्पष्ट है कि निरन्तरता एक ऐसी वस्तु है कि यदि अन्य क़ौमों के इतिहास की दृष्टि से भी पाया जाए तो तब भी हमें स्वीकार करना ही पड़ता है,जैसा कि हिन्दुओं के बुज़ुर्गों रामचन्द्र और कृष्ण इत्यादि का अस्तित्व निरन्तरता के द्वारा ही हमने स्वीकार किया है, यद्यपि हिन्दू लोग ऐतिहासिक घटनाओं की खोज और जांच-पड़ताल में नितान्त अपरिपक्व हैं परन्तु इतनी निरन्तरता के बावजूद जो इनके लेखों की निरन्तरता से पाया जाती है कदापि यह कल्पना नहीं की जा सकती कि राजा रामचन्द्र और राजा कृष्ण ये सब काल्पनिक नाम ही हैं।

अत: समझना चाहिए कि यद्यपि संक्षिप तौर पर पवित्र क़ुर्आन पूर्णतम किताब है, परन्तु धर्म और इबादतों इत्यादि का एक बड़ा भाग हमने स्पष्ट और विस्तृत तौर पर हदीसों से ही लिया है और यदि हम हदीसों को पूर्णरूपेण अविश्वसनीय समझ लें तो हमें इतना सा सबूत देना भी कठिन होगा कि वास्तव में हज़रत अबू बकर[रज़ि.], उमर[रज़ि] तथा उसमान ज़ुन्नूरैन और हज़रत अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहो वज्हहू आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदर्णीय सहाबा और अमीरुल मोमिनीन थे और अस्तित्व रखते थे काल्पनिक नाम नहीं, क्योंकि पवित्र क़ुर्आन में इनमें से किसी का नाम नहीं। हां यदि कोई हदीस पवित्र क़ुर्आन की किसी आयत के सर्वथा विरुद्ध और विपरीत हो, उदाहरणतया पवित्र क़ुर्आन कहता है कि मसीह इब्ने मरयम मृत्यु को प्राप्त हो गया और हदीस यह कहे कि मृत्यु को प्राप्त नहीं हुआ तो ऐसी हदीस बहिष्कृत और विश्वसनीय नहीं होगी, परन्तु जो हदीस पवित्र क़ुर्आन की विरोधी नहीं अपितु उसके वर्णन को और भी स्पष्ट करके वर्णन करती है वह इस शर्त के साथ कि प्रतिप्रश्न (जिरह) से रिक्त हो स्वीकार करने योग्य है। अत: यह बड़ा दुर्भाग्य और बड़ी भारी भूल है कि समस्त हदीसों को विश्वसनीयता की श्रेणी से पूर्णतया नीचे गिरा दें और ऐसी निरन्तरतापूर्ण भविष्यवाणियों को जो ख़ैरुल क़ुरुन (इस्लाम

का उत्तम अर्थात् प्रारंभिक युग - अनुवादक) में ही समस्त इस्लामी देशों में फैल गई थीं तथा मान्य समझी गई थीं, लोगों द्वारा बनाई गई हदीसों में सम्मिलित कर दी गईं। यह बात गुप्त नहीं कि मसीह इब्ने मरयम के आने की भविष्यवाणी एक प्रथम श्रेणी की भविष्यवाणी है जिसे सब ने सर्वसम्मत्ति से स्वीकार किया है और हदीसों की सही किताबों में जिनकी भविष्यवाणियों का उल्लेख किया गया है कोई भविष्यवाणी उस के समान या बराबर सिद्ध नहीं होती कि उसे निरन्तरता की प्रथम श्रेणी प्राप्त हो। इंजील भी इसे स्थापित करती है। अत: इतने सूबतों पर पानी फेरना और यह कहना कि सब हदीसें गड़ी हुई हैं। वास्तव में उन लोगों का काम है जिन्हें ख़ुदा तआला ने विवेक और सत्य पहचानने से कोई भाग नहीं दिया तथा इस कारण कि उनके हृदयों में ख़ुदा और रसूल के आदेशों का कोई महत्व शेष नहीं रहा। इसलिए जो बात उनकी समझ से श्रेष्ठतर हो उसे दुर्लभ और निषेधकों में सम्मिलित कर लेते हैं, प्रकृति का नियम नि:सन्देह सत्य और असत्य को परखने के लिए एक उपकरण है परन्तु प्रत्येक प्रकार की परीक्षा की निर्भरता उसी पर नहीं।

इसके अतिरिक्त अन्य उपकरण और मापदण्ड भी तो हैं जिनके द्वारा उच्चश्रेणी की सच्चाइयों को परखा जाता है अपितु यदि सच पूछो तो दार्शनिकों द्वारा परिभाषित प्रकृति के नियम से जो जो सच्चाइयां मालूम होती हैं वे एक निम्न स्तरीय सच्चाइयां हैं, परन्तु इस दर्शनशास्त्रीय प्रकृति के नियम से थोड़ा ऊपर होकर एक और प्रकृति का नियम भी है जो नितान्त सूक्ष्म, गहरा तथा सूक्ष्मता और गहराई के कारण मोटी दृष्टि से छुपा हुआ है जो ख़ुदा को पहचानने वाले पर ही खुलता है तथा ख़ुदा में लीन लोगों पर ही प्रकट होता है। इस संसार की बुद्धि तथा इस संसार के क़ानूनों को पहचानने वाले उसे नहीं पहचान सकते तथा उस के इन्कारी रहते हैं। यही कारण है कि जो बातें उनके द्वारा सिद्ध हो चुकी हैं और जो सच्चाइयां उनके कारण सबूत तक पहुंच चुकी हैं वे इन निम्नकोटि के दार्शनिकों की दृष्टि में मिथ्या बातों में सम्मिलित हैं, फ़रिश्तों को ये लोग मात्र शक्तियां समझते हैं, वह्यी को ये लोग मात्र सोच-विचार का एक परिणाम समझते हैं या हर बात जो हृदय में पड़ती है उसका नाम

वह्यी रख लेते हैं तथा पवित्र क़ुर्आन और अन्य ख़ुदाई किताबों को ऐसा समझते हैं कि जैसे नबियों ने स्वयं बना ली हैं। इस का कारण यह है कि वह अस्तित्व शक्तिशाली और स्थापित रहने वाला जो इस संसार के बाह्य और आन्तरिक का व्यवस्थापक है उसका महत्व उनके हृदय में नहीं और उसे एक मुर्दा, सोया हुआ, निर्बल और अज्ञान समझा गया है तथा उसकी प्रकति की सम्पूर्ण इमारत को ध्वस्त करने की चिन्ता में हैं, चमत्कारों से पूर्णतया इन्कारी तथा क़ुर्आनी भविष्यवाणियों से इन्कारी हैं और अपने अंधेपन के कारण पवित्र क़ुर्आन को एक तुच्छ सा चमत्कार भी नहीं समझते, हालांकि वह समस्त चमत्कारों से श्रेष्ठ और उच्चतम है, स्वर्ग और नर्क की ऐसी कमजोर व्याख्या करते हैं जिस से इन्कारी होना ही सिद्ध होता है, प्रलय में मुर्दा लोगों के जीवित होकर उठने के पूर्णतया इन्कारी हैं, इबादतों और रोज़ा-नमाज़ पर उपहास करते हैं, ख़ुदा की ओर ध्यान देने के स्थान पर संसार की ओर ध्यान देना उनके निकट उत्तम है और जो व्यक्ति ख़ुदा की ओर ध्यान दे वह उनके निकट मूर्ख, भोला-भाला और धूर्त फ़क़ीर है। मुसलमानों का दुर्भाग्य कि इस्लाम में यह सम्प्रदाय भी पैदा हो गया जो दिन प्रतिदिन नास्तिकता के मैदानों में अग्रसर हो रहा है।

हे ख़ुदा हे मेरे सामर्थ्यवान ख़ुदा! सहायता कर कि लोगों ने अधिकता और न्यूनता के मार्ग अपना लिए हैं, कुछ ने तेरे कलाम के स्पष्ट आदेशों, तेरे कलाम के संकेतों, तेरे कलाम के सबूतों, तेरे कलाम के विषयों को पूर्णरूपेण छोड़ कर उसके स्थान पर निराधर अनुसरण को पसन्द कर लिया तथा कुछ ने तेरे कलाम को भी छोड़ा और उस निराधार अनुसरण को भी छोड़ा और केवल अपनी अपूर्ण बुद्धि को अपना मार्ग-दर्शक बना लिया तथा रसूलों के इमाम को छोड़कर यूरोप के गुमराह और लज्जित दार्शनिकों को अपना इमाम बना लिया।

हे मेरे मित्रो! अब मेरी एक अन्तिम वसीयत को सुनो, और एक रहस्य की बात कहता हूँ उसे भली भांति स्मरण रखो कि तुम अपने इन समस्त शास्त्रार्थों का जो तुम्हें ईसाइयों से करने पड़ते हैं पहलू बदल लो और ईसाइयों पर यह सिद्ध कर दो कि मसीह इब्ने मरयम वास्तव में सदा के लिए मृत्यु पा चुके हैं। यही एक बहस है

जिसमें विजय प्राप्त करने से तुम ईसाई धर्म का बोरिया-बिस्तरा लपेट दोगे। तुम्हें कुछ आवश्यकता नहीं कि दूसरे लम्बे-लम्बे विवादों में अपने प्रिय समय को नष्ट करो, केवल मसीह इब्ने मरयम की मृत्यु पर बल दो तथा शक्तिशाली सबूतों द्वारा ईसाइयों को खामोश और निरुत्तर कर दो। जब तुम मसीह का मुर्दों में सम्मिलित होना सिद्ध कर दोगे तो उस दिन तुम समझ लो कि आज ईसाई धर्म संसार से कूच कर गया। निश्चित समझो कि जब तक उन का ख़ुदा मृत्यु न पाए उनका धर्म भी मृत्यु नहीं पा सकता। उनके साथ दूसरी समस्त बहसें व्यर्थ हैं। उनके धर्म का एक ही स्तम्भ है और वह यह है कि मसीह इब्ने मरयम अब तक आकाश पर जीवित बैठे हैं, उस स्तम्भ को ध्वस्त कर दो फिर दृष्टि उठाकर देखो कि ईसाई धर्म संसार में कहां है। चूंकि ख़ुदा तआला भी चाहता है कि इस स्तम्भ के टुकड़े-टुकड़े करे तथा यूरोप और एशिया में एकेश्वरवाद की हवा चला दे इसलिए उसने मुझे भेजा और उसने मुझ पर अपने विशेष इल्हाम से प्रकट किया कि मसीह इब्ने मरयम मृत्यु पा चुका है। अत: उसका इल्हाम यह है कि **मसीह इब्ने मरयम ख़ुदा का रसूल मृत्यु पा चुका है और उसके रंग में होकर वादे के अनुसार तू आया है :-**

وَ كَانَ وَعْدُ اللهِ مَفْعُوْلًا اَنْتَ مَعِيْ وَ اَنْتَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ

اَنْتَ مصيبٌ وَّ معينٌ لِلْحَقِّ

मैंने इस पुस्तक में नितान्त ठोस सबूतों द्वारा मसीह का मृत्यु पा जाना और मुर्दों में सम्मिलित होना सिद्ध कर दिया है और मैंने इस बात को नितान्त स्पष्टता की सीमा तक पहुँचा दिया है कि मसीह जीवित होकर पार्थिव शरीर के साथ आकाश की ओर कदापि नहीं उठाया गया अपितु अन्य नबियों की मृत्यु की भांति उस पर भी मृत्यु आई और वह इस संसार से हमेशा के लिए कूच कर गया। यदि कोई मसीह का ही पुजारी है तो समझ ले कि वह मर गया और हमेशा के लिए मृत्यु प्राप्त लोगों के समूह में सम्मिलित हो गया। अत: तुम सत्य के समर्थन के लिए इस पुस्तक से लाभ उठाओ और नितान्त तत्परता के साथ पादरियों के मुक़ाबले पर खड़े हो जाओ।

आवश्यक है कि यही एक समस्या तुम्हारी दृष्टि के अन्तर्गत और पूर्ण विश्वास करने योग्य हो कि मसीह इब्ने मरयम वास्तव में मृत्यु प्राप्त वर्ग में सम्मिलित हो चुका है। मैंने इस बहस को इस पुस्तक में बहुत ध्यानपूर्वक और शक्तिशाली तर्कों से परिणाम तक पहुंचाया है और ख़ुदा तआला ने इस पुस्तक में मेरी वह सहायता की है जिसे मैं वर्णन नहीं कर सकता और मैं बड़े दावे और दृढतापूर्वक कहता हूँ कि मैं सत्य पर हूँ और ख़ुदा तआला की कृपा से इस मैदान में मेरी ही विजय है और जहां तक मैं दूरदर्शिता से काम लेता हूँ समस्त संसार को अपनी सच्चाई के कदमों के नीचे देखता हूँ और निकट है कि मैं एक महान विजय प्राप्त करूं क्योंकि मेरी जीभ के समर्थन में एक और जीभ बोल रही है तथा मेरे हाथ की दृढ़ता के लिए एक और हाथ चल रहा है जिसे संसार नहीं देखता परन्तु मैं देख रहा हूँ। मेरे अन्दर एक और आत्मा बोल रही है जो मेरे एक-एक शब्द और एक-एक अक्षर को जीवन प्रदान करती है और आकाश पर एक जोश और उबाल पैदा हुआ है जिसने इस मुट्ठी भर मिट्टी को एक मूर्ति की भांति खड़ा कर दिया है। प्रत्येक वह व्यक्ति जिस पर तौबा (पाप से पश्चाताप) का द्वार बन्द नहीं वह शीघ्र ही देख लेगा कि मैं अपनी ओर से नहीं हूं। क्या वे नेत्र दृष्टा हैं जो सच्चे को पहचान नहीं सकते, क्या वह भी जीवित है जिसे इस आकाशीय आवाज़ का आभास नहीं।

पूर्वकालीन तथा बाद में आने वाले बुज़ुर्गों के कथनानुसार मसीह मौऊद के नुज़ूल (आने) का समय व तिथि तथा अन्य परिस्थितियां

"आसारुल क़यामत" पुस्तक से उद्धृत

स्वर्गीय मौलवी सय्यद सिद्दीक़ हसन ख़ान साहिब ने जिन्हें मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब मुजद्दिद ठहरा चुके हैं अपनी पुस्तक "आसारुल क़यामत" के पृष्ठ 395 पर स्पष्ट तौर पर लिखा है कि महदी का प्रकटन और ईसा का नुज़ूल (आना) तथा दज्जाल का निकलना एक ही सदी में होगा। फिर लिखा है कि इमाम जाफ़र सादिक़ की यह भविष्यवाणी थी कि सन 200 हिज्री में महदी प्रकट होगा परन्तु वे वर्ष तो गुज़र गए और महदी प्रकट न हुआ। यदि उस भविष्यवाणी का आधार किसी कश्फ़ या इल्हाम पर था तो व्याख्या की जाएगी या उस कश्फ़ को ग़लत मानना पड़ेगा। फिर वर्णन किया है कि अहले सुन्नत का यही मत है कि اَلْاٰیَاتُ بَعْدَ الْمِائَتَیْنِ अर्थात् बारह सौ वर्ष गुज़रने के पश्चात् ये लक्षण आरंभ हो जाएंगे तथा महदी, मसीह और दज्जाल के निकलने का समय आ जाएगा। फिर नईम बिन हम्माद के हवाले से लिखते हैं कि अबू क़बील का कथन है कि सन् बारह सौ चार हिज्री में महदी का प्रकटन होगा, परन्तु यह कथन भी सही न निकला, तत्पश्चात् शाह वलीउल्लाह साहिब मुहद्दिस देहलवी का एक कश्फ़ लिखते हैं कि उनको महदी के प्रकट होने की तिथि कश्फ़ी तौर पर **चिराग़दीन** के शब्द में जमल विद्या के हिसाब से ख़ुदा की ओर से ज्ञात हुई थी अर्थात् 1268। फिर लिखते हैं कि ये वर्ष भी गुज़र गए और संसार में महदी का कोई लक्षण न पाया गया। इससे ज्ञात हुआ कि शाहवलीउल्लाह का यह कश्फ़ या इल्हाम सही नहीं था। मैं कहता हूँ कि केवल निर्धारित वर्षों का गुज़र जाना इस कश्फ़ की ग़लती को सिद्ध नहीं करता, हां

बोधभ्रम को सिद्ध करता है क्योंकि भविष्यवाणियों के निर्धारित समय ठोस सबूत नहीं होते। उनमें प्राय: ऐसे रूपक भी होते हैं कि दिन वर्णन किए जाते हैं परन्तु उनसे वर्ष अभिप्राय लिए जाते हैं। फिर क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपती की पुस्तक ''सैफ़ैमस्लूल'' का हवाला देकर लिखते हैं कि कथित पुस्तक में लिखा है कि भौतिकवादी तथा आन्तरिक (ख़ुदा की पहचान रखने वाले) विद्वानों की अपनी कल्पना और अनुमान से इस बात पर सहमति है कि तेरहवीं सदी के प्रारंभ में महदी का प्रकटन होगा। फिर लिखते हैं कि कुछ सूफ़ी लोग अपने कश्फ़ से यह भी कह गए हैं कि महदी का प्रकटन बारह सौ वर्ष के पश्चात होगा और तेरहवीं सदी से आगे नहीं जाएगा, फिर लिखते हैं कि ये वर्ष तो गुज़र गए और तेरहवीं सदी में केवल दस वर्ष शेष रह गए तथा संसार में न महदी, न ईसा आए यह क्या हुआ। फिर अपनी राय लिखते हैं कि मैं दृढ़ अनुकूलता की दृष्टि से गुमान करता हूँ कि चौदहवीं सदी के सर पर उनका प्रकटन होगा फिर लिखते हैं कि अनुकूलताएं ये हैं कि तेरहवीं सदी में दज्जाल के उपद्रव अत्यधिक प्रकट हो गए हैं तथा अंधकारमय रात के भागों की तरह प्रकट हो रहे हैं तथा इस तेरहवीं सदी का उपद्रव और आपदाओं का संग्रहित होना एक ऐसी बात है कि हर छोटे-बड़े के मुख पर जारी है यहां तक कि जब हम बच्चे थे तो बूढ़ी स्त्रियों से सुनते थे कि जानवरों ने भी इस तेरहवीं सदी से शरण चाही है। फिर लिखते हैं कि यद्यपि कि यह विषय किसी सही हदीस से ठीक-ठीक मालूम नहीं होता परन्तु जब संसार की क्रान्ति का अवलोकन करें तथा लोगों की परिस्थितियों में जो स्पष्ट अन्तर आ गया है उसे देखें तो यह इस बात पर एक सच्चा साक्षी मिलता है कि इस से पूर्व संसार का रंग इस पद्धति पर नहीं था। अत: यद्यपि सूफ़ियों के कश्फ़ पूर्ण विश्वसनीय नहीं क्योंकि कश्फ़ में ग़लती की अत्यधिक संभावना है, परन्तु कह सकते हैं कि अब वह समय निकट है कि जो महदी और ईसा का प्रकटन हो क्योंकि छोटी निशानियां पूर्णरूप से घटित हो चुकी हैं तथा संसार में एक महान परिवर्तन पाया जाता है और लोगों की दशा में बड़े स्तर पर परिवर्तित हो गया है तथा इस्लाम पर नितान्त कमज़ोरी व्याप्त हो चुकी है और वह वास्तविक प्रकाश जिसका नाम

ज्ञान है वह संसार से उठ गया है और अज्ञानता बढ़ गई है और फैल गई है तथा पाप और बुराइयों का बाज़ार गर्म है तथा ईर्ष्या, द्वेष और शत्रुता फैल गई है तथा धन-दौलत का प्रेम सीमा से अधिक हो चुका है तथा आजीविका के साधनों की प्राप्ति से साहस टूट गए और आख़िरत के घर को पूर्णतया भुला दिया गया और पूर्ण रूप से भौतिकता को धारण कर लिया गया। अत: ये स्पष्ट लक्षण और प्रकाशित निशानियां इस बात की हैं कि अब वह समय बहुत निकट है। मैं कहता हूँ कि मौलवी सिद्दीक़ हसन साहिब का यह कहना कि किसी सही हदीस से मसीह के प्रकटन का कोई विशेष समय सिद्ध नहीं होता, केवल वलियों के कश्फ़ों से ज्ञात होता है कि अन्तत: तेरहवीं सदी के अन्त तक उसकी सीमा है। यह मौलवी साहिब की सर्वथा ग़लती है और स्वयं ही वह स्वीकार कर चुके हैं कि सही हदीसों से सिद्ध हो गया है कि आदम की पैदायश के पश्चात् संसार की आयु सात हज़ार वर्ष है और अब इसमें से बहुत थोड़ी शेष है। फिर पृष्ठ 385 में लिखते हैं कि 'इब्ने माजा' ने अनस से यह हदीस भी लिखी है जिसे हाकिम ने भी 'मुस्तदरिक' में वर्णन किया है कि لَا مَهْدِیْ اِلَّا عِیْسٰی ابن مریم (ला महदी इल्ला ईसा इब्ने मरयम) अर्थात् ईसा इब्ने मरयम के अतिरिक्त अन्य कोई कथित महदी नहीं, फिर लिखते हैं कि यह हदीस कमज़ोर है क्योंकि महदी का आना बहुत सी हदीसों से सिद्ध होता है। मैं कहता हूँ कि महदी की हदीसें कमज़ोरी से खाली नहीं हैं। इसी कारण हदीस के दोनों इमामों ने उन्हें नहीं लिया तथा 'इब्ने माजा' और 'मुस्तदरिक' की हदीस अभी ज्ञात हो चुकी है कि ईसा ही महदी है परन्तु संभव है कि हम इस प्रकार से चरितार्थ कर दें कि हदीसों में जो व्यक्ति ईसा के नाम से आने वाला लिखा गया है अपने समय का वही महदी और वही इमाम है और संभव है कि उसके बाद कोई अन्य महदी भी आए और यही मत हज़रत इस्माईल बुख़ारी का भी है क्योंकि उनकी इसके अतिरिक्त कोई अन्य आस्था होती तो वह अपनी हदीस में अवश्य प्रकट करते, परन्तु वह इतना ही कह कर चुप हो गए कि इब्ने मरयम तुम में उतरेगा जो तुम्हारा इमाम होगा और तुम में से ही होगा। अत: स्पष्ट है कि समय का इमाम एक ही हुआ करता है।

फिर पृष्ठ 425 में फ़रमाते हैं कि इस बात पर समस्त पूर्वकालीन तथा बाद में आने वाले बुज़ुर्गों की सहमति हो चुकी है कि जब ईसा उतरेगा तो उम्मते मुहम्मदिया में सम्मिलित किया जाएगा तथा फ़रमाते हैं कि 'क़स्तलानी' ने भी मवाहिब लदुन्निय: में भी उल्लेख किया है और विचित्र यह कि वह उम्मती भी होगा और फिर नबी भी, परन्तु खेद कि स्वर्गीय मौलवी साहिब को यह समझ में न आया कि पूर्ण नुबुव्वत वाला उम्मती कदापि नहीं हो सकता और जो व्यक्ति पूर्ण रूप से ख़ुदा का रसूल कहलाता है वह पूर्ण रूपेण किसी अन्य नबी का आज्ञाकारी और उम्मती हो क़ुर्आन और हदीस से स्पष्ट आदेशों की दृष्टि से पूर्णतया निषिद्ध है। अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

وَمَا اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ*

अर्थात् प्रत्येक रसूल अनुकरणीय और इमाम बनाने के लिए भेजा जाता है। इस उद्देश्य से नहीं भेजा जाता कि किसी अन्य का आज्ञाकारी और अनुयायी हो। हां मुहद्दिस जो ख़ुदा के भेजे हुओं में से है उम्मती भी होता है और अपूर्ण तौर पर नबी भी। उम्मती वह इस कारण कि वह पूर्णतया ख़ुदा के रसूल की शरीअत के अधीन तथा रिसालत के दीपक से वरदान पाने वाला होता है तथा नबी इस कारण कि ख़ुदा तआला उस से नबियों जैसा व्यवहार करता है तथा मुहद्दिस का अस्तित्व अल्लाह तआला ने नबियों और उम्मतों में बतौर रोक के पैदा किया है और वह यद्यपि पूर्णतया उम्मती है परन्तु एक कारण से वह नबी भी होता है तथा मुहद्दिस के लिए आवश्यक है कि वह किसी नबी का मसील (समरूप) हो और ख़ुदा तआला के निकट वही नाम पाए जो उस नबी का नाम है।

अत: समझना चाहिए कि चूंकि प्रारब्ध था कि अन्तिम युग में ईसाइयों और यहूदियों के मिथ्या विचार घातक विष की भांति समस्त विश्व में फैल जाएंगे, न केवल एक मार्ग से अपितु सहस्त्रों मार्गों से लोगों पर उनका दुष्प्रभाव पड़ेगा तथा इस युग के लिए पहले से हदीसों में खबर दी गई थी कि ईसाइयत और यहूदियत के

* अन्निसा-65

दुराचार यहां तक प्रभुत्व जमाएंगे कि मुसलमानों पर भी उसका बहुत प्रभाव पड़ेगा। मुसलमानों का आचरण, मुसलमानों की प्रकृति पूर्णतया यहूदियों और ईसाइयों के समान हो जाएगी और जो आदतें यहूदियों और ईसाइयों को पहले तबाह कर चुकी हैं वही आदतें प्रभाव के साधन पैदा हो जाने के कारण मुसलमानों में आ जाएंगी। यह उस युग की ओर संकेत है कि जब ईसाई सोसायटी जो अपने अन्दर यहूदियत की विशेषताएं भी रखती है सामान्यतया मुसलमानों के विचार, मुसलमानों के स्वभाव, मुसलमानों की वेश-भूषा, मुसलमानों की जीवन शैली पर अपनी भावनाओं का प्रभाव डाले। अत: वास्तव में यह वही युग है जिस से आध्यात्मिकता पूर्णतया दूर हो गई है। ख़ुदा तआला चाहता था कि इस युग के लिए कोई ऐसा सुधारक भेजे जो मुसलमानों से यहूदियत और ईसाइयत की विषैली आदतों को मिटा दे। अत: उसने एक सुधारक इब्ने मरयम के नाम पर भेज दिया ताकि ज्ञात हो कि जिनकी ओर भेजा गया है वे भी यहूदियों और ईसाइयों की भांति हो चुके हैं। अत: जहां यह लिखा है कि तुम में इब्ने मरयम उतरेगा वहां स्पष्ट तौर पर इस बात की ओर संकेत है कि उस समय तुम्हारी दशा ऐसी होगी जैसी कि मसीह इब्ने मरयम के अवतरित होने के समय यहूदियों की थी अपितु यह शब्द इसी संकेत के उद्देश्य से लिया गया है ताकि प्रत्येक को विचार आ जाए कि ख़ुदा तआला ने पहले उन मुसलमानों को जिनमें इब्ने मरयम के उतरने का वादा दिया गया था यहूदी ठहरा लिया है। खेद कि हमारे विद्वानों में से इस संकेत को कोई नहीं समझता और यहूदियों की तरह केवल प्रत्यक्ष शब्द को पकड़ कर बार-बार यही बात प्रस्तुत करते हैं कि वास्तव में मसीह इब्ने मरयम का आना आवश्यक है वे तनिक भी नहीं सोचते कि यदि किसी को कहा जाए कि तू फ़िरऔन की तरह बिगड़ गया है अब तेरे सुधार के लिए मूसा आएगा, तो क्या इस इबारत के ये अर्थ होंगे कि वास्तव में ख़ुदा का रसूल मूसा जिस पर तौरात उतरी थी फिर जीवित होकर आ जाएंगे। स्पष्ट है कि ये अर्थ कदापि नहीं होंगे अपितु ऐसे कथन का अभिप्राय यह होगा कि तुझे सुधारने के लिए कोई मूसा का मसील (समरूप) आएगा। अत: इसी प्रकार जानना चाहिए कि हदीसों का सारांश यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जब तुम अन्तिम युग में यहूदियों की तरह चाल-चलन ख़राब कर दोगे तो तुम्हारे सुधार के लिए ईसा इब्ने मरयम आएगा अर्थात् जब तुम अपनी उद्दण्डताओं के कारण यहूदी बन जाओगे तो मैं भी किसी को ईसा इब्ने मरयम बना कर तुम्हारी ओर भेजूंगा और जब तुम उद्दण्डताओं की कठोरता के कारण राजनीति के योग्य हो जाओगे तो मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह प्रकट होगा जो महदी है। स्पष्ट रहे कि ये दोनों वादे कि मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह आएगा या ईसा इब्ने मरयम आएगा वास्तव में अपने अभिप्राय और मतलब में समान हैं। मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के आने से उद्देश्य यह है कि जब संसार की अवस्था ऐसी हो जाएगी कि अपने सुधार के लिए राजनीति की मुहताज होगी तो उस समय कोई व्यक्ति मुहम्मद का मसील हो कर प्रकट होगा। यह आवश्यक नहीं कि वास्तव में उस का नाम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हो अपितु हदीसों का अभिप्राय यह है कि ख़ुदा तआला के निकट उसका नाम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह होगा क्योंकि वह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मसील बन कर आएगा। इसी प्रकार ईसा इब्ने मरयम के आने से अभिप्राय यह है कि जब बुद्धि के दुरुपयोग से संसार के लोग यहूदियों का रंग धारण कर लेंगे तथा आध्यात्मिक और वास्तविकता को त्याग देंगे तथा ख़ुदा की इबादत और उसका प्रेम हृदयों से निकल जाएगा तो उस समय वे लोग अपने आध्यात्मिक सुधार के लिए एक ऐसे सुधारक के मुहताज होंगे जो रूह और वास्तविकता तथा वास्तविक नेकी की ओर उनका ध्यानाकर्षण करे तथा युद्ध और लड़ाइयों से कोई संबंध न रखे और यह कार्य मसीह इब्ने मरयम के लिए मान्य है क्योंकि वह शुद्ध रूप से ऐसे कार्य के लिए आया था तथा यह आवश्यक नहीं कि आने वाले का नाम वास्तव में ईसा इब्ने मरयम ही हो अपितु हदीसों का अभिप्राय यह है कि ख़ुदा तआला के निकट उसका नाम निश्चित तौर पर ईसा इब्ने मरयम है जिस प्रकार ख़ुदा तआला ने यहूदियों के नाम बन्दर और सुअर रखे और फ़रमाया :-

وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيرَ *

* अलमाइद:-61

इसी प्रकार उसने उस उम्मत के उपद्रवी स्वभाव लोगों को यहूदी ठहराकर इस विनीत का नाम मसीह इब्ने मरयम रख दिया और अपने इल्हाम में फ़रमाया :-

جَعَلۡنَاكَ الۡمَسِيۡحَ ابۡنَ مَرۡيَم

फिर मौलवी सिद्दीक़ हसन साहिब अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि ईसा इब्ने मरयम जब उतरेगा तो उन पर पवित्र क़ुर्आन के समस्त आदेश जिब्राईल अलैहिस्सलाम के द्वारा उन पर खोले जाएंगे अर्थात् उन पर वह्यी उतरा करेगी, परन्तु वह हदीस की ओर नहीं लौटेगा क्योंकि उन पर वह्यी के द्वारा पवित्र क़ुर्आन की तफ़्सीर (व्याख्या) उतर आएगी जो हदीस से नि:स्पृह कर देगी।

फिर लिखते हैं कि कुछ का यह भी विचार है कि जब ईसा इब्ने मरयम उतरेगा तो केवल उम्मती होगा, उसमें लेशमात्र भी नुबुव्वत या रिसालत नहीं होगी। फिर लिखते हैं कि सच यह है कि वह उम्मती भी होगा और नबी भी तथा सामान्य उम्मती लोगों की तरह उस पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुसरण अनिवार्य किया जाएगा तथा जिन बातों पर उम्मत की सर्वसम्मत्ति हो चुकी है उसे वे सब बातें स्वीकार करना पड़ेंगी और चूंकि मे'राज की रात में वह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख चुका है इसलिए वह सहाबा में भी शामिल है तथा एक सहाबी है परन्तु 'अहले सुन्नत वलजमाअत' की सहमति से समस्त सहाबा से अबू बकर श्रेणी और पद में श्रेष्ठतम है। फिर लिखते हैं कि वह नबी होने के बावजूद उम्मती क्यों बन गए। इसका उत्तर यह देते हैं कि उन्होंने दुआ की थी कि हे ख़ुदा मुझे अन्तिम युग के नबी की उम्मत में शामिल कर। इसलिए ख़ुदा तआला ने नुबुव्वत के बावजूद उम्मती भी बना दिया और फिर पृष्ठ 427 में लिखते हैं कि वह समय के मुजद्दिद होंगे और इस उम्मत के मुजद्दिदों में गणना होगी, परन्तु वह अमीरुल मोमिनीन नहीं होंगे, क्योंकि खलीफ़ा तो क़ुरैश में से होना चाहिए, मसीह इब्ने मरयम उनका अधिकार कैसे ले सकता है। इसलिए वह ख़िलाफ़त का कोई भी कार्य नहीं करेगा न युद्ध न लड़ाई न राजनीति अपितु समय के ख़लीफ़ा का अनुयायी और अधीनस्थों की भांति आएगा।

यहां बहुत से ये सन्देह सामने आते हैं कि जिस अवस्था में मसीह इब्ने मरयम अपने उतरने के समय पूर्ण तौर पर उम्मती होगा तो वह उम्मती होने के बावजूद किसी भी प्रकार से रसूल नहीं हो सकता, क्योंकि रसूल और उम्मती का अर्थ परस्पर विरोधी है तथा हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ख़ातमुन्नबिय्यीन होना किसी अन्य नबी के आने का निषेधक है। हां ऐसा नबी जो मुहम्मदी नुबुव्वत के दीपक से प्रकाश प्राप्त करता है और पूर्ण नुबुव्वत नहीं रखता जिसे दूसरे शब्दों में मुहद्दिस भी कहते हैं वह इस परिसीमन से बाहर है क्योंकि वह अनुसरण तथा रसूल में आसक्त होने के कारण जनाब खतमुलमुरसलीन के अस्तित्व में प्रविष्ट है, जिस प्रकार कि भाग कुल में प्रविष्ट होता है, परन्तु मसीह इब्ने मरयम जिस पर इन्जील उतरी, जिसके साथ जिब्राईल अलैहिस्सलाम का उतरना भी एक अनिवार्य बात समझी गई है किसी प्रकार उम्मती नहीं बन सकता, क्योंकि उस पर उस वह्यी का अनुसरण अनिवार्य होगा जो उस पर कभी कभी उतरेगी जैसा कि रसूलों की शान के योग्य है और जबकि वह अपनी वह्यी का अनुयायी हुआ तथा उस पर जो नई किताब उतरेगी उसने उसका अनुसरण किया तो फिर वह उम्मती क्योंकर कहलाएगा। यदि यह कहो कि उस पर जो आदेश उतरेंगे वे क़ुर्आनी आदेशों के विपरीत नहीं होंगे। अत: मैं कहता हूँ कि मात्र इस विचार की एकरूपता के कारण वह उम्मती नहीं ठहर सकता। बिल्कुल स्पष्ट है कि तौरात का अधिकांश भाग पवित्र क़ुर्आन से पूर्णतया अनुकूल है तो क्या नऊज़ुबिल्लाह इस भावसाम्य के कारण हमारे सरदार व पेशवा मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. की गणना हज़रत मूसा की उम्मत में की जाएगी। तवारुद (भावसाम्य) और बात है तथा अधीन बन कर आज्ञाकरी हो जाना और बात है। हम अभी लिख चुके हैं कि ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता है कि संसार में कोई रसूल आज्ञाकारी और अधीन होकर नहीं आता अपितु वह अनुकरणीय और केवल अपनी उस वह्यी का आज्ञाकारी होता है जो उस पर जिब्राईल अलैहिस्सलाम के माध्यम से आती है। अत: यह सीधी सीधी बात है कि जब हज़रत मसीह इब्ने मरयम उतरे और हज़रत जिब्राईल लगे हाथ आकाश से वह्यी लाने लगे और उन्हें समस्त

इस्लामी आस्थाएं तथा नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज और सम्पूर्ण फ़िक़्ह: संबंधी विषय वह्यी के द्वारा सिखाए गए तो फिर बहरहाल धार्मिक आदेशों का यह संग्रह 'अल्लाह की किताब' कहलाएगा। यदि यह कहो कि मसीह को वह्यी के माध्यम से केवल इतना कहा जाएगा कि क़ुर्आन पर अमल कर और फिर जीवन पर्यन्त वह्यी समाप्त हो जाएगी और उन पर हज़रत जिब्राईल कभी नहीं उतरेंगे अपितु नुबुव्वत पूर्णतया समाप्त होकर वह उम्मतियों की तरह बन जाएंगे। अत: यह बचकाना विचार हंसी के योग्य है। स्पष्ट है कि यद्यपि वह्यी का नुज़ूल (उतरना) एक ही बार अनिवार्य किया जाए और हज़रत जिब्राईल केवल एक ही वाक्य लाएं और फिर चुप हो जाएं। यह बात भी ख़तमे नुबुव्वत की विरोधी है क्योंकि जब ख़तमियत की मुहर ही टूट गई और वह्यी-ए-रिसालत पुन: उतरनी आरंभ हो गई तो फिर थोड़ा या बहुत नाज़िल (उतरना) समान है। प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि यदि ख़ुदा तआला वादे में सच्चा है और ख़ातमुन्नबिय्यीन की आयत में जो वादा दिया गया है और जो हदीसों में स्पष्ट तौर पर वर्णन किया गया है कि अब जिब्राईल को रसूलुल्लाह स.अ.व. की मृत्यु के पश्चात् वह्यी-ए-नुबुव्वत लाने से हमेशा के लिए रोक दिया गया है। ये समस्त बातें सत्य और सही हैं तो फिर कोई व्यक्ति रसूल की हैसियत से हमारे नबी करीम स.अ.व. के पश्चात् कदापि नहीं आ सकता, परन्तु यदि हम कल्पना के तौर पर स्वीकार भी कर लें कि मसीह इब्ने मरयम जीवित होकर पुन: संसार में आएगा तो हमें इस बात से किसी भी प्रकार इन्कार नहीं हो सकता कि वह रसूल है और वह रसूल की हैसियत से आएगा तथा जिब्राईल और ख़ुदा के कलाम के उतरने का सिलसिला पुन: आरंभ हो जाएगा। जिस प्रकार यह बात संभव नहीं कि सूर्य निकले और उसके साथ प्रकाश न हो, इसी प्रकार संभव नहीं कि संसार में एक रसूल प्रजा के सुधार के लिए आए और उसके साथ ख़ुदा की वह्यी और जिब्राईल न हो। इसके अतिरिक्त प्रत्येक बुद्धिमान मालूम कर सकता है कि यदि जिब्राईल और ख़ुदा के कलाम के उतरने का सिलसिला हज़रत मसीह के उतरने के समय पूर्णतया समाप्त होगा तो वह फिर पवित्र क़ुर्आन को जो अरबी भाषा में है क्योंकर पढ़ सकेंगे, क्या

नुज़ूल करके दो चार वर्ष तक किसी स्कूल में बैठेंगे और किसी मुल्ला से पवित्र क़ुर्आन पढ़ लेंगे। यदि मान भी लें कि वह ऐसा ही करेंगे तो फिर वह बिना नुबुव्वत की वह्यी के धार्मिक विषयों के विवरण उदाहरणतया ज़ुहर की नमाज़ की सुन्नतें जो इतनी रकअतें हैं, नमाज़ मग़रिब के संबंध में जो इतनी रकअतें हैं और यह कि ज़कात किन लोगों पर अनिवार्य है तथा... क्या है पवित्र क़ुर्आन से क्योंकर निकल सकेंगे। यह तो स्पष्ट हो चुका कि वे हदीसों की ओर ध्यान भी नहीं देंगे। यदि नुबुव्वत की वह्यी से उन्हें यह समस्त ज्ञान प्रदान किया जाएगा तो निस्सन्देह जिस कलाम के द्वारा उन्हें यह समस्त विवरण ज्ञात होंगे वे वह्यी-ए-रिसालत होने के कारण 'अल्लाह की किताब' कहलाएगी। अत: स्पष्ट है उनके दोबारा आने में कितनी ख़राबियां और कितनी कठिनाइयां हैं। इन सब के अतिरिक्त यह भी कि वह क़ौम के क़ुरैशी न होने के कारण किसी भी अवस्था में अमीर नहीं हो सकते। विवश होकर उन्हें किसी अन्य इमाम और अमीर की बैअत करना पड़ेगी, विशेष कर जबकि ऐसा विचार किया गया है कि इन के उतरने से पूर्व मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह महदी की बैअत में सब शामिल हो जाएंगे तो इस अवस्था में यह और भी कठिनाई आएगी कि उनका महदी की बैअत में विलम्ब करना (पीछे रहना) बड़े पाप में शामिल होगा अपितु वह हदीस के अनुसार مَنْ شُذَّ شُذَّ فِي النَّارِ महदी की अवश्य बैअत करेंगे या समय के ख़लीफ़ा के न मानने के कारण उन पर फ़त्वा लग जाएगा।

फिर इसी किताब 'आसारुल क़ियामह' के पृष्ठ 427 में लिखा है कि 'इब्ने खल्दून' का कथन है कि सूफियों ने अपने कश्फ़ से यह विचार किया है कि सन् सात सौ तेंतालीस में दज्जाल निकलेगा फिर लिखते हैं कि यह कश्फ़ भी सही न निकला, फिर लिखते हैं कि याक़ूब बिन इस्हाक़ कुन्दी ने भी कश्फ़ की दृष्टि से छ: सौ अठानवे वर्ष मसीह के उतरने के लिए ज्ञात किए थे, परन्तु इस से बहुत अधिक समय व्यतीत हो गया, परन्तु मसीह अब तक नहीं आया। फिर लिखते हैं कि अबू हुरैरा[रज़ि.] से रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि मैं आशा रखता हूँ कि यदि मेरी आयु कुछ लम्बी होगी तो ईसा इब्ने मरयम मेरे

ही समय में प्रकट होगा अथार्त् मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह महदी का मध्य में होना आवश्यक नहीं अपितु आशा से दूर नहीं कि मेरे ही समय में मसीह इब्ने मरयम आ जाए, परन्तु यदि मेरी आयु साथ न दे तो जो व्यक्ति उसे देखे मेरी ओर से उसे अस्सलामो अलैकुम कह दे। इस हदीस को मुस्लिम और अहमद ने भी लिखा है। यहां मौलवी **सिद्दीक़ हसन** साहिब लिखते हैं कि यदि मेरे जीवित रहते हज़रत मसीह आ जाएं तो मेरी कामना है कि हज़रत ख़ातमुल मुरसलीन का अस्सलामो अलैकुम मैं उन्हें पहुंचा दूं परन्तु यह सब कामना ही थी, ख़ुदा तआला उन पर दया करे। मुजद्दिद अलिफ़ सानी साहिब ने ठीक कहा है कि जब मसीह आएगा तो सारे मौलवी उनके विरोध पर तत्पर हो जाएंगे और विचार करेंगे कि यह प्रवीण है और सर्वसम्मति को छोड़ता है तथा अल्लाह की किताब के अर्थों को उल्टाता है।

फिर लिखते हैं कि रफ़ा से पूर्व ईसा की मृत्यु के बारे में मतभेद है। कुछ के अनुसार यह कि यह मृत्योपरान्त उठाया गया है और पिर भी आकर मरेगा इसलिए उसके लिए दो मौतें हैं और यद्यपि आयत وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا में इदरीस की मृत्यु का वर्णन नहीं परन्तु सही मत यही है कि वह भी मृत्योपरान्त ही उठाया गया था। फिर लिखते हैं कि शिया लोगों का यह भी कहना है कि आकाश से आने वाला ईसा कोई भी नहीं। वास्तव में महदी का नाम ही ईसा है। तत्पश्चात् लिखते हैं कि कुछ सूफ़ियों ने इस हदीस का अर्थ अपने कश्फ़ के अनुसार इस हदीस के अर्थ कि :-

لَا مَهْدِی اِلَّا عِیْسٰی

यह किए हैं कि महदी जो आने वाला है वास्तव में ईसा ही है किसी अन्य ईसा की आवश्यकता नहीं जो आकाश से उतरे। सूफ़ियों ने अन्तिम युग के महदी को इस प्रकार ईसा ठहराया है कि वह शरीअत-ए-मुहम्मदिया की सेवा के लिए उसी पद्धति और ढंग पर आएगा जिस प्रकार ईसा शरीअत-ए-मूसविया की सेवा और अनुसरण के लिए आया था।

फिर पृष्ठ 431 में **लिखते हैं** कि हदीसों से सिद्ध है कि ईसा पर उसके उतरने के पश्चात् रसूलों की भांति नुबुव्वत की वह्यी उतरती रहेगी, जैसा कि मुस्लिम के

अनुसार नवास बिन समआन की हदीस में है कि :-

يقتل عيسى الدجال عند باب لُد الشرقى فبينهما هم
كذٰلك اذا اوحى الله تعالٰى الى عيسى ابن مريم

अर्थात् जब ईसा दज्जाल का वध करेगा तो अल्लाह तआला उस पर वह्यी उतारेगा। फिर लिखते हैं कि वह्यी का लाने वाला जिब्राईल होगा क्योंकि जिब्राईल ही पैग़म्बरों पर वह्यी लाता है।

इस समस्त वर्णन से ज्ञात हुआ कि हज़रत मसीह के संसार में पुनरागमन का निरन्तर चालीस वर्ष की अवधि का जो अन्तराल ठहराया गया है हज़रत जिब्राईल ख़ुदा की वह्यी लेकर नाज़िल होते रहेंगे। अत: प्रत्येक मनीषी अनुमान लगा सकता है कि जिस अवस्था में तेईस वर्ष में पवित्र क़ुर्आन के तीस भाग नाज़िल हो गए थे तो नितान्त आवश्यक है कि इस चालीस वर्ष की अवधि में कम से कम पचास भागों की अल्लाह की किताब हज़रत मसीह पर नाज़िल हो जाए। स्पष्ट है कि यह बात दुर्लभ होने को अनिवार्य है कि ख़ातमुन्नबिय्यीन के पश्चात् पुन: वह्यी-ए-रिसालत के साथ जिब्राईल अलैहिस्सलाम का आना-जाना आरंभ हो जाए और ख़ुदा की एक नई किताब यद्यपि लेख में पवित्र क़ुर्आन से भावसाम्य रखती हो पैदा हो जाए तथा जो बात दुर्लभ और असंभव को अनिवार्य हो वह दुर्लभ होती है। **अत: विचार कर।**

इस महान क्रान्ति पर बहुत ध्यानपूर्वक दृष्टि डालना चाहिए कि चूंकि हज़रत मसीह (यदि उनका उतरना मान लिया जाए) ऐसी अवस्था में आएंगे कि उन्हें मुहम्मदी शरीअत से जो अन्य भाषा में है कुछ भी ख़बर नहीं होगी और वह इस बात के मुहताज होंगे कि वह क़ुर्आन की शिक्षा से अवगत हों तथा उन धार्मिक आदेशों के विवरणों से भी परिचित हो जाएं जो हदीसों की दृष्टि से ज्ञात होते हैं। अत: उनके लिए शरीअत-ए-मुहम्मदिया के समस्त भागों पर चाहे वे आस्थाओं के प्रकार से हैं अथवा इबादतों (उपासनाओं) या मामलों के प्रकार से या प्रारब्ध और पृथकता के कानूनों से संबंधित मुक़द्दमों से सूचना पाना आवश्यक होगा और यह तो संभव ही

नहीं कि वयोवृद्ध होने की अवस्था में एक आयु खर्च करके दूसरों की शिष्य बनें। अत: उनके लिए यही अनिवार्य और आवश्यक है कि उन पर शरीअत के सम्पूर्ण भाग नए सिरे से उतरें क्योंकि इस उपाय के अतिरिक्त अज्ञात बातों को जानने की इच्छा के लिए उनके पास अन्य कोई मार्ग नहीं तथा रसूलों की शिक्षा और उससे अवगत होने के लिए अनादि काल से ख़ुदा का यही नियम जारी है कि वे जिब्राईल अलैहिस्सलाम के माध्यम से, ख़ुदाई आयतों तथा अल्लाह की वाणी के अवतरण से सिखाई जाती हैं और जब कि सम्पूर्ण पवित्र क़ुर्आन और सही हदीसें जिब्राईल अलैहिस्सलाम के माध्यम से हज़रत मसीह की भाषा में उन पर उतर जाएंगी और जैसा कि हदीसों में आया है जिज़िया (कर) इत्यादि के संबंध में पवित्र क़ुर्आन के कुछ कुछ आदेश निरस्त भी हो जाएंगे। अत: स्पष्ट है कि इस नई किताब के उतरने से पवित्र क़ुर्आन, तौरात और इंजील की तरह निरस्त हो जाएगा और मसीह का नया क़ुर्आन जो पवित्र क़ुर्आन से कुछ भिन्न भी होगा प्रचलन और लागू हो जाएगा और हज़रत मसीह नमाज़ में अपना क़ुर्आन ही पढ़ेंगे और वह्यी क़ुर्आन बलात और बलपूर्वक दूसरों को भी सिखाया जाएगा तथा प्रत्यक्षत: मालूम होता है कि उस समय यह कलिमा भी कि لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه एक सीमा तक सुधार और निरस्त होने के योग्य ठहरेगा क्योंकि जब सम्पूर्ण शरीअत-ए-मुहम्मदिया का नऊज़ुबिल्लाह (कुफ्र की नक़ल कुफ्र नहीं होता) समूल विनाश हो गया तथा एक अन्य ही क़ुर्आन यद्यपि वह हमारे पवित्र क़ुर्आनसे एक सीमा तक समान ही सही आकाश से नाज़िल हो गया तो फिर कलिमा का भी परिवर्तित होना अनिवार्य होगा। कुछ बहुत लज्जित हो कर उत्तर देते हैं कि यद्यपि वास्तव में ये स्पष्ट ख़राबियां हैं जिन से इन्कार नहीं हो सकता, परन्तु क्या करें। वास्तव में इसी बात पर सर्व सम्मति हो गई है कि हज़रत मसीह रसूलुल्लाह होने की अवस्था में उतरेंगे और उन पर चालीस वर्ष तक हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम उतरते रहेंगे। अत: यही विषय हदीसों से भी निकलता है। इसके उत्तर में कहता हूँ कि इतना तो बिल्कुल सत्य है कि यदि वही अल्लाह का रसूल किताब वाले मसीह आ जाएंगे जिन पर जिब्राईल नाज़िल हुआ करता था तो

वह शरीअत-ए-मुहम्मदिया के सिद्धान्त ज्ञात करने के लिए किसी का शिष्य होना कदापि स्वीकार नहीं करेंगे अपितु ख़ुदा के नियमानुसार जिब्राईल के माध्यम से उन पर ख़ुदा की वह्यी उतरेगी और उन पर शरीअत-ए-मुहम्मदिया के समस्त क़ानून और आदेश नए सिरे, नए लिबास, नई शैली और नई भाषा में उतर जाएंगे तथा इस ताज़ा किताब के मुकाबले पर जो आकाश से उतरी है पवित्र क़ुर्आन निरस्त हो जाएगा, परन्तु ख़ुदा तआला इस उम्मत के लिए ऐसा अपमान और अपयश तथा अपने मान्य ख़ातमुल अंबिया के लिए ऐसा तिरस्कार और अनादर कदापि उचित नहीं रखेगा कि एक रसूल को भेजकर कि जिसके साथ जिब्राईल का आना आवश्यक बात है इस्लाम का तख़्ता ही पलट दे, हालांकि वह वादा कर चुका है कि आँहज़रत स.अ.व. के पश्चात् कोई रसूल नहीं भेजा जाएगा। हदीसों के अध्ययनकर्ताओं ने यह बड़ी भारी ग़लती की है कि केवल ईसा या इब्ने मरयम के शब्द को देखकर इस बात का विश्वास कर लिया है कि वास्तव में आकाश से वही इब्ने मरयम उतरेगा जो अल्लाह का रसूल था तथा इस ओर ध्यान नहीं दिया कि उस का आना जैसे संसार से इस्लाम धर्म का जाना है। यह तो सामूहिक आस्था हो चुकी, 'मुस्लिम' में इस संबंध में हदीस भी है कि मसीह ख़ुदा का नबी होने की अवस्था में आएगा। अत: यदि मसीह अथवा इब्ने मरयम के शब्द से समरूप के तौर पर कोई उम्मती व्यक्ति अभिप्राय हो जो मुहद्दिसियत का पद रखता हो तो कोई भी ख़राबी अनिवार्य नहीं आती क्योंकि मुहद्दिस एक प्रकार से नबी भी होता है, परन्तु वह ऐसा नबी है जो मुहम्मदी नुबुव्वत के दीपक से प्रकाश प्राप्त करता है तथा अपनी ओर से सीधे तौर पर नहीं अपितु अपने नबी के द्वारा शान पाता है जैसा कि बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 239 में इस विनीत के एक इल्हाम का जो उल्लेख है वह इसी की ओर संकेत करता है और वह यह है :-

كُلُّ بَرَكَةٍ مِنْ مُحَمَّدٍ صَلَّ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ۔ فَتَبَارَكَ مَنْ عَلَّمَ وَتَعَلَّمَ

अर्थात् प्रत्येक बरकत जो इस विनीत पर इल्हाम और कश्फ़ इत्यादि के रूप में उतर रही है वह मुहम्मद स.अ.व. के कारण तथा उनके माध्यम से है। अत: उस

हस्ती में बरकतों का बाहुल्य है जिसने सिखाया अर्थात् आँहज़रत स.अ.व. और उसमें भी बरकतों का बाहुल्य है जिसने सीखा अर्थात् यह विनीत, परन्तु यदि वास्तविक और यथार्थ तौर पर मसीह इब्ने मरयम का उतरना विचार किया जाए तो इतनी ख़राबियां पैदा होती हैं जिनकी गणना नहीं हो सकती तथा इस बात के समझने के लिए नितान्त स्पष्ट और साफ लक्षण मौजद हैं कि यहां यथार्थ तौर पर उतरना कदापि अभिप्राय नहीं अपितु एक रूपक की दृष्टि से दूसरा रूपक प्रयोग किया गया है अर्थात् जब कि इस उम्मत के लोगों को रूपक के तौर पर यहूदी ठहराया गया तथा उनमें उन समस्त ख़राबियों का प्रवेश कर जाना वर्णन किया जो हज़रत मसीह इब्ने मरयम के समय समावेश कर गई थीं। अत: इस अनुकूलता के अनुसार यह भी कहा गया कि तुम्हारे सुधार के लिए तथा तुम्हारे विभिन्न सम्प्रदायों का निर्णय करने के लिए तुम में से ही बतौर मध्यस्थ के एक व्यक्ति भेजा जाएगा जिसका नाम मसीह या ईसा या इब्ने मरयम होगा। यह इस बात की ओर संकेत है कि यह उम्मत ऐसी बेकार और अयोग्य उम्मत नहीं कि अपने अन्दर केवल यही तत्व रखती हो कि इन हैवानी स्वभाव रखने वाले यहूदियों का नमूना बन जाए जो हज़रत मसीह के समय में थे अपितु यह मसीह भी बन सकती है। अत: जिस समय कुछ लोग यहूदी बन जाएंगे उस समय कुछ मसीह इब्ने मरयम बन कर आएंगे ताकि लोगों को ज्ञात हो कि यह दयनीय उम्मत जैसे अधम और कामवासना रखने वाले लोगों को अपने वर्ग में शामिल रखती है इसी प्रकार इस वर्ग में वे लोग भी सम्मिलित है जिन्हें इनकी विशेषताओं के कारण ईसा इब्ने मरयम या मूसा बिन इमरान भी कह सकते हैं तथा इस उम्मत में दोनों प्रकार की योग्यताएं विद्यमान हैं :-

می تواند شد یہودی می تواند شد مسیح

स्पष्ट हो कि हज़रत ईसा इब्ने मरयम भी इस कार्य के लिए आए थे और उस युग में आए थे जब कि यहूदियों के मुसलमानों की तरह बहुत से सम्प्रदाय हो गए थे तथा उन्होंने तौरात के प्रत्यक्ष शब्दों को पकड़ लिया था तथा उसकी मूल भावना का परित्याग कर दिया था और व्यर्थ-व्यर्थ बातों पर झगड़े फैल गए थे तथा परस्पर

अधमता और साहस के अभाव के कारण उन विभिन्न सम्प्रदायों में शत्रुता, द्वेष और ईर्ष्या फैल गई थी, एक को दूसरा देख नहीं सकता था तथा शेर और बकरी की शत्रुता की भांति व्यक्तिगत शत्रुताओं तक नौबत पहुंच गई थी तथा आस्थागत मतभेद के कारण अपने भाइयों से प्रेम समाप्त हो गया था अपितु अत्याचार फैल गया था और नैतिक अवस्था चरम सीमा तक बिगड़ चुकी थी तथा परस्पर दया और सहानुभूति पूर्णतया समाप्त हो गई थी तथा वे लोग ऐसे जानवरों की भांति हो गए थे कि वास्तविक नेकी को कदापि पहचान नहीं सकते थे, शत्रुता और ईर्ष्या का बाज़ार गर्म हो गया था तथा कुछ रीति-रिवाज और आदतों को धर्म समझ लिया गया था। अत: आँहज़रत स.अ.व. ने इस उम्मत को शुभ सन्देश दिया था कि अन्तिम युग में तुम्हारी भी यही दशा होगी, तुम में बहुत से सम्प्रदाय निकल आएंगे और बहुत से विरोधात्मक विचार उत्पन्न हो जाएंगे तथा एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय को यहूदियों की भांति काफ़िर समझेगा तथा यदि इस्लाम के निन्नियानवे कारण विद्यमान हों तो मात्र एक लक्षण को कुफ्र का कारण समझ कर काफ़िर ठहराया जाएगा। अत: परस्पर काफ़िर ठहराने के कारण अत्यधिक घृणा, द्वेष और परस्पर शत्रुता पैदा हो जाएगी और मतभेद के कारण ईर्ष्या, द्वेष और जानवरों के समान आदतें फैल जाएंगी और वह इस्लामी आदत जो एक अस्तित्व की भांति पूर्ण एकता चाहती है तथा परस्पर प्रेम और सहानुभूति से परिपूर्ण होती है तुम्हारे अन्दर से पूर्णतया समाप्त हो जाएगी तथा एक दूसरे का ऐसा अजनबी समझ लेगा कि जिस से धार्मिक संबंध बिल्कुल टूट जाएगा तथा एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय को काफ़िर बनाने का प्रयास करेगा जैसा कि मसीह इब्ने मरयम के अवतरित होने के समय यही दशा यहूदियों की हो रही थी और इस आन्तरिक फूट, शत्रुता, द्वेष और ईर्ष्या के कारण अन्य क़ौमों की दृष्टि में नितान्त तिरस्कृत, अपमानित और कमज़ोर हो जाएंगी तथा इस विपरीत उन्नति के कारण जो आन्तरिक झगड़ों द्वारा चरम सीमा को पहुंचेगी विनाश के निकट हो जाएंगी तथा कीड़ों की भांति एक-दूसरे को खा जाने का संकल्प करेंगी तथा बाह्य आक्रमणों को अपने ऊपर होने का अवसर देंगी जैसा कि उस युग में

यहूदियों के साथ हुआ जो आन्तरिक फूट के कारण उनका शासन भी गया तथा क़ैसर की अधीनता में दासों की भांति जीवन व्यतीत करने लगे। अत: ख़ुदा तआला ने अपने नबी करीम के माध्यम से फ़रमाया कि अन्तिम युग में तुम्हारी भी यही दशा होगी। तुम्हारी धार्मिक शत्रुताएं अपने ही भाइयों से चरम सीमा तक पहुंच जाएंगी, ईर्ष्या, द्वेष और शत्रुता से भर जाओगे। इस दुर्भाग्य के कारण न तुम्हारी सांसारिक अवस्था अच्छी रहेगी न धर्म की, न मानव सदाचारों की और न ख़ुदा का भय शेष रहेगा, न सत्य की पहचान तथा पूरे हैवान, अत्याचारी और अज्ञानी हो जाओगे और वह ज्ञान जो हृदयों पर अच्छा प्रभाव डालता है तुम में शेष नहीं रहेगा। यह समस्त अधर्म, निर्दयता और दुष्टता सर्वप्रथम पूरबी देशों में ही पैदा होगी, दज्जाल और याजूज-माजूज इन्हीं देशों से निकलेंगे अर्थात् अपनी शक्ति और बल के साथ दिखाई देंगे। पूरबी देशों से अभिप्राय फारस, नजद और हिन्दुस्तान देश है क्योंकि ये समस्त देश हिजाज़ की पृथ्वी से पूरब की ओर ही हैं। आवश्यक था कि रसलुल्लाह स.अ.व. की भविष्यवाणी के अनुसार कुफ्र और कुफ्रपन शक्ति के साथ इन्हीं स्थानों से अपनी झलक दिखाए। इन्हीं देशों में से किसी स्थान पर दज्जाल निकले और इन्हीं में मसीह भी उतरे, क्योंकि जो स्थान कुफ्र और उपद्रव का स्थान हो जाए वही स्थान सुधार और ईमान की नींव डालने के लिए निर्धारित होना चाहिए। अत: इन पूरबी देशों में से हिन्दुस्तान का देश कुफ्र, उपद्रव, द्वमुखता, द्वेष, ईर्ष्या में अत्यधिक अग्रसर हो गया है। अत: वह इस बात का अत्यधिक पात्र था कि मसीह भी इसी देश में प्रकट हो और जैसा कि आदम के प्रकटन के पश्चात् सर्वप्रथम इसी देश पर दया दृष्टि हुई थी इसी प्रकार अन्तिम युग में भी इसी देश पर दया दृष्टि हो। हम ऊपर वर्णन कर चुके हैं कि रसूलुल्लाह स.अ.व. ने अपनी उम्मत के पक्ष में नितान्त स्पष्ट तौर पर फ़रमा दिया था कि तुम अन्तिम युग में यहूदियों के पद-चिन्हों पर चल कर पूर्णतया यहूदी बन जाओगे और ये विपत्तियां अन्तिम युग में सर्वाधिक पूरबी देशों में फैलेंगी अर्थात् हिन्दुस्तान और ख़ुरासान इत्यादि में। तब इस यहूदियत को समूल नष्ट करने के लिए मसीह इब्ने मरयम आएगा अर्थात् अवतार होकर

आएगा तथा फ़रमाया - जैसा कि यह उम्मत यहूदी बन जाएगी उसी प्रकार इब्ने मरयम भी अपने आदर्श रूप में इसी उम्मत में से पैदा होगा, न यह कि यहूदी तो यह उम्मत बनी और इब्ने मरयम बनी इस्राईल में से आए। ऐसा विचार करने में हमारे नबी करीम स.अ.व. का अपमान है तथा आयत :-

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ*

के विपरीत। यहां यह भी स्मरण रखना चाहिए कि सूफ़ियों की पद्धति के अनुसार ऊपर जाने और उतरने के एक विशेष अर्थ हैं और वे ये हैं कि जब मनुष्य ख़ुदा की प्रजा से पूर्णतया सम्बन्ध विच्छेद करके ख़ुदा तआला की ओर जाता है तो सूफ़ियों के निकट इस अवस्था का नाम 'सऊद' (ऊपर जाना) है और जब मामूर (अवतार) होकर प्रजा के सुधार के लिए नीचे की ओर आता है तो इस अवस्था का नाम 'नुज़ूल' (उतरना) है इसी परिभाषिक अर्थ के अनुसार नुज़ूल का शब्द लिया गया है। अल्लाह तआला की इस आयत का संकेत इसी ओर है कि :-

وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ**

अत: इस समस्त छान-बीन से स्पष्ट है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इब्ने मरयम से अभिप्राय वह इब्ने मरयम कदापि नहीं लिया जो ख़ुदा के रसूल थे जिस पर इन्जील उतरी थी अपितु प्रथम रूपक के तौर पर अन्तिम युग के लोगों को यहूदी ठहराकर और उन यहूदियों का प्रत्येक बाब में मसील (समरूप) ठहरा कर जो हज़रत मसीह इब्ने मरयम के समय में थे। फिर प्रथम रूपक की अवस्था के अनुसार रूपक के तौर पर एक अन्य भविष्यवाणी कर दी कि जब तुम ऐसे यहूदी बन जाओगे तो तुम्हारी अवस्था के यथायोग्य एक मसीह तुम्हें तुम में से ही दिया जाएगा और वह तुम में हकम होगा तथा तुम्हारे द्वेष और ईर्ष्या को दूर कर देगा, शेर और बकरी को साथ-साथ बैठा देगा, सांपों का विष निकाल देगा और

---

* अलवाक़िअ:-40,41

** बनी इस्राईल-106

तुम्हारे बच्चे सांपों और बिच्छुओं से खेलेंगे और इन के विष से कोई हानि नहीं उठाएंगे। ये समस्त संकेत इसी बात की ओर हैं कि जब धार्मिक मतभेद समाप्त हो जाएंगे तो सहसा स्वाभाविक प्रेम का झरना जोश मारेगा। बैर और ईर्ष्या दूर हो जाएगी तथा द्वेष के विष निकल जाएंगे तथा एक भाई दूसरे भाई पर सुधारणा पैदा करेगा, तब इस्लाम के दिन पुन: सौभाग्य और वैभव की ओर लौटेंगे और सब मिलकर प्रयासरत होंगे कि इस्लाम का प्रसार किया जाए और मुसलमानों का बाहुल्य हो जिस प्रकार आजकल प्रयत्न हो रहा है कि मुसलमानों को यथासंभव कम कर दिया जाए तथा दुष्प्रकृति रखने वाले मौलवियों के आदेश और फ़त्वे इस्लाम धर्म से निकाल दिए जाएं और यदि इस्लाम के हज़ार लक्षण पाए जाएं तो उस से दृष्टि हटा कर कुफ्र का एक व्यर्थ और निराधार लक्षण निकाल कर उन्हें ऐसा काफ़िर ठहराया जाए कि जैसे वे हिन्दुओं और ईसाइयों से निकृष्टतर हैं। न केवल शरीअत के दुरुपयोग द्वारा यह प्रयास और परिश्रम प्रारंभ है अपितु ऐसे स्वभाव के लोगों को इल्हाम भी हो रहे हैं कि अमुक मुस्लिम काफ़िर है तथा अमुक मुस्लिम नारकी है और अमुक कुफ्र में ऐसा लीन है कि सद्मार्ग पर कदापि नहीं आएगा तथा हैवानियत के जोशों के कारण ला'नतों (अभिशापों) पर बड़ा बल दिया जाता है और एक-दूसरे पर ला'नत डालने के लिए मुसलमानों में परस्पर मुबाहले के फ़त्वे दिए जाते हैं और ये समस्त मुल्ला या यों कहो कि एक दूसरे को खाने वाले कीड़े इस बात के मर्म तक नहीं पहुंच सकते कि मुसलमानों के समस्त फ़िर्क़ों में आंशिक मतभेद जारी और प्रचलित हैं और किसी बात में कोई ग़लती पर है और किसी बात में कोई। अत: क्या यह मानवता है या सहानुभूति और दयाभाव में सम्मिलित है कि निर्णय का उपाय यह ठहराया जाए कि समस्त मुसलमान क्या, चारों इमामों के अनुयायी तथा क्या मुहद्दिसों के अनुयायी और क्या सूफ़ी लोग इन छोटे-छोटे मतभेदों के कारण मुबाहला के मैदान में आकर एक-दूसरे से ला'नत डालना आरंभ कर दें। अत: बुद्धिमान विचार कर सकता है कि यदि मुबाहला और ला'नत डालने के पश्चात् ख़ुदा के प्रकोप का अज़ाब दोषी सम्प्रदाय पर आना अनिवार्य है तो इसका इसके अतिरिक्त अन्य कोई परिणाम होगा

कि ख़ुदा तआला एक बार समस्त मुसलमानों को नष्ट कर देगा तथा अपनी-अपनी सोच-विचार की ग़लती के कारण सब तबाह किए जाएंगे। ये मूर्ख कहते हैं कि इब्ने मसऊद ने मुबाहले की याचना की थी उस से सिद्ध होता है कि मुसलमानों का परस्पर मुबाहला वैध है, परन्तु यह सिद्ध नहीं कर सकते कि इब्ने मसऊद अपनी उस बात से वापस नहीं हुआ और न यह सिद्ध कर सकते हैं कि मुबाहला के पश्चात् दोषियों पर यह अज़ाब आया था। सत्य बात यह है कि इब्ने मसऊद(रज़ि) एक साधारण व्यक्ति था। नबी और रसूल तो नहीं था। उसने जोश में आकर ग़लती की तो क्या उसकी बात को اِنۡ ھُوَ اِلَّا وَحۡیٌ یُّوۡحٰی में गिना जाए। सहाबा के विरोध और मत भेदों पर दृष्टि डालो जिन से प्राय: तलवार और भालों तक नौबत जा पहुंची थी। हज़रत मुआविया भी तो सहाबी ही थे जिन्होंने ग़लती पर दृढ़ होकर सहस्त्रों लोगों के वध कराए। यदि इब्ने मसऊद ने ग़लती की तो कौन सा प्रकोप आ गया। उसने निस्सन्देह यदि आंशिक मतभेदों पर मुबाहला का अनुरोध किया तो बड़ी ग़लती की जबकि सहाबी से अन्य बातों में गलती संभव है तो क्या मुबाहला के अनुरोध में गलती संभव नहीं। स्पष्ट है कि सहाबा में कितने अधिक मतभेद थे। कोई जस्सासा वाले दज्जाल को वादा दिया गया दज्जाल समझता था और कोई सौगन्ध खा कर कहता था कि इब्ने सय्याद ही दज्जाल है, कोई शारीरिक मे'राज को मानता था और कोई उसे स्वप्न कहता था और कोई कुछ क़ुर्आनी सूरतों को जैसे मुअव्वज़तैन* को पवित्र क़ुर्आन का भाग समझता था, कोई इस से बाहर समझता था। अत: क्या ये सब के सब सत्य पर थे। जब किसी से एक प्रकार की गलती हुई तो दूसरी प्रकार की ग़लती भी हो सकती है। यह कैसी अज्ञानता है कि सहाबी को ग़लती से पूर्णतया ग़लती और भूल से पवित्र समझा जाए तथा उसके अपने ही एक मात्र कथन को इस प्रकार स्वीकार किया जाए जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन स्वीकार करना चाहिए।

मुसलमानो ! आओ ख़ुदा से **शर्म करो** तथा अपनी मौलवियत और विद्वता का यह नमूना प्रदर्शित न करो। मुसलमान तो पहले ही बहुत कम हैं तुम इन को और

---

* सूरह अलफ़लक़, सूरह अन्नास (अनुवादक)

न घटाओ तथा काफ़िरों की संख्या न बढ़ाओ। यदि हमारे कहने का कुछ प्रभाव नहीं तो अपने ही छपे हुए लेखों को लज्जा के साथ देखो और उपद्रवजनक भाषणों से रुक जाओ।

पवित्र क़ुर्आन की वे तीस आयतें जिनसे मसीह इब्ने मरयम का मृत्यु प्राप्त होना सिद्ध होता है

(1) पहली आयत -

يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ*

अर्थात् हे ईसा मैं तुझे मृत्यु देने वाला हूं और फिर सम्मानपूर्वक अपनी ओर उठाने वाला और काफ़िरों के आरोपों से पवित्र करने वाला हूँ और तेरे अनुयायियों को तेरे इन्कार करने वालों पर प्रलय तक प्रभुत्व देने वाला हूं।

(2) दूसरी आयत - जो मसीह इब्ने मरयम की मृत्यु को सिद्ध करती है यह है

بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ**

अर्थात् मसीह इब्ने मरयम क़त्ल होकर, सलीब पर मृत्यु पाकर धिक्कृत और ला'नती लोगों की मौत से नहीं मरा जैसा कि ईसाइयों और यहूदियों का विचार है अपितु ख़ुदा तआला ने उसे सम्मान पूर्वक अपनी ओर उठा लिया। ज्ञात होना चाहिए कि यहां **रफ़ा** से अभिप्राय वह मृत्यु है जो सम्मानपूर्वक हो जैसा कि दूसरी आयत इसे सिद्ध करती है وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا (मरयम - 58) यह आयत हज़रत इदरीस के सन्दर्भ में है तथा कुछ सन्देह नहीं कि इस आयत के यही अर्थ हैं कि हमने इदरीस

* आले इमरान-56

** अन्निसा-159

को मृत्यु देकर ऊँचे स्थान में पहुंचा दिया क्योंकि यदि वह बिना मृत्यु के आकाश पर चढ़ गए तो फिर मृत्यु की आवश्यकता के कारण जो एक मनुष्य के लिए अनिवार्य बात है यह स्वीकार करना पड़ेगा कि या तो वह किसी समय ऊपर ही मृत्यु पा जाएं और या पृथ्वी पर आकर मृत्यु पाएं, परन्तु ये दोनों ही पक्ष निषेधक हैं, क्योंकि पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध है कि पार्थिव शरीर मृत्योपरान्त फिर मिट्टी में ही मिला दिया जाता है और मिट्टी की ओर ही लौटता है और मिट्टी से ही उसे उठाया जाएगा तथा इदरीस का पुन: पृथ्वी पर आना और दोबारा आकाश से उतरना क़ुर्आन और हदीस से सिद्ध नहीं। अत: यह बात सिद्ध है कि यहां **रफ़ा** से अभिप्राय मृत्यु है परन्तु ऐसी मृत्यु जो सम्मानपूर्वक हो जैसी कि सानिध्य प्राप्त लोगों की होती है कि मृत्योपरान्त उनकी रूहें (आत्माएं) आकाश पर रहने वाले फ़रिश्तों तक पहुंचाई जाती हैं :-

فِیْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِیْکٍ مُّقْتَدِرٍ*

(3) - तीसरी आयत जो हज़रत ईसा इब्ने मरयम की मृत्यु पर स्पष्ट तौर पर गवाही दे रही है यह है :-

فَلَمَّا تَوَفَّیْتَنِیْ کُنْتَ اَنْتَ الرَّقِیْبَ عَلَیْھِمْ**

अर्थात् जब तूने मुझे मृत्यु दी तो तू ही उन पर संरक्षक था। हम पहले सिद्ध कर आए हैं कि सम्पूर्ण पवित्र क़ुर्आन में तवफ़्फ़ा के अर्थ ये हैं कि रूह को क़ब्ज़ करना और शरीर को बेकार छोड़ देना। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि :-

قُلْ یَتَوَفّٰکُمْ مَّلَکُ الْمَوْتِ الَّذِیْ وُکِّلَ بِکُمْ***

और फिर फ़रमाता है :-

وَلٰکِنْ اَعْبُدُ اللّٰہَ الَّذِیْ یَتَوَفّٰکُمْ****

* अलक़मर-56

** अलमाइद:-118

*** अस्सज्दह-12

**** यूनुस-105

और फ़िर फ़रमाता है कि :-

حَتّٰى يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ*

और फ़िर फ़रमाता है :-

حَتّٰىٓ اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ**

और फिर फ़रमाता है :-

تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا***

इसी प्रकार पवित्र क़ुर्आन के तेईस स्थानों में निरन्तर तवफ़्फ़ा के अर्थ इमामत और रूह क़ब्ज़ करना है परन्तु खेद कि कुछ विद्वानों ने मात्र नास्तिकता और अक्षरांतरण की दृष्टि से यहां **तवफ़्फ़ैतनी** से अभिप्राय **रफ'अतनी** लिया है तथा इस ओर तनिक ध्यान नहीं दिया कि ये अर्थ न केवल शब्दकोश के विपरीत अपितु सम्पूर्ण क़ुर्आन के विपरीत हैं। अत: यही तो नास्तिकता है कि पवित्र क़ुर्आन ने जिन विशेष अर्थों को आरंभ से अन्त तक अनिवार्य रखा है उन्हें बिना किसी ठोस अनुकूलता के छोड़ दिया गया है। तवफ़्फ़ा का शब्द न केवल पवित्र क़ुर्आन में अपितु हदीसों के कई स्थानों में भी मृत्यु देने और रूह क़ब्ज़ करने के अर्थों में ही आता है। अत: जब मैंने ध्यानपूर्वक सिहाह सित्ता को देखा तो प्रत्येक स्थान पर हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुख से तवफ़्फ़ा का शब्द निकला है या किसी सहाबी के मुख से तो इन्हीं अर्थों में सीमित पाया गया। मैं दावे के साथ कहता हूँ कि किसी एक सही हदीस में भी तवफ़्फ़ा का कोई ऐसा शब्द नहीं मिलेगा जिसके कोई अन्य अर्थ हों। मैंने मालूम किया है कि इस्लाम में कब्ज़े रूह के लिए परिभाषा के तौर पर यह शब्द निर्धारित किया गया है ताकि रूह की अनश्वरता को सिद्ध करे।

* अन्निसा-16

** अलआराफ़-38

*** अलअन्आम-62

खेद कि कुछ उलेमा जब देखते हैं कि तवफ़्फ़ा के अर्थ वास्तव में मृत्यु देने के हैं तो फिर यह दूसरी व्याख्या प्रस्तुत करते हैं कि आयत فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ में जिस **तवफ़्फ़ा** की चर्चा है वह हज़रत ईसा के उतरने के बाद घटित होगी परन्तु आश्चर्य कि वह इतनी अधम व्याख्याएं करने से लेशमात्र भी शर्म नहीं करते। वे नहीं सोचते कि आयत فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ से पहले यह आयत है :-

وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ*

स्पष्ट है कि قَالَ का शब्द भूत काल है और उससे पहले اِذْ मौजूद है जो विशेष तौर पर भूतकाल के लिए आता है। जिस से यह सिद्ध होता है कि यह वृत्तान्त आयत उतरने के समय भूतकाल का एक वृत्तान्त था न कि भविष्य काल का। और इसी प्रकार जो उत्तर हज़रत ईसा की ओर से है अर्थात् فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ वह भी भूतकाल है और इस वृत्तान्त से पूर्व कुछ अन्य वृत्तान्त पवित्र क़ुर्आन में इसी ढंग से वर्णन किए गए हैं वे भी इन्हीं अर्थों के समर्थक हैं। उदाहरणतया यह वृत्तान्त -

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ جَاعِلٌ فِي الْاَرْضِ خَلِيْفَةً**

क्या इसके ये अर्थ करना चाहिए कि ख़ुदा तआला किसी भविष्यकाल में फ़रिश्तों से ऐसा प्रश्न करेगा। इसके अतिरिक्त पवित्र क़ुर्आन इस से भरा पड़ा है और हदीसें भी इसको सत्यापित करती हैं कि मृत्योपरान्त प्रलय से पूर्व भी बतौर पूछ ताछ प्रश्न हुआ करते हैं।

(4) - चौथी आयत जो मसीह की मृत्यु को सिद्ध करती है वह आयत यह है कि :-

اِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ***

और हम इसी पुस्तक में इसकी व्याख्या वर्णन कर चुके हैं।

---

* अलमाइद: 117

** अलबक़रह-31

*** अन्निसा-160

(5) **पांचवीं आयत** - पांचवीं यह आयत है :-

مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۗ وَ اُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ۗ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ *

अर्थात् मसीह केवल एक रसूल है उस से पहले नबी मृत्यु पा चुके हैं तथा उस की मां सिद्दीक़ा है जब वे दोनों जीवित थे तो भोजन खाया करते थे। यह आयत भी मसीह की मृत्यु पर स्पष्ट आदेश है क्योंकि इस आयत में स्पष्ट तौर पर वर्णन किया गया है कि अब हज़रत ईसा और उनकी मां मरयम खाना नहीं खाते, हां किसी युग में खाया करते थे, जैसा कि كَانَا का शब्द उसको सिद्ध कर रहा है जो वर्तमान को छोड़कर भूतकाल की ख़बर देता है। अब प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि हज़रत मरयम खाना खाने से इसीलिए रोकी गई कि वह मृत्यु पा गई और चूंकि كَانَا के शब्द में जो द्विवचन की विभक्ति है हज़रत ईसा भी हज़रत मरयम के साथ सम्मिलित हैं। और दोनों एक ही आदेश के अन्तर्गत हैं। अत: हज़रत मरयम की मृत्यु के साथ उनकी मृत्यु भी स्वीकार करना पड़ी, क्योंकि कथित आयत में यह कदापि वर्णन नहीं किया गया कि हज़रत मरयम तो मृत्यु के कारण खाने से रोकी गई परन्तु हज़रत इब्ने मरयम किसी अन्य कारण से और जब हम इस कथित आयत को इस दूसरी आयत के साथ मिला कर पढ़ें कि -

مَا جَعَلْنَاهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ **

जिसके अर्थ ये हैं कि हमने ऐसा कोई शरीर नहीं बनाया कि जीवित तो हो परन्तु खाना न खाता हो तो हम इस निश्चित और वास्तविक परिणाम तक पहुंच जाएंगे कि वास्तव में हज़रत मसीह मृत्यु पा गए क्योंकि पहली आयत से सिद्ध हो गया कि अब वह खाना नहीं खाते और दूसरी आयत बता रही है कि जब तक यह पार्थिव शरीर

---

* अलमाइद: 76

** अलअंबिया-9

जीवित है उसके लिए भोजन खाना आवश्यक है। इस से निश्चित तौर पर यही परिणाम निकलता है कि अब वह जीवित नहीं हैं।

(6) - छठी आयत यह है :-

وَمَا جَعَلْنَاهُمْ جَسَدًا لَّا يَأْكُلُوْنَ الطَّعَامَ*

इस आयत का पहली आयत के साथ अभी वर्णन हो चुका है और वास्तव में यही अकेली आयत मसीह की मृत्यु को पर्याप्त तौर पर सिद्ध कर रही है, क्योंकि जब कोई पार्थिव शरीर बिन भोजन के नहीं रह सकता। यही ख़ुदा का नियम है तो फिर हज़रत मसीह अब तक बिना भोजन के क्योंकर जीवित मौजूद है। अल्लाह तआला फ़रमाता है -

وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا**

और यदि कोई कहे कि अस्हाबे कहफ़ भी तो बिना भोजन के जीवित हैं तो मैं कहता हूं कि उनका जीवन भी इस संसार का जीवन नहीं। मुस्लिम की सौ वर्ष वाली हदीस उन्हें भी मार चुकी है। निस्सन्देह हम इस बात पर ईमान रखते हैं कि अस्हाबे कहफ़ भी शहीदों की भांति जीवित हैं इनका भी पूर्ण जीवन है परन्तु वे संसार के एक अपूर्ण और मलिन जीवन से मुक्ति पा गए हैं। सांसारिक जीवन क्या वस्तु है और क्या वास्तविकता। एक मूर्ख इसी को बड़ी वस्तु समझता है और प्रत्येक प्रकार के जीवन को जिसका पवित्र क़ुर्आन में उल्लेख है इसी को घसीटता चला जाता है, वह यह विचार नहीं करता कि सांसारिक जीवन तो एक निम्नस्तर का जीवन है जिसके बहुत अधम से हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी पनाह मांगी है जिसके साथ नितान्त अपवित्र और घृणास्पद साधन संलग्न हैं। यदि एक मनुष्य को इस घटिया जीवन से एक उत्तम जीवन प्राप्त हो जाए तथा ख़ुदा के नियम में अन्तर न

---

* अलअंबिया-9

** अलअहज़ाब-63

आए। अत: इस से अधिक और कौन सी विशेषता है।

(7) - सातवीं आयत यह है :-

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَاۡئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ*

अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक नबी हैं उन से पहले समस्त नबी मृत्यु प्राप्त कर चुके हैं अत: क्या वह भी मृत्यु को प्राप्त हो जाएं या मार दिए जाएं तो उनकी नुबुव्वत में कोई दोष आ आएगा जिसके कारण तुम धर्म से विमुख हो जाओ। इस आयत का सारांश यह है कि यदि नबी के लिए हमेशा जीवित रहना आवश्यक है तो पूर्व कालीन नबियों में से कोई ऐसा नबी प्रस्तुत करो जो अब तक जीवित मौजूद है। स्पष्ट है कि यदि मसीह इब्ने मरयम जीवित है तो ख़ुदा का प्रस्तुत किया गया यह सबूत सही नहीं होगा।

(8) - आठवीं आयत यह है :-

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ؕ اَفَاۡئِنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ﴿۳۵﴾**

अर्थात् हम ने तुझ से पूर्व किसी मनुष्य को हमेशा जीवित और एक अवस्था पर रहने वाला नहीं बनाया। अत: क्या यदि तू मृत्यु को प्राप्त हो गया तो ये लोग शेष रह जाएंगे। इस आयत का तात्पर्य यह है कि समस्त लोग खुदा के एक ही नियम के अधीन हैं तथा मृत्यु से कोई सुरक्षित नहीं रहा और न भविष्य में सुरक्षित रहेगा तथा शब्दकोश के अनुसार 'खुलूद' (हमेशा रहना) के अर्थ में यह बात निहित है कि हमेशा एक ही अवस्था में रहे क्योंकि परिवर्तन मृत्यु और पतन की भूमिका है। अत: ख़ुलूद को अस्वीकार करने से सिद्ध हुआ कि समय के प्रभाव से प्रत्येक व्यक्ति को मृत्यु की ओर जाना है तथा वृद्धावस्था की ओर लौटना और इस से मसीह इब्ने मरयम का समय की अधिकता के कारण और बयोवृद्ध हो जाने के

* आले इमरान-145

** अलअंबिया-35

कारण मृत्यु पा जाना सिद्ध होता है।

(9) - नौवीं आयत

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ لَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَ لَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ۔*

अर्थात् इस समय से पूर्व जितने पैग़म्बर हुए हैं यह एक वर्ग था जो मृत्यु पा चुका उनके कर्म उनके लिए और तुम्हारे कर्म तुम्हारे लिए तथा उनके कर्मों के लिए तुम से नहीं पूछा जाएगा।

(10) - दसवीं आयत

وَاَوْصَانِیْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا**

इसका विवरण हम इसी पुस्तक में वर्णन कर चुके हैं। इस से यह भी स्पष्ट है कि हज़रत ईसा को इंजील के नियमानुसार नमाज़ पढ़ने के लिए वसीयत की गई थी और वह आकाश पर ईसाइयों की तरह नमाज़ पढ़ते हैं तथा हज़रत यह्या उनकी नमाज़ की अवस्था में उनके पास यों ही पड़े रहते हैं, मुर्दे जो हुए और जब संसार में हज़रत ईसा आएंगे तो इस वसीयत के विपरीत उम्मती बनकर मुसलमानों के साथ नमाज़ पढ़ेंगे।

(11) - ग्यारहवीं आयत

وَالسَّلٰمُ عَلَیَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا***

इस आयत में बहुत बड़ी घटनाएं जो हज़रत मसीह के अस्तित्व के संबंध में थीं, केवल तीन का वर्णन किया गया है, हालांकि यदि 'रफ़ा' और 'नुज़ूल' सही घटनाओं में से हैं तो इनका वर्णन भी आवश्यक था। क्या

* अलबक़रह-135

** मरयम-32

*** मरयम-34

नऊज़ुबिल्लाह हज़रत मसीह का रफ़ा और नुज़ूल घटित होने तथा ख़ुदा की सलामती का स्थान नहीं होना चाहिए था। अत: यहां ख़ुदा तआला का उस 'रफ़ा' और नुज़ूल को छोड़ना जो मसीह इब्ने मरयम के संबंध में मुसलमानों के हृदयों में जमा हुआ है इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि वह विचार अधम और घटना के विपरीत है अपितु वह 'रफ़ा' يَوْمَ اَمُوْتُ में सम्मिलित है और नुज़ूल सर्वथा मिथ्या है।

(12) - बारहवीं आयत

وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ
لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا*

इस आयत में ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि तुम पर ख़ुदा का नियम दो ही प्रकार से जारी है। तुम में से कुछ स्वाभाविक आयु से पूर्व ही मृत्यु पा जाते हैं तथा कुछ स्वाभाविक आयु को पहुंचते हैं, यहां तक कि बहुत ही निकृष्ट आयु की ओर लौटाए जाते हैं और नौबत उस सीमा तक पहुंचती है कि ज्ञान के पश्चात् अज्ञान मात्र रह जाते हैं। यह आयत भी मसीह इब्ने मरयम की मृत्यु पर सबूत प्रस्तुत करती है, क्योंकि इससे सिद्ध होता है कि मनुष्य यदि अधिक आयु पाए तो नित्य प्रति निकृष्ट आयु की ओर गति करता है यहां तक कि बच्चे की तरह अज्ञानमात्र हो जाता है और फिर मृत्यु पा जाता है।

(13) - तेरहवीं आयत यह है :-

وَلَكُمْ فِى الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ**

अर्थात् तुम अपने पार्थिव शरीर के साथ पृथ्वी पर ही रहोगे यहां तक कि अपने लाभ-प्राप्ति के दिन पूर्ण करके मृत्यु को प्राप्त हो जाओगे। यह आयत पार्थिव शरीर को आकाश पर जाने से रोकती है, क्योंकि यहां لَكُمْ (लकुम) विशेष्य का लाभ

* अलहज्ज-6

** अलबक़रह-37

देता है जो इस बात पर स्पष्टता पूर्वक सबूत प्रस्तुत कर रहा है कि पार्थिव शरीर आकाश पर नहीं जा सकता अपितु पृथ्वी से ही निकला और पृथ्वी में ही रहेगा और पृथ्वी में ही मिल जाएगा।

(14) - चौदहवीं आयत यह है :-

وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِى الْخَلْقِ*

अर्थात् जिसे हम अधिक आयु देते हैं तो उसकी पैदायश को उल्टा देते हैं अर्थात् उस से उसकी मानव शक्तियां और ताक़तें दूर हो जाती हैं, उसकी ज्ञानेन्द्रियों में विकार आ जाता है, उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। अत: यदि मसीह इब्ने मरयम के बारे में मान लिया जाए कि अब तक पार्थिव शरीर के साथ जीवित हैं तो यह स्वीकार करना पड़ेगा कि एक दीर्घ अवधि के कारण उनकी मानव-शक्तियों में पूर्णतया अन्तर आ गया होगा और यह अवस्था स्वयं मृत्यु को चाहती है तथा निश्चित तौर पर स्वीकार करना पड़ता है कि बहुत समय पूर्व वह मृत्यु पा चुके होंगे।

(15) - पन्द्रहवीं आयत यह है :-

اَللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّ شَيْبَةً **

अर्थात् ख़ुदा वह ख़ुदा है जिसने तुम्हें कमज़ोरी से पैदा किया फिर कमज़ोरी के पश्चात शक्ति प्रदान कर दी, फिर शक्ति के पश्चात् कमज़ोरी और वृद्धावस्था प्रदान की। यह आयत भी स्पष्ट तौर पर इस बात को सिद्ध कर रही है कि कोई भी मनुष्य इस प्रकृति के नियम से बाहर नहीं तथा प्रत्येक सृष्टि इस नियम की परिधि के अन्दर है कि समय उसकी आयु को प्रभावित कर रहा है यहां तक कि समय के प्रभाव से वह बयोवृद्ध जर्जर हो जाता है और फिर मृत्यु पा जाता है।

---

* यासीन-69

** अर्रूम-55

(16) - सोलहवीं आयत यह है :-

اِنَّمَا مَثَلُ الْحَیٰوۃِ الدُّنْیَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰہُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِہٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ *

अर्थात् इस भौतिक जीवन का उदाहरण उस पानी जैसा है जिसे हम आकाश से उतारते हैं फिर पृथ्वी का हरियाली का उगना उस से मिल जाता है अर्थात् खेती की भांति मनुष्य पैदा होता है। प्रथम पूर्णता की ओर अग्रसर होता है फिर उसका पतन होता जाता है क्या इस प्रकृति के नियम से मसीह बाहर रखा गया है।

(17) - सत्रहवीं आयत

ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ**

अर्थात् प्रथम अल्लाह तआला तुम्हें शनैः शनैः कमाल तक पहुंचाता है फिर तुम अपना कमाल पूर्ण करने के पश्चात पतन की ओर लौटते हो यहां तक मृत्यु को प्राप्त हो जाते हो अर्थात् तुम्हारे लिए ख़ुदा तआला की ओर से यही प्रकृति का नियम है, कोई मानव इस से बाहर नहीं। हे सामर्थ्यवान ख़ुदावन्द अपने इस प्रकृति के नियम के समझने के लिए इन लोगों को भी आंख प्रदान कर जो मसीह इब्ने मरयम को इस से बाहर समझते हैं।

(18) - अठारहवीं आयत

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ فِى الْاَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطَامًا. اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ***

इन आयतों में भी उदाहरणतया यह स्पष्ट किया गया है कि मनुष्य खेती की

* यूनुस-25

** अलमोमिनून-16

*** अज़्ज़ुमर-22

तरह शनै: शनै: अपनी आयु को पूर्ण कर लेता है और फिर मर जाता है।

(19) - उन्नीसवीं आयत यह है :-

وَمَآ اَرۡسَلۡنَا قَبۡلَكَ مِنَ الۡمُرۡسَلِيۡنَ اِلَّاۤ اِنَّهُمۡ لَيَاۡكُلُوۡنَ الطَّعَامَ وَيَمۡشُوۡنَ فِى الۡاَسۡوَاقِ*

अर्थात् हमने तुझ से पूर्व जितने रसूल भेजे हैं वे सब खाना खाया करते थे तथा बाज़ारों में फिरते थे। इस आयत से यह सिद्ध होता है कि अब वे समस्त नबी न खाना खाते हैं और न बाज़ारों में फिरते हैं। हम पहले क़ुर्आन के स्पष्ट आदेश से सिद्ध कर चुके हैं कि सांसारिक जीवन के साधनों में से भोजन का खाना है। अत: चूंकि वे समस्त नबी अब भोजन नहीं खाते। अत: इस से सिद्ध होता है कि वे समस्त मृत्यु पा चुके हैं जिन में बतौर अवलंबन वाक्य हज़रत मसीह भी सम्मिलित हैं।

(20) - बीसवीं आयत यह है :-

وَالَّذِيۡنَ يَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ لَا يَخۡلُقُوۡنَ شَيۡـًٔا وَّهُمۡ يُخۡلَقُوۡنَ اَمۡوَاتٌ غَيۡرُ اَحۡيَآءٍ ۚ وَمَا يَشۡعُرُوۡنَ ۙ اَيَّانَ يُبۡعَثُوۡنَ ۔ **

अर्थात् जो लोग अल्लाह के अतिरिक्त उपासना किए जाते और पुकारे जाते हैं वे कोई वस्तु पैदा नहीं कर सकते अपितु स्वयं उत्पन्न हैं, मर चुके हैं जीवित भी तो नहीं हैं और नहीं जानते कि कब उठाए जाएंगे। देखो ये आयतें कितनी स्पष्टता से मसीह और उन समस्त मनुष्यों की मृत्यु को सिद्ध कर रही हैं जिन्हें यहूदी ईसाई तथा अरब के कुछ सम्प्रदाय अपना उपास्य ठहराते थे तथा उनसे दुआएं मांगते थे। यदि अब भी आप लोग मसीह इब्ने मरयम की मृत्यु हो चुकने को स्वीकार नहीं करते तो सीधे तौर पर यह क्यों नहीं कह देते कि हमें पवित्र क़ुर्आन को मानने में आपत्ति है। पवित्र क़ुर्आन की आयतें सुन कर फिर वहीं ठहर न जाना क्या ईमानदारों का कार्य है।

* अलफ़ुर्क़ान-21

** अन्नहल-21,22

(21) - इक्कीसवीं आयत यह है :-

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنۡ رِّجَالِكُمۡ وَ لٰكِنۡ
رَّسُوۡلَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ*

अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम में से किसी पुरुष का बाप नहीं है परन्तु वह ख़ुदा का रसूल है और ख़तम करने वाला नबियों का। यह आयत भी स्पष्ट तौर पर सिद्ध कर रही है कि हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात् संसार में कोई रसूल नहीं आएगा। अत: इससे भी पूर्ण स्पष्टता के साथ सिद्ध है कि मसीह इब्ने मरयम ख़ुदा का रसूल संसार में नहीं आ सकता क्योंकि मसीह इब्ने मरयम रसूल है और रसूल की वास्तविकता और विशेषता में यह बात सम्मिलित है कि धार्मिक ज्ञानों को जिब्राईल के माध्यम से प्राप्त करे तथा अभी सिद्ध हो चुका है कि अब रिसालत की वह्यी प्रलय तक समाप्त है इस से अनिवार्य तौर पर यह स्वीकार करना पड़ता है कि मसीह इब्ने मरयम कदापि नहीं आएगा तथा यह बात स्वयं इस बात के लिए अनिवार्य है कि वह मृत्यु पा चुका तथा यह विचार कि वह मृत्यु के पश्चात् पुन: जीवित हो गया विरोधी को कोई लाभ नहीं पहुंचा सकती, क्योंकि यदि वह जीवित भी हो गया तथापि उसका रसूल होना जो उसके लिए अनिवार्य अविच्छिन्न है उसे संसार में आने से रोकता है। इसके अतिरिक्त हम वर्णन कर चुके हैं कि मसीह का मृत्योपरान्त जीवित होना इस प्रकार का नहीं जैसा कि विचार किया गया है अपितु शहीदों के जीवन के समान है जिसमें सानिध्य और कमाल के पद प्राप्त होते हैं। इस प्रकार के जीवन का पवित्र क़ुर्आन में अनेकों स्थानों पर वर्णन है। अत: हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के मुख से यह आयत पवित्र क़ुर्आन में लिखी है :-

وَ الَّذِیۡ یُمِیۡتُنِیۡ ثُمَّ یُحۡیِیۡنِ**

अर्थात् वह ख़ुदा जो मुझे मृत्यु देता है और फिर मुझे जीवित करता है। इस मृत्यु

* अलअहज़ाब-41

** अश्शोअरा-82

और जीवन से अभिप्राय केवल शारीरिक मृत्यु और जीवन नहीं अपितु उस मृत्यु और जीवन की ओर संकेत है जो साधक को अपनी साधना के स्तरों और श्रेणियों में जिन से गुज़रना होता है। अत: वह सृष्टि के व्यक्तिगत प्रेम से मारा जाता है तथा वास्तविक स्रष्टा के व्यक्तिगत प्रेम के साथ जीवित किया जाता है, फिर अपने मित्रों के व्यक्तिगत प्रेम से मारा जाता है और उच्चतम मित्र (ख़ुदा) के व्यक्तिगत प्रेम के साथ जीवित किया जाता है और फिर स्वयं के व्यक्तिगत प्रेम से मारा जाता है तथा वास्तविक प्रियतम के व्यक्तिगत प्रेम के साथ जीवित किया जाता है। इसी प्रकार उस पर कई मौतें आती रहती हैं और कई जीवन, यहां तक कि पूर्ण जीवन के पद तक पहुंच जाता है। अत: वह पूर्ण जीवन जो इस अधम संसार को छोड़ने के पश्चात मिलता है वह पार्थिव शरीर का जीवन नहीं अपितु एक अन्य रंग और प्रतिष्ठा का जीवन है। अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

وَ اِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِیَ الْحَیَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا یَعْلَمُوْنَ*

(भाग-21)

(22) बाईसवीं आयत यह है :-

فَسْـَٔلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ**

अर्थात् तुम्हें उन कुछ बातों का ज्ञान न हो जो तुम में पैदा हों तो अहले किताब की ओर जाओ और उनकी किताबों की घटनाओं पर दृष्टि डालो ताकि तुम पर मूल वास्तविकता प्रकट हो जाए। अत: जब हमने इस आयत के आदेशानुसार अहले किताब अर्थात् यहूदियों और ईसाइयों की किताबों को देखा और ज्ञात करना चाहा कि क्या यदि किसी पूर्वकालीन नबी के आने का वादा दिया गया हो तो वही आ जाता है या ऐसी इबारतों के कुछ और अर्थ होते हैं तो ज्ञात हुआ कि इसी विवादित बात के अनुरूप हज़रत मसीह इब्ने मरयम का एक मुक़द्दमा का आप ही फ़ैसला

* अलअन्कबूत-65

** अन्नहल-44

कर चुके हैं तथा उनके फ़ैसले की हमारे फ़ैसले के साथ सहमति है। देखो किताब 'सलातीन' व किताब 'मलाकी नबी' तथा इन्जील कि एलिया का आसमान से दोबारा उतरना हज़रत मसीह ने किस प्रकार से वर्णन किया है।

(23) तेईसवीं आयत

يٰاَيَّتُهَا النَّفۡسُ الۡمُطۡمَئِنَّةُ ﴿۲۸﴾ ارۡجِعِيۡۤ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرۡضِيَّةً ﴿۲۹﴾ فَادۡخُلِىۡ فِىۡ عِبٰدِىۡ ﴿۳۰﴾ وَ ادۡخُلِىۡ جَنَّتِىۡ ﴿۳۱﴾ *

अर्थात् हे आराम प्राप्त मनोवृत्ति (सात्विक मनोवृत्ति) अपने प्रतिपालक की ओर वापस चली आ। तू उस से प्रसन्न तथा वह तुझ से प्रसन्न। तत्पश्चात् मेरे उन बन्दों में सम्मिलित हो जा जो संसार को छोड़ गए हैं और मेरे स्वर्ग के अन्दर आ। इस आयत से साफ़ प्रकट है कि मनुष्य जब तक मृत्युप्राप्त न हो जाए पहले लोगों की जमाअत में कदापि सम्मिलित नहीं हो सकता, परन्तु मे'राज की हदीस से जिसे बुख़ारी ने भी अपनी सही में विस्तारपूर्वक लिखा है, सिद्ध हो गया है कि हज़रत मसीह इब्ने मरयम मृत्यु प्राप्त नबियों की जमाअत में सम्मिलित है। अत: इस नितान्त स्पष्ट आदेश की दृष्टि से स्पष्ट सबूत के अनुसार मसीह इब्ने मरयम का मर जाना आवश्यक तौर पर मानना पड़ा।

اٰمَنَّا بِكِتَابِ اللّٰهِ القرانِ الكريمِ و كَفَرنا بِكُلِّ ما يخالِفهٗ اَيُّها النَّاس اتَّبِعُوۡا مَا انزل اِلَيۡكُمۡ مِنۡ رَّبِّكُمۡ وَلَا تَتَّبِعُوۡا مِنۡ دُوۡنِهٖۤ اَوۡلِيَاء۔ قَدۡ جَاءَتۡكُمۡ مَّوۡعِظَةٌ مِّنۡ رَبِّكُمۡ وَشِفَاءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوۡرِ۔ فَاتَّبِعُوۡهُ وَلَا تَتَّبِعُوۡا السُّبُلَ فتفرق بِكُمۡ عَنۡ سَبِيۡلِهٖ۔

(24) चौबीसवीं आयत यह है :-

اَللّٰهُ الَّذِىۡ خَلَقَكُمۡ ثُمَّ رَزَقَكُمۡ ثُمَّ يُمِيۡتُكُمۡ ثُمَّ يُحۡيِيۡكُمۡ **

* अलफ़ज्र-28 से 31

** अर्रूम-41

इस आयत में अल्लाह तआला अपना प्रकृति का नियम यह बताता है कि मानव जीवन में केवल चार घटनाएं हैं। प्रथम वह पैदा किया जाता है फिर पूर्णता और प्रशिक्षण के लिए आध्यात्मिक और भौतिक तौर पर उसे उसके भाग की आजीविका मिलती है फिर उस पर मृत्यु आती है फिर वह जीवित किया जाता है। अत: स्पष्ट है कि इन आयतों में कोई ऐसा अपवाद स्वरूप वाक्य नहीं जिसके अनुसार मसीह की विशेष घटनाएं बाहर रखी गई हों, हालांकि पवित्र क़ुर्आन प्रारंभ से अन्त तक यह अनिवार्यता रखता है कि यदि किसी घटना का वर्णन करते समय कोई मानव सदस्य बाहर निकालने के योग्य हो तो उस को उस व्यापक नियम से तुरन्त बाहर निकाल लेता है अथवा उसकी विशेष घटनाओं का वर्णन कर देता है।

(25) पच्चीसवीं आयत यह है :-

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿٢٧﴾ وَّ يَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَ الْاِكْرَامِ ﴿٢٨﴾*

अर्थात् प्रत्येक वस्तु जो पृथ्वी में विद्यमान है और पृथ्वी से निकलती है वह विनाशोन्मुख है अर्थात् प्रतिपल मरण की ओर जा रही है। तात्पर्य यह कि प्रत्येक पार्थिव शरीर की विनाश की ओर गति है तथा कोई समय उस गति से रिक्त नहीं। वही गति बच्चे को युवा कर देती है और युवा को वृद्ध और वृद्ध को क़ब्र में डाल देती है तथा प्रकृति के इस नियम से कोई बाहर नहीं। फ़ान का शब्द चुना 'यफ़्ना' नहीं कहा ताकि ज्ञात हो कि फ़ना ऐसी वस्तु नहीं कि किसी भावी युग में अचानक घटित होगी अपितु फ़ना (मरण) का क्रम साथ-साथ जारी है, परन्तु हमारे मौलवी यह विचार कर रहे हैं कि मसीह इब्ने मरयम इस नश्वर शरीर के साथ जिसमें स्पष्ट आदेशानुसार प्रतिपल फ़ना कार्यरत है बिना किसी परिवर्तन के आकाश पर बैठा है और समय का उस पर कुछ प्रभाव नहीं होता, हालांकि अल्लाह तआला ने इस आयत में भी मसीह को पृथ्वी की समस्त वस्तुओं में से अपवाद नहीं ठहराया। हे

* अर्रहमान-27, 28

मौलवी साहिबान ! कहां गया तुम्हारा एकेश्वरवाद और कहां गए पवित्र क़ुर्आन की आज्ञाकारिता के वे लम्बे चौड़े दावे। क्या तुम्हारे अन्दर कोई ऐसा व्यक्ति है जिसके हृदय में लेशमात्र क़ुर्आन की श्रेष्ठता हो?

(26) छब्बीसवीं आयत

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّ نَهَرٍ ﴿۵۵﴾ فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿۵۶﴾ *

अर्थात् संयमी लोग जो ख़ुदा तआला से डर कर हर प्रकार की उद्दण्डता को त्याग देते हैं वे मृत्योपरान्त बाग़ों और नहर में हैं ऐसे स्थान में जो शाश्वत होगा शक्ति रखने वाले बादशाह के पास। अत: इन आयतों की दृष्टि बिल्कुल स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला ने स्वर्ग में प्रवेश तथा शाश्वत स्थान में परस्पर अनिवार्यता रखी है अर्थात् ख़ुदा तआला के पास पहुंचना तथा स्वर्ग में प्रवेश करना परस्पर अनिवार्य ठहराया गया है। अत: यदि رَافِعُكَ اِلَيَّ के यही अर्थ हैं कि मसीह ख़ुदा तआला की ओर उठाया गया तो निस्सन्देह वह स्वर्ग में भी प्रवेश कर गया जैसा कि दूसरी आयत अर्थात् ** اِرْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ जो رَافِعُكَ اِلَيَّ के समानार्थक है स्पष्ट तौर पर इसी को सिद्ध कर रही है जिस से सिद्ध होता है कि ख़ुदा तआला की ओर उठाया जाना तथा पूर्व कालीन सानिध्य प्राप्त लोगों की जमाअत में सम्मिलित हो जाना तथा स्वर्ग में प्रवेश कर जाना ये तीनों अर्थ एक ही क्षण में पूरे हो जाते हैं। अत: इस आयत से भी मसीह इब्ने मरयम का मृत्यु प्राप्त होना ही सिद्ध हुआ। समस्त प्रशंसा उस ख़ुदा के लिए हैं जिसने सत्य को स्थापित किया और असत्य का खंडन किया और अपने बन्दे की सहायता की तथा अपने नबी का समर्थन किया।

(27) सत्ताईसवीं आयत यह है :-

اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰٓى ۙ اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ﴿۱۰۲﴾

---

* अलक़मर-55,56

** अलफ़ज्र-29

لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿۱۰۳﴾ *

अर्थात् जो लोग स्वर्ग वाले हैं तथा उन का स्वर्गीय होना हमारी ओर से निर्णय पा चुका है वे नर्क से दूर किए गए हैं और वे स्वर्ग के शाश्वत आनन्दों में हैं। इस आयत से अभिप्राय हज़रत उज़ैर और हज़रत मसीह हैं और उनका स्वर्ग में प्रवेश करना। इससे सिद्ध होता है जिस से उनकी मृत्यु का हो जाना पूर्ण सबूत को पहुंचता है।

(28) अट्ठाईसवीं आयत

اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ
فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ**

अर्थात् तुम जहां हो मृत्यु तुम्हें आ पकड़ेगी यद्यपि तुम नितान्त ऊँचे गुम्बदों में निवास करो। इस आयत से भी स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि मौत और मौत के सामान पार्थिव शरीर पर प्रत्येक स्थान पर आ जाते हैं। यही ख़ुदा का नियम है तथा यहां भी अपवाद के तौर पर कोई ऐसी इबारत अपितु एक ऐसा वाक्य भी नहीं लिखा गया है जिस से मसीह बाहर रह जाता। अत: नि:सन्देह ये स्पष्ट आदेश के संकेत भी मसीह इब्ने मरयम की मृत्यु हो चुकने को सिद्ध कर रहे हैं। मौत का पीछा करने से अभिप्राय समय का प्रभाव है जो कमज़ोरी तथा वृद्धावस्था या रोग विपत्ति और मृत्यु इस से सृष्टि का कोई सदस्य रिक्त नहीं।

(29) उन्तीसवीं आयत

وَمَآ اٰتٰكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ وَمَا نَهٰكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا***

अर्थात् रसूल तुम्हें जो कुछ ज्ञान और मा'रिफ़त प्रदान करे वह ले लो और जिस से रोके उसे त्याग दो। इसलिए अब हम इस ओर ध्यान देते हैं कि रसूलुल्लाह

* अलअंबिया-102, 103

** अन्निसा-79

*** अलहश्र-8

स.अ.व.ने इस संबंध में क्या फ़रमाया है। अत: सर्वप्रथम वह हदीस सुनो जो 'मिश्कात' में अबू हुरैरा रज़ि. से रिवायत है और वह यह है :-

وَعَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَعْمَارُ اُمَّتِیْ ما بَیْنَ السِّتِّیْنِ اِلَی السَّبْعِیْنِ واقلّھم من یجوز ذٰلِكَ رَوَاهُ التِّرْمِذِی وابن ماجه

अर्थात् मेरी उम्मत की अधिकतर उम्रें साठ से सत्तर वर्ष तक होंगी और ऐसे लोग बहुत कम होंगे जो इस से आगे निकलें। यह स्पष्ट है कि हज़रत मसीह इब्ने मरयम इस उम्मत के अन्दर ही आ गए हैं, फिर इतना अन्तर क्योंकर संभव है कि अन्य लोग तो सत्तर वर्ष तक मुश्किल से पहुंचें तथा उनकी यह दशा हो कि दो हज़ार के लगभग इनके जीवन के वर्ष गुज़र गए और अब तक मरने में नहीं आते अपितु वर्णन किया जाता है कि संसार में आकर पुन: चालीस या पैंतालीस वर्ष जीवित रहेंगे।

फिर दूसरी हदीस मुस्लिम की है जो जाबिर से रिवायत की गई है और वह यह है :-

وعن جابر قال سمعتُ النَّبِیَّ صلی اللّٰہ علیه وسلَّم یقول قبل اَنْ یَّمُوْتَ بشھرٍ تسئلونی عن الساعة وانَّما علمها عند اللّٰہ واقسم باللّٰہ ماعلی الارض من نفسٍ مَّنفوسة یاتی علیھا مائة سنة وھیَ حیة رواہُ مسلم

और जाबिर से रिवायत है कहा कि मैंने रसूलुल्लाह स.अ.व. से सुना कि वह क़सम खा कर फ़रमाते थे कि पृथ्वी पर कोई ऐसा प्राणी नहीं कि उस पर सौ वर्ष गुज़रे और वह जीवित रहे। इस हदीस के अर्थ ये हैं कि जो व्यक्ति पृथ्वी की सृष्टियों में से हो वह व्यक्ति सौ वर्ष के पश्चात् जीवित नहीं रहेगा और पृथ्वी को विशेष करने का तात्पर्य यह है कि ताकि आकाश की सृष्टि इस से बाहर निकाल दी जाए,

परन्तु स्पष्ट है कि हज़रत मसीह इब्ने मरयम आसमान की सृष्टियों में से नहीं हैं अपितु वह पृथ्वी की सृष्टियों तथा जो पृथ्वी पर है में सम्मिलित हैं। हदीस का अभिप्राय यह नहीं कि यदि कोई पार्थिव शरीर पृथ्वी पर रहे तो मृत्यु पा जाएगा और यदि आकाश पर चला जाए तो मृत्यु नहीं पाएगा क्योंकि पार्थिव शरीर का आकाश पर जाना तो स्वयं क़ुर्आनी स्पष्ट आदेशानुसार वर्जित है अपितु हदीस का अभिप्राय यह है कि जो पृथ्वी पर पैदा हुआ और मिट्टी में से निकला वह किसी प्रकार सौ वर्ष से अधिक नहीं रह सकता।

(30) तीसवीं आयत यह है :-

اَوْ تَرْقٰى فِى السَّمَآءِ ---- قُلْ سُبْحَانَ رَبِّىْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا*

अर्थात् काफ़िर कहते हैं कि तू आकाश पर चढ़कर हमें दिखा तब हम ईमान ले आएंगे। इन्हें कह दे कि मेरा ख़ुदा इस से पवित्रतम है कि इस परीक्षागृह में ऐसे खुले-खुले निशान दिखाए और मैं इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं हूं कि एक मनुष्य हूं। इस आयत से बिल्कुल स्पष्ट है कि काफ़िरों ने आंहज़रत स.अ.व. से आकाश पर चढ़ने का निशान मांगा था तथा उन्हें स्पष्ट उत्तर मिला कि यह ख़ुदा का नियम नहीं कि किसी पार्थिव शरीर को आकाश पर ले जाए। अत: यदि पार्थिव शरीर के साथ इब्ने मरयम का आकाश पर जाना सही मान लिया जाए तो यह उपरोक्त उत्तर सख़्त आरोप योग्य ठहरेगा तथा ख़ुदा के कलाम में विरोधाभास और मतभेद अनिवार्य हो जाएगा। अत: निश्चित और वास्तविक यही बात है कि हज़रत मसीह पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर नहीं गए अपितु मृत्योपरान्त आकाश पर गए हैं। भला हम इन लोगों से पूछते हैं कि क्या मृत्योपरान्त हज़रत यह्या; हज़रत आदम, हज़रत इदरीस, हज़रत इब्राहीम, और हज़रत यूसुफ इत्यादि आकाश पर उठाए गए थे या नहीं। यदि नहीं उठाए गए तो फिर क्योंकर मे'राज की रात में आँहज़रत स.अ.व. ने इन सब को आकाश में देखा और यदि उठाए गए थे तो फिर अकारण मसीह इब्ने मरयम के रफ़ा के अर्थ अन्य प्रकार से क्यों किए जाते हैं। आश्चर्य है कि तवफ़्फ़ा

* बनी इस्राईल-94

का शब्द जो स्पष्ट तौर पर मृत्यु को सिद्ध करता है उनके पक्ष में अनेकों स्थानों पर मौजूद है और उठाए जाने का नमूना भी निर्विवाद तौर पर प्रकट है, क्योंकि वह उन्हीं मृत्यु-प्राप्त लोगों में जा मिले जो उन से पूर्व उठाए गए थे। यदि कहो कि वे लोग नहीं उठाए गए तो मैं कहता हूँ कि वे फिर आकाश में क्योंकर पहुंच गए। जब उठाए गए तभी तो आकाश में पहुंचे। क्या तुम पवित्र क़ुर्आन में यह आयत नहीं पढ़ते وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا क्या यह वही रफ़ा नहीं है जो मसीह के बारे में आया है? क्या उसके उठाए जाने के अर्थ नहीं हैं। तुम कहां बहकाए जाते हो।

ग़ज़नवी सज्जनों और मौलवी मुहियुद्दीन के इल्हामों के बारे में कुछ संक्षिप्त लेख

मियां अब्दुल हक़ साहिब ग़ज़नवी और मौलवी मुहियुद्दीन लखूखेवाले इस ख़ाकसार के बारे में लिखते हैं कि हमें इल्हाम हुआ है कि यह व्यक्ति नारकी है। अत: अब्दुल हक़ साहिब के इल्हाम में तो स्पष्ट سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ मौजूद है और मुहियुद्दीन साहिब को यह इल्हाम हुआ है कि यह व्यक्ति ऐसा नास्तिक और काफ़िर है कि कदापि हिदायत पर नहीं आएगा। स्पष्ट है कि जिस काफ़िर के कार्य का परिणाम कुफ्र ही हो वह भी नारकी ही होता है। अत: इन दोनों सज्जनों ने कि ख़ुदा इन्हें स्वर्ग प्रदान करे इस ख़ाकसार के बारे में नर्क और कुफ्र का फ़त्वा दे दिया और अपने इल्हामों को बड़े ज़ोर से प्रकाशित कर दिया। हम यहां इन साहिबों के इल्हामों के बारे में कुछ अधिक लिखना आवश्यक नहीं समझते, केवल इतना लिखना पर्याप्त है कि इल्हाम रहमानी (ख़ुदाई) भी होता है और शैतानी भी। जब मनुष्य अपने मन और विचार को हस्तक्षेप देकर किसी बात के प्रकटन के लिए इस्तिख़ारा और इस्तिख़बार आदि के तौर पर ध्यान करता है विशेषकर उस अवस्था में कि जब उसके हृदय में यह मनोकामना गुप्त होती है कि मेरी इच्छानुसार किसी के बारे में कोई बुरा या भला वाक्य बतौर इल्हाम मुझे मालूम हो जाए तो शैतान उस

समय उसकी मनोकामना में हस्तक्षेप करता है और उसकी जीभ पर कोई वाक्य जारी हो जाता है, वास्तव में वह शैतानी वाक्य होता है। यह हस्तक्षेप कभी नबियों और रसूलों की वह्यी में भी हो जाता है, परन्तु वह अविलम्ब निकाला जाता है। अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन में इसी की ओर संकेत करता है :-

وَمَآ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ مِنۡ رَّسُوۡلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّاۤ اِذَا تَمَنّٰۤى اَلۡقَى الشَّيۡطٰنُ فِىۡۤ اُمۡنِيَّتِهٖ*

इसी प्रकार इंजील में भी लिखा है कि शैतान अपना रूप नूरी फ़रिश्तों के साथ बदलकर, कुछ लोगों के पास आ जाता है। देखो पत्र द्वितीय क्रान्तियान, अध्याय-11, आयत-14 तथा तौरात के संग्रह में से सलातीन प्रथम, अध्याय-22, आयत-19 में लिखा है कि एक बादशाह के समय में चार सौ नबियों ने उसकी विजय के बारे में भविष्यवाणी की और वे झूठे निकले और बादशाह को पराजय हुई अपितु वह उसी मैदान में मर गया। इसका कारण यह था कि वास्तव में वह इल्हाम एक अपवित्र रह की ओर से था। नूरी फ़रिश्ते की ओर से नहीं था तथा इन नबियों ने धोखा खाकर रब्बानी इल्हाम समझ लिया था। अत: विचार करना चाहिए कि जिस अवस्था में पवित्र क़ुर्आन की दृष्टि से इल्हाम और वह्यी में शैतानी हस्तक्षेप संभव है तथा पूर्वकालीन किताबें तौरात और इंजील इस हस्तक्षेप का सत्यापन करती और इसी आधार पर इल्हाम-ए-विलायत (वली होने का इल्हाम) या सामान्य मोमिनों का इल्हाम पवित्र क़ुर्आन की सहमति और अनुकूलता के बिना सबूत भी नहीं तो फिर दर्शकों के लिए विचार करने का स्थान है कि क्योंकर और किन स्पष्ट लक्षणों से मियां अब्दुल हक़ साहिब और मियां मुहियुद्दीन साहिब ने अपने इल्हामों को रहमानी इल्हाम समझ लिया है। उन के इल्हामों का सारांश यह है कि जो व्यक्ति ईसा इब्ने मरयम की मृत्यु का इक़रार करता हो और संसार में उन्हीं का पुनरागमन स्वीकार न करे वह काफ़िर है, परन्तु पाठक अब इस पुस्तक को पढ़कर बतौर पूर्ण

---

* अलहज्ज-51

विश्वास समझ जाएंगे कि वास्तव में मूल बात जो पवित्र क़ुर्आन से प्रकट हो रही है यही है कि निश्चय ही हज़रत मसीह इब्ने मरयम मृत्यु को ही प्राप्त हो गए तथा मृत्यु पा चुके लोगों की जमाअत में सैकड़ों वर्षों से सम्मिलित हैं। अत: मियां मुहियुद्दीन और मियां अब्दुल हक़ से शैतानी इल्हाम की बड़ी भारी निशानी यह निकल आई कि उन के इस विचार को पवित्र क़ुर्आन झुठलाता है तथा नंगी तलवार लेकर मुक़ाबला कर रहा है। अत: इससे निश्चित तौर पर सिद्ध हो गया कि धोखेबाज़ शैतान ने किसी आन्तरिक अनुकूलता के कारण इन दोनों सज्जनों को इस्तिख़ारे के समय जा पकड़ा तथा पवित्र क़ुर्आन की इच्छा के विपरीत उन्हें शिक्षा दी। भला यदि इन सज्जनों के ये इल्हाम सच्चे हैं तो अब पवित्र क़ुर्आन के अनुसार मसीह इब्ने मरयम का जीवित होना सिद्ध करके दिखाएं तथा हम दस या बीस आयतों की मांग नहीं करते जीवित होने के बारे में केवल एक आयत ही प्रस्तुत करें तथा जिस फ़रिश्ते ने इस ख़ाकसार के नारकी या काफ़िर होने के बारे में इनके कानों तक अविलम्ब दो-तीन वाक्य पहुंचा दिए थे, अब उसी से निवेदन करें कि हमारी सहायता कर। कुछ सन्देह नहीं कि यदि वह इल्हाम ख़ुदा तआला की ओर से है तो हज़रत ईसा के जीवित होने के बारे में कम से कम तीस आयतें तुरन्त इल्क़ा हो जाएंगी क्योंकि हमने भी तो उनके मरने के प्रमाण में तीस आयतें प्रस्तुत की हैं, परन्तु स्मरण रखना चाहिए कि ये लोग एक भी आयत प्रस्तुत नहीं कर सकेंगे, क्योंकि इनके इल्हाम शैतानी हैं और शैतान का गिरोह हमेशा पराजित है। वह बेचारा लानतों का मारा स्वयं कमज़ोर और निर्बल है फिर दूसरों की क्या सहायता करेगा।

इसके अतिरिक्त यह भी स्मरण रहे कि रहमानी इल्हाम अपने मुबारक निशानों से पहचाने जाते हैं। कोई दावा बिना सबूत के स्वीकार करने योग्य नहीं होता। ख़ुदावन्द जो बहुत जानने वाला और नीतिवान है इस बात को भली भांति जानता है कि इस ख़ाकसार ने अपने इल्हामों को ख़ुदा की ओर से केवल ऐसी अवस्था में समझा कि जब सैकड़ों इल्हामी भविष्यवाणियां प्रकाशमान दिन की तरह पूरी हो गईं। अत: जो व्यक्ति इस ख़ाकसार के मुकाबले पर खड़ा हो उसके लिए आवश्यक है

कि अपने इल्हामों के ख़ुदा की ओर से होने के प्रमाण में मेरी तरह किसी सीमा तक भविष्यवाणियां वर्णन करे विशेषकर ऐसी भविष्यवाणियां जो ख़ुदा की कृपा और उपकार को सिद्ध करती हों क्योंकि मक़बूलीन (मान्य लोगों) की पहचान के लिए ऐसी ही भविष्यवाणियां उत्तम सबूत हैं जो कि भावी स्पष्ट अनुकम्पाओं का वादा देती हों। कारण यह कि ख़ुदा तआला उन्हीं पर कृपा और उपकार करता है जिन्हें कृपा-दृष्टि से देखता है।

जिन भविष्यवाणियों की सच्चाई पर मेरी सच्चाई निर्भर है वे ये हैं कि ख़ुदा तआला ने मुझे सम्बोधित करके फ़रमाया कि तू पराजित होकर अर्थात् प्रत्यक्षतया पराजितों की तरह तिरस्कृत होकर अन्तत: विजयी हो जाएगा और परिणाम तेरे लिए होगा और हम वह समस्त बोझ तुझ से उतार लेंगे जिसने तेरी कमर तोड़ दी। ख़ुदा तआला का इरादा है कि तेरी तौहीद (एकेश्वरवाद) तेरी प्रतिष्ठा, तेरी विशेषता को फैला दे। ख़ुदा तआला तेरे चेहरे को प्रकट करेगा और तेरी छाया को लम्बा कर देगा। **संसार में एक डराने वाला आया, परन्तु संसार ने उसे स्वीकार नहीं किया, परन्तु ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े शक्तिशाली आक्रमणों से उसकी सच्चाई प्रकट करेगा** शीघ्र ही उसे एक विशाल देश दिया जाएगा (अर्थात् उसे मान्यता दी जाएगी तथा बहुत से लोगों के हृदय उस की ओर फेरे जाएंगे) तथा उस पर ख़ज़ाने खोले जाएंगे (अर्थात् आध्यात्मक ज्ञानों और सच्चाइयों के ख़ज़ाने खोले जाएंगे क्योंकि आकाशीय माल जो ख़ुदा तआला के विशेष लोगों को मिलता है जिसे वे संसार में बांटते हैं, संसार का रुपया-पैसा नहीं अपितु नीति और मा'रिफ़त है जैसा कि ख़ुदा तआला ने उसकी ओर संकेत करते हुए फ़रमाया है कि :-

يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَاءُ ۚ وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا*

ख़ैर माल को कहते हैं अत: पवित्र माल बुद्धिमत्ता ही है जिसकी ओर हदीस में भी संकेत है कि :- اِنَّمَا اَنَا قَاسِمٌ وَاللّٰهُ هُوَ الْمُعْطِي यही माल है जो मसीह मौऊद के निशानों में से एक निशान है) यह ख़ुदा तआला की कृपा है तथा तुम्हारी

* अलबक़रह-270

आंखों में अद्भुत। हम शीघ्र ही तुम में ही और तुम्हारे आस-पास निशान दिखाएंगे और समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो जाएगा तथा खुली-खुली विजय होगी। क्या ये लोग कहते हैं कि हम लोग एक बहुत बड़ी जमाअत हैं। ये सब भाग जाएंगे और पीठ फेर लेंगे। यदि लोग तुझे छोड़ देंगे, परन्तु मैं नहीं छोड़ूंगा और यदि लोग तुझे नहीं बचाएंगे परन्तु मैं तुझे बचाऊंगा मैं अपनी चमकार दिखाऊंगा और क़ुदरत दिखाकर तुझे उठाऊंगा। हे इब्राहीम तुझ पर सलाम, हमने तुझे शुद्ध मित्रता के साथ चुन लिया, ख़ुदा तेरे सब काम संवारेगा और तेरी सारी मनोकामनाएं तुझे देगा, तू मुझ से ऐसा है जैसी मेरी तौहीद और एकत्व। ख़ुदा ऐसा नहीं कि तुझे छोड़ दे जब तक वह अपवित्र को पवित्र से पृथक न कर दे, वह तेरी बुज़ुर्गी को बढ़ाएगा और तेरी सन्तान को बढ़ाएगा और तेरे पश्चात् तेरे वंश का तुझ से ही आरंभ करेगा, मैं तुझे पृथ्वी के किनारों तक सम्मान के साथ प्रसिद्धि दूंगा और तेरा नाम ऊंचा करूंगा तथा हृदयों में तेरा प्रेम डाल दूंगा, جَعَلْنَاكَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مريم (हमने तुझे मसीह इब्ने मरयम बनाया) इन्हें कह दे कि मैं ईसा के पद चिन्हों पर आया हूँ। ये कहेंगे कि हमने पूर्वजों से ऐसा नहीं सुना। अत: तू इन्हें उत्तर दे कि तुम्हारी जानकारियां विशाल नहीं। ख़ुदा उचित जानता है, तुम प्रत्यक्ष शब्द और भ्रम को ही पर्याप्त समझते हो तथा मूल वास्तविकता तुम पर प्रकट नहीं। जो व्यक्ति का'बे की नींव को ख़ुदाई नीति का मामला समझता है वह बड़ा बुद्धिमान है क्योंकि उसे फ़रिश्तों के रहस्यों से हिस्सा प्राप्त है। एक दृढ़ संकल्प पैदा होगा वह सुन्दरता और उपकार में तेरा समरूप होगा, वह तेरी ही नस्ल से होगा, फर्ज़न्द दिलब्द गिरामी व अर्जमन्द मज़्हरुल हक़्क़े वल अला कअन्नल्लाहा नज़ल मिनस्समाए -

ياتی علیك زمان مختلف بازواج مختلفة و تری نسلًا بعیدًا وَلِنُحْیِیَنَّكَ حیوة طیِّبَة۔ ثمانین حولًا اَوْ قَرِیْبًا من ذٰلك انّك باعیننا سمیتك المتوكل یحمدك الله من عرشه۔ كذَّبُوا بِاٰیٰتِنَا و كانُوْا بِهَا یَسْتَهْزِءُوْن سیكفیكهم الله و یردها اِلیك

لا تبديل لكلمات الله ان ربّك فعّال لَما يريد

यह इबारत विज्ञापन 10 जुलाई सन् 1887 ई. की भविष्यवाणी की है।

अब मैंने नमूने के तौर पर जितनी भविष्यवाणियां वर्णन की हैं वास्तव में मेरे सच या झूठ को परखने के लिए यही पर्याप्त है तथा जो व्यक्ति स्वयं को मुल्हम बता कर मुझे झूठा और नारकी समझता है उसके लिए निर्णय का उपाय यह है कि वह भी अपने बारे में अपने कुछ ऐसे इल्हामों को किसी अखबार इत्यादि के द्वारा प्रकाशित करे जिसमें ऐसी ही साफ और स्पष्ट भविष्यवाणियां हों तब लोग प्रकटन के समय स्वयं अनुमान लगा लेंगे कि कौन व्यक्ति ख़ुदा का मान्य है और कौन उसका बहिष्कृत, अन्यथा केवल दावों से कुछ सिद्ध नहीं हो सकता। ख़ुदा तआला की विशेष अनुकम्पाओं में से मुझ पर एक यह भी है कि उसने मुझे क़ुर्आनी मआरिफ़ और सच्चाइयों का ज्ञान प्रदान किया है। स्पष्ट है कि पवित्रात्मा लोगों के लक्षणों में से यह भी एक महान लक्षण है कि क़ुर्आनी मआरिफ़ का ज्ञान प्राप्त हो, क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है -* لَا يَمُسُّهٗۤ اِلَّا الۡمُطَهَّرُوۡنَ अत: विरोधी सदस्य पर यह भी अनिवार्य है कि मैं अब तक अपनी विभिन्न पुस्तकों में पवित्र क़ुर्आन के जितने मआरिफ़ वर्णन कर चुका हूं उसकी तुलना में कुछ अपने मआरिफ़ का नमूना दिखाएं तथा कोई पुस्तक प्रकाशित करके प्रचारित करें ताकि लोग देख लें कि जो मा'रिफ़त और ज्ञान की बारीकियां वलियों को मिलती हैं वे उन्हें कहां तक प्राप्त हैं इस शर्त पर कि किताबों की नक़ल न हो।

पाठकों पर स्पष्ट रहे कि मियां अब्दुल हक़ ने मुबाहले का निवेदन किया था, परन्तु अब तक मैं नहीं समझ सकता कि ऐसे मतभेद वाले विषयों में जिनके कारण कोई सदस्य काफ़िर या अन्यायी नहीं ठहर सकता मुबाहला क्योंकर वैध है। पवित्र क़ुर्आन से स्पष्ट है कि मुबाहले में इस बात पर दोनों पक्षों का विश्वास चाहिए कि मेरा विरोधी सदस्य झूठा है अर्थात् जान-बूझ कर सच्चाई से मुझ फेर रहा है गलती करने वाला नहीं है ताकि प्रत्येक सदस्य 'झूठों पर ख़ुदा की लानत' कह सके। अब

---

* अलवाक़िअह-80

यदि मियां अब्दुल हक़ अपनी समझ की कमी के कारण मुझे झूठा समझते हैं, परन्तु मैं उन्हें झूठा नहीं कहता अपितु ग़लती पर समझता हूं और ग़लती पर होने वाले मुसलमान पर लानत वैध नहीं। क्या झूठों पर ख़ुदा की लानत के स्थान पर यह कहना वैध है कि गलती करने वालों पर ख़ुदा की लानत। कोई मुझे समझा दे कि यदि मैं मुबाहले में सत्य के विरोधी सदस्य पर लानत करूं तो किस प्रकार से करूं। यदि मैं झूठों पर ख़ुदा की लानत कहूं तो यह उचित नहीं क्योंकि मैं अपने विरोधियों को झूठा तो नहीं समझता अपितु व्याख्या में ग़लती करने वाला समझता हूं जो स्पष्ट आदेशों को उन के प्रत्यक्ष से बिना किसी अनुकूलता के आन्तरिक की ओर ले जाते हैं तथा झूठ उस वस्तु का नाम है जो जान-बूझ कर अपने वर्णन में उस विश्वास का विरोध किया जाए जो हृदय को प्राप्त है। उदहरणतया एक व्यक्ति कहता है कि आज मुझे उपवास (रोज़ा) है और भली भांति जानता है कि अभी मैं रोटी खा कर आया हूं। अत: यह व्यक्ति झूठा है। निष्कर्ष यह कि झूठ अलग वस्तु है और ग़लती और वस्तु। ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि झूठों पर लानत करो यह तो नहीं फ़रमाता कि ग़लती करने वालों पर लानत करो। यदि ग़लती करने वाले से मुबाहला और परस्पर लानत करना वैध होता तो इस्लाम के समस्त सम्प्रदाय जो परस्पर मतभेदों से भरे हुए हैं निस्सन्देह परस्पर मुबाहला और मुलाअना कर सकते थे और निस्सन्देह उस का परिणाम यह होता कि पृथ्वी पर से इस्लाम का अन्त हो जाता। मुबाहले में जमाअत का होना भी आवश्यक है। पवित्र क़ुर्आन का स्पष्ट आदेश जमाअत को आवश्यक ठहराता है, परन्तु मियां अब्दुल हक़ ने अब तक प्रकट नहीं किया कि ख्याति प्राप्त विद्वानों की इतनी जमाअत मेरे साथ है जो मुबाहला के लिए तैयार है तथा स्त्रियां और बेटे भी हैं। फिर जब मुबाहले की शर्तें निर्धारित नहीं तो मुबाहला क्योंकर हो। मुबाहला में यह भी आवश्यक होता है कि सर्वप्रथम शंकाओं का निवारण किया जाए इसके अतिरिक्त कि झूठा ठहराने में कोई सन्देह और संकोच का स्थान शेष न हो, परन्तु मियां अब्दुल हक़ बहस और मुबाहसे का नाम तक भी नहीं लेते, एक पुराना विचार जो हृदय में जमा हुआ है कि मसीह ईसा इब्ने मरयम आकाश से

उतरेंगे। उसी विचार को इस प्रकार पर समझ लिया है कि जैसे वास्तव में ख़ुदा के रसूल हज़रत मसीह इब्ने मरयम जिन पर इंजील उतरी थी किसी युग में आकाश से उतरेंगे, हालांकि यह बड़ी भारी ग़लती है कि जो व्यक्ति मृत्यु पा चुका और जिसका मृत्यु प्राप्त हो जाना पवित्र क़ुर्आन की तीस आयतों से पूर्णतया सिद्ध हो गया वह अब पृथ्वी पर कहां से आ जाएगा। पवित्र क़ुर्आन की स्पष्ट और अटल आयतों को कौन सी हदीस निरस्त कर देगी।

فَبِاَیِّ حَدِیْثٍ بَعْدَ اللّٰہِ وَاٰیَاتِہٖ یُؤْمِنُوْنَ*

सत्य है कि ख़ुदा तआला जीवित करने पर समर्थ है परन्तु उस की यह सामर्थ्य उसके वादे के विपरीत है। उसने साफ़ और स्पष्ट शब्दों में फ़रमा दिया है कि जो लोग मर गए संसार में दोबारा नहीं आया करते जैसा कि वह फ़रमाता है :-

فیمسك الّتی قضی علیها الموت**

और जैसा कि फ़रताता है :-

ثُمَّ انّکم یوم القیامة تُبْعثون***

अर्थात् तुम मृत्योपरान्त प्रलय के दिन उठाए जाओगे और जैसा कि फ़रमाता है :-

وَحَرٰمٌ عَلٰی قَرْیَةٍ اَھْلَکْنٰھَآ اَنَّھُمْ لَا یَرْجِعُوْنَ****

और जैसा कि फ़रमाता है :-

وَّمَا ھُمْ مِّنْھَا بِمُخْرَجِیْنَ*****

और यदि यह कहो कि चमत्कार के तौर पर मुर्दे जीवित होते हैं तो इसका उत्तर

* अलजासिय: 7

** अज़्ज़ुमर-43

*** अलमोमिनून-17

**** अलअंबिया-96

***** अलहिज्र-49

यह है कि वह वास्तविक मृत्यु नहीं होगी अपितु बेहोशी अथवा नींद आदि के प्रकार से होगी क्योंकि مَاتَ (माता) के अर्थ शब्दकोश में नाम (नींद) के भी हैं। देखो क़ामूस। अत: वह मौता (مَوتٰی) जो एक क्षण के लिए भी जीवित हो गए हों वे वास्तविक मृत्यु से बाहर हैं तथा कोई इस बात का प्रमाण नहीं दे सकता कि कभी वास्तविक और निश्चित तौर पर कोई मुर्दा जीवित हो गया तथा संसार में वापस आया और अपना विभाजित किया हुआ तर्का (विरासत) वापस लिया और फिर संसार में रहने लगा। मौत का शब्द स्वयं पवित्र क़ुर्आन में बहुमुखी है। काफ़िर नाम भी मुर्दा रखा है तथा लोभ-लालच से मरना भी एक प्रकार की मृत्यु है तथा मौत के निकट होने का नाम भी मय्यत (मुर्दा है) और यही तीनों कारण जीवन के प्रयोग में भी पाए जाते हैं अर्थात् जीवन भी तीन प्रकार के हैं परन्तु आयत فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوتَ स्पष्ट और ठोस आदेशों में से है तथा न केवल एक आयत अपितु पवित्र क़ुर्आन में इस प्रकार की बहुत सी आयतें मौजूद हैं कि जो मर गया वह फिर संसार में कदापि वापस नहीं आएगा और यह तो स्पष्ट हो चुका कि हज़रत मसीह वास्तव में मृत्यु पा चुके हैं। फिर इतने स्पष्ट एवं व्यापक प्रसंग के बावजूद यदि हदीसों में इब्ने मरयम के उतरने का वर्णन आया तो क्या यह बुद्धिमत्ता है कि यह विचार किया जाए कि इब्ने मरयम ख़ुदा का रसूल आकाश से उतर आएगा। उदाहरणतया देखिए कि अल्लाह तआला सूरह अलबक़रह में फ़रमाता है कि हे बनी इस्राईल! हमारी उस ने'मत को याद करो कि हमने फिरऔन की सन्तान से तुम्हें छुड़ाया था जब वे तुम्हारे पुत्रों को ज़िब्ह करते थे और तुम्हारी पुत्रियों को रख लेते थे और वह समय याद करो जब दरिया ने तुम्हें मार्ग दिया था और फिरऔन सेना सहित डुबो दिया गया था तथा वह समय याद करो जब तुमने मूसा से कहा कि कि हम देखे बिना ख़ुदा पर कदापि ईमान नहीं लाएंगे और उस समय को याद करो जब हमने तुम्हें बादल की छाया दी और तुम्हारे लिए मन व सल्वा उतारा और वह याद करो जब हम ने तुम से वचन लिया और हमने तूर पर्वत तुम्हारे सर के ऊपर रखा था फिर तुम ने उपद्रव किया और वह समय याद करो जब हमने तुम से प्रण लिया

था कि तुम वध नहीं करना तथा अपने परिजनों को उनके घरों से न निकालना। तुम ने इक़रार कर लिया था कि हम इस प्रण पर स्थापित रहेंगे परन्तु तुम फिर भी अकारण खून करते और अपने परिजनों को उनके घरों से निकालते रहे। तुम्हारी यही आदत रही कि जब तुम्हारी ओर कोई नबी भेजा गया तो कुछ को तुम ने झुठला दिया और कुछ का वध करने पर तत्पर हुए या वध ही कर दिया।

अब बताइये कि यदि ये शब्द बतौर रूपक नहीं हैं और इन समस्त आयतों को प्रत्यक्ष अर्थों में चरितार्थ करना चाहिए तो फिर यह स्वीकार करना पड़ेगा कि जो लोग वास्तव में इन आयतों के सम्बोधित हैं जिन्हें आले फिरऔन से मुक्ति दिलाई गई थी और जिन्हें दरिया ने मार्ग दिया था और जिन पर मन व सल्वा उतारे गए थे वह आँहज़रत स.अ.व. के युग तक जीवित ही थे या मरने के पश्चात् फिर जीवित हो कर आ गए थे? क्या आप लोग जब मस्जिदों में बैठ कर पवित्र क़ुर्आन का अनुवाद पढ़ाते हैं तो इन आयतों के ये अर्थ समझाया करते हैं कि इन आयतों के सम्बोधित ही आँहज़रत स.अ.व. के रसूल होने के युग तक जीवित थे या क़ब्रों से जीवित होकर फिर संसार में आ गए थे। यदि कोई विद्यार्थी आप से प्रश्न करे कि इन आयतों के प्रत्यक्ष शब्द से तो यही अर्थ निकलते हैं कि सम्बोधित वही लोग हैं जो हज़रत मूसा और दूसरे नबियों के समय मौजूद थे। क्या अब यह आस्था रखी जाए कि वे सब आँहज़रत स.अ.व. के समय में मौजूद थे या जीवित होकर फिर संसार में आ गए थे तो क्या आप का यही उत्तर नहीं कि भाई वे तो सब मृत्यु पा गए और अब काल्पनिक तौर पर उनकी सन्तान ही सम्बोध्य है जो उनके कार्यों पर प्रसन्न है जैसे उन्हीं का अस्तित्व है या यों कहो कि जैसे वही हैं। अत: अब समझ लो यही उदाहरण इब्ने मरयम के उतरने का है। ख़ुदा का नियम इसी प्रकार पर है कि अस्तित्व की श्रेणियां बारी-बारी आती रहती हैं तथा कुछ की आत्माएं कुछ उदाहरणात्मक रूप लेकर इस संसार में आती हैं तथा उनकी आध्यात्मिकता एक-दूसरे पर पूर्ण रूप से चरितार्थ होती है। आयत تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ को ध्यानपूर्वक पढ़ो। इस बात को खूब ध्यान से सोचना चाहिए कि इस उम्मत में इब्ने मरयम के

आने की क्या आवश्यकता थी तथा यह बात किस बुद्धिमत्ता और गुप्त रहस्य पर आधारित है कि इब्ने मरयम के आने की सूचना दी गई दाऊद या मूसा या सुलेमान के आने की ख़बर नही दी गयी, इसकी क्या वास्तविकता है क्या यथार्थ है और क्या रहस्य है ? अत: जब हम गहरी दृष्टि से देखते हैं और सरसरी विचार को छोड़कर विचार करते करते चिन्तन-मनन के सागर में बहुत नीचे चले जाते हैं तो इस गहरी डुबकी लगाने से अध्यात्म ज्ञान का यह मोती हाथ आता है कि इस भविष्यवाणी के वर्णन करने से मूल उद्देश्य यह है कि ताकि मुहम्मद मुस्तफ़ा ख़ुदा के मित्र, मूसा कलीमुल्लाह में जो ख़ुदा के निकट पूर्ण समरूपता है और उनकी उम्मतों पर ख़ुदा तआला के जो उपकार समरूपता एवं सदृशता के तौर पर मौजूद हैं उन्हें स्पष्ट तौर पर प्रमाण की सीमा तक पहुंचाया जाए तथा स्पष्ट है कि मूसा की शरीअत के अन्तिम युग में यहूदियों में बहुत सी ख़राबी पैदा हो गई थी और उनमें विभिन्न प्रकार के सम्प्रदाय पैदा हो गए थे तथा परस्पर सहानुभूति, प्रेम तथा भ्रातृत्व के अधिकार सब दूर होकर उसके स्थान पर बैर, द्वेष, जलन और शत्रुता ने जन्म ले लिया था तथा ख़ुदा की उपासना और उसका भय भी उनके हृदयों से उठ गया था, झगड़े, उपद्रव, सृष्टिपूजा के विचार तथा संयमियों, मौलवियों और सांसारिक लोगों में नाना प्रकार के छल-कपट अपनी-अपनी पद्धति के अनुसार पैदा हो गए थे तथा उनके हाथ में धर्म के स्थान पर केवल रस्मो रिवाज रह गए थे, वास्तविक नेकी से पूर्णतया अपरिचित हो गए थे तथा हृदयों में बहुत कठोरता आ गई थी। ऐसे समय में ख़ुदा तआला ने मसीह इब्ने मरयम को बनी इस्राईल के नबियों का ख़ातमुल अंबिया बना कर भेजा। मसीह इब्ने मरयम तलवार या भाले के साथ नहीं भेजा गया था और न उसे जिहाद का आदेश था अपितु उसे केवल तर्क और वर्णन शैली की तलवार दी गई थी ताकि यहूदियों की आन्तरिक अवस्था ठीक करे और तौरात के आदेशों पर उन्हें पुन: स्थापित करे। इसी प्रकार मुहम्मद शरीअत के अन्तिम युग में जो यह युग है अधिकतर मुसलमानों ने सर्वथा यहूदियों का रंग स्वीकार कर लिया और अपनी आन्तरिक स्थिति की दृष्टि से उसी प्रकार के यहूदी हो गए जो हज़रत मसीह के

समय में थे। अत: ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन के आदेशों के नवीनीकरण के लिए एक व्यक्ति को बिल्कुल मसीह इब्ने मरयम के रंग पर भेज दिया और रूपक के तौर पर उसका नाम भी मसीह ईसा इब्ने मरयम रखा जैसा कि हज़रत ईसा का पूरा नाम पवित्र क़ुर्आन में यही है जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

اسْمُهُ الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيهًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ *

अत: चूंकि इस बात का व्यक्त करना अभीष्ट था कि जब अन्तिम युग में इस उम्मत में ख़राबी पैदा हुई तो इस उम्मत को भी एक मसीह इब्ने मरयम दिया गया जैसा कि हज़रत मूसा की उम्मत को दिया गया था। अत: यह आवश्यक हुआ कि उस आने वाले का नाम भी इब्ने मरयम ही रखा जाए ताकि ख़ुदा तआला का यह उपकार प्रत्येक आंख के सामने आ जाए और ताकि मूसा की उम्मत तथा मुहम्मद की उम्मत में अल्लाह तआला के उपकारों के उतरने के पात्र होने के अनुसार पूर्ण समरूपता सिद्ध हो जाए। क्या यह सत्य नहीं कि हमारे नबी स.अ.व. ने प्रलय के निकट लोगों का नाम यहूदी रखा है फिर यदि उसी नबी ने ऐसे व्यक्ति का नाम इब्ने मरयम रख दिया हो जो इन यहूदियों के सुधार के लिए भेजा गया हो तो इसमें कौन सी आश्चर्य और आपत्ति और दूरी की बात है। सरसता में यह नियम होता है कि एक वाक्य के यथायोग्य दूसरा वाक्य वर्णन करना होता है। उदाहरणतया जैसे कोई कहे कि समस्त संसार फ़िरऔन बन गया है तो इस वाक्य के यथायोग्य यही है कि उसके सुधार के लिए कोई मूसा आना चाहिए, परन्तु यदि इस प्रकार कहा जाए कि समस्त संसार फ़िरऔन बन गया है उसके सुधार के लिए ईसा आना चाहिए तो कैसा बुरा और अनुचित मालूम होता है, क्योंकि फ़िरऔन के साथ मूसा को जोड़ है न कि ईसा का। इसी प्रकार जब अन्तिमयुग की उम्मते मुहम्मदिया को यहूदी ठहराया तथा यहूदी भी वे यहूदी जो मूसा की शरीअत के अन्तिम युग में थे, जिनके लिए हज़रत

---

* आले इमरान-46

मसीह भेजे गए थे और उनकी समस्त आदतें वर्णन कर दी गईं और उनको बिल्कुल यहूदी बना दिया तो क्या इस के मुकाबले पर यह उचित न था कि जब तुम यहूदी बन जाओगे तो तुम्हारे लिए ईसा इब्ने मरयम भेजा जाएगा। दज्जालियत वास्तव में यहूदियों का ही विरसा था, उनसे ईसाइयों को पहुंचा। दज्जाल उस गिरोह को कहते हैं जो बहुत झूठा हो। और पृथ्वी को अपवित्र करे और सत्य के साथ असत्य को मिला दे। अत: यह विशेषता ऐसी दज्जाली विशेषता को समाप्त करने के लिए आकाशीय दाव लेकर उतरा है। वह दाव संसार के कारीगरों ने नहीं बनाया अपितु वह आकाशीय दाव है जैसा कि सही हदीसों से सिद्ध है। यदि यह कहा जाए कि मूसा का समरूप अर्थात् आंहज़रत स.अ.व. तो मूसा से श्रेष्ठ हैं तो फिर मसीह का समरूप क्यों एक उम्मती आया। इसका उत्तर यह है कि मूसा के समरूप की नुबुव्वत की शान सिद्ध करने के लिए और ख़ातमुल अंबिया की श्रेष्ठता प्रदर्शित करने के लिए यदि कोई नबी आता तो फिर ख़ातमुल अंबिया की महान शान में विघ्न पड़ता। यह तो सिद्ध है कि इस मसीह को इस्राईली मसीह पर एक आंशिक श्रेष्ठता प्राप्त है क्योंकि इसका निमंत्रण सार्वजनिक है और उसका विशेष था और उसे नबी करीम स.अ.व. के माध्यम से समस्त विरोधी फ़िर्क़ों के भ्रम दूर करने के लिए आवश्यक तौर पर वह नीति और आध्यात्म सिखाया गया है जो मसीह इब्ने मरयम को नहीं सिखाया गया था, क्योंकि बिना आवश्यकता के कोई ज्ञान नहीं दिया जाता।

وَمَا نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعۡلُوۡمٍ (अल हिज्र-22)

पवित्र क़ुर्आन के अनुसार मसीह के समरूप का अन्तिम युग में इस उम्मत में आना इस प्रकार से सिद्ध होता है कि पवित्र क़ुर्आन अपने कई स्थानों में फ़रमाता है कि इस उम्मत को उसी पद्धति पर ख़िलाफ़त दी जाएगी तथा उसी पद्धति से इस उम्मत में ख़लीफ़े आएंगे जो अहले किताब में आए थे। अत: स्पष्ट है कि अहले किताब के ख़लीफ़ों का अन्त मसीह इब्ने मरयम पर हुआ था जो बिना तलवार और तीर के आया था। मसीह वास्तव में मूसा अलैहिस्सलाम का अन्तिम ख़लीफ़ा था। अत: पवित्र क़ुर्आन के वादे के अनुसार आवश्यक था कि इस उम्मत के ख़लीफ़ों

का अन्त भी मसीह पर ही होता और जिस प्रकार मूसा की शरीअत का प्रारंभ मूसा से हुआ और अन्त मसीह इब्ने मरयम पर इसी प्रकार इस उम्मत के लिए हो। अत: इस उम्मत के लिए मुबारक हो।

और हदीसों में जो मसीह इब्ने मरयम के नुज़ूल को जो शब्द है हम उसके बारे में विस्तारपूर्वक लिख आए हैं कि नुज़ूल के शब्द से वास्तव में आकाश से नाज़िल (उतरना) होना सिद्ध नहीं होता। हमारे नबी करीम स.अ.व. के पक्ष में पवित्र क़ुर्आन में स्पष्ट तौर पर आया है :-

قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۙ﴿۱۱﴾ رَّسُوْلًا*

तो क्या इस से यह समझ लेना चाहिए कि वास्तव में आंहज़रत स.अ.व. आकाश से ही उतरे थे अपितु पवित्र क़ुर्आन में यह भी आयत है :-

وَ اِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ ۫ وَ مَا نُنَزِّلُهٗۤ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿۲۲﴾**

अर्थात् हमारे पास संसार की समस्त वस्तुओं के ख़ज़ानें (भंडार) हैं परन्तु आवश्यकतानुसार तथा हित एवं नीति की मांग पर हम उन्हें उतारते हैं। इस आयत से स्पष्टतौर पर सिद्ध हुआ कि प्रत्येक वस्तु जो संसार में पाई जाती है वह आकाश से ही उतरी है इसी प्रकार इन वस्तुओं के आवश्यक कारण उसी वास्तविक स्रष्टा की ओर से हैं तथा इसी प्रकार कि उसी के इल्हाम, इल्क़ा और समझाने तथा बुद्धि और विवेक प्रदान करने से प्रत्येक कारीगरी प्रकटन में आती है किन्तु युग की आवश्यकता से अधिक प्रकट नहीं होते। तथा प्रत्येक ख़ुदा के मामूर को जानकारी भी युग की आवश्यकतानुसार दी जाती है। इसी प्रकार पवित्र क़ुर्आन की बारीकियां, अध्यात्म ज्ञान तथा वास्तविकताएं भी युग की आवश्यकतानुसार ही खुलती हैं। उदाहरणतया जिस युग में हम हैं तथा जिन क़ुर्आनी आध्यात्मिक ज्ञानों के मुकाबले पर हमें इस समय दज्जाली फ़िर्क़ों (सम्प्रदायों) की आवश्यकता आ पड़ी है वह

* अत्तलाक़-11,12

** अलहिज्र-22

आवश्यकता उन लोगों को नहीं थी जिन्होंने उन दज्जाली सम्प्रदायों का युग नहीं पाया। अत: वे बातें उन पर गुप्त रहीं और हम पर खोली गईं। उदाहरणतया इस बात की प्रतीक्षा में बहुत से लोग गुज़र गए कि वास्तव में मसीह इब्ने मरयम ही दोबारा संसार में आ जाएगा और ख़ुदा तआला की नीति और हित ने समय से पूर्व उन पर यह रहस्य न खोला कि मसीह के दोबारा आने से क्या अभिप्राय है। अत: जो यहूदियत की विशषेताओं का रोग सार्वजनिक तौर पर फैल गया और मसीह के जीवित मानने से ईसाइयों को अपने शिर्क वाले विचारों में बहुत सी सफलता हुई। इसलिए ख़ुदा तआला ने चाहा कि अब वास्तविकता प्रकट करे। अत: उसने प्रकट कर दिया कि मुसलमानों का मसीह मुसलमानों में से ही होगा जैसा कि बनी इस्राईल का मसीह बनी इस्राईल में से ही था और भली भांति स्पष्ट कर दिया कि इस्राईली मसीह की मृत्यु हो चुकी है तथा यह भी वर्णन कर दिया कि मृत्यु प्राप्त पुन: संसार में नहीं आ सकता। जैसा कि जाबिर रज़ि. की हदीस में भी मिश्कात के बाब मनाक़िब में इसी के अनुसार लिखा है और वह यह है :-

قَالَ قَدْ سَبَقَ الْقَوْلُ مِنِّیْ اَنَّھُمْ لَا یَرْجِعُوْنَ۔ رواہُ الترمذی

अर्थात् जो लोग संसार से गुज़र गए वे फिर संसार में नहीं आएंगे।

पवित्र क़ुर्आन की महान श्रेष्ठता जो उसी के वर्णन से प्रकट होती है

وَ كُلُّ الْعِلْمِ فِي الْقُرْآنِ لٰكِن تَقَاصَرَ مِنْهُ اَفْهَامُ الرِّجَال

समस्त ज्ञान पवित्र क़ुर्आन में है परन्तु लोगों की प्रतिभा उनके समझसे से असमर्थ है।

ज्ञात होना चाहिए कि इस युग में पथभ्रष्टता के कारणों में से एक बड़ा कारण यह है कि अधिकांश लोगों की दृष्टि में पवित्र क़ुर्आन की श्रेष्ठता शेष नहीं रही। मुसलमानों का एक वर्ग गुमराह दार्शनिकों का ऐसा अनुयायी हो गया कि वे प्रत्येक बात का निर्णय बुद्धि से ही करना चाहते हैं। उनका कहना है कि विवादित मामलों के निर्णय के लिए मनुष्य को जो उच्च श्रेणी का हकम (मध्यस्थ) मिला है वह बुद्धि ही है। ऐसे ही लोग जब देखते हैं कि जिब्राईल, इज़राईल तथा अन्य आदरणीय फ़रिश्तों का अस्तित्व जैसा कि शरीअत की किताबों में उल्लेख है तथा स्वर्ग और नर्क का अस्तित्व जैसा कि पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध होता है वे समस्त सच्चाइयां बौद्धिक तौर पर पूर्णरूप से सिद्ध नहीं होतीं तो उन से तुरन्त इन्कार कर बैठते हैं तथा अधम व्याख्याएं आरंभ कर देते हैं कि फ़रिश्तों से केवल शक्तियां अभिप्राय हैं और रिसालत की वह्यी एक कौशल है तथा स्वर्ग और नर्क केवल एक आध्यात्मिक शान्ति या शोक का नाम है। इन बेचारों को मालूम नहीं कि अज्ञात बातों को ज्ञात करने का उपकरण केवल बुद्धि नहीं है और बस अपितु उच्च स्तर की सच्चाइयां और चरम सीमा के आध्यात्म ज्ञान तो ही हैं जो बुद्धि की पहुंच से सैकड़ों गुना श्रेष्ठतर हैं जो सही कश्फ़ों के माध्यम से सिद्ध होते हैं। यदि सच्चाइयों का मापदण्ड केवल बुद्धि को ही ठहराया जाए तो ख़ुदाई कारखाने की महान विलक्षणताएं और अद्‌भुत बातें छुपी हुई और गुप्त रहेंगी और ख़ुदा को पहचानने का सिलसिला मात्र अपूर्ण, दोषपूर्ण और अधूरा रह जाएगा तथा मनुष्य किसी भी प्रकार सन्देह और शंकाओं से मुक्ति नहीं पा सकेगा। इस एक पक्षीय मारिफत का अन्तिम परिणाम यह होगा कि उच्च

मार्ग-दर्शन के प्रमाणित न होने तथा उच्च शक्ति की प्रेरणाओं की अज्ञानता के कारण स्वयं उस स्त्रष्टा के अस्तित्व के बारे में हृदयों में नाना प्रकार के भ्रम पैदा हो जाएंगे। अत: ऐसा विचार कि वास्तविक स्त्रष्टा के समस्त सूक्ष्म से सूक्ष्मतर रहस्यों को समझने के लिए केवल बुद्धि ही पर्याप्त है कितनी अपरिपक्वता तथा दुर्भाग्य को सिद्ध कर रहा है।

इन लोगों के मुकाबले पर दूसरा वर्ग वह है जिसने बुद्धि को पूर्णतया निलंबित किए की भांति छोड़ दिया है और इसी प्रकार पवित्र क़ुर्आन को भी छोड़कर जो समस्त विज्ञानों का उद्‌गम है केवल व्यर्थ रिवायतों और कथनों को दृढ़तापूर्वक पकड़ लिया है। अत: हम इन दोनों वर्गों को इस बात की ओर ध्यान दिलाना चाहते हैं कि पवित्र क़ुर्आन की श्रेष्ठता और प्रकाश के महत्व को समझें तथा उसके प्रकाश के मार्ग-दर्शन से बुद्धि को भी काम में लाएं और किसी अन्य का कथन तो क्या वस्तु है यदि कोई हदीस भी पवित्र क़ुर्आन की विरोधी पाएं तो उसे तुरन्त छोड़ दें, जैसा कि ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में स्वयं फ़रमाता है :-

فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَهٗ يُوْمِنُوْنَ*

अर्थात् पवित्र क़ुर्आन के पश्चात् किस हदीस पर ईमान लाओगे। स्पष्ट है कि हम मुसलमानों के पास वह स्पष्ट आदेश जो प्रथम श्रेणी पर ठोस और निश्चित है पवित्र क़ुर्आन ही है। अधिकांश हदीसें यदि सही भी हों तो गुमान का लाभ देती है :-

وَاِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا**

पवित्र क़ुर्आन की निम्नलिखित विशेषताएं ध्यानपूर्वक पढ़ो और फिर न्यायपूर्वक स्वयं ही कहो कि क्या यह उचित है कि इस कलाम को छोड़कर कोई अन्य मार्गदर्शक या हकम नियुक्त किया जाए और वे आयतें ये हैं :-

* अल आराफ़-186

** अन्नज्म : 29

اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِىْ لِلَّتِىْ هِىَ اَقْوَمُ (बनी इस्राईल : 10)

اِنَّ فِىْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ (अल अंबिया : 107)

وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَاِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ۝ (अल हाक़्क़ह : 49, 52)

حِكْمَةٌ ۢ بَالِغَةٌ (अल क़मर : 6)

تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَىْءٍ (अन्नहल : 90)

نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ۝ (अन्नूर : 36)

وَشِفَآءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوْرِ ۝ (यूनुस : 58)

اَلرَّحْمٰنُ ۝ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ۝ (अर्रहमान : 2, 3)

اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ۝ (अश्शूरा : 18)

هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۝ (अल बक़रह : 186)

اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۝ (अत्तारिक : 14)

لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ (अल बक़रह : 3)

وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ
الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ
يُّؤْمِنُوْنَ ۝٦٥ (अन्नहल : 65)

فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ (अलबय्यिनह : 4)

لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ (हाम्मीम अस्सज्दह : 43)

هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ
يُّؤْمِنُوْنَ (अल जासिया : 21)

فَبِاَىِّ حَدِيْثٍ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ (अलजासियह : 7)

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۵۹﴾ (यूनुस : 59)

अर्थात् क़ुर्आन उस मार्ग की ओर मार्ग-दर्शन करता है जो नितान्त सीधा है। इसमें उन लोगों के लिए जो उपासना करने वाले हैं वास्तवकि उपासना की शिक्षा है और यह उनके लिए जो संयमी हैं, संयम की विशेषताओं का स्मरण कराने वाला है। यह दूरदर्शिता है जो चरम सीमा को पहुंची हुई है। यह वास्तविक सच्चाई, इसमें प्रत्येक वस्तु का वर्णन है, यह प्रकाश ही प्रकाश है तथा सीनों को स्वास्थ्य प्रदान करने वाला है, कृपालु ख़ुदा ने क़ुर्आन सिखाया, ऐसी किताब उतारी जो स्वयं में सत्य है और सत्य को तोलने के लिए एक तुला है, वह लोगों के लिए मार्ग-दर्शन है तथा संक्षिप्त निर्देशों की उसमें व्याख्या है और वह अपने तर्कों के साथ सत्य और असत्य में अन्तर करता है और वह निर्णायक कथन है तथा सन्देह और संशय से खाली है। हमने इसे तुझ पर इसलिए उतारा है ताकि विवादित मामलों का इस के माध्यम से निर्णय कर दें तथा मोमिनों के लिए हिदायत और दया का सामान उपलब्ध कर दें। इसमें वे समस्त सच्चाइयां विद्यमान हैं जो पूर्ववर्ती किताबों में पृथक-पृथक एवं बिखरी हुई मौजूद थीं, इसमें असत्य का लेशमात्र भी हस्तक्षेप नहीं, न आगे से न पीछे से। ये लोगों के लिए प्रकाशमान तर्क हैं और जो विश्वास लाने वाले हों उनके लिए हिदायत और दया है। अत: ऐसी कौन सी हदीस है जिस पर तुम अल्लाह और उसकी आयतों को छोड़कर ईमान लाओगे अर्थात् यदि कोई हदीस पवित्र क़ुर्आन से विपरीत हो तो कदापि नहीं माननी चाहिए अपितु रद्द कर देनी चाहिए। हां यदि कोई हदीस व्याख्या द्वारा पवित्र क़ुर्आन के बयान से अनुकूल हो सके तो स्वीकार कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् शेष आयतों का अनुवाद यह है कि उनको कह दे कि ख़ुदा तआला की कृपा और दया से यह क़ुर्आन एक बहुमूल्य माल है। अत: तुम उसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करो। यह उन मालों से अच्छा है जो तुम एकत्र करते हो। यह इस बात की ओर संकेत है कि ज्ञान और निति के समान

कोई धन नहीं। यह वही धन है जिसके संबंध में बतौर भविषय्वाणी लिखा था कि मसीह संसार में आकर उस धन को इतना बांटेगा कि लोग लेते-लेते थक जाएंगे। यह नहीं कि मसीह रुपया-पैसा जो आयत

اِنَّمَآ اَمۡوَالُكُمۡ وَاَوۡلَادُكُمۡ فِتۡنَةٌ *

का चरितार्थ है एकत्र करेगा और जानते हुए प्रत्येक को बहुत सा माल देकर उपद्रव में डाल देगा। मसीह के पूर्व स्वभाव को भी ऐसे माल से अनुकूलता नहीं। वह स्वयं इंजील में वर्णन कर चुका है कि मोमिन का माल दिरहम व दीनार नहीं अपितु सच्चाइयों एवं ख़ुदा के ज्ञान के बहुमूल्य रत्न उसका माल हैं। अंबिया ख़ुदा तआला से यही माल पाते हैं और इसी का वितरण करते हैं। इसी माल की ओर संकेत है :-

اِنَّمَا اَنَا الۡقَاسِمُ وَاللّٰهُ هُوَ الۡمُعۡطِی

हदीसों में यह बात स्पष्ट तौर पर लिखी गई है कि मसीह मौऊद संसार में उस समय आएगा कि जब क़ुर्आन का ज्ञान पृथ्वी से उठ जाएगा और मूर्खता फैल जाएगी। यह वही युग है जिसकी और एक हदीस में यह संकेत है।

لو کان الایمان معلّقًا عند الثریا لنالہ رجلٌ مِن فارس

यह वह युग है जो इस विनीत पर कश्फ़ी तौर पर प्रकट हुआ कि उसकी पूर्ण उद्दण्डता इस हिजरी वर्ष में आरंभ होगी जो आयत :-

وَ اِنَّا عَلٰی ذَهَابٍۭ بِهٖ لَقٰدِرُوۡنَ **

में जमल विद्या के हिसाब से गुप्त है, अर्थात 1274 हिज्री

इस स्थान को ध्यान से देखो और शीघ्रता से निकल न जाओ और ख़ुदा से दुआ मांगो कि वह तुम्हारे सीनों को खोल दे। आप लोग थोड़े से विचार करने के साथ

---

* अत्तग़ाबुन-16

** अलमोमिनून-19

यह बात समझ सकते हैं कि हदीसों में यह आया है कि अन्तिम युग में क़ुर्आन पृथ्वी से उठा लिया जाएगा और क़ुर्आन का ज्ञान सामप्त हो जाएगा और मूर्खता फैल जाएगी तथा ईमान की रुचि और मधुरता हृदयों से दूर हो जाएगी। फिर इन हदीसों में यह हदीस भी है कि यदि ईमान सुरैया के पास भी जा ठहरेगा अर्थात् पृथ्वी पर उसका नाम व निशान नहीं रहेगा तो एक व्यक्ति फ़ारसियों में से अपना हाथ फैलाएगा और वहीं सुरैया के पास से उसको ले लेगा। अत: तुम स्वयं समझ सकते हो कि इस हदीस से स्पष्ट तौर पर ज्ञात होता है कि जब मूर्खता, बेईमानी और पथ भ्रष्टता जो दूसरी हदीसों में **दुख़ान** (धुआं) के साथ ताबीर की गई है संसार में फैल जाएगी और पृथ्वी पर वास्तविक ईमानदारी ऐसी कम हो जाएगी कि जैसे वह आकाश की ओर उठ गई होगी और पवित्र क़ुर्आन ऐसा त्याग दिया जाएगा कि जैसे वह ख़ुदा तआला की ओर उठाया गया होगा। तब अनिवार्य है कि फारसी नस्ल से एक व्यक्ति पैदा हो और ईमान को सुरैया से लेकर फिर पृथ्वी पर उतरे। अत: निश्चय समझो कि उतरने वाला इब्ने मरयम यही है जिसने ईसा इब्ने मरयम की तरह अपने युग में किसी ऐसे शैख़ आध्यात्मिक पिता को न पाया जो उसकी आध्यात्मिक पैदायश का कारण होता। तब ख़ुदा तआला स्वयं उसका अभिभावक हुआ और प्रशिक्षण की गोद में लिया और अपने उस बन्दे का नाम इब्ने मरयम रखा क्योंकि उसने सृष्टि में से अपनी आध्यात्मिक मां का तो मुख देखा जिसके द्वारा उसने इस्लाम का ढांचा पाया परन्तु उसे इस्लाम की वास्तविकता लोगों के बिना प्राप्त हुई। तब वह आध्यात्मिक अस्तित्व पाकर ख़ुदा तआला की ओर उठाया गया क्योंकि ख़ुदा तआला ने अपने अतिरिक्त से उसे मृत्यु देकर अपनी ओर उठा लिया और फिर ईमान और आत्मज्ञान के भण्डार के साथ ख़ुदा की प्रजा की ओर उतारा। अत: वह सुरैया से संसार में ईमान और आत्मज्ञान का उपहार लाया और पृथ्वी जो सुनसान पड़ी थी तथा अंधकारमय थी उसे प्रकाशित और आबाद करने की चिन्ता में लग गया। अत: आदर्श के तौर पर यही ईसा इब्ने मरयम है जो बिना बाप के पैदा हुआ। क्या तुम सिद्ध कर सकते हो कि उसका कोई आध्यात्मिक पिता है? क्या तुम प्रमाण

दे सकते हो कि तुम्हारे चारों सिलसिलों में से किसी सिलसिले में यह सम्मिलित है। फिर यदि **यह इब्ने मरयम नहीं तो कौन है?**

यदि अब भी तुम्हें सन्देह है तो तुम्हें ज्ञात हो कि मुसलमानों के साथ आंशिक मतभेदों के कारण ला'नत भेजना सदाचारियों का कार्य नहीं। मोमिन ला'नतें डालने वाला नहीं होता परन्तु एक उपाय बहुत सरल है और वह वास्तव में मुबाहले का ही स्थानापन्न है जिससे झूठे और सच्चे तथा मान्य और बहिष्कृत में अन्तर हो सकता है और वह यह है जिसे नीचे मोटे क़लम से लिखता हूं :-

हे मौलवी लोगो! आप लोगों का यह विचार कि हम मोमिन हैं और यह व्यक्ति काफ़िर और हम सच्चे हैं और यह व्यक्ति झूठा और हम इस्लाम के अनुयायी हैं और यह व्यक्ति नास्तिक और हम ख़ुदा के मान्य हैं और यह व्यक्ति बहिष्कृत और हम स्वर्ग वाले हैं और यह व्यक्ति नारकी। यद्यपि विचार करने वालों की दृष्टि में पवित्र क़ुर्आन के अनुसार भली भांति निर्णय पा चुका है और इस पुस्तक के अध्ययनकर्ता समझ सकते हैं कि सत्य पर कौन है और असत्य पर कौन, किन्तु निर्णय का एक अन्य मार्ग भी है जिसके अनुसार सच्चों, झूठों तथा मान्य और बहिष्कृतों में अन्तर हो सकता है। ख़ुदा का नियम इसी प्रकार से जारी है कि यदि मान्य और अमान्य अपने-अपने स्थान पर ख़ुदा तआला से कोई आकाशीय सहायता चाहें तो वह मान्य की अवश्य सहायता करता है और किसी ऐसी बात से जो मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर है उस मान्य की मान्यता प्रकट कर देता है। अत: चूंकि आप लोग सच्चे होने का दावा करते हैं और आप की जमाअत में वे लोग भी हैं जो मुल्हम होने के दावेदार हैं जैसे मौलवी मुहियुद्दीन तथा

अब्दुर्रहमान साहिब लखू वाले और मियां अब्दुल हक़ साहिब ग़ज़नवी जो इस विनीत को काफ़िर और नारकी ठहराते हैं। इसलिए आप पर अनिवार्य है कि इस आकाशीय माध्यम से भी देख लें कि आकाश पर मान्य किस का नाम है और बहिष्कृत किसका नाम। मैं इस बात को स्वीकार करता हूं कि आप दस सप्ताह तक इस बात के निर्णय के लिए समस्त निर्णय करने वालों में से सबसे उत्तम निर्णय करने वाले (ख़ुदा) की ओर ध्यान दें ताकि यदि आप सच्चे हैं तो आपकी सच्चाई का कोई निशान या कोई उच्च स्तर की भविष्यवाणी जो सच्चों को प्राप्त होती है आप को दी जाए। इसी प्रकार दूसरी ओर मैं भी ध्यान करूंगा। और मुझे ख़ुदा तआला कृपालु व दयालु की ओर से विश्वास दिलाया गया है कि यदि आप ने इस प्रकार से मेरा मुक़ाबला किया तो मेरी विजय होगी। मैं इस मुकाबले में किसी पर लानत करना नहीं चाहता और न करूंगा। और आप को अधिकार है जो चाहें करें किन्तु यदि आप लोग मुख फेर गए तो पलायन समझा जाएगा। मेरे इस लेख के सम्बोधित मौलवी मुहियुद्दीन, अब्दुर्रहमान लक्खो वाले और मियां अब्दुल हक़ साहिब ग़ज़नबी और मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी और मौलवी रशीद अहमद साहिब गंगोही और मौलवी अब्दुल जब्बार साहिब ग़ज़नवी और मौलवी नज़ीर हुसैन साहिब देहलवी हैं और शेष इन्हीं के अन्तर्गत आ जाएंगे।

जो हमारा था वह अब दिलबर का सारा हो गया
आज हम दिलबर के और दिलबर हमारा हो गया
शुक्र लिल्लाह मिल गया हमको वह ला'ले बे बदल
क्या हुआ गर क़ौम का दिल संगे खारा हो गया

मसीह मौऊद होने का प्रमाण

इसमें तो कुछ सन्देह नहीं कि इस बात के सिद्ध होने के पश्चात कि वास्तव में हज़रत मसीह इब्ने मरयम इस्राईली नबी मृत्यु पा चुका है। प्रत्येक मुसलमान को यह मानना पड़ेगा कि मृत्यु प्राप्त नबी संसार में दोबारा कदापि नहीं आ सकता क्योंकि क़ुर्आन और हदीस दोनों एकमत होकर इस बात पर साक्षी हैं कि जो व्यक्ति मर गया फिर संसार में कभी नहीं आएगा। और पवित्र क़ुर्आन

اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ*

कह कर हमेशा के लिए इस संसार से उनको अलविदा कहता है और उज़ैर(अ) आदि का क़िस्सा जो पवित्र क़ुर्आन में है इस बात के विपरीत नहीं क्योंकि शब्दकोश में मौत नींद और बेहोशी के अर्थों में भी आया है। देखो क़ामूस। तथा उज़ैर(अ) के क़िस्से में हड्डियों पर मांस चढ़ाने का वर्णन है वह वास्तव में एक पृथक वर्णन है जिसमें यह बताना अभीष्ट है कि गर्भाशय में ख़ुदा तआला एक मुर्दे को जीवित करता है और उसकी हड्डियों पर मांस चढ़ाता है और फिर उसमें प्राण डालता है। इसके अतिरिक्त किसी आयत या हदीस से यह सिद्ध नहीं हो सकता कि उज़ैर(अ) पुन: जीवित होकर फिर भी मृत्यु को प्राप्त हुआ अत: इससे स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि उज़ैर(अ) का द्वितीय जीवन सांसारिक जीवन नहीं था अन्यथा इसके पश्चात् अवश्य कहीं उसकी मृत्यु का भी वर्णन होता। ऐसा ही पवित्र क़ुर्आन में जो कुछ लोगों के दोबारा जीवन का उल्लेख है वह भी संसारिक जीवन नहीं।

---

* अलअंबिया-96

अब हदीसों पर विचारपूर्वक दृष्टि डालने से यह भली-भांति सिद्ध होता है कि अन्तिम युग में इब्ने मरयम उतरने वाला है जिसके लक्षण लिखे हैं कि उसका रंग गेहुआं होगा, बाल उसके सीधे होंगे और मुसलमान कहलाएगा तथा मुसलमानों के पारस्परिक मतभेदों को दूर करने के लिए आएगा और शरीअत के सार जिस को वे भूल गए होंगे उन्हें स्मरण कराएगा और आवश्यक है कि वह उस समय उतरे जिस समय उपद्रव और उत्पात चरम सीमा तक पहुंच जाएं और मुसलमानों पर वह पतन का युग हो जो यहूदियों पर उनके अन्तिम समयों में आया था।

इस युग के कुछ नवशिक्षित लोग ऐसे व्यक्ति के आने से ही सन्देह में हैं जो इब्ने मरयम के नाम पर आएगा। वे कहते हैं कि यह महान व्यक्ति जो हदीसों में वर्णन किया गया है यदि निश्चित तौर पर ऐसा व्यक्ति आने वाला था तो चाहिए था कि पवित्र क़ुर्आन में उसका कुछ वर्णन होता, जैसा कि दाब्बतुलअर्ज़ और दुख़ान तथा याजूज और माजूज का वर्णन है, परन्तु मैं कहता हूं कि ये लोग सर्वथा ग़लती पर हैं। ख़ुदा तआला ने अपने स्पष्ट कश्फ़ द्वारा इस विनीत पर प्रकट किया है कि पवित्र क़ुर्आन में नमूने के तौर पर इब्ने मरयम के आने का वर्णन है और वह इस प्रकार है कि ख़ुदा तआला ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मूसा का मसील (समरूप) ठहराया है। जैसा कि फ़रताया है :-

إِنَّآ أَرْسَلْنَآ إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ
أَرْسَلْنَآ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ۝ *

इस आयत में ख़ुदा तआला ने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मूसा की तरह और काफ़िरों को फ़िरऔन की तरह ठहराया और फिर दूसरे स्थान पर फ़रमाया :-

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي
الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي
ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا

* अल मुज़्ज़म्मिल-16

يُشۡرِكُوۡنَ بِیۡ شَیۡـًٔا ؕ وَ مَنۡ کَفَرَ بَعۡدَ ذٰلِکَ فَاُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡفٰسِقُوۡنَ ﴿۵۶﴾ *

अर्थात् ख़ुदा तआला ने इस उम्मत के मोमिनों और सदाचारियों के लिए वादा किया है कि उन्हें पृथ्वी पर ख़लीफ़ा बनाएगा जैसा कि उसने पहलों को बनाया था अर्थात् उस शैली और पद्धति के अनुसार और उसी अवधि और युग के समान तथा उसी सुन्दर एवं प्रतापी रूप के सदृश जो बनी इस्राईल में ख़ुदा का नियम गुज़र चुका है उस उम्मत में भी ख़लीफ़े बनाए जाएंगे और उनका सिलसिला-ए-ख़िलाफ़त उस सिलसिले से कम नहीं होगा जो बनी इस्राईल के ख़लीफ़ों के लिए नियुक्त किया गया था और उनकी ख़िलाफ़त की पद्धति उस पद्धति से विपरीत और पृथक होगी जो बनी इस्राईल के ख़लीफ़ों के लिए नियुक्त की गई थी। फिर आगे फ़रमाया गया है कि उन ख़लीफ़ों के माध्यम से पृथ्वी पर धर्म स्थापित कर दिया जाएगा और ख़ुदा भय के दिनों के बाद अमन के दिन लाएगा शुद्ध रूप से उसी की उपासना करेंगे और उसका कोई भागीदार नहीं ठहराएंगे किन्तु उस युग के पश्चात् फिर कुफ्र फैल जाएगा। पूर्ण समरूपता का संकेत जो کَمَا اسۡتَخۡلَفَ الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِہِمۡ से समझा जाता है स्पष्ट तौर पर सिद्ध कर रहा है कि यह समरूपता ख़िलाफ़त की अवधि और ख़लीफ़ों की सुधार पद्धति तथा प्रकटन पद्धति से संबंधित है। अत: चूंकि यह बात स्पष्ट है कि बनी इस्राईल में अल्लाह का ख़लीफ़ा होने का पद हज़रत मूसा(अ) से आरंभ हुआ जो एक लम्बे समय तक बारी-बारी बनी इस्राईल के नबियों में रह कर अन्तत: चौदह (सौ) वर्ष के पूर्ण होने तक हज़रत ईसा इब्ने मरयम पर यह सिलसिला समाप्त हुआ। हज़रत ईसा इब्ने मरयम ख़ुदा के ऐसे ख़लीफ़ा थे कि उनके हाथ में प्रत्यक्ष तौर पर शासन की बागडोर नहीं आई थी और राष्ट्रीय राजनीति तथा उस सांसारिक बादशाहत से उनका कोई संबंध नहीं था और संसार के शास्त्रों से वह कुछ काम नहीं लेते थे अपितु उस शास्त्र से काम लेते थे जो उनकी पवित्र सांसों में था अर्थात् इस स्पष्ट वर्णन से जो उनकी जीभ पर जारी किया गया था, जिसके साथ बहुत सी बरकतें थीं और जिसके माध्यम से वह मरे हुए हृदयों को

---

* अन्नूर-56

जीवित करते थे और बहरे कानों को खोलते थे और जन्मजात अंधों को सत्य का प्रकाश दिखा देते थे। उनकी वह अजर फूंक काफ़िर को मारती थी और उस पर समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करती थी, किन्तु मोमिन को जीवन प्रदान करता था। वह बिना बाप के पैदा किए गए थे तथा उनके पास प्रत्यक्ष साधन न थे और प्रत्येक बात में ख़ुदा तआला उनका अभिभावक था। वह उस समय आए थे जब कि यहूदियों ने न केवल धर्म को अपितु मानवता की विशेषताएं भी त्याग दी थीं तथा निर्दयता, स्वार्थपरता, शत्रुता, अन्याय, द्वेष तथा उनमें तामसिक वृत्ति की अनुचित उत्तेजना विकसित हो गई थी और न केवल मानव जाति के अधिकारों को उन्होंने छोड़ दिया था अपितु कठोरता के आधिपत्य के काराण वास्तविक उपकारी से उपासना, आज्ञाकारिता और सच्ची निष्कपटता का संबंध भी तोड़ बैठे थे। केवल मज्जारहित अस्थियों के समान तौरात के कुछ शब्द उनके पास थे जो ख़ुदा के प्रकोप के कारण वे उन के मर्म तक नहीं पहुंच सकते थे क्योंकि ईमानी विवेक और दक्षता उनसे बिल्कुल जाती रही थी और उनके अंधकारमय लोगों पर मूर्खता का प्रभुत्व हो गया था और वे अधम छल-कपट और अप्रिय कार्य करते थे। उनमें झूठ और दिखावा तथा विश्वासघात चरमसीमा तक पहुंच गया था। ऐसे समय में उनकी ओर इब्ने मरयम भेजा गया था जो बनी इस्राईल के मसीहों और ख़लीफ़ों में से अन्तिम मसीह और अल्लाह का अन्तिम ख़लीफ़ा था, जो अधिकतर नबियों की पद्धति के विपरीत बिना तलवार और भाले के आया था। स्मरण रखना चाहिए कि मूसा की शरीअत में अल्लाह के ख़लीफ़ा को मसीह कहते थे और हज़रत दाऊद के समय तथा उनके कुछ समय पूर्व यह शब्द बनी इस्राईल में प्रचलित हो गया था। बहरहाल यद्यपि बनी इस्राईल में कई मसीह आए परन्तु सब से पीछे आने वाला मसीह वही है जिसका नाम पवित्र क़ुर्आन में मसीह ईसा इब्ने मरयम वर्णन किया गया है। बनी इस्राईल में मरयमें भी कई थीं और उनके बेटे भी कई थे किन्तु मसीह ईसा इब्ने मरयम इन तीनों नामों से एक मिश्रित नाम बनी इस्राईल में उस समय और कोई नहीं पाया गया। अत: मसीह ईसा इब्ने मरयम यहूदियों की इस दुर्दशा के समय

आया जिसकी मैंने अभी चर्चा की है। उपरोक्त कथित आयतों में अभी हम वर्णन कर चुके हैं कि ख़ुदा तआला का इस उम्मत के लिए वादा था कि बनी इस्राईल की पद्धति पर इन में भी ख़लीफ़े पैदा होंगे। अत: जब हम इस पद्धति को दृष्टि के सामने लाते हैं तो हमें स्वीकार करना पड़ता है कि आवश्यक था कि इस उम्मत का अन्तिम ख़लीफ़ा मसीह इब्ने मरयम के आदर्श रूप में आए और उस युग में आए जो उस युग के समान हो जिस समय में हज़रत मूसा के पश्चात् मसीह इब्ने मरयम आए थे अर्थात चौदहवीं शताब्दी में या उसके निकट उसका अवतरण हुआ और इसी प्रकार बिना तलवार और भाले तथा युद्ध सामग्री के आए, जिस प्रकार हज़रत मसीह इब्ने मरयम आए थे तथा ऐसे ही लोगों के सुधार के लिए आए जैसा कि मसीह इब्ने मरयम उस समय के आन्तरिक तौर पर खराब यहूदियों के सुधार के लिए आए थे। और जब हम उपरोक्त आयतों को देखते हैं तो हमें उनके अन्दर से यह आवाज़ सुनाई देती है कि इस उम्मत का ख़लीफ़ा जो चौदहवीं सदी (हिज्री) के आरंभ में अवश्य प्रकट होगा, हज़रत मसीह के आदर्श रूप में आएगा तथा बिना युद्ध सामग्री के प्रकट होगा। दो सिलसिलों की समरूपता में यही नियम है कि उनमें आरंभ और अन्त में नितान्त स्तर की समानता होती है क्योंकि एक लम्बे सिलसिले और एक लम्बे समय में मध्य के समस्त लोगों का विस्तृत हाल मालूम करना व्यर्थ है। अत: जबकि पवित्र क़ुर्आन ने स्पष्ट तौर पर बता दिया कि इस्लामी ख़िलाफ़त का सिलसिला अपनी उन्नति और अवनति, अपनी प्रतापी और सुन्दरता की अवस्था की दृष्टि से इस्राईली ख़िलाफ़त से पूर्णरूपेण अनुकूल, समान और सदृश होगा और यह भी बता दिया कि नबी अरबी अनपढ़ मूसा का मसील (समरूप) है तो इस संबंध में बिल्कुल ठोस और निश्चित रंग में बताया गया कि जैसे इस्लाम में ख़ुदा के ख़लीफ़ों के कार्यालय का अफ़सर मूसा का मसील है जो इस इस्लामी सिलसिले का सेनापति, बादशाह तथा सिंहासन की प्रथम श्रेणी पर बैठने वाला और समस्त का उद्गम तथा अपनी आध्यात्मिक सन्तान का वंश प्रवर्तक है सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। इसी प्रकार इस सिलसिले का ख़ातम पूर्ण संबंध के अनुसार वह मसीह ईसा इब्ने मरयम है जो उस उम्मत के

लोगों में से रब्ब के आदेश से मसीही विशेषताओं से रंगीन हो गया है और आदेश جَعَلْنَاكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ने उसको वास्तव में वही बना दिया है

وَ كَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا*

और उस आने वाले का नाम जो **अहमद** रखा गया है वह भी उसके मसील होने की ओर संकेत है क्योंकि **मुहम्मद**स॰ जलाली (प्रतापी) नाम है और अहमद जमाली (दया की झलक) तथा अहमद और ईसा अपने जमाली अर्थों की दृष्टि से एक ही हैं। इसी की ओर यह संकेत है :-

وَ مُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ يَّأْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ**

किन्तु हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम केवल अहमद ही नहीं अपितु मुहम्मद भी हैं अर्थात् जलाल और जमाल के संग्रहीता हैं किन्तु अन्तिम युग में भविष्यवाणी के अनुसार अकेले अहमद जो अपने अन्दर ईस्वी वास्तविकता रखता है भेजा गया वह जीवित और स्थापित रहने वाला ख़ुदा जो इस बात पर समर्थ है कि मनुष्य को जानवर अपितु जानवरों में सब से निकृपटतम जानवर बना दे। जैसा कि उसने फ़रमाया है :-

جَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ***

और फ़रमाया कि :-

كُوْنُوْا قِرَدَةً خَاسِئِيْنَ****

क्या वह एक मनुष्य को किसी दूसरे मनुष्य के आदर्श रूप पर नहीं बना सकता।

---

* अलअहज़ाब-28

** अस्सफ़्फ़-7

*** अलमाइदह-61

**** अलबक़रह-66

بَلٰی وھو بِکُلِّ خلقٍ عَلِیْمٌ

(अर्थात क्यों नहीं, वह प्रत्येक प्रकार की सृष्टि का पूर्ण ज्ञान रखने वाला है)

फिर जब कि मानवता की वास्तविकता पर मृत्यु व्याप्त होने के समय में एक ऐसे ही मनुष्य की आवश्यकता थी जिस का केवल ख़ुदा तआला के हाथ से जन्म होता, आकाश पर जिसका नाम इब्ने मरयम है तो ख़ुदा तआला की सामर्थ्य इस इब्ने मरयम के पैदा करने से क्यों असमर्थ रह सकती। अत: उसने मात्र अपनी कृपा से बिना किसी माध्यम सांसारिक पिता के उस इब्ने मरयम को अध्यात्कि जन्म और अध्यात्मिक जीवन प्रदान किया। जैसा कि उसने स्वयं उसे अपने इल्हाम में फ़रमाया :-

ثُمَّ اَحْیَیْنَاکَ بَعْدَ مَا اَھْلَکْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰی وَ جَعَلْنَاکَ الْمَسِیْحَ ابن مَرْیَم

अर्थात् फिर हमने तुझे जीवित किया इसके बाद कि पहले युगों को हमने तबाह कर दिया और तुझे हमने मसीह इब्ने मरयम बनाया इसके बाद कि सामान्य तौर पर विद्वानों और उलेमा में अध्यात्मिक मृत्यु फैल गई। इंजील में भी इसी की ओर संकेत है कि मसीह सितारों के गिरने के पश्चात् आएगा।

अत: इस जांच पड़ताल से सिद्ध है कि मसीह इब्ने मरयम के अन्तिम युग में आने की भविष्यवाणी पवित्र क़ुर्आन में मौजूद है। पवित्र क़ुर्आन ने मसीह के निकलने की जो अवधि चौदह सौ वर्ष ठहराई है, बहुत से वली लोग भी अपने कश्फ़ों की दृष्टि से इस अवधि को स्वीकार करते हैं और आयत :-

وَ اِنَّا عَلٰی ذَھَابٍ بِہٖ لَقٰدِرُوْنَ*

जिसकी जमल विद्या के हिसाब से 1274 संख्या है इस्लामी चांद के कृष्ण पक्ष की रातों की ओर संकेत करती है जिसमें नए चन्द्रमा के उदय होने का संकेत छुपा हुआ है जो ग़ुलाम अहमद क़ादियानी के अददों में जमल विद्या के हिसाब से पाया जाता है और यह आयत कि :

---

* अलमोमिनून-19

هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَهٗ بِالۡهُدٰی وَ دِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡهِرَهٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّهٖ*

वास्तव में इसी मसीह इब्ने मरयम के युग से संबंधित है क्योंकि समस्त धर्मों पर आध्यात्मिक विजय इस युग के अतिरिक्त किसी अन्य युग में संभव नहीं थी। कारण यह कि यही युग है कि जिसमें हज़ारों प्रकार के आरोप और सन्देह पैदा हो गए हैं और नाना प्रकार के बौद्धिक आक्रमण इस्लाम पर किए गए हैं और ख़ुदा तआला फ़रमाता है :-

وَ اِنۡ مِّنۡ شَیۡءٍ اِلَّا عِنۡدَنَا خَزَآئِنُهٗ ۫ وَمَا نُنَزِّلُهٗۤ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعۡلُوۡمٍ **

अर्थात् हमारे पास प्रत्येक वस्तु के भण्डार हैं किन्तु हम ज्ञात अनुमान और आवश्यकतानुसार उनको उतारते हैं। अत: जितने अध्यात्म ज्ञान और वास्तविकताएं क़ुर्आन के अन्दर छुपी हुई हैं जो हर प्रकार के तर्क संगत धर्मों तथा तर्क रहित धर्मों को प्रकोपित और पराजित करती हैं उनके प्रकट होने का युग यही था क्योंकि वे सामने आई प्रेरणा के बिना प्रकट नहीं हो सकती थीं। अत: अब विरोधात्मक आक्रमण जो आधुनिक दर्शनशास्त्रों की ओर से हुए तो उन आध्यात्मिक ज्ञानों के प्रकट होने का समय आ गया और संभव नहीं था कि इसके बिना वे आध्यात्म ज्ञान प्रकट हों, इस्लाम समस्त मिथ्या धर्मों पर विजय प्राप्त कर सके क्योंकि तलवार की विजय कुछ वस्तु नहीं और कुछ दिन समृद्धि के दूर होने से वह विजय भी समाप्त हो जाती है। सच्ची और वास्तविक विजय वह है जो आध्यात्म ज्ञान, वास्तविकताओं और पूर्ण सच्चाइयों की सेना के साथ प्राप्त हो। अत: वह यह विजय है जो अब इस्लाम को प्राप्त हो रही है। नि:सन्देह यह भविष्यवाणी इसी युग के पक्ष में है और सदाचारी पूर्वज भी ऐसा हीं समझते आए हैं। यह युग वास्तव में ऐसा युग है जो स्वभाविक तौर पर मांग कर रहा है कि पवित्र क़ुर्आन उन समस्त आन्तरिक सदस्यों

---

* अस्सफ़्फ़-10

** अलहिज्र-22

को प्रकट करे जो उसके अन्दर चली आती हैं क्योंकि पवित्र क़ुर्आन के आन्तरिक ज्ञान जिनका अस्तित्व सही हदीसों और स्पष्ट आयतों से सिद्ध है व्यर्थ तौर पर कभी प्रकटन में नहीं आते अपितु यह क़ुर्आनी चमत्कार ऐसे ही समय में अपनी झलक दिखाता है जबकि उस आध्यात्मिक चमत्कार को प्रकट करने की अत्यन्त आवश्यकता होती है। अत: इस युग में पूर्णरूप से ये आवश्यकताएं सामने आ गई हैं। लोगों ने विरोधी ज्ञानों में बहुत उन्नति कर ली है तथा कुछ सन्देह नहीं कि यदि इस संवेदनशील समय में पवित्र क़ुर्आन के ज्ञान प्रकट न होंगे और मोटी शिक्षा जिस पर वर्तमान उलेमा दृढ़ हैं कभी तथा किसी रूप में भी विरोधियों का मुक़ाबला नहीं कर सकते और उन्हें पराजित करना तो क्या स्वयं पराजित हो जाने के बड़े ख़तरे में फंसे हुए हैं। यह बात प्रत्येक मनीषी को शीघ्र समझ में आ सकती है कि अल्लाह तआला की कोई भी रचना बारीकियों और अद्‌भुत विशेषताओं से खाली नहीं और यदि एक मक्खी के गुण एवं उसकी विलक्षणताओं की प्रलय तक छानबीन करते चले जाएं तो भी कभी समाप्त नहीं हो सकती। अत: अब सोचना चाहिए कि क्या पवित्र क़ुर्आन के गुण और विलक्षणताएं अपने महत्व और शैली में मक्खी जितने भी नहीं। नि:सन्देह वे अद्‌भुत गुण सम्पूर्ण सृष्टि के सामूहिक चमत्कारों से अधिक बढ़कर हैं और उनका इन्कार वास्तव में पवित्र क़ुर्आन के ख़ुदा की ओर से होने का इन्कार है क्योंकि संसार में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं जो ख़ुदा तआला की ओर से जारी हो और उसमें असीम चमत्कार न पाए जाएं। अत: यह बहाना कि यदि हम पवित्र क़ुर्आन की ऐसी बारीकियां और अध्यात्मक ज्ञान भी मान लें इसमें सर्वसम्मति का अपमान है। जैसे हमें यह कहना पड़ेगा कि जो पहले इमामों को ज्ञात नहीं हुआ था वह हमने ज्ञात कर लिया। मुल्ला लोगों का यह विचार बिल्कुल ग़लत है उन्हें विचार करना चाहिए कि जब यह संभव है कि कुछ वनस्पतियों आदि में वर्तमान युग में कोई ऐसी विशेषता सिद्ध हो जाए जो पहलों पर नहीं खुली तो क्या संभव नहीं कि पवित्र क़ुर्आन की कुछ अद्‌भुत बारीकियां और ज्ञान अब ऐसे खुल जाएं जो पूर्व लोगों पर नहीं खुल सके क्योंकि उस समय उनके खुलने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

हां ईमान और आस्थाओं के संबंध में जो आवश्यक पाते हैं जो शरीअत से संबंध रखते हैं, जो मुसलमान बनने के लिए आवश्यक हैं वे तो प्रत्येक की सूचना के लिए खुले-खुले वर्णन के साथ पवित्र क़ुर्आन में लिखे हैं किन्तु वे बारीकियां और रहस्य जो आध्यात्म ज्ञान को अधिक करते हैं वे सदैव आवश्यकतानुसार खुलते रहते हैं तथा नए-नए बिगाड़ और विकारों के समय नए-नए नीतिपूर्ण अर्थ प्रकट होते रहते हैं। यह तो स्पष्ट है कि पवित्र क़ुर्आन स्वयं एक चमत्कार है और उसमें चमत्कार का सबसे प्रमुख कारण यह है कि वह समस्त असीमित वास्तविकताओं का संग्रहीता है किन्तु वे कुसमय प्रकट नहीं होते। जैसे-जैसे समय की कठिनाइयां मांग करती हैं वे गुप्त आध्यात्म ज्ञान प्रकट होते जाते हैं। देखो सांसारिक विद्याएं जो प्राय: क़ुर्आन के विपरीत और असावधानी में डालने वाली हैं आजकल जितने जोर के साथ उन्नति कर रही हैं और युग अपनी गणित विद्या, भौतिकी तथा दर्शनशास्त्र के अन्वेषणों में कैसी अद्‌भुत प्रकार के परिवर्तन दिखा रहा है। क्या ऐसे गंभीर समय में आवश्यक न था कि ईमानी और आध्यात्मिक ज्ञान संबंधी विकासों के लिए भी द्वार खोला जाता ताकि नवीन उपद्रवों की प्रतिरक्षा के लिए आसानी पैदा हो जाती। अत: निश्चित समझो कि वह द्वार खोला गया है और ख़ुदा तआला ने इरादा कर लिया है ताकि क़ुर्आन के गुप्त चमत्कार इस संसार के अभिमानी दार्शनिकों पर प्रकट करे। अब इस्लाम के शत्रु अर्धमुल्ला इस इरादे को रोक नहीं सकते। यदि अपनी उद्दण्डताओं से नहीं रुकेंगे तो तबाह किए जाएंगे और प्रकोपी ख़ुदा के प्रकोप का थप्पड़ ऐसा लगेगा कि मिट्टी में मिल जाएंगे। इन मूर्खों को वर्तमान दशा बिल्कुल दिखाई नहीं देती, चाहते हैं कि पवित्र क़ुर्आन पराजित, कमजोर, निर्बल और तिरस्कृत सा दिखाई दे परन्तु अब वह एक युद्ध करने वाले योद्धा के समान निकलेगा। हां वह एक शेर के समान रणभूमि में निकलेगा और संसार के समस्त दर्शनशास्त्र को खा जाएगा और अपनी विजय प्रदर्शित करेगा और لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ की भविष्यवाणी पूर्ण कर देगा तथा وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمْ की भविष्यवाणी को आध्यात्मिक तौर पर पराकाष्ठा तक पहुंचाएगा क्योंकि पृथ्वी पर धर्म का पूर्ण रूप

से स्थापित हो जाना मात्र बलात् और ज़बरदस्ती से संभव नहीं। धर्म पृथ्वी पर उस समय स्थापित होता है जब उसके मुकाबले पर कोई धर्म खड़ा न रहे और समस्त विरोधी शस्त्र डाल दें। अत: अब वही समय आ गया। अब वह समय मूर्ख मौलवियों के रोकने से रुक नहीं सकता। अब वह इब्ने मरयम जिस का आध्यात्मिक पिता पृथ्वी पर वास्तविक शिक्षक के अतिरिक्त कोई नहीं जो इस कारण आदम से भी समरूपता रखता है। पवित्र क़ुर्आन का बहुत सा ख़ज़ाना लोगों में बांटेगा। यहां तक कि लोग स्वीकार करते-करते थक जाएंगे और لا يقبله احدٌ के चरितार्थ बन जाएंगे और प्रत्येक स्वभाव अपनी पात्रता के अनुसार भर जाएगा। वह ख़िलाफ़त जो हज़रत आदम से आरंभ हुई थी ख़ुदा तआला की पूर्ण और अपरिवर्तित नीति ने अन्तत: आदम पर ही समाप्त कर दी। यही नीति इस इल्हाम में है कि اَردتُّ اَنْ اَسْتخْلِفَ فَخَلَقْتُ اٰدم अर्थात् मैंने इरादा किया कि अपना ख़लीफ़ा बनाऊं। अत: मैंने आदम को पैदा कर दिया। चूंकि युग के बंदक होने का यही समय है जैसा कि सही हदीसें इस पर साक्षी हैं। इसलिए ख़ुदा तआला ने अन्तिम और प्रथम के शब्द को एक करने के लिए अन्तिम ख़लीफ़ा का नाम आदम रखा तथा आदम और ईसा में किसी कारण से आध्यात्मिक पृथकता नहीं अपितु समानता है ان مثل عيسى عند الله كمثل اٰدم* यदि यह आपत्ति की जाए कि ख़ुदा तआला ने यद्यपि एक नवीन पद्धति से पवित्र क़ुर्आन में स्पष्ट तौर पर वर्णन कर दिया कि इस्लाम का अन्तिम ख़लीफ़ा ख़ुदा के ख़लीफ़ों का आध्यात्मिक तौर पर ऐसे ख़लीफ़ा का रंग और रूप लेकर आएगा जो इस्राईली ख़लीफ़ों में से अन्तिम ख़लीफ़ा था अर्थात् मसीह इब्ने मरयम परन्तु क्या कारण कि ख़ुदा तआला ने इस भविष्यवाणी में मसीह इब्ने मरयम का स्पष्टतापूर्वक नाम लिया यद्यपि मतलब वही निकल आया।

इसका उत्तर यह है कि ताकि लोग बोध-भ्रम से विपत्ति में न पड़ जाएं क्योंकि यदि ख़ुदा तआला नाम लेकर स्पष्ट तौर पर वर्णन कर देता कि इस उम्मत का अन्तिम ख़लीफ़ा यही मसीह इब्ने मरयम ही होगा तो मूर्ख मौलवियों के लिए विपत्ति

---

* आलेइमरान-60

पर विपत्ति पैदा हो जाती और कुधारणा की विपत्ति बढ़ जाती। अत: ख़ुदा तआला ने अपने वर्णन में दो रायें रखना पसन्द किया। एक वह राय जो हदीसों में है जिसमें इब्ने मरयम का शब्द मौजूद है और दूसरी वह जो पवित्र क़ुर्आन में है जिसका अभी वर्णन हो चुका है। अत: इस बात का प्रमाण कि वह मसीह मौऊद जिसके आने का पवित्र क़ुर्आन में वादा दिया गया है वह विनीत ही है। उन समस्त तर्कों, लक्षणों तथा अनुमानों से जो निम्नलिखित हैं प्रत्येक सत्याभिलाषी पर भली भांति स्पष्ट हो जाएगा।

उनमें से एक यह है कि यह विनीत ऐसे समय में आया है जिस समय में मसीह मौऊद आना चाहिए था क्योंकि हदीस اَلْاٰيات بعد المائتين जिसके ये अर्थ हैं कि बड़े निशान तेरहवीं सदी में प्रकट होंगे इस बात को निश्चित एवं ठोस तौर पर सिद्ध करती है कि मसीह मौऊद का तेरहवीं शताब्दी (हिज्री) में प्रकट या जन्म हो। बात यह है कि छोटे निशान तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय से ही प्रकट होने आरंभ हो गए थे। अत: नि:सन्देह अलआयात से बड़े निशान अभिप्राय हैं जो किसी प्रकार से दो सौ वर्ष के अन्दर प्रकट नहीं हो सकते थे। अत: उलेमा की इसी पर सहमति हो गई है कि بَعْدَ الْمِائَتَيْنِ से अभिप्राय तेरहवीं शताब्दी (हिज्री) है और 'अलआयात' से अभिप्राय बड़े निशान हैं जो मसीह मौऊद, दज्जाल और याजूज-माजूज इत्यादि के प्रकटन हैं। प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि इस समय जो मसीह मौऊद के प्रकट होने का समय है इस विनीत के अतिरिक्त किसी ने दावा नहीं किया कि मैं मसीह मौऊद हूं। हां ईसाइयों ने भिन्न-भिन्न भाषाओं में मसीह मौऊद होने का दावा किया था। कुछ थोड़ा समय हुआ है कि एक ईसाई ने अमरीका में भी मसीह इब्ने मरयम होने का दावा किया था, परन्तु उन मुश्रिक ईसाइयों के दावे को किसी ने स्वीकार न किया। हां आवश्यक था कि वह ऐसा दावा करते ताकि इंजील की वह भविष्यवाणी पूरी हो जाती कि बहुत से लोग मेरे नाम पर आएंगे और कहेंगे कि मैं मसीह हूं परन्तु सच्चा मसीह इन सब के अन्त में आएगा। मसीह ने अपने हवारियों को नसीहत की थी कि तुम ने अन्तिम की प्रतीक्षा करनी

है। मेरे आने का अर्थात् मेरे नाम पर जो आएगा उसका निशान यह है कि उस समय सूर्य और चन्द्रमा अंधकारमय हो जाएगा और सितारे पृथ्वी पर गिर जाएंगे और आकाश की शक्तियां नष्ट हो जाएंगी, तब तुम आकाश पर इब्ने मरयम का निशान देखोगे। यह पूर्ण संकेत इस बात की ओर था कि उस समय ज्ञान का प्रकाश उठ जाएगा तथा ख़ुदा से संबंध रखने वाले उलेमा समाप्त हो जाएंगे और मूर्खता का अन्धकार फैल जाएगा। तब इब्ने मरयम आकाशीय आदेश से प्रकट होगा। यही संकेत सूरह अज़्ज़लज़ाल में है कि उस समय पृथ्वी पर भारी भूकम्प आएगा और पृथ्वी अपने समस्त ख़ज़ाने और गड़ी हुई निधियां बाहर निकाल देगी अर्थात् पृथ्वी की विद्याओं की बहुत उन्नति होगी परन्तु आकाशीय विद्याओं की नहीं يَوْمَ يَاْتِى السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ। उनमें से एक यह है कि महान वलियों के कश्फ़ पूर्ण सहमति से इस बात पर साक्षी हैं कि मसीह मौऊद का प्रादुर्भाव चौदहवीं सदी से पूर्व चौदहवीं सदी के सर पर होगा तथा इससे आगे आगे नहीं होगा। अत: हम नमूने के तौर पर एक सीमा तक इस पुस्तक में उल्लेख भी कर चुके हैं तथा स्पष्ट है कि इस समय में इस विनीत के आतिरिक्त इस पद का अन्य कोई दावेदार नहीं हुआ।

उनमें से एक यह है कि काफी समय हुआ कि यदि वह दज्जाल प्रकट हो गया है और बड़े जोर से उसका प्रकट न हो रहा है और उसका गधा भी जो वास्तव में उसी का बनाया हुआ है जैसा कि सही हदीसों का उद्देश्य है पूरब और पश्चिम का भ्रमण कर रहा है और वह गधा दज्जाल का बनाया होना जो हदीस की इच्छा के अनुसार है इस तर्क से भी सिद्ध होता है कि यदि ऐसा गधा साधारण तौर पर किसी गधी के पेट से पैदा होता तो इस प्रकार के बहुत से गधे अब भी मौजूद होने चाहिए थे। क्योंकि बच्चे का क़द, आकृति तथा घूमना-फिरना और शक्ति और बल में समानता उसके माता-पिता से आवश्यक है। अत: सही हदीसों का संकेत इसी बात की ओर है कि वह दज्जाल का गधा अपना ही बनाया हुआ होगा। फिर यदि वह रेल नहीं तो और क्या है। इसी प्रकार याजूज-माजूज की जातियां भी बड़े ज़ोर के साथ निकल रही हैं। दाब्बतुल अर्ज़ भी प्रत्येक स्थान पर दिखाई देता है। एक

अंधकारमय धुएं ने भी आकाश से उतर कर संसार को ढक लिया है। फिर यदि ऐसे समय में मसीह प्रकट न होता तो भविष्यवाणी में असत्य अनिवार्य हो जाता। अत: मसीह मौऊद जिस ने स्वयं को प्रकट किया वह यही विनीत है।

यदि यह सन्देह प्रस्तुत किया जाए कि दज्जाल के लक्षण पूर्ण रूप से इन अंग्रेज़ पादरियों के सम्प्रदायों में कहां पाए जाते हैं तो इसका उत्तर यह है कि हम पूर्ण रूप से इसी पुस्तक में सिद्ध कर आए हैं कि वास्तव में यही लोग कथित दज्जाल हैं और यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो समस्त लक्षण उन पर चरितार्थ हो रहे हैं। इन लोगों ने अपनी कलाओं, युक्तियों, दार्शनिकतापूर्ण महारत तथा आर्थिक समृद्धि के कारण प्रत्येक वस्तु जैसे अपने अधिकार में कर रखी है और यह लक्षण कि दज्जाल केवल चालीस दिन रहेगा और कुछ दिन एक वर्ष के समान होंगे यह बात वास्तविकता पर चरितार्थ नहीं हो सकती क्योंकि कुछ हदीसों में चालीस दिन की बजाए चालीस वर्ष अपितु पैंतालीस वर्ष भी आया है। फिर यदि कुछ दिन वर्ष के बराबर होंगे तो इस से अनिवार्य होता है कि मसीह इब्ने मरयम मृत्यु भी पा जाए और अभी दज्जाल शेष रहे। अत: वास्तविकता यह है कि ये सब शब्द व्याख्या योग्य हैं। दज्जाल की मृत्यु से अभिप्राय उस जाति का विनाश नहीं अपितु उस धर्म के तर्कों और प्रमाणों का विनाश है। कुछ सन्देह नहीं कि जो धर्म निश्चित तर्कों की दृष्टि से पूर्णरूप से पराजित हो जाए और उसकी बदनामी और अपमान प्रकट हो जाए वह नि:सन्देह मुर्दे के ही आदेश में होता है।

कुछ लोग यह सन्देह भी प्रस्तुत करते हैं कि एक प्रश्न के उत्तर में आँहज़रत स.अ.व. ने यह फ़रमाया था कि जब दज्जाल के युग में दिन लम्बे हो जाएंगे अर्थात् वर्ष के बराबर या उससे कम, तो तुम नमाज़ों का अनुमान लगा लिया करना। इस से ज्ञात होता है कि आँहज़रत स.अ.व. को इन्हीं प्रत्यक्ष अर्थों पर विश्वास था। इसका उत्तर यह है कि यह केवल काल्पनिक तौर पर एक प्रश्न का उत्तर प्रश्नकर्ता की इच्छानुसार दिया गया था और मूल घटना का वर्णन करना अभीष्ट न था अपितु आपने स्पष्ट तौर पर कह दिया था कि :-

سَاۤئِرُ اَیَّامِہٖ کَاَیَّامِکُمْ

इसके अतिरिक्त यह बात स्मरण रखने योग्य है कि ऐसी बातों में तो क्रियात्मक तौर पर सिखाई नहीं जातीं और न उनके गुप्त भागों को समझाया जाता है। नबियों से भी किसी बात की विवेचन के समय गलती हो जाने की संभावना है। उदाहरणतया उस स्वप्न के आधार पर जिसकी पवित्र क़ुर्आन में चर्चा है जो कुछ मोमिनों के लिए परीक्षा का कारण हुई थी। आँहज़रत स.अ.व. ने मदीना से मक्का की ओर कूच किया और कई दिन तक यात्रा करके उस पवित्र नगर तक पहुंचे, परन्तु काफ़िरों ने काबे के तवाफ़ से रोक दिया। उस समय उस स्वप्न की व्याख्या प्रकट नहीं हुई, परन्तु कुछ सन्देह नहीं कि आँहुज़ूर स.अ.व. ने इसी आशा पर यह यात्रा की थी कि इस बार यात्रा में ही तवाफ़ (परिक्रमा) हो जाएगा और नि:सन्देह रसूलुल्लाह स.अ.व. का स्वप्न वह्यी में सम्मिलित है परन्तु उस वह्यी के मूल अर्थ समझने में जो गलती हुई उस पर सतर्क नहीं किया गया था तभी तो ख़ुदा जाने कई दिन तक यात्रा का कष्ट उठा कर मक्का में पहुंचे। यदि मार्ग में अवगत किया जाता तो आंहज़रत स.अ.व. मदीना में अवश्य वापस आ जाते। फिर जब आप की पत्नियों ने आपके सामने हाथ नापने आरंभ किए थे तो आपको इस ग़लती से अवगत नहीं किया गया यहां तक कि आप मृत्यु पा गए और प्रत्यक्षतया ज्ञात होता है कि आपकी यही राय थी कि वास्तव में जिस पत्नी के लम्बे हाथ हैं वही सब से पहले मृत्यु पाएगी। इसी कारण बावजूद इसके कि आप के सामने परस्पर हाथ नापे गए किन्तु आपने रोका नहीं कि यह कृत्य तो भविष्यवाणी के आशय के विरुद्ध है। इसी प्रकार इब्ने सय्याद के बारे में शुद्ध रूप से वह्यी स्पष्ट नहीं हुई थी और आपका आरंभ में यही विचार था कि इब्ने सय्याद वही दज्जाल है किन्तु अन्त में राय परिवर्तित हो गई थी। इसी प्रकार सूरह रूम की भविष्यवाणी के संबंध में जो अबू बकर सिद्दीक़(रज़ि.) ने शर्त लगाई थी। आँहज़रत स.अ.व. ने साफ़ कहा कि بِضْع का शब्द अरबी शब्दकोश में नौ वर्ष तक बोला जाता है और मैं अच्छी प्रकार से सूचित नहीं किया गया कि नौ वर्ष की सीमा के अन्दर किस वर्ष यह भविष्यवाणी पूरी होगी। इसी

प्रकार वह हदीस जिसके शब्द ये हैं :-

فذهب وهلی الٰی انها الیمامہ اوھجر فاذا ھی المدینۃ یثرب

स्पष्ट तौर पर प्रकट कर रही है कि आँहज़रत स.अ.व. ने जो कुछ अपनी विवेचन से भविष्यवाणी का अवसर और चरितार्थ समझा था वह ग़लत निकला और हज़रत मसीह की भविष्यवाणियों का सबसे विचित्र हाल है। उन्होंने कई बार किसी भविष्यवाणी के अर्थ कुछ और समझे और अन्त में कुछ और ही प्रकट हुआ। यहूदा इस्क्रियूती को एक भविष्यवाणी में स्वर्ग का बारहवां तख़्त दिया परन्तु वह पूर्णतया स्वर्ग से ही वंचित रहा, और कभी उसे स्वर्ग की चाबियां दीं और कभी उसे शैतान बनाया। इसी प्रकार इंजील से मालूम होता है कि हज़रत मसीह का कश्फ़ कुछ बहुत साफ़ नहीं था और उनकी कई भविष्यवाणियां बोधभ्रम के कारण पूरी नहीं हो सकीं, परन्तु अपने मूल अर्थों में पूरी हो गईं। बहरहाल इन समस्त बातों से निश्चित तौर पर यह नियम स्थापित होता है कि भविष्यवाणियों की व्याख्या और ताबीर में नबियों को भी कभी ग़लती लग जाती है। जितने शब्द वह्यी के होते हैं वे तो नि:सन्देह प्रथम श्रेणी के सच्चे होते हैं परन्तु नबियों की आदत होती है कि कभी अपनी ओर से प्रयास करके किसी सीमा तक उनकी व्याख्या करते हैं और चूंकि वे मनुष्य है इसलिए व्याख्या में कभी ग़लती की संभावना होती है परन्तु धार्मिक और ईमानी बातों में ग़लती की गुंजायश नहीं होती, क्योंकि उनके प्रचार में अल्लाह तआला की ओर से विशिष्ट प्रबन्ध होता है और वह नबियों को क्रियात्मक तौर पर भी सिखाया जाता है। अत: हमारे नबी स.अ.व. को स्वर्ग और नर्क भी दिखाया गया और स्पष्ट, सुदृढ़ और निरन्तरता वाली आयतों से स्वर्ग और अग्नि की वास्तविकता भी प्रकट की गई है फिर क्योंकर संभव था कि उसकी व्याख्या में ग़लती कर सकते। ग़लती की संभावना केवल ऐसी भविष्यवाणियों में होती है जिन्हें अल्लाह तआला स्वयं संदिग्ध तथा संक्षिप्त रखना चाहता है और धार्मिक समस्याओं से उनका कुछ संबंध नहीं होता। यह एक अत्यन्त सूक्ष्म रहस्य है जिसे स्मरण रखने से नुबुव्वत के पद की सही पहचान प्राप्त होती है और इसी आधार पर हम कह सकते हैं कि यदि आँहज़रत

स.अ.व. पर इब्ने मरयम और दज्जाल की पूर्ण वास्तविकता किसी नमूने के मौजूद न होने के कारण आपने-सामने प्रकट न हुई हो और न दज्जाल के सत्तर गज़ के गधे का मूल विवरण स्पष्ट हुआ और न याजूज-माजूज की गहराई तक ख़ुदा की वह्यी ने सूचना दी हो और न दाब्बतुलअर्ज़ (पृथ्वी का कीड़ा) का मर्म यथावत् प्रकट किया गया और केवल उदाहरणों, समान रूपों तथा एक समान बातों की वर्णन शैली में जहां तक मानव शक्तियों द्वारा परोक्ष मात्र का बोध कराना संभव है संक्षिप्त तौर पर समझाया गया हो तो कुछ आश्चर्य की बात नहीं और ऐसे मामलों में यदि प्रकट होने के समय कुछ अज्ञात भाग ज्ञात हो जाएं तो नुबुव्वत की शान में कुछ आपत्ति नहीं, किन्तु क़ुर्आन और हदीस पर विचार करने से यह भली-भांति सिद्ध हो गया है कि हमारे सरदार व स्वामी स.अ.व. ने यह तो निश्चित और ठोस तौर पर समझ लिया था कि वह इब्ने मरयम जो ख़ुदा का रसूल नासिरी नबी और इंजील वाला है वह कदापि संसार में दोबारा नहीं आएगा अपितु उसके नाम से कोई आएगा, जो आध्यात्मिक समरूपता के कारण ख़ुदा तआला की ओर से उसके नाम को पाएगा।

उन लक्षणों के सिवा जो इस विनीत के मसीह मौऊद होने के बारे में पाए जाते हैं वे विशेष सेवाएं हैं जो इस विनीत को मसीह इब्ने मरयम की सेवाओं के रंग पर सौंपी गई हैं, क्योंकि मसीह उस समय यहूदियों में आया था कि जब तौरात का सार और आन्तरिक भाग यहूदियों के हृदयों से उठाया गया था और वह युग हज़रत मूसा से चौदह सौ वर्ष बाद था कि जब मसीह इब्ने मरयम यहूदियों के सुधार के लिए भेजा गया था। अत: ऐसे ही समय में यह विनीत आया कि जब पवित्र क़ुर्आन का सार और आन्तरिक भाग (بطن) मुसलमानों के हृदयों से उठाया गया। यह युग भी हज़रत मूसा के मसील के समय से उसी युग के लगभग गुज़र चुका था जो हज़रत मूसा और ईसा के मध्य का युग था।

उनमें से एक यह कि आवश्यक था कि आने वाला इब्ने मरयम अलिफ़ शिशम (छठे हज़ार) के अन्त में पैदा होता क्योंकि सामान्य और पूर्ण अंधकार के सार्वजनिक

तौर पर फैलने के कारण और मानवता की वास्तविकता पर एक फ़ना (मृत्यु) व्याप्त होने के कारण वह आध्यात्मिक तौर पर अबुल बशर अर्थात् आदम के रूप पर पैदा होने वाला है और बड़े लक्षण और निशान उसके प्रकट होने के समय में इंजील और क़ुर्आन में ये लिखे हैं कि इससे पूर्व आध्यात्मिक तौर पर समस्त संसार में एक उपद्रव पैदा हो जाएगा। आकाशीय प्रकाश का स्थान धुआं ले लेगा और एक संसार पर धुएं का अंधकार छा जाएगा, सितारे गिर जाएंगे, पृथ्वी पर एक भीषण भूकम्प आ जाएगा। पुरुष जो सत्य के अभिलाषी होते हैं थोड़े रह जाएंगे और संसार में स्त्रियां फैल जाएंगी अर्थात् घटिया आनन्दों के अभिलाषी बहुत हो जाएंगे जो अधम ख़ज़ानों और गड़ी हुई निधियों को पृथ्वी से बाहर निकालेंगे। किन्तु आकाशीय ख़ज़ानों से अनभिज्ञ हो जाएंगे, तब वह आदम जिसका दूसरा नाम इब्ने मरयम भी है हाथों के माध्यम के बिना पैदा किया जाएगा। उसी की ओर वह इल्हाम संकेत कर रहा है जो **बराहीन** में लिखा जा चुका है और वह यह है :-

اردت اَنْ أستخلف فخلقتُ اٰدم

अर्थात् मैंने इरादा किया कि अपना ख़लीफ़ा बनाऊं। अत: मैंने आदम को पैदा किया। आदम और इब्ने मरयम वास्तव में एक ही अर्थ पर आधारित हैं। अन्तर केवल इतना है कि आदम का शब्द लोगों के अभाव के युग पर एक पूर्ण तर्क रखता है और इब्ने मरयम का शब्द अपूर्ण तर्क। परन्तु दोनों शब्दों के प्रयोग से ख़ुदा तआला का उद्देश्य और अभिप्राय एक ही है। इसी की ओर इस इल्हाम का भी संकेत है जो बराहीन में लिखा है और वह यह है :-

اِنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ کَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَا هُمَا۔ کنتُ کَنْزًا مَخْفِيًّا فَاَحْبَبْتُ اَنْ اُعْرَفَ۔

अर्थात् पृथ्वी तथा आकाश बन्द थे और सच्चाइयां तथा अध्यात्म ज्ञान छुप गए थे। अत: हमने उनको उस व्यक्ति के भेजने से खोल दिया। मैं एक गुप्त ख़ज़ाना था। अत: मैंने चाहा कि पहचाना जाऊं।

अब जबकि इस सम्पूर्ण वर्णन से प्रकट हुआ कि आवश्यक है कि अन्तिम ख़लीफ़ा आदम के नाम पर आता और स्पष्ट है कि आदम के प्रकट होने का समय छठा दिन अस्र के निकट है जैसा कि सही हदीसों और तौरात से भी सिद्ध होता है। इसलिए प्रत्येक न्यायप्रिय को स्वीकार करना पड़ेगा कि वह आदम और इब्ने मरयम यही विनीत है। क्योंकि प्रथम तो ऐसा दावा इस विनीत से पूर्व कभी किसी ने नहीं किया और इस विनीत का यह दावा दस वर्ष से प्रसारित हो रहा है और बराहीन अहमदिया में काफ़ी समय पूर्व यह इल्हाम प्रकाशित हो चुका है कि ख़ुदा तआला ने इस विनीत के बारे में फ़रमाया है कि यह आदम है और यह ख़ुदा तआला की एक बारीक और पूर्ण नीति है कि इस तूफ़ान और विवादों के समय से दस वर्ष पूर्व ही उसने इस विनीत का नाम आदम और ईसा रख दिया ताकि विचार करने वालों के लिए निशान हो और ताकि इस दिखावे और व्याख्या का विचार दूर हो जाए जो अपरिपक्व स्वभाव वाले लोगों के हृदयों में बसा हुआ है। अत: उस स्वच्छन्द हकीम (ख़ुदा) ने इस विनीत का नाम आदम और ख़लीफ़तुल्लाह रख कर तथा اِنّی جاعلٌ فی الارض خلیفۃ का **बराहीन अहमदिया** में नितान्त स्पष्ट तौर पर शुभ सन्देश देकर लोगों का ध्यानाकर्षण किया ताकि उस ख़ुदा के ख़लीफ़ा आदम का आज्ञा पालन करें तथा आज्ञापालन करने वाली जमाअत से बाहर न रहें और शैतान की तरह ठोकर न खाएं और مَنْ شَذَّ شُذَّ فِی النَّار की धमकी से बचें और अपने इल्हामों की वास्विकता को समझें, परन्तु उन्होंने अंधी लकीर का नाम जमाअत रखा और सच्ची जमाअत जो प्रत्यक्ष पर दृष्टि रखने वालों की एक छोटी जमाअत और **قلیلاً ماھُم** (वे बहुत थोड़े हैं) में सम्मिलित है उससे मुख फेर लिया और इस विनीत को जो ख़ुदा तआला ने आदम नियुक्त करके भेजा उस का यह निशान रखा कि अल्फ़ में जो छठे दिन के स्थान पर है, अर्थात् अन्तिम भाग हज़ार में जो अस्र के समय के समान है इस विनीत को पैदा किया, जैसा कि वह फ़रमाता है :-

وَاِنَّ یَوۡمًا عِنۡدَ رَبِّکَ کَاَلۡفِ سَنَۃٍ مِّمَّا تَعُدُّوۡنَ ۝ *

---

* अलहज्ज-48

और अवश्य था कि वह इब्ने मरयम जिस का इंजील और क़ुर्आन में आदम नाम भी रखा गया है वह आदम की पद्धति पर छठे हज़ार के अन्त में प्रकट होता। अत: प्रथम आदम की पैदायश से छठे हज़ार में प्रकट होने वाला यही विनीत है। बहुत सी हदीसों से सिद्ध हो गया है कि आदम के बेटों की आयु सात हज़ार वर्ष है और अन्तिम आदम पहले आदम की प्रकटन पद्धति पर छठे हज़ार के अन्त में जो छठे दिन के आदेश में है पैदा होने वाला है। अत: वह यही है जो पैदा हो गया। इस पर अल्लाह तआला की हर प्रकार से प्रशंसा।

उनमें से एक यह है कि मसीह के उतरने का लक्षण यह लिखा है किर दो फ़रिश्तों के पंखों पर उसने अपनी हथेलियां रखी हुई होंगी। यह इस बात की ओर संकेत है कि उसका दायां और बायां हाथ जो बौद्धिक विद्याओं की प्राप्ति और आन्तरिक प्रकाशों का माध्यम है आकाशीय फ़रिश्तों के सहारे पर होगा और वह पाठशाला, पुस्तकों तथा शैख़ों से नहीं अपितु ख़ुदा तआला से प्रदत्त ज्ञान पाएगा और उसके जीवन की आवश्यकताओं का भी ख़ुदा ही अभिभावक होगा जैसा कि दस वर्ष से बराहीन अहमदिया में इस विनीत के बारे में यह इल्हाम प्रकाशित हो चुका है कि :-

اِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا سَمَّيْتُكَ الْمُتَوَكِّل وَ عَلَّمْنٰهُ مِنْ الَّدُنَّا عِلْمًا

अर्थात् तू हमारी आंखों के सामने है, हमने तेरा नाम मुतवक्किल रखा और अपनी ओर से ज्ञान सिखाया। स्मरण रहे कि अजिनह: से अभिप्राय जो हदीस में है विशेषताएं और फ़रिश्तों की शक्तियां हैं जैसा कि ''लम्आत शारिह मिश्कात'' के लेखक ने निम्नलिखित हदीस की व्याख्या में यही अर्थ लिखे हैं :-

عن زيد بن ثابت قال قال رسول الله صلّى الله عليه وسلّم
طوبى للشام قلنا لایّ ذلك يا رسولَ الله قال لان مَلٰئكة
الرحمٰن باسطة اجنحتها عليها رواهُ احمد والترمذی

यह बात बहुत सी हदीसों और पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध है कि जो व्यक्ति पूर्ण रूपेण संसार से पृथक होकर पूर्णतया ख़ुदा पर भरोसे की श्रेणी पैदा कर लेता है तो

फ़रिश्ते उसके सेवक बना दिए जाते हैं और प्रत्येक फ़रिश्ता अपने पद के अनुसार उसकी सेवा करता है जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ۝ *

इसी प्रकार ख़ुदा तआला फ़रमाता है :-

وَحَمَلْنٰهُمْ فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ **

अर्थात् उठाया हमने उनको जंगलों में और दरियाओं में।

अब क्या इसके ये अर्थ करने चाहिए कि वास्तव में ख़ुदा तआला अपनी गोद में लेकर उठाए फिरा। अत: इसी प्रकार फ़रिश्तों के पंखों पर हाथ रखना वास्तविकता पर चरितार्थ नहीं।

अब तात्पर्य यह है कि यह विनीत ऐसे उपरोक्त कथित लक्षण के साथ आया है और फ़रिश्तों के परों पर इस विनीत के दोनों हाथ हैं तथा परोक्ष की शक्तियों के सहारे ख़ुदा प्रदत्त ज्ञान खुल रहे हैं। यदि कोई व्यक्ति अंधा नहीं तो इस लक्षण से स्पष्ट तौर पर देख लेगा और अन्य में इसका उदाहरण नहीं पाएगा।

उनमें से एक यह है कि मसीह का लक्षण एक यह लिखा है कि उसकी फूंक से काफ़िर मरेगा। इसका तात्पर्य यह है कि उसके विरोधी और इन्कारी किसी बात में उसका मुक़ाबला नहीं कर पाएंगे क्योंकि उसके पूर्ण तर्कों के सामने मर जाएंगे। अत: शीघ्र ही लोग देखेंगे कि विरोधी वास्तव में प्रमाण और स्पष्ट तर्कों की दृष्टि से मर गए।

उनमें से एक यह है कि मसीह जब आएगा तो लोगों की आस्थाओं और विचारों के दोष निकालेगा जैसा कि बुख़ारी में यही हदीस लिखी है कि मसीह इब्ने मरयम हकम और अदल होने की अवस्था में उतरेगा। अत: हकम और अदल के

---

* हाम्मीम अस्सजदह-31

** बनी इस्राईल-71

शब्द से प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि मसीह बहुतों की समझ और बोध के विपरीत सत्य और न्याय के साथ निर्णय करेगा और जैसे हकम और अदल से मूर्ख लोग नाराज़ हो जाते हैं, इसी प्रकार उस से भी होंगे। अत: यह विनीत हकम होकर आया और गलत भ्रमों का ग़लत भ्रम होना प्रकट कर दिया। अत: लोग प्रथम यह समझ रहे थे कि वही मसीह इब्ने मरयम नासिरी नबी जो मृत्यु पा चुका है फिर दोबारा संसार में आ जाएगा। अत: पहले उनकी यही ग़लती दूर कर दी गई और उन लोगों को सच्चा ठहराया गया जो मुसलमानों में से मसीह की मृत्यु को स्वीकार करते थे या जैसे ईसाइयों में से यूनीटेरियन फ़िर्क़ा जो इसी बात को मानता है कि मसीह मृत्यु पा गया और पुन: संसार में नहीं आएगा तथा स्पष्ट कर दिया गया कि पवित्र क़ुर्आन की तीस आयतों से मसीह इब्ने मरयम का मृत्यु प्राप्त होना सिद्ध होता है अपितु सत्य तो यह है कि किसी नबी की मृत्यु का पवित्र क़ुर्आन में ऐसी स्पष्टता से वर्णन नहीं हुआ जैसा कि मसीह इब्ने मरयम की मृत्यु का। यह वह बात है जिसे हम पवित्र क़ुर्आन के अनुसार शर्त के तौर पर प्रस्तुत कर सकते हैं तथा हमने मसीह की मृत्यु का सबूत देने के पश्चात् यह भी सिद्ध कर दिया कि वादा केवल यह था कि जब इस उम्मत के दिन चौदहवीं सदी तक पहुंच जाएंगे तो ख़ुदा तआला उस कृपा और उपकार की भांति हज़रत मूसा की उम्मत से उसके अन्तिम दिनों में किया था, मूसा के मसील की एक लापरवाह उम्मत पर भी उसके अन्तिम युग में वही उपकार करेगा तथा इसी उम्मत में से एक को मसीह इब्ने मरयम बना कर भेजेगा। अत: वह मुसलमानों में से ही आएगा जैसा कि इस्राईली इब्ने मरयम बनी इस्राईल में से ही आया।

इसी प्रकार लोग यह समझ रहे थे कि मसीह मृत्योपरांत आँहज़रत स.अ.व. की क़ब्र में दफ़्न किया जाएगा, परन्तु वे इस अनादर को नहीं समझते थे कि ऐसे मूर्ख और असभ्य कौन लोग होंगे जो आँहज़रत स.अ.व. की क़ब्र को खोदेंगे। यह कितनी व्यर्थ बात है कि हमारे मान्य रसूल की क़ब्र खोदी जाए और लोगों को उस पुनीत नबी की अस्थियां दिखाई जाएं अपितु यह आध्यात्मिक संलग्नता की ओर

संकेत है। इसी प्रकार की अन्य बहुत सी ग़लतियां हैं जो निकल रही हैं।

उन ग़लतियों में से एक यह है कि आने वाले मसीह मौऊद का एक लक्षण यह लिखा है कि वह ख़ुदा का नबी होगा अर्थात् ख़ुदा तआला से वह्यी पाने वाला, परन्तु यहां पूर्ण नुबुव्वत अभिप्राय नहीं क्योंकि पूर्ण और कामिल नुबुव्वत पर मुहर लग चुकी है अपितु वह नुबुव्वत अभिप्राय है जो मुहद्दिस होने के अर्थ तक सीमित है जो मुहम्मद की नुबुव्वत के दीपक से प्रकाश प्राप्त करती है। अत: यह ने'मत विशेष तौर पर इस खाकसार को दी गई है और यद्यपि प्रत्येक को सच्चे स्वप्नों तथा कश्फ़ों से कुछ भाग प्राप्त है परन्तु विरोधियों के हृदय में यदि सन्देह और संशय हो तो वे मुक़ाबला करके परख सकते हैं कि इस ख़ाकसार को सच्चे स्वप्नों, कश्फ़ों, दुआ की स्वीकारिता तथा सच्चे और सही इल्हामों का नबियों के क़रीब-करीब प्रचुर मात्रा में जो भाग प्रदान किया गया है वह वर्तमान युग के समस्त मुसलमानों में से किसी को प्रदान नहीं किया गया। यह परखने का एक बड़ा मापदण्ड है क्योंकि सच्चे नबी के सच्चे होने पर आकाशीय समर्थन के समान कोई साक्षी नहीं। जो व्यक्ति ख़ुदा तआला की ओर से आता है नि:सन्देह ख़ुदा तआला उसके साथ होता है तथा मुक़ाबले के मैदानों में एक विशेष प्रकार से उसकी सहायता करता है। चूंकि मैं सत्य पर हूं और देखता हूं कि ख़ुदा मेरे साथ है जिसने मुझे भेजा है इसलिए मैं बड़े सन्तोष और पूर्ण विश्वास के साथ कहता हूं कि यदि मेरी सारी क़ौम, क्या पंजाब के रहने वाले और क्या हिन्दुस्तान के रहने वाले और क्या अरब के मुसलमान और क्या रोम और फारस के मुसलमान और क्या अफ़्रीक़ा तथा अन्य देशों के मुसलमान और उन के विद्वान, उनके साधक, धर्माचार्य तथा वली और उनके पुरुष और उनकी स्त्रियां मुझे झूठा समझ कर फिर मेरे मुक़ाबले पर देखना चाहें कि स्वीकारिता के लक्षण मुझ में हैं या उन में तथा आकाशीय द्वार मुझ पर खुले हैं अथवा उन पर और वह वास्तविक प्रियतम अपनी विशेष अनुकम्पाओं तथा अपने प्रदत्त ज्ञानों तथा आध्यात्मिक ज्ञानों के इल्क़ा के कारण मेरे साथ है या उनके साथ। उन पर बहुत शीघ्र प्रकट हो जाएगा कि वह विशेष कृपा और विशेष दया जिससे हृदय वरदानों

के उतरने का स्थान बनाया जाता है इसी ख़ाकसार पर उसकी क़ौम से अधिक है। कोई व्यक्ति इस वर्णन को अहंकार न समझे अपितु यह ख़ुदा की ने'मत की चर्चा के तौर पर है। यह ख़ुदा की कृपा है जिसे चाहता है प्रदान करता है। इसी की ओर इन इल्हामों में संकेत है :-

قُلْ اِنِّیْ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِیْنَ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَذْھَبَ عَنِّی الْحُزْنَ وَ آتَانِیْ مَالَمْ یُؤْتِ اَحَدٌ مِّنَ الْعٰلَمِیْنَ۔

اَحَدٌ من العٰلمين से अभिप्राय वर्तमान युग के लोग या भावी युग के लोग हैं। अधिक उचित ख़ुदा ही जानता है।

इनमें से कुछ कश्फ़ स्वर्गीय मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी के हैं जो इस विनीत के प्रकटन से पूर्व गुज़र चुके हैं। अत: एक यह है कि आज दिनांक 17 जून 1891 ई. से चार माह का समय गुज़रा है कि हाफ़िज़ मुहम्मद युसुफ़ साहिब जो एक सदाचारी पुरुष, आडम्बर रहित, संयमी, सुन्नत के पाबन्द, प्रथम श्रेणी के मित्र तथा निष्कपट मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी हैं, वह क़ादियान में इस विनीत के पास आए तथा बातों के क्रम में वर्णन किया कि स्वर्गीय मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ने अपनी मृत्यु से कुछ दिन पूर्व अपने कश्फ़ से एक भविष्यवाणी की थी कि आकाश से क़ादियान की ओर एक प्रकाश उतरा, परन्तु खेद कि मेरी सन्तान उस से वंचित रह गई, केवल एक सज्जन ग़ुलाम नबी नारो वाले नामक अपने 2 जीक़ा'दा के विज्ञापन में लिखते हैं कि यह झूठ है और झूठ नहीं तो उस वर्णनकर्ता का नाम लेना चाहिए था जिसके समक्ष स्वर्गीय मौलवी साहिब ने वर्णन किया कि वह वर्णनकर्ता कौन और किस श्रेणी का मनुष्य है। उन्हें चाहिए कि हाफ़िज़ साहिब से पूछें कि झूठ है या सच बात है। ومن اظلم ممن افترى और كذّب واَبٰى

इसी प्रकार फ़रवरी 1886 ई. में होशियारपुर में स्वर्गीय मुन्शी मुहम्मद याक़ूब साहिब ग़ज़नवी एक दिन मैंने सुना कि वह आपके बारे में अर्थात् इस विनीत के बारे में कहते थे कि मेरे पश्चात् एक महान कार्य के लिए वह अवतरित किए जाएंगे परन्तु

मुझे स्मरण नहीं रहा कि मुन्शी मुहम्मद याक़ूब साहिब के मुख से यही शब्द निकले थे या इसके समानार्थक अन्य शब्द थे। बहरहाल उन्होंने कुछ लोगों के समक्ष जिनमें से एक मियां अब्दुल्लाह सन्नौरी रियासत पटियाला के निवासी हैं इस मतलब को इन्हीं शब्दों या अन्य शब्दों में वर्णन किया था। मुझे स्मरण है कि उस समय मुन्शी इलाही बख़्श साहिब एकाउंटैन्ट तथा कई अन्य सज्जन मेरे मकान पर जो शैख महर अली साहिब रईस का मकान था, मौजूद थे परन्तु यह मालूम नहीं कि उस जलसे में कौन-कौन उपस्थित था। जब यह चर्चा की गई तो मियां अब्दुल्लाह सन्नौरी ने मेरे पास वर्णन किया कि इस चर्चा के समय मैं उपस्थित था तथा मैंने अपने कानों से सुना।

इनमें से एक कश्फ़ एक ख़ुदा में लीन फ़क़ीर का है जो आज से तीस या इकत्तीस वर्ष पूर्व जो इस नश्वर संसार से गुज़र चुका है। जिस व्यक्ति के मुख से मैंने यह कश्फ़ सुना है वह एक सफेद बालों वाला वयोवृद्ध मनुष्य है, उस सफेद बालों वाले पीर की बहुत प्रशंसा की कि वास्तव में यह व्यक्ति संयमी, सुन्नत का पाबन्द और सत्यवादी है और उन्होंने न केवल स्वयं ही प्रशंसा की अपितु अपने एक पत्र में यह भी लिखा कि मौलवी मुहम्मद हसन साहिब रईस लुधियाना कि जो केवल ख़ुदा को मानने वाले वर्ग में से एक मान्य, सुशील तथा नितान्त शिष्ट, शान्तचित्त और विश्वस्त हैं जिनके स्वर्गीय पिता का जो एक महान गुणवान बुज़ुर्ग थे, यह सफेद बालों वाला वृद्ध पुराना मित्र, सहजाति बहुत समय से परिचित तथा उनकी लाभप्रद संगतों के रंग से रंगीन है वर्णन करते थे कि वास्तव में मियां करीम बख़्श अर्थात् यह सफेद बालों वाला बुज़ुर्ग बहुत अच्छा मनुष्य है और विश्वसनीय है, मुझे उस पर किसी भी प्रकार का सन्देह नहीं है।

अब वह कश्फ़ जिस प्रकार से कथित मियां करीम बख़्श ने अपने लिखित बयान में व्यक्त किया है उस की नक़ल उन समस्त साक्ष्यों सहित जो उस काग़ज़ पर अंकित हैं। हम नीचे लिखते हैं और वह यह है :-

मेरा नाम करीम बख़्श पुत्र ग़ुलाम रसूल क़ौम आ'वान निवासी जमालपुर

आ'वाना, तहसील लुधियाना, पेशा ज़मींदारी, आयु लगभग चौंसठ वर्ष, धर्म केवल एक ख़ुदा को मानने वाला अहले हदीस शपथ खा कर वर्णन करता हूं कि तीस या इकत्तीस वर्ष के लगभग समय गुज़रा होगा अर्थात् सम्वत् 1917 में जब कि सन् 17 का एक प्रसिद्ध दुर्भिक्ष पड़ा था, एक बुज़ुर्ग ग़ुलाब शाह नामक जिसने मुझे एक ख़ुदा का मार्ग सिखाया और जो अपनी फ़क़ीरी के गुणों के कारण बहुत प्रसिद्ध हो गया था, मूल निवासी लाहौर का था हमारे गांव जमालपुर में आ गया था। प्रारंभ में एक फ़क़ीर, साधक, संयमी और उपासक था और उसके मुख से एकेश्वरवाद के रहस्य निकलते थे, परन्तु अन्त में उस पर एक ऊंघ और अचेतना व्याप्त होकर ख़ुदा में लीन हो गया। कभी-कभी घटनापूर्व कुछ परोक्ष की बातें उसकी जीभ पर जारी होतीं और वह जिस प्रकार वर्णन करता अन्ततः उसी प्रकार पूर्ण हो जातीं। अतः एक बार उसने संवत् 17 के दुर्भिक्ष से पूर्व एक भयंकर दुर्भिक्ष के आने की भविष्यवाणी की थी और घटनापूर्व मुझे भी सूचित किया था। अतः थोड़े दिनों के पश्चात् संवत् 17 का दुर्भिक्ष पड़ गया था तथा उसने एक बार बताया था कि गांव रामपुर सियासत पटियाला, तहसील - पाइली के निकट जहां अब नहर चलती है हमने वहां निशान लगाया है कि यहां दरिया चलेगा। अतः एक लम्बी अवधि के पश्चात् वहां उसी निशान के स्थान पर नहर जारी हो गई जो वास्तव में दरिया की ही एक शाखा है। उनकी यह भविष्यवाणी सारे जमालपुर में प्रसिद्ध है। इसी प्रकार एक बार उन्होंने संवत् 17 के दुर्भिक्ष से पूर्व कहा था कि अब व्यापारियों को बहुत लाभ होगा। अतः कुछ समय पश्चात् दुर्भिक्ष पड़ा और व्यापारी लोगों को इस दुर्भिक्ष में बड़ा लाभ हुआ। इसी प्रकार उन की कई भविष्यवाणियां थीं जो पूर्ण होती रहीं।

एक बार इस बुज़ुर्ग ने तीस वर्ष पूर्व मुझे कहा कि ईसा अब जवान हो गया है तथा लुधियाना में आकर क़ुर्आन की ग़लतियां निकालेगा और क़ुर्आन के अनुसार फैसला करेगा और कहा कि मौलवी उस से इन्कार करेंगे, फिर कहा कि मौलवी इन्कार कर जाएंगे तब मैंने अश्चर्य से कहा कि क्या क़ुर्आन में भी ग़लतियां हैं, क़ुर्आन तो अल्लाह का कलाम है तो उन्होंने उत्तर दिया कि तफ़्सीरों पर तफ़्सीरें हो गईं तथा

काव्य भाषा फैल गई। (अर्थात् अतिशयोक्ति पर अतिशयोक्ति करके वास्तविकताओं को छुपाया गया, जिस प्रकार कवि अतिशयोक्तियों पर बल देकर मूल वास्तविकता को छुपा देता है) पुन: कहा कि जब वह ईसा आएगा तो फ़ैसला क़ुर्आन से करेगा। पुन: उस भिक्षु ने बात की पुनरावृत्ति करते हुए यह भी कहा था कि फ़ैसला क़ुर्आन पर करेगा और मौलवी इन्कार कर जाएंगे तथा जब वह ईसा लुधियाना में आएगा तो भयंकर दुर्भिक्ष पड़ेगा। फिर मैंने पूछा कि ईसा अब कहां हैं तो उन्होंने उत्तर दिया कि बीच क़ादियान के अर्थात् क़ादियान में, तब मैंने कहा कि क़ादियान तो लुधियाना से तीस कोस पर है, वहां ईसा कहां है (लुधियाना के निकट एक गांव है जिसका नाम, क़ादियान है) इसका उन्होंने कुछ उत्तर न दिया तथा मुझे कुछ ज्ञान न था कि ज़िला गुरदासपुर में भी कोई गांव है जिसका नाम क़ादियान है, फिर मैंने उनसे पूछा कि ख़ुदा के नबी ईसा आकाश पर उठाए गए और का'ब: पर उतरेंगे तब उन्होंने उत्तर दिया कि ख़ुदा का नबी ईसा तो मर गया है अब वह नहीं आएगा हम ने भली भांति छान-बीन की है कि मर गया है, हम बादशाह हैं झूठ नहीं बोलेंगे और कहा कि जो आकाशों वाले सज्जन हैं वे किसी के पास चलकर नहीं आया करते।

इश्तिहार देने वाला

मियां करीब बख़्श, स्थान लुधियाना, मुहल्ला - इक़बालगंज

14, जून सन् 1891 ई. दिन शनिवार

उन लोगों के नाम जिन्होंने इस बयान को अपने कानों से सुनकर मियां करीम बख़्श के लिखित बयान उनके समक्ष उसी समय अपनी-अपनी साक्ष्यें लिखीं।

मेरे समक्ष मियां करीम बख़्श ने उपरोक्त बयान अक्षरश: लिखवाया

(मीर अब्बास अली बक़लम ख़ुद)

मेरे समक्ष मियां करीम बख़्श ने उपरोक्त बयान लिखवाया।

ख़ाकसार - रुस्तम अली, डिप्टी इन्सपैक्टर रेलवे पुलिस, 14, जून 1891 ई.

इस ख़ाकसार के सामने मियां करीम बख़्श ने यह बयान लिखवाया और यह लेख बिना किसी कमीबेशी के अक्षरश: लिखा गया। (अब्दुल्लाह पटवारी ग़ौसगढ़)

मेरे सामने मियां करीम बख़्श ने यह बयान अक्षरश: लिखवाया।
इलाह बख़्श बक़लम ख़ुद, निवासी - लुधियाना

मेरे समक्ष उपरोक्त बयान मियां करीम बख़्श ने अक्षरश: लिखवाया।
अताउर्रहमान - निवासी देहली

मेरे सामने मियां करीम बख़्श ने उपरोक्त लेख अक्षरश: लिखवाया।
ग़ुलाम मुहम्मद, पक्खोवाला बक़लम ख़ुद

मेरे सामने मियां करीम बख़्श ने उपरोक्त बयान अक्षरश: शपथ उठाते हुए लिखवाया।
अब्दुल हक़ पुत्र अब्दुस्समी, निवासी - लुधियाना

यह बयान मियां करीम बख़्श ने शपथ उठाते हुए मेरे सामने लिखवाया है।
अब्दुल क़ादिर, शिक्षक, जमालपुरा बक़लम ख़ुद

उपरोक्त बयान मेरी उपस्थिति में शपथ उठाते हुए मियां करीम बख़्श, निवासी जमालपुर ने लिखवाया है।
कन्हैया लाल 2nd मास्टर, राजस्कूल - संगरूर, रियासत जींद, निवासी लुधियाना

उपरोक्त बयान मेरे समक्ष अक्षरश: मियां करीम बख़्श ने कसम उठा कर लिखवाया है।
सय्यद इनायत अली, निवासी - लुधियाना, मुहल्ला - सूफ़ियान

इस ख़ाकसार के सामने मियां करीम बख़्श ने उपरोक्त बयान शपथ उठाते हुए लिखवाया है।

सय्यद फ़ज़्ल शाह - निवासी - रियासत जम्मू

मियां करीम बख़्श ने उपरोक्त बयान का सत्यापन मेरे समक्ष किया।

नासिर नवाब

उपरोक्त बयान का सत्यापन मियां करीम बख़्श ने मेरे सामने किया।

क़ाज़ी ख्वाजा अली बक़लम ख़ुद

मियां करीम बख़्श ने उपरोक्त बयान शपथ उठाकर लिखवाया है।

मौलवी ताज मुहम्मद

यह बयान मेरे सामने करीम बख़्श को सुनाया गया और उसने सत्यापन किया।

मुरारी लाल क्लर्क नहर, सरहिन्द डिवीज़न - लुधियाना

मियां करीम बख़्श ने वह सम्पूर्ण बयान जो उस के बोलने से लिखा गया। हलफ़ लेते हुए सत्यापित किया।

मौलवी नसीरुद्दीन 'वाइज़' निवासी - भुल्लर, रियासत - बहावलपुर

उपस्थित - लुधियाना

उपरोक्त बयान को मियां करीम बख़्श ने मेरे समक्ष सत्यापित किया।

मुहम्मद नजीब ख़ान

दफ्तर - नहर सरहिन्द डिवीज़न, लुधियाना

इस बयान के पश्चात् पुन: मियां करीम बख़्श ने वर्णन किया कि मैं एक बात वर्णन करने से रह गया और वह यह है कि उस फ़क़ीर ने मुझे स्पष्ट तौर पर यह भी बता दिया था कि उस ईसा का नाम **ग़ुलाम अहमद** है।

अब वे गवाहियां नीचे लिखी जाती हैं जिन्होंने क़सम खा कर बयान किया कि वास्तव में मियां करीम बख़्श एक सदाचारी, सच्चरित्र व्यक्ति है जिसका कभी कोई झूठ सिद्ध नहीं हुआ। यह गवाह उसी गांव के या उसके निकट के निवासी हैं।

हम शपथ खाकर वर्णन करते हैं कि मियां करीम बख़्श एक सत्यनिष्ट व्यक्ति है तथा रोज़ा-नमाज़ का उच्चस्तर का पाबन्द है तथा हम ने अपनी सम्पूर्ण आयु में उसके बारे में कोई झूठ बात बोलने वालों तथा घटना के विपरीत वर्णन करने में आरोप नहीं सुना अपितु आज तक एक गन्ना या मक्का का भुट्टा तक नहीं तोड़ा तथा मियां गुलाब शाह भी इस गांव में एक प्रसिद्ध फ़क़ीर गुज़रा है तथा इस फ़क़ीर की मृत्यु को लगभग पच्चीस वर्ष का समय हुआ है। इस फ़क़ीर की अधिकांश घटनापूर्व बताई हुई बातें हमारे सामने पूरी हुई हैं।

विनीत
खैरायती नम्बरदार
जमालपुर

विनीत
नूरुद्दीन पुत्र दित्ता
निवासी - जमालपुर

26 जून 1883 ई. में यहां नौकर हूं। मैंने आज तक मियां करीम बख़्श का कोई झूठ नहीं मालूम किया और यह व्यक्ति प्रथम श्रेणी का नमाज़-रोज़े का पाबन्द तथा सत्यनिष्ट व्यक्ति है तथा एक ख़ुदा को मानने वाला है।

विनीत
अब्दुल क़ादिर शिक्षक - जमालपुर
बक़लम ख़ुद

मियां करीम बख़्श नेक व्यक्ति है और पक्का नमाज़ी मैंने अपनी पूर्ण आयु में आज तक इसका कोई झूठ नहीं सुना शपथ खाकर वर्णन किया है और मियां गुलाब शाह बहुत अच्छा फ़क़ीर था। इस गुलाब शाह को इस गांव के समस्त स्त्री-पुरुष जानते हैं।

विनीत
नबी बख़्श अराईं
निवासी - जमालपुर

मियां करीम बख़्श सच्चा आदमी है और पुख़्ता नमाज़ी है तथा नमाज़े जुमा का सख़्त पाबन्द और कम बोलने वाला है।

विनीत पीर मुहम्मद नम्बरदार बक़लम ख़ुद
निवासी - जमालपुर

करीम बख़्श नमाज़ी है और बहुत सच्चा आदमी है।

अल्लाह दित्ता
निवासी - जमालपुर

उपरोक्त लिखा हुआ नितान्त सही है और करीम बख़्श नितान्त सच्चा व्यक्ति है तथा नमाज़-रोज़ा और जुमा कभी क़ज़ा नहीं किया और कोई झूठा और झूठ बनाने की बात उसके सन्दर्भ में सिद्ध नहीं हुई तथा बहुत कम बात करने वाला व्यक्ति है।

विनीत
नूर मुहम्मद पुत्र मावा
निवासी - जमालपुर

करीम बख़्श नितान्त सच्चा, भाग्यशाली, कम बोलने वाला, संयमी तथा नमाज़ी व्यक्ति है और उसकी सभी आदतें अच्छी हैं।

विनीत

रोशनलाल पुत्र फासा नम्बरदार

जमालपुर, आयु 50 वर्ष

मियां करीम बख़्श बहुत सच्चा व्यक्ति है, उस व्यक्ति ने कभी झूठी गवाही नहीं दी और न मेरे होश में किसी ने उस पर झूठ बोलने का आरोप लगाया।

विनीत

ख़्याली पुत्र गुरमुख बढ़ई निवासी - जमालपुर

करीम बख़्श पुत्र ग़ुलाम रसूल बहुत नेक व्यक्ति है और सच्चा है और हमेशा जुमा पढ़ता है और कभी उस ने झूठ नहीं बोला।

विनीत

काका पुत्र चूहड़ निवासी - जमालपुर

करीम बख़्श सच्चा आदमी है और भाग्यशाली है, नमाज़ी है तथा गुलाबशाह बहुत अच्छा फ़क़ीर था।

विनीत

बूटा पुत्र अहमद बक़लम पीर मुहम्मद नम्बरदार

मियां करीम बख़्श बहुत सच्चा और सच्चरित्र व्यक्ति है और इस व्यक्ति ने कभी झूठी साक्ष्य नहीं दी और न सुनी।

विनीत

हीरा लाला पुत्र दो सिन्धी

निवासी - जमालपुर

बक़लम ख़ुद

मियां करीम बख़्श बहुत सच्चा, बहुत नेक और नमाज़ी है तथा मैंने अपने होश में उसका कोई झूठ नहीं सुना।

विनीत

गुलज़ार शाह बक़लम ख़ुद

मियां करीम बख़्श को मैं भली भांति जानता हूं कि यह व्यक्ति भाग्यशाली है तथा बहुत सच्चा है। सन् 1862 ई. से मैं इससे परिचित हूं, तथा इस व्यक्ति का कोई झूठ मैंने नहीं सुना और न इसकी कोई दुष्चरित्रता सुनी गई है, यह व्यक्ति नमाज़ी है और जुमा पढ़ने भी लुधियाना आया करता है।

विनीत

अमीर अली पुत्र नबी बख़्श आ'वान

निवासी - लुधियाना

बिरादर - मौलवी मुहम्मद हसन साहिब रईस आ'ज़म बक़लम ख़ुद

करीम बख़्श पक्का नमाज़ी है तथा सच्चा, भाग्यशाली तथा इसने कभी झूठी गवाही नहीं दी।

अमान अली पुत्र चानन शाह ठेकेदार

बक़लम ख़ुद

जनाब करीम बख़्श बहुत सच्चा, पक्का नमाज़ी और सदाचारी व्यक्ति है तथा उसका कभी भी झूठ बोलना सिद्ध नहीं हुआ तथा ग़ुलाब शाह बहुत अच्छा फ़क़ीर था और हमारे इस देहात में बहुत समय तक रहे हैं।

विनीत

अक़बर पुत्र मुहम्मद पनाह

निवासी - जमालपुर

जनाब करीब बख़्श बड़ा सच्चा आदमी और पुख़्ता नमाज़ी है, रमज़ान के रोज़े हमेशा रखता है और कभी जुमा नहीं छोड़ता, उसका झूठ कभी सिद्ध नहीं हुआ तथा नितान्त सदाचारी है।

विनीत

बक़लम ग़ुलाम मुहम्मद पुत्र रोशन

क़ौम - आ'वान, निवासी - जमालपुर

मैं करीम बख़्श को बहुत भाग्यशाली जानता हूं, सच्चा और पक्का नमाज़ी है।

विनीत

ग़ुलाम मुहम्मद शिक्षक

मदरसा - जमालपुर

निवासी - पक्खोवाल

बक़लम ख़ुद

मियां करीम बख़्श बहुत अच्छा और सदाचारी नमाज़ी है तथा जुमा पढ़ने वाला और सच्चा आदमी है।

विनीत

निज़ामुद्दीन, निवासी - जमालपुर

बक़लम ख़ुद निज़ामुद्दीन

मियां करीम बख़्श बहुत अच्छा और सच्चरित्र, नमाज़ी, जुमा पढ़ने वाला सच्चा आदमी है।

विनीत

शेरा पुत्र रोशन गूजर

जमालपुर

मियां करीम बख़्श बहुत अच्छा और चरित्रवान, आदमी है और इस व्यक्ति ने कभी झूठी गवाही नहीं दी और न सुनी।

विनीत

गोकुल पुत्र मताबा सूद

जमालपुर

मियां करीम बख़्श आदमी नमाज़ी है और बहुत सच्चा है।

विनीत

करीम बख़्श पुत्र ग़ुलाम ग़ौस

आ'वान - जमालपुर

करीम बख़्श बहुत अच्छा भाग्यशाली है। सच्चा, नमाज़ी तथा संयमी है।

विनीत

लक्खा पुत्र सौंधा अराईं

जमालपुर

करीम बख़्श बहुत नेक और सच्चा है तथा उसमें झूठ बोलने की आदत नहीं।

विनीत

गनेशमल सूद जमालपुरिया

बक़लम लुण्डे।

करीम बख़्श पक्का नमाज़ी है और बहुत सच्चा आदमी है और उसने कभी झूठी गवाही नहीं दी।

विनीत

गांदी पुत्र आलम गूजर चौकीदार, जमालपुर

विनीत

करम बख़्श निवासी जमालपुर

विनीत

पीर बख़्श तेली

निवासी - जमालपुर

विनीत

पीर मुहम्मद निवासी जमालपुर, आ'वान।

विनीत

ख़ुदा बख़्श निवासी - जमालपुर आ'वान

विनीत

रोशन सक़्क़ा - जमालपुर

विनीत

कासू पुत्र अक्कू गूजर

जमालपुर

विनीत

बूटा झेवर निवासी - जमालपुर

विनीत

ठाकुरदास पटवारी जमालपुर

विनीत
ग़ौस पुत्र नबी बख़्श
निवासी जमालपुर आ 'वान

विनीत
शाह मुहम्मद निवासी - जमालपुर आ 'वान

विनीत
काका पुत्र अली बख़्श
निवासी जमालपुर - आ 'वान

विनीत
फ़ैज़ा पुत्र मावां
निवासी जमालपुर आ 'वान

विनीत
अली बख़्श पुत्र लहना
निवासी जमालपुर

विनीत
जमाल शाह फ़क़ीर
निवासी - जमालपुर

विनीत

मुहम्मद बख़्श पुत्र रोशन

निवासी - जमालपुर आ'वान

विनीत

करम बख़्श पुत्र शम्सुद्दीन

जमालपुर

विनीत

शम्सुद्दीन गूजर निवासी - जमालपुर

विनीत

माली

निवासी - जमालपुर

विनीत

नूर मुहम्मद पुत्र उमरा आवान

निवासी - जमालपुर

विनीत

सोभा भगत

निवासी - जमालपुर

विनीत

निहाल बढ़ई

जमालपुर

विनीत

अब्दुल हक़ पुत्र उमरा

क़ौम आवान, जमालपुरिया

विनीत

करीम बख़्श पुत्र - जीवा मोची

नि. जमालपुर

विनीत

अली बख़्श पुत्र ग़ुलाम रसूल आवान

विनीत

ग़ौसू पुत्र बहाली आवान

निवासी - जमालपुर

करीम बख़्श अच्छा, भाग्यशाली और शरीअत का पाबन्द नितान्त सच्चा और संयमी है।

विनीत

निहाल नम्बरदार (मुहर)

उपरोक्त **कश्फ़** का समर्थक एक सच्चा स्वप्न नीचे वर्णन करते हैं जिसे एक बुज़ुर्ग मुहम्मद नामक पक्का खास के रहने वाले अरबी, मक्की ने देखा है और उस स्वप्न की निम्नलिखित इबारत स्वयं उन्हीं के मुख से निकली हुई उनके एक विशेष लेख द्वारा मुझे मिली है और वह यह है :-

اقول انا محمد ابن احمدن المکّی من حارۃ شعب عامرِانی

رایت فی المنام فی سنۃ ۱۳۰۵ھ ان ابی قائم و انا معہ فنظرت الیٰ جانب المشرق فرئیت عیسی علیہ السلام نزل من السماء و انا ارید ان اتوضأ فتوجھت اِلیٰ البحر ثم توصئت و رجعت الی اَبی فقلت یا ابی ان عیسیٰ علیہ السلام قد نزل فکیف اصلّی فقال لی ابی انہ نزل علیٰ دین الاسلام و دینہ دین النبی صلی اللہ علیہ وسلم فصل مثل ما کنت تصلی اولا فصلیت ثم استیقظت من منامی فقلت فی نفسی لا بدّ انشاء اللہ ان ینزل عیسی علیہ السلام فی حیاتی و انظرہ بعینی

अर्थात् मैं जो मुहम्मद बिन अहमद मक्की रहने वाला मुहल्लाह - शअब आमिर मक्का खास का हूं कहता हूं कि मैंने 1305 हिज्री में स्वप्न में देखा कि एक स्थान पर मेरा बाप खड़ा है और मैं उसके साथ हूं। उस समय मैंने जो दृष्टि उठाकर पूरब की ओर देखा तो क्या देखता हूं कि आकाश से ईसा अलैहिस्सलाम उतर आया और मैं इरादा कर रहा हूं कि वुज़ू करूं। अत: मैं नदी की ओर चल पड़ा, फिर वुज़ू करके अपने बाप की ओर चला आया, तब मैंने अपने बाप से कहा कि ईसा अलैहिस्सलाम तो उतर गया अब मैं किस प्रकार से नमाज़ पढ़ूं। अत: मेरे बाप ने मुझे कहा कि वह इस्लाम धर्म पर उतरा है और उसका धर्म कोई पृथक धर्म नहीं अपितु वह तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ही धर्म रखता है। अत: तू उसी प्रकार नमाज़ पढ़ जैसे पहले पढ़ा करता था तब मैंने नमाज़ पढ़ ली फिर मेरी आंख खुल गई और मैंने हृदय में कहा कि ख़ुदा ने चाहा तो ईसा अलैहिस्सलाम मेरे जीवन में उतर आएगा और मैं उसे अपनी आंख से देख लूंगा।

इस ख़ाकसार के मसीह मौऊद होने पर उनमें से एक निशान यह है कि मसीह मौऊद के प्रकट होने की विशेषता के साथ यह लक्षण है कि वादा दिए

गए दज्जाल के निकलने के पश्चात् आने वाला वही सच्चा मसीह है जिसका नाम मसीह मौऊद मुस्लिम की हदीस में मसीह नाम रखने का कारण यह वर्णन किया गया है कि वह मोमिनों की कठिनाई, परिश्रम और परीक्षा की धूल जो दज्जाल के कारण उन पर व्याप्त होगी उनके चेहरों से पोंछ देगा अर्थात् प्रमाण और तर्क से उन्हें विजयी कर दिखाएगा अत: इसलिए वह मसीह कहलाएगा क्योंकि मसीह पोंछने को कहते हैं जिस से मसीह बना है तथा आवश्यक है कि वह कथित दज्जाल के बाद उतरे। अत: यह ख़ाकसार कथित दज्जाल के निकलने के बाद आया है। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि यदि यह सिद्ध हो जाए कि कथित दज्जाल यही पादरियों और ईसाई विद्वजनों का गिरोह है जिसने पृथ्वी को अपने मायावी कार्यों से उथल-पुथल कर दिया है और जो ठीक-ठीक उस समय से पूर्ण बल के साथ निकल रहा है और जो संख्या आयत :-

اِنَّا عَلٰی ذَهَابٍ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ*

से समझा जाता है अर्थात् 1857 ई. का युग** तो साथ ही इस ख़ाकसार का मसीह मौऊद होना भी सिद्ध हो जाएगा तथा हम पहले भी उल्लेख कर आए हैं कि ईसाई धर्मोपदेशकों का वर्ग नि:सन्देह कथित दज्जाल है यद्यपि

---

* अलमोमिनून-19

** **हाशिया** :- आयत اِنَّا عَلٰی ذَهَابٍ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ में 1857 ई. की ओर संकेत है जिसमें हिन्दुस्तान में एक महान विद्रोह हो कर इस्लामी शासन के अवशेष हिन्दुस्तान से समाप्त हो गए थे क्योंकि इस आयत के अदद जमल विद्या के अनुसार 1274 हैं और 1274 के युग को जब ईस्वी तारीख़ में देखना चाहें तो 1857 ई. होता है। अत: वास्तव में इस्लामी कमज़ोरी का प्रारंभिक युग यही 1857 ई. है जिसके बारे में ख़ुदा तआला उपरोक्त आयत में फ़रमाता है कि जब वह युग आएगा तो क़ुर्आन पृथ्वी से उठाया जाएगा। अत: 1857 ई. में मुसलमानों की ऐसी ही दशा हो गई थी कि दुराचार और पापों के अतिरिक्त इस्लाम के रईसों को और कुछ याद न था जिसका प्रभाव

हदीसों के प्रत्यक्ष शब्दों से यह बोध होता है कि दज्जाल एक विशेष व्यक्ति है जो एक आंख से काना और दूसरी भी दोषपूर्ण है, परन्तु चूंकि ये हदीसें जो भविष्यवाणियों के प्रकार से हैं कश्फ़ों में से हैं जिन पर ख़ुदा के नियमानुसार रूपक और कल्पना का प्रभुत्व होता है जैसा कि मुल्लाअली क़ारी ने भी लिखा है और जिनके अर्थ पूर्वकालीन बुज़ुर्ग हमेशा रूपक के तौर पर लेते रहे हैं। इसलिए शक्तिशाली अनुकूलताओं के कारण हम दज्जाल के शब्द से केवल एक व्यक्ति ही अभिप्राय नहीं ले सकते। स्वप्न और कश्फ़ में ख़ुदा की सुन्नत इसी प्रकार जारी है कि प्राय: एक व्यक्ति दिखाई देता है और उस से अभिप्राय एक गिरोह होता है जैसा कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक युग में एक व्यक्ति ने एक अरब बादशाह को स्वप्न में देखा था तो आपने फ़रमाया था कि इससे अभिप्राय अरब देश है जो एक गिरोह है और हमारे इस बयान पर यह अनुकूलता ठोस साक्षी है कि दज्जाल वास्तव में

शेष हाशिया :- जन सामान्य पर बहुत पड़ गया था। उन्हीं दिनों में उन्होंने एक अवैध और अप्रिय ढंग से अंग्रेज़ी सरकार से बावजूद स्वामिभक्त और प्रजा होने के मुकाबला किया, हालांकि ऐसा मुक़ाबला और ऐसा जिहाद उनके लिए शरीअत की दृष्टि से वैध न था क्योंकि वे इस सरकार की प्रजा तथा उनकी छत्र-छाया में थे और प्रजा का उस सरकार के विरुद्ध सर उठाना जिसकी वह प्रजा है और जिसकी छत्र-छाया में अमन और आज़ादी से जीवन व्यतीत करती है सर्वथा अवैध और महापाप तथा एक घृणित दुष्कृत्य है। हम जब 1857 ई. की घटना को देखते हैं और इस युग के मौलवियों के फ़त्वों पर दृष्टि डालते हैं जिन्होंने सामान्य तौर पर मुहरें लगा दी थीं कि अंग्रेज़ों का वध कर देना चाहिए तो हम लज्जा के समुद्र में डूब जाते हैं कि ये कैसे मौलवी थे तथा कैसे इनके फ़त्वे थे जिनमें न दया थी, न बुद्धि थी, न शिष्टाचार न न्याय। इन लोगों ने चोरों डाकुओं और हरामियों की तरह अपनी उपकारी सरकार पर आक्रमण करना आरंभ किया और उसका नाम जिहाद रखा, छोटे-छोटे बच्चों और निर्दोष स्त्रियों का वध किया और नितान्त निर्दयता से उन्हें पानी

शब्दकोश की दृष्टि से व्यक्तिवाचक संज्ञा है, जिस से ऐसे लोग अभिप्राय हैं जो बहुत झूठे हों। अत: शब्दकोश में यही अर्थ लिखा है कि दज्जाल उस गिरोह को कहते हैं जो असत्य को सत्य के साथ मिलाने वाला और पृथ्वी को दूषित करने वाला हो तथा 'मिश्कात' किताबुलफ़ितन में 'मुस्लिम' की एक हदीस लिखी है जिसमें दज्जाल के एक गिरोह होने की ओर स्पष्ट संकेत किया गया है।

शेष हाशिया :- तक न दिया क्या यह वास्तविक इस्लाम था या यहूदियों की प्रवृत्ति थी। क्या कोई बता सकता है कि ख़ुदा तआला ने अपनी किताब में किसी स्थान पर ऐसे जिहाद का आदेश दिया है। अत: उस नीतिवान और अत्यधिक ज्ञाता का पवित्र क़ुर्आन में यह फ़रमाना कि 1857 ई. में मेरा कलाम आकाश पर उठाया जाएगा, यही अर्थ रखता है कि मुसलमान उस पर अमल नहीं करेंगे जैसा कि मुसलमानों ने ऐसा ही किया। ख़ुदा तआला पर यह आरोप लगाना कि ऐसे जिहाद और ऐसी लड़ाइयां उस के आदेश से की थीं। यह दूसरा पाप है। क्या ख़ुदा तआला हमें यही शरीअत दिखाता है कि हम नेकी के स्थान पर बुराई करें तथा अपनी उपकारी सरकार के उपकारों का उसे यह इनाम दें कि उनकी क़ौम के अल्पायु बच्चों का नितान्त निर्दयतापूर्वक वध करें तथा उनकी प्रिय पत्नियों के टुकड़े-टुकड़े कर डालें। निस्सन्देह हम यह दाग़ मुसलमानों, विशेषकर अपने अधिकांश मौलवियों के मस्तक से धो नहीं सकते कि वे 1857 ई. में धर्म की ओट में ऐसे महा पाप में लिप्त हुए जिसका हम किसी क़ौम के इतिहास में उदाहरण नहीं देखते और न केवल इसी सीमा तक अपितु उन्होंने और भी ऐसे दुष्कृत्य किए जो केवल चीर फाड़ करने वाले दरिन्दों की आदतें हैं न कि मनुष्यों की। उन्होंने न समझा कि यदि उनके साथ यह व्यवहार किया जाए कि उनका एक कृतज्ञ उनके बच्चों को मार डाले और उनकी स्त्रियों के टुकड़े-टुकड़े करे तो उस समय उनके हृदय में क्या-क्या विचार उत्पन्न होगा - इसके बावजूद ये मौलवी लोग इस बात की शेख़ी बघारते हैं कि हम बड़े संयमी हैं। मैं नहीं जानता कि उन्होंने द्वमुखता से जीवन व्यतीत करना कहां से

अब ज्ञात होना चाहिए कि कथित दज्जाल के बड़े लक्षण हदीसों में ये लिखे हैं :-

(1) आदम के जन्म से लेकर क़यामत के दिन तक कोई उपद्रव दज्जाल के उपद्रव से बढ़कर नहीं अर्थात् इस धर्म को बिगाड़ने के लिए उस के द्वारा उपद्रव और लड़ाई झगड़े पैदा करा देना प्रकटन में आने वाला है। संसार के प्रारंभ से क़यामत तक अन्य किसी के द्वारा प्रकटन में नहीं आएंगे। (सही मुस्लिम)

शेष हाशिया :- सीख लिया है। ख़ुदा की किताब की ग़लत व्याख्याओं ने उन्हें बहुत ख़राब किया है तथा उनकी हार्दिक और मानसिक शक्तियों पर इन से बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। इस युग में ख़ुदा की किताब के लिए नि:सन्देह आवश्यक है कि उसकी एक नवीन और सही व्याख्या की जाए क्योंकि वर्तमान समय में जिन तफ़्सीरों (व्याख्याओं) की शिक्षा दी जाती है वे न तो नैतिक अवस्था को ठीक कर सकती हैं और न ईमानी अवस्था पर अच्छा प्रभाव डालती हैं अपितु स्वाभाविक भलाई और शुभ प्रकाश में बाधक हो रही हैं, क्यों बाधक हो रही हैं। इसका कारण यह है कि वह वास्तव में अपनी अधिकांश अतिरिक्त बातों के कारण पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा नहीं है, ऐसे लोगों के हृदयों से क़ुर्आनी शिक्षा मिट गई है कि जैसे क़ुर्आन आकाश पर उठाया गया है, वह ईमान जो क़ुर्आन ने सिखाया था उस से लोग अपरिचित हैं, वह आध्यात्मिक ज्ञान जो क़ुर्आन ने प्रदान किया था उससे लोग लापरवाह हो गए हैं। हां यह सत्य है कि क़ुर्आन पढ़ते हैं परन्तु क़ुर्आन उन के कंठ से नीचे नहीं उतरता। इन्हीं अर्थों के कारण कहा गया है कि अन्तिम युग में क़ुर्आन आकाश पर उठाया जाएगा फिर उन्हीं हदीसों में लिखा है कि फिर क़ुर्आन को पुन: पृथ्वी पर लाने वाला एक पुरुष फ़ारसी मूल का होगा, जैसा कि फ़रमाया है -

لَوْ كَانَ الْاِيْمَانُ مُعَلَّقًا عِنْدَ الثُّرَيَّا لَنَالَهٗ رَجُلٌ مِنْ فَارِسٍ

यह हदीस वास्तव में उसी युग की ओर संकेत करती है जो आयत اِنَّا عَلٰى ذَهَابٍ بِهٖ لَقَادِرُوْنَ में सांकेतिक तौर पर वर्णन किया गया है (इसी से)

(2) दज्जाल को आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कश्फ़ और स्वप्न में देखा कि वह दायीं आंख से काना है और दूसरी आंख भी दोषरहित नहीं, अर्थात् उन्हें पूर्ण धार्मिक प्रतिभा नहीं दी गई तथा संसार प्राप्ति के साधन भी वैध और शुद्ध नहीं। (बुख़ारी और मुस्लिम)

(3) दज्जाल के साथ स्वर्ग की भांति सुख, आराम तथा सुविधा और समृद्धि के कुछ सामान होंगे तथा कुछ सामान परिश्रम और विपत्ति के अग्नि अर्थात नर्क की भांति होंगे (बुख़ारी-मुस्लिम)

ईसाई क़ौम ने सुख-सुविधा के जितने नवीन सामान आविष्कृत किए हैं और जो दूसरे मार्गों से परिश्रम, विपत्ति, दरिद्रता और भुखमरी भी उनके कुछ प्रबन्धों के कारण देशवासियों को अपनी पकड़ में लेती जाती है। यदि ये दोनों अवस्थाएं स्वर्ग और नर्क के नमूने नहीं हैं तो और क्या हैं।

(4) दज्जाल के कुछ दिन वर्ष के समान होंगे और कुछ दिन महीने के समान होंगे तथा कुछ दिन सप्ताह के समान, परन्तु यह नहीं कि दोनों में अन्तर होगा अपितु उसके दिन अपनी संख्या में ऐसे ही होंगे जैसे तुम्हारे। (मुस्लिम)

(5) दज्जाल के गधे का शरीर इतना विशालकाय होगा कि उसके एक कान से दूसरे कान तक दूरी सत्तर गज़ होगी, परन्तु स्पष्ट है कि इस डील-डौल की गधी ख़ुदा तआला ने पैदा नहीं की ताकि आशा की जाए कि उनकी नस्ल से यह गधा होगा।

(6) दज्जाल जब गधे पर सवार होगा तो गधा जितनी तीव्र गति से चलेगा उसका उदाहरण यह है कि जैसे बादल इस परिस्थिति में चलता है जबकि उसके पीछे वायु हो। यह एक सूक्ष्म संकेत है इस बात की ओर कि दज्जाल का गधा कोई जीवधारी नहीं होगा अपितु वह किसी वायु-तत्त्व के ज़ोर से चलेगा।

(7) पृथ्वी और आकाश दोनों दज्जाल के आज्ञाकारी होंगे अर्थात् ख़ुदा तआला उसके उपाय से साथ प्रारब्ध को अनुकूल कर देगा तथा उसके हाथ पर पृथ्वी को उसकी इच्छानुसार आबाद करेगा।

(8) दज्जाल पूरब की ओर से निकलेगा अर्थात् हिन्दुस्तान देश से, क्योंकि यह देश हिजाज़ की पृथ्वी से सर्वसम्मति द्वारा पूरब की ओर है। (बुख़ारी - मुस्लिम)

(9) दज्जाल जिस निर्जन स्थान से गुज़रेगा उसे कहेगा कि तू अपने भण्डार बाहर निकाल। अत: वे समस्त भण्डार बाहर निकल आएंगे और दज्जाल के पीछे-पीछे जाएंगे। यह इस बात की ओर संकेत है कि दज्जाल पृथ्वी से बहुत लाभ उठाएगा और अपने उपायों से पृथ्वी को आबाद करेगा और निर्जन स्थान को भण्डार करके दिखाएगा, फिर अन्त में बाब-ए-लुद पर वध किया जाएगा। लुद उन लोगों को कहते हैं जो व्यर्थ झगड़ने वाले हों। यह इस बात की ओर संकेत है कि जब दज्जाल के अनुचित और व्यर्थ झगड़े चरम सीमा तक पहुंच जाएंगे तब मसीह मौऊद अवतरित होगा और उसके समस्त झगड़ों का अन्त कर देगा।

(10) दज्जाल ख़ुदा नहीं कहलाएगा अपितु ख़ुदा को मानने वाला होगा अपितु कुछ नबियों का भी। (मुस्लिम)

इन दसों लक्षणों में से एक बड़ा लक्षण कथित दज्जाल का यह लिखा है कि उसका उपद्रव उन समस्त उपद्रवों से बढ़कर होगा जो ख़ुदा के धर्म को मिटाने के लिए प्रारंभ से लोग करते आए हैं और हम इसी पुस्तक में सिद्ध कर चुके हैं कि यह लक्षण ईसाई मिशनों में भली-भांति प्रकट है।

इन सब लक्षणों में दज्जाल का एक बड़ा लक्षण उसका गधा है जिसके दोनों-कानों के मध्य की दूरी का अनुमान सत्तर गज़ लगाया गया है और रेलगाड़ियों का सिलसिला प्राय: इसी के अनुसार लम्बा होता है और इसमें भी कुछ सन्देह नहीं कि वे भाप की शक्ति से चलती हैं। जिस प्रकार बादल वायु की शक्ति से तीव्र गति करता है। यहां हमारे नबी स.अ.व. ने स्पष्ट तौर पर रेल गाड़ी की ओर संकेत किया है। चूंकि यह ईसाई क़ौम का आविष्कार है जिनका पेशवा और अनुयायी भी दज्जाली गिरोह है। इसलिए इन गाड़ियों को दज्जाल का गधा ठहराया गया है। अत: इस से बढ़कर अन्य क्या सबूत होगा कि दज्जाल के विशेष लक्षण इन्हीं लोगों में पाए जाते हैं, इन्हीं लोगों ने अपने अस्तित्व पर छल-कपटों का अन्त कर दिया है और इस्लाम

धर्म को वह क्षति पहुंचाई है जिसका उदाहरण संसार के प्रारंभ से अब तक नहीं पाया जाता, इन्हीं लोगों के अनुयायियों के पास वह गधा भी है जो वाष्प-शक्ति से चलता है जैसे बादल वायु-शक्ति से, इन्हीं लोगों के अनुयायी पृथ्वी को आबाद करते जाते हैं और जिस खंडहर देश पर अधिकार करते हैं उसे कहते हैं कि तू अपने भण्डार बाहर निकाल तब धन-प्राप्ति के सहस्त्रों कारण उसी देश से निकाल लेते हैं, पृथ्वी को आबाद कर देते हैं, शान्ति को स्थापित कर देते हैं, परन्तु वे समस्त भण्डार उन्हीं के पीछे-पीछे चलते हैं और उन्हीं के देश की ओर वह समस्त रुपया खिंचा चला जाता है। इस बात को कौन नहीं जानता कि जैसे हिन्दुस्तान के ख़ज़ानें यूरोप की ओर गति कर रहे हैं। यूरोप के लोग स्वयं ही उन ख़ज़ानों को निकालते हैं और फिर अपने देश की ओर भेजते हैं।

अत: इन समस्त हदीसों पर विचार करने से विदित होता है कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस युग के लिए यह भविष्यवाणी की है और उन्हीं लोगों का नाम दज्जाल रखा है और पवित्र क़ुर्आन में यद्यपि किसी स्थान पर स्पष्ट तौर पर दज्जाल के निकलने का वर्णन नहीं किया गया, परन्तु कुछ सन्देह नहीं कि पवित्र क़ुर्आन ने धुएं की चर्चा करके उसके अन्तर्गत दज्जाल को शामिल कर दिया है और फिर उस युग का वर्णन भी क़ुर्आन में है कि जब संसार में धुएं के बाद ख़ुदा का प्रकाश फ़ैलेगा तथा प्रकाशमय युग से अभिप्राय वही युग है कि जब मसीह मौऊद के प्रकट होने के पश्चात् संसार पुन: अच्छाई की ओर लौटेगा। नि:सन्देह यह युग जो अभी धुएं का युग है सत्य की वास्तविकता को बहुत दूर छोड़ गया है, दज्जाली अंधकार ने हृदयों पर अत्यधिक प्रभाव डाला है और करोड़ों लोग मानव-रूपी शैतानों के अपहरण से एकेश्रवाद और सच्चाई तथा ईमान से बाहर हो गया है। अत: यदि कल्पना की जाए कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस दज्जाल की जो ईसाई, पादरियों का गिरोह है सूचना नहीं दी जिसका उदाहरण संसार के प्रारंभ से आज तक नहीं पाया जाता तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कश्फ़ी विशेषताओं पर भारी आरोप आएगा कि इतना बड़ा उपद्रव जो उनकी उम्मत पर आने वाला था

जिसमें न केवल सत्तर हज़ार अपितु सत्तर लाख से अधिक लोग विभिन्न देशों में इस्लाम से विमुख हो चुके हैं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी सूचना नहीं दी, परन्तु यदि जैसा कि न्याय की शर्त है हम स्वीकार कर लें कि आंजनाब ने उस दज्जाल की सूचना दी है और उसके गधे की भी सूचना दी है, जो जल-थल दोनों को चीरता हुआ उन्हें दूरस्थ देशों तक पहुंचाता है और उनके काने होने से भी अवगत किया है तथा उनका स्वर्ग और नरक तथा रोटियों के भार और ख़ज़ानों से भी सूचित किया है तो फिर इन हदीसों के अतिरिक्त जो दज्जाल के पक्ष में हैं हमारे पास अन्य कौन सी हदीसें हैं जो इस दावे के समर्थन में प्रस्तुत करें। यदि हम उपलब्ध हदीसों को इन पर चरितार्थ न करें अपितु भ्रम और कल्पना के तौर अपने हृदय में कोई और दज्जाल बना लें जो किसी अन्य युग में प्रकट होगा तो फिर उनके लिए हदीसें कहां से लाएं। स्पष्ट है कि मौजूद को छोड़कर भ्रम और कल्पना की ओर जाना नि:सन्देह सत्य को छुपाना है क्योंकि जो मौजूद हो गया है तथा जिसे हमने अपनी आंखों से स्वयं देख लिया है तथा उसके अपूर्व उपद्रवों का अवलोकन कर लिया है और उसे समस्त भविष्यवाणियों का चरितार्थ भी समझ लिया है यदि फिर भी हम उसे उन भविष्यवाणियों का वास्तविक पात्र न ठहराएं तो मानो हमारी यह इच्छा नहीं कि रसूलुल्लाह स.अ.व. की कोई भविष्यवाणी पूरी हो, जबकि पूर्वकालीन बुज़ुर्गों का ढंग यह था कि वे इस बात पर अत्यन्त उत्सुक थे कि भविष्यवाणी पूरी हो जाए। अत: आँहज़रत स.अ.व. की इस भविष्यवाणी के संबंध में कि का'बा के हरम में एक मेंढा ज़िब्ह किया जाएगा। वे लोग मेंढे के ज़िब्ह होने की प्रतीक्षा में नहीं रहे अपितु जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर शहीद हुए तो उन्होंने निश्चय ही समझ लिया कि यही मेंढा है, जबकि हदीस में मनुष्य का नाम नहीं, वहां तो स्पष्ट तौर पर मेंढा लिखा है और उस भविष्यवाणी के संबंध में भी जिसका बुख़ारी और मुस्लिम में उल्लेख है कि आँहज़रत स.अ.व. की पत्नियों में से पहले वह मृत्यु को प्राप्त होगी जिसके लम्बे हाथ होंगे। उन्होंने ज़ैनब रज़ि. की मृत्यु के समय विश्वास कर लिया कि भविष्यवाणी पूरी हो गई हालांकि यह बात सर्वसम्मति से स्वीकार हो चुकी थी कि सौदा के लम्बे हाथ हैं वही पहले मृत्यु

को प्राप्त होगी। जब इन बुज़ुर्गों ने देखा कि भविष्यवाणी के शब्दों को वास्तविकता पर चरितार्थ करने से भविष्यवाणी ही हाथ से जाती है तो लम्बे हाथों से स्वार्थ-त्याग और दान-पुण्य की विशेषता अभिप्राय ले लिया, परन्तु हमारे युग के विद्वानों को इस बात से लज्जा आती है कि सुदृढ़ लक्षणों के बावजूद भी किसी हदीस के प्रत्यक्ष अर्थ को छोड़ सकें तथा क़ुर्आन और हदीस को परस्पर अनुकूलता देकर इब्ने मरयम से आध्यात्किमक तौर पर इब्ने मरयम का चरितार्थ अभिप्राय ले लें तथा काने दज्जाल से आध्यात्मिक एकनेत्रीय (काना) होने का अभिप्राय कर लें और स्वयं को क़ुर्आन के इन्कार से बचा लें। नहीं सोचते कि इब्ने मरयम या काने का शब्द भी उसी पवित्र मुख से निकला है जिससे लम्बे हाथ का शब्द निकला था अपितु लम्बे हाथ के वास्तविक और प्रत्यक्ष अर्थ अभिप्राय लिए जाने पर तो नबी करीम स.अ.व. भी सत्यापन कर चुके थे। क्योंकि आँहज़रत स.अ.व. के सामने ही सरकण्डे द्वारा हाथ नापे गए थे तथा सौदा के हाथ सब से लम्बे निकले थे और यही निर्णय हुआ था कि सर्वप्रथम सौदा की मृत्यु होगी क्योंकि आँहज़रत स.अ.व. ने हाथों को नापते देख कर भी मना नहीं किया था जिससे सर्वसम्मति के तौर पर समस्त पत्नियों से पूर्व सौदा की मृत्यु पर विश्वास कर लिया गया परन्तु प्रत्यक्ष अर्थ सही न निकले जिस से सिद्ध हुआ कि इस भविष्यवाणी की मूल वास्तविकता आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी ज्ञात नहीं थी।

यदि वर्तमान विद्वान कुछ विचार करें और इतिहास के एक एक पन्ने पर दृष्टि डालें तथा आदम के युग से आज तक जो लगभग छ: हज़ार वर्ष का समय गुज़रा है सच्चे धर्म के मुक़ाबले पर जितने उपद्रव हुए हैं वर्तमान उपद्रवों और प्रयासों से तुलना करें तो उन्हें स्वयं इक़रार करना पड़ेगा कि असत्य को सत्य के साथ मिलाने के लिए जितनी अधिक योजनाएं इस ईसाई क़ौम की ओर से प्रकट हुईं और हो रही हैं उसका करोड़वां भाग भी किसी अन्य क़ौम से कदापि प्रकटन में नहीं आया यद्यपि अकारण हत्या करने वाले, किताबों के जलाने वाले, सदाचारी पुरुषों को बन्दी बनाने वाले बहुत गुज़रे हैं परन्तु उनके उपद्रव हृदयों को उथल-पुथल करने वाले नहीं थे

अपितु मोमिन लोग कष्ट उठा कर दृढ़ता में और भी अधिक उन्नति करते थे, परन्तु इन लोगों का उपद्रव हृदयों पर हाथ डालने वाला तथा ईमान को सन्देहों से मलिन करने वाला है जो आस्थाओं को बिगाड़ने के लिए घातक विष का प्रभाव रखता है विचार करने का स्थान है कि जिस क़ौम ने छ: करोड़ पुस्तकें भ्रमों और सन्देहों के प्रसार के लिए अब तक वितरित कर दीं और भविष्य में भी यह कार्यवाही बड़ी तन्मयता से जारी है। उस क़ौम की तुलना में किसी युग में कोई उदाहरण उपलब्ध हो सकता है अपितु छ: हज़ार वर्ष की अवधि पर दृष्टि डालने से कोई उदाहरण पैदा नहीं हुआ तो फिर क्या अभी तक हदीस के आशय के अनुसार सिद्ध नहीं हुआ कि इन लोगों का फित्ना फैलाना बेजोड़ और अनूठा है। युग ने अन्तत: जिस महान उपद्रव को किया वह यही फित्ना है जिसने लाखों मुसलमानों को गिरजों मैं बैठा दिया, करोड़ों पुस्तकें इस्लाम के खण्डन में लिखी गईं। अत: इस वर्तमान फित्ना को मानो हुआ ही नहीं समझना उन्हीं मौलवियों का काम है जिनके हृदय में कदापि यह विचार नहीं कि अपने जीवन में रसूलुल्लाह स.अ.व. की भविष्यवाणी पूर्ण होती देख लें।

कुछ अज्ञान, मौलवी बतौर प्रतिप्रश्न (जिरह) यह लक्षण लिखा है कि वह कथित दज्जाल का वध करेगा और समस्त यहूदी - ईसाई उस पर ईमान ले आएंगे। और इस विचार के समर्थन में यह आयत प्रस्तुत करते हैं :-

وَاِنۡ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤۡمِنَنَّ بِهٖ قَبۡلَ مَوۡتِهٖ*

मैं कहता हूं कि यदि इस आयत के यही अर्थ हैं कि मसीह कदापि नहीं कह सकते कि दज्जाल कुफ्र की अवस्था में वध किया जाएगा। इसके अतिरिक्त मुस्लिम की हदीस में स्पष्ट लिखा है कि दज्जाल के साथ सत्तर हज़ार अहले किताब (यहूदी ईसाई) सम्मिलित हो जाएंगे तथा उनमें से अधिकांश की उनमें से कुफ्र की अवस्था में मृत्यु होगी तथा मसीह की मृत्यु के पश्चात् भी अधिकतर लोग काफ़िर और अधर्मी शेष रह जाएंगे जिन पर प्रलय आएगी तथा पवित्र क़ुर्आन भी नितान्त स्पष्ट

* अन्निसा-160

तौर पर इस पर साक्ष्य देता है क्योंकि वह फ़रमाता है :-

يٰعِيۡسٰۤى اِنِّىۡ مُتَوَفِّيۡكَ وَرَافِعُكَ اِلَىَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا
وَجَاعِلُ الَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡكَ فَوۡقَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ*

अर्थात् मैं तेरे अनुयायियों को तेरे इन्कार करने वालों पर अर्थात् यहूदियों पर प्रलय तक प्रभुत्व प्रदान करूंगा। अत: इस से स्पष्ट है कि प्रलय के दिन तक यहूदियों की नस्ल थोड़ी बहुत शेष रह जाएगी। पुन: फ़रमाता है कि :-

فَاَغۡرَيۡنَا بَيۡنَهُمُ الۡعَدَاوَةَ وَالۡبَغۡضَآءَ اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ**

अर्थात् हमने यहूदियों और ईसाइयों में प्रलय के दिन तक शत्रुता और वैमनस्य डाल दिया है। इस आयत से भी स्पष्ट तौर पर सिद्ध है कि यहूदी प्रलय के दिन तक रहेंगे क्योंकि यदि वे पहले ही हज़रत ईसा पर ईमान ले आएंगे तो फिर शत्रुता और वैमनस्य का सिलसिला प्रलय तक क्योंकर लम्बा होगा। अत: मानना पड़ा कि ऐसा विचार कि हज़रत मसीह के उतरने का यह लक्षण है कि समस्त यहूदी और ईसाई उस पर ईमान ले आएंगे, क़ुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेशों के सर्वथा विपरीत है।

फ़ैसले का सारांश

हमारा दावा जो ख़ुदा के इल्हाम के अनुसार पैदा हुआ तथा पवित्र क़ुर्आन की साक्ष्यों से चमका और सही हदीसों के निरन्तर समर्थनों से प्रत्येक देखने वाली आंख को दिखाई देने लगा वह यह है कि हज़रत मसीह ईसा इब्ने मरयम रसूलुल्लाह जिन पर इंजील उतरी थी वे इस संसार से कूच कर गए और इस नश्वर संसार को छोड़कर अनश्वर संसार के लोगों में जा मिले और इस पार्थिव शरीर की विशेषताओं और सामानों को त्याग कर उन विशेषताओं और सामानों से लाभान्वित हो गए जो

* आले इमरान-56

** अलमाइदह-15

केवल उन लोगों को प्राप्त होते हैं जो मृत्यु पा जाते हैं तथा उन आनन्दों से भाग्यशाली हो गए जो केवल उन लोगों को दिए जाते हैं जो मृत्यु के पुल से गुज़र कर वास्तविक प्रियतम से जा मिलते हैं और नि:सन्देह जो व्यक्ति इस संसार के लोगों को छोड़ता है और दूसरे संसार (परलोक) के लोगों ने जा मिलता है और इस संसार के सामानों और विशेषताओं को छोड़ता है और परलोक के सामानों और विशेषताओं को स्वीकार कर लेता है तथा इस संसार के आनन्दों को बिल्कुल छोड़ देता है तथा परलोक के आनन्दों को पा लेता है, इस संसार की पार्थिव और आकाशीय प्रभावकारी बातों को छोड़ता है और परलोक का अपरिवर्तनीय जीवन प्राप्त करता है तथा इस संसार से पूर्णतया आत्मविस्मृत और अव्यक्त हो जाता है और परलोक में प्रकट करता है। वही है जिसे दूसरे शब्दों में कहते हैं कि मर गया। इस बात में कुछ भी सन्देह नहीं कि यह परिवर्तन जो शब्दों के परिवर्तन के साथ मौत का नाम दिया जाता है हज़रत मसीह के जीवन पर आ चुकी है और इस परिवर्तन की आवश्यक बातों में वह अपने अन्य भाइयों से किसी बात में कम नहीं हैं जो संसार और सांसारिक वस्तुओं को छोड़ गए। इस भौतिक संसार के लोग जो मृत्योपरांत उस स्थान पर पहुंचते हैं उनके ये विशेष लक्षण हैं कि वे न सोते हैं और न इस संसार की रोटी खाते हैं और न पानी पीते हैं, न वे बीमार होते हैं न उन्हें शौचादि की आवश्यकता होती है, न बालों और नाख़ूनों के कटाने की आवश्यकता पड़ती है और न वे प्रकाश के लिए सूर्य और चन्द्रमा के मुहताज होते हैं, न उन पर समय प्रभाव डाल सकता है और न वे वायु द्वारा सांस लेते हैं और न किसी प्रकाश के माध्यम से देखते हैं, इसी प्रकार वे वायु द्वारा सुनते भी नहीं और न सूंघते हैं और न नस्ल पैदा करने पर समर्थ होते हैं। अत: उनके अस्तित्व पर एक पूर्ण क्रान्ति आ जाती है जिसका नाम मृत्यु रखा गया है, उन्हें शरीर तो दिया जाता है परन्तु वह शरीर इस संसार की विशेषताएं और उससे संबंधित वस्तुएं नहीं रखता। हां वे स्वर्ग में खाते-पीते भी हैं परन्तु वह इस संसार का खान-पान नहीं जिसका पार्थिव शरीर मुहताज है अपितु वे ऐसी ने'मतें हैं जो न आंखों ने देखीं और न कानों ने सुनीं और न हृदयों में कभी गुज़रीं। अब

प्रश्न यह है कि यदि हज़रत मसीह मरे नहीं तथा इसी भौतिक जीवन के साथ किसी आकाश पर बैठे हैं तो क्या पार्थिव शरीर की समस्त आवश्यकताएं उन में विशेष तौर पर विद्यमान हैं जो दूसरों में नहीं पाई जातीं, क्या वे कभी सोते और कभी जागते हैं और कभी उठते और कभी बैठते हैं और कभी सांसारिक खान-पान करते हैं, क्या वे आवश्यक समयों में शौचादि नित्यकर्मों को करते हैं और क्या वे आवश्यकताओं के समय नाख़ूनों और बालों को कटाते और मुंडवाते हैं अथवा बालों को छोटा कराते हैं, क्या उनके लेटने के लिए कोई चारपाई और कोई बिस्तर भी है, क्या वे वायु के साथ सांस लेते हैं और सूंघते हैं और वायु ही के माध्यम से सुनते और प्रकाश के माध्यम से देखते हैं और क्या वे समय (युग) के प्रभाव से अब वृद्ध हो गए हैं तो नि:सन्देह इसका उत्तर यही दिया जाएगा कि उनमें भौतिक अस्तित्व की अनिवार्यताएं और विशेषताएं शेष नहीं रहीं अपितु वे प्रत्येक अवस्था में उन लोगों के समान हैं जो मृत्यु होने के कारण इस संसार को छोड़ गए हैं और न केवल समान अपितु उस मृत्युप्राप्त वर्ग में सम्मिलित हैं। अत: इस उत्तर से तो उनकी मृत्यु ही सिद्ध होती है क्योंकि जब उन्होंने मृत्युप्राप्त लोगों की भांति परलोक के जीवन की समस्त अनिवार्यताएं धारण कर लीं जो मृत्यु प्राप्त लोगों के लक्षणों में से हैं और न केवल धारण ही कीं अपितु उस वर्ग में सम्मिलित हो गए तथा ख़ुदा का कथन

اِرْجِعِیْۤ اِلٰی رَبِّكِ*

आदेश स्वीकार करके

فَادْخُلِیْ فِیْ عِبٰدِیْ**

का चरितार्थ हो गए। अत: यदि अब भी उन्हें मृत्यु प्राप्त न कहा जाए तो और क्या कहा जाए। स्पष्ट है कि संसार (लोक) दो ही हैं।

एक यह संसार का लोक जब तक मनुष्य इस लोक में होता है और इस लोक

---

* अलफ़ज्र-29

** अलफ़ज्र-30

की अनिवार्यताएं जैसे खाना-पीना, पहनना, सांस लेना, सोना, जागना तथा शारीरिक विकास अथवा क्षीणता के कारण परिवर्तन का होते रहना उसके साथ संलग्न हैं, उसे उस समय तक ही जीवित कहा जाता है, जब ये अनिवार्यताएं उस से पूर्णतया दूर हो जाती हैं तब सब कह उठते हैं कि मर गया और फिर केवल मौत की परलोक की अनिवार्यताएं पैदा हो जाती हैं अपितु सत्य तो यह है कि मनुष्य जिस वर्ग में सम्मिलित होता है उस वर्ग की परिस्थितियों पर उसकी परिस्थितियों का अनुमान किया जाता है, जो व्यक्ति इस संसार के लोगों में सम्मिलित है वह इसी संसार में से समझा जाएगा और जो व्यक्ति इस संसार को छोड़ गया और परलोक के वर्ग में सम्मिलित हो गया उसकी उसी वर्ग में गणना होगी। अत: देख लेना चाहिए कि मसीह किस वर्ग में सम्मिलित है ? जिस वर्ग में सम्मिलित होगा उस पर उसी वर्ग के आदेश लागू होंगे। ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता है कि कोई व्यक्ति मृत्यु प्राप्त वर्ग में बिना मरने के प्रवेश नहीं कर सकता परन्तु यह बात सही बुख़ारी से भी ज्ञात हो चुकी है कि मसीह इब्ने मरयम मृत्यु प्राप्त वर्ग में सम्मिलित है और यह्या बिन ज़करिया के साथ दूसरे आकाश में मौजूद है तथा ख़ुदा तआला यह भी फ़रमाता है कि कोई व्यक्ति मेरी ओर बिना मृत्यु के आ नहीं सकता परन्तु इसमें कुछ सन्देह नहीं कि मसीह उसकी ओर उठाया गया, अत: वह अवश्य मृत्यु प्राप्त हो चुका। ख़ुदा तआला ने उसे अपने कलाम में

اِنِّیْ مُتَوَفِّیْکَ وَرَافِعُکَ اِلَیَّ*

से पुकारा है। अत: शब्द मुतवफ़्फ़ी (مُتَوَفِّیْ) जिन सामान्य अर्थों से सम्पूर्ण क़ुर्आन और हदीसों में प्रयुक्त है वह यही है कि रूह को निकालना और शरीर को निलंबित छोड़ देना यह बड़े द्वेष की बात है कि समस्त संसार के लिए तो तवफ़्फ़ा के यही अर्थ रूह (क़ब्ज़) निकालने के हों परन्तु मसीह इब्ने मरयम के लिए शरीर क़ब्ज़ करने के अर्थ लिए जाएं। क्या हम विशेष तौर पर ईसा के लिए कोई नवीन शब्द-कोश बना सकते हैं जो कभी अल्लाह और रसूल के कलाम में प्रयोग नहीं हुए

* आले इमरान-56

और न अरब के कवि तथा भाषाविद उसको कभी प्रयोग में लाए। फिर जिस अवस्था में तवफ़्फ़ा के यही प्रचलित और परिचित अर्थ हैं कि रूह क़ब्ज़ की जाए चाहे अपूर्ण अथवा बतौर पूर्ण। फिर रफ़ा (رفع) से शरीर का रफ़ा क्यों अभिप्राय लिया जाता है। स्पष्ट है कि जिस वस्तु पर अधिकार किया जाएगा रफ़ा भी उसी का होगा न यह कि क़ब्ज़ तो रूह हो और शरीर का रफ़ा किया जाए। अत: उस शीघ्र समझ में आने वाले तथा निरन्तरता रखने वाले अर्थों के विपरीत जो पवित्र क़ुर्आन से तवफ़्फ़ा के शब्द के संबंध में प्रारंभ से अन्त तक समझे जाते हैं एक नए अर्थ अपनी ओर से गढ़ना यही तो अधर्म और अक्षरांतरण है। ख़ुदा तआला मुसलमानों को इस से सुरक्षित रखे। यदि यह कहा जाए कि तफ़्सीरों (व्याख्याओं) में तवफ़्फ़ा के अर्थ कई प्रकार से किए गए हैं तो मैं कहता हूं कि वे विभिन्न और विपरीतार्थक कथन नबी करीम स.अ.व. के बयान से नहीं लिए गए, अन्यथा संभव न था कि वह बयान जो वह्यी के झरने से निकला है उसमें मतभेद और विरोधाभास मार्ग पा सकता अपितु व्याख्याकारों के अपने-अपने बयान हैं जिन से सिद्ध होता है कि उनकी कभी किसी विशेष अर्थ पर सर्वसम्मति हुई। यदि उनमें से किसी को वह प्रतिभा दी जाती जो इस ख़ाकसार को दी गई तो अवश्य इसी एक बात पर उनकी सर्वसम्मति हो जाती, परन्तु ख़ुदा तआला ने इस ठोस और अटल ज्ञान से उन्हें वंचित रखा ताकि अपने एक बन्दे को पूर्ण रूपेण यह ज्ञान देकर आदम की भांति उसकी ज्ञान संबंधी श्रेष्ठता का एक निशान प्रकट करे।

यदि यह कहा जाए कि अधिकतर व्याख्याकार मसीह इब्ने मरयम की मृत्यु को तो स्वीकार करते हैं परन्तु यह भी तो कहते हैं कि इसके पश्चात् वह जीवित हो गए। इसके उत्तर में मैं कहता हूं कि जिन बुज़ुर्गों को मसीह इब्ने मरयम की मृत्यु के पश्चात् उसके जीवित हो जाने की आस्था है वे कदापि इस बात को नहीं मानते कि मसीह को मृत्योपरान्त भौतिक जीवन मिला था अपितु वह स्वयं मानते हैं कि मसीह को मृत्योपरान्त ऐसा जीवन मिला था जो भौतिक जीवन से सर्वथा विपरीत, पृथक तथा दूसरे संसार (परलोक) के जीवन के प्रकारों में से था और उस जीवन के प्रकार

में से था जो मृत्यु के पश्चात् हज़रत यह्या को मिला, हज़रत इदरीस को मिला हज़रत यूसुफ़, हज़रत इब्राहीम हज़रत मूसा, हज़रत आदम को मिला तथा सर्वाधिक हमारे सरदार और पेशवा, नबी अरबी, हाशमी, अनपढ़ को मिला। अल्लाह उन पर उनकी औलाद पर तथा उसके समस्त भाइयों पर दरूद भेजे।

यदि कोई कहे कि नहीं साहिब वह जीवन जो मसीह को मृत्योरान्त प्राप्त हुआ वह वास्तव में भौतिक जीवन था तो ऐसा मानने वाले को इस बात का स्वीकार कर लेना अनिवार्य होगा कि मसीह में भौतिक जीवन की अनिवार्यताएं विद्यमान हैं और वह इस संसार के जीवित लोगों की भांति वायु के माध्यम से सांस लेता है और वायु के माध्यम से सूंघता है और वायु के माध्यम से ही आवाज़ें सुनता, खाता-पीता तथा शौचादि की समस्त घृणित बातें उसके साथ संलग्न हैं, परन्तु पवित्र क़ुर्आन तो उसके अस्तित्व से इन सब बातों को नकारता है तथा हदीसें स्पष्ट और उच्च स्वर में कह रही हैं कि मसीह का जीवन समस्त पूर्वकालीन और मृत्यु प्राप्त नबियों के जीवन के समरूप है। अत: मे'राज की हदीस भी इसी को सिद्ध करती है और ईसाई लोग भी इसके बावजूद कि उन्हें मसीह की मृत्यु के पश्चात् उनके जीवित उठाए जाने पर बहुत हठ है कदापि यह दावा नहीं करते कि वह आकाशों में भौतिक जीवन में आयु व्यतीत करते हैं अपितु केवल मूसा और दाऊद तथा अन्य नबियों के जीवन की भांति मसीह का जीवन समझते हैं क्योंकि मसीह को स्वयं इस बात का इक़रार है।

यहां यह भी स्पष्ट रहे कि तवफ़्फ़ा के अर्थ मृत्यु देने के केवल विवेचना के तौर पर हम ने ज्ञात नहीं किए अपितु 'मिश्कात' के 'बाबुल हश्र' में बुख़ारी और मुस्लिम की हदीस जो इब्ने अब्बास से हैं, स्पष्ट और साफ़ तौर पर उसमें आँहज़रत स.अ.व. आयत فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي (फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी) की यही व्याख्या करते हैं कि वास्तव में इस से अभिप्राय मृत्यु ही है अपितु उसी हदीस से यह भी सिद्ध होता है कि यह प्रश्न हज़रत मसीह से ''आलमे बरज़ख़'' में उनकी मृत्यु के पश्चात् किया गया था, न यह कि प्रलय में किया जाएगा। अत: जिस आयत की व्याख्या को आँहज़रत स.अ.व. ने स्वयं ही स्पष्ट कर दिया फिर यदि यही कोई नबी करीम

स.अ.व. की व्याख्या को सुनकर भी सन्देह में रहे तो उसके ईमान और इस्लाम पर यदि खेद और आश्चर्य न करें तो और क्या करें। देखो इस हदीस को इमाम बुख़ारी इन्हीं अर्थों की ओर संकेत करने के उद्देश्य से अपनी 'सही' की 'किताबुत्तफ़्सीर' में लाए हैं। देखो बुख़ारी पृष्ठ - 665

कुछ लोग इन सभी निर्णायक तर्कों को सुनकर हज़रत मसीह की मृत्यु को तो स्वीकार कर लेते हैं परन्तु वे पुन: भ्रम प्रस्तुत करते हैं कि अल्लाह तआला इस बात पर सामर्थ्यवान है कि उन्हें जीवित करके फिर क़ब्र में से उठाए। हम इस भ्रम के निवारण में कई बार वर्णन कर चुके हैं कि अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन और हदीसों में वादा कर चुका है कि जो व्यक्ति एक बार मर चुका और जो वास्तविक मृत्यु उसके लिए प्रारब्ध थी उस पर आ चुकी वह दोबारा संसार में नहीं भेजा जाएगा और न संसार में उस पर दो मौतें लाई जाएंगी। इस उत्तर के सुनने के पश्चात् वे फिर एक अन्य भ्रम प्रस्तुत करते हैं कि पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध होता है कि कुछ मुर्दे जीवित हो गए जैसे वह मुर्दा जिस की हत्या बनी इस्राईल ने छुपा ली थी जिसका वर्णन इस आयत में है :-

وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ*

इसका उत्तर यह है कि ऐसे क़िस्सों में पवित्र क़ुर्आन की किसी इबारत से नहीं निकलता कि वास्तव में कोई मुरदा जीवित हो गया था और निश्चित तौर पर किसी ढांचे में प्राण पड़ गए थे अपितु इस आयत पर विचार करने से केवल इतना सिद्ध होता है कि यहूदियों के एक समूह ने एक हत्या करके छुपा दिया था और कुछ लोग कुछ अन्य लोगों पर आरोप लगाते थे। अत: ख़ुदा तआला ने वास्तविक अपराधी को पकड़ने के लिए यह उपाय बताया था कि तुम एक गाय को ज़िब्ह करके उसके मांस से टुकड़े उस लाश पर मारो और वे समस्त लोग जिन पर सन्देह है उन टुकड़ों को बारी-बारी उस लाश पर मारें तब वास्तविक हत्यारे के हाथ से जब लाश पर मांस का टुकड़ा लगेगा तो लाश से ऐसी गतियां (हरकतें) निकलेंगी जिससे हत्यारा

* अलबक़रह-73

पकड़ा जाएगा।

अब इस क़िस्से से वास्तविक तौर पर लाश का जीवित होना कदापि सिद्ध नहीं होता। कुछ का विचार है कि यह केवल एक धमकी थी ताकि चोर निराश होकर स्वयं को प्रकट करे, परन्तु ऐसी व्याख्या से अन्तर्यामी की असमर्थता प्रकट होती है और ऐसी व्याख्याएं वही लोग करते हैं जिन्हें फ़रिश्तों के संसार के रहस्यों से कुछ भाग प्राप्त नहीं। वास्तविकता यह है कि यह पद्धति मस्मरेज़म की एक शाखा थी जिसकी कुछ विशेषताएं ये भी हैं कि स्थूल पदार्थों या मृत प्राणियों में एक गति जीवित प्राणियों के समान पैदा होकर उस से कुछ संदिग्ध और अज्ञात बातों का पता लग सकता है। हमें चाहिए कि किसी सच्चाई को नष्ट न करें और प्रत्येक वह वास्विकता या विशेषता जो सर्वथा सच्चाई है उसे ख़ुदा तआला की ओर से समझें। मस्मरेज़म एक महत्वपूर्ण विद्या है जो भौतिकी का एक आध्यात्मिक भाग है जिसमें बड़े-बड़े गुण और चमत्कार पाए जाते हैं तथा उसकी वास्तविकता यह है कि मनुष्य जिस प्रकार अपने सम्पूर्ण अस्तित्व की दृष्टि से समस्त वस्तुओं पर ख़ुदा का ख़लीफ़ा है तथा समस्त वस्तुएं उसके अधीन कर दी गई हैं। इसी प्रकार मनुष्य अपने अन्दर जितनी मानव-शक्तियां रखता है समस्त वस्तुएं उन शक्तियों की इस प्रकार अधीन हैं कि अनुकूल शर्तों के साथ उनका प्रभाव स्वीकार कर लेती हैं। मनुष्य प्रभावी शक्ति के साथ संसार में भेजा गया है दूसरी वस्तुएं प्रभावित होने की शक्ति रखती है। मनुष्य की प्रभावी शक्ति का तुच्छ प्रभाव यह है कि उससे प्रत्येक प्राणी ऐसा हिल जाता है कि स्वयं की गणना उसके सेवकों में कर लेता है। और उसका वशीभूत हो जाता है। प्रकृति ने जिन मनुष्यों को प्रभावी शक्ति से बहुत बड़ा भाग दिया है उन से मस्मरेज़म के बड़ी अद्‌भुत विशेषताएं प्रकट होती हैं। वास्तव में मनुष्य एक ऐसा प्राणी है कि उसकी बाह्य और आन्तरिक शक्तियां उन्नति देने से उन्नतिशील हो सकत हैं और उनकी प्रभावी शक्ति का प्रभाव बढ़ जाता है। उदाहरणतया जिन लोगों को हमारे देश में डायन कहते हैं उनकी वास्तविकता केवल इतनी है कि उनकी विषाक्त दृष्टि से पैदायशी तौर पर कमज़ोर लोग, बच्चे इत्यादि

एक सीमा तक प्रभावित हो जाते हैं, कुछ लोग अपनी विषाक्त दृष्टि से हिंसक पशुओं को परास्त और प्रभावित करके आसानी से उनका शिकार कर लेते हैं, कुछ लोग अपने मस्मरेज़ के ध्यान केन्द्रित करने के अभ्यासों द्वारा अपने विचारों को दूसरों के हृदय में डाल देते हैं, कुछ लोग अपनी इच्छा-शक्ति का प्रभाव अपनी इस प्रक्रिया द्वारा दूसरे के हृदय तक पहुंचा सकते हैं, कुछ निष्प्राण वस्तुओं जड़ पदार्थों पर प्रभाव डालकर उनमें गति उत्पन्न कर देते हैं। अत: वर्तमान युग में भी इन बातों में अभयस्त लोग अधिकतर दिखाई देते हैं, कुछ लोग बकरी इत्यादि के कटे हुए सर मस्मरेज़म की शक्ति से ऐसी गति में लाते हैं कि वे नाचते हुए दिखाई देते हैं, कुछ लोग मस्मरेज़म की शक्ति से चोरों का पता लगा लेते हैं। पवित्र क़ुर्आन या लोटे को गति देकर जो चोर का पता निकालते हैं। वास्तव में यह मस्मरेज़म की प्रक्रिया की एक शाखा है, यद्यपि उसकी आवश्यक शर्तों के अभाव के कारण ग़लती हो। अत: इसी कारण अधिकतर ग़लती होती भी है परन्तु यह ग़लती उस प्रक्रिया के महत्व और प्रतिष्ठा को कम नहीं कर सकती क्योंकि बहुत से सही अनुभवों से इसकी वास्तविकता सिद्ध हो चुकी है। नि:सन्देह मानव-जीवन और विवेक का प्रभाव अन्य वस्तुओं पर भी पड़ सकता है तथा मनुष्य की कश्फ़ी शक्ति का प्रतिबिम्ब जड़ पदार्थों या किसी मृत प्राणी पर पड़कर उसे कुछ अज्ञात बातों के प्रकटन का साधन भी बना सकता है। अत: उपरोक्त विवाद जिस उपरोक्त कथित आयत में वर्णन है इसी प्रकार में से है और बाद में जो आयत है كَذٰلِكَ يُحۡيِ اللّٰهُ الۡمَوۡتٰى (अलबक़र: आयत 74) यह वास्तविक नहीं अपितु एक अद्‌भुत क़ुदरत के सिद्ध होने से दूसरी क़ुदरत की ओर संकेत है। अत: पवित्र क़ुर्आन में अनेकों स्थान पर यही पद्धति है यहां तक कि वनस्पतियों के उगने को मुर्दों के जीवित होने पर प्रमाण ठहराया गया है और यही आयत كَذٰلِكَ يُحۡيِ اللّٰهُ الۡمَوۡتٰى उन स्थानों में भी लिखी गई है। स्मरण रखना चाहिए कि पवित्र क़ुर्आन में जो चार पक्षियों का वर्णन किया गया है कि उनके भिन्न-भिन्न अंग अर्थात् पृथक-पृथक करके चार पर्वतों पर छोड़ा गया था और फिर वे बुलाने से आ गए थे। यह भी मस्मरेज़म की प्रक्रिया की ओर संकेत है क्योंकि

मस्मरेज़म के अनुभव बता रहे हैं कि मनुष्य में सम्पूर्ण सृष्टि को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए एक चुम्बकीय शक्ति है और संभव है कि मनुष्य की चुम्बकीय शक्ति (आकर्शण शक्ति) उस सीमा तक उन्नति करे कि किसी पक्षी या पशु को केवल ध्यान से अपनी ओर आकर्षित कर ले। अत: सतर्कतापूर्वक विचार कर।

अब हम पुन: मूल बहस की ओर लौटते हुए कहते हैं कि समस्त नेक लोग जो इस संसार से चल बसे और परलोक में जीवित हैं। अत: जब मसीह से प्रलय के इन्कार करने वालों ने प्रश्न किया कि मुर्दों के जीवित हो उठने पर क्या सबूत है? तो मसीह ने यही उत्तर दिया कि ख़ुदा तआला तौरात में फ़रमाता है कि इब्राहीम का ख़ुदा, इस्हाक़ का ख़ुदा, याक़ूब का ख़ुदा। अत: ख़ुदा जीवितों का ख़ुदा होता है न कि मुर्दों का। इससे मसीह ने इस बात का इक़रार कर लिया कि इब्राहीम और इस्हाक़ और याक़ूब सब जीवित हैं और लआज़र के वृत्तान्त में भी मसीह ने इब्राहीम का जीवित होना मान लिया है। अब तक ईसाई लोग इस बात का प्रमाण नहीं दे सके कि मसीह के जीवन को इब्राहीम के जीवन पर क्या प्राथमिकता है और मसीह के जीवन में वे कौन से विशेष साधन हैं जो इब्राहीम के जीवन में नहीं। स्पष्ट है कि यदि इब्राहीम को एक शरीर न मिलता तो लआज़र उसकी गोद में क्योंकर बैठता। मसीह ने इंजील में स्वयं इक़रार कर लिया कि इब्राहीम शरीर के साथ दूसरे संसार (परलोक) में मौजूद है। फिर मसीह के शरीर में कौन सी अनोखी बात है ताकि कोई न्यायकर्ता विश्वास कर ले कि मसीह तो पार्थिव शरीर रखता है परन्तु इब्राहीम का नूरानी (प्रकाश का) शरीर है। हां यदि यह सिद्ध हो जाए कि मसीह के शरीर में पार्थिव शरीर की वस्तुएं मौजूद हैं जैसे रोटी खाना, पानी पीना, शौचादि करना इत्यादि-इत्यादि और इब्राहीम के शरीर में ये वस्तुएं मौजूद नहीं तो भला फिर कौन है कि इस प्रमाण के पश्चात् फिर इन्कार करता रहे, परन्तु अब तक यह सबूत न ईसाई लोग प्रस्तुत कर सके और न मुसलमानों में से किसी ने प्रस्तुत किया अपितु दोनों पक्षों का स्पष्ट इक़रार है कि मसीह का जीवन दूसरे नबियों के जीवन से स्पष्ट

तौर पर यथार्थ में एकता और समरूपता रखता है तथा मध्य में लेशमात्र अन्तर नहीं। फिर हम क्योंकर स्वीकार कर लें कि मसीह किसी अनोखे शरीर के साथ आकाश पर बैठे हैं, और दूसरे सब बिना शरीर के हैं। हमें मात्र बलात् और ज़ोर दिखाकर यह सुनाया जाता है कि इसी बात पर समस्त उम्मत की सर्वसहमति है परन्तु जबकि हम देखते हैं कि पूर्वजों और बाद में आने वालों की तो किसी एक बात पर सहमति ही नहीं तो हम क्योंकर स्वीकार कर लें कि हां सहमति ही है। यदि मसीह के जीवन पर किसी की सर्वसम्मति है तो एक कथन तो दिखाओ जिसमें पहले लोगों ने मसीह का जीवन एक सांसारिक जीवन ठहराया हो और उसमें सांसारिक जीवन की वस्तुएं स्वीकार कर ली हों और दूसरों को उससे बाहर रखा हो, अपितु सत्य तो यह है कि इस बात पर समस्त पहलों (पूर्वजों) और बाद में आने वालों की सर्वसम्मत्ति मालूम होती है कि मसीह इस लोक को छोड़कर परलोक के लोगों से जा मिला है और बिना किसी न्यूनाधिकता के उन्हीं की जीवन के अनुकूल उसका जीवन है। यद्यपि कुछ ने मूर्खता से मसीह की मृत्यु से इन्कार किया है परन्तु इसके बावजूद स्वीकार कर लिया है कि वह मरने वाले लोगों की भांति इस संसार को छोड़ गया है और मरने वालों की जमाअत में जा मिला और पूर्णतया उनके समान हो गया। भला कोई बुद्धिमान उन से पूछे कि यदि यह मृत्यु नहीं तो और क्या है जिसने इस सांसारिक लोक को छोड़ दिया। और परलोक में जा पहुंचा और संसार के लोगों को त्याग दिया और परलोक के लोगों में से एक हो गया। यदि उसे मृत्यु प्राप्त न कहें तो और क्या कहें।

हम उल्लेख कर चुके हैं कि मसीह इब्ने मरयम को पवित्र क़ुर्आन अपनी आयतों के तीस स्थानों में मार चुका है और क्या स्पष्ट आयतों को इबारत के तौर पर और क्या सांकेतिक तौर पर और क्या बातचीत की शैली के तौर पर उनकी मृत्यु पर साक्ष्य दे रहा है और कभी ऐसी आयत नहीं पाई जाती जो उनके जीवित होने और जीवित उठाए जाने पर लेशमात्र भी संकेत करती हो। हां कुछ निराधार और व्यर्थ कथन व्याख्याओं में पाए जाते हैं जिनके समर्थन में न कोई आयत पवित्र

क़ुर्आन की प्रस्तुत की गई है और न कोई हदीस सामने लाई गई है। इसके साथ ही उन कथनों का आधार विश्वास पर नहीं, क्योंकि उन्हीं व्याख्याओं की पुस्तकों में कुछ कथनों के विपरीत कुछ दूसरे कथनों का भी उल्लेख है। उदाहरणतया यदि किसी का यह मत लिखा है कि मसीह इब्ने मरयम पार्थिव शरीर के साथ जीवित ही उठाया गया तो उसके साथ ही यह भी लिख दिया है कि कुछ का यह भी मत है कि मसीह मृत्यु पा चुका है अपितु अति विश्वसनीय सहाबा की रिवायत से मृत्यु हो जाने के कथन को प्रमुखता दी है जैसा कि इब्ने अब्बास रज़ि. का यही मत वर्णन किया गया है।

रह गईं हदीसें तो उनमें किसी स्थान पर वर्णन नहीं किया गया कि मसीह इब्ने मरयम जो ख़ुदा का रसूल था जिस पर इंजील उतरी थी जो मृत्यु पा चुका है वास्तव में वही परलोक के लोगों में से निकलकर फिर इस संसार के लोगों में आ जाएगा अपितु हदीसों में एक ऐसी शैली अपनाई गई है जिस से एक निपुण व्यक्ति स्पष्ट तौर पर समझ सकता है कि मसीह इब्ने मरयम से अभिप्राय **मसीह इब्ने मरयम** नहीं है अपितु उसके विशेष गुणों में उसका कोई समरूप अभिप्राय है क्योंकि सही हदीसों में दो पहलू बना कर एक पहलू में यह प्रकट करना चाहा है कि इस्लाम अवनति करता-करता उस सीमा तक पहुंच जाएगा कि उस समय के मुसलमान उन यहूदियों के समान अपितु बिल्कुल वही हो जाएंगे जो हज़रत मसीह इब्ने मरयम के समय में मौजूद थे। फिर दूसरे पहलू में यह वर्णन किया है कि उस अवनति के युग में कि जब मुसलमान लोग ऐसे यहूदी बन जाएंगे कि जो ईसा इब्ने मरयम के समय में थे। तो उस समय उनके सुधार के लिए एक मसीह इब्ने मरयम भेजा जाएगा। अब स्पष्ट है कि यदि इस भविष्यवाणी के वे दोनों पहलू इकट्ठे करके पढ़े जाएं जो एक ओर इस उम्मत में यहूदियत को क़ायम करते हैं और दूसरी ओर ईसाइयत को तो फिर इस बात के समझने के लिए कोई सन्देह शेष नहीं रहता कि ये दोनों विशेषताएं इसी उम्मत के लोगों की ओर सम्बद्ध हैं और उन हदीसों की पवित्र क़ुर्आन के आशय से इसी अवस्था में अनुकूलता होगी कि जब ये दोनों गुण इसी

उम्मत से संबंधित किए जाएं क्योंकि जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं कि पवित्र क़ुर्आन वादा कर चुका है कि ख़िलाफ़त-ए-मुहम्मदिया (मुहम्मदी ख़िलाफ़त) का सिलसिला पहलों और बाद वालों की दृष्टि से ख़िलाफ़त-ए-मूसविया (मूसवी ख़िलाफ़त) के सिलसिले के बिल्कुल समान और सदृश है। अर्थात् इस उम्मत के श्रेष्ठ और निम्न लोगों का बनी इस्राईल की उम्मत से हृदयों की समानता है श्रेष्ठ को श्रेष्ठ से और निम्न स्तर वाले की निम्न स्तर वाले से, और ये दोनों सिलसिले अपनी उन्नति और अवनति की अवस्था में परस्पर बिल्कुल समान और समरूप हैं और जैसा कि मूसा की शरीअत चौदह सौ वर्ष के लगभग आयु पाकर इस उम्मत के अन्तिम दिनों में बुलन्दी एवं उन्नति से गिर गई थी तथा प्रत्येक बात में अवनति व्याप्त हो गई थी। क्या सांसारिक शासन अथवा सरकार में और क्या धार्मिक संयम और पवित्रता में यही अवनति उसी अवधि के अनुसार इस्लामी शरीअत में भी व्याप्त हो गई और मूसा की शरीअत में अवनति के दिनों का सुधारक जो ख़ुदा की ओर से आया वह मसीह इब्ने मरयम था। अत: आवश्यक था कि दोनों सिलसिलों में पूर्ण समरूपता प्रदर्शित करने के उद्देश्य से इस्लामी अवनति के युग में भी कोई सुधारक मसीह इब्ने मरयम के रूप पर आता और उसी युग के निकट आता जो मूसा की शरीअत की अवनति का युग था। ये वे समस्त बातें हैं जो पवित्र क़ुर्आन से प्रकट होती हैं। जब हम पवित्र क़ुर्आन पर विचार करें तो जैसे वह दोनों हाथ फैलाकर हमें बता रहा है कि यही सत्य है तुम उसे स्वीकार करो, परन्तु खेद कि हमारे उलेमा में यह समझ और बोध नहीं था जो तुम्हें दिया गया और स्वयं ही पुस्तकों में पढ़ते हैं कि जब मसीह इब्ने मरयम आएगा तो वह क़ुर्आन से ऐसी-ऐसी बातें निकालेगा जो समय के उलेमा की दृष्टि में अजनबी ज्ञात होंगी। इसी कारण वह विरोध पर तत्पर हो जाएंगे। देखो मुजद्दिद सानी मक्तूबात इमाम रब्बानी पृष्ठ 107 तथा किताब ''आसारुल क़यामत'' मौलवी सिद्दीक़ हसन साहिब स्वर्गीय। अब क्या आवश्यक न था कि ऐसा ही होता। वे लक्षण जिनसे यह सिद्ध होता है कि हदीसों का कदापि यह आशय नहीं कि मसीह इब्ने मरयम से बनी इस्राईली, जिस पर इंजील उतरी

अभिप्राय है निम्नलिखित हैं :-

प्रथम यही जिस का ऊपर उल्लेख किया गया कि ऐसा विचार पवित्र क़ुर्आन की उन भविष्यवाणियों के विपरीत है जिनमें मूसा की ख़िलाफ़त तथा मुहम्मदी ख़िलाफ़त की उन्नति और अवनति का क्रम उसकी समस्त वस्तुओं का एक ही पद्धति पर होना वर्णन किया गया है और उच्च स्वर में स्पष्ट तौर पर बताया गया है कि इस्लामी शरीअत की अवनति के युग का निवारण उसी ढंग और पद्धति तथा उसी रूप के सुधारक द्वारा किया जाएगा जैसा कि मूसा की शरीअत की अवनति के युग में किया गया था। अर्थात् अल्लाह तआला का पवित्र क़ुर्आन में आशय यह है कि इसी शरीअत के सुधारक जो इस धर्म में पैदा होंगे मूसा की शरीअत के सुधारकों से सदृश और समरूप होंगे और ख़ुदा तआला ने जो कुछ मूसा की शरीअत की उन्नति और अवनति के युग में कार्यवाहियां की थीं वही कार्यवाहियां इस उम्मत की उन्नति और अवनति के युग में करेगा और जो कुछ उसकी इच्छा ने अवनति के युग में यहूदियों पर आलस्य, गुमराही और फूट इत्यादि का प्रभाव डाला था और फिर उसके सुधार के लिए एक सहनशील एवं कुशाग्र बुद्धि तथा ख़ुदाई वाणी से समर्पित सुधारक दिया था। अल्लाह का यही नियम इस्लाम की अवनति की अवस्था में प्रकट होगा। अब यदि इस उद्देश्य के विपरीत उसी पहले मसीह इब्ने मरयम को ही पुन: पृथ्वी पर उतारा जाए तो पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा से बिल्कुल विपरीत है।

द्वितीय पवित्र क़ुर्आन निश्चित तौर पर ईसा इब्ने मरयम की मृत्यु प्रमाणित और प्रकट कर चुका है। सही बुख़ारी जो पवित्र क़ुर्आन के बाद सब से अधिक सही समझी गई है उसमें فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ (फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी) के अर्थ मृत्यु ही लिखे हैं। इसी कारण इमाम बुख़ारी इस आयत को किताबुत्तफ़्सीर में लाए हैं।

तृतीय पवित्र क़ुर्आन कई आयतों में स्पष्ट कह चुका है कि जो व्यक्ति मर गया फिर वह संसार में कभी नहीं आएगा, परन्तु इस उम्मत में नबियों के समनाम आएंगे।

चतुर्थ पवित्र क़ुर्आन ख़ातमुन्नबिय्यीन के बाद किसी रसूल का आना वैध नहीं

रखता। चाहे वह नया रसूल हो या पुराना हो क्योंकि रसूल को धर्म का ज्ञान जिब्राईल के माध्यम से मिलता है तथा जिब्राईल के उतरने का द्वार रसूल होने की वह्यी के रूप में बन्द है। यह बात स्वयं निषेध है कि संसार में रसूल तो आए परन्तु रसूल होने की वह्यी का सिलसिला न हो।

पंचम यह कि सही हदीस स्पष्ट तौर पर वर्णन कर रही हैं कि आने वाला मसीह इब्ने मरयम उम्मतियों के रंग में आएगा। अत: उसे उम्मती के रूप में वर्णन भी किया गया है जैसा कि हदीस **इमामोकुम मिन्कुम** (اِمَامُكُم مِنْكُم) से स्पष्ट है और न केवल वर्णन किया गया अपितु उम्मत पर जो कुछ आज्ञाकारिता एवं अनुसरण अनिवार्य है वह सब उसके साथ अनिवार्य ठहराई गई।

षष्टम बुख़ारी में जो ख़ुदा की किताब क़ुर्आन के पश्चात् सब से अधिक प्रमाणित पुस्तक है वास्तविक मसीह इब्ने मरयम का हुलिया और बताया गया है और आने वाले मसीह इब्ने मरयम का हुलिया उससे भिन्न प्रकट किया गया है। अब इन छ: लक्षणों की दृष्टि से स्पष्ट तौर पर सिद्ध है कि आने वाला मसीह वह मसीह कदापि नहीं है जिस पर इंजील उतरी थी अपितु उसका सदृश है। इस समय उसके आने का वादा था कि जब मुसलमानों में से करोड़ों लोग यहूदियों के समान हो जाएंगे ताकि ख़ुदा तआला इस उम्मत के दोनों प्रकारों की योग्यताएं प्रकट करे न यह कि इस उम्मत में केवल यहूदियों का अपवित्र रूप स्वीकार करने की योग्यता हो और मसीह बनी इस्राईल में से आए। नि:सन्देह ऐसी स्थिति में उस पवित्र और आध्यात्मिक शिक्षक तथा पवित्र नबी का बहुत अपमान है जिसने यह शुभ सन्देश भी दिया था कि इस उम्मत में समरूप बनी इस्राईल के नबियों में से पैदा होंगे।

यदि यह कहा जाए कि जिस स्थिति में वास्तविक ईसा इब्ने मरयम आने वाला नहीं था अपितु उसका समरूप आने वाला था तो यह कहना चाहिए था कि समरूप आने वाला है। इसका उत्तर यह है कि यह वर्तालाप की सामान्य शैली है कि जब वक्ता का यह इरादा होता है कि उपमेय और उपमान में पूर्ण समानता है तो उपमेय को उपमान पर चरितार्थ देता है ताकि पूर्ण अनुकूलता हो। जैसे इमाम बुख़ारी के

संबंध में एक समारोह में कहा गया कि देखो यह अहमद हंबल आया है..... और जैसे कहते हैं कि यह शेर है और यह नौशेरवां है, यह हातिम है या उदाहरणतया जैसे कोई किसी को कहता है कि तू गधा है या बन्दर है और यह नहीं कहता कि तू गधे के समान है या बन्दर के समान, क्योंकि पूर्ण अनुरूपता का जो अर्थ उसके हृदय में होता है 'समान' कहने से समाप्त हो जाता है और जिस दशा को वह अदा करना चाहता है वह इन शब्दों से अदा नहीं हो सकती। अत: विचार कर।

امت احمد نہان دارد دو ضدرا در وجود ے تواند شد مسیحاے تواند شد یہود

زمرۂزی شان ہمہ بدطینتان راجائے تنگ رمۂ دیگر بجائے انبیاء دارد قعود

कुछ लोग नितान्त सादगी से कहते हैं कि सलातीन की किताब में जो लिखा है कि एलिया पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर उठाया गया तो फिर क्या मसीह इब्ने मरयम के उठाए जाने में कुछ कठिनाई है। अत: उन पर स्पष्ट हो कि वास्तव में एलिया भी पार्थिव शरीर के साथ नहीं उठाया गया था। अत: मसीह ने उसकी मृत्यु की ओर संकेत कर दिया जब कि उसने यहूदियों की वह आशा तोड़ दी जो वे अपनी मूर्खता से बांधे हुए थे और कह दिया कि वह कदापि नहीं आएगा। स्पष्ट है कि यदि वह पार्थिव शरीर के साथ उठाया जाता तो फिर मिट्टी की ओर उसका लौटना आवश्यक था क्योंकि लिखा है कि पार्थिव शरीर मिट्टी की ओर ही लौटता है :-

مِنۡهَا خَلَقۡنَاكُمۡ وَفِيۡهَا نُعِيۡدُكُمۡ*

क्या एलिया आकाश पर ही मृत्यु पाएगा अथवा-

كُلُّ مَنۡ عَلَيۡهَا فَانٍ**

से बाहर रहेगा। यदि विचार करके देखो तो एलिया की गिरने वाली चादर वही उसका अस्तित्व था जो उसने त्याग दिया और नया चोला पहन लिया।

* ताहा- 56

** अर्रहमान- 27

क्यों नहीं लोगो तुम्हें हक़ का ख़्याल,
दिल में उठता है मेरे सौ-सौ उबाल।
इब्ने मरयम मर गया हक़ की क़सम,
दाख़िले जन्नत हुआ वह मुहतरम।
मारता है उसको फ़ुर्क़ां सर बसर,
उसके मर जाने की देता है ख़बर।
वह नहीं बाहर रहा अम्वात से,
हो गया साबित यह तीस आयात से।
कोई मुर्दों से कभी आया नहीं,
यह तो फ़ुर्क़ां ने भी बतलाया नहीं।
अहद शुद अज़ किर्दगारे बेचगूं,
ग़ौर कर दर अन्नहुम ला यरजिऊन।
ऐ अज़ीज़ो सोच कर देखो ज़रा,
मौत से बचता कोई देखा भला।
यह तो रहने का नहीं प्यारो मकां,
चल बसे सब अंबिया व आस्तां।
हां नहीं पाता कोई उस से निजात,
यूं ही बातें हैं बनाईं वाहियात।
क्यों तुम्हें इन्कार पर इसरार है,
है यह दीं या सीरते कुफ़्फ़ार है।
बर ख़िलाफ़े नस्स यह क्या जोश है,
सोच कर देखो अगर कुछ होश है।
क्यों बनाया इब्ने मरयम को ख़ुदा,
सुन्नतुल्लाह से वह क्यों बाहर रहा।
क्यों बनाया उसको बा शाने कबीर,
ग़ैब दानो ख़ालिक़ो हय्यो क़दीर।

मर गए सब पर वह मरने से बचा,
अब तलक आई नहीं उस पर फ़ना।
है वही अक्सर परिन्दों का ख़ुदा,
इस ख़ुदा दानी पै तेरे मरहबा।
मौलवी साहिब यही तौहीद है,
सच कहो किस देव की तक़्लीद है।
क्या यही तौहीदे हक़ का राज़ था,
जिस पै बरसों से तुम्हें इक नाज़ था।
क्या बशर में है ख़ुदाई का निशां,
अलअमान ऐसे गुमां से अलअमां।
है तअज्जुब आप के इस जोश पर,
फ़हम पर और अक़्ल पर और होश पर।
क्यों नज़र आता नहीं राहे सवाब,
पड़ गए कैसे ये आंखों पर हिजाब।
क्या यही तालीमे फ़ुर्क़ा है भला,
कुछ तो आख़िर चाहिए ख़ौफ़े ख़ुदा।
मोमिनों पर कुफ़्र का करना गुमां,
है यह क्या ईमानदारों का निशां।
हम तो रखते हैं मुसलमानों का दीं,
दिल से हैं ख़ुद्दामे ख़तमुल मुरसलीं।
शिर्क और विदअत से हम बेज़ार हैं,
ख़ाक राहे अहमदे मुख़्तार हैं।
सारे हुक्मों पर हमें ईमान है,
जानो-दिल इस राह पर क़ुरबान है।
दे चुके दिल अब तने ख़ाकी रहा,
है यही ख़्वाहिश कि हो वह भी फ़िदा।

तुम हमें देते हो काफ़िर का ख़िताब,
क्यों नहीं लोगो तुम्हें ख़ौफ़े इक़ाब।
सख़्त शोरे ऊफ़ताद अन्दर ज़मीं,
रहम कुन बर ख़ल्क़ ए जां आफ़रीं।
कुछ नमूना अपनी क़ुदरत का दिखा,
तुझ को सब क़ुदरत है ऐ रब्बुलवरा।

आमीन!

कुछ बैअतकर्ताओं का वर्णन और इस सिलसिले के सहयोगियों की चर्चा तथा यूरोप और अमरीका में इस्लाम को प्रसारित करने की योजना

मैं पुस्तक 'फ़त्ह इस्लाम' में एक सीमा तक लिख चुका हूं कि इस्लाम की कमज़ोरी, निर्धनता और अलग-थलग पड़ने के समय में ख़ुदा तआला ने मुझे अवतरित करके भेजा है ताकि मैं ऐसे समय में जब अधिकांश लोग बुद्धि के दुष्प्रयोग से पथ-भ्रष्टता के मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं तथा आध्यात्मिक बातों से अनुकूलता का संबंध बिल्कुल खो बैठे हैं इस्लामी शिक्षा का प्रकाश प्रकट करूं। मैं निश्चित रूप से जानता हूं कि अब वह युग आ गया है कि इस्लाम अपना वास्तविक रूप निकाल लाएगा और अपनी वह विशेषता प्रकट करेगा जिसकी ओर आयत

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ*

में संकेत है। अल्लाह की सुन्नत इसी प्रकार जारी है कि अध्यात्म ज्ञान और सूक्ष्म बातों के भण्डार उतने ही प्रकट किए जाते हैं जितनी उनकी आवश्यकता होती है। अत: यह युग एक ऐसा युग है कि उसने हज़ारों बौद्धिक विकारों को उन्नति देकर तथा असंख्य तार्किक सन्देहों को प्रकटन मंच पर लाकर स्वाभाविक तौर पर इस बात की मांग की है कि इन भ्रमों तथा आरोपों के निवारण के लिए क़ुर्आनी वास्तविकताओं और ज्ञानों का ख़ज़ाना खोला जाए। नि:सन्देह यह बात निश्चित तौर पर स्वीकार करनी होगी कि सच्चाई के समक्ष तर्क प्रिय लोगों के हृदयों में जितने मिथ्या भ्रम पैदा हुए है तथा बौद्धिक आरोपों का एक तूफ़ान मचा हुआ है जिसका उदाहरण पूर्व युगों में नहीं पाया जाता। अत: प्रारंभ से इस बात को भी कि उन

* अस्सफ्फ-10

आरोपों का क़ुर्आन द्वारा पर्याप्त तर्कों से पूर्णतया निवारण करके अपनी सही आस्थाओं को भुला चुके समस्त धर्मों पर श्रेष्ठता प्रकट कर दी जाए इसी युग पर छोड़ा गया था, क्योंकि ख़राबियों के प्रकट होने से पूर्व उन के सुधार का वर्णन यथोचित न था। इस कारण स्वच्छन्द नीतिवान ख़ुदा ने उन वास्तविकताओं और ज्ञानों को अपनी पवित्र वाणी (क़ुर्आन) में गुप्त रखा और किसी पर प्रकट न किया जब तक कि उनके प्रकट करने का समय न आ गया। हां उस समय की उसने पहले से अपनी प्रिय किताब में सूचना दे रखी थी, जो आयत

هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَہٗ بِالۡہُدٰی*

में साफ और स्पष्ट तौर पर लिखित है। अत: अब वही समय है और प्रत्येक व्यक्ति आध्यात्मिक प्रकाश का मुहताज हो रहा है। अत: ख़ुदा तआला ने इस प्रकाश को देकर संसार में एक व्यक्ति को भेजा। **वह कौन है? यही है** जो बोल रहा है। पुस्तक फ़त्ह इस्लाम में यह बात विस्तारपूर्वक वर्णन की गई है कि ऐसे महान कार्यों के लिए क़ौम के समृद्धिशाली लोगों की सहायता आवश्यक होती है तथा इस से अधिक और कौन सा बड़ा पाप होगा कि समस्त जाति देख रही है कि इस्लाम पर चारों ओर से आक्रमण हो रहे हैं और वह संक्रामक रोग फैल रहा है जो किसी आंख ने इससे पूर्व नहीं देखा था। ऐसी गंभीर परिस्थितियों में एक व्यक्ति ख़ुदा तआला की ओर से उठा और चाहता है कि इस्लाम का सुन्दर चेहरा समस्त संसार पर प्रकट करे तथा उस के मार्ग पश्चिमी देशों की ओर खोले, परन्तु जाति उसकी सहायता करने से पृथक है तथा कुधारणा तथा भौतिकवाद के मार्ग पर चलते हुए उन से पूर्णरूपेण संबंध-विच्छेद करके खामोश बैठी है। खेद की हमारी जाति में से अधिकतर लोगों ने कुधारणा रखते हुए प्रत्येक व्यक्ति को एक ही खाते छल-कपट में सम्मिलित कर दिया है और कोई ऐसा व्यक्ति जो आध्यात्मिक तत्परता और अपने अन्दर ईमानदारी का प्रभाव रखता हो। कदाचित् उनके निकट इसका अस्तित्व होना निषिद्ध है। उनमें बहुत से ऐसे हैं कि वे केवल सांसारिक जीवन की चिन्ताओं में व्यस्त हैं

* अस्सफ्फ-10

और उनकी दृष्टि में वे लोग अत्यन्त मूर्ख हैं जो कभी परलोक का नाम भी लेते हैं। कुछ ऐसे हैं जो धर्म में भी कुछ रुचि रखते हैं परन्तु केवल बाह्य रूप और धर्म की निराधार बातों में उलझे हुए हैं। वे नहीं जानते कि नबियों की शिक्षा का परमोद्देश्य क्या है और हमें क्या करना चाहिए जिस से हम अपने स्वामी की अनश्वर प्रसन्नता में सम्मिलित हो जाएं।

मेरे प्रिय मित्रो! मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मुझे ख़ुदा तआला ने आप लोगों की सहानुभूति के लिए सच्चा जोश प्रदान किया है और ख़ुदा को पहचानने का सच्चा ज्ञान आप लोगों के ईमान को बढ़ाने के लिए प्रदान किया गया है। उस ज्ञान की आपको और आपकी सन्तान को नितान्त आवश्यकता है। अत: मैं इसलिए तैयार खड़ा हूं कि आप लोग अपनी पवित्र धन-सम्पत्तियों में से अपने धार्मिक कार्यों के लिए सहायता दें तथा प्रत्येक व्यक्ति ख़ुदा तआला ने उसे जहां तक सामर्थ्य एवं शक्ति प्रदान की है इस बारे में संकोच न करे तथा अल्लाह और रसूल से अपने धन को प्रथमिकता न दे। फिर मैं जहां तक मेरे लिए संभव है पुस्तकों के द्वारा उन ज्ञानों और बरकतों को एशिया और यूरोपीय देशों में फैलाऊं जो ख़ुदा तआला की पवित्र रूह ने मुझे दी हैं। मुझ से पूछा गया था कि अमरीका और यूरोप में इस्लामी शिक्षा के प्रसार के लिए क्या करना चाहिए। क्या यह उचित है कि कुछ अंग्रेज़ी जानने वाले मुसलमानों में से यूरोप और अमरीका में जाएं तथा उपदेश और मुनादी के द्वारा उन लोगों पर इस्लाम के उद्देश्य प्रकट करें, परन्तु मैं सामान्यतया इसका उत्तर हां के साथ कभी नहीं दूंगा। मैं कदापि उचित नहीं समझता कि ऐसे लोग जो इस्लामी शिक्षा से पूर्ण रूप से परिचित नहीं तथा उसकी उच्च श्रेणी की विशेषताओं से पूर्णतया अनभिज्ञ तथा वर्तमान समय की आलोचनाओं के उत्तर दे सकने पर पूर्णरूप से पारंगत नहीं हैं और न जिब्राईल से शिक्षा पाने वाले हैं वे हमारी ओर से वकील होकर जाएं। मेरे विचार में ऐसी कार्यवाही की हानि उसके लाभ से अत्यधिक निकट तथा शीघ्र घटित हो जाने वाली है सिवाए इसके कि जो ख़ुदा चाहे। नि:सन्देह यह सत्य बात है कि यूरोप और अमरीका ने इस्लाम पर आरोपों का एक बड़ा भंडार पादरियों

से प्राप्त किया है और उनका दर्शनशास्त्र तथा भौतिकी भी आलोचना का एक पृथक भंडार रखते हैं। मैंने मालूम किया है कि वर्तमान युग में तीन हजार के लगभग वे विरोधी बातें पैदा की हैं जो इस्लाम के बारे में आरोप के रूप में समझी गई हैं हालांकि यदि मुसलमानों की लापरवाही कोई दुष्परिणाम पैदा न करे तो उन आरोपों का पैदा होना इस्लाम के लिए कोई भय की बात नहीं अपितु आवश्यक था कि वे पैदा होते ताकि इस्लाम अपने प्रत्येक पहलू से चमकता हुआ दिखाई देता, परन्तु उन आरोपों का पर्याप्त उत्तर देने के लिए किसी चुने हुए व्यक्ति की आवश्यकता है जो अपने विशाल सीने में अध्यात्म ज्ञान का एक सागर रखता हो जिसके ज्ञान को ख़ुदा तआला के इल्हामी वरदान ने बहुत विशाल और गहरा कर दिया हो। स्पष्ट है कि ऐसा कार्य उन लोगों से कब हो सकता है जिनकी दृष्टि रिवायती तौर पर भी व्याप्त नहीं और ऐसे प्रतिनिधि यदि यूरोप और अमरीका में जाएं तो किस कार्य को पूर्ण करेंगे तथा प्रस्तुत की गई कठिनाइयों का क्या समाधान करेंगे? संभव है कि उनके मूर्खतापूर्ण उत्तरों का विपरीत प्रभाव हो जिस से वह थोड़ी सी जिज्ञासा और रुचि जो वर्तमान समय में अमरीका और यूरोप के कुछ न्यायप्रिय हृदयों में पैदा हुई है जाती रहे और एक भारी पराजय और अकारण की लज्जा और विफलता के साथ वापस लौटें। अत: मेरा मशवरा यह है कि इन उपदेशों की बजाए उन देशों में उत्तम से उत्तम पुस्तकें भेजी जाएं। यदि जाति तन-मन से मेरी सहायता करे तो मैं चाहता हूं कि एक तफ़्सीर (व्याख्या) भी तैयार करके और अंग्रेज़ी में अनुवाद कराकर उनके पास भेजी जाए। मैं इस बात को स्पष्ट तौर पर वर्णन करने से रुक नहीं सकता कि यह मेरा कार्य है, दूसरे से कदापि ऐसा नहीं होगा जैसा मुझ से अथवा जैसा उस से जो मेरी शाखा है और मुझ में सम्मिलित है। हां मैं इतना पसन्द करता हूं कि इन पुस्तकों के वितरण के लिए या उन लोगों के विचारों तथा आरोपों को उन तक पहुंचाने के उद्देश्य से कुछ लोग उन देशों में भेजे जाएं जो इमामत और मौलवियत के दावे न करें अपितु स्पष्ट कर दें कि हम केवल इसलिए भेजे गए हैं ताकि पुस्तकों को वितरित करें और अपनी जानकारियों की सीमा तक समझाएं तथा कठिन और

सूक्ष्म बातों का समाधान उन इमामों से चाहें जो इस कार्य के लिए हिन्दुस्तान में मौजूद हैं।

इसमें कुछ सन्देह नहीं कि इस्लाम में सच्चाई का इतना प्रकाश चमक रहा है तथा उस की सच्चाई पर इतने प्रकाशमान तर्क विद्यमान हैं कि यदि उनकी ओर अन्वेषकों का ध्यान आकृष्ट कराया जाए तो निश्चय ही वे प्रत्येक बुद्धिमान के हृदय में घर कर जाएं, परन्तु खेद कि अभी वे तर्क आन्तरिक तौर पर भी अपनी कौम में प्रकाशित नहीं, कहां यह कि वे विरोधियों के विभिन्न सम्प्रदायों में प्रकाशित हों। अत: उन तर्कों, सच्चाइयों और ज्ञानों को प्रकाशित करने के लिए कौम की ओर से आर्थिक सहायता की आवश्यकता है। क्या क़ौम में **कोई है जो इस बात को सुने?**

जब से मैंने 'फ़तह इस्लाम' पुस्तक को लिखा है मेरा ध्यान सदैव इसी ओर लगा रहा कि मेरे इस प्रस्ताव के अनुसार जिसे मैंने चन्दा देने के लिए कथित पुस्तक में लिखा है हृदयों में गतिशीलता पैदा होगी। इसी विचार से मैंने उस पुस्तक की लगभग चार सौ प्रतियां मुफ़्त बांट भी दीं ताकि लोग उसका अध्ययन करें और अपने प्रिय धर्म की सहायता के लिए गुज़रने और छोड़ने योग्य धन-सम्पत्तियों में से कुछ हक़ निर्धारित करें। परन्तु खेद कि मेरे कुछ निष्कपट मित्रों के अतिरिक्त जिन की मैं शीघ्र ही चर्चा करूंगा किसी ने भी इस ओर ध्यान न दिया। मैं आश्चर्य चकित हूं कि किन शब्दों का प्रयोग करूं ताकि मेरी कौम पर वे प्रभावी हों। मैं सोचता हूं कि वह कौन सा भाषण है जिस से वे मेरे शोक से भरे हृदय की अवस्था को समझ सकें। हे सर्वशक्तिमान ख़ुदा इन के हृदयों में स्वयं इल्हाम कर तथा लापरवाही और कुधारणा की अत्युक्ति से इन्हें बाहर निकाल और सत्य का प्रकाश दिखा।

प्रिय सज्जनो! निश्चय ही समझो कि ख़ुदा है और वह अपने धर्म को विस्मृत नहीं करता अपितु अंधकार के युग में उसकी सहायता करता है। सामान्य हित के लिए एक को विशेष कर लेता है और उस पर अपने ज्ञानों के प्रकाश उतारता है। अत: उसी ने मुझे जगाया और सच्चाई के लिए मेरा हृदय खोल दिया, मेरे दैनिक जीवन का सन्तोष इसी में है कि मैं इसी कार्य में व्यस्त रहूं अपितु मैं इसके बिना

जीवित ही नहीं रह सकता कि मैं उसका और उसके रसूल का और उसकी वाणी (कलाम) का प्रताप प्रकट करूं। मुझे किसी के काफ़िर कहने की आशंका नहीं और न कुछ परवाह। मेरे लिए यह पर्याप्त है कि वह प्रसन्न हो जिसने मुझे भेजा है। हां मैं इसमें आनंद महसूस करता हूं कि उसने जो कुछ मुझ पर प्रकट किया वह मैं सब लोगों पर प्रकट करूं और यह मेरा कर्तव्य भी है कि जो कुछ मुझे दिया गया वह दूसरों को भी दूं और ख़ुदा की ओर निमंत्रण देने में उन सब को सम्मिलित कर लूं जो अनादि काल से बुलाए गए हैं। मैं इस उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए लगभग सब कुछ करने के लिए तत्पर हूं तथा भरसक परिश्रम के लिए मार्ग पर खड़ा हूं, परन्तु जो बात मेरे अधिकार में नहीं मैं शक्तिशाली ख़ुदा से अभिलाषी हूं कि वह उसे स्वयं पूर्ण करे। मैं देख रहा हूं कि एक परोक्ष का हाथ मेरी सहायता कर रहा है। यद्यपि में समस्त नश्वर मनुष्यों के समान निर्बल और कमज़ोर हूं तथापि मैं देखता हूं कि मुझे परोक्ष से शक्ति प्राप्त होती है और हार्दिक शोक को दबाने वाला एक धैर्य भी दिया जाता है तथा मैं जो कहता हूं कि इन ख़ुदा के कार्यों में कौम के हमदर्द सहायता करें अधीरता से नहीं अपितु केवल प्रत्यक्ष के अनुसार तथा साधनों को दृष्टिगत रखते हुए कहता हूं अन्यथा ख़ुदा तआला की कृपा पर मेरा हृदय सन्तुष्ट है। और आशा रखता हूं कि वह मेरी दुआओं को व्यर्थ नहीं करेगा, मेरे समस्त इरादे और आशाएं पूर्ण कर देगा। अब मैं उन निष्कपट सज्जनों के नाम लिखता हूं जिन्होंने यथा संभव मेरे धार्मिक कार्यों में सहायता दी अथवा जिन पर सहायता की आशा है या जिनको साधन उपलब्ध होने पर तत्पर देखता हूं।

(1) आदरणीय मौलवी हकीम नूरदीन साहिब भैरवी।

आदरणीय मौलवी साहिब के बारे में एक सीमा तक पुस्तक 'फ़तह इस्लाम' में उल्लेख कर चुका हूं परन्तु उनकी ताज़ा सहानुभूतियों ने मुझे पुन: इस समय चर्चा करने का अवसर प्रदान किया। उनके धन से मुझे जितनी सहायता प्राप्त हुई है मैं कोई ऐसा उदाहरण नहीं देखता जो उसकी तुलना में वर्णन कर सकूं। मैंने उन्हें स्वभाविक तौर पर नितान्त सहृदयता से धार्मिक सेवाओं में प्राण की बाज़ी लगाने

वाला पाया, यद्यपि उनका दैनिक जीवन इसी मार्ग में समर्पित है कि वह प्रत्येक पहलू से इस्लाम और मुसलमानों के सच्चे सेवक हैं परन्तु इस जमाअत के सहायकों में से वह प्रथम श्रेणी के निकले। आदरणीय मौलवी साहिब यद्यपि अपनी दानशीलता के कारण कविता के इस चरण के चरितार्थ हैं कि दानी के हाथ में रुपया नहीं ठहरता। परन्तु फिर भी उन्होंने बारह सौ रुपए नक़द विभिन्न आवश्यकताओं के समय इस सिलसिले की सहायता में दिए और अब बीस रुपए मासिक देना स्वयं पर अनिवार्य कर दिया तथा इसके अतिरिक्त इनकी और भी आर्थिक सेवाएं हैं जिनका सिलसिला अनेक रूपों में जारी है। मैं निश्चय ही देखता हूं कि जब तक वह संबंध पैदा न हो जो प्रेमी को अपने प्रियतम से होता है तब तक हृदय का ऐसा विकसित हो जाना संभव नहीं हो सकता। इन्हें ख़ुदा तआला ने अपने दृढ़ हाथ से अपनी ओर खींच लिया है और उच्च शक्ति ने उन पर अद्भुत प्रभाव किया (डाला) है। उन्होंने ऐसे समय में मुझे नि:संकोच स्वीकार किया जब चारों ओर से कुफ्र के फ़त्वों की आवाज़ें बुलन्द होने को थीं और अधिकतर लोगों ने बैअत करने के बावजूद बैअत का वचन भंग कर दिया था और अधिकांश लोग दुविधा का शिकार हो गए थे, तब सर्वप्रथम आदरणीय मौलवी साहिब का ही पत्र इस विनीत के इस दावे के सत्यापन में कि मैं ही मसीह मौऊद हूं क़ादियान में मेरे पास पहुंचा जिसमें ये वाक्य लिखे हुए थे :-

اٰمنّا و صدقنا فا کتبنا مع الشّاھِدین

आदरणीय मौलवी साहिब की आस्था और उच्च श्रेणी की ईमानी शक्ति का एक यह भी नमूना है कि जम्मू रियासत के एक जल्से में मौलवी साहिब का एक डाक्टर साहिब से जिन का नाम जगन्नाथ है। इस विनीत के बारे में कुछ चर्चा होने के पश्चात् मौलवी साहिब ने बड़े साहस और दृढ़ता के साथ यह दावा प्रस्तुत किया कि ख़ुदा तआला उनके अर्थात् इस विनीत के हाथ पर कोई आसमानी निशान दिखाने पर समर्थ है। फिर डाक्टर साहिब के इन्कार पर मौलवी साहिब ने रियासत के बड़े-बड़े सदस्यों की सभा में यह शर्त स्वीकार की कि यदि वह अर्थात् यह विनीत दोनों

पक्षों द्वारा निर्धारित समय सीमा पर कोई आसमानी निशान न दिखा सके तो मौलवी साहिब डाक्टर साहिब को पांच हज़ार रुपए बतौर जुर्माना देंगे और डाक्टर साहिब की ओर से यह शर्त हुई कि यदि उन्होंने कोई निशान देख लिया तो अविलम्ब मुसलमान हो जाएंगे और इन लिखित इक़रारों पर निम्नलिखित गवाहियां अंकित हुईं :-

ग़ुलाम मुहियुद्दीन खान बहादुर जनरल मेम्बर कौंसिल रियासत जम्मू
सिराजुद्दीन अहमद सुप्रिन्टेन्डेन्ट व अफसर डाकखाना विभाग रियासत जम्मू
सरकार सिंह सेकेट्री राजा अमर सिंह साहिब बहादुर प्रेसीडेन्ट कौंसिल

परन्तु खेद कि डाक्टर साहिब अस्वीकारणीय चमत्कारी रूपों को प्रस्तुत करके एक नीति से अवहेलना कर गए। अत: उन्होंने एक आकाशीय निशान मांगा कि कोई मृत पक्षी जीवित कर दिया जाए हालांकि वे भली भांति जानते होंगे कि यह हमारे सिद्धान्तों के विपरीत है। हमारा भी सिद्धान्त है कि मुर्दों को जीवित करना ख़ुदा तआला की आदत नहीं। वह स्वयं फ़रमाता है :-

وَ حَرٰمٌ عَلٰی قَرۡیَۃٍ اَهۡلَکۡنٰهَاۤ اَنَّهُمۡ لَا یَرۡجِعُوۡنَ*

अर्थात् हमने यह अनिवार्य कर दिया कि जो मर गए वे पुन: संसार में नहीं आएंगे। मैंने डाक्टर साहिब से यह कहा था कि अपनी ओर से आकाशीय निशान का कोई निर्धारण आवश्यक नहीं अपितु जो बात मानव-शक्तियों से श्रेष्ठतम सिद्ध हो, चाहे वह कोई बात हो उसी को आकाशीय निशान समझ लेना चाहिए और यदि उसमें सन्देह हो तो इसकी तुलना में ऐसी ही कोई अन्य बात प्रदर्शित करके यह सबूत देना चाहिए कि वह बात ख़ुदाई क़ुदरतों से विशेष्य नहीं, परन्तु डाक्टर साहिब इस से किनारा कर गए और मौलवी साहिब ने यह दृढ़ता दिखाई जो मौलवी साहिब की ईमानी श्रेष्ठता पर एक शक्तिशाली सबूत है। हृदय में सामर्थ्य भर अभिलाषा है कि और लोग भी मौलवी साहिब के आदर्श पर चलें। मौलवी साहिब पहले सत्यनिष्ठों का एक नमूना हैं अल्लाह उन सब को अच्छा प्रतिफल प्रदान करे इस लोक और

* अलअंबिया- 96

परलोक में उनसे सदव्यवहार करे।

(2) आदरणीय हकीम **फ़ज़्लदीन साहिब भैरवी** बिरादरम हकीम नूरदीन साहिब के मित्रों में से और उनकी निष्कपटता के रंग से रंगीन और बहुत निष्कपट व्यक्ति हैं। मैं जानता हूं कि उन्हें अल्लाह और रसूल से सच्चा प्रेम है और इसी काराण वह इस ख़ाकसार को धर्म-सेवक देख कर जब ख़ुदा के लिए किसी शर्त का पालन कर रहे हैं, मालूम होता है कि उन्हें सच्चे धर्म की सच्चाई फैलाने में उसी प्रेम का अत्यधिक भाग प्राप्त हुआ है जो अनादि वितरण से मेरे प्रिय भाई मौलवी हकीम नूरदीन साहिब को दिया गया है। वह इस सिलसिले के धार्मिक खर्चों को ध्यानपूर्वक देखकर हमेशा इस चिन्ता में रहते हैं कि चन्दे के रूप में उनका कोई उचित प्रबन्ध हो जाए। अत: पुस्तक 'फ़तह इस्लाम' में जिसमें धार्मिक ख़र्चों की पांच शाखाओं का वर्णन है उन्हीं की प्रेरणा और परामर्श से लिखा गया था। उनका विवेक नितान्त उचित है और वह बात की तह तक पहुंचते हैं तथा उनका विचार दूषित भ्रमों से शुद्ध और पवित्र है। पुस्तक 'इज़ाला औहाम' के प्रकाशन के दिनों में उनकी ओर से दो सौ रुपया पहुंचा तथा उनके घर के लोग भी उनकी इस निष्कपटता से प्रभावित हैं और वे भी अपने कई आभूषण इस मार्ग में मात्र ख़ुदा के लिए ख़र्च कर चुके हैं। आदरणीय हकीम साहिब ने इन समस्त सेवाओं के बावजूद जो उनकी ओर से होती रहती हैं विशेष तौर पर इस सिलसिले के समर्थन में पांच रुपये मासिक देना निर्धारित किया है। अल्लाह तआला उन्हें अच्छा प्रतिफल प्रदान करे तथा इस लोक और परलोक में उत्तम व्यवहार करे।

(3) आदरणीय **अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी** - मौलवी साहिब इस ख़ाकसार के एक रंग मित्र हैं तथा मुझ से सच्चा और जीवित प्रेम रखते हैं तथा उन्होंने अपने प्रिय समय का अधिकांश भाग धर्म के समर्थन के लिए समर्पित कर रखा है, उनके वर्णन में एक प्रभावकारी जोश है। निष्कपटता की बरकत और प्रकाश उनके चेहरे से प्रकट है, मेरी शिक्षा की अधिकांश बातों से वह सहमत हैं, परन्तु मेरे विचार में है कि कदाचित् कुछ से नहीं, परन्तु बिरादरम मौलवी हकीम

नूरदीन साहिब की संगत के प्रकाशों ने उनके हृदय पर बहुत सा आभामय प्रभाव डाला है और नेचरियत की अधिकांश नीरस बातों से वे खिन्न हो जाते हैं और वास्तव में मैं भी इस बात को पसन्द नहीं करता कि ख़ुदा की किताब के निश्चित और सच्चे उद्देश्य के विपरीत नेचर के ऐसे अधीन हो जाएं कि जैसे हमारा पूर्ण पथ-प्रदर्शक वही है। मैं नेचरियत के ऐसे भाग को स्वीकार करता हूं जिसे मैं देखता हूं कि मेरे स्वामी और मार्ग-दर्शक ने अपनी किताब पवित्र क़ुर्आन में उसे स्वीकार कर लिया है और ख़ुदा की सुन्नत के नाम से याद किया है मैं अपने ख़ुदा को पूर्ण तौर पर सर्वशक्तिमान समझता हूं और इसी बात पर ईमान ला चुका हूं कि वह चाहता है कर दिखाता है और इसी ईमान की बरकत से मेरी मारिफ़त बढ़ोतरी में है और प्रेम उन्नति में। मुझे बच्चों का ईमान पसन्द आता है तथा दार्शनिकों के घिसे-पिटे ईमान से मैं घृणा करता हूं। मुझे विश्वास है कि मौलवी साहिब अपने प्रेम की पवित्र भावनाओं के कारण आचार-विचार में समानता में और भी प्रगति करेंगे तथा अपनी कुछ जानकारियों में पुन: विचार करेंगे।

(4) आदरणीय मौलवी **ग़ुलाम क़ादिर साहिब फ़सीह** - युवा, सदाचारी सुन्दर तथा इस ख़ाकसार की बैअत में सम्मिलित हैं, साहसी, इस्लाम के हमदर्द हैं 'क़ौले फ़सीह' जो मौलवी अब्दुल करीम साहिब की किताब है उसी साहसी पुरुष ने अपने ख़र्च से प्रकाशित की तथा मुफ़्त बांटी, नवीन शैली के अनुसार बहुत उत्तम वर्णन-शक्ति रखते हैं। अब उनकी ओर से एक मासिक पत्रिका निकलने वाली है जिसका नाम 'अलहक़' होगा। यह पत्रिका मात्र इस उद्देश्य से जारी की जाएगी ताकि इसमें भिन्न-भिन्न समयों में उन विरोधियों का उत्तर दिया जाए जो इस्लाम धर्म पर प्रहार करते हैं। ख़ुदा तआला इस कार्य में उनकी सहायता करे।

(5) **सय्यद हामिद शाह साहिब सियालकोटी** - यह सय्यद साहिब सच्चे प्रेमी तथा इस ख़ाकसार के एक नितान्त निष्कपट मित्र के बेटे हैं। अल्लाह तआला ने काव्य में जितनी वर्णन करने की शक्ति प्रदान की है वह 'क़ौले फसीह' पत्रिका देखने से प्रकट होगी। मीर हामिद शाह के चेहरे से श्रद्धा, निष्कपटता और प्रेम के

लक्षण प्रकट हैं। मैं आशा रखता हूं कि वह इस्लाम के समर्थन में अपनी पद्य और गद्य द्वारा उत्तम से उत्तम सेवाएं करेंगे, उनकी जोश से परिपूर्ण निष्कपटता और उनका पवित्र प्रेम जिस सीमा तक मुझे मालूम होता है मैं उसका अनुमान नहीं लगा सकता। मुझे नितान्त प्रसन्नता है कि वह मेरे पुराने मित्र मीर हिसामुद्दीन साहिब रईस सियालकोट के सुपुत्र हैं।

(6) **आदरणीय मौलवी सय्यद मुहम्मद अहसन साहिब अमरोही** व्यय प्रबंधक रियासत भोपाल। आदरणीय मौलवी साहिब इस ख़ाकसार से बड़ी उच्चस्तर की निष्कपटता, प्रेम तथा आध्यात्मिक संबंध रखते हैं उनकी पुस्तकों को देखने से मालूम होता है कि वह एक उच्च श्रेणी की योग्यता रखने वाले व्यक्ति तथा अरबी ज्ञानों में प्रकाण्ड हैं विशेषकर हदीस के ज्ञान में उनकी दृष्टि नितान्त व्यापक और गहरी मालूम होती है। अभी उन्होंने इस ख़ाकसार के दावे के समर्थन में 'ऐलामुन्नास' नामक एक पत्रिका में पूर्ण गंभीरता तथा उत्तम शैली में लिखा है पाठक जिसे पढ़कर समझ लेंगे कि आदरणीय मौलवी साहिब धार्मिक विद्याओं में कितने अन्वेषक, सूक्ष्मदर्शी और अनुभव सम्पन्न व्यक्ति हैं, उन्होंने नितान्त खोज और मृदुल भाषा शैली से अपनी पत्रिका में कई प्रकार के आध्यात्म ज्ञान भर दिए हैं। पाठक उसे अवश्य देखें।

(7) **आदरणीय मौलवी अब्दुल ग़नी साहिब** मौलवी ग़ुलाम ख़ुशाबी के नाम से प्रसिद्ध दूरदर्शी और मर्मज्ञ हैं और उनके सीने में अरबी ज्ञान नूतन और ताज़ा विद्यमान हैं। प्रारंभ में आदरणीय मौलवी साहिब कट्टर विरोधी थे। जब उन्हें इस बात की सूचना पहुंची कि यह ख़ाकसार मसीह मौऊद होने का दावा कर रहा है और मसीह इब्ने मरयम को मृत्यु प्राप्त मानने वाला है तो मौलवी साहिब में पुराने विचारों की भावना से एक उत्तेजना पैदा हुई और एक सार्वजनिक विज्ञापन दिया कि जुमे की नमाज़ के पश्चात इस व्यक्ति के खण्डन में हम उपदेश देंगे। लुधियाना शहर के सैकड़ों लोग उपदेश के समय उपस्थित हो गए। तब मौलवी साहिब अपनी ज्ञानपूर्ण उत्तेजना से लोगों पर बुख़ारी और मुस्लिम की हदीसें वर्षा की भांति बरसाने

लगे और हदीस की छः मान्य पुस्तकों का नक्शा पुरानी परम्परानुसार सामने रख दिया। उनके उपदेश से सम्पूर्ण शहर में विरोध के जोश की लहर फैल गई क्योंकि उनके ज्ञान की प्रकाण्डता और श्रेष्ठता हृदयों में मान्य थी। अन्ततः अनादि सौभाग्य खींचते हुए उन्हें इस ख़ाकसार के पास ले आया और विरोधी विचारों से पश्चाताप करके सिलसिले की बैअत में सम्मिलित हुए। अब उनके पुराने मित्र उनसे बहुत नाराज़ हैं परन्तु वह नितान्त दृढ़तापूर्वक इस शे'र के भाव का जप कर रहे हैं -

हज़रते नासिह जो आवें दीदा-ओ-दिल फ़र्शेराह
पर कोई मुझको तो समझावे कि समझावेंगे क्या

(8) हुब्बी फ़िल्लाह आदरणीय **नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब रईस ख़ानदान रियासत मालेरकोटला** यह नवाब साहिब एक सम्मानित ख़ानदान के प्रसिद्ध रईस हैं। आदरणीय नवाब साहिब के वंश-प्रवर्तक शैख 'सद्र जहान' एक ख़ुदा वाले बुज़ुर्ग थे जो जलालाबाद के मूल निवासी सरवानी क़ौम के पठान थे। सन् 1469 ई. में बहलोल लोधी के शासनकाल में अपने देश से इस देश में आए। समय के बादशाह की उन से इतनी श्रद्धा हो गई कि कथित सज्जन से अपनी बेटी का निकाह कर दिया और कुछ गांव जागीर में दे दिए। अतः एक गांव के स्थान में शैख साहिब ने यह कस्बा आबाद किया जिसका नाम **मालेर** है। शैख साहिब के बायज़ीद ख़ान नामक पोते ने मालेर से संलग्न क़स्बे कोटला को लगभग 1573 ई. में आबाद किया जिसके नाम से अब यह रियासत प्रसिद्ध है। बायज़ीद ख़ान के पांच बेटों में से एक का नाम फ़ीरोज़ ख़ान था और फ़ीरोज़ख़ान के बेटे का नाम शेर मुहम्मद ख़ान और शेर मुहम्मद ख़ान के बेटे का नाम जमाल ख़ान था। जमाल ख़ान के पांच बेटे थे परन्तु उनमें से केवल दो बेटे थे जिनकी नस्ल शेष रही अर्थात् बहादुर खान और अताउल्लाह ख़ान। बहादुर ख़ान की नस्ल में से यह नेक युवा सुपुत्र स्वर्गीय नवाब **ग़ुलाम मुहम्मद ख़ान साहिब** है जिसके पते में हमने नाम लिखा है ख़ुदा तआला उसे ईमानी बातों में बहादुर करे और अपने पूर्वज महान बुज़ुर्ग सद्र जहान के रूप में लाए। सरदार मुहम्मद अली ख़ान साहिब ने

अंग्रेज़ी सरकार की कृपा और महरबानी से एक सभ्यता प्रदान करने वाली शिक्षा प्राप्त की। उनकी मानसिक और हार्दिक शक्तियों पर विशेष प्रभाव प्रकट है, उनकी ईश्वर प्रदत्त (ख़ुदादाद) प्रकृति बहुत सौम्य और संतुलित है और बिल्कुल युवावस्था के बावजूद उनमें किसी प्रकार की उग्रता, तीव्रता तथा काम-भावनाएं आई प्रतीत नहीं होतीं। क़ादियान में जब वह मुझ से मिलने आए और कई दिन रहे, मैं गुप्त दृष्टि से देखता रहा हूं कि नमाज़ की नियमानुसार पाबन्दी का बहुत ध्यान है तथा वलियों की भांति ध्यान और लगन से नमाज़ पढ़ते हैं, तथा घृणित बातों तथा शरीअत द्वारा प्रतिबंधित बातों से पूर्णतया पृथक हैं। मुझे ऐसे व्यक्ति के सौभाग्य पर गर्व है जिसका ऐसा सदाचारी पुत्र हो कि भोग विलास के समस्त संसाधनों की उपलब्धता के बावजूद अपनी चढ़ती जवानी में ऐसा संयमी हो। ऐसा ज्ञात होता है कि उन्होंने ख़ुदा की दी हुई सामर्थ्य से अपने सुधार पर स्वयं बल देकर रईसों के अनुचित कार्य-कलापों तथा चरित्रों से घृणा पैदा कर ली है और न केवल इतना ही अपितु जो कुछ अनुचित विचारधारा, भ्रम और निराधार विदअतें शिया मत में मिलाई गई हैं और जितना सभ्यता, योग्यता और आन्तरिक पवित्रता के विपरीत उनका अमल है इन सब बातों से भी अपने हार्दिक प्रकाश द्वारा निर्णय करके उन्होंने पृथकता धारण कर ली है। वह मुझे अपने एक पत्र में लिखते हैं कि प्रारंभ में यद्यपि मैं आप के बारे में सुधारणा ही रखता था परन्तु मात्र इतनी कि आप अन्य धर्माचार्यों और भौतिकवादी मौलवियों की भांति मुसलमानों की फूट के समर्थक नहीं हैं अपितु इस्लाम विरोधियों के मुकाबले पर खड़े हैं परन्तु इल्हामों के बारे में मुझे न इक़रार था न इन्कार। अत: जब मैं पापों से बहुत व्याकुल हुआ और उन पर विजयी न हो सका तो मैंने सोचा कि आप ने बड़े-बड़े दावे किए हैं ये सब झूठे नहीं हो सकते तब मैंने बतौर परीक्षा आप की ओर पत्र-व्यवहार आरंभ किया जिस से मुझे सन्तुष्टि प्राप्त होती रही और जब लगभग अगस्त में आप से लुधियाना में भेंट करने गया तो उस समय मुझे नितान्त सन्तोष प्राप्त हुआ और आपको वलियों के समान पाया और सन्देहों का शेष बाद के पत्राचार में मेरे हृदय

से पूर्णतया धोया गया और जब मुझे यह सांत्वना दी गई कि एक ऐसा शिया जो तीनों ख़लीफ़ाओं का अपमान न करे बैअत के सिलसिले में प्रवेश कर सकता है तब मैंने आप से बैअत कर ली। मैं स्वयं को तुलनात्मक रूप में बहुत अच्छा पाता हूं और आप साक्षी रहें कि मैंने भविष्य के लिए अपने समस्त पापों से पश्चाताप कर लिया है, मुझे आप के शिष्टाचार और जीवन शैली से पर्याप्त सन्तोष है कि आप एक सच्चे मुजद्दिद और संसार के लिए रहमत (दया का रूप) हैं।

(9) आदरणीय **मीर अब्बास अली लुधियानवी** यह मेरे वह प्रथम मित्र हैं जिनके हृदय में ख़ुदा तआला ने सर्वप्रथम मेरा प्रेम डाला और जो सब से पहले यात्रा का कष्ट उठा कर वलियों और सदात्माओं के मार्ग पर नंगे पांव मात्र ख़ुदा की प्रसन्नता के लिए मुझसे मिलने के लिए क़ादियान आए। यह वही बुज़ुर्ग हैं। मैं इस बात को कभी नहीं भूल सकता कि इन्होंने बड़े सच्चे जोशों के साथ वफ़ादारी दिखाई और मेरे लिए हर प्रकार के कष्ट सहन किए और कौम के मुख से नाना प्रकार की बातें सुनीं। मीर साहिब नितान्त उत्तम परिस्थितियों के व्यक्ति तथा इस ख़ाकसार से आध्यात्मिक संबंध रखने वाले हैं, इन की निष्कपट भावना को सिद्ध करने के लिए यह पर्याप्त है कि एक बार इस ख़ाकसार को इन के बारे में इल्हाम हुआ था -

اَصْلُهٗ ثَابِتٌ وَفَرْعُهٗ فِی السَّمَآءِ

वह इस यात्री-निवास में मात्र ख़ुदा पर भरोसा रखते हुए जीवन व्यतीत करते हैं, अपने प्रारंभिक दिनों में वह बीस वर्ष तक अंग्रेज़ी आफ़िस में सरकारी कर्मचारी रहे, परन्तु निर्धनता और फ़क़ीरी के कारण उनके चेहरे पर दृष्टि डालने से कदापि विचार नहीं आता कि अंग्रेज़ी भी जानते हैं परन्तु वह बड़े योग्य, दृढ़ स्वभाव और दूरदर्शी हैं परन्तु इसके बावजूद बहुत सादा व्यक्ति हैं इसी कारण कुछ भ्रमित करने वालों के भ्रम उनके हृदय को चिन्ता ग्रस्त कर देते हैं परन्तु उनके ईमान की शक्ति उन्हें शीघ्र ही दूर कर देती है।

(10) आदरणीय **स्वर्गीय मुन्शी अहमद जान साहिब** - इस समय एक नितान्त शोकग्रस्त हृदय के साथ मुझे यह कष्ट प्रद वृत्तान्त लिखना पड़ा कि अब यह हमारा

प्रिय मित्र इस संसार में मौजूद नहीं है तथा दयालु और कृपालु ख़ुदा ने उसे उच्चतम स्वर्ग की ओर बुला लिया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन व इन्ना बिफ़िराक़िही लमहज़ूनून। स्वर्गीय हाजी साहिब एक बहुत बड़ी जमाअत के पेशवा थे और उनके शिष्यों में हिदायत, सौभाग्य तथा सुन्नत के अनुसरण के लक्षण प्रकट हैं यद्यपि कथित हज़रत प्रारंभ में इस ख़ाकसार के सिलसिला-ए-बैअत से पूर्व ही मृत्यु को प्राप्त हो चुके, परन्तु यह बात उनके अद्भुत चमत्कारों में से देखता हूं कि उन्होंने बैतुल्लाह के इरादे से कुछ दिन पूर्व इस ख़ाकसार को एक पत्र ऐसी विनम्रता के साथ लिखा जिसमें उन्होंने स्वयं को अपने हृदय में बैअत के सिलसिले में सम्मिलित कर लिया। अत: उन्होंने उसमें सदात्माओं के आचरण पर अपने पश्चाताप को प्रकट किया तथा अपनी क्षमा के लिए दुआ चाही और लिखा कि मैं स्वयं को आपके ख़ुदाई संबंध की छत्र-छाया में समझता हूं और फिर लिखा कि मेरे जीवन का नितान्त उत्तम भाग यही है कि मैं आपकी जमाअत में प्रवेश कर गया हूं फिर विनयपूर्वक अपने बीते हुए दिनों की शिकायत लिखी तथा बहुत से आर्द्रतापूर्ण ऐसे वाक्य लिखे जिन से रोना आता था। उस मित्र का वह अन्तिम पत्र जो एक पीड़ादायक वर्णन से भरा है अब तक मौजूद है, परन्तु खेद कि हज से वापस आते समय उस बुज़ुर्ग पर रोग का ऐसा प्रहार हुआ कि उस कोसों दूर पड़े बुज़ुर्ग को भेंट का संयोग प्राप्त न हुआ अपितु कुछ ही दिन पश्चात निधन की सूचना सुनी गई और सूचना सुनते ही एक जमाअत के साथ क़ादियान में नमाज़ जनाज़ा पढ़ी गई। स्वर्गीय हाजी साहिब सत्य को प्रकट करने में एक बहादुर पुरुष थे। कुछ मोटी बुद्धि वालों ने आदरणीय हाजी साहिब को इस ख़ाकसार के साथ श्रद्धापूर्वक संबंध रखने से रोका कि इसमें आपकी मान-हानि है परन्तु उन्होंने कहा कि मुझे किसी मान-सम्मान की परवाह नही और न शिष्यों की आवश्यकता। आप के बड़े सुपुत्र हाजी इफ़्तिख़ार अहमद साहिब आपके पद-चिन्हों पर इस ख़ाकसार से असीम श्रेणी की निष्ठा रखते हैं तथा सच्चाई नेकी और संयम के लक्षण उनके चेहरे पर प्रकट हैं, वह ख़ुदा के भरोसे गुज़ारा करने के बावजूद प्रथम श्रेणी की सेवा करते हैं तथा तन-मन के साथ इस मार्ग में उपस्थित हैं। ख़ुदा तआला

उन्हें प्रत्यक्ष और आन्तरिक बरकतों से लाभान्वित करे।

(11) आदरणीय **क़ाज़ी ख़्वाजा अली साहिब** - क़ाज़ी साहिब इस ख़ाकसार के विशेष मित्रों में से हैं। प्रेम, निष्कपटता, वफ़ा, निष्ठा और श्रद्धा के लक्षण उन के चेहरे पर प्रकट हैं, सेवा करने में हर पल प्रयासरत हैं और उन प्राथमिक अग्रसर होने वालों में से हैं जिनमें से बिरादरम मीर अब्बास अली साहिब हैं। वह हमेशा सेवा में तत्पर रहते हैं और लुधियाना में निवास के दिनों में जो छः छः माह तक भी संयोग होता है। अतिथि सत्कार का एक बड़ा भाग वह प्रसन्नतापूर्वक अपने ज़िम्मे ले लेते हैं और जहां तक उन की सामर्थ्य है वह सहानुभूति और सेवा तथा प्रत्येक प्रकार की हमदर्दी में कोई कमी नहीं करते और यद्यपि वह पूर्व से ही निष्कपट और शुद्ध हृदय व्यक्ति हैं परन्तु मैं देखता हूं कि वह अत्यधिक निकट खींचे गए हैं तथा मैं विचार करता हूं कि सत्य का प्रकाश एक निस्स्वार्थ निष्ठा और ख़ुदा के लिए प्रेम में उन्हें प्रतिक्षण उन्नति प्रदान कर रहा है और मुझे विदित होता है कि वह इस उन्नति और उत्थानों के कारण अपनी सुधारणा संबंधी परिस्थितियों में अधिकाधिक पवित्रता प्राप्त करते जाते हैं तथा आध्यात्मिक कमियों पर विजयी होते जाते हैं। मेरा हृदय उनके संबंध में यह भी साक्ष्य देता है कि वह सांसारिक दृष्टि से एक उचित और बारीक विवेक रखते हैं और ख़ुदा तआला की कृपा ने इस ख़ाकसार की आध्यात्मिक पहचान का भी एक महत्वपूर्ण भाग उन्हें प्रदान किया है तथा श्रद्धा के नियमों में वह शुद्धता प्राप्त करते जाते हैं तथा उनका पग आरोपों की कमी और सुधारणा की ओर अग्रसर होता जाता है। मेरे विचार में वे उन पड़ावों को तय कर चुके हैं जिनमें किसी भयंकर भूल की संभावना है।

(12) आदरणीय **मिर्ज़ा मुहम्मद यूसुफ़ बेग साहिब सामानवी** - मिर्ज़ा साहिब स्वर्गीय मिर्ज़ा अज़ीम बेग साहिब के सगे भाई हैं जिनका हाल पुस्तक 'फ़त्ह इस्लाम' में लिखा गया है और वे समस्त शब्द और निष्कपटताएं जो मैंने स्वर्गीय बिरादरम मिर्ज़ा अज़ीम बेग साहिब के बारे में 'फ़त्ह इस्लाम' में लिखी हैं उन सब के चरितार्थ मिर्ज़ा मुहम्मद यूसुफ बेग साहिब भी हैं। इन दोनों महान भाइयों के

सन्दर्भ में मैं सदैव असमंजस में रहा कि शिष्टाचार और प्रेम रूपी मैदानों में किसको अधिक कहूं। आदरणीय मिर्ज़ा साहिब ख़ाकसार से एक उच्च श्रेणी का प्रेम, उच्च स्तर की निष्कपटता तथा उच्च श्रेणी की सुधारणा रखते हैं और मेरे पास वे शब्द नहीं जिनके माध्यम से मैं उनकी निष्ठागत श्रेणियों का वर्णन कर सकूं। यह पर्याप्त है कि मैं सांकेतिक तौर पर इतना ही कहूं कि **वह ऐसा व्यक्ति है जो हम से प्रेम करता है और हम उस से प्रेम करते हैं तथा हम लोक-परलोक में ख़ुदा से उसकी भलाई चाहते हैं।** मिर्ज़ा साहिब ने अपनी जीभ, अपना धन और अपना सम्मान इस ख़ुदाई प्रेम में समर्पित कर रखे हैं तथा उनकी शिष्यता और प्रेम रूपी श्रद्धा इस सीमा तक बढ़ी हुई है कि अब उन्नति के लिए कोई श्रेणी शेष मालूम नहीं होती, और यह ख़ुदा की अनुकम्पा है जिसे चाहता है प्रदान करता है।

(13) आदरणीय **मियां अब्दुल्लाह सिन्नौरी** - यह युवा सदाचारी अपनी स्वाभाविक अनुकूलता के कारण मेरी ओर खींचा गया है। मैं विश्वास रखता हूं कि वह उन वफ़ादार मित्रों में से है जिन्हें कोई परीक्षा विचलित नहीं कर सकती। वह भिन्न-भिन्न समयों में दो-दो तीन-तीन माह तक अपितु अधिक भी मेरी संगत में रहा और मैं हमेशा उसकी आन्तरिक अवस्था पर गहरी दृष्टि डालता रहा हूं। अत: मेरे विवेक ने उस के मर्म तक पहुंचने से जो कुछ मालूम किया वह यह है कि यह युवा वास्तव में अल्लाह और रसूल के प्रेम में एक विशेष जोश रखता है तथा मेरे साथ इतने अधिक प्रेम संबंध का इसके अतिरिक्त कोई कारण नहीं कि उसके हृदय में विश्वास हो गया है कि यह मनुष्य ख़ुदा और रसूल के प्रेमियों में से है तथा इस युवा ने कुछ अद्भुत चमत्कार और आकाशीय निशान जो इस ख़ाकसार को ख़ुदा की ओर से मिले चश्मदीद देखे हैं, जिनके कारण उसके ईमान को बहुत लाभ पहुंचा। अत: मियां अब्दुल्लाह नितान्त उत्तम व्यक्ति तथा मेरे विशेष प्रेमियों में से हैं और अपनी पटवारगीरी के अल्प वेतन के बावजूद अपनी सामर्थ्यानुसार अपनी आर्थिक सेवा में भी हमेशा तत्पर हैं और अब भी बारह रुपये वार्षिक चन्दे के तौर पर निर्धारित कर दिया है। मियां अब्दुल्लाह की निष्ठा, प्रेम और श्रद्धा की अधिकता का

सब से प्रमुख कारण यह है कि वह अपना ख़र्च करके भी एक लम्बे समय तक आकर मेरी संगत में रहता रहा और कुछ ख़ुदाई निशानों को देखता रहा। अत: इस प्रयोजन से आध्यात्मिक बातों में उन्नति पा गया। क्या ही अच्छा हो कि मेरे अन्य निष्ठावान भी इस स्वभाव का अनुसरण करें।

(14) आदरणीय **मौलवी हकीम ग़ुलाम अहमद साहिब** - रियासत जम्मू के इंजीनियर आदरणीय मौलवी साहिब नितान्त सरल स्वभाव, एकरूप, शुद्ध अंत:करण रखने वाले मित्र हैं तथा उनका हृदय प्रेम और श्रद्धा के इत्र से सुगंधित है, धार्मिक सहायताओं में पूरी-पूरी श्रद्धा से उपस्थित हैं। मौलवी साहिब अधिकांश कला-कौशलों में पूर्ण दक्षता रखते हैं तथा उनके चेहरे पर दृढ़ता और बहादुरी के प्रकाश पाए जाते हैं। उन्होंने इस सिलसिले के चन्दे में अपनी इच्छा से दो रुपया मासिक निर्धारित किया है। ख़ुदा उन्हें उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

(15) आदरणीय **सय्यद फ़ज़्लशाह साहिब लाहौरी** - रियासत जम्मू के मूल निवासी। नितान्त शुद्ध हृदय, प्रेम और निष्ठा से परिपूर्ण तथा पूर्ण विश्वास के प्रकाश से प्रकाशमान हैं, तन-मन से तत्पर हैं तथा आदर और सुधारणा जो इस मार्ग की अनिवार्यता है उनमें एक अद्‌भुत विनम्रता के साथ पाई जाती है, वह इस ख़ाकसार से हार्दिक तौर पर सच्ची, पवित्र और पूर्ण श्रद्धा रखते हैं तथा उन्हें ख़ुदाई संबंध और प्रेम में उच्च श्रेणी प्राप्त है तथा उनमें एकरूपता और वफ़ादारी की विशेषताएं स्पष्ट तौर पर प्रकट हैं तथा उनके सगे भाई नस्र शाह भी इस ख़ाकसार की बैअत में सम्मिलित हैं और उनके मामा मुन्शी करम इलाही साहिब भी इस ख़ाकसार के एकरूप मित्र हैं।

(16) आदरणीय **मुन्शी मुहम्मद अरोड़ा** ड्राफ़्ट्स मैन मजिस्ट्रेटी - मुंशी साहिब प्रेम, निष्कपटता और निष्ठा में विनोद रसिक व्यक्ति हैं, सत्य के प्रेमी तथा सत्य को अति शीघ्र समझ जाते हैं, सेवाओं को नितान्त आनन्दपूर्वक पूर्ण करते हैं अपितु वह तो दिन-रात इसी चिन्ता में लगे रहते हैं कि मुझ से कोई सेवा हो जाए। बड़ा विचित्र प्रसन्नचित्त और समय पड़ने पर प्राणों को न्योछावर करने वाला व्यक्ति है। मैं विचार

करता हूं कि इन्हें इस ख़ाकसार से एक प्रेम का संबंध है। कदाचित् इससे अधिक किसी बात में प्रसन्नता नहीं होती होगी कि अपनी शक्तियों, अपने धन और अपने अस्तित्व की प्रत्येक सामर्थ्य से कोई सेवा सम्पन्न करें, वह तन-मन से वफ़ादार और दृढ़ प्रकृति और बहादुर व्यक्ति हैं। ख़ुदा तआला उन्हें अच्छा प्रतिफल प्रदान करे। आमीन!

(17) आदरणीय **मियां मुहम्मद ख़ान** साहिब रियासत कपूरथला में नौकर हैं। नितान्त दीनस्वभाव, शुद्धात्मा, सूक्ष्मदर्शी और सत्य-प्रेमी हैं और उन्हें मेरे संबंध में जितनी श्रद्धा, निष्ठा, प्रेम और सुधारणा है मैं उसका अनुमान नहीं कर सकता, मुझे उनके बारे में यह दुबिधा नहीं कि उनकी इस श्रेणी की श्रद्धा में कभी कोई विघ्न पैदा हो अपितु आशंका यह है कि सीमा से अधिक न हो जाए। वह सच्चे वफ़ादार, प्राण की बाज़ी लगाने वाले तथा दृढ़ संकल्प व्यक्ति हैं। ख़ुदा उनके साथ हो। उनका नौजवान भाई सरदार अली खान भी मेरी बैअत में सम्मिलित है। यह भी अपने भाई की तरह बहुत सौभाग्यशाली और सन्मार्ग प्राप्त है। ख़ुदा इन का रक्षक हो।

इस श्रेणी की निष्ठा में कभी कुछ विघ्न पैदा हो अपितु आशंका यह है कि सीमा से अधिक न बढ़ जाए। वह सच्चे वफ़ादार, प्राण न्योछावर करने वाले और दृढ़ संकल्प व्यक्ति हैं। ख़ुदा उनके साथ हो। उनका नौजवान भाई सरदार अली ख़ान भी मेरी बैअत में है। यह लड़का भी अपने भाई के समान बहुत भाग्यशाली और आज्ञाकारी है। ख़ुदा तआला इनका रक्षक हो।

(18) आदरणीय **मुन्शी ज़फ़र अहमद साहिब** - यह युवा सदाचारी मितभाषी, निष्कपटतापूर्ण दूरदर्शी व्यक्ति है, उसमें दृढ़ता के लक्षण और प्रकाश प्रकट हैं, उसमें वफ़ादारी के लक्षण और निशानियां पैदा हैं, प्रमाणित सच्चाइयों को भली भांति समझता है और उनसे आनन्द प्राप्त करता है, अल्लाह और रसूल से सच्चा-प्रेम रखता है और सम्मान जिस पर समस्त वरदानों की प्रगति का आधार है और सुधारणा जो इस मार्ग का मिश्रण है। उनमें ये दोनों चरित्र पाए जाते हैं। अल्लाह उन्हें अच्छा प्रतिफल दे।

(19) आदरणीय **सय्यद अब्दुल हादी साहिब** सब-ओवरसीयर - यह सय्यद साहिब विनय, ईमान, सुधारणा, स्वार्थत्याग और दानशीलता की विशेषता में पर्याप्त भाग रखते हैं, वफ़ादार और सुशील स्वभाव हैं, विपत्ति के समय दृढ़ता को हाथ से नहीं जाने देते, वादा और वचन में नितान्त दृढ़ हैं, लज्जा की प्रशंसनीय विशेषता का उन पर प्रभुत्व है। इस ख़ाकसार की बैअत में प्रवेश से पूर्व भी वही सम्मान करते थे जो अब है। ख़ुदा तआला का उन पर यह विशेष उपकार है कि वह शुभ कार्यों को करने के लिए ख़ुदा की ओर से सामर्थ्य पाते हैं, उनका स्वभाव दीनता के अनुकूल है, उन्होंने इस सिलसिले के लिए दो रुपया मासिक चन्दा निर्धारित किया है, परन्तु इस चन्दे पर कुछ निर्भर नहीं वह बड़ी संलग्नता से सेवा करते रहते हैं, यहां उनकी आर्थिक सेवाओं का वर्णन उचित नहीं क्योंकि मैं विचार करता हूं कि उनकी आर्थिक सेवाओं के प्रकट करने से उनको कष्ट पहुंचेगा। कारण यह कि वह इससे बहुत बचते हैं कि उन के कर्मों में कोई भाग दिखावे का प्रवेश करे और उन्हें यह भ्रम है कि किसी कर्म का प्रतिफल उस कर्म के प्रकटन से नष्ट हो जाता है।

(20) आदरणीय **मौलवी मुहम्मद यूसुफ़ सिन्नौरी** - मियां अब्दुल्लाह साहिब सिन्नौरी के मामा हैं। बहुत सरल स्वभाव, शुभ धारणा तथा पवित्र विचार रखने वाले व्यक्ति हैं। इस ख़ाकसार से दृढ़ता और वफ़ा के साथ निष्कपटता और प्रेम रखते हैं।

(21) **मुन्शी हश्मतुल्लाह साहिब** अध्यापक, मदरसा सिन्नौर और **मुन्शी हाशिम अली** साहिब पटवारी तहसील, बरनाला इस ख़ाकसार के एकरूप निष्कपट मित्रों में से हैं। ख़ुदा उनका सहायक हो।

(22) आदरणीय **साहिबज़ादा सिराजुलहक़** साहिब - अबुल्लम्आन मुहम्मद सिराजुलहक़ जमाली नौ'मानी इब्न शाह हबीबुर्रहमान निवासी सरसावा, ज़िला - सहारनपुर सन्तान क़ुतुबुल अक़्ताब शैख़ जमालुद्दीन अहमद हांसवी इस ख़ाकसार के महान निष्कपट लोगों में से हैं। शुद्ध हृदय, एकरूप तथा ख़ुदा के कार्यों में जोश रखने वाले तथा सत्य की बुलन्दी के लिए तन-मन से प्रयासरत और परिश्रमी हैं।

इस सिलसिले में प्रवेश करने के लिए ख़ुदा तआला ने उनके लिए जो अवसर प्रदान किया वह एक मनोरम परिस्थिति है जो उनके एक पत्र से प्रकट होती है। अत: वह लिखते हैं कि मैं इस युग को अन्तिम युग समझकर तथा विद्वानों और फ़क़ीरों से हज़रत मसीह इब्ने मरयम मौऊद और हज़रत महदी के शुभ-सन्देश सुनकर हमेशा दुआ किया करता था कि ख़ुदा तआला मुझे उनमें से किसी का दर्शन करा दे, चाहे युवावस्था में ही अथवा वृद्धावस्था में। अत: जब मेरी दुआएं चरम सीमा को पहुंची तो उनका यह प्रभाव हुआ कि मुझे स्वप्नावस्था में प्राय: कथित उद्देश्य के लिए कुछ-कुछ शुभ सन्देश मालूम होने लगे। अत: एक बार मैं यात्रा की दशा में जुनैद शहर में था तो स्वप्नावस्था में क्या देखता हूं कि मैं एक मस्जिद में वुज़ू कर रहा हूं तथा उस मस्जिद से संलग्न एक कूचा है वहां से हर प्रकार के लोग हिन्दू, मुसलमान और ईसाई आते जाते हैं। मैंने पूछा कि तुम लोग कहां से आते हो तो उन्होंने कहा कि हम रसूल मक़बूल स.अ.व. की सेवा में गए थे, तब मैंने भी शीघ्र वुज़ू करके उस कूचे का मार्ग पकड़ा। एक मकान में देखा कि लोग बहुत अधिक संख्या में एकत्र हैं और हज़रत रसूलुल्लाह ख़ातमुलअंबिया मुहम्मद मुस्तफ़ा स.अ.व. विराजमान हैं, सफ़ेद लिबास पहने हुए तथा एक व्यक्ति उनके सामने बड़ी शिष्टता के साथ घुटनों के बल बैठा है। मैंने पूछना चाहा कि पथ-प्रदर्शक के पैर चूमने में धर्माचार्यों और फ़क़ीरों में मतभेद है वास्तविकता क्या है। तब एक व्यक्ति जो आंहज़रत स.अ.व. के सामने बैठा था स्वयं बोल उठा और आंहज़रत स.अ.व. के निकट जा बैठा, तब हज़रत नबी करीम स.अ.व. ने मुझे देखा और अपना दाहिना पैर मुबारक मेरी ओर लम्बा कर दिया। मैंने हज़रत के पैर मुबारक को चूमा और आंखों से लगाया। उस समय हज़रत ने एक सूती जुराब अपने मुबारक पैर से उतार कर मुझे प्रदान की। इस सच्चे स्वप्न से मैं बहुत आनन्दविभोर हुआ। फिर दो वर्ष के पश्चात् ऐसा संयोग हुआ कि मैं लुधियाना में आया और मैंने आप का अर्थात् इस ख़ाकसार की प्रसिद्धि सुनी और रात को आपकी सेवा में उपस्थित हुआ और वही जलसा देखा और वही लोगों की भीड़ देखी जो मैंने हज़रत नबी करीम के स्वप्न में

देखी थी और जब मैंने आपकी सूरत देखी तो क्या देखता हूं कि वही सूरत है कि जिस सूरत पर नबी स.अ.व. को स्वप्न में देखा था। ख़ुदा तआला ने आप को नबी करीम के रूप में मुझ पर प्रकट किया ताकि वह समरूपता जो अनुसरण की बरकत से पैदा हो जाती है मुझ पर प्रकट हो जाए फिर जब मैं पांच छ: माह के पश्चात् आप से क़ादियान में मिला तो मेरी आस्था की दशा बहुत उन्नति कर गई और मुझे पूर्ण विश्वास अपितु आंखों से देख कर विश्वास की श्रेणी प्राप्त हो गई कि आप नि:सन्देह समय के मुजद्दिद और ग़ौस हैं और मुझ पर पूर्ण पहचान के साथ प्रकट हो गया कि मेरे स्वप्न के चरितार्थ आप ही हैं। तत्पश्चात् मुझ पर और भी परिस्थितियां निद्रावस्था और अनिद्रावस्था में प्रकट होती रहीं। एक बार इस्तिख़ार: के समय आपके बारे में यह आयत निकली مَعَهٗ رِبِّيُّوۡنَ كَثِيۡرٌ (आले इमरान - 147) तब मैं बैअत से हार्दिक निष्ठा के साथ सम्मानित हुआ और जो परिस्थितियां मुझ पर प्रकट हुईं और मेरे देखने में आईं वह इन्शाअल्लाह एक पत्रिका में लिखूंगा।

(23) आदरणी **मीर नासिर नवाब साहिब** - आदरणीय मीर साहिब इस ख़ाकसार से आध्यात्मिक संबंध के अतिरिक्त एक भौतिक संबंध भी रखते हैं कि इस ख़ाकसार के ससुर हैं, नितान्त एकरूप साफ हृदय और हृदय में ख़ुदा तआला का भय रखते हैं तथा ख़ुदा और रसूल के अनुसरण को प्रत्येक वस्तु से प्रमुख समझते हैं और किसी सच्चाई के प्रकट होने से उसे हार्दिक निर्भीकता के साथ अविलम्ब स्वीकार कर लेते हैं, उन पर प्रेम ख़ुदा के लिए और बैर ख़ुदा के लिए का मोमिनों वाले आचरण का प्रभुत्व है, किसी के सच्चा सिद्ध होने पर वह प्राण तक देने में संकोच नहीं कर सकते तथा किसी को असत्य पर देख कर उससे चाटुकारिता के तौर पर कुछ संबंध रखना नहीं चाहते। प्रारंभ में वह इस ख़ाकसार के बारे में नितान्त अच्छा विचार रखते थे, परन्तु मध्य में परीक्षावश उनकी सुधारणा में अन्तर आ गया। चूंकि शुभ प्रकृति रखते थे, इसलिए ख़ुदा की अनुकम्पा ने पुन: सहायता की तथा अपने विचारों से पश्चाताप करके बैअत के सिलसिले में सम्मिलित हुए। उनका सहसा सुधारणा की ओर लौटना तथा जोश से भरी हुई निष्कपटता के साथ

सत्य को स्वीकार कर लेना परोक्ष-भावना से प्रतीत होता है। वह अपने 12 अप्रैल 1891 ई. के विज्ञापन में इस ख़ाकसार के बारे में लिखते हैं कि मैं उनके बारे में दुर्भावनाग्रस्त था, इसलिए प्राय: तामसिक वृत्ति और शैतान ने ख़ुदा जाने मुझ से उनके बारे में क्या-क्या कहलाया जिस पर आज मुझे खेद है। यद्यपि इस अवधि में मुझे कई बार मेरे हृदय ने लज्जित किया, परन्तु उसके प्रकटन का यह समय प्रारब्ध था। मैंने मिर्ज़ा साहिब को अपने बोध भ्रमों के कारण जो कुछ कहा नितान्त बुरा किया। अब मैं तौबा करता हूं और इस तौबा की घोषणा इसलिए करता हूं कि मेरे अनुसरण के कारण कोई कष्ट में न पड़े। इस घोषणा के पश्चात् यदि कोई व्यक्ति मेरे किसी लेख या भाषण को छपवाए और उससे लाभान्वित होना चाहे तो मैं ख़ुदा के निकट दोष मुक्त हूं तथा यदि कभी मैंने मिर्ज़ा साहिब के बारे में अपने किसी मित्र से कुछ कहा हो या शिकायत की हो तो उस से ख़ुदा तआला के समक्ष क्षमायाचक हूं।

(24) आदरणीय **मुन्शी रुस्तम अली** डिप्टी इन्सपैक्टर रेलवे पुलिस - यह नौजवान सदाचारी, निष्कपटता से भरपूर मेरे प्रथम श्रेणी के मित्रों में से है। इनके चेहरे पर ही विनम्रता, स्वार्थ-त्याग और निष्कपटता के लक्षण प्रकट हैं, किसी परीक्षा के समय मैंने इस मित्र को विचलित होते हुए नहीं देखा तथा जिस दिन से वह श्रद्धापूर्वक मेरी ओर आए उस श्रद्धा में संकोच और शोक नहीं अपितु प्रतिदिन बढ़ोतरी है, वह इस सिलसिले के लिए दो रुपए चन्दा देते हैं। अल्लाह उन्हें उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

(25) आदरणीय **मियां अब्दुल हक़** पुत्र अब्दुस्समी - यह एक प्रथम श्रेणी का निष्कपटता रखने वाला, सच्चा हमदर्द और ख़ुदा के लिए शुद्ध प्रेम रखने वाला मित्र और सरल स्वभाव व्यक्ति है। धर्म को हमेशा ग़रीबों से अनुकूलता है क्योंकि ग़रीब लोग अभिमान नहीं करते और पूर्ण सम्मान के साथ सत्य को स्वीकार करते हैं। मैं सच-सच कहता हूं कि धनवानों में ऐसे लोग बहुत कम हैं जो इस सौभाग्य का दसवां भाग भी प्राप्त कर सकें जिसे ग़रीब लोग पूर्णरूपेण प्राप्त कर लेते हैं।

अत: ग़रीबों के लिए ख़ुशख़बरी। मियां अब्दुलहक़ अपनी निर्धनता और सामर्थ्य की कमी के बावजूद एक सच्चे प्रेमी की भांति मात्र ख़ुदा के लिए सेवारत रहता है और उसकी ये सेवाएं उसे इस आयत का चरितार्थ ठहरा रही हैं :-

يُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ *

(26) आदरणीय **शैख़ रहमतुल्लाह साहिब** गुजराती - शैख रहमतुल्लाह साहिब जवान, नेक, एकरूप व्यक्ति हैं, उनमें स्वभाविक तौर पर आज्ञाकारिता, निष्कपटता तथा सद्भावना इतनी है कि जिसकी बरकत से वह इस मार्ग में बहुत सी उन्नति कर सकते हैं, उनके स्वभाव में विनय और सम्मान भी बहुत है तथा उनके चेहरे से सौभाग्य के लक्षण दिखाई देते हैं। यथाशक्ति वह सेवाओं में लगे रहते हैं। ख़ुदा अप्रिय झंझटों से बचा कर अपने प्रेम की मधुरता से अत्यधिक भाग प्रदान करे। आमीन पुन: आमीन!

(27) आदरणीय **मियां अब्दुल हकीम ख़ान** - नौजवान और सच्चरित्र व्यक्ति हैं। उसके चेहरे से आज्ञाकारिता और भाग्यशाली होने के लक्षण प्रकट हैं, निपुण और बुद्धिमान पुरुष है, अंग्रेज़ी भाषा में अच्छी महारत रखते हैं। मैं आशा रखता हूं कि ख़ुदा तआला इस्लाम की अनेक सेवाएं उनके द्वारा पूर्ण करेगा। वह विद्यार्थी होने तथा उपद्रव की अवस्था के बावजूद इस सिलसिले के लिए एक रुपया मासिक चन्दा देते हैं और इसी प्रकार उनका मित्र ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहिब जो एक योग्य और उन्हीं के समरंग व्यक्ति हैं इतना ही चन्दा मात्र ख़ुदा के प्रेमावेश से हर माह अदा करते हैं। अल्लाह उन्हें अच्छा प्रतिफल दे।

(28) **आदरणीय बाबू करम इलाही साहिब रिकार्ड क्लर्क राजपुरा,** रियासत पटियाला। बाबू साहिब सुशील, निष्कपट व्यक्ति हैं। वह अपने एक पत्र में लिखते हैं कि यद्यपि आपकी पुस्तकों के पढ़ने के पश्चात् कुछ मुसलमान विद्वान नाना प्रकार के भ्रमों में पड़ गए हैं परन्तु ख़ुदा का धन्यवाद कि मेरे हृदय में लेशमात्र भी सन्देह पैदा नहीं हुआ। अत: मैं उसका धन्यवाद नहीं कर सकता क्योंकि ऐसे

* अलहश्र-10

उपद्रव और तूफान के समय सन्देहों और शंकाओं से बचना मनुष्य के अधिकार में नहीं। मेरा वेतन बहुत कम है तथापि मैं आपके सिलसिले की सहायता के लिए एक रुपया मासिक भेजा करूंगा क्योंकि थोड़ी सेवा में भी भागीदार होना पूर्णतया वंचित रहने से उत्तम है। अत: बाबू साहिब नितान्त निष्कपटता और प्रेमपूर्वक एक रुपया मासिक भेजते रहते हैं। ख़ुदा तआला उन्हें उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

(29) आदरणीय **मौलवी अब्दुल क़ादिर जमालपुरी** - मौलवी साहिब युवा, सदाचारी, संयमी और दृढ़स्वभाव व्यक्ति हैं। उस संकट के समय में जो विद्वानों में अज्ञानता और बोध भ्रम के कारण तूफ़ान की भांति उठा मौलवी अब्दुल क़ादिर साहिब की अधिक दृढ़ता प्रकट हुई और वह मोमिनों के प्रथमवर्ग में सम्मिलित रहे अपितु सत्य का प्रचार करते रहे। उनका भरण-पोषण बहुत थोड़े से वेतन पर है तथापि वह इस सिलसिले के सहायतार्थ दो रुपए 6 पाई मासिक देते हैं।

(30) आदरणीय **मुहम्मद बिन अहमद मक्की** मिनहारा शअब आमिर - यह सज्जन अरबी हैं और ख़ास मक्का के निवासी हैं। योग्यता, आज्ञाकारिता और भलाई के लक्षण उनके चेहरे पर दृष्टिगोचर हैं, वह अपने प्रिय देश श्रेष्ठ मक्का (अल्लाह इनकी प्रतिष्ठा को बढ़ाए) इस देश में भ्रमण के उद्देश्य से आए। कुछ दुश्चिन्तक लोगों ने उनको वास्तविकता के विपरीत बातें अपितु अपनी ओर से इस ख़ाकसार के बारे में कुछ ग़लत आरोप सुनाए और कहा कि यह व्यक्ति रसूल होने का दावा करता है, आँहज़रत स.अ.व. और पवित्र क़ुर्आन का इन्कारी है और कहता है कि मसीह जिस पर इन्जील उतरी थी वह मैं ही हूं। इन बातों से अरबी सज्जन के हृदय में इस्लामी स्वाभिमान के कारण एक उत्तेजना उत्पन्न हुई। अत: उन्होंने इस ख़ाकसार की ओर अरबी भाषा में एक पत्र लिखा जिसमें ये वाक्य भी लिखे हुए थे

ان کنت عیسی ابن مریم فانزل علینا مائدة ایُّها
الکذاب۔ ان کنت عیسی ابن مریم فانزل علینا مائدة
ایّها الدّجّال

अर्थात् यदि तू ईसा इब्ने मरयम है तो हे कज़्ज़ाब (बहुत झूठा) हे दज्जाल हम पर माइदह (दस्तरख़्वान) उतार। परन्तु मालूम नहीं कि यह किस समय की दुआ थी कि जो स्वीकार हो गई और जिस दस्तरख़्वान को देकर ख़ुदा तआला ने मुझे भेजा है, अन्ततः वह शक्तिमान ख़ुदा उन्हें उस ओर खींच लाया। लुधियाना में आए और इस ख़ाकसार से भेंट की और बैअत के सिलसिले में शामिल हो गए। अतः हर प्रकार की प्रशंसा उस ख़ुदा की जिसने उसे अग्नि से बचाया और आकाश से उस पर माइदह (दस्तरख़्वान) उतारा।

उनका वर्णन है कि जब मैं आपके बारे में बुरे और दूषित भ्रमों में लिप्त था तो मैंने स्वप्न में देखा कि एक व्यक्ति मुझ से कहता है कि يَا مُحَمَّد اَنْتَ كَذَّاب अर्थात् हे मुहम्मद तू ही बहुत बड़ा झूठा है और उनका यही बयान है कि तीन वर्ष हुए कि मैंने स्वप्न में देखा था कि ईसा आकाश से उतर गया और मैंने अपने हृदय में कहा था कि इन्शाअल्लाह मैं अपने जीवन में ईसा को देख लूंगा।

(31) **आदरणीय साहिबज़ादा इफ़्तिख़ार अहमद** जो युवा सदाचारी मेरे वफ़ादार और सच्चे प्रेमी हाजी अलहर्मैन शरीफ़ैन मुन्शी अहमद जान साहिब (स्वर्गीय) के सुपुत्र हैं

بمقتضاءِ الوٰلد شرٌّ الابیہ

समस्त अपने महान पिता की समस्त विशेषताएं अपने अन्दर रखते हैं तथा उन में वह तत्त्व पाया जाता है जो उन्नति के सोपान तय करता-करता मनुष्य को ख़ुदा में आसक्त होने वालों की जमाअत में सम्मिलित कर देता है। ख़ुदा तआला अध्यात्मिक भोजन से उन्हें भरपूर भाग दे और अपनी प्रेमपूर्ण रुचि और शौक़ से मुग्ध करे। तथास्तु पुनः तथास्तु!

(32) **आदरणीय मौलवी सय्यद मुहम्मद अस्करी ख़ान अतिरिक्त सहायक वर्तमान में पेन्शनर** - आदरणीय सय्यद साहिब ज़िला इलाहाबाद के निवासी हैं। इस विनीत से हार्दिक प्रेम रखते हैं अपितु उनका हृदय इत्र की बोतल के समान प्रेम से भरा हुआ है। बहुत श्रेष्ठ शुद्ध अन्तःकरण वाले वफ़ादार मित्र हैं। बहुत

विशाल ज्ञान रखते हैं। एक प्रकाण्ड विद्वान, सम्माननीय हैं। इन दिनों बीमार हैं। ख़ुदा तआला उन्हें शीघ्र स्वस्थ करे। तथास्तु!

(33) **आदरणीय मौलवी ग़ुलाम हसन साहिब पेशावरी** - इस समय लुधियाना में मेरे पास मौजूद हैं। केवल मुलाक़ात के उद्देश्य से पेशावर से पधारे हैं। मैं विश्वास रखता हूं कि वह वफ़ादार और निष्कपट हैं, तथा لا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لائِمٍ में सम्मिलित हैं, हमदर्दी के तौर पर दो रुपया मासिक चन्दा देते हैं। मुझे आशा है कि वह बहुत शीघ्र ख़ुदा के मार्गों तथा धार्मिक ज्ञानों में उन्नति करेंगे क्योंकि नूरानी स्वभाव रखते हैं।

(34) **आदरणीय शैख़ हामिद अली** - यह युवा, सदाचारी तथा सदाचारी वंश का व्यक्ति है और लगभग सात आठ वर्ष से मेरी सेवा में है और मैं निश्चय ही जानता हूं कि मुझ से निष्कपटता और प्रेम रखता है, यद्यपि संयम की बारीकियों तक पहुंचना बड़े आत्म ज्ञानियों एवं सदाचारियों का काम है परन्तु जहां तक समझ है सुन्नत के अनुसरण और संयम का ध्यान रखने में व्यस्त है। मैंने उसे देखा है कि ऐसी बीमारी में जो बहुत अधिक और प्राणघातक विदित होती थी तथा कमज़ोरी और निर्बलता से शव के समान हो गया था। पांच समय की नमाज़ की दिनचर्या में ऐसा तन्मय था कि इस बेहोशी और गंभीर स्थिति में जिस प्रकार भी हो नमाज़ पढ़ लेता था। मैं जानता हूं कि मनुष्य का ख़ुदा से भय करने का अनुमान लगाने के लिए उसकी नमाज़ की अनिवार्य दिनचर्या का देखना पर्याप्त है कि कैसी है। मुझे विश्वास है कि जो व्यक्ति पूर्ण नियामानुसार नमाज़ अदा करता है तथा भय बीमारी और उपद्रवी परिस्थितियां उसे नमाज़ से नहीं रोक सकतीं। वह निःसन्देह ख़ुदा तआला पर एक सच्चा ईमान रखता है, परन्तु यह ईमान निर्धनों को दिया गया, धनवान इस दौलत को पाने वाले बहुत थोड़े हैं। शैख़ हामिद अली साहिब ने ख़ुदा तआला की कृपा से इस विनीत के कई निशान देखे हैं और चूंकि वह यात्रा और पड़ाव में हमेशा मेरे साथ ही रहता है। इसलिए ख़ुदा तआला उसके लिए ऐसे सामान पैदा करता रहा और वह अपनी आंखों से देखता रहा कि ख़ुदा तआला की अनुकम्पाएं इस ओर

लौट रही हैं तथा दुआओं के स्वीकार होने से क्योंकर अद्‌भुत चमत्कार प्रकट हुए। शैख़ मेहरअली साहिब रईस होशियारपुरी की परीक्षा और विपत्ति आने की सूचना जो पूरे छः माह पूर्व शैख़ साहिब को पत्र द्वारा दी गई थी तथा उनका अन्त ठीक होने का शुभ सन्देश जो उनको दण्ड के आदेश से मृत्यु की अवस्था में पहुंचाया गया था। ये सब बातें हामिद अली की आंखों देखी हैं, अपितु इस भविष्यवाणी पर कुछ मूर्ख उससे लड़ते-झगड़ते रहे कि उसका पूरा होना असंभव है। इसी प्रकार दिलीप सिंह के रोके जाने की भविष्यवाणी तथा कई अन्य भविष्यवाणियां और निशान जो प्रातःकाल की भांति प्रकट हो गईं, इस व्यक्ति को मालूम हैं जिनका ख़ुदा तआला ने साक्षी बना दिया है तथा सच तो यह है कि उसे जितने निशान दिखाए गए वे एक सत्याभिलाषी का ईमान सुदृढ़ करने के लिए ऐसे पर्याप्त हैं कि उससे अधिक की आवश्यकता नहीं। हामिद अली निःसन्देह एक निष्कपट व्यक्ति है परन्तु स्वाभाविक तौर पर उस के स्वभाव में उत्तेजना अत्यधिक है। धैर्य और सहनशीलता अभी उसमें कम है। एक ग़रीब और निम्नस्तरीय मज़दूर की कठोर बात का सहन करना अभी उसकी शक्ति से बाहर है। क्रोध के समय कुछ ज़बरदस्ती का रोम-रोम प्रकट हो जाता है। सुस्ती और आलस्य भी बहुत है परन्तु धार्मिक, संयमी और वफ़ादार है। ख़ुदा तआला उसके इन दोषों को दूर कर दे। तथास्तु! हामिद अली मुझ से केवल तीन रुपए वेतन पाता है और उसमें से इस सिलसिले के चन्दे के लिए चार आना प्रसन्नतापूर्वक केवल ख़ुदा के लिए अदा करता है तथा आदरणीय शैख़ चिराग़ अली उसका चाचा उसकी समस्त विशेषताओं में उसका भागीदार है तथा एकरूप और बहादुर है।

(35) **आदरणीय शैख़ शहाबुद्दीन मुवह्हिद** - शैख़ शहाबुद्दीन दीन स्वभाव, निष्कपट, तथा अच्छे विचार रखने वाला व्यक्ति है। नितान्त कंगाली और निर्धनता से इस यात्री निवास (संसार) के दिन पूरे कर रहा है। खेद कि अधिकतर मुसलमानों ने ज़कात देना भी छोड़ दिया अथवा इस्लामी शरीअत का यह नीतियों से भरपूर मामला कि يُؤْخَذُ مِنَ الْاَغْنِيَآءِ وَيُرَدُّ اِلَى الْفُقَرَآء यों ही निलंबित पड़ा

है। यदि धनवान लोग किसी पर उपकार न करें केवल ज़कात अदा करने की ओर ध्यान दें तो इस्लामी और क़ौमी हमदर्दी के लिए हज़ारों रुपए एकत्र हो सकते हैं। परन्तु مال بخیلی آنگاہ از خاک بر آید کہ بخیل در خاک رود (कृपण मनुष्य का माल उस समय मिट्टी से बाहर निकलेगा जब वह स्वयं मिट्टी में चला जाएगा)

(36) **आदरणीय मीरां बख़्श पुत्र बहादुरखान कीरवी** - एक निष्कपट और दृढ़ आस्थावान व्यक्ति है। उसकी आस्था की उन्नति का कारण उसने यह वर्णन किया है कि एक फ़क़ीर ने उसे सूचना दी थी कि जो ईसा आने वाला था वह यही है अर्थात् यह विनीत। यह सूचना इस विनीत के दावा करने से कई वर्ष पूर्व वह सुन चुका था तथा सैकड़ों लोगों में ख्याति पा चुकी थी।

(37) **आदरणीय मौलवी मुहम्मद मुबारक अली साहिब** - यह मौलवी साहिब इस विनीत के उस्ताद के पुत्र हैं। इनके पिता श्री स्वर्गीय हज़रत मौलवी फ़ज़्ल अहमद साहिब एक ऐसे विद्वान थे कि उनका आचरण भी विद्वानों जैसा ही था। मैं उनसे बहुत प्रेम करता था क्योंकि उस्ताद होने के अतिरिक्त वह एक अल्लाह वाले, आत्मशुद्ध, विनोदप्रिय, संयमी और नियमों पर चलने वाले व्यक्ति थे। नमाज़ पढ़ने की अवस्था में ही अपने वास्तविक प्रियतम से जा मिले (अर्थात् स्वर्गवास हो गया)। चूंकि नमाज़ की अवस्था एक संसार और उसकी समस्त वस्तुओं से त्याग और पृथक होने का समय होता है। इसलिए उनकी घटना गर्व करने योग्य है। ख़ुदा तआला ऐसी मृत्यु सब मोमिनों को प्रदान करे। मौलवी मुबारक अली साहिब उनके बड़े सुपुत्र हैं। रूप और आचरण में हज़रत मौलवी साहिब स्वर्गीय से बहुत सदृश हैं, इस विनीत के एक रंग और जोश रखने वाले मित्र हैं, इस मार्ग में हर प्रकार की विपत्तियां सहन कर रहे हैं। हज़रत ईसा इब्ने मरयम की मृत्यु के बारे में उन्होंने एक पुस्तक लिखी है जो प्रकाशित हे चुकी है जिसका नाम 'क़ौले जमील' है। उसमें इस विनीत की चर्चा भी कई स्थानों पर की गई है। चूंकि आदरणीय मौलवी साहिब की हदीस और तफ़्सीर पर बड़ी गहरी दृष्टि है। इसलिए उन्होंने हदीस के विद्वानों की पद्धति पर बड़ी उत्तमता और गंभीरता से इस पुस्तक को पूर्ण किया है। विरोधी

विचारधारा रखने वाले मौलवी लोग जिन्हें सोच-विचार करने की आदत नहीं तथा जो आंख बन्द करके फ़त्वे पर फ़त्वे लिख रहे हैं उनके लिए उचित है कि इस विनीत की पुस्तक इज़ाला औहाम के अतिरिक्त मेरे मित्र मौलवी मुहम्मद मुबारक अली साहिब की पुस्तक को भी देखें तथा मेरे मित्र मौलवी मुहम्मद अहसन साहिब अमरोही की पुस्तक 'एलामुन्नास' को भी ध्यानपूर्वक पढ़ें और ख़ुदा तआला के मार्ग-दर्शन से निराश न हों। यद्यपि कि उनकी दशा बहुत खतरनाक और निराशा के अत्यधिक निकट है परन्तु ख़ुदा तआला प्रत्येक बात पर समर्थ है। मौलवियों की शर्मिंदगी काफ़िरों की शर्मिंदगी से कुछ अधिक नहीं। फिर क्यों इस दया के उद्गम से निराश होते हैं। وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

(39) **आदरणीय मौलवी मुहम्मद तफ़ज़्ज़ुल हुसैन साहिब** - आदरणीय मौलवी साहिब मुझ से सच्चे हृदय से निष्कपटता और प्रेम रखते हैं। मैंने उनके हृदय की ओर ध्यान दिया तो मुझे ज्ञात हुआ कि वह वास्तव में सुशील स्वभाव और भाग्यशाली लोगों में से हैं और अपने अन्दर उन्नति करने का तत्त्व रखते हैं। यदि वह मानव होने की कमी के कारण किसी उलझन में पड़ें तो मैं आशा नहीं रखता हूँ कि वह उसी में बन्द रह जाएं, क्योंकि उनका स्वभाव शुद्ध, उन्हें ईमानी विवेक तथा इस्लामी प्रकाश का भाग प्राप्त है तथा बात के संदिग्ध होने पर अपने अन्दर निर्णय करने की शक्ति रखते हैं तथा इस योग्य हैं कि यदि वह कुछ समय स्वस्थ रहें तो ज्ञान एवं क्रियात्मक पद्धतियों में बहुत उन्नति कर जाएं। आदरणीय मौलवी साहिब ख़ुदा को पहचानने वाले एक बुज़ुर्ग के सुपुत्र हैं तथा अपने अन्दर पैतृक प्रकाश गुप्त रखते हैं और आशा की जाती है कि किसी समय उन पर आध्यात्मिकता का प्रभुत्व हो जाए। यह विनीत जब अलीगढ़ गया था तो वास्तव में मौलवी साहिब ही मेरे जाने का कारण हुए थे तथा उन्होंने इतनी सेवा की कि मैं उसका धन्यवाद अदा नहीं कर सकता। इस जमाअत के चन्दे में भी उन्होंने दो रुपए मासिक निर्धारित कर रखे हैं। मौलवी साहिब महोदय यद्यपि तहसीलदारी के पद पर हैं परन्तु परिवार का एक भारी बोझ उनके ऊपर है और वह निकट और दूर के संबंधियों अपितु मित्रों को भी अपने

धन से सहायता करते हैं तथा अतिथियों का बहुत सत्कार करने वाले हैं। दरवेशों, भिक्षुओं तथा निर्धनों से स्वाभाविक तौर पर प्रेम रखते हैं। सरल स्वभाव, आत्मशुद्ध तथा शुभचिन्तक व्यक्ति हैं। इसके साथ ही उनमें इस्लाम की हमदर्दी का जोश पूर्ण रूप से पाया जाता है। अल्लाह उन्हें अच्छा प्रतिफल दे। कुछ बैअत करने वालों के शेष नाम ये हैं -

आदरणीय मुन्शी जलालुद्दीन साहिब मीर मुन्शी
आदरणीय मीर महमूद शाह साहिब सियालकोटी
आदरणीय मुन्शी इलाही बख़्श साहिब
आदरणीय शैख़ फ़तह मुहम्मद साहिब जम्मूनी
आदरणीय मौलवी इनायत अली साहिब
आदरणीय शैख़ बरकत अली साहिब
आदरणीय अब्दुल मजीद खान औरंगाबादी
आदरणीय मुन्शी अहमद शाह साहिब नूरपुरी
आदरणीय मुन्शी फ़य्याज़ अली साहिब
आदरणीय मौलवी शेर मुहम्मद साहिब हज्नी
आदरणीय मियां अली गौहर साहिब
आदरणीय मुन्शी मुहम्मद हुसैन साहिब मुरादाबादी
आदरणीय मियां अब्दुल करीम खान साहिब
आदरणीय मुन्शी हाशिम अली साहिब
आदरणी मुन्शी हबीबुर्रहमान साहिब
आदरणीय मौलवी महमूद हसन खान साहिब
आदरणीय मौलवी हकीम मुहियुद्दीन अरबी
आदरणीय ग़ुलाम जैलानी साहिब
आदरणीय सरदार खान बिरादर मुहम्मद खान
आदरणीय सय्यद अमीर अली साहिब

आदरणीय सय्यद ख़सलत अली साहिब
आदरणीय मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब
आदरणीय मीर इनायत अली साहिब
आदरणीय मुन्शी ग़ुलाम मुहम्मद साहिब सियालकोटी
आदरणीय मियां अताउर्रहमान देहलवी
आदरणीय मौलवी मुहम्मददीन सियालकोटी
आदरणीय मौलवी ताज मुहम्मद साहिब सीरमांदी
आदरणीय मौलवी नूरदीन साहिब पोखरी
आदरणीय मुहम्मद हुसैन साहिब निवासी रियासत कपूरथला
आदरणीय मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब भैरवी
आदरणीय शैख़ चिराग़ अली साहिब तिहवी
आदरणीय मौलवी मुहियुद्दीन साहिब बहोबरी
आदरणीय शैख़ अहमद शाह साहिब मंसूरपुरी
आदरणीय मियां अब्दुल हक़ साहिब निवासी पटियाला
आदरणीय मौलवी नूर मुहम्मद साहिब मांगटी

ये सब सज्जन अपने स्तर की दृष्टि से इस विनीत के वफ़ादार मित्र हैं। इनमें से कुछ उच्च स्तर की निष्कपट भावना रखते हैं उसी भावना के अनुसार जो इस विनीत के चुने हुए मित्रों में पाई जाती है। यदि मुझे इस विवरण के विस्तृत हो जाने का भय न होता तो मैं उनकी वफ़ादारी से परिपूर्ण वृत्तान्तों का उल्लेख करता। ख़ुदा ने चाहा तो किसी अन्य स्थान पर लिखूंगा। अब मैं इस चर्चा को दुआ पर समाप्त करता हूं। हे सर्वशक्तिमान ख़ुदा! मेरी इस धारणा को जो मैं अपने इन समस्त मित्रों के बारे में रखता हूं मुझे सच्चा करके दिखा और उनके हृदयों में संयम की हरी शाखाएं जो शुभ कर्मों के मेवों से लदी हुई हैं पैदा कर, उनके दोषों को दूर कर तथा उनकी समस्त असावधानियां को भी दूर कर दे, उनके हृदयों में अपनी श्रेष्ठता स्थापित कर, उनमें और उनके नफ़्सों में दूरी डाल, तथा ऐसा कर कि वे तुझ में होकर बोलें, और तुझ

में होकर सुनें, और तुझ में हो कर देखें तथा तुझ में होकर प्रत्येक गति और स्थिरता करें, इन सब को एक ऐसा हृदय प्रदान कर जो तेरे प्रेम की ओर झुक जाए, और उनको अपनी पहचान का एक ऐसा ज्ञान प्रदान कर जो तेरी ओर खींच ले। हे नेकी करने वाले ख़ुदा! यह जमाअत तेरी जमाअत है इसे बरकत प्रदान कर तथा उसमें सच्चाई की रूह डाल कि समस्त शक्ति तेरी ही है। आमीन !

और चन्दा देने वालों के नाम चन्दों के विवरण सहित ये हैं :-

क्रम सं.	नाम	मासिक चन्दा
(1)	हुब्बी फ़िल्लाह मियां अब्दुल्लाह पटवारी गांव ग़ौसगढ़	یہ
(2)	हुब्बी फ़िल्लाह मौलवी मुहम्मद यूसुफ़ साहिब, शिक्षक मदरसा सिन्नौर	سے/
(3)	हुब्बी फ़िल्लाह मुन्शी हश्मतुल्लाह साहिब, शिक्षक, मदरसा सिन्नौर	سے/
(4)	हुब्बी फ़िल्लाह मुन्शी हाशिम अली साहिब पटवारी तहसील बरनाला	سے/
(5)	हुब्बी फ़िल्लाह मुन्शी इब्राहीम साहिब पटवारी तहसील बांगर	عا/
(6)	हुब्बी फ़िल्लाह मुन्शी अब्दुर्रहमान साहिब पटवारी तहसील सनाम	عا/
(7)	हुब्बी फ़िल्लाह मुन्शी अहमद बख़्श साहिब पटवारी तहसील बांगर	عہ/
(8)	हुब्बी फ़िल्लाह मुन्शी इब्राहीम सानी पटवारी तहसील सरहिन्द	سے/
(9)	हुब्बी फ़िल्लाह मुन्शी ग़ुलाम क़ादिर साहिब पटवारी तहसील	عا/
(10)	हुब्बी फ़िल्लाह मुन्शी मुहम्मद फ़ाज़िल साहिब निवासी सिन्नौर	عہ/
(11)	हुब्बी फ़िल्लाह बिरादरम हकीम फ़ज़लदीन साहिब भैरवी	صہ/
(12)	हुब्बी फ़िल्लाह मियां अलादीन साहिब अर्ज़ी नवीस, माध्यम हक़ीम फ़ज़लदीन साहिब	عہ/
(13)	हुब्बी फ़िल्लाह मियां नज्मुद्दीन अब्दुर्रय्यान: निवासी भेरा इमाम मस्जिद धरखाना वाली	عہ/

(14)	हुब्बी फ़िल्लाह बिरादरम मौलवी हकीम ग़ुलाम अहमद साहिब इंजीनियर रियासत जम्मू	عگا/
(15)	हुब्बी फ़िल्लाह बिरादरम मौलवी हकीम नूरदीन साहिब उपचारक रियासत जम्मू	عنـہ ۲۰
(16)	हुब्बी फ़िल्लाह सय्यद अब्दुल हादी साहिब सब ओवरसियर फ़ारकच्छ	عگا/
(17)	हुब्बी फ़िल्लाह मौलवी सय्यद तफ़ज़्ज़ुल हुसैन साहिब तहसीलदार अलीगढ़	عگا/
(18)	हुब्बी फ़िल्लाह बिरादरम मुन्शी रुस्तम अली साहिब डिप्टी इन्सपैक्टर रेलवे विभाग	عگا/
(19)	हुब्बी फ़िल्लाह बिरादरम मुन्शी जफ़र अहमद साहिब - मासिक चन्दा	1 रुपया
(20)	हुब्बी फ़िल्लाह बिरादरम मियां मुहम्मद खान साहिब	عہ/
(21)	हुब्बी फ़िल्लाह मुन्शी अब्दुर्रहमान साहिब	عہ/
(22)	हुब्बी फ़िल्लाह मुन्शी हबीबुर्रहमान साहिब	۸/
(23)	हुब्बी फ़िल्लाह मुन्शी फ़य्याज़ अली साहिब	۸/
(24)	हुब्बी फ़िल्लाह मौलवी अब्दुल क़ादिर साहिब अध्यापक जमालपुर, ज़िला लुधियाना	۲/۶ पाई
(25)	हुब्बी फ़िल्लाह मुंशी मुहम्मद बख़्श साहिब	۲/
(26)	हुब्बी फ़िल्लाह शैख़ चिराग़ अली साहिब निवासी थह. ग़ुलाम नबी	۴/
(27)	हुब्बी फ़िल्लाह मुंशी मुहम्मद करम इलाही साहिब रिकार्ड क्लर्क राजपुरा, रियासत पटियाला	
(28)	हुब्बी फ़िल्लाह मौलवी ग़ुलाम हसन साहिब अध्यापक म्युनिस्पल बोर्ड	سے/
(29)	हुब्बी फ़िल्लाह क़ाज़ी मुहम्मद अकबर खान साहिब नायब तहसीलदार सवाबी	عہ/

समापन

बैअत के सिलसिले में सम्मिलित सज्जनों के लिए उपदेश

عزیزاں بے خلوص و صدق نکشائند راہِ را　　مصفّا قطرۂ بائد کہ تاگوہر شود پیدا

हे मेरे मित्रो ! जो मेरी बैअत के सिलसिले में सम्मिलित हो ख़ुदा हमें और तुम्हें उन बातों की सामर्थ्य प्रदान करे जिन से वह प्रसन्न हो जाए। आज तुम थोड़े हो और तिरस्कार की दृष्टि से देखे गए हो तथा तुम पर एक परीक्षा की घड़ी है उसी ख़ुदा के नियम जो सदैव से जारी है कि अनुसार प्रत्येक ओर से प्रयास होगा कि तुम ठोकर खाओ और तुम हर प्रकार से पीड़ित किए जाओगे तथा तुम्हें भांति-भांति की बातें सुनना पड़ेंगी और प्रत्येक जो तुम्हें मुख से या हाथ से कष्ट देगा वह सोचेगा कि इस्लाम की सहायता कर रहा है तथा कुछ ख़ुदाई विपत्तियां भी तुम पर आएंगी ताकि तुम हर प्रकार से आज़माए जाओ। अत: तुम इस समय सुन रखो कि तुम्हारे सफल और विजयी होने का यह मार्ग नहीं कि तुम अपने नीरस तर्क शास्त्र से काम लो या उपहास के मुक़ाबले पर उपहास की बातें करो, अथवा गाली के मुक़ाबले पर गाली दो, क्योंकि यदि तुम ने यही मार्ग धारण किए तो तुम्हारे हाथ कठोर हो जाएंगे और तुम में केवल बातें ही बातें होंगी जिनसे ख़ुदा तआला नफ़रत करता है और घृणा की दृष्टि से देखता है। अत: तुम ऐसा न करो कि अपने ऊपर दो ला'नतें एकत्र कर लो। एक प्रजा की और दूसरी ख़ुदा की भी।

निश्चय ही स्मरण रखो कि लोगों की ला'नत (फटकार) यदि ख़ुदा की ला'नत साथ न हो कुछ भी वस्तु नहीं। यदि ख़ुदा हमें मिटाना न चाहे तो हम किसी से मिटाए नहीं जा सकते, परन्तु यदि वही हमारा शत्रु हो जाए तो कोई हमें शरण नहीं दे सकता।

हम ख़ुदा को क्योंकर प्रसन्न करें और क्योंकर वह हमारे साथ हो। इसका उसने मुझे बार-बार यही उत्तर दिया कि संयम से। अत: हे मेरे प्रिय भाइयो! प्रयास करो ताकि संयमी बन जाओ। बिना कर्म के सब बातें तुच्छ हैं और बिना निष्कपटता के कोई कर्म स्वीकार योग्य नहीं। अत: संयम यही है इन समस्त हानियों से बचकर ख़ुदा तआला की ओर क़दम उठाओ तथा संयम के सूक्ष्म मार्गों का ध्यान रखो।

सर्वप्रथम अपने हृदयों में विनय, शुद्धता और निष्कपटता पैदा करो और वास्तव में हृदयों के सहनशील, सुशील, दीन बन जाओ कि प्रत्येक भलाई और बुराई का बीज प्रथम हृदय में ही पैदा होता है। यदि तेरा हृदय बुराई से रिक्त है तो तेरी जीभ भी बुराई से रिक्त होगी। इसी प्रकार तेरी आंख और तेरे समस्त अंग। प्रत्येक प्रकाश अथवा अंधकार पहले हृदय में जन्म लेता है और फिर शनै: शनै: सम्पूर्ण शरीर पर व्याप्त हो जाता है। अत: अपने हृदयों को प्रतिपल टटोलते रहो और जिस प्रकार पान खाने वाला अपने पानों को फेरता रहता है और रद्दी भाग को काटता है तथा बाहर फेंकता है। इसी प्रकार तुम भी अपने हृदयों के गुप्त विचारों, गुप्त आदतों, गुप्त भावनाओं और गुप्त प्रतिभाओं को अपनी दृष्टि के समक्ष फेरते रहो तथा जिस विचार, आदत या प्रतिभा को रद्दी पाओ उसे काटकर बाहर फेंको। ऐसा न हो कि वह तुम्हारे सम्पूर्ण हृदय को अपवित्र कर दे और फिर तुम काटे जाओ।

तत्पश्चात् प्रयास करो तथा ख़ुदा तआला से शक्ति और साहस मांगो कि तुम्हारे हृदयों के पवित्र इरादे और पवित्र विचार, पवित्र भावनाएं, पवित्र इच्छाएं, तुम्हारे अंग तथा तुम्हारी समस्त शक्तियों के द्वारा प्रकट और पूर्ण हों ताकि तुम्हारे शुभ कर्म, चरमोत्कर्ष तक पहुंचे, क्योंकि जो बात हृदय से निकले और हृदय तक ही सीमित रहे वह तुम्हें किसी स्तर तक नहीं पहुंचा सकती। ख़ुदा तआला की श्रेष्ठता अपने हृदयों में बैठाओ और उसके प्रताप को अपनी आंखों के समक्ष रखो तथा स्मरण रखो कि पवित्र क़ुर्आन में लगभग पांच सौ आदेश हैं तथा उसने तुम्हारे प्रत्येक अंग और प्रत्येक शक्ति तथा प्रत्येक स्वभाव, प्रत्येक दशा, प्रत्येक आयु, बोध का प्रत्येक बोध स्तर तथा प्रकृति का स्तर, और प्रत्येक साधना का स्तर, प्रत्येक व्यक्तिगत स्तर और समूह की दृष्टि से

तुम्हें एक प्रकाशमय निमंत्रण दिया है। अत: तुम उस निमंत्रण को धन्यवादपूर्वक स्वीकार करो। तथा जितने व्यंजन तुम्हारे लिए तैयार किए गए हैं वे सारे खाओ तथा सब से लाभ प्राप्त करो। जो व्यक्ति इन सब आदेशों में से एक आदेश को भी टालता है, मैं सच-सच कहता हूं कि वह न्याय के दिन गिरफ्त के योग्य होगा। यदि चाहते हो तो वृद्धों का धर्म धारण करो और दीनता के साथ पवित्र क़ुर्आन का जुआ अपनी गरदनों पर उठाओ कि उपद्रवी और उद्दण्ड का विनाश होगा तथा उद्दण्ड नर्क में गिराया जाएगा परन्तु जो ग़रीबी से गरदन झुकाता है वह मृत्यु से बच जाएगा। सांसारिक समृद्धि की शर्तों से ख़ुदा तआला की इबादत (उपासना) न करो कि ऐसे विचार के लिए सामने गड्ढ़ा है अपितु तुम उसकी उपासना इसलिए करो कि उपासना तुम पर स्रष्टा (ख़ुदा) का एक अधिकार है चाहिए कि उपासना ही तुम्हारा जीवन हो जाए और तुम्हारी नेकियों (शुभकर्मों) का मात्र यही उद्देश्य हो कि वह वास्तविक प्रियतम और उपकारकर्ता प्रसन्न हो जाए, क्योंकि जो इससे कमतर विचार है वह ठोकर का स्थान है।

ख़ुदा महान दौलत है उसे प्राप्त करने के लिए संकट सहन करने के लिए तैयार हो जाओ उसे पाने के लिए प्राणों की बाज़ी लगाओ। प्रिय सज्जनो! ख़ुदा तआला के आदेशों को तिरस्कार पूर्वक न देखो। वर्तमान दर्शन का विष तुम पर प्रभाव न डाले। एक बच्चे के समान बन कर उसके आदेशों के अधीन आचरण करो, नमाज़ पढ़ो, नमाज़ पढ़ो कि वह समस्त सौभाग्यों की कुंजी है और जब तू नमाज़ के लिए खड़ा हो तो ऐसा न कर कि जैसे तू एक रस्म पूरी कर रहा है अपितु नमाज़ से पूर्व जिस प्रकार प्रत्यक्षत: वुज़ू करते हो इसी प्रकार एक आन्तरिक वुज़ू भी करो तथा अपने अंगों को ख़ुदा के अतिरिक्त के विचार से धो डालो। तब इन दोनों वुज़ुओं के साथ खड़े हो जाओ तथा नमाज़ में बहुत दुआ करो और रोना तथा गिड़गिड़ाना अपना स्वभाव बना लो ताकि तुम पर दया की जाए।

सच्चाई धारण करो, सच्चाई धारण करो कि वह देख रहा है कि तुम्हारे हृदय कैसे हैं, क्या मनुष्य उसे भी धोखा दे सकता है, क्या उसके आगे भी छल-कपट चल सकती हैं। नितान्त दुर्भाग्यशाली व्यक्ति अपने समस्त कर्मों को उस सीमा तक पहुंचा

देता है कि जैसे ख़ुदा नहीं, तब वह बहुत शीघ्र नष्ट किया जाता है और ख़ुदा तआला को उसकी कुछ परवाह नहीं होती।

प्रिय सज्जनो! इस संसार का अकेला तर्कशास्त्र एक शैतान है और संसार का खाली दर्शनशास्थ एक दैत्य है जो ईमानी प्रकाश को अत्यधिक कम कर देता है और धृष्टताओं को जन्म देता है तथा नास्तिकता के निकट-निकट पहुंचाता है। अत: तुम इससे स्वयं को बचाओ और ऐसा हृदय पैदा करो जो दीन-हीन हो और बिना किसी के आदेशों को मानने वाले हो जाओ जैसा कि बच्चा अपनी माता की बातों को मानता है।

पवित्र क़ुर्आन की शिक्षाएं संयम के उच्च शिखर तक पहुंचाना चाहती हैं उनकी ओर ध्यान दो तथा उनके अनुसार स्वयं को बनाओ। पवित्र क़ुर्आन इंजील के समान तुम्हें केवल यह नहीं कहता कि उन स्त्रियों जिनके साथ विवाह वैध है अथवा ऐसों को जो स्त्रियों की भांति कामवासना का कारण हो सकती हैं कामवासना की दृष्टि से न देखो अपितु उसकी पूर्ण शिक्षा का उद्देश्य है कि बिना आवश्यवकता के उनकी ओर ने देख जिनसे विवाह वैध है न कामवासना से और न बिना कामवासना के, अपितु चाहिए कि तू आंखें बन्द करके स्वयं को ठोकर से बचाए ताकि तेरी हार्दिक पवित्रता में कोई अन्तर न आए। अत: तुम अपने स्वामी के इस आदेश को स्मरण रखो और स्वयं को आंखों के व्यभिचार से बचाओ और उस हस्ती (ख़ुदा) के प्रकोप से डरो जिसका प्रकोप पल भर में विनाश कर सकता है। पवित्र क़ुर्आन भी फ़रमाता है कि तू अपने कानों को भी उन स्त्रियों की चर्चा से बचा जिनसे विवाह वैध है तथा इसी प्रकार प्रत्येक अवैध चर्चा से।

मुझे इस समय इस नसीहत करने की आवश्यकता नहीं कि तुम वध न करो, क्योंकि नितान्त उपद्रवी के अतिरिक्त कौन निर्दोष का वध करने की ओर पग उठाता है परन्तु मैं कहता हूं कि अन्याय पर हठ करके सत्य का ख़ून न करो। सत्य को स्वीकार कर लो, यद्यपि एक बच्चे से और यदि विरोधी की ओर सत्य पाओ तो फिर तुरन्त अपने नीरस तर्क शास्त्र को त्याग दो सत्य पर ठहर जाओ तथा सच्ची साक्ष्य दो जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّوْرِ (अलहज्ज-31)

अर्थात् मूर्तियों की अपवित्रता से बचो तथा झूठ से भी कि वह मूर्ति से कम नहीं। जो वस्तु सत्य के किब्ले से तुम्हारा मुख फेरती है वही तुम्हारे मार्ग में मूर्ति है। सच्ची साक्ष्य दो यद्यपि तुम्हारे पिताओं, या भाइयों और मित्रों के विरुद्ध हो। चाहिए कि कोई शत्रुता भी तुम्हें न्याय से न रोके।

परस्पर कृपणता, वैमनस्य, द्वेष बैर और अनुदारता त्याग दो और एक हो जाओ। पवित्र क़ुर्आन के बड़े आदेश दो ही हैं - प्रथम एकेश्वरवाद एवं प्रेम और ख़ुदा की आज्ञाकारिता। द्वितीय - अपने भाइयों और मानवजाति से हमदर्दी। इन आदेशों को उसने तीन श्रेणियों पर विभाजित किया है जैसा कि योग्यताएं भी तीन प्रकार की ही हैं और वह आयत यह है :-

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَ الْاِحْسَانِ وَ اِيْتَآئِ ذِى الْقُرْبٰى (अन्नहल-91)

प्रथम तौर पर इस आयत के अर्थ ये हैं कि तुम अपने स्रष्टा के साथ उसके अनुसरण में न्याय पद्धति का ध्यान रखो, अत्याचारी न बनो। अत: जैसा कि वास्तव में उसके अतिरिक्त कोई भी उपासना के योग्य नहीं, कोई भी प्रेम के योग्य नहीं, कोई भी भरोसे के योग्य नहीं, क्योंकि सृजन, स्वयं क़ायम रहने वाला तथा दूसरों को क़ायम रखने वाला तथा प्रतिपालन की विशेषता के कारण प्रत्येक अधिकार उसी का है। इसी प्रकार तुम भी उसके साथ किसी को उसकी उपासना में तथा उसके प्रेम में, उसके प्रतिपालन में भागीदार न बनाओ। यदि तुमने इतना कर लिया तो यह न्याय है जिसे दृष्टिगत रखना तुम्हारा कर्त्तव्य था।

फिर यदि इस पर उन्नति करना चाहो तो इहसान की श्रेणी है और वह यह है कि तुम उसकी श्रेष्ठताओं को इस प्रकार मानने लगो और उसके आगे अपनी उपासनाओं में ऐसे सभ्य बन जाओ और उसके प्रेम में ऐसे आसक्त हो जाओ कि जैसे तुम ने उसकी श्रेष्ठता और प्रताप तथा उसके अपूर्व और अवनति रहित सौन्दर्य को देख लिया है।

तत्पश्चात् "ईताइज़िल क़ुर्बा" की श्रेणी है और वह यह है कि तुम्हारी उपासना और तुम्हारा प्रेम और तुम्हारी आज्ञाकारिता से बनावट और कृत्रिमता पूर्णतया दूर हो जाए और तुम उसे हार्दिक संबंध से स्मरण करो कि जैसे तुम अपने पिताओं को स्मरण करते हो

और तुम्हारा प्रेम उस से ऐसा हो जाए कि जैसे बच्चा अपनी प्यारी मां से प्रेम रखता है।

और दूसरे तौर पर जो सहानुभूति मानव जाति से सम्बद्ध है उस आयत के अर्थ ये हैं कि अपने भाइयों और मानवजाति से न्याय करो और अपने अधिकारों से अधिक उन से कुछ विरोध न करो और न्याय पर दृढ़ रहो।

और यदि इस श्रेणी से उन्नति करना चाहो तो इस से आगे इहसान की श्रेणी है और वह यह है कि तू अपने भाई की बुराई के मुकाबले पर भलाई करे तथा उसके कष्ट पहुंचाने के बदले में तू उसको आराम पहुंचाए तथा सहानुभूति और उपकार के तौर पर सहायता करे।

तत्पश्चात् "ईताइज़िल क़ुर्बा" (ایتاء ذی القربیٰ) की श्रेणी है और वह यह है कि तू जितनी अपने भाई से नेकी करे या जितनी मानवजाति से हमदर्दी करे उस से कोई और किसी प्रकार का उपकार अभीष्ट न हो अपितु स्वभाविक तौर पर बिना किसी स्वार्थ के वह तुझ से जारी हो। जैसी तीव्रता रिश्तेदारी के जोश से एक स्वजन दूसरे स्वजन के साथ नेकी करता है। अत: यह नैतिक उन्नति की अन्तिम विशेषता है कि जनता की हमदर्दी में कोई इच्छा उद्देश्य या स्वार्थ मध्य में न हो अपितु भ्रातृत्व, मानव निकटता का जोश उस उच्च श्रेणी पर विकास प्राप्त कर ले कि स्वयं ही बिना किसी आडम्बर के और बिना किसी इच्छा रखने के किसी प्रकार की कृतज्ञता या दुआ अथवा अन्य किसी प्रकार के बदले के वह नेकी मात्र स्वाभाविक जोश से जारी हो।

सज्जनो ! अपने सिलसिले के भाइयों से जिनका इस पुस्तक में उल्लेख है उस व्यक्ति के अपवाद के साथ कि उसके बाद उसका खण्डन कर दे विशेष तौर पर प्रेम रखो तथा जब तक किसी को न देखो कि वह इस सिलसिले से किसी विरोधी कर्म या कथन से बाहर हो गया, तब तक उसे अपना एक अंग समझो परन्तु व्यक्ति कपट के साथ जीवन व्यतीत करता है तथा अपने वचन भंग करने अथवा किसी प्रकार के अन्याय और अत्याचार से अपने किसी भाई को कष्ट पहुंचाता है या वह बैअत के वचन के विपरीत गतिविधियों और भ्रमों से नहीं रुकता तो वह अपने दुष्कर्म के कारण इस सिलसिले से बाहर है उसकी परवाह न करो।

चाहिए कि इस्लाम का पूर्ण चित्र तुम्हारे अस्तित्व में प्रकट हो और तुम्हारे नत मस्तकों

पर सज्दों के लक्षण दिखाई दें और ख़ुदा तआला की महानता तुम में स्थापित हो। यदि क़ुर्आन और हदीस से तुलना में बौद्धिक तर्कों का एक संसार देखो तो उसे कदापि स्वीकार न करो तथा निश्चय ही समझो कि बुद्धि ने ठोकर खाई है। एकेश्वरवाद पर दृढ़ रहो तथा नमाज़ के पाबन्द हो जाओ। और अपने वास्तविक स्वामी (ख़ुदा) के आदेशों को प्राथमिकता दो وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ (आले इमरान - 103) और इस्लाम के लिए समस्त कष्ट उठा लो और तुम पर मुसलमान होने की अवस्था में मृत्यु आए।

बाह्य साक्ष्य

पुस्तक की समाप्ति पर हमें कुछ साक्ष्यें मिलीं। उन्हें उचित समझ कर किताब के साथ सम्मिलित कर दिया।

(1) यह कि 'कोहनूर' 1, अगस्त 1891 ई. और 'नूर अफ़्शां' 30 जुलाई 1891 ई. में 'अख़बार-ए-आम' के हवाले से लिखा है कि वर्तमान समय में अमरीका के एक बड़े पादरी साहिब पर वहां के लोगों ने कुफ्र का आरोप लगाया है। कुफ्र का कारण यह है कि उसी मसीह के चमत्कार और शारीरिक तौर पर मसीह के जीवित होने का विश्वास नही है। वर्णन किया गया है कि एक बड़ा पादरी उसी सम्प्रदाय में से है कि जो ईसासयों की इस आस्था से विमुख हो गया है कि मसीह जीवित है और पुन: संसार में आएगा। अत: यह एक बाह्य साक्ष्य है जो ख़ुदा तआला ने इस ख़ाकसार के दावे पर स्थापित की और ईसाइयों के एक अन्वेषक पादरी से जो पद की दृष्टि से एक बड़ा पादरी है वही इक़रार कराया जिसके बारे में ख़ाकसार को इल्हाम द्वारा सूचना दी गई। इस पर ख़ुदा का आभार।

(2) दूसरी यह कि एक बुज़ुर्ग हाजी हरमैन शरीफ़ैन अब्दुर्रहमान नामक जिन्होंने दो हज किए हैं जो स्वर्गीय हाजी मुन्शी अहमद जान साहिब निवासी लुधियाना जो मर्द पीर, जो लगभग अस्सी वर्ष की आयु रखते हैं के विशेष शिष्य हैं अपने एक स्वप्न में वर्णन करते हैं कि मैंने जिस दिन आप अर्थात इस ख़ाकसार से मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब से बहस हुई थी, रात को स्वप्न में देखा कि स्वर्गीय मियां

साहिब अर्थात् हाजी अहमद जान साहिब ने मुझे अपने मकान पर बुलाया है। अत: मैं गया और हम पांच लोग हो गए और सब मिलकर हज़रत ख़्वाजा उवैस क़रनी के पास गए। उस समय हज़रत उवैस क़र्नी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गुदड़ी पहने हुए थे फिर वहां से हम सब और उवैस क़र्नी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरबार में पहुंचे तथा उवैस क़र्नी ने वह गुदड़ी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने रख दी और कहा कि आज इस गुदड़ी का अपमान हुआ तथा उसका मान आप के अधिकार में है। आप ही की ओर से थी, मैं केवल दूत था तब मैंने दृष्टि उठा कर देखा तो क्या देखता हूं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दायीं ओर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ तथा सहाबा और बाईं ओर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बैठे थे और सामने आप अर्थात् यह विनीत खड़ा है तथा एक ओर मौलवी मुहम्मद हुसैन खड़ा है। उस समय हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में वर्णन किया कि यदि अल्लाह तआला की यह आदत होती कि वह मृत्यु प्राप्त लोगों को दोबारा संसार में भेजता और मैं भेजा जाता तो मुझ से भी संसार के लोग इसी प्रकार का व्यवहार करते जैसा कि इसके साथ (अर्थात् इस विनीत के साथ)। फिर स्वर्गीय मियां साहिब ने मुझ से कहा कि हज़रत ईसा के बालों को देख कर मैंने उनके सर के बालों पर हाथ फेरा तो वे सीधे हो गए और जब हाथ उठाया तो घुंघराले हो गए। फिर मियां साहिब ने कहा कि देखो उनकी आंखों की ओर जब मैंने देखा तो आंखें शरबती थीं और रंग नितान्त श्वेत जो देखा नहीं जा रहा था फिर मियां साहिब ने कहा कि ईसा अलैहिस्सलाम का यही हुलिया है परन्तु वह मसीह मौऊद जिसके आने का वादा था उसका हुलिया वही है जो तुम देखते हो और आप की ओर संकेत किया अर्थात् इसी विनीत की ओर। फिर मैं जाग गया तथा हृदय पर इस स्वप्न का प्रभाव विद्युत तरंग की भांति पाया।

(3) तृतीय यह कि आदरणीय मियां अब्दुल हकीम ख़ान साहिब अपनी पुस्तक 'ज़िकरुल हकीम' के पृष्ठ 38 में लिखते हैं कि मैं सितम्बर माह 1890 ई. में मौसमी

छुट्टियों के अवसर पर तरावड़ी में ठहरा हुआ था। वहां मैंने निरन्तर तीन या चार बार ईसा अलैहिस्सलाम को स्वप्न में देखा तथा एक बार ऐसा हुआ कि मैंने स्वप्न में सुना कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पधारे हैं। मैं यह ख़बर सुन कर हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के दर्शन करने के लिए चला और जब आप की सभा में पहुंचा तो मैंने सब को सलाम किया और पूछा कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम किस स्थान पर विराजमान हैं। वहां हज़रत मिर्ज़ा यूसुफ़ बेग साहिब सामानवी जो मिर्ज़ा साहिब के शिष्यों में से हैं मौजूद थे। उन्होंने मुझे बताया। मैं सभ्यता के साथ मसीह अलै. की ओर चला परन्तु जब दोबारा दृष्टि उठाकर देखा तो मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब एक सुन्दर रोबदार चेहरे और शानदार रूप में विराजमान हैं। यह स्वप्न मैंने हाफ़िज़ अब्दुल ग़नी से जो तरावड़ी में एक मस्जिद का इमाम है वर्णन किया था और मिर्ज़ा साहिब ने अभी मसीह होने का दावे का प्रचार नहीं किया था।

ये साक्ष्यें हैं जो पुस्तक की समाप्ति पर हमें मिलीं। इसी प्रकार एक आरोप भी इस पुस्तक की समाप्ति के पश्चात् प्रस्तुत किया गया और वह यह है कि मसीह दज्जाल के गधे से अभिप्राय ही रेलगाड़ी है तो इस रेल पर तो अच्छे-बुरे दोनों सवार होते हैं अपितु जिस से मसीह मौऊद होने का दावा है वह भी सवार होता है। फिर यह दज्जाल का गधा क्योंकर हो गया। उत्तर यह है कि स्वामित्व, क़ब्ज़ा, पूर्ण अधिकार तथा दज्जाली गिरोह के आविष्कार के कारण यह दज्जाल का गधा कहलाता है और यदि अस्थायी तौर पर कोई इससे लाभ उठाए तो इससे वह उसका मालिक या आविष्कारक नहीं बन सकता। दज्जाल के गधे (خرِ دجّال) की संलग्नता स्वामित्व की है। फिर यदि ख़ुदा तआला दज्जाल के स्वामित्वों तथा उत्पादों में से भी मोमिनों को लाभ पहुंचाए तो इसमें क्या हानि है? क्या पैग़म्बर काफ़िरों के स्वामित्व और उत्पादों से लाभान्वित नहीं होते थे। हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अधिकतर ख़च्चर की सवारी करते थे हलांकि हदीसों से सिद्ध होता है कि गधे से घोड़ी का मिलान निषिद्ध है। इसी प्रकार के बहुत से उदाहरण पाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त जब कि मसीह मौऊद दज्जाल का वधिक है अर्थात्

आध्यात्मिक तौर पर तो हदीस के अनुसार مَن قَتَلَ قَتِيْلًا जो कुछ दज्जाल का है वह मसीह का है। इसके अतिरिक्त मुस्लिम की हदीस में जो अबू हुरैरा से रिवायत है - ईसा के आने की ये निशानियां लिखी हैं -

لينزلن ابن مريم حكمًا عدلًا فليكسرن الصليب وَلَيَقْتلن الْخِنْزِيْر وليضعن الجزية واليتركنّ القلاص فَلا يسعٰى عليها

अर्थात् ईसा मध्यस्थ न्यायकर्ता होने की अवस्था में उतरेगा, इस प्रकार से कि मुसलमानों के मतभेदों पर सच्चाई के साथ आदेश करेगा और पृथ्वी पर न्याय को स्थापित कर देगा, सलीब को तोड़ेगा, सुअरों का वध करेगा और जिज़िया को उठा देगा और उसके आने का एक निशान यह होगा कि जवान ऊंटनियां जो भार उठाने तथा सवारी का भली भांति काम देती हैं छोड़ दी जाएंगी, फिर उन पर सवारी नहीं की जाएगी। अत: स्पष्ट हो कि यह रेलगाड़ी की ओर संकेत है जिसने समस्त सवारियों से मानवजाति को लगभग अवकाश दे दिया है जो समस्त संसार के लगभग सत्तर हज़ार मील में फिर गई है और हिन्दुस्तान के सोलह हज़ार मील में। चूंकि अरब में उच्च श्रेणी की सवारी जो एक अरबी के पूरे घर को उठा सकती है ऊंटनी की सवारी हैं जो बोझा ढोने और यात्रा तय करने में समस्त सवारियों से बढ़कर है। इसलिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसी की ओर संकेत किया ताकि श्रेष्ठ की चर्चा करने से निम्न स्वयं उसके संदर्भ में आ जाए। अत: फ़रमाया कि मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव के समय ये सब सवारियां महत्वहीन हो जाएंगी और उनकी ओर कोई ध्यान नहीं देगा अर्थात् संसार में एक नवीन सवारी अस्तित्व में आ जाएगी, जो अन्य समस्त सवारियों के महत्त्व को समाप्त कर देगी। अब यदि सामान्यतया समस्त लोग इस रेलगाड़ी पर सवार न हों तो यह भविष्यवाणी अपूर्ण रहती है।

यहां यह भी स्पष्ट है कि मुस्लिम की हदीस से जो फ़ातिमा बिन्त क़ैस से रिवायत है सिद्ध होता है कि दज्जाल हिन्दुस्तान से निकलने वाला है जिसका गधा वाष्पशक्ति से चलेगा जैसे बादल जिसके पीछे वायु होती है और इसी प्रकार मसीह भी प्रथम इसी देश में प्रकट होगा यद्यपि बाद में यात्री के तौर पर किसी अन्य देश दमिश्क इत्यादि

में नुज़ूल करे। 'नुज़ूल' का शब्द जो दमिश्क के साथ लगाया गया है स्वयं सिद्ध कर रहा है कि दमिश्क में उसका आना यात्री के रूप में होगा। और वास्तविक प्रकटन किसी अन्य देश में और स्पष्ट है कि जिस स्थान पर दज्जाल प्रकट हो उसी स्थान पर मसीह का आना आवश्यक है। क्योंकि मसीह दज्जाल के लिए भेजा गया है और यह भी उसी हदीस से सिद्ध होता है कि दज्जाल स्वयं नहीं निकलेगा अपितु उसका कोई समरूप निकलेगा तथा हदीस के शब्द ये हैं -

الا انه فی بحر الشام و بحر الیمن لا بل من قبل المشرق
ماھو و اَوْھٰی بیدہ الَی الْمَشرق رواہُ مُسلم

अर्थात् सावधान हो। क्या दज्जाल सीरिया के सागर में है या यमन के सागर में। नहीं अपितु वह पूरब की ओर से निकलेगा। नहीं वह अर्थात् वह नहीं निकलेगा। अपितु उसका समरूप निकलेगा तथा पूरब की ओर संकेत किया। इस हदीस से सिद्ध होता है कि तमीमदारी का विचार तो यह था कि दज्जाल सीरिया के सागर में है अर्थात् उस ओर किसी द्वीप में, क्योंकि तमीम नसरानी होने के युग में अधिकतर सीरिया देश की ओर जाता था परन्तु हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस विचार का खण्डन कर दिया और फ़रमाया कि वह पूरब की किसी विशेष दिशा से निकलेगा तथा पूर्वी देशों में हिन्दुस्तान सम्मिलित है। यहां यह भी स्मरण रहे कि इस तमीमदारी की ख़बर की पुष्टि के बारे में ऐसे शब्द हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुख से कदापि नहीं निकले जो इस बात को सिद्ध करते हों कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस तमीमदारी के दज्जाल का अस्तित्व स्वीकार कर लिया था अपितु इस बात की पुष्टि पाई जाती है कि दज्जाल मदीना मुनव्वरा और श्रेष्ठ मक्का में प्रवेश नहीं करेगा। इस के अतिरिक्त यह सिद्ध नहीं होता कि यह पुष्टि वह्यी की दृष्टि से है और जानने वाले इस बात को भली भांति जानते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिन ख़बरों तथा वर्णित वृत्तान्तों की पुष्टि करते थे उसके लिए यह आवश्यक नही होता था कि वह पुष्टि वह्यी की दृष्टि से हो अपितु प्राय: मात्र ख़बर देने वाले की विश्वसनीयता के

विचार से पुष्टि कर लिया करते थे। अत: कई बार यह संयोग हुआ होगा कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी गुप्तचर की सूचना को सही समझा तत्पश्चात् वह सूचना ग़लत निकली अपितु किसी समय किसी गुप्तचर के विश्वास पर यह सोचा गया कि शत्रु चढ़ाई करने वाला है। पहल के तौर पर उस पर चढ़ाई कर दी गई, परन्तु अन्त में वह सूचना ग़लत निकली। अंबिया मानवीय आवश्यक वस्तुओं से पूर्णतया पृथक नहीं किए जाते हां ख़ुदा की वह्यी के समझने में सुरक्षित और मा'सूम होते हैं। अत: तमीमदारी वाला यह वृत्तान्त जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुना कदापि सिद्ध नहीं होता कि वह्यी की दृष्टि से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस वृत्तान्त की पुष्टि की तथा हदीस में एक शब्द भी ऐसा नहीं कि इस विचार को सिद्ध कर सके। अत: स्पष्ट है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शब्दों से इस वृत्तान्त की जितनी पुष्टि पाई जाती थी। वह पुष्टि वह्यी के अनुसार कदापि नहीं अपितु मात्र बौद्धिक तौर पर विश्वास वर्णन कर्त्ता की दृष्टि से है क्योंकि तमीमदारी इस वृत्तान्त के वर्णन करने के समय मुसलमान हो चुका था और इस्लाम स्वीकार करने के कारण इस योग्य था कि उसके बयान को विश्वास और सम्मान की दृष्टि से देखा जाए।

واللّٰہ اعلم بالصواب وھذا اٰخِرُ ما اردنا فی ھذا الباب

والحمد لِلّٰہِ اوَّلًا وَّاٰخِرًا والیہ المرجع والمآب

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली

बैअत के लिए तत्पर लोगों की सेवा में आवश्यक निवेदन

हे मोमिन भाइयो! अल्लाह तआला अपने कलाम से आपकी सहायता करे। आप सब सज्जनों पर जो इस ख़ाकसार से शुद्ध रूप से ख़ुदा को प्राप्त करने की अभिलाषा से बैअत करने की इच्छा रखते हैं * स्पष्ट हो कि दयालु और प्रतापी ख़ुदा

* आज की तिथि जो 4 मार्च 1889 ई. है 25 मार्च तक यह ख़ाकसार मुहल्लाह जदीद, लुधियाना में ठहरा हुआ है इस अवधि में यदि कोई सज्जन आना चाहें तो लुधियाना में 20 मार्च के बाद आ जाएं और यदि यहां आना हानि और कष्ट का कारण हो तो 25 मार्च के पश्चात् कोई जिस समय चाहे क़ादियान में सूचित करने के पश्चात् बैअत करने के लिए उपस्थित हो जाए, परन्तु जिस उद्देश्य के लिए बैअत है अर्थात् वास्तविक संयम धारण करना तथा सच्चा मुसलमान बनने के लिए प्रयास करना। इस उद्देश्य को भली भांति स्मरण रखे और इस भ्रम में नहीं पड़ना चाहिए कि यदि संयम और सच्चा मुसलमान बनना पहले ही से शर्त है तो इसके पश्चात् बैअत की क्या आवश्यकता है अपितु स्मरण रखना चाहिए कि बैअत का उद्देश्य यह है कि ताकि वह संयम प्राथमिक अवस्था में दिखाने और बनावट के तौर से धारण किया जाता है दूसरा रूप धारण करे तथा सदात्मा पुरुषों के ध्यान और वलियों के आकर्षण से स्वभाव में प्रवेश कर जाए तथा उसका भाग बन जाए और हृदय में वह ताक़ वाला प्रकाश उत्पन्न हो जाए कि जो बन्दगी और ख़ुदाई के परस्पर घनिष्ट संबंध से पैदा होता है जिसे सूफी लोग दूसरे शब्दों में रूहुल कुदुस भी कहते हैं, जिसके पैदा होने के बाद ख़ुदा तआला की अवज्ञा स्वाभाविक तौर

के इल्क़ा के द्वारा (जिसकी इच्छा है कि मुसलमानों को नाना प्रकार के मतभेदों, कोलाहल, वैमनस्य, विवाद, उपद्रव द्वेष और बैर से जिसने उन्हें भाग्यहीन, निकृष्ट और कमज़ोर कर दिया है मुक्ति देकर فَاَصۡبَحۡتُمۡ بِنِعۡمَتِہٖۤ اِخۡوَانًا (आले इमरान-104) का चरितार्थ बनादे।) मुझे ज्ञात हुआ है कि बैअत के कुछ लाभ और फ़ायदे जो आप लोगों के लिए प्रारब्ध हैं इस व्यवस्था पर निर्भर हैं कि आप सब सज्जनों के शुभ नाम एक पुस्तक में पिता के नाम, निवास आस्थायी और स्थायी एक सीमा तक विवरण सहित (यदि संभव हो) लिखे जाएं और फिर जब वे लिखित नाम किसी अनुकूल संख्या तक पहुंच जाएं तो उन समस्त नामों की एक सूची तैयार करके

पर ऐसी बुरी मालूम होती है जैसी वह स्वयं ख़ुदा तआला की दृष्टि में बुरी और घृणित है और न केवल अल्लाह तआला की प्रजा से पृथकता प्राप्त होता है अपितु वास्तविक स्रष्टा और स्वामी के अतिरिक्त प्रत्येक मौजूद (आस्ति) को नास्तिक समझकर काल्पनिक मृत्यु की श्रेणी प्राप्त होती है। अत: इस प्रकार के पैदा होने के लिए प्रारंभिक संयम जिसे सत्याभिलाषी अपने साथ लाता है शर्त है जैसा कि अलजलाह तआला ने पवित्र क़ुर्आन का मुख्य उद्देश्य वर्णन करने में फ़रमाया है - هُدًى لِّلۡمُتَّقِیۡنَ यह नहीं फ़रमाया कि هُدًى لِّلۡفَاسِقِیۡنَ या هُدًا لِّلۡكَافِرِیۡنَ प्रारंभिक संयम प्राप्ति से संयमी का शब्द मनुष्य पर चरितार्थ हो सकता है, वह एक स्वाभाविक भाग है कि जो सद्स्वभाव लोगों की प्रकृति में रखा गया है तथा प्रथम प्रतिपालन उसका अभिभावक तथा अस्तित्त्व दाता है जिस से संयम का प्रथम जन्म है, परन्तु वह आन्तरिक प्रकाश जिसे रूहुल क़ुदुस से चरितार्थ किया गया है वह शुद्ध और पूर्ण बन्दगी तथा सर्वांगीण प्रतिपालन के पूरे जोड़ और संलग्नता से ثُمَّ اَنۡشَاۡنٰہُ خَلۡقًا اٰخَرَ (सूरह अलमोमिनून- 15) की पद्धति पर पैदा होता है तथा यह द्वितीय प्रतिपालन है जिससे संयमी दूसरा जन्म पाता है और फ़रिश्तों के पद पर पहुंचता है, तत्पश्चात तृतीय प्रतिपालन की श्रेणी है जिसे नवीन उत्पत्ति का नाम दिया जाता है जिस से संयमी ख़ुदा में लीन हो जाने के स्थान पर पहुंचता है और तृतीय उत्पत्ति पाता है। अत: विचार कर। इसी से।)

छपवा कर उसकी एक-एक प्रति समस्त बैअत कर्ताओं की सेवा में भेजी जाए और फिर जब दूसरे समय में नई बैअत करने वालों का एक पर्याप्त गिरोह हो जाए तो इसी प्रकार उनके नामों की भी सूची तैयार करके समस्त बैअत कर्ताओं अर्थात् बैअत में सम्मिलित लोगों की प्रकाशित की जाए और यह क्रम इसी प्रकार चलता रहे जब तक ख़ुदा का इरादा अपने प्रारब्ध अनुमान तक पहुंच जाए। यह व्यवस्था जिसके द्वारा सदात्माओं का भारी गिरोह एक ही लड़ी में पिरोया जाकर सामूहिक एकता की पद्धति में ख़ुदा की सृष्टि पर बड़ी साज-सज्जा के साथ उपस्थित होगा तथा अपनी सच्चाई की बहुमुखी रश्मियों को एक ही सरल रेखा में प्रकट करेगा। प्रतापवान ख़ुदा को बहुत प्रिय लगा है, परन्तु चूंकि यह कार्यवाही इसके अतिरिक्त सरलतापूर्वक और उचित प्रकार से सम्पन्न नहीं हो सकती कि बैअतकर्ता स्वयं अपनी क़लम से साफ तौरपर लिखकर अपना नाम, पता-निशान उपरोक्त विवरण सहित भेज दें। इसलिए प्रत्येक सज्जन को जो सच्चे हृदय और पूर्ण निष्कपटता से बैअत करने के लिए तत्पर हैं कष्ट दिया जाता है कि अपने विशेष पत्र द्वारा अपने पूरे-पूरे नाम, पिता का नाम, स्थायी या अस्थायी निवास से सूचित करें या अपने उपस्थित होने के समय ये समस्त विवरण लिखवा दें। स्पष्ट है कि ऐसी पुस्तक का सम्पादित और प्रकाशित होना जिस में समस्त बैअतकर्ताओं के नाम और पते इत्यादि लिखे हों इन्शाअल्लाह बहुत से हित और बरकतों का कारण होगा। इन में से एक सबसे बड़ी बात यह है कि इस के द्वारा बैअत करने वालों का बहुत शीघ्र परस्पर परिचय हो जाएगा तथा परस्पर पत्र-व्यवहार करने तथा लाभ पहुंचाने और लाभ प्राप्त करने के साधन निकल आएंगे और आमने-सामने न होते हुए भी परस्पर अच्छी दुआओं से याद करेंगे तथा इस परस्पर परिचय के अनुसार प्रत्येक अवसर पर परस्पर सहानुभूति कर सकेंगे और एक दूसरे की हमदर्दी में सच्चे और समरंग मित्रों की भांति व्यस्त हो जाएंगे तथा उनमें से प्रत्येक को अपने सहपंथी लोगों के नामों पर सूचित होने से मालूम हो जाएगा कि उसके आध्यात्मिक भाई संसार में कितनी संख्या में फैले हुए हैं और किन-किन परमेश्वर-प्रदत्त श्रेष्ठताओं से सम्मानित

हैं। अत: यह ज्ञान उन पर प्रकट करेगा कि ख़ुदा तआला ने इस जमाअत को कितने अद्भुत तौर पर तैयार किया है तथा कितनी तीव्रता और शीघ्रता से संसार में फैलाया है। यहां इस वसीयत का उल्लेख करना भी उचित मालूम होता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने भाई से पूर्ण सहानुभूति और प्रेमपूर्वक व्यवहार करे तथा सगे भाइयों से बढ़कर उनका सम्मान करे, उन से शीघ्र मैत्री करे तथा हार्दिक वैमनस्य को दूर कर ले और आन्तरिक तौर पर शुद्ध हो जाए तथा उनसे थोड़ा सा भी बैर और द्वेष न रखे परन्तु यदि कोई जान बूझ कर इन शर्तों का पालन न करे। जिनका 12, जनवरी 1889 ई. के विज्ञापन में उल्लेख है और अपनी धृष्टतापूर्ण गतिविधियों से न रुके तो वह इस सिलसिले से बहिष्कृत समझा जाएगा। यह बैअत का सिलसिला केवल संयमियों के गिरोह की प्राप्ति अर्थात् संयम स्वभाव लोगों की जमाअत एकत्र करने के लिए है ताकि ऐसे संयमियों का एक विशाल गिरोह संसार पर अपना शुभ प्रभाव डाले* और उन की एकता इस्लाम के लिए बरकत, श्रेष्ठता तथा शुभ परिणामों का कारण हो

---

* **हाशिया** :- इस जमाअत के शुभ प्रभाव से जिस प्रकार सामान्य जनता लाभान्वित होगी उसी प्रकार इस पवित्र हृदय जमाअत के अस्तित्व से ब्रिटिश सरकार के लिए नाना प्रकार के लाभों की कल्पना की जाएगी जिनसे इस सरकार को ख़ुदा तआला का कृतज्ञ होना चाहिए। इनमें से एक यह कि ये लोग सच्चे जोश और हार्दिक निष्कपटता से इस सरकार के शुभ चिन्तक और दुआ करने वाले होंगे क्योंकि इस्लामी शिक्षानुसार (जिसका अनुसरण इस जमाअत का मुख्य उद्देश्य है) प्रजा के अधिकारों के संबंध में इससे बढ़कर पाप की बात, दुष्टता, अन्याय और अपवित्र मार्ग नहीं कि मनुष्य जिस सरकार की छत्र-छाया में शान्ति और सुरक्षा के साथ जीवन व्यतीत करे और उसकी सहायता से अपने धार्मिक और सांसारिक उद्देश्यों की प्राप्ति का प्रयास कर सके उसी का अशुभचिन्तक और दुष्चिन्तक हो अपितु जब तक ऐसी सरकार का कृतज्ञ न हो तब तक ख़ुदा तआला का भी कृतज्ञ नहीं। फिर इस शुभ जमाअत की उन्नति से सरकार को दूसरा लाभ यह है कि उनका धार्मिक कर्तव्य अपराधों की रोक थाम करता है। अत: विचार करो और सोचो। (इसी से)

और वह बरकत एक कलिमा पर होने के इस्लाम की पवित्र और पुनीत सेवाओं में शीघ्र काम आ सकें तथा एक आलसी और कृपण तथा व्यर्थ मुसलमान न हों और न उन मूर्ख लोगों की तरह जिन्होंने अपनी फूट और बिगाड़ के कारण इस्लाम को बहुत हानि पहुंचाई है और उनके सुन्दर चेहरे को अपनी पापग्रस्त अवस्थाओं से धब्बा लगाया है और न ऐसे लापरवाह भिक्षुओं और एकान्त वासियों की तरह जिन्हें इस्लामी आवश्यकताओं की कुछ भी ख़बर नहीं और अपने भाइयों की सहानुभूति से कुछ मतलब नहीं और लोगों की भलाई के लिए कुछ जोश नहीं अपितु वे ऐसी क़ौम के हमदर्द हों कि ग़रीबों की शरण हो जाएं, अनाथों के लिए बतौर बापों के बन जाएं तथा इस्लामी कामों को पूर्ण करने के लिए एक सच्चे प्रेमी की भांति प्राण न्योछावर करने को तैयार हों और इस बात के लिए हर प्रकार से प्रयास करें कि संसार में उनकी सामान्य बरकतें फैलें तथा प्रत्येक हृदय से ख़ुदा के प्रेम, प्रजा की भलाई, ख़ुदा का पवित्र झरना निकल कर तथा एक स्थान पर एकत्र होकर एक दरिया के रूप में बहता हुआ दृष्टिगोचर हो। ख़ुदा तआला का इरादा है कि वह मात्र अपनी कृपा तथा विशेष दया से इस ख़ाकसार की दुआओं और इस विनीत के ध्यान को उनकी पवित्र योग्यताओं के प्रकटन और प्रगटन का माध्यम ठहराए। तथा उस पुनीत और प्रतापवान हस्ती ने मुझे जोश प्रदान किया है ताकि मैं इन अभिलाषियों के आन्तरिक प्रशिक्षण में व्यस्त हो जाऊं और उनकी मलिनताओं को दूर करने के लिए रात-दिन प्रयासरत रहूं और उनके लिए वह प्रकाश मांगूं जिस से मनुष्य मनोवृत्ति और शैतान की गुलामी से आज़ाद हो जाता है और स्वाभाविक तौर पर ख़ुदा तआला के मार्गों से प्रेम करने लगता है और उनके लिए वह रूहुल क़ुदुस मांगूं जो पूर्ण प्रतिपालन और शुद्ध बन्दगी के मिलने से पैदा होती है और उस दुष्टात्मा के नकारने से उनकी मुक्ति चाहूं कि जो तामसिक वृत्ति और शैतान के घनिष्ठ संबंध से जन्म लेती है। अत: ख़ुदा की दी हुई सामर्थ्य से आलसी और सुस्त नहीं रहूंगा तथा अपने मित्रों के सुधार हेतु विनती करने से जिन्होंने इस सिलसिले में दृढ़ता पूर्वक सम्मिलित होना स्वीकार किया है असावधान नहीं हूंगा अपितु उनके जीवन के लिए

मृत्यु तक से संकोच नहीं करूंगा तथा उनके लिए ख़ुदा तआला से वह आध्यात्मिक शक्ति चाहूंगा जिसका प्रभाव विद्युत लहर की भांति उनके सम्पूर्ण अस्तित्व में प्रवाहित हो जाए। मैं विश्वास रखता हूं कि उनके लिए जो सिलसिले में प्रवेश करके धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करेंगे। ऐसे ही होगा, क्योंकि ख़ुदा तआला ने इस समूह को अपना तेज प्रकट करने के लिए और अपनी शक्ति-प्रदर्शन के लिए पैदा करना फिर उन्नति देना चाहा है ताकि संसार में ख़ुदा के प्रेम और सच्ची तौबा, पवित्रता, वास्तविक नेकी, अमन और सदाचार और प्रजा से सहानुभूति को फैलाए। अत: यह समूह (जमाअत) उसका एक शुद्ध और निष्कपट समूह होगा तथा वह उसे स्वयं अपने कलाम से शक्ति प्रदान करेगा और उन्हें अपने जीवस से शुद्ध करेगा और उनके जीवन में एक पवित्र परिवर्तन करेगा। वह जैसा कि उसने अपनी भविष्यवाणियों में वादा फ़रमाया है इस समूह को बहुत बढ़ाएगा और सहस्त्रों सदात्माओं को उसमें दाखिल करेगा, वह स्वयं उसकी सिंचाई करेगा तथा उसे उन्नति देगा यहां तक कि उनकी अधिकता और बहुलता देखने में बड़ी अद्‌भुत हो जाएगी और वह उस दीपक की भांति जिसे ऊंचे स्थान पर रखा जाता है, संसार के चारों ओर अपना प्रकाश फैलाएंगे और इस्लामी बरकतों के लिए बतौर आदर्श के ठहरेंगे, वे इस सिलसिले के पूर्ण अनुयायियों को प्रत्येक प्रकार की बरकत में दूसरे समूहों (सम्प्रदायों) पर विजयी करेगा, उनमें प्रलय तक हमेशा ऐसे लोग पैदा होते रहेंगे जिन्हें मान्यता और सहायता प्रदान की जाएगी। उस प्रतापी और तेजस्वी ख़ुदा ने यही चाहा है, वह सामर्थ्यवान है जो चाहता है करता है, प्रत्येक शक्ति और क़ुदरत उसी को है :-

فالحمدُ لہٗ اوّلًا وّ اٰخرًا و ظاھرًا و بَاطنًا اسلمنا لہ ھو
مَوْلٰنا فی الدنیا و الاٰخِرہ نعم المولٰی و نعم النصیر۔

ख़ाकसार

ग़ुलाम अहमद - लुधियाना, मुहल्लाह, जदीद, आदरणीय मुन्शी हाजी अहमद जान साहिब (स्वर्गीय) के मकान से संलग्न

4 मार्च 1889 ई.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली

प्रचार कार्य पूर्ण करना

प्रचार का विषय जो ख़ाकसार ने 1, दिसम्बर 1888 ई. के विज्ञापन में प्रकाशित किया है जिसमें सत्याभिलाषियों को बैअत के लिए आमंत्रित किया है उसकी संक्षिप्त शर्तों की व्याख्या यह है - **प्रथम** - बैअत करने वाला सच्चे हृदय से इस बात का प्रण करे कि भविष्य में उस समय तक कि क़ब्र में दाख़िल हो जाए शिर्क से पृथक रहे। **द्वितीय** - यह कि झूठ, व्यभिचार, बुरी दृष्टि डालने और प्रत्येक दुराचार, दुष्चरित्रता, अन्याय, ग़बन, फ़साद और अवज्ञा से बचता रहेगा तथा वासना संबंधी आवेगों के समय उनसे पराजित नहीं होगा यद्यपि कैसी ही भावना का सामना हो। **तृतीय** - यह कि प्रतिदिन ख़ुदा और उसके रसूल के आदेशानुसार पांच समय की नमाज़ बिना अनुपस्थिति के अदा करता रहेगा तथा यथासंभव रात्रि के अन्तिम पहर की नमाज़ (तहज्जुद) पढ़ने और अपने नबी करीम स.अ.व. पर दरूद भेजने और प्रतिदिन अपने पापों की क्षमायाचना और पश्चाताप करने में नित्यता धारण करेगा तथा हार्दिक प्रेम से ख़ुदा तआला के उपकारों को स्मरण करके उसकी स्तुति और प्रशंसा को अपना नित्यकर्म बनाएगा। **चतुर्थ** - यह कि ख़ुदा की प्रजा को सामान्यत: और मुसलमानों को विशेषत: अपने तामसिक आवेगों से किसी प्रकार का अनुचित कष्ट नहीं देगा न मुख से, न हाथ से, न किसी अन्य प्रकार से। **पंचम** - यह कि प्रत्येक अवस्था शोक, सुख, दरिद्रता, समृद्धि, ख़ुदा की दी हुई धन-दौलत और विपत्ति में ख़ुदा तआला के साथ वफ़ादारी करेगा तथा प्रत्येक दशा में ख़ुदाई आदेश पर प्रसन्न रहेगा तथा उसके मार्ग में प्रत्येक अपमान और कष्ट को स्वीकार करने के लिए तत्पर रहेगा तथा किसी संकट के आने पर उससे विमुख नहीं होगा अपितु आगे क़दम बढ़ाएगा। **षष्टम** - यह कि रीति-रिवाज, लोभ-लालच के अनुसरण से पृथक रहेगा तथा पवित्र क़ुर्आन की सत्ता को पूर्णतया स्वयं पर स्वीकार कर लेगा

तथा ख़ुदा और रसूल के आदेशों को अपने प्रत्येक मार्ग में कार्य-प्रणाली बनाएगा। **सप्तम** - यह कि अहंकार और अभिमान पूर्णतया त्याग देगा तथा विनम्रता, विनीतता, सदाचार, शालीनता, और दीनता से जीवन व्यतीत करेगा। **अष्टम** - यह कि धर्म एवं धर्म का सम्मान और इस्लाम से सहानुभूति को अपने प्राण, अपने धन, अपने सम्मान, अपनी सन्तान तथा अपने प्रत्येक प्रियजन से अधिक प्रिय समझेगा। **नवम** - यह कि सामान्य मानवजाति की हमदर्दी में मात्र ख़ुदा के लिए व्यस्त रहेगा तथा यथाशक्ति अपनी ईश्वर प्रदत्त शक्तियों और ने'मतों से मानव जाति को लाभ पहुंचाएगा। **दशम** - यह कि इस विनीत से भ्रातृत्व का वचन मात्र ख़ुदा के लिए नेक बातों से आज्ञाकारिता के इक़रार के साथ उस पर मरते दम तक क़ायम रहेगा और इस वचन में ऐसे उच्च स्तर का होगा कि उसका उदाहरण सांसारिक रिश्तों और संबंधों तथा समस्त सेवकीय अवस्थाओं में न पाया जाता हो।

ये वे शर्तें हैं कि जो बैअत करने वालों के लिए आवश्यक हैं जिनका विवरण 1, दिसम्बर 1888 ई. के विज्ञापन में नहीं लिखा गया तथा इस बारे में आज तक जो इल्हाम हुए हैं वे ये हैं :-

اِذَا عَزَمْتَ فَتوکَّلْ عَلَی اللّٰہِ وَاصْنَعِ الْفُلْکَ بِاَعْیُنِنَا وَوَحْیِنَا
الَّذِیْنَ یُبَایِعُوْنَکَ اِنَّمَا یُبَایِعُوْنَ اللّٰہَ یَدُ اللّٰہِ فَوْقَ اَیْدِیْھِمْ

अर्थात् "जब तूने इस सेवा के लिए संकल्प किया तो ख़ुदा तआला पर भरोसा कर और यह नौका हमारी आंखों के सामने तथा हमारी वह्यी से बना। जो लोग तुझ से बैअत करेंगे वे तुझ से नहीं वरन् ख़ुदा से बैअत करेंगे। ख़ुदा का हाथ होगा जो उनके हाथों पर होगा।"

फिर उन दिनों के पश्चात् जब लोग मसीह मौऊद के दावे से अत्यधिक आज़मायश में पड़ गए तो ये इल्हाम हुए -

الذین تَابُوا وَاَصْلَحُوْا اُولٰئِکَ اَتُوبُ عَلَیْھِمْ وَاَنا التَّوَّابُ
الرَّحِیْم۔اُمم یَسَّرْنا لَھُمُ الْھُدٰی وامم حَقَّ عَلَیْھِمُ الْعَذَابَ

وَ يَمْكُرُوْنَ ويمكرُالله وَاللهُ خَيرِ الماكرين وَلَكَيْدُ الله اكبر۔ وان يَتّخذونك اِلّا هُزوًا اَهٰذا الَّذِى بَعثَ اللهُ۔ قُلْ ايُّها الْكُفَّار اِنّى مِنَ الصَّادِقِيْن۔ فَانْتَظِرُوْا اٰياتِى حَتّى حين سَنُريهِم اٰياتِنا فى الْاٰفاق وَفِى اَنْفُسِهِمْ حُجَّةٌ قَايِمَةٌ وفتحٌ مُّبِيْنٌ۔ اِنَّ اللهَ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ اِنَّ اللهَ لَا يَهْدى مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَابٌ۔ يريدون اَنْ يُّطْفِئُوْا نُورَ اللهِ بِاَفْواهِهم وَاللهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرون۔ نُرِيْدُ اَنْ نُنَزّلَ عليك اَسْرارًا مِن السَّمَآئِ و نُمزّقُ الْاَعداء كلّ مُمزّقٍ ونرى فرعون و هامان و جُنودهُما مَا كانوا يَحذَرُون۔ سلّطنا كلِا بًا عليك وغَيّظنا سباعًا مِن قولك وفتنّاك فُتُونا فَلا تَحْزَنْ علَى الَّذِى قَالُوْا اِنَّ رَبَّك لَبِالْمِرصاد۔ حكم الله الرحمان لخليفة الله السّلطان يؤتى له الملك العظيم و يفتح عَلٰى يَده الخزائن و تشرق الْارض بنو ربّها ذٰلك فضل الله و فى اعينكم عجيب

अर्थात् जो लोग तौबा करेंगे और अपनी स्थिति को सुधार लेंगे तब मैं भी उनकी ओर ध्यान दूंगा और मैं तौबा को बहुत स्वीकार करने वाला और बार-बार दया करने वाला हूं। कुछ गिरोह वे हैं जिनके लिए हमने मार्ग-दर्शन को आसान कर दिया और कुछ वे हैं जिन पर अज़ाब सिद्ध हुआ, वे कपट से काम ले रहे हैं और अल्लाह तआला भी उनके साथ वैसा ही कर रहा है और वह सब से उत्तम युक्तिवान है और उसकी युक्ति बहुत बड़ी है और तुझे उपहास का निशाना बनाते हैं। क्या यही है जो अवतरित हो कर आया है। उन्हें कह दे कि हे इन्कार करने वालो मैं सच्चों में से हूं तथा कुछ समय के पश्चात् तुम मेरे निशान देखोगे। हम उन्हें उनके आस-पास और स्वयं उन्हीं में अपने निशान दिखाएंगे। समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण किया जाएगा

और खुली-खुली विजय होगी। ख़ुदा तुम में निर्णय कर देगा। तथा कुछ समय के पश्चात् तुम मेरे निशान देखोगे। हम उन्हें उनके आस-पास और स्वयं उन्हीं में अपने निशान दिखाएंगे। समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण किया जाएगा और खुली-खुली विजय होगी। ख़ुदा तुम में निर्णय कर देगा। वह किसी झूठे सीमा से बढ़ने वाले का मार्ग-दर्शन करने वाला नहीं होता। वे चाहते हैं कि अल्लाह तआला के प्रकाश को बुझा दें परन्तु ख़ुदा उनसे पूरा करेगा यद्यपि इन्कारी लोग उसे पसन्द न करें। हमारी इच्छा यह है कि कुछ रहस्य हम तुझ पर आकाश से उतारें और शत्रुओं को टुकड़े-टुकड़े कर दें तथा फ़िरऔन और हामान और उनकी सेनाओं को वे बातें दिखाएं जिनसे वे डरते हैं। हमने कुत्तों (कुत्तों की प्रवृत्ति वाले लोगों) को तुझ पर लगा दिया और हिंसक जानवरों (पशुओं जैसी प्रवृत्ति के लोगों) को तेरी बात से क्रोध दिलाया और तुझे कठोर परीक्षा में डाल दिया। अत: तू उनकी बातों की कुछ चिन्ता न कर। तेरा रब्ब घात में है। वह ख़ुदा जो बहुत कृपालु है वह अपने बादशाह ख़लीफ़ा के लिए निम्नलिखित आदेश जारी करता है कि उसे एक विशाल देश प्रदान किया जाएगा तथा (सांसारिक) ज्ञान और अध्यात्म ज्ञान के भंडार उसके हाथ पर खोले जाएंगे और पृथ्वी अपने रब्ब के प्रकाश से प्रकाशित हो जाएगी। यह ख़ुदा तआला की कृपा है और तुम्हारी आखों में अद्‌भुत। यहां बादशाहत से अभिप्राय संसार की बादशाहत नहीं और न ख़िलाफ़त से अभिप्राय संसार की ख़िलाफ़त अपितु जो मुझे दिया गया है वह प्रेम के देश की बादशाहत और ख़ुदा को पहचानने के ज्ञान के भंडार है जिन्हें ख़ुदा की कृपा से इतने प्रदान करेगा कि लोग लेते-लेते थक जाएंगे।

इकत्तीस जुलाई सन् 1891 ई. का (लुधियाना में) शास्त्रार्थ
तथा
हज़रत मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी का घटनाओं के विपरीत विज्ञापन

मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी का विज्ञापन दिनांक 1, अगस्त 1891 ई. मेरी दृष्टि से गुज़रा, जिसे देखने से मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि मौलवी साहिब ने कैसी धृष्टता से अपने उस विज्ञापन को सर्वथा असत्य और मनघडंत बातों से भर दिया है, वह नितान्त चतुराई से शर्तों को भंग करने का आरोप मुझ पर लगाते हैं। परन्तु वास्तविकता जिसे अल्लाह तआला भली भांति जानता है यह है कि वह एक दिन भी निर्धारित शर्तों पर स्थापित नहीं रह सके। अत: वे प्राय: निर्धारित शर्तों के विपरीत प्रथम शास्त्रार्थ का विषय अपने हाथ से लिख कर फिर दूसरे से लिखवाकर और जगह-जगह न्यूनाधिक करके दूसरे लेख को देते रहे हैं और यदि उनका प्रथम लेख तथा दूसरे लेख की तुलना की जाए तो स्पष्ट तौर पर प्रकट होगा कि दूसरे लेख में बहुत कुछ परिवर्तन है जो सच्चाई और ईमानदारी से सर्वथा दूर था। यह उनकी **प्रथम वादा ख़िलाफ़ी** है जो अन्त तक उन से प्रकट होता रहा है फिर दूसरी वादा ख़िलाफ़ी यह कि उन्हेंने पहले ही से यह आदत बना ली कि सुनाते समय लेख से हटकर बहुत कुछ उपदेश के तौर पर केवल मौखिक तौर पर कहते रहे जिसका कोई नामोनिशान नहीं था। जब उन्होंने अपना वह लेख जो 76 पृष्ठ का था सुनाया तो शर्तों को पूर्णरूप से तोड़कर मौखिक उपदेश आरंभ कर दिया और उन मौखिक वाक्यों में से एक यह भी था कि मैं हदीसों के विरोधाभास को पल भर में दूर कर सकता हूं, अभी दूर कर सकता हूं तथा इसके साथ ही बहुत सी तीव्रता और सभ्यता के विरुद्ध तथा चालाकी की बातें थीं जिनमें उन्हें बार-बार यह बताना अभीष्ट था

कि यह व्यक्ति नासमझ है, अनाड़ी है, अशिक्षित है परन्तु इस विनीत ने उनकी इन समस्त हृदय को कष्ट पहुंचाने वाली बातों पर धैर्य से काम लिया और उनकी इस वादा ख़िलाफ़ी करने पर भी कोई विरोध उचित न समझा ताकि बहस से पलायन करने या बहस को स्थगित करने का कोई बहाना हाथ न आ जाए। वह क़सम खाकर वर्णन करें मैं स्वीकार कर लूंगा कि क्या उनके इस वचन भंग करने से पूर्व वचन-भंग करने की कोई छोटी सी बात भी मेरी ओर से प्रकट हुई। यद्यपि मुझे ख़ूब मालूम था कि एक अनावश्यक बहस लम्बी होती जा रही है तथा इसके बावजूद कि पूछी गई बातों का उत्तर संतोषजनक और पर्याप्त दिया गया है फिर भी मौलवी साहिब मूल बहस को टालने के उद्देश्य से प्रारंभिक बातों को निरर्थक तौर पर लम्बा करते जा रहे हैं, परन्तु मैं इस बात से डरता ही रहा कि यदि मैंने कुछ भी बात की तो उसका परिणाम यह होगा कि मौलवी साहिब एक बहाना बना कर अपने घर का मार्ग पकड़ेंगे। उपस्थितगण जो मेरे और मौलवी साहिब के शास्त्रार्थों को देखते रहे मात्र ख़ुदा के लिए साक्ष्य दे सकते हैं कि मैंने उनकी गालियों पर भी जो मेरे सामने उनसे प्रकट होती रहीं बहुत धैर्य रखा और उन्होंने बार-बार मेरा नाम अशिक्षित, अनाड़ी और नासमझ रखा तो मैंने अपने हृदय को समझाया कि सत्य तो है कि सर्वज्ञ ख़ुदा के अतिरिक्त कौन है जो निपुण कहला सकता है और यदि उन्होंने मुझे झूठ गढ़ने वाला कहा तो मैंने अपने हृदय को सांत्वना दी कि पहले भी ख़ुदा तआला के पवित्र नबियों को यही कहा गया है और यदि उन्होंने मुझे झूठा-झूठा कह कर पुकारा तो मैंने अपने हृदय पर पवित्र क़ुर्आन की आयतें प्रस्तुत कीं कि देख पहले भी सच्चे (नबी) झूठा-झूठा करके पुकारे गए हैं। अत: इसी प्रकार मैंने धैर्यपूर्वक ग्यारह दिन गुज़ारे तथा उनके अपशब्दों का पूरे शहर में शोर मच गया। जिस दिन उन्होंने छिहत्तर पृष्ठ का उत्तर सुनाया तथा बहुत कुछ अपशब्द और चतुराई की बातें लेख से हटकर वर्णन कीं तो उस समय मैंने एक विशाल समारोह के समक्ष जिसमें उनके घनिष्ठ मित्र मौलवी मुहम्मद हसन साहिब रईस लुधियाना भी थे, उन्हें कह दिया कि आज फिर आपने वादा ख़िलाफ़ी की और लेख से हट कर मौखिक उपदेश देना आरंभ

कर दिया। अब मुझे भी अधिकार है कि मैं भी अपना लेख सुनाते समय कुछ मौखिक उपदेश भी दूं परन्तु इसके बावजूद कि मुझे यह अधिकार प्राप्त हो गया था फिर भी मैंने उत्तर सुनाते समय उस अधिकार से एक दो वाक्य के अतिरिक्त कोई लाभ प्राप्त न किया। 31 जुलाई 1891 ई. को जब मैं उत्तर सुनाने के लिए गया तो जाते ही मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब के ढंग बदले हुए दिखाई दिए। उनकी प्रत्येक बात में टेढ़ापन प्रतीत होता था और असभ्यता का तो कोई अन्त ही न था। जब मैं दर्शकों के समक्ष अपना लेख पढ़ने लगा तो उन्होंने अनुचित हस्तक्षेप करना आरंभ किया, यहां तक कि एक बार अकारण व्यर्थ तौर पर कहने लगे कि तुमने किसी पुस्तक का नाम ग़लत पढ़ा है और ख़ुदा तआला जानता है कि इस विनीत ने कोई नाम ग़लत नहीं पढ़ा था। मौलवी साहिब को केवल अपनी डींगे मारना तथा ज्ञान प्रकट करना अभीष्ट था, जिसके आवेग में आकर उन्होंने मौखिक वार्तालाप का वचन कई बार भंग किया और जिस प्रकार पुल टूटने से पानी बड़े वेग से बहने लगता है इसी प्रकार उनका धैर्य टूटकर अहंकार पूर्ण भावनाओं का सैलाब जारी हुआ। बहुत समझाया गया कि हज़रत मौलवी साहिब आप से यह शर्त है कि आप मेरे भाषण के समय खामोश रहें जिस प्रकार मैं खामोश रहा, परन्तु उन्होंने धैर्य न रखा क्योंकि सत्य के रोब से उन पर सत्य छुपाने के लिए एक व्याकुलता छा रही थी। अन्तत: देखते ही देखते उनकी दशा भयानक हो गई परन्तु ख़ुदा का आभार कि इस समय में पूर्ण लेख सुनाया गया और अन्तिम भाग यह था कि अब यह आरंभिक बहस समाप्त की गई क्योंकि पूछी गई बातों का सविस्तार उत्तर दिया जा चुका और यह भी कहा गया कि यदि मौलवी साहिब के हृदय में और भी विचार शेष हैं तो अपनी पत्रिका द्वारा प्रकाशित करें। इस आरंभिक बहस को समाप्त करने का कारण यही था कि दोनों पक्षों के वर्णन बहुत लम्बे हो चुके थे अपितु दस भागों तक पहुंच चुके थे तथा इस छोटी और प्रारंभिक बहस में निरन्तर बारह दिन व्यय हो चुके थे और इस सम्पूर्ण बहस में मौलवी साहिब का बार-बार एक ही प्रश्न था कि अल्लाह की किताब और हदीस को मानते हो या नहीं जिसका उत्तर मौलवी साहिब को कई

बार बड़ी स्पष्टता के साथ दिया गया कि अल्लाह की किताब को बिना शर्त तथा हदीस को सशर्त मानता हूं और पुन: प्रश्न करने पर मूल उद्देश्य प्रकट कर दिया गया कि हदीस का वह भाग जो ख़बरों, वादों, कहानियों और अतीत की घटनाओं से संबंधित है इस शर्त के साथ स्वीकार किया जाएगा कि पवित्र क़ुर्आन द्वारा दी गई खबरों आदि का विरोधी न हो, परन्तु फिर भी मौलवी साहिब बार-बार अपने पर्चे में यही लिखते रहे कि अभी मेरा उत्तर नहीं आया जबकि उन का अधिकार केवल इतना था कि मेरा मत मालूम करें। जब मैं अपना मत व्यक्त कर चुका तो फिर उनका कदापि अधिकार न था कि अकारण वही बात बार-बार पूछें जिसका मैं पहले उत्तर दे चुका। इस ओर लोग बहुत तंग आ चुके थे और कुछ लोग जो दूर से मूल बहस सुनने के लिए आंए थे, जब उन्होंने देखा कि बारह दिनों तक मूल बहस का नामोनिशान तक सामने नहीं आया तो वे नितान्त निराश हो गए थे कि हमने व्यर्थ में दिन नष्ट किए। अत: इस हदीस के अनुसार من حسن اسلام المرءِ ترکہٗ مالا یعنیہ नितान्त विवश हो कर इस व्यर्थ बहस को बन्द करना पड़ा, यद्यपि मौलवी साहिब किसी प्रकार नहीं चाहते थे कि मूल बहस की ओर आएं और इस व्यर्थ बहस को समाप्त करें अपितु डराते थे कि अभी तो मेरे बनाए हुए नियम और भी हैं जिन्हें मैं इसके पश्चात् बहस के अन्तर्गत लाऊंगा और लोग कुढ़ते थे कि ख़ुदा आप के बनाए नियमों का सर्वनाश करे आप क्यों मूल बहस की ओर नहीं आते। अब पाठकगण समझ सकते हैं कि मौलवी साहिब की यह शिकायत कितनी तुच्छ है कि मुझे उत्तर लिखने के लिए अपना लेख नहीं दिया। स्पष्ट है कि जिस स्थिति में यह विनीत सार्वजनिक राय के अनुसार यह प्रारंभिक बहस समाप्त कर चुका था तो फिर मौलवी साहिब को लिखित उत्तर देने का क्यों अवसर दिया जाता यदि वह उत्तर लिखते तो फिर मेरी ओर से भी उत्तर का उत्तर होना चाहिए था। ऐसी स्थिति में यह क्रम कब और क्योंकर समाप्त हो सकता था। मैंने असमय इस प्रारंभिक बहस को समाप्त नहीं किया वरन् बारह दिन नष्ट करके तथा बहस के विषय को दस भागों तक पहुंचा कर तथा अधिकतर लोगों का शोर और शिकायत सुनकर विवश होकर

बहस को समाप्त किया और साथ ही यह भी कह दिया कि अब मूल बहस आरंभ करें मैं उपस्थित हूं परन्तु वह मूल बहस से तो ऐसे डरते थे जैसे एक बच्चा शेर से। और चूंकि प्रथम प्रश्न मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब की ओर से था। इसलिए यह मेरा अधिकार भी था कि मेरे उत्तर पर ही बहस समाप्त होती ताकि छ: पर्चे उनके और छ: पर्चे मेरे भी हो जाते। चूंकि मौलवी साहिब की नीयत अच्छी नहीं थी, इसलिए उन्होंने इस बहस की समाप्ति सुन कर जितना जोश दिखाया और जितना अक्खड़पन और असभ्यता का प्रदर्शन किया तथा उस उन्मादी अवस्था में उनके मुख से जितने असभ्य एवं अशिष्ट शब्द निकले वे सभी दर्शकगण जानते हैं। मौलवी साहिब ने एक यह भी चतुराई की कि अपनी जमाअत के लोगों के नाम गवाहों के तौर पर अपने विज्ञापन में लिख दिए ताकि लोग यह सोचें कि वह वास्तव में सच्चे हैं तभी तो इतने गवाह उनके बयान की पुष्टि करते हैं परन्तु यह कितनी बेईमानी है कि अपनी ही जमाअत को जो अपने समर्थक और सहायक और एक ही दावे में भागीदार हों उन्हें ही गवाह के तौर पर प्रस्तुत किया जाए। जबकि इस जल्से (अधिवेशन) में मध्यस्थ लोग भी तो मौजूद थे जिनका दोनों पक्षों से कोई संबंध न था। जैसे ख़्वाजा अहसन शाह साहिब आनरेरी मजिस्ट्रेट व महान रईस लुधियाना जो इस शहर के एक प्रसिद्ध, सम्माननीय और नामचीन रईस, सत्यनिष्ठ और ईमानदार व्यक्ति हैं तथा इसी प्रकार मुन्शी मीरां बख़्श साहिब एकाउंटेन्ट जो एक सम्माननीय अधिकारी, सुशील स्वभाव तथा अपने पद और वेतन की दृष्टि से अतिरिक्त सहायकों के बराबर हैं, इसी प्रकार हाजी शाहज़ादा अब्दुल मजीद खां साहिब, डाक्टर मुस्तफ़ा अली साहिब, ख़्वाजा मुख़्तार शाह साहिब रईस लुधियाना, ख़्वाजा अब्दुल क़ादिर शाह साहिब, मास्टर चिराग़ुद्दीन साहिब, मुन्शी मुहम्मद क़ासिम साहिब, मास्टर क़ादिर बख़्श साहिब, मियां शेर मुहम्मद खां साहिब झज्जरवाला तथा कई अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति भी मौजूद थे। इन समस्त आदरणीय रईसों, पदाधिकारियों और बुज़ुर्गों को गवाही से बाहर क्यों रखा गया और क्यों उनकी गवाहियां न डाली गईं जबकि केवल ख़्वाजा अहसन शाह साहिब रईस

आज़म की गवाही हज़ार सामान्य लोगों की गवाही के बराबर थी। इसका कारण यही था कि इन बुज़ुर्गों के बयान से मूल वास्तविकता की पोल खुलती थी। खेद कि मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब ने उन झूठी बातों के अतिरिक्त जो बहस के संबंध में वर्णन की गई थीं एक बाज़ारी झूठ है जो बहस से कुछ भी संबंध नहीं रखता झूठे तौर पर अपने विज्ञापन में लिख दिया। अत: वह इस विनीत के संबंध में अपने विज्ञापन में लिखते हैं कि मज्लिस से उठ खड़े हुए और गाड़ी में जो दरवाज़े से संलग्न खड़ी थी ऐसी शीघ्रता से हवा होकर भागे कि आपके साथी चलती गाड़ी पर दौड़ कर सवार हुए। इस झूठ का मैं इसके अतिरिक्त क्या उत्तर दूं कि झूठों पर कहूं या विज्ञापन में लिखित आप की ही बात को आप की सेवा में वापस कर दूं कि झूठे पर यदि हज़ार लानत नहीं तो पांच सौ ही सही। हज़रत वह गाड़ी मुन्शी मीरांबख़्श साहिब एकाउंटेन्ट की थी जो दरवाज़े पर खड़ी थी और वह स्वयं बहस के जल्से में विराजमान थे तथा वही उस पर सवार होकर आए थे। समस्त बाज़ार वाले इस बात के गवाह हैं। आदरणीय मुन्शी साहिब से मालूम कर लीजिए कि बहस के जल्से के स्थगित होने के समय उस पर कौन सवार हुआ था और क्या मैं अपने मकान तक धीमी गति से पैदल आया था या उस गाड़ी पर एक कदम भी रखा था। मेरे साथ उस समय शायद लगभग तीस लोग रहे होंगे जो सभी पैदल आए थे और जब हम अपने मकान के निकट पहुंच गए तो मुन्शी मीरां बख़्श साहिब गाड़ी पर सवार आ पहुंचे और खेद प्रकट किया कि मैं सवार होकर आया और आप पैदल आए। इतना अधिक झूठ बोला आश्चर्य की बात है क्या झूठ मौलवियों के ही भाग में आ गया है। मैं पहले भी लिख चुका हूं कि आप का वचन भंग करना नितान्त खेदनीय है। आप इस बात को मानते हैं कि आप से यह शर्त हो चुकी थी कि मौखिक बातचीत एक वाक्य तक भी न हो जो कुछ हो लिखित में हो जैसा कि आपने अपने विज्ञापन में भी लिख दिया है परन्तु आप को ज्ञात है कि आपने जानबूझ कर इस शर्त को तोड़ दिया और जब आप तोड़ चुके और वचन भंग करने के तौर पर लेख सुनाने के स्थान पर मौखिक उपदेश भी कर चुके। तब मैंने आप से कहा कि अब मौखिक

उपदेश देना मेरा भी अधिकार होगा। यदि मैंने लेख सुनाने के समय में कुछ वाक्य मौखिक भी कहे तो क्या यह वचन भंग करना था अथवा आपके वचन भंग करने का बदला था, जिसके बारे में मैं वादा कर चुका था। हज़रत मौलवी मुहम्मद हसन साहिब जो रईस और आप के मित्र हैं जिनके मकान पर आप ने यह वचन भंग किया था। यदि मेरे सामने क़सम खा कर इस बयान का इन्कार कर दें तो फिर मैं इस आरोप से अलग हो जाऊंगा अन्यथा आप नाराज़ न हों, आप नि:सन्देह वचन-भंग करने जैसे अपराध के कई बार दोषी हुए हैं और अहंकार से भरा हुआ जोश आपको इस अपराध का दोषी बनाता रहा। अन्तिम दिन भी आपने यही हरकत की तथा पशुतापूर्ण आक्रोश इसके अतिरिक्त हुआ जिसके कारण आप से, पवित्र क़ुर्आन की आयत के आदेशानुसार, पूर्णतया मुख फेर लेना अनिवार्य हुआ तथा आप को उत्तर की प्रतिलिपि नहीं दी गई। महानुभाव ! आपके एक-एक शब्द में अहंकार, अभिमान भरा हुआ है और एक-एक वाक्य से انا خیر منہ (मैं उससे उत्तम हूं) की दुर्गन्ध आ रही है। भला एक किताब के नाम की गलती का आरोप लगाना क्या यही सभ्यता थी और वह भी अधम स्वभाव मुल्लाओं के समान सर्वथा झूठ। यदि मैं चाहता तो आपकी सर्फ़ व नहव (व्याकरण) भी उसी समय लोगों को दिखा देता परन्तु यह कमीनगी का व्यवहार मुझ से नहीं हो सकता था। मैं देखता हूं और विश्वास रखता हूं कि यदि आप अपने इस द्वेष और अधम विचारों से तौबा नहीं करेंगे तो ख़ुदा तआला जैसा कि अनादि काल से उसका नियम है आप के ज्ञान की भी क़लई खोल देगा और आपको आपका असली चेहरा दिखा देगा। आप जिस समय इस विनीत के बारे में यह कहते हैं कि यह व्यक्ति अज्ञानी, अनाड़ी, मूर्ख और झूठा है तो इन चतुराइयों से आपका उद्देश्य यह होता है ताकि लोगों के मस्तिष्क में यह बैठा दें कि मैं बड़ा विद्वान, निपुण और ज्ञानवान, अध्यात्म ज्ञानी और सत्यनिष्ठ हूं परन्तु अपने मुख से मनुष्य को कोई पद नहीं मिल सकता जब तक आकाशीय प्रकाश उसके साथ न हो और जिस ज्ञान के साथ आकाशीय प्रकाश नहीं वह ज्ञान नहीं वरन् मूर्खता है, वह प्रकाश नहीं अंधकार है, वह मज्जा नहीं हड्डी है। हमारा धर्म आकाश

से आया है और वही इसको समझता है जो आकाश से ही आया हो। क्या ख़ुदा तआला ने नहीं फ़रमाया -

لَا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ*

मैं स्वीकार नहीं करूंगा और कदापि नहीं मानूंगा कि ख़ुदाई ज्ञान तथा उनके आन्तरिक रहस्य और उनके अन्दर गुप्त भेद सांसारिक लोगों को स्वयं ही ज्ञात हो सकते हैं। सांसारिक लोग पृथ्वी के कीड़े हैं आकाशीय मसीह नहीं हैं। आकाशीय मसीह आकाश से उतरता है और उसका विचार आकाश को स्पर्श करके आता है तथा उस पर रुहुल क़ुदुस उतरता है। इसलिए वह आकाशीय प्रकाश साथ रखता है परन्तु पृथ्वी के कीड़े के साथ पृथ्वी की गंदगियां होती हैं तथा वह मनुष्य का पूर्ण रूप नहीं रखता वरन् उसके कुछ भाग विकृत भी होते हैं। इसी कारण मैंने कहा था कि आप नाराज़ न हों, आप धर्म के वास्तविक ज्ञान से अपरिचित हैं। ख़ुदा तआला आपके प्रत्येक अहंकार को तोड़ देगा और आपको आपका असली चेहरा दिखा देगा। खेद कि आप को आपकी कच्ची बातें लज्जित नहीं करतीं तथा नितान्त निरुत्तर होने के बावजूद फिर भी हदीस के ज्ञान का दावा चला जाता है। आप ने कहा था कि अद्दज्जाल से अभिप्राय विशेष मसीहुद्दज्जाल नहीं अपितु दूसरे दज्जालों के बारे में भी सही हदीसों में अद्दज्जाल बोला गया है परन्तु जब आप को कहा गया कि यह सर्वथा आप की ग़लती है आपको रसूलुल्लाह की हदीस का वास्तविक ज्ञान प्राप्त नहीं। यदि आप कथित दज्जाल के अतिरिक्त किसी अन्य के बारे में यह शब्द सिहाह सित्तह में पाया जाना सिद्ध करें तो आप को पांच रुपए बतौर क्षतिपूर्ति मिलेंगे तो आप ऐसे मौन हुए कि आप से कोई उत्तर न बन पड़ा। यह अहंकार एवं अभिमान का दण्ड है। क्या अज्ञान इसी का नाम है अथवा किसी अन्य वस्तु का कि आपने अद्दज्जाल के बारे में रसूलुल्लाह की हदीस के उल्टे अर्थ किए और मात्र झूठ के तौर पर कुछ का कुछ गढ़ कर सुना दिया। यही हदीस का ज्ञान है? फिर आपने दावा किया था कि मैं बुख़ारी और मुस्लिम की हदीसों के परस्पर विरोध को दूर कर

* अल वाक़िअ:-80

सकता हूं। इसके उत्तर में आपको कहा गया कि यदि आप स्वीकार करें तो कुछ न्यायवान नियुक्त करके कुछ परस्पर विरोधाभासी हदीसें आप के सामने अनुकूलता के उद्देश्य से प्रस्तुत की जाएंगी। यदि आप अपने ज्ञान की योग्यता से विरोधाभास दूर करके दिखा देंगे तो आपको पच्चीस रुपए बतौर इनाम दिए जाएंगे और आप का ज्ञान मान्य ठहरेगा और यदि चुप रहें तो आपका अज्ञान होना सिद्ध होगा परन्तु आप चुप रहे। अंत में मैं पुन: कहता हूं कि यद्यपि جہ मुरक्कब (मिश्रित) के कारण आपको धार्मिक ज्ञान का बहुत दावा है परन्तु आप अच्छी तरह स्मरण रखें कि जब तक इन समस्त परीक्षाओं में सच्चे न निकलें तब तक यह दावा निराधार और प्रमाण रहित है। फिर यह भी स्मरण रखें कि इन परीक्षाओं में आप सम्मान के साथ अपना अंजाम कदापि नहीं देंखेंगे। यह दण्ड उस अहंकार का है जो ख़ुदा तआला प्रत्येक अहंकारी को देता है।

اِنَّ اللّٰہَ لَا یُحِبُّ کُلَّ مُخۡتَالٍ فَخُوۡرٍ *

और आप का वह जोश जिसके कारण शर्त के तौर पर आपने अपनी दोनों पत्नियों को तलाक़ दे दी। प्रत्येक बुद्धिमान की दृष्टि में उपहासनीय है क्योंकि आपको تلویح की इबारत का एक भाग सुना दिया गया था जिसके उद्धरण से वह हदीस वर्णन की गई थी। स्पष्ट है कि तलवीह के लेखक ने स्वयं को बतौर साक्षी ठहरा कर वर्णन किया है कि वह हदीस अर्थात् क़ुर्आन के मुकाबले पर हदीस को प्रस्तुत करने की हदीस बुख़ारी में मौजूद है। अब इसके मुकाबले पर यह बहाना प्रस्तुत करना कि वर्तमान बुख़ारी की प्रतियां जो हिन्दुस्तान में छप चुकी हैं उनमें यह हदीस मौजूद नहीं सर्वथा अनाड़ीपन का विचार है क्योंकि सीमित ज्ञान के न होने से किसी वस्तु का बिल्कुल न होना अनिवार्य नहीं होता। जिस स्थिति में मुसलमानों का एक नायक अपनी चश्मदीद साक्ष्य द्वारा उस हदीस का बुख़ारी में होना वर्णन करता है और आप का यह दावा नहीं और न कर सकते हैं कि समस्त संसार की बुख़ारी की हस्तलिखित और बिना हस्तलिखित प्रतियां आप देख चुके हैं फिर कितनी व्यर्थ बात है कि केवल कुछ

* लुक़मान-19

प्रतियों पर भरोसा करके निर्दोष पत्नियों को तलाक़ दी जाए। यदि दूसरी स्थिति में कोई हस्तलिखित प्रति निकल आए जिसमें यह हदीस मौजूद हो तो फिर आप की क्या दशा होगी। मोमिन की साक्ष्य शरीअत के निकट स्वीकार करने योग्य होती है। केवल एक व्यक्ति को रमज़ान के महीने के चन्द्रमा की चशमदीद साक्ष्य से समस्त संसार के मुसलमानों पर रोज़ा रखना अनिवार्य हो जाता है। ऐसी स्थिति में अल्लामा तफ़्ताज़ानी साहिब तलवीह की साक्ष्य बिल्कुल व्यर्थ और अधम नहीं हो सकती। बुखारी की प्रकाशित प्रतियों में भी कुछ शब्दों का मतभेद मौजूद है फिर समस्त संसार की हस्तलिखित प्रतियों का ठेका कौन ले सकता है। अत: आपका प्रमाण रहित नकारना व्यर्थ है। महोदय! सकारात्मक के वर्णन के अन्वेषण के नियमानुसार प्राथमिकता प्राप्त होती है क्योंकि उसके साथ ज्ञान की अधिकता है। अब इस साक्ष्य के मुकाबले पर जो शरीअत के निकट स्वीकार करने योग्य है जब तक आप समस्त युग की हस्तलिखित प्रतियां न दिखा दें और तलवीह के लेखक का झूठ सिद्ध न कर दें तब तक संभावित तौर पर तलाक़ हो गई है। उलेमा से पूछ कर देख लें। स्पष्ट है कि तल्वीह का लेखक अपने चशमदीद देखने में झूठा होता तो उसी युग में उलेमा के मुख से उसकी लानत मलामत की जाती और उससे उत्तर पूछा जाता और जब कोई उत्तर पूछा नहीं गया तो यह दूसरा तर्क इस बात पर है कि वास्तव में उसका देखना सही था। और उन सब की ख़ामोशी बतौर गवाहियां मिलकर इस बात को और शक्ति देती हैं कि वास्तव में वह हदीस तलवीह के लेखक ने बुख़ारी में देखी थी। और जिस हालत में बुख़ारी के लेखक तीन लाख हदीसें स्मरण रखते थे इस स्थिति में क्या अनुमान के अनुसार नहीं कि कुछ हदीसों के लिखने में प्रतियों में कुछ न्यूनाधिकता हो और इस तलाक़ के मुकाबले पर मेरा विज्ञापन लिखना बिल्कुल व्यर्थ था। इस से यदि कुछ सिद्ध हो तो केवल यह सिद्ध होगा कि अकारण आलोचनाएं करना आपका स्वभाव है। हज़रत! आप जानते हैं कि यों तो प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार है कि अपनी पत्नी को अवज्ञाकारी, उद्दण्ड, अशिष्टता या पूर्णतया असंतुलित और प्रतिकूल देख कर उसे तलाक़ दे दे । इस प्रकार तो पैग़म्बर भी देते रहे हैं परन्तु एक व्यक्ति लोगों से वाद-

विवाद और झगड़ा तो करे और अकारण अपनी अनजान और निर्दोष पत्नियों को क्रोध में आकर तलाक़ दे दे। यह बात पशुतापूर्ण और सभ्यता के सर्वथा विपरीत है। क्या यह उचित है कि पाप किसी का हो और कोई दूसरा मारा जाए। क्या नबी करीम स.अ.व. में इसका कोई आदर्श पाया जाता है। आप का यह भी झूठ है कि आप फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत **इमाम अबू हनीफ़ा** का तिरस्कार नहीं किया। यदि आप को एक बात में अनाड़ी कहा जाए तो आप को कैसा क्रोध आता है, परन्तु आपने तो इमाम साहिब को रसूलुल्लाह स.अ.व. की हदीस से लगभग-लगभग बिल्कुल वंचित व्यक्त किया। क्या यह तिरस्कार नहीं ? हमारे और आपके हनफ़ी उलेमा न्यायकर्ता रहे। फिर आप अपने विज्ञापन में मेरे इस कथन को झूठी बातों में सम्मिलित ठहराते हैं कि इब्ने सय्याद के दज्जाल होने पर सहाबा की सर्व सम्मति थी। ख़ुदा तआला आपकी दशा पर दया करे क्या स्वयं इब्ने सय्याद के बयान से जो उसने इस्लाम लाने के पश्चात् दिया था जो सही मुस्लिम में मौजूद है सिद्ध नहीं होता कि सहाबा उसे वादा दिया गया दज्जाल कहते थे। क्या इस हदीस में कोई सहाबी बाहर भी रखा है जो उसे कथित दज्जाल नहीं समझता था अथवा क्या इस सूचना की प्रसिद्धि के पश्चात् किसी सहाबी के इन्कार का वर्णन पाया जाता है, उसका तनिक नाम तो बताओ। क्या आप को ज्ञान नहीं कि फ़िक़्ह की दृष्टि से सर्वसम्मति के प्रकारों में से एक खामोश रहने की सर्वसम्मति भी है ? क्या आपको ज्ञात नहीं कि इब्ने सय्याद के कथित दज्जाल होने पर हज़रत उमर रज़ि. ने नबी करीम स.अ.व. के समक्ष क़सम खाई जिस पर न स्वयं आंहज़रत(स) ने इन्कार किया और न उपस्थित सहाबा में से कोई इन्कारी हुआ। क्या यह हदीस मुस्लिम में नहीं है और आप का यह बहाना कि **अद्दज्जाल** कथित दज्जाल का विशेष नाम नहीं है, आपकी मूर्खता और ज्ञान की कमी पर प्रथम श्रेणी की साक्ष्य है। हज़रत मौलवी साहिब! यदि आप सही बुखारी या मुस्लिम या किसी अन्य सही से मुझे यह सिद्ध करके दिखा दें कि **अद्दज्जाल** का शब्द कथित दज्जाल के अतिरिक्त किसी अन्य पर भी सहाबा के मुख से निकला है तो मैं पांच रुपए के स्थान पर पचास रुपए आपको भेंट करूंगा। आप क्यों अपने दोषों को प्रकट कराते हैं,

खामोश रहें। वास्तविकता ज्ञात है।

फिर आपने मुझ पर अपने विज्ञापन में एक अन्य झूठ यह बनाया है कि जैसे मैं वास्तव में अपने निश्चित और ठोस ज्ञान से बुख़ारी और मुस्लिम की कुछ हदीसों को बनावटी समझता हूं। हज़रत मेरा यह कथन नहीं। मालूम नहीं आप क्यों और किस कारण इतना झूठ मुझ पर थोप रहे हैं तथा जालसाज़ी करने का अभ्यास कब से हो गया है। मैं तो केवल इतना कहता हूं कि यदि बुख़ारी और मुस्लिम की कुछ सूचना संबंधी हदीसों के अर्थ इस पद्धति पर न किए जाएं जो क़ुर्आन की सूचनाओं के अनुसार एवं अनुकूल हों तो फिर ऐसी स्थिति में वे हदीसें बनावटी (गढ़ी हुई) ठहरेंगी क्योंकि फ़िक़्ह के नियम का यह मामला है -

انما یردّ خبر الواحد من معارضۃ الکتاب

मैंने कब और किस समय कहा था कि वास्तव में निश्चित तौर पर बुख़ारी या मुस्लिम की अमुक, अमुक हदीस मेरे निकट बनावटी है। मौलवी साहिब लज्जा और शर्म ईमान का भाग है।

فاتقوا اللّٰہ و کونوا من المؤمنین

फिर आप अपनी टांग ख़ुश्क होने के स्वप्न से अधूरा इन्कार करके लिखते हैं कि यह नक़ल झूठ और झूठ गढ़ने से रिक्त नहीं आप का यह वाक्य स्पष्ट सिद्ध कर रहा है कि इस बयान की सच्चाई का आप को किसी सीमा तक इक़रार है क्योंकि आपकी गुप्त इच्छा यह है कि इस स्वप्न को जैसा कि नक़ल किया गया है वह नक़ल का रूप झूठ गढ़ने से रिक्त नहीं क्योंकि आप ने यह वर्णन नहीं किया कि यह नक़ल सर्वथा झूठ है अपितु यह वर्णन किया है कि यह नक़ल झूठ गढ़ने से रिक्त नहीं। जिस से ज्ञात हुआ कि दाल में काला है और आपने अवश्य इस प्रकार का स्वप्न देखा है। यदि उसमें टांग खुश्क हो अथवा हाथ खुश्क हो तथा और अतिरिक्त बातें संलग्न हों। हज़रत आप ने यह स्वप्न अवश्य देखा है। आपका पहलूदार वाक्य ही बताता है कि आपने अवश्य ऐसा स्वप्न देखा है भला थोड़ी क़सम तो खाएं कि हमने कुछ नहीं देखा

और मैं भविष्यवाणी करता हूँ कि आप कभी क़सम नहीं खाएंगे, क्योंकि यह दावा सर्वथा झूठा है। यदि आप सच्चे हैं तो लाहौर में एक जलसा आयोजित करके दर्शकों के सामने क़सम खा लें कि मैंने कुछ नहीं देखा और उपस्थित लोगों में वे लोग भी होंगे जिनका ऐसी रिवायत से संबंध है। जिस समय आप मुझे क़सम खाने के लिए सूचना देंगे मैं उपस्थित हो जाऊंगा ताकि आप की ईमानदारी तथा सत्याचरण देख लूं कि आप को झूठ और झूठ गढ़ने से कहां तक घृणा है। तब धैर्य रखें कि सारी वास्तविकता खुल जाएगी और आप की सत्यवादिता का आपके शिष्यों पर भी नमूना प्रकट हो जाएगा और जो आपने इस विनीत के बारे में अपने कुछ स्वप्न लिखे हैं यदि वे सही भी हैं तब भी उनकी वह व्याख्या (ताबीर) नहीं जो आप ने समझी है अपितु प्राय: मनुष्य दूसरे को देखता है और उस से अभिप्राय वह स्वयं ही होता है। स्वप्नफल बताने वालों ने लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति उदाहरणतया किसी नबी को स्वप्न में अंधा, कोढ़ी या जानवर के रूप में देखे तो उसका स्वप्न फल यह होगा कि यह देखने वाला स्वयं उन आपदाओं में ग्रस्त है। उदाहरणतया यदि उसने किसी पुनीत व्यक्ति को काना देखा है तो उसका स्वप्नफल यह होगा कि धर्म में वह स्वयं ही अपूर्ण है और यदि कोढ़ी देखा है तो उसका स्वप्नफल यह होगा कि स्वयं ही उपद्रव में पड़ा हुआ है और यदि उसने नबी का विकृत रूप देखा है तो उसका स्वप्नफल यह होगा कि वह स्वयं ही अपने धर्म में विकृत रूप रखता है क्योंकि पुनीत लोग दर्पण के समान होते हैं। मनुष्य जो कुछ उनका रूप और बनावट में अपने स्वप्न में अन्तर देखता है वास्तव में वह दोष उसके अपने अस्तित्व में ही होता है और जिस दुष्कर्म में उसे देखता है वास्तव में उसका कर्ता स्वयं ही होता है। सदात्मा पुरुषों के देखने के स्वप्नफल में यह ठोस सिद्धान्त है उसको स्मरण रखना चाहिए एक काफ़ी समय पूर्व की बात है कि एक व्यक्ति ने मेरे पास वर्णन किया कि मैंने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को देखा कि वह (ख़ुदा की शरण) वह अंधा था। मैंने कहा तू इब्राहीम की सुन्नत का इन्कारी और उसे देखने से अंधा है, इसी प्रकार एक हिन्दू वृद्ध ने वर्णन किया कि (ख़ुदा की शरण) हज़रत मसीह को मैंने कोढ़ी देखा है। मैंने उसका स्वप्नफल बताया कि तेरा अधर्म

उपचार योग्य नहीं तू किसी ईसा के दम से अच्छा नहीं होगा। एक ने मेरे पास वर्णन किया कि मैंने रसूलुल्लाह स.अ.व. को देखा कि नीला तहबन्द बांधा हुआ है और शेष बदन नंगा है और दाल-रोटी खा रहे हैं। मैंने उसका स्वप्नफल यह निकाला कि देखने वाले पर शोक, और ग़रीबी और भूख की स्थिति आएगी और उसका कोई सहायक न होगा। अत: ऐसा ही हुआ। एक बार मेरे उस्ताद स्वर्गीय मौलवी फ़ज़्ल अहमद साहिब ने मुझ से वर्णन किया कि एक व्यक्ति ने रसूलुल्लाह स.अ.व. को स्वप्न में देखा कि आंहज़रत स.अ.व. एक ऐसी कोठरी में क़ैदियों के समान बैठे हैं जिसमें आग और बहुत सा धुआं है और मुझे याद पड़ता है कि उस कोठरी के चारों ओर पहरेदारों की तरह ईसाई खड़े हैं और मौलवी साहिब बहुत घबराए हुए थे कि इसकी क्या ताबीर है। तब ख़ुदा ने तुरन्त मेरे हृदय पर इल्क़ा किया कि यह सब देखने वाले का हाल है जो उस पर प्रकट किया गया। वह बेईमान होकर मरेगा और अन्तत: उसका ठिकाना नर्क होगा और ईसाइयों में मिल जाएगा। मौलवी साहिब इस ताबीर को सुनते ही बहुत आनंदित हुए। खुशी के मारे चेहरा प्रकाशमान हो गया और कहने लगे कि यह स्वप्न पूरा हो गया और थोड़ा समय हुआ है कि वह व्यक्ति इस स्वप्न को देखने के पश्चात् ईसाई हो गया।* अत: इस बात में स्वयं अनुभव रखता हूं। मौलवी साहिब को चाहिए कि डरें और तौबा करें कि उनके लक्षण अच्छे दिखाई नहीं देते। उनके ये सारे स्वप्न उनके पहले स्वप्न के समर्थक हैं। रहा यह विनीत तो मेरी सच्चाई अथवा झूठ की परीक्षा सरल है केवल निरर्थक स्वप्नों से मुझ पर कोई आरोप नहीं आ सकता। यदि कल्पना के तौर पर मौलवी साहिब के स्वप्न मेरी ओर सम्बद्ध किए जाएं तब भी स्पष्ट है कि प्रत्येक शत्रु अपनी शत्रुता के आवेग में अपने विरोधी को स्वप्नावस्था में कभी सांप के रूप में देखता है और कभी किसी अन्य हिंसक पशु के रूप में।

---

* नोट- पत्रिका कामिलुत्ता'बीर के पृष्ठ-26 में लिखा है कि -

اگر کسے بیند کہ اندامے از اندامہا رسول اللہؐ کم بود آن نقصان نقصان دین بیندہ باشد

ابن سیرینؒ گوئید کہ اگر کسے رسول اللہؐ راناقص بیند آن نقصان بہ بیندہ بار گردد

(देखो रिसाला किताबुत्ताबीर पृष्ठ - 26)

यह प्रकृति का नियम है जो उस पर व्याप्त होता है। संभव है एक उसका शत्रु उसे सांप के रूप में दिखाई दे या किसी हिंसक पशु इत्यादि के रूप में, क्योंकि शत्रुता की अवस्था में ऐसी उपमाएं स्वयं शत्रुतापूर्ण प्रकृति अपने आवेग से पैदा पर लेती है, यह नहीं कि उस पुनीत पुरुष का वास्तविक रूप यही होता है। कभी जानवर के रूप अपत्तिजनक भी नहीं होते। हज़रत मसीह कुछ पूर्व कालीन नबियों को बर्रा के (भेड़) रूप पर दिखाई दिए और हमारे नबी करीम स.अ.व. ने अपने सहाबा को गायों के रूप में देखा और यह बात जो मैंने अभी वर्णन की है कि मेरी सत्य या झूठ की परीक्षा आसान है उसका अतिरिक्त विवरण यह है कि मेरा तो ख़ुदा तआला के बताने और समझाने से यह दावा है कि यदि संसार के समस्त लोग एक ओर हों और एक ओर यह विनीत हो तथा आकाशीय बातों के प्रकटन के लिए ख़ुदा के निकट एक दूसरे के सानिध्य और प्रतिष्ठा की परीक्षा करें तो मैं क़सम खाकर कहता हूं कि मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं ही विजयी हूंगा। सर्वज्ञ, दूरदर्शी एवं नीतिवान ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूं कि आज तक सैकड़ों आकाशीय निशान मुझ पर प्रकट हो चुके हैं और उन निशानों के बहुत से प्रत्यक्षदर्शी मौजूद हैं। मैंने 31, जुलाई 1891 ई. के विषय के समापन में सामान्य तौर पर सुना दिया था कि मेरे निशानों के देखने वाले इसी सभा में उपस्थित है यदि चाहो तो क़सम लेकर उन से पुष्टि करा लो परन्तु आप ने दम न मारा। फिर मैंने उच्च स्वर में तीन सौ लोगों की सभा में जिनमें कुछ ईसाई सज्जन और एडीटर साहिब अखबार 'नूर अफ़्शां' भी उपस्थित थे यह भी सुना दिया था कि मौलवी साहिब को अपने वली होने का गुमान है तो चालीस दिन तक मेरे साथ मुक़ाबले के तौर पर ख़ुदा के समक्ष ध्यान करें। यदि मैं आकाशीय बातों के प्रकटन और निशानों के दिखाने में मौलवी साहिब पर विजयी न हुआ तो जिस हथियार से चाहें मेरा वध कर दें परन्तु आप ने इसके उत्तर में भी दम न मारा यदि आप को भी सच्चे स्वप्न आते हैं, व्यर्थ स्वप्न नहीं तथा विश्वास के योग्य हैं तो मेरे मुकाबले पर आप क्यों चुप रहे? क्या आपके व्यर्थ झूठ पर इस से बढ़कर कोई और प्रमाण होगा और मैं तो अब भी उपस्थित हूं, मैदान में खड़ा हूं। निश्चय ही स्मरण

रखें कि वह प्रकाश जो आकाश से उतरा है आपके मुंह की फूंकों से बुझ नहीं सकता। आप अपने मुंह की चिन्ता करें। ऐसा न हो कि फूंकें मारते-मारते एक ज्वाला उठे और आप के मुंह के रूप को विकृत कर दे। مَن عادیٰ की हदीस आपको स्मरण नहीं जिसे श्रद्धाभाव से मुझे लिखा करते थे अब आपने मुझे झूठ गढ़ने वाला बनाया, झूठा ठहराया, मक्कार की संज्ञा दी, दज्जाल के नाम से पुकारा परन्तु अपनी ही समीक्षा की वे पंक्तियां आपको स्मरण न रहीं जो आप बराहीन अहमदिया की समीक्षा संख्या-6, जिल्द-7 में लिख चुके हैं। अत: आप कथित पुस्तक की प्रशंसा और गुणगान के पृष्ठ-284 में लिखते हैं :-

लेखक बराहीन अहमदिया की परिस्थितियों और विचारों से जितना हम जानते हैं हमारे समकालीन ऐसे परिचित कम निकलेंगे। लेखक साहिब हमारे देशवासी अपितु आरंभिक आयु के हमारे सहपाठी हैं। उस समय से लेकर आज तक पत्राचार, भेंट और मुलाक़ात निरन्तर जारी है पृष्ठ (284) लेखक बराहीन अहमदिया प्रतिकूल और अनुकूल के अनुभव और अवलोकन की दृष्टि से और अल्लाह हिसाब करने वाला है शरीअत-ए-मुहम्मदिया पर स्थापित, संयमी और सत्यनिष्ठ हैं पृष्ठ (169) पुस्तक बराहीन अहमदिया (अर्थात् पुस्तक इस विनीत की) ऐसी पुस्तक है जिसका उदाहरण आज तक इस्लाम में नहीं लिखा गया और उसका लेखक इस्लाम की तन, मन, धन, लेखन, भाषण तथा वर्तमान परिस्थिति की सहायता में ऐसा दृढ़ निकला है जिसको पहली पुस्तकों में बहुत ही कम पाया गया है। हे ख़ुदा अपने अभिलाषियों के मार्ग-दर्शक इन पर इन के अस्तित्व से इन के मां-बाप से समस्त संसार के दयालुओं से अधिक दया कर और इस पुस्तक का प्रेम लोगों के हृदयों में डाल दे और उसकी बरकतों से मालामाल कर दे और इस विनीत, लज्जित और पापी को भी अपने वरदान और इनाम और इस पुस्तक की विशेष बरकतों से लाभान्वित कर। आमीन! (पृष्ठ 348 وللارض من کاس الکرام نصیب)

अब हज़रत सोच-समझकर उत्तर दें कि ये इबारतें मेरे पक्ष में आप ही की हैं या किसी अन्य की और निश्चय समझें कि आप की दुआ के अनुसार सब से अधिक

ख़ुदा तआला की मुझ पर दया है और स्मरण रखें कि वह मुझे कदापि व्यर्थ नहीं करेगा। आप के भाग्य में ठोकर थी जो आप को लग गई और प्रारंभ से जो प्याला आपके लिए प्रारब्ध था वह आपको पीना पड़ा। क्या आप को मैंने इन सब बातों से पहले ही ख़बर न दी थी कि आप के लिए प्रारब्ध है कि आप विरोध पर खड़े हो जाएंगे और सत्य एवं ईमानदारी को त्याग देंगे। बहुत दुर्भाग्यशाली वह मनुष्य है जो सदात्मा को महा झूठा विचार करे।

आप अपने विज्ञापन के अन्त में फिर इस बात पर बल देते हैं कि जैसे मैं बुख़ारी और मुस्लिम से इन्कारी हूं और जो दावा करते हैं कि 'इशाअतुस्सुन्नह' में पूर्ण रूप से प्रकट किया जाएगा। अत: मेरी ओर से निवेदन है कि यों तो मुझे और प्रत्येक बुद्धिमान को यही आशा है कि आप इसी प्रकार समय गुज़ारने के लिए अतिरिक्त और असंबंधित बातों में अपने अखबार इशाअतुस्सुन्नह को काला करते रहेंगे और मूल बहस की ओर कदापि न आएंगे परन्तु मुझ पर यह यह आरोप खड़ा करना कि जैसे मैं सहीहैन का इन्कारी हूं आपके लिए बिल्कुल लाभप्रद नहीं होगा। आप तनिक विचार करें कि कोई बुद्धिमान ऐसी पुस्तकों का इन्कारी हो सकता है जो उसके दावे की प्रथम श्रेणी की समर्थक और सहायक हैं ऐसा तो कोई अनाड़ी भी नहीं कर सकता। यदि मैं बुख़ारी और मुस्लिम की प्रामाणिकता का मानने वाला न होता तो मैं अपने दावे के समर्थन में उनको क्यों बार-बार प्रस्तुत करता। अत: इसी पुस्तक **'इज़ाला औहाम'** में बहुत सी हदीसें सही मुस्लिम की अपने दावे के समर्थन में प्रस्तुत कर चुका हूं। हां बुख़ारी में से मैंने कम लिखा है। अत: यहां आपके लिए कुछ और भी लिख देता हूं ताकि आप पर स्पष्ट हो कि बुख़ारी भी इसी विनीत की समर्थक और सहायक है और यदि आप हज़ार जान मारें बुख़ारी को भी अपने उद्देश्य की समर्थक कदापि न पाएंगे अपितु पवित्र क़ुर्आन के समान वह भी इस विनीत के उद्देश्य और दावे पर पूर्ण प्रमाण प्रस्तुत करती है। हज़रत यही तो मेरे साक्षी हैं जिन से मेरा दावा सिद्ध होता है। इन से यदि इन्कार करूं तो कहां जाऊं। अब लीजिए नमूने के तौर पर कुछ बुख़ारी के प्रमाण प्रस्तुत करता हूं यदि कुछ

इन्कारियों जैसा जोश है तो खण्डन करके दिखाएं और यदि सौभाग्य है तो स्वीकार कर लें - وَطُوبٰى لِلسُّعَدَاءِ-

बुख़ारी की ज्ञान संबंधी उपादेयता

यह विनीत इस से पूर्व इसी पुस्तक में वर्णन कर चुका है कि पवित्र क़ुर्आन का शब्द तवफ़्फ़ा के प्रयोग में सामान्य मुहावरा यही है कि वह समस्त स्थानों में आरंभ से अन्त तक प्रत्येक स्थान में जो तवफ़्फ़ा का शब्द आया है उसे मौत और रूह निकाल लेने के अर्थों में लता है। जब अरब के प्राचीन और आधुनिक शे'रों तथा क़सीदों, पद्य और गद्य का जहां तक संभव था अनुसरण किया गया और गहन छान-बीन द्वारा देखा गया तो यह सिद्ध हुआ कि जहां-जहां तवफ़्फ़ा के शब्द का आत्मा वाले अर्थात् मनुष्यों से नाता है और अल्लाह तआला को कर्त्ता (फाइल) बनाया गया है उन समस्त स्थानों में तवफ़्फ़ा के अर्थ मौत और रूह क़ब्ज़ करने के लिए गए हैं तथा अरब में पुरातन और नवीन शे'रों और इसी प्रकार गद्य में भी एक भी शब्द तवफ़्फ़ा का ऐसा नहीं मिलेगा जो रूह वाले में प्रयोग हो और जिस का कर्ता शब्द या अर्थ की दृष्टि से ख़ुदा तआला ठहराया गया हो अर्थात् मनुष्य का कर्म न ठहराया गया हो और केवल ख़ुदा तआला का कर्म समझा गया हो और फिर उसके अर्थ रूह क़ब्ज़ (प्राण निकालना) करने के अतिरिक्त और अभिप्राय किए गए हों। शब्दकोश की पुस्तकों क़ामूस, सिहाह, सराह इत्यादि पर दृष्टि डालने वाले भी इस बात को जानते हैं कि कहावत के तौर पर भी अरब के मुहाबरों का कोई वाक्य ऐसा नहीं मिला जिसमें तवफ़्फ़ा के शब्द को ख़ुदा की ओर सम्बद्ध करके और रूह वाले के बारे में प्रयोग में ला कर फिर उसके और भी अर्थ किए हों अपितु निरन्तर प्रत्येक स्थान पर मृत्यु और क़ब्ज़ रूह के यही अर्थ किए गए हैं और किसी दूसरी संभावना का एक छोटा सा मार्ग तक खुला नहीं छोड़ा। तत्पश्चात् इस विनीत ने हदीसों की ओर मुख किया ताकि ज्ञात हो कि आंहज़रत स.अ.व. के युग में सहाबा और स्वयं आंहज़रत स.अ.व. इस तवफ़्फ़ा के शब्द को रूह वाले की ओर

सम्बद्ध करके किन-किन अर्थों में प्रयोग करते थे। क्या यह शब्द उस समय उनके दैनिक मुहावरों में कई अर्थों में प्रयोग होता था या केवल एक ही अर्थ क़ब्ज़ रूह और मौत के लिए प्रयुक्त था। अत: इस छान-बीन के लिए मुझे बहुत परिश्रम करना पड़ा और उन समस्त पुस्तकों सही बुख़ारी, सही मुस्लिम, तिरमिज़ी, इब्ने माजा, अबू दाऊद, निसाई, दारमी, मुअत्ता शरह अस्सुन्नह इत्यादि-इत्यादि का एक-एक पृष्ठ देखने से ज्ञात हुआ कि इन समस्त पुस्तकों में जो मिश्कात में हैं तीन सौ छियालीस बार भिन्न-भिन्न स्थानों में तवफ़्फ़ा का शब्द आया है। संभव है कि मेरे गणना करने में तवफ़्फ़ा के कुछ शब्द रह भी गए हों परन्तु पढ़ने और दृष्टि के पड़ जाने से एक भी शब्द बाहर नहीं रहा और तवफ़्फ़ा के जितने शब्द किताबों में आए हैं चाहे वह ऐसा शब्द है जो आंहज़रत स.अ.व. के मुख से निकला है अथवा ऐसा है जो किसी सहाबी ने मुख से निकाला है। समस्त स्थानों पर वे शब्द मौत और रूह (आत्मा) को निकालने के ही अर्थों में आए हैं और चूंकि मैंने उन किताबों को बहुत प्रयत्न और कठोर परिश्रम द्वारा एक-एक पंक्ति पर दृष्टि डालकर देख लिया है। इसलिए मैं दावे और शर्त के साथ कहता हूं कि प्रत्येक स्थान पर इन किताबों की हदीसों में तवफ़्फ़ा का जो शब्द आया है उसके अर्थ मौत और रूह क़ब्ज़ (आत्मा को निकालना) करने के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं और इन किताबों से बतौर इस्तिक़रा* सिद्ध होता है अवतरित होने के पश्चात् अन्तिम आयु तक जो आंहज़रत स.अ.व. जीवित रहे आंहज़रत स.अ.व. ने तवफ़्फ़ा का शब्द मौत और क़ब्ज़ रूह के अतिरिक्त किसी अन्य अर्थों के लिए कदापि प्रयोग नहीं किया और न कभी दूसरे अर्थ का शब्द जीभ पर जारी हुआ। नि:सन्देह इस्तिक़रा भी ठोस तर्कों में से है अपितु वास्तविकताओं को सिद्ध करने के लिए जितनी सहायता इस्तिक़रा से मिली है अन्य किसी उपाय से नहीं मिली। उदाहरणतया हमारे इन विश्वासों का कारण जो सामान्यतया समस्त मनुष्यों की एक जीभ होती है और दो आंखें और सामान्य तौर

* इस्तिक़रा बहुत सी वस्तुओं के भागों को देखकर एक व्यापक नियम बनाना जो सब पर लागू हो। (अनुवादक)

पर मनुष्य की आयु इस सीमा से आगे नहीं जा सकती, अनाज के प्रकारों में से चना इस आकृति का होता है और गेहूं का दाना इस प्रकार का होता है। ये सब विश्वास इस्तिक़रा से ज्ञात हुए हैं। अत: जो व्यक्ति इस इस्तिक़रा का इन्कार करे तो ऐसा कोई शब्द तवफ़्फ़ा का प्रस्तुत करना उसका दायित्व होगा जो आंहज़रत स.अ.व. के मुख से निकला हो और मौत तथा क़ब्ज़ रूह के अतिरिक्त उसके कोई अन्य अर्थ हों। इमाम मुहम्मद इस्माईल बुख़ारी ने यहां अपनी सही में एक सूक्ष्म रहस्य की ओर ध्यानाकर्षण कराया है जिससे ज्ञात हुआ कि कम से कम सात हज़ार बार तवफ़्फ़ा का शब्द आँहज़रत स.अ.व. के मुख से अवतरित होने के पश्चात् अन्तिम आयु तक निकला है और प्रत्येक शब्द तवफ़्फ़ा के अर्थ कब्ज़ रूह और मृत्यु थी। अत: यह रहस्य बुखारी का उन समस्त रहस्यों में से है जिन से सत्याभिलाषियों को इमाम बुखारी का कृतज्ञ और आभारी होना चाहिए।

और इमाम बुख़ारी के समस्त ज्ञानवर्धक बातों में जिनका हमें कृतज्ञ होना चाहिए एक यह है कि उन्होंने इब्ने मरयम की मृत्यु के बारे में एक अटल फैसला ऐसा दे दिया है जिससे अधिक की कल्पना नहीं। और वह यह है कि इमाम बुख़ारी ने अपनी सही के कई भागों में से जिनका नाम उसने विशेष-विशेष उद्देश्यों की ओर सम्बद्ध करके किताब रखा है एक भाग को किताबुत्तफ़्सीर के नाम से नामित किया है। क्योंकि उस भाग के लिखने से मूल उद्देश्य यह है कि पवित्र क़ुर्आन की जिन आयतों की तफ़्सीर जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वयं की है या उसकी ओर संकेत किया है उन आयतों की नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन के हवाले से तफ़्सीर कर दी जाए। इमाम बुख़ारी[रह.] इसी उद्देश्य से पवित्र आयत فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ط (अलमाइदह-118) को किताबुत्तफ़्सीर में लाया है। और इस आपत्ति खड़ी करने से उसका आशय यह है ताकि लोगों पर प्रकट करें कि تَوَفَّيْتَنِىْ के शब्द की सही तफ़्सीर वही है जिसकी ओर आंहज़रत स.अ.व. संकेत करते हैं अर्थात् मार दिया और मृत्यु दे दी और हदीस यह है

عن ابن عباسٍ انهٗ یُجآء برجالٍ من امتی فیؤخذبهم ذات الشمال
فاقول یا رب اصیحابی فیُقال انك لا تدری ما احدثوا بعدك فاقول
کماقال العبد الصالح و کنت علیهم شهیدًا ما دمتُ فیهم فلما
توفیتنی کنت انت الرقیب علیهم (पृष्ठ 665 बुख़ारी 693 बुख़ारी)

अर्थात् क़यामत के दिन कुछ लोग मेरी उम्मत से अग्नि की ओर जाए जाएंगे तब मैं कहूंगा कि हे मेरे रब्ब ये तो मेरे अस्हाब हैं। तब कहा जाएगा कि तुझे उन कामों की ख़बर नहीं जो तेरे पीछे इन लोगों ने किए। तो उस समय मैं वही बात कहूंगा जो एक नेक बन्दे ने कही थी अर्थात् मसीह इब्ने मरयम ने। जबकि उसको पूछा गया था कि क्या वह शिक्षा तूने दी थी कि मुझे और मेरी मां को ख़ुदा करके मानना। और वह बात (जो मैं इब्ने मरयम से कहूंगा) यह है कि मैं जब तक उनमें था उन पर गवाह था फिर तूने मुझे मृत्यु दी तो उस समय तू ही उनका निगरान था और रक्षा और देखभाल करने वाला था। इस हदीस में आंहज़रत स.अ.व. ने अपने वृत्तान्त और मसीह इब्ने मरयम के वृत्तान्त को एक ही प्रकार का वृत्तान्त ठहरा कर फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी का वही शब्द अपने पक्ष में प्रयोग किया है, जिस से स्पष्ट तौर पर समझा जाता है कि आप(स) ने फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी से अभिप्राय मृत्यु ही लिया है क्योंकि इसमें किसी को मतभेद नहीं कि आंहज़रत स.अ.व. मृत्यु पा चुके हैं और मदीना में आप(स) का मज़ार मुबारक मौजूद है। अत: जब फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी की व्याख्या आप(स) के बारे में मृत्यु पाना है सिद्ध हुआ और वही शब्द हज़रत मसीह के मुख से निकला था और स्पष्ट तौर पर आंहज़रत स.अ.व. ने फ़रमा दिया कि जिन शब्दों को मसीह इब्ने मरयम के प्रयोग किया था वही शब्द मैं प्रयोग करूंगा। अत: इस से पूर्णतया स्पष्ट हो गया कि मसीह इब्ने मरयम भी मृत्यु पा गया। और आंहज़रत स.अ.व. भी मृत्यु पा गए और दोनों समान रूप से आयत फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी के प्रभाव से प्रभावित हैं। इसी कारण इमाम बुख़ारी इस आयत फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी को जान-बूझ कर किताबुत्तफ़्सीर में लाए है ताकि वह मसीह इब्ने मरयम के बारे में अपने दृष्टिकोण को प्रकट करें कि

वास्तव में वह उनके निकट मृत्यु पा चुका है। यह सोच-विचार करने का स्थान है कि इमाम बुख़ारी आयत फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी को किताबुत्तफ़्सीर में क्यों लाए। अत: बहुत मामूली विचार से साफ स्पष्ट होगा कि जैसा कि इमाम बुख़ारी की आदत है उनका उद्देश्य यह था कि आयत फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी के वास्तविक अर्थ वही हैं जिनके बारे में आंहज़रत स.अ.व. ने संकेत फ़रमाया है। अत: उनका उद्देश्य इस बात का प्रकट करना है कि इस आयत की यही व्याख्या है जो आंहज़रत स.अ.व. ने स्वयं पर लागू करके स्वयं की है यह भी स्पष्ट रहे कि इस शैली को इमाम बुख़ारी ने अपना कर केवल अपना ही दृष्टिकोण व्यक्त नहीं किया अपितु यह भी व्यक्त कर दिया कि आप(स) इस आयत फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी के यही अर्थ समझते थे। तभी तो उन्हें फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी के शब्दों को बिना किसी परिवर्तन के अपने बारे में प्रयोग किया। फिर इमाम साहिब ने उसी स्थान में एक और निपुणता की कि इस अर्थ को और अधिक ठोस करने के लिए उसी पृष्ठ 665 में आयत *يا عيسىٰ اِنّی مُتوفّیك की व्याख्या इब्ने अब्बास के उद्धरण से इसी के अनुसार की है। अत: वह फ़रमाते हैं -

وقال ابن عباس متوفیك ممیتُكَ

(देखो वही पृष्ठ बुख़ारी 665) अर्थात् इब्ने अब्बास रज़ि. ने फ़रमाया है कि पवित्र क़ुर्आन की यह आयत कि یا عیسیٰ انی متوفیك इसके अर्थ ये हैं कि हे ईसा! मैं तुझे मृत्यु दूंगा। अत: इमाम बुख़ारी साहिब इब्ने अब्बास का कथन बतौर समर्थन के लाए हैं ताकि ज्ञात हो कि सहाबा का भी यही दृष्टिकोण था कि मसीह इब्ने मरयम मृत्यु पा चुका है और फिर इमाम बुख़ारी ने एक और निपुणता की है कि अपनी सही के पृष्ठ 531 में इब्ने अब्बास की विशेषताओं में लिखा है कि स्वयं इब्ने अब्बास से रिवायत है कि आंहज़रत स.अ.व. ने उन्हें अपने सीने से लगाया और दुआ की कि हे मेरे ख़ुदा! इसको बुद्धिमत्ता प्रदान कर, इसको क़ुर्आन का ज्ञान प्रदान कर। चूंकि नबी करीम स.अ.व. की दुआ स्वीकार की गई है इसलिए इब्ने अब्बास का यह बयान कि तवफ़्फ़ा ईसा जो पवित्र क़ुर्आन में आया है उस से

* नोट - इस आयत का हाशिया पृष्ठ 921 पर लिखा है वहां देखना चाहिए।

अभिप्राय अमातत ईसा है अर्थात् ईसा को मृत्यु देना। आयत के ये अर्थ जो इब्ने अब्बास ने किए हैं इस कारण से भी स्वीकार योग्य हैं कि इब्ने अब्बास के पक्ष में क़ुर्आन की दुआ स्वीकार हो चुकी है।

फिर इमाम बुख़ारी ने इस आयत फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी को 'किताबुल अंबिया' पृष्ठ-473 और फिर पृष्ठ 490 में इन्हीं अर्थों को प्रकट करने के उद्देश्य से वर्णन किया है और प्रकट किया है कि इस क़िस्से के कारण आंहज़रत स.अ.व. को मसह इब्ने मरयम एक समानता है। अत: पृष्ठ 489 में यह हदीस भी अबू हुरैरा से रिवायत है लिख दी है -

انا اولی الناس یابن مریم والا نبیاء اولاو علات

और इसी के समर्थन में इमाम बुख़ारी ने 'किताबुलमग़ाज़ी' में किताबुन्नबी स.अ.व. के अन्तर्गत पृष्ठ 640 में हज़रत आइशा रज़ि. से एक और हदीस लिखी है - और इमाम बुख़ारी द्वारा उपादेयताओं में जिनका हमें कृतज्ञ होना चाहिए से एक यह है कि उन्होंने केवल इतना ही सिद्ध नहीं किया कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम मृत्यु पा चुके हैं अपितु हदीसों की दृष्टि से यह भी सिद्ध कर दिया है किजो व्यक्ति मृत्यु पा जाए फिर संसार में दोबारा आ नहीं सकता। अत: बुख़ारी के पृष्ठ 640 में हज़रत आइशा रज़ि. से यह रिवायत की गई है कि जब आंहज़रत स.अ.व. का निधन हो गया तो कुछ लोग ये सोचते थे कि आप(स) की मृत्यु नहीं हुई और कुछ कहते थे कि मृत्यु पा चुके हैं परन्तु पुन: संसार में आएंगे। इस अवस्था में हज़रत अबू बकर रज़ि. हज़रत आइशा के घर गए और देखा कि आंहज़रत स.अ.व. मृत्यु पा चुके हैं। तब वह चादर का पर्दा उठाकर आंहज़रत स.अ.व. के चेहरे की अेर झुके और चूमा और कहा - मेरे मां-बाप तुझ पर क़ुर्बान मुझे ख़ुदा तआला की क़सम है कि ख़ुदा तुझ पर दो मौतें इकट्ठी नहीं करेगा। फिर लोगों में आए और लोगों में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन हो जाने को प्रकट किया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु पर और फिर संसार में न आने के समर्थन में यह आयत पढ़ी -

وَ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ*

अर्थात् मुहम्मद इससे अधिक नहीं कि रसूलुल्लाह है और इस से पूर्व समस्त रसूल इस संसार से सदैव के लिए गुज़र चुके हैं। स्मरण रहे कि من قبله الرُّسُل का अलिफ लाम संलग्नता का है जो रसूलों के सभी पूर्व कालीन रसूलों पर व्याप्त हो और यदि ऐसा न हो तो फिर प्रमाण अपूर्ण रह जाता है क्योंकि यदि सदस्य भी बाहर रह जाए तो फिर वह प्रमाण जो पवित्र क़ुर्आन का उद्देश्य है इस आयत से पैदा नहीं हो सकता। इस आयत के प्रस्तुत करने से हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने इस बात का प्रमाण दिया कि कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा कि जिसकी मृत्यु न हुई हो तथा इस बात का प्रमाण दिया कि जो मृत्यु पा जाए फिर संसार में कभी नहीं आता क्योंकि अरबी शब्द कोश और अरब के मुहावरे में 'ख़ला' या 'ख़लत' ऐसे लोगों के गुज़रने को कहते हैं जो फिर आने वाले न हों। अत: समस्त रसूलों के बारे में उपरोक्त आयत में 'ख़लत' का शब्द प्रयोग किया गया है वह इसी दृष्टि से प्रयोग किया गया ताकि इस बात की ओर संकेत हो कि वे लोग ऐसे गए हैं कि फिर संसार में कदापि नहीं आएंगे। चूंकि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि आंहज़रत स.अ.व. के निधन होने की अवस्था में आपके मुबारक चेहरे को चूम कर कहा था कि तू जीवन और मृत्यु में पवित्र है, तुझ पर दो मौतें कदापि नहीं आएंगी अर्थात् तू दोबारा संसार में कदापि नहीं आएगा। इसलिए हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि. ने अपने कथन के समर्थन में पवित्र क़ुर्आन की आयत प्रस्तुत की जिसका सारांश यह है कि समस्त रसूल जो आंहज़रत स.अ.व. से पहले थे गुज़र चुके हैं और जो रसूल इस संसार से गुज़र गएहैं पुन: इस संसार में कदापि नहीं आएंगे क्योंकि जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में अन्य मृत्यु प्राप्त लोगों के बारे में ख़लब या ख़लत का शब्द प्रयोग हुआ है ऐसा ही यही शब्द नबियों के पक्ष में भी प्रयोग हुआ है और यह शब्द मृत्यु के शब्द से विशेष है क्योंकि इसके अर्थ में यह शर्त है कि इस लोक से गुज़र कर फिर इस लोक में न आए। अत: इमाम बुख़ारी रह. ने यहां मृत्यु प्राप्त नबियों के दोबारा

---

* आले इमरान : 145

न आने के बारे में प्रथम अबूबकर सिद्दीक का कथन प्रस्तुत किया जिसमें यह वर्णन है कि ख़ुदा तुझ पर दो मौतें नहीं लाएगा क्योंकि दोबारा आना दो मौतों के लिए अनिवार्य है और फिर इस बारे में पवित्र क़ुर्आन की आयत प्रस्तुत की और यह प्रमाण दिया कि ख़ला उस गुज़रने को कहते हैं कि फिर उस के पश्चात् वापसी न हो। इस छान-बीन से इमाम बुख़ारी की विशेषताएं प्रकट हैं جزاہ اللہ خیرا الجزاء وادخلہ اللہ فی الجنات العلیا۔

इमाम बुख़ारी की उपादेयताओं में से एक यह है कि उन्होंने अपनी सही में पांच हदीसें वर्णन करके भिन्न-भिन्न उपायों और भिन्न-भिन्न रावियों (वर्णन कर्ताओं) के द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि मसीह इब्ने मरयम अपनी मृत्योपरान्त मुर्दों में जो मिला और ख़ुदा तआला के बुज़ुर्ग नबी जो इस संसार से गुज़र चुके हैं उनमें सम्मिलित हो गया और आंहज़रत स.अ.व. ने मे'राज की रात में मृत्युपरान्त लोगों में उसको पाया। देखो बुख़ारी पृष्ठ-50 और पृष्ठ 455, पृष्ठ 471, पृष्ठ-548, 1120 । इन हदीसों में यह भी उल्लेख है कि वह सब नबी यद्यपि सांसारिक जीवन की दृष्टि से मर गए और इस पार्थिव शणीर और उसके जीवन की अनिवार्यताओं को छोड़ गए परन्तु उस लोक में एक नया जीवन जि आध्यात्मिक कहना चाहिए रखते हैं और क्या मसीह और क्या ग़ैर मसीह बराबर और समान तौर पर उस नए जीवन की अनिवार्यताएं अपने अन्दर एकत्र रखते हैं। यही उद्द्ेय इंजील में पतरस के पहले पत्र का है। अत: वह कहता है कि वह अर्थात् मसीह शरीर के पक्ष में तो मारा गया परन्तु आत्मा में जीवित किया गया अर्थात् मृत्यु के पश्चात् मसीह को आध्यात्मिक जीवन प्राप्त हुआ है न कि शारीरिक। देखो पतरस का पहला पत्र बाब-3, आयत-19 और इब्रानियों के पत्र बाब-9, आयत-27 में लिखा है कि आदमियों के लिए एक बार मरना है। इसी प्रकार बाइबल के बहुत से स्थानों में मौजूद है कि सच्चों के लिए एक मृत्यु के पश्चात् फिर अनश्वर जीवन है। अब इस बात के सिद्ध होने के पश्चात् कि मसीह मर गया और उसकी रूह मृत्यु प्राप्त रूहों में शामिल है यदि कष्ट कल्पना के तौर पर फिर उसका जीवित होकर संसार में आना स्वीकार कर लें तो

उसका आकाश से उतरना बहर हाल अमान्य होगा क्योंकि सिद्ध हो चुका कि आकाश पर मरने के पश्चात् केवल उसकी रूह गई जो दूसरी रूहों में सम्मिलित हो गई। हां इस कष्ट कल्पना के कारण यह कहना पड़ेगा कि किसी समय उसकी क़ब्र फट जाएगी और उसमें से बाहर आ जाएगा और यह किसी को आस्था नहीं। इसके अतिरिक्त एक मृत्यु के पश्चात् दूसरी मृत्यु एक महान नबी के लिए प्रस्तावित करना ख़ुदा तआला की समस्त किताबों के विपरीत है। जो व्यक्ति एक बार मसीह को मार कर फिर प्रलय के निकट इसी संसार में लाता है उसकी यह इच्छा है कि सब के लिए एक मौत और मसीह के लिए दो मौतें हों जिसने संसार में किसी शणीर और रूप में जन्म लिया वह मौत से बच नहीं सकता। देखो पतरस का दूसरा पत्र बाब-3, आयत-10

और बुख़ारी की उपोदयताओं में से एक यह है कि उन्होंने निश्चित तौर पर इस बात का निर्णय देकर कि मसीह इब्ने मरयम मृत्यु पा चुका और मृत्युप्राप्त लोगों में जा मिला। फिर उस भविष्यवाणी के बारे में जिसका उनकी सही में उल्लेख है कि इब्ने मरयम उतरेगा, की ठोस अनुकूलताएं स्थापित करके यह सिद्ध किया है कि आने वाला इब्ने मरयम वह इब्ने मरयम कदापि नहीं है जिस पर इंजील उतरी थी। अत: प्रथम क़रीना यह लिखा है कि आंहज़रत स.अ.व. फ़रमाते हैं कि لا نبی بعدی पृष्ठ-633 । द्वितीय यह है कि आने वाले मसीह के बारे में امامکم منکم का कथन प्रयोग किया गया है जिससे स्पष्ट तौर पर बता दिया है कि वह आने वाला मसीह असल मसीह नही है अपितु वह तुम्हारा एक इमाम होगा और तुम में से होगा तथा मसीह के साथ किसी अन्य इमाम का होने का कदापि वर्णन नहीं किया अपितु इमामत के कारण है। मसीह मौऊद का नाम हकम रखा, अदल रखा मुक़्सित रखा। यदि वह इमाम नहीं तो ये विशेषताएं जो केवल इमामत से ही संबंध रखती हैं क्योंकर उसके पक्ष में बोली जा सकती हैं और यदि कहो कि इमामत से अभिप्राय नमाज़ पढ़ाने की इमामत है जैसा कि प्रत्येक मस्जिद में मुल्ला हुआ करते हैं तो यह विचित्र बुद्धि की बात है क्योंकि यह तो कदापि संभव नहीं कि बीस करोड़ मुसलमानों के

लिए जो विभिन्न देशों में अनेकों स्थानों पर निवास रखते हैं पांच समय की नमाज़ अदा करने के लिए एक ही इमाम पर्याप्त हो अपितु बड़ी-बड़ी सेनाओं के लिए भी जो अनेकों स्थानों में अपने युद्ध संबंधी हितों की दृष्टि से अलग-अलग हों एक इमाम पर्याप्त नहीं हो सकता। अत: नमाज़ पढ़ाने के लिए इमामत जैसा कि आजकल लाखों लोग करा रहे हैं। यही संख्या प्रत्येक युग के लिए आवश्यक और अनिवार्य है जो केवल एक से सम्पन्न नहीं हो सकती अपितु इमाम से अभिप्राय पथ-प्रदर्शक, पेशवा और ख़लीफ़ा है जिसकी विशेषताओं में से हकम और अदल और मुक़्सित होना वर्णन किया गया है। अब आंख खोल कर देखना चाहिए कि ये विशेषताएं बुख़ारी की इबारतों के परिदृश्य देखने से मसीह मौऊद के पक्ष में चरितार्थ होती हैं या किसी अन्य के पक्ष में। हे ख़ुदा के लोगो ! ख़ुदा से कुछ तो भय करो। देखो तुम्हारा हृदय ही तुम्हें दोषी करेगा कि तुम सत्य पर पर्दा डाल रहे हो। डरो ! हे लोगो डरो तथा ख़ुदा और रसूल के कथन से जान बूझ कर विमुख न हो तथा नास्तिकता और ख़ुदा की किताबों को परिवर्तित करने से रुक जाओ। अल्लाह और रसूल के शब्दों को उनके स्थानों से क्यों फेरते हो। وقد حرفتم وانتم تعلمون

तृतीय क़रीना जो इमाम बुख़ारी ने वर्णन किया है यह है कि आने वाले मसीह और असल मसीह इब्ने मरयम की आकृति में स्थान-स्थान पर पूर्ण अनिवार्यता के साथ अन्तर डाल दिया है। प्रत्येक स्थान पर जो असल मसीह इब्ने मरयम की आकृति लिखी है, उसके चेहरे को लाल लिखा है और प्रत्येक स्थान पर जो आने वाले मसीह की आकृति आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथनानुसार वर्णन किया है और उसके चेहरे को गेहूआं प्रकट किया है और किसी स्थान पर इस अनिवार्यता को हाथ से नही जानें दिया। अत: पृष्ठ 489, में दो हदीसें इमाम बुख़ारी लाए हैं। एक अबू हुरैरा से और एक इब्ने उमर से और इन दोनों में यह वर्णन है कि मे'राज की रात में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ईसा को जो असल ईसा है देखा और उसे लाल रंग का पाया फिर उसके आंगे अबू सालिक से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आने वाले मसीह को

स्वप्न में देखा और उसकी आकृति को गेहुंआ रंग का वर्णन किया। फिर पृष्ठ 1055 में इब्ने उमर रज़ि. से रिवायत है कि आने वाले मसीह को आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वप्न में देखा और मालूम हुआ कि वह गेहूंआं है और दज्जाल को लाल रंग देखा (जो इस बात की ओर संकेत था कि वह लाल रंग जाति से पैदा होगा) और पृष्ठ 489 में अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत है कि आप(स) ने आने वाले इब्ने मरयम को गेहूआं देखा। इसी प्रकार इमाम बुख़ारी ने अपनी किताब में यह अनिवार्य रखा है कि वह असल मसीह की आकृति को विश्वसनीय रखा है कि वह असल मसीह की आकृति को विश्वसनीय सहाबा की रिवायत द्वारा लाल रंग का वर्णन करते हैं और आने वाले मसीह की आकृति गेहुएं रंग की प्रकट करते हैं जिस से उन्होंने सिद्ध किया है कि आने वाला मसीह और है। अत: इमाम बुख़ारी ने अपनी सही की 'किताबुल्लिबास' में भी आने वाले मसीह का हुलिया गेहुआं लिखा है। देखो पृष्ठ 876 किताबुल्लिबास।

इमाम बुख़ारी की उपादेयताओं में से एक यह है कि उन्होंने इस हदीस को जो सही बुख़ारी के पृष्ठ 652 और 464 में है अर्थात हदीस **مامن مولود یولد الا والشیطان یمسّہ حین یولد الا مریم وابنہا** और हदीस **باصبعیہ......غیر عیسیٰ** को विरोधी हदीसों के साथ वर्णन करके इस बात की ओर ध्यानाकर्षण किया है कि इब्ने मरयम से अभिप्राय प्रत्येक वह व्यक्ति है जो उसके गुण और रंग में हो और विरोधी हदीसें ये हैं - देखो पृष्ठ 464 और हदीस पृष्ठ 776 जिसके अन्त में **لم یضرہ الشیطان** इसके अतिरिक्त आयत **اِنّ عبادی لیس لك علیهم سلطان**(अलहिज्र-43) और आयत **سلام علیه یوم وُلِدَ** (मरयम-16) स्पष्ट तौर पर सिद्ध कर रही है कि शैतान के स्पर्श से सुरक्षित होना इब्ने मरयम से विशेष्य नहीं तथा ज़मख़शरी का यह कटाक्ष कि इमाम बुखारी इब्ने मरयम की वह हदीस जो शैतान के स्पर्श से विशेष तौर पर सुरक्षित रहने की अपनी सही में लाए हैं दोष से रिक्त नहीं और उसकी प्रमाणिकता में आपत्ति है जैसा कि स्वयं उसने वर्णन किया है, व्यर्थ है क्योंकि गहरी दृष्टि डालने से मालूम होता है कि इमाम बुज़ुर्ग बुख़ारी ने स्वयं संकेत कर दिया है

कि इब्ने मरयम और उसकी मां से अभिप्राय प्रत्येक ऐसा व्यक्ति है जो उन दोनों के गुण अपने अन्दर रखता हो इस में कोई विरोधाभास नहीं। जब कि यह सिद्ध हुआ कि नबी स.अ.व. के कलाम में ग़ैर ईसा पर ईसा या इब्ने मरयम बोला गया है तो यह मुहावरा हमारे उद्देश्य का और अधिक समर्थन होगा। नबी करीम स.अ.व. की हदीसों में यह भी एक मुहावरा प्रचलित है कि कुछ का कुछ गुणों की दृष्टि से ऐसा नाम रखा जाता है जो प्रत्यक्ष में किसी दूसरे का नाम है जैसा कि पृष्ठ 521 में यह हदीस है **لقد كان فيما كان قبلكم من الامم ناس محدثون فان يك فى اُمّتى احد فانه عمر** देखो पृष्ठ-521 बुख़ारी। अब स्पष्ट है कि मुहद्दिसियत हज़रत उमर में सीमित नहीं। अत: हदीस का अर्थ यह है कि जो मुहद्दिस होगा वह अपनी अध्यात्मिक विशेषताओं की दृष्टि से उमर ही होगा। इसी प्रकार हदीसों में 'दाब्बतुलअर्ज़' को भी एक विशेष नाम रख कर वर्णन किया है परन्तु हदीसों पर विचार करने से ज्ञात होता है कि वह भी प्रयोग की दृष्टि से सामान्य है और 'दाब्बतुलअर्ज़' को सही मुस्लिम में ऐसी शैली से वर्णन किया गया है कि एक ओर तो उसको दज्जाल की जस्सासा ठहरा दिया गया है और उसी के मित्र और उसी द्वीप में रहने वाले जहां वह है और दूसरी ओर मक्का के हरम में सफ़ा के नीचे उसे स्थान दे रखा है मानो वह पवित्र स्थान के नीचे है न दज्जाल के पास और वर्णन किया गया है कि उसी में से वह निकलेगा। इस रूपक से ऐसा प्रतीत होता है कि दाब्बतुलअर्ज़ वास्तव में शारीरिक संज्ञा ऐसे उलमा के लिए है जो दो दिशाएं रखते हैं। उनका एक संबंध धर्म और सत्य से है और उनका एक संबंध संसार और दज्जालियत से और अन्तिम युग में ऐसे मौलवियों और मुल्लाओं का पैदा होना कई स्थानों पर बुख़ारी में लिखा है। अत: वर्णन किया गया है कि वे लोग हदीस ख़ैरुलबरिय्यह पढ़ेंगे और पवित्र क़ुर्आन की भी तिलावत करते होंगे परन्तु क़ुर्आन उनके कंठ से नीचे नहीं उतरेगा। अत: यह वही युग है। इन्हीं लोगों की भेंट से आंहज़रत स.अ.व. ने डराया है और फ़रमाया है -

فاعتزل تلك الفرق كلها ولو ان تعض باصل شجرة حتّٰى يدركك الموت

و انت علیٰ ذالك (पृष्ठ-509 बुख़ारी) यही लोग हैं जो इसके बावजूद कि अल्लाह और उसका पवित्र रसूल सर्वथा मसीह इब्ने मरयम की मृत्यु प्रकट कर रहे हैं परन्तु उन्हें फिर भी ख़ुदा और रसूल के कथन पर विश्वास नहीं हालांकि आदेश यह था -

فَاِنۡ تَنَازَعۡتُمۡ فِیۡ شَیۡءٍ فَرُدُّوۡہُ اِلَی اللّٰہِ وَ الرَّسُوۡلِ اِنۡ کُنۡتُمۡ تُؤۡمِنُوۡنَ بِاللّٰہِ وَ الۡیَوۡمِ الۡاٰخِرِ ؕ ذٰلِکَ خَیۡرٌ وَّ اَحۡسَنُ تَاۡوِیۡلًا۔ (अन्निसा-60)

ما کان من شرط لیس فی کتاب اللہ فھو باطل قضاء اللہ احق۔ (बुख़ारी पृष्ठ-377)

ما عندنا شیٔ الّا کتٰب اللہ (बुख़ारी पृष्ठ-250)

حسبکم القران (बुख़ारी-172)

अब हम बतौर नमूना इमाम बुख़ारी की उपादेयताओं के वर्णन करने से निवृत्त हुए और उपरोक्त वर्णनों से स्पष्ट है कि इमाम बुख़ारी साहिब प्रथम श्रेणी पर हमारे दावारें के साक्षी और समर्थक हैं और हमारे विरोधियों के लिए कदापि संभव नहीं कि अपने विचारों के समर्थन में लेशमात्र भी सही बुख़ारी की कोई हदीस प्रस्तुत कर सकें। अत: वास्तव में सही बुख़ारी से वे इन्कारी हैं न कि हम।

अन्त में यह भी उल्लेख करना चाहता है कि मैंने मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी से यह निवेदन किया था कि यदि आप मुझे धोखेबाज़ और ग़ैर मुस्लिम समझते हैं तो आओ इस ढंग से भी मुक़ाबला करो कि हम दोनों क़ुबूलियत के निशान प्रकट होने के लिए ख़ुदा तआला की ओर लौटें ताकि ख़ुदा की सहायता जिसके साथ हो जाए और उसके लिए ख़ुदा की ओर स्वीकारिता के आकाशीय निशान प्रकट हों वह इस निशान से लोगों की दृष्टि में अपनी स्वीकारिता के साथ पहचाना जाए और झूठे के दैनिक संघर्ष से लोगों को मुक्ति और सन्तोष प्राप्त हो। इसके उत्तर में आदरणीय मौलवी साहिब अपने 1, अगस्त 1891 ई. के विज्ञापन में लिखते हैं कि यह निवेदन उस समय सुनने योग्य होगा कि जब तुम प्रथम अपनी आस्थाओं को इस्लामी आस्थाएं होना सिद्ध करोगे। ग़ैर मुस्लिम (अर्थात् जो मुसलमान नहीं) चाहे कितने ही आकाशीय निशान दिखाए मुसलमान उसकी ओर मुड़ कर नहीं देखते। अब दर्शकगण न्यायपूर्वक कहें कि जिस अवस्था में इसी

प्रमाण के लिए निवेदन किया गया था ताकि प्रकट हो जाए कि दोनों पक्षों में से वास्तविक और सच्चा मुसलमान कौन है फिर प्रमाण से पूर्व एक मुसलमान को जो لا الہ الا اللّٰہ محمد رسول اللّٰہ का मानने वाला और आस्था रखने वाला हो ग़ैर मुस्लिम कहना और لستَ مسلمًا करके पुकारना किस प्रकार की मुसलमानी और ईमानदारी है। इसके अतिरिक्त यह विनीत मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब के विचार में काफ़िर है तो ख़ैर वह यह विचार कर लें कि मेरी ओर से जो प्रकट होगा वह इस्तिद्राज* अत: ऐसी अवस्था में इस इस्तिद्राज के मुकाबले में उनकी ओर से कोई चमत्कार प्रकट होना चाहिए और स्पष्ट है कि चमत्कार हमेशा इस्तिद्राज पर विजयी होता है। अन्तत: ख़ुदा के मान्य लोगों को ही आकाशीय सहायता प्राप्त होती है। यदि मैं उनके कथनानुसार धिक्कृत (अभिशप्त) हूं और वे मान्य हैं तो फिर एक अभिशप्त के मुक़ाबले पर इतना क्यों डरते हैं......। यदि मैं उनके कथनानुसार काफ़िर होने की अवस्था में कुछ दिखाऊंगा तो वे उससे भी उत्तम दिखा सकते हैं मान्य जो हुए कि -

مقبول را ردنباشد سخن و من عادیٰ لی ولیًّا فقد اٰذنته للحرب

इब्ने सय्याद ने यदि कुछ दिखाया था तो क्या उसके मुक़ाबले पर चमत्कार प्रकट नहीं हुए थे ? और क्या दज्जाल के मायावी कामों के मुकाबले पर ईसा के चमत्कारों का वर्णन नहीं। अत: भागो कहां भागोगे ?

* इस्तिद्राज - वह चमत्कार जो किसी नास्तिक की ओर से प्रकट हो। (अनवादक)

सय्यद अहमद खां साहिब के. सी. एस. आई. का इल्हाम के बारे में विचार तथा हमारी ओर से यथायोग्य वास्तविकता का वर्णन

فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّ اَحْسَنُ تَاْوِيْلًا (अन्निसा-60)

उपरोक्त आयत का अनुवाद यह है कि हे मुसलमानो! यदि किसी बात में तुम में परस्पर विवाद हो तो उस बात के निर्णय के लिए अल्लाह और रसूल के सुपुर्द कर दो। यदि तुम अल्लाह और अन्तिम दिवस पर ईमान लाते हो तो यही करो कि यही उचित और परिणाम की दृष्टि से सब से उत्तम है।

अब ज्ञात होना चाहिए कि सय्यद साहिब ने इल्हाम के बारे में अपने पर्चे अलीगढ़ गज़ट में क़ुर्आन और हदीस के विपरीत विचार प्रकट किया है। अत: उनके लेख का सारांश निम्नलिखित है। और वह यह है -

जो बात सहसा हृदय में आ जाए यद्यपि किसी भी बात से संबंध रखती हो **इल्हाम** है इस शर्त पर कि कोई शिक्षा या परिभाषा या वर्णन उस ओर को ले जाने वाला न हो। इस प्रकार के इल्हाम कोई अद्भुत वस्तु नहीं हैं अपितु अधिकांश लोगों को होते हैं। तर्कशास्त्री को तर्कशास्त्र में, दार्शनिक को दर्शनशास्त्र में, चिकित्सक को चिकित्सा विज्ञान एवं रोगों की पहचान में व्यवसायी को अपने व्यवसाय इत्यादि में यहां तक कि वह इस्लाम और ग़ैर इस्लाम पर ही निर्भर नहीं वरन् इस प्रकार के इल्हाम मनुष्य की एक स्वाभाविक बात है जिसमें इस्लाम की आवश्यकता नहीं हां ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो इल्हाम होने की योग्यता रखते हों। इल्हाम से कदाचित् कुछ अवस्थाओं में उस व्यक्ति को जिसको इल्हाम हुआ हो कोई हार्दिक सन्तुष्टि प्राप्त होती हो परन्तु इस से कोई ऐसा परिणाम जो दूसरों को लाभ पहुंचाने वाला, विश्वास दिलाने वाला, सन्तोष प्रदान करने वाला या उस घटना की वास्तविकता को सिद्ध करने वाला

हो पैदा नहीं हो सकता। इल्हामों का सिलसिला अधिकतर अध्यात्म ज्ञानों से संबंध रखता है जो मात्र कल्पनाएं हैं तथा उनके वास्तविक तौर पर होने का कोई प्रमाण नहीं। आदरणीय सूफ़ी लोगों के समस्त इल्हाम व्यक्तिगत विचारों के अतिरिक्त कुछ अधिक श्रेणी नहीं रखते और मात्र तुच्छ, अधम और बेकार हैं। न उनसे ख़ुदा की प्रजा को कुछ लाभ है और न हानि। इस्लाम धर्म तो आयत الیوم اکملتُ لکم دینکم के अनुसार पूर्ण हो चुका। अब इल्हाम उसमें कोई नई बात पैदा नहीं कर सकता। जो लोग किसी इल्हाम वाले को ख़ुदा तआला तक पहुंचा हुआ समझते हैं वे इस बात का भी निर्णय नहीं कर सकते कि वास्तव में उसका इल्हाम का दावा सही है अथवा मस्तिष्क में ख़ुदा न करे कुछ दोष है और इल्हाम वाला जो स्वयं को इल्हाम के कारण सन्तुष्ट समझता है यह संतोष उसके भी विश्वास के योग्य नहीं। क्या मालूम कि वह वास्तव में सन्तुष्ट है अथवा यों ही व्यर्थ विचार में ग्रस्त है। इससे इल्हाम वालों तथा उन लोगों में जो सूफी अथवा वली कहलाते हैं और कुछ नहीं कि वे अपनी ही काल्पनिक बातों पर जो मात्र निराधार हैं जम जाते हैं और उन्हें सही विचार करने लगते हैं तथा उनकी साधना की उन्नति केवल भ्रमों की उन्नति है। इल्हाम और इल्हाम वाले की ओर न धर्म के लिए, न परलोक के लिए और न ख़ुदा और सानिध्य के लिए, न सत्य और असत्य में अन्तर करने के लिए हमें कुछ आवश्यकता है। यद्यपि लोग किसी इल्हाम वाले के चारों ओर इस प्रकार एकत्र हो जाएं जिस प्रकार मूर्ति-पूजक किसी मूर्ति के चारों ओर। सारांश यह है कि इल्हाम बिल्कुल अलाभकारी है और उनकी वास्तविकता पर कोई तर्क नहीं। **فَافۡهَم هذا ما الهمنی رَبّی** कलाम समाप्त हुआ।

यह विनीत सय्यद साहिब के भ्रमों का निवारण करने के लिए सर्वप्रथम इस बात को स्पष्ट करना आवश्यक समझता है कि सय्यद साहिब ने जो कुछ इल्हाम के बारे में समझा है अर्थात् यह कि वे केवल काल्पनिक बातें हैं कि केवल इल्हाम वालों का हृदय ही उनका आविष्कारक होता है। सय्यद साहिब की यह राय इस बात को सिद्ध करती है कि वह अब तक उस शिक्षा से अपरिचित हैं कि जो इल्हाम अर्थात् वह्यी के बारे में अल्लाह और उसके रसूल ने दी है। अत: स्पष्ट हो कि पवित्र क़ुर्आन में उस अवस्था

का वर्णन करने के लिए जिसे ख़ुदा के वार्तालाप का नाम दिया जाता है इल्हाम का शब्द नहीं अपनाया गया। केवल शब्दकोशीय तौर पर एक स्थान पर इल्हाम का शब्द आया है जैसा कि फ़रमाता है - فَالهمها فجورها و تقوٰها (अश्शम्स-9) अत: उसका مانحن فيه (इसके कि जिसमें हम हैं) से कोई संबंध नहीं। इसका अर्थ तो केवल इतना है कि ख़ुदा तआला कारणों का कारण होने के कारण बुरे लोगों को उनके कर्मों के अनुसार और नेक लोगों को उनके कर्मों के अनुसार उनके काम वासना संबंधी विचारों या संयम पूर्ण उत्तेजनाओं के अनुसार ऐसे प्रकृति के नियम के आदेश से अभीष्ट विचारों, युक्तियों और बहानों के साथ सहायता देता है अर्थात् नए-नए अभीष्ट विचार और बहाने उन्हें सुझा देता है या यह कि उनकी उन उत्तेजनाओं एवं भावनाओं को बढ़ाता है और या यह कि उनके गुप्त बीज को प्रकट करता है। उदाहरणतया एक चोर इस विचार में लगा रहता है कि उसे सेंध लगाने का कोई उत्तम उपाय ज्ञात हो जाए तो उसे सुझाया जाता है या एक संयमी चाहता है कि हलाल कार्यों की शक्ति के लिए कोई मार्ग मुझे प्राप्त हो जाए तो इस बारे में उसे भी कोई उपाय बताया जाता है अत: सामान्यतया उस का नाम इल्हाम है जो किसी भाग्यशाली अतवा दुर्भाग्यशाली से विशेष्य नहीं वरन् सम्पूर्ण मानव जाति और समस्त मनुष्य उस कारणों के कारण (ख़ुदा) से अपनी-अपनी स्थिति के अनुसार अपने उस इल्हाम से लाभान्वित हो रहे हैं।

परन्तु इससे बहुत ऊपर पहुंच कर एक अन्य इल्हाम भी है जिसे ख़ुदा तआला ने अपनी पवित्र वाणी (पवित्र क़ुर्आन) में वह्यी के शब्द से याद किया है न कि इल्हाम से। उसकी परिभाषा यह है कि वह ख़ुदा तआला की एक विशेष झलक का नाम है जो बड़ी प्रचुरता के साथ उन्हीं पर होती है जो विशेष्य और सानिध्य प्राप्त हों और उसका मुख्य कारण यह है कि सन्देह और शंकाओं से निकालने के लिए या एक नई या गुप्त बात बताने के लिए या ख़ुदा तआला की इच्छा और अनिच्छा और उसके इरादे से सूचित करने के लिए या किसी भय के स्थान से सुरक्षित और सन्तुष्ट करने के लिए अथवा किसी शुभ समाचार को देने के लिए ख़ुदा तआला की ओर से वार्तालाप की शैली में तथा एक आनंदपूर्ण कलाम के रूप में प्रकट होती है तथा वास्तविकता उसकी यह है कि वह एक परोक्ष से इल्का शब्दों के साथ है जिसका

बोध कदाचित् अचेतना की अवस्था में सुनने के तौर पर अथवा जीभ पर जारी हो जाने के तौर पर या सामने देखने के तौर पर होता है तथा अपने व्यक्तिगत और काल्पनिक विचारों का उसमें कोई हस्तक्षेप नहीं होता अपितु वह केवल ख़ुदाई प्रेरणा और ख़ुदाई फूंक से एक क़ुदरती आवाज़ है जिसे वह्यी के पात्र की चेतन शक्ति ज्ञात कर लेती है। जब मानव आत्मा कामवासना संबंधी अपवित्रताओं से पवित्र होकर और इस्लाम की ठोस वास्तविकता से पूर्ण और पर रंगीन होकर ख़ुदा तआला के नि:स्पृह दरबार में प्रसन्नता और स्वीकारिता के साथ पूरी-पूरी वफ़ादारी को लेकर अपना सर रख देती है तथा एक सच्ची क़ुर्बानी के पश्चात् जो तन, मन, धन और सम्मान एवं अन्य प्रिय वस्तुओं से अभिप्राय है ख़ुदा के लिए प्रेम और अनुराग के साथ खड़ी हो जाती है तथा काम वासनाओं के समस्त, आवरण जो उसमें और उसके रब्ब में दूरी डाल रहे थे दुर्लभ और समाप्त हो जाते हैं तथा एक महान क्रान्ति और ठोस परिवर्तन उस मनुष्य की विशेषताओं तथा उसकी नैतिक स्थिति एवं उसके जीवन की समस्त भावनाओं में पैदा होकर एक नई पैदायश और नया जीवन प्रकट हो जाता है, और उसकी देखने वाली दृष्टि में अन्य का अस्तित्व पूर्णतया समाप्त हो जाता है तब ऐसा व्यक्ति इस योग्य हो जाता है कि ख़ुदा के वार्तालाप से अत्यधिक सम्मानित हो और ख़ुदाई वार्तालाप का लाभ यह होता है कि सीमित मनुष्य उन्नति करके उस देखने की श्रेणी पर पहुंचता है कि जैसे उसने ख़ुदा तआला का दर्शन कर लिया है। अत: यह वह स्थान है जिस पर ख़ुदा को पहचानने के समस्त स्थान समाप्त हो जाते हैं और मानव कौशलों का यही वह अन्तिम बिन्दु है जिस से बढ़कर ख़ुदा को पहचानने की प्यास रखने वालों के लिए इस संसार में कदापि प्राप्त नहीं हो सकता तथा नबियों और मुहद्दिसों के लिए इसकी प्राप्ति का प्राय: कृतिम उपाय यह है कि जब ख़ुदा तआला चाहता है कि उनमें से किसी पर अपना कलाम उतारे तो आध्यात्मिक तौर पर भौतिक साधनों के माध्यम के बिना उस पर ऊंघ और अचेतना व्याप्त की जाती है। तब वह व्यक्ति अपने अस्तित्व से पूर्णतया खोकर सहसा ख़ुदा के दरबार के एक विशेष आकर्षण से गहरे ग़ोते में चला जाता है और चेतना आने के समय अपने साथ एक आनन्ददायक कलाम ले आता है वही **ख़ुदा की वह्यी है।**

यह कलाम जो ख़ुदा तआला के प्रिय लोगों और पवित्रात्माओं पर उतरता है यह कोई भ्रमपूर्ण और काल्पनिक बात नहीं होती जिसे मनुष्य की मनोवृत्ति स्वयं ही पैदा कर सके अपितु यह निश्चित तौर पर उस अगोचर हस्ती का कलाम होता है जिसकी हस्ती की सर्वोत्कृष्ट श्रेणी का प्रमाण अध्यात्म ज्ञानियों की दृष्टि में यही कलाम है और इस बात के प्रमाण के लिए कि ख़ुदा तआला की यह आदत है कि अपना कलाम अपने बन्दों पर उतारे। एक मुसलमान के लिए पवित्र क़ुर्आन और हदीसें पर्याप्त हैं। ख़ुदा तआला का अपने नबियों से वार्तालाप करना तथा वलियों में से हज़रत मूसा की मां पर अपना कलाम उतारना, हज़रत खिज़्र को अपने कलाम से सम्मानित करना, मरयम सिद्दीक़ा से अपने फ़रिश्ते के माध्यम से वार्तालाप करना इत्यादि-इत्यादि इसका पवित्र क़ुर्आन में इतना प्रमाण मिलता है कि वर्णन की आवश्यकता नहीं और सही बुख़ारी में मृष्ठ-521 में हज़रत उमर रज़ि. की विशेषताओं में इस हदीस का उल्लेख है।

قد كان فی من قبلكم من بنی اِسرَائیل رجالٌ یكلّمون من
غیر ان یكونوا انبیاء فان یك فی اُمَّتِی مِنۡهُمۡ احدٌ فعمر

अर्थात् तुम से पूर्व बनी इस्राईल में ऐसे लोग गुज़रे हैं कि ख़ुदा तआला उन से वार्तालाप करता था बिना इसके कि वे नबी हों। अत: यदि ऐसे लोग इस उम्मत में हैं तो वह उमर है।

इसी प्रकार समस्त प्रसिद्ध वली लोग अपने व्यक्तिगत अनुभवों से इस बात का साक्ष्य देते आए हैं कि ख़ुदा तआला के अपने वलियों से वार्तालाप और सम्बोधन होते हैं और रब्ब का आनंददायक कलाम दुआ के समय तथा अन्य समयों में भी वे अधिकतर सुनते हैं। देखना चाहिए कि ''फुतूहुलग़ैब'' में सय्यद अब्दुल क़ादिर जैलानी रज़ि. इस बात की स्थान स्थान पर साक्ष्य देते हैं कि ख़ुदा का कलाम उसके सानिध्य प्राप्त वलियों पर अवश्य उतरता है और वह कलाम होता है न कि केवल इल्हाम हज़रत मुजद्दिद अलिफ सानी साहिब अपने मक्तूबात (पत्रों) की जिल्द द्वितीय पृष्ठ-99 में एक पत्र मुहम्मद सिद्दीक़ के नाम लिखते हैं जिसकी इबारत यह है -

اعلم ایّہا الصِّدیق انّ کلامہ سُبحانہٗ مع البشر قد یکون شفاھا و ذالک
الافراد من الانبیاء و قد یکون ذالک لبعض الکمل من متابعیھم و اذا
کثر ھذا القسم من الکلام مع واحدٍ منھم سُمی مُحدثا و ھذا غیر
الالھام و غیر الالقاء فی الروع و غیر الکلام الذی مع الملک انّما
یُخاطب بھذا الکلام الانسان الکامل و اللّٰہ یختص برحمتہ من یشآء

अर्थात् हे मित्र तुम्हें ज्ञातहो कि अल्लाह तआला का मनुष्य के साथ कलाम करना कभी आमने-सामने और वार्तालाप के रंग में होता है और ऐसे लोग जो ख़ुदा से वार्तालाप करने वाले होते हैं तथा विशेष नबियों में से हैं और कभी यह वार्तालाप का पद कुछ ऐसे पूर्ण लोगों को मिलता है कि नबी तो नहीं परन्तु नबियों के अनुयायी हैं। जो व्यक्ति अत्यधिक वार्तालाप का सम्मान पाता है उसे मुहद्दिस कहते हैं और यह ख़ुदा का वार्तालाप इल्हाम के प्रकार में से नहीं अपितु ग़ैर इल्हाम है तथा यह हृदय में इल्क़ा भी नहीं है और न इस प्रकार का कलाम है जो फ़रिश्ते के साथ होता है। इस कलाम से वह व्यक्ति सम्बोधित किया जाता है जो पूर्ण मनुष्य हो और जिसे ख़ुदा तआला चाहता है अपनी दया के साथ विशेष कर लेता है। इन इबारतों से मालूम हुआ कि वास्तव में इल्हाम और वस्तु है तथा ख़ुदा का वार्तालाप और बात है और सय्यद साहिब अपनी किताब ''तब्ईनुलकलाम'' के पृष्ठ-7 में इस उपरोक्त बयान का स्पष्ट तौर पर इक़रार करते हैं। पाठकों को चाहिए कि पुस्तक ''तब्ईनुलकलाम'' के पृष्ठ-7) को अवश्य पढ़ें ताकि ज्ञात हो कि सय्यद साहिब स्वयं ही पहले उन समस्त बातों का इक़रार कर चुके हैं और अब इक़रार करने के पश्चात किसी हित को देखते हुए इन्कारी हो बैठे हैं।

सय्यद साहिब का यह कहना कि इल्हाम व्यर्थ है स्वयं व्यर्थ है क्योंकि अगर वह इल्हाम व्यर्थ है जिसकी परिभाषा सय्यद साहिब ने अपने लेख में की है तो हुआ करे परन्तु ख़ुदा का कलाम तो व्यर्थ नहीं और ख़ुदा की पनाह बेसूद (व्यर्थ) क्योंकर हो। वही तो एक ख़ुदा को पहचानने का एक माध्यम है जिसके कारण मनुष्य इस अंधकारमय संसार में केवल स्वयं निर्मित विचारों से ख़ुदा तआला की हस्ती का क़ायल नहीं होता अपितु उस हमेशा जीवित रहने वाली और दूसरों को भी जीवित रखने

वाली हस्ती के मुख से अनलमौजूद की आवाज़ भी सुन लेता है और सैकड़ों अद्‌भुत भविष्यवाणियों एवं उच्च रहस्यों के कारण जो उस कलाम के द्वारा प्रकट होते हैं बात करने वाले पर ईमान लाने के लिए पूर्ण विश्वास की श्रेणी तक पहुंच जाता है और ऐसे व्यक्ति का सहवर्ती भी इन आध्यात्मिक लाभों से वंचित नहीं रहता अपितु शनै: शनै: उसे यहां तक विश्वास-शक्ति प्राप्त हो जाती है कि जैसे ख़ुदा तआला को देख लेता है। यदि सय्यद साहिब इस बात की किसी अख़बार में घोषणा करें कि हमें इस बात पर ईमान नहीं कि ख़ुदा से वार्तालाप करने का यह पद मनुष्य को प्राप्त हो सकता है और इन समस्त साक्ष्यों से इन्कार करें कि जो आध्यात्मिक अनुभवी पुरुषों, रसूलों, नबियों और वलियों ने प्रस्तुत की हैं तो इस विनीत का कर्त्तव्य होगा उसे सामान्य नियम से हटकर जिसकी नींव ख़ुदा तआला के पवित्र नबियों ने डाली है परीक्षा के लिए सय्यद साहिब को किसी अख़बार के द्वारा खुले तौर पर घोषणा करे और यदि सय्यद साहिब सत्यभिलाषी होंगे तो इस अध्यात्मिक निमंत्रण को सहर्ष स्वीकार कर लेंगे।

والسلام علیٰ من اتبع الھدٰی

تَوَفِّیْ (तवफ़्फ़ा) के बारे में तथा الدَّجَّال अद्‌दज्जाल के बारे में एक हज़ार रुपए का विज्ञापन

समस्त मुसलमानों पर स्पष्ट हो कि पवित्र क़ुर्आन और हदीसों से पूरी सफाई के साथ सिद्ध हो गया है कि वास्तव में हज़रत मसीह इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम पर आयत فِیۡہَا تَحۡیَوۡنَ وَفِیۡہَا تَمُوۡتُوۡنَ (अल आराफ़ - 26) पृथ्वी पर ही अपने भौतिक जीवन के दिन व्यतीत करके मृत्यु पा चुके हैं और पवित्र क़ुर्आन की सोलह आयतों और बहुत सी हदीसों बुख़ारी और मुस्लिम तथा अन्य सही हदीसों से सिद्ध है कि मृत्यु प्राप्त लोग पुन: आबाद होने और रहने के लिए संसार में नहीं भेजे जाते और न ही वास्तविक तौर पर किसी पर दो मौतें आती हैं और न पवित्र क़ुर्आन में वापस आने वालों के लिए कोई विरासत का कानून मौजूद है। इसके अतिरिक्त कुछ विद्वानों को इस बात पर बड़ा ज़ोर दिया है कि

मसीह इब्ने मरयम मृत्यु को प्राप्त नहीं हुआ अपितु जीवित ही आकाश की ओर उठाया गया तथा इसी भौतिक शरीर के साथ जीवित आकाश पर मौजूद है और नितान्त धृष्टतापूर्वक कहते हैं कि तवफ़्फ़ा का शब्द जो पवित्र क़ुर्आन में हज़रत मसीह के बारे में आया है उसके अर्थ मृत्यु देना नहीं है वरन् पूरा लेना है अर्थात् यह कि आत्मा के साथ शरीर को भी ले लेना, परन्तु ऐसे अर्थ करना उनका सर्वथा झूठ गढ़ना है। पवित्र क़ुर्आन का सामान्य तौर पर इस शब्द के बारे में यह सामान्य मुहावरा है कि वह शब्द रूह क़ब्ज़ करने (आत्मा को शरीर से अलग करना अर्थात् निकाल लेना) तथा मृत्यु देने के अर्थों पर प्रत्येक स्थान पर इसका प्रयोग करता है। यही भाषा-शैली (मुहावरा) समस्त हदीसों तथा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथनों में पाई जाती है। संसार में जब से अरब का द्वीप आबाद हुआ है और अरबी भाषण जारी हुई है किसी पुरातन या नवीन कलाम से सिद्ध नहीं होता कि **तवफ़्फ़ा** का शब्द कभी शरीर क़ब्ज़ करने के लिए प्रयोग किया गया हो। अपितु जहां कहीं तवफ़्फ़ा के शब्द को अल्लाह तआला का कर्म ठहरा कर मनुष्य के लिए प्रयोग किया गया है वह केवल मृत्यु देने और रूह (आत्मा) को क़ब्ज़ करने के अर्थों में आया है न कि शरीर को क़ब्ज़ करने के अर्थों में। शब्दकोश की कोई पुस्तक इसके विपरीत नहीं। कोई उदाहरण तथा मातृ भाषियों का कोई कथन इसके विपरीत नहीं है। अत: एक विरोधी के सन्देह की लेशमात्र भी गुंजायश नहीं। यदि कोई व्यक्ति पवित्र क़ुर्आन से या आप(स) की किसी हदीस से, अथवा अरबी भाषा के पुरातन या नवीन शे'रों और क़सीदों, पद्य या गद्य से यह प्रमाण प्रस्तुत करे कि किसी स्थान पर तवफ़्फ़ा का शब्द ख़ुदा का कर्म होने की अवस्था में जो रूह वाले के लिए प्रयोग किया गया हो वह क़ब्ज़ रूह और मृत्यु देने के अतिरिक्त किसी अन्य अर्थ में भी चरितार्थ हो गया है। अर्थात शरीर को क़ब्ज़ करने के अर्थों में भी प्रयोग हुआ है तो मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर सही और शरई इक़रार करता हूं कि ऐसे व्यक्ति को अपनी जायदाद का कोई आना बेचकर हज़ार रुपया नक़द दूंगा और भविष्य में उसके हदीस में पारंगत होने और क़ुर्आन में उसके ज्ञानी और अभ्यस्त होने की इक़रार कर लूंगा। इसी प्रकार यदि मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी या उनका कोई सहपंथी यह सिद्ध कर दे कि अद्दज्जाल का शब्द जो

बुख़ारी और मुस्लिम में आया है कथित दज्जाल के अतिरिक्त किसी अन्य दज्जाल के लिए भी प्रयोग किया गया है तो मुझे उस हस्ती की क़सम है जिस के हाथ में मेरे प्राण हैं कि मैं ऐसे व्यक्ति को भी यथासंभव हज़ार रुपया नक़द बतौर क्षतिपूर्ति के दूंगा। चाहें तो मुझ से रजिस्ट्री करा लें या इक़रार नामा लिखा लें। इस विज्ञापन के सम्बोधित विशेष तौर पर मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी हैं जिन्होंने अभिमान और अहंकार से यह दावा किया है कि तवफ़्फ़ा का शब्द जो पवित्र क़ुर्आन में हज़रत मसीह को बारे में आया है इसके अर्थ पूरा लेने के हैं अर्थात् शरीर और आत्मा को इसी पार्थिव शरीर के साथ जीवित ही उठा लेना तथा शरीर और आत्मा के मिश्रित अस्तित्व में से कोई भाग पृथक न छोड़ना अपितु सब को उसी हैसियत में अपने अधिकार में जीवित और सही तौर पर ले लेना। अत: इसी अर्थ से इन्कार करके यह सशर्त विज्ञापन है। ऐसा ही स्वार्थपरायणता और अनभिज्ञता का मार्ग अपनाते हुए मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब ने अद्दज्जाल शब्द के बारे में जो बुख़ारी और मुस्लिम ने अनेकों स्थान पर कथित दज्जाल का एक नाम ठहराया गया है यह दावा कर दिया है कि अद्दज्जाल विशेष तौर पर कथित दज्जाल का नाम नहीं अपितु उन पुस्तकों में यह शब्द दूसरे दज्जालों के लिए प्रयोग हुआ है और इस दावे के समय अपनी हदीस की विद्वता का भी लम्बा चौड़ा दावा किया है। अत: अद्दज्जाल के इस विशाल अर्थ से इन्कार करके तथा यह दाया करके कि यह शब्द अद्दज्जाल का केवल कथित दज्जाल के लिए आया है और बतौर नाम के उसके लिए निश्चित हो गया है ? यह सशर्त विज्ञापन जारी किया गया है। मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब और उनके सहपंथी उलेमा ने शब्द तवफ़्फ़ी और अद्दज्जाल के संबंध में अपने उपरोक्त दावे को सिद्ध कर दिया तो वह हज़ार रुपया लेने के पात्र ठहरेंगे तथा सामान्यतया यह विनीत यह इक़रार भी कुछ अख़बारों में प्रकाशित कर देगा कि वास्तव में मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब और उनके सहपंथी विद्वान और वास्तविक मुहद्दिस और मुफ़स्सिर (व्याख्याकार) तथा मर्मज्ञ तथा पवित्र क़ुर्आन और हदीसों की बारीकियों को समझने वाले हैं यदि सिद्ध न कर सकें तो फिर यह सिद्ध हो जाएगा कि ये लोग बारीकियों और वास्तविकताओं अपितु पवित्र क़ुर्आन और हदीस के साधारण अर्थ समझने से भी असमर्थ तथा सर्वथा धूर्त और अपवित्र

हैं और गुप्त तौर पर अल्लाह और रसूल के शत्रु हैं कि मात्र नास्तिकता के मार्ग से वास्तविक और निश्चित अर्थों का त्याग कर अपने घर के एक नए अर्थ बनाते हैं। इसी प्रकार यदि कोई यह सिद्ध कर दिखाए कि पवित्र क़ुर्आन की वे आयतें और हदीसें जो यह प्रकट करती हैं कि कोई मुर्दा संसार में वापस नहीं आएगा पूर्ण तौर पर प्रमाण नहीं तथा शब्द मृत्यु और मरने की बजाए जिसके अनेक अर्थ हैं तथा नींद और बेहोशी, कुफ़्र, पथभ्रष्टता और मृत्यु के निकट होने के अर्थों में भी आया है तवफ़्फ़ा का शब्द कहीं दिखाए। उदाहरणतया -

تو فاه الله مائة عام ثم بعثه

तो ऐसे व्यक्ति को भी अविलम्ब एक हज़ार रुपया नक़द दे दूंगा।*

विज्ञापन दाता

विनीत ग़ुलाम अहमद, मुहल्ला इक़बालगंज, लुधियाना।

---

* नोट :- मृत्यु के पश्चात् जीवित करने के बारे में जितनी आयतें पवित्र क़ुर्आन में हैं उनमें से कोई आयत वास्तविक मृत्यु पर चरितार्थ नहीं है और वास्तविक मृत्यु के मानने से न केवल यहां यह अनिवार्य आता है कि पवित्र क़ुर्आन की वे आयतें उन सोलह आयतों और उन समस्त हदीसों से विपरीत ठहरती हैं जिनमें यह लिखा है कि कोई व्यक्ति मरने के उपरान्त फिर संसार में नहीं भेजा जाता इसके अतिरिक्त यह विकार भी अनिवार्य आता है कि प्राण निकलते समय तथा क़ब्र का हिसाब और आकाश की ओर रफ़ा जो केवल एक बार होना चाहिए था दो बार मानना पड़ा है और ख़ुदा का यह वादा कि अब मृत्यु प्राप्त व्यक्ति क़ब्र के हिसाब के पश्चात् प्रलय में उठेगा सर्वथा झूठ ठहरता है और यदि इन आयतों में वास्तविक मृत्यु अभिप्राय न लें तो कोई दोष अनिवार्य नहीं आता क्योंकि ख़ुदा तआला की क़ुदरत से यह दूर नहीं कि मृत्यु के समान एक दीर्घ अवधि तक किसी पर कोई बेहोशी की अवस्था लाकर फिर उसे जीवित कर दे परन्तु वह वास्तविक मृत्यु न हो। सच तो यह है कि जब तक ख़ुदा तआला किसी जीवित पर वास्तविक मृत्यु न लाए वह मर नहीं सकता यद्यपि वह टुकड़े-टुकड़े किया जाए। الم تعلم ان الله بكل شَيئٍ قدير وما كان لنفسٍ ان تموتَ الّا باذن الله۔ इसी से।)

हाशिया पृष्ठ 892 से संबद्ध

यह आयत पूरी-पूरी यह है -

يٰعِيۡسٰۤى اِنِّىۡ مُتَوَفِّيۡكَ وَ رَافِعُكَ اِلَىَّ وَ مُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَ جَاعِلُ الَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡكَ فَوۡقَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ‌۔*

इस आयत में ख़ुदा तआला ने क्रमश: स्वयं को कर्ता ठहरा कर अपने चार कर्म एक के बाद एक वर्णन किए हैं जैसा कि वह फ़रमाता है कि -

हे ईसा मैं तुझे मृत्यु देने वाला हूं और अपनी ओर उठाने वाला हूंह और काफ़रों के आरोपों से पवित्र करने वाला हूं और तेरे अनुयायियों को प्रलय तक तेरे इन्कार करने वालों पर प्रभुत्व देने वाला हूं। स्पष्ट है कि ये चारों वाक्य स्वाभावित क्रम से वर्णन किए गए हैं क्योंकि इसमें सन्देह नहीं कि जो व्यक्ति ख़ुदा तआला की ओर बुलाया जाए और اِرۡجِعِىۡۤ اِلٰى رَبِّكِ की सूचना उसे पहुंच जाए। प्रथम उसका मृत्यु पाना आवश्यक है फिर इसी कथित आयत और सही हदीस के अनुसार उसका रफ़ा ख़ुदा तआला की ओर होता है और मृत्यु के पश्चात् मौमिन की आत्मा (रूह) का ख़ुदा तआला की ओर रफ़ा अनिवार्य है जिस पर पवित्र क़ुर्आन और सही हदीसें साक्षी हैं। तत्पश्चात् जो ख़ुदा तआला ने हज़रत ईसा को फ़रमाया कि मैं काफ़िरों के आरोपों से पवित्र करने वाला हूं। यह इस बात की ओर संकेत है कि यहूदी चाहते थे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को सलीब पर मार कर उस आरोप के अधीन लाएं जो तौरात के बाब इस्तिस्ना में लिखा है कि मस्लूब (सलीब द्वारा मरा हुआ) ला'नती और ख़ुदा तआला की दया से वंचित होता है जो ख़ुदा तआला की ओर सम्मानपूर्वक उठाया नहीं जाता। अत: ख़ुदा तआला ने हज़रत ईसा को इस आयत में खुशखबरी दी कि तू अपनी स्वाभाविक मृत्यु से मृत्यु पाएगा और फिर सम्मानपूर्वक मेरी ओर उठाया जाएगा और जो तुझे सलीब पर मारने के लिए तेरे शत्रु जो प्रयत्न कर रहे हैं वे इन प्रयत्न में असफल रहेंगे और जिन आरोपों को सिद्ध करने के लिए वे

* आले इमरान - 56

शेष हाशिया :- चिन्ताग्रस्त हैं उन समस्त आरोपों से मैं तुझे मुक्त और पवित्र रखूंगा। अर्थात् सलीब पर मृत्यु तथा उसके दुष्परिणामों से जो ला'नती होना, नुबुव्वत से वंचित होना और रफ़ा से वंचित होना है। यहां तवफ़्फ़ा के शब्द में भी सलीब की मृत्यु से बचाने के लिए एक सूक्ष्म संकेत है क्योंकि तवफ़्फ़ा के अर्थ पर इसी बात का प्रभुत्व है कि स्वाभाविक मृत्यु से मृत्यु दी जाए अर्थात् ऐसी मृत्यु से वर्णन करना सुबोधता की उच्च श्रेणी में सम्मिलित और सर्वथा नीतिगत है। इसी कारण स्वाभाविक क्रम की अनिवार्यता सम्पूर्ण पवित्र क़ुर्आन में पाई जाती हैं। सूरह फातिहा में ही देखो कि क्योंकर पहले रब्बुल आलमीन (समस्त लोकों के प्रतिपालक) का वर्णन किया पिर रहमान (कृपालु) रहीम (दयालु) फिर मालिक यौमिद्दीन (प्रतिफल और दण्ड देने के दिन का स्वामी) का। वरदान के क्रम को क्योंकर क्रमानुसार सामान्य वरदान से लेकर विशेष वरदान तक पहुंचाया। अत: पवित्र क़ुर्आन की सामान्य पूर्ण सुबोध शैली के अनुसार कथित आयत में सभी चारों वाक्य स्वाभाविक क्रम से वर्णन किए गए हैं परन्तु वर्तमान युग के द्वेष रखने वाले मुल्ला जिनको यहूदियों की पद्धति पर

يحرفون الكلم عن مواضعه

की आदत है और जो मसीह इब्ने मरयम का जीवित होना सिद्ध करने के लिए व्यर्थ हाथ-पैर मार रहे हैं और ख़ुदा के कलाम के अक्षरांतरण और परिवर्तित करने पर कटिबद्ध है वे नितान्त कष्ट से ख़ुदा तआला के इन चार क्रमानुसार वाक्यों में से दो वाक्यों की स्वाभाविक क्रम से इन्कारी हो बैठे हैं अर्थात् कहते हैं कि यद्यपि वाक्य مُطَهِّرُكَ من الذين كَفَرُوْا और वाक्य وجاعل الذين اتَّبَعُوْكَ स्वाभाविक क्रम में हैं, परन्तु वाक्य اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ और वाक्य وَرَافِعُكَ اِلَيَّ स्वाभविक क्रम पर नहीं हैं अपितु वास्तव में वाक्य اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ अन्त में है और वाक्य رَافِعُكَ اِلَيَّ पहले है। खेद कि इन लोगों ने इसके बावजूद कलाम की सुबोध व्यवस्था ख़ुदा जो सर्वोत्तम वार्तालाप करने वालार है की हस्ती को अपनी मूल बनावट, रूप और अनुक्रम से बदला कर विकृत कर दिया और चार वाक्यों में से दो वाक्यों के स्वाभाविक क्रम

शेष हाशिया :- को मान्य रखा और दो वाक्यों को सरस और सुबोध शैली की परिधि से बाहर समझकर अपनी ओर से उनके सुधार को अर्थात् पहले भाग को पीछे और पिले भाग को आगे परन्तु इतनी यहूदियों के समान परिवर्तन करने के बावजूद फिर भी सफल न हो सके। क्योंकि यदि मान लिया जाए कि वाक्य اِنّی رافعک اِلَیَّ वाक्य اِنّی متوفیک पर पहले समझना चाहिए तो फिर भी इस से इबारतों में परिवर्तन करने वालों का उद्देश्य सिद्ध नहीं होता। क्यों ऐसी स्थिति में उसके ये अर्थ होंगे कि हे ईसा! मैं तुझे अपनी ओर उठाने वाला हूं और मृत्यु देने वाला हूं और ये अर्थ सर्वथा ग़लत है, क्योंकि इस से अनिवार्य आता है कि हज़रत ईसा की आसमान पर ही मृत्यु हो। कारण यह कि जब रफ़ा के बाद मृत्यु देने का वर्णन है और उतरने की कहीं चर्चा तक नहीं। इस से स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि आकाश पर ही हज़रत ईसा मृत्यु पाएंगे। हां यदि एक तीसरा वाक्य अपनी ओर से घड़ा जाए और उन दोनों वाक्यों के मध्य में रखा जाए और यों कहा जाए -

يا عيسٰى انى رافعكَ وَمُنَزِّلُكَ ومتوفِّيْك

तो फिर अर्थ ठीक हो जाएंगे परन्तु इन समस्त परिवर्तनों के बाद उपरोक्त वाक्य ख़ुदा तआला का कलाम नहीं रहेंगे अपितु मनुष्य के हस्तक्षेप और स्पष्ट परिवर्तन और अक्षरांतरण के कारण उसी परिवर्तन करने वाले का कलाम समझे जाएंगे जिसके निर्लज्जता और धृष्टता से ऐसा परिवर्तन किया है और कुछ सन्देह नहीं कि ऐसी कार्यवाही सर्वथा नास्तिकता और स्पष्ट बेईमानी में सम्मिलित होगी।

यदि यह कहा जाए कि हम ये अक्षरों और इबारतों का परिवर्तन अनावश्यक तौर पर नहीं करते अपितु क़ुर्आनी आयतों को कुछ हदीसों से अनुकूल और अनुसार करने के लिए नितान्त आवश्यकता के कारण इस अनुचित कार्यवाही को करते हैं तो इसका उत्तर यह है कि प्रथम तो आयत और हदीस में परस्पर विरोधाभास होने की अवस्था में हदीस के विद्वानों और क़ुर्आन के व्याख्याकारों का सिद्धान्त यही है कि यथा संभव हदीस के अर्थों का स्पष्टीकरण करके उसे पवित्र क़ुर्आन के अनुसार किया जाए। जैसा कि सही बुख़ारी के ''किताबुल जनायज़'' पृष्ठ 172 में स्पष्ट

शेष हाशिया :- लिखा है कि हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि. ने हदीस

ان المیت یعذب ببعض ببکاءاھلہ

को पवित्र क़ुर्आन की इस आयत से कि لَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰی (अन्आम-165) विपरीत और विरोधी पाकर हदीस की यह व्याख्या कर दी कि यह मोमिनों के बारे में नहीं अपितु काफ़िरों के संबंध में है जो परिजनों को किसी मृत्यु पर सीना पीटने और रोने पर राज़ी थे अपितु वसीयत कर जाते थे। फिर बुख़ारी के पृष्ठ 183 में जो यह हदीस लिखी है قال ھل وجدتم ماوعد کم ربکم حقًا इस हदीस को हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि. उसके सीधे और वास्तविक अर्थों की दृष्टि से स्वीकार नहीं किया। इस बहाने से कि क़ुर्आन की विरोधी है और अल्लाह तआला फ़रमाता है اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى (अन्नमल-81)और इब्ने उमर की हदीस को केवल इसीकारण रद्द कर दिया है कि ऐसे अर्थ क़ुर्आन के विरोधी हैं। देखो बुख़ारी पृष्ठ-183 इसी प्रकार शोध करने वालों ने बुख़ारी की इस हदीस को जो पृष्ठ 652 में लिखी है। अर्थात् यह कि

مامن مولود یولد الا والشیطٰن یمسّہ حین یولد الا مریم وابنھا

पवित्र क़ुर्आन की इन आयतों के विपरीत पाकर कि

اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ (अलहज्र-41) اِنَّ عِبَادِىْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ (अलहज्र-43) وَ سَلَامٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ (मरयम-16)

एक हदीस की यह व्याख्या कर दी कि इब्ने मरयम और मरयम से ऐसे समस्त लोग अभिप्राय हैं जो इन दोनों की विशेषताओं पर हों जैसा कि बुख़ारी के व्याख्याकार ने इस हदीस की व्याख्या में लिखा है।

قد طعن الزمخشری فی معنی ھذا الحدیث و توقف فی صحتہ و قال ان صح فمعناہ کل من کان فی صفتھا لقولہ تعالیٰ الا عبادك منھم المخلصین

शेष हाशिया :- अर्थात् अल्लामा ज़मख़शरी ने बुख़ारी की इस हदीस में भर्त्सना की है और उसके उचित होने में उसे सन्देह है और कहा है कि यह हदीस क़ुर्आन की विरोधी है। केवल इस स्थिति में उचित समझी जा सकती है कि उसके ये अर्थ किए जाएं कि मरयम और इब्ने मरयम से अभिप्राय ऐसे समस्त लोग हैं जो उनके गुणों पर हों। इसके अतिरिक्त इस आयत के अनुसार -

فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ (अलआराफ़-186)

और पवित्र आयत के अनुसार -

فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَ اللّٰهِ وَ اٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ (अलजासिया-7)

प्रत्येक हदीस जो स्पष्ट तौर पर आयत की विरोधी ही रद्द करने योग्य है और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अन्तिम वसीयत यह थी कि तुम ने पवित्र क़ुर्आन पर दृढ़ता से कायम रहना जैसा कि बुख़ारी के पृष्ठ-751 में यह हदीस लिखी है कि اوصی بکتاب اللّٰہ इसी वसीयत पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम परलोक सिधार गए। फिर इसी बुख़ारी के पृष्ठ-1080 में यह हदीस है

وھذا الکتاب الذی ھَدی اللّٰہ بہ رسولکم فَخُذُوْا بہ تَھتدُوا

अर्थात् इसी क़ुर्आन से तुम्हारे रसूल ने पथ-प्रदर्शन पाया है। अत: तुम भी उसको अपना पथ-प्रदर्शक बना लो ताकि हिदायत पाओ। फिर बुख़ारी के पृष्ठ-250 में यह हदीस है

ما عندنا شیئ الا کتاب اللّٰہ

अर्थात् ख़ुदा की किताब के अतिरिक्त हमारे पास और कोई वस्तु नहीं जिससे स्थायी तौर पर दृढ़ता पकड़ें। फिर बुख़ारी के पृष्ठ-183 में यह हदीस है حسبکم القران अर्थात् तुम्हें क़ुर्आन पर्याप्त है। फिर बुख़ारी में यह भी हदीस है -

حسبنا کتاب اللّٰہ ما کانمن شرط لیس فی کتاب اللّٰہ فھو باطل قضاء اللّٰہ احق (देखो पृष्ठ 290, 377, 348)

शेष हाशिया :- और यही दृढ़ सिद्धान्त बुज़ुर्ग इमामों का है।

अत: ''तल्वीह'' में लिखा है। انما يرد خبر الواحد من معارضة الكتٰب अत: जिस अवस्था में एक ख़बर जिसमें बुख़ारी और मुस्लिम की हदीसें भी सम्मिलित हैं विरोध कीअवस्था में ख़ुदा की किताब खण्डन करने योग्य है तो फिर क्या यह ईमानदारी है कि यदि किसी आयत का किसी हदीस से विरोध ज्ञात हो तो आयत के उलट-पुलट करने की चिन्ता में लग जाएं और हदीस की व्याख्या की ओर ध्यान भी न दें। अभी मैं वर्णन कर चुका हूं कि आदरणीय सहाबा और पूर्व सदात्मा लोगों की यह आदत थी कि जब कहीं आयत और हदीस में विरोधाभास और मतभेद पाते तो हदीस की व्याख्या की ओर व्यवस्त होते, परन्तु अब यह ऐसा युग आया है कि पवित्र क़ुर्आन से हदीसें अधिक प्रिय हो गई हैं और हदीसों के शब्द पवित्र क़ुर्आन के शब्दों की अपेक्षा अधिक सुरक्षित समझे गए हैं छोटी-छोटी बात में जब किसी हदीस का पवित्र क़ुर्आन से विरोधाभास देखते हैं तो हदीस की ओर तनिक भी सन्देह नहीं गुज़रता। यहूदियों की तरह पवित्र क़ुर्आन का बदलाना आरंभ कर देते हैं और ख़ुदा के कलाम उनके मल स्थानों से फेर कर कहीं का कहीं लगा देते हैं और कुछ वाक्य अपनी ओर से भी मिला देते हैं और स्वयं को يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ (अन्निसा-47) का चरितार्थ बना कर इस ख़ुदा की ला'नत से भाग ले लेते हैं जो इससे पूर्व यहूदियों पर इन्हीं कार्यों के कारण उतरी थी। कुछ लोग शब्दों के बदलने की यह स्थिति अपनाते हैं कि वाक्य مُتَوَفِّيْك को पहले ही रखते हैं परन्तु इसके बाद انى محييك का वाक्य अपनी ओर से मिला लेते हैं। तनिक नहीं सोचते कि ख़ुदा तआला ने इबारतें परिवर्तित करने वालों पर ला'नत भेजी है। बुख़ारी ने अपनी सही बुख़ारी के अन्त में लिखा है कि अहले किताब का शब्द बदलना यही था कि वे पढ़ने में अल्लाह की किताब के शब्दों को उनके स्थानों से फेरते थे। (सच बात यह है कि वे दोनों प्रकार का परिवर्तन लिखित और मौखिक करते थे) मुसलमानों ने एक प्रकार में जो मौखिक परिवर्तन है उनसे समानता पैदा कर ली और यदि सच्चा वादा اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ (अलहिज्र-10)

शेष हाशिया :- लिखित परिवर्तन बाधक न होता तो क्या आश्चर्य कि ये लोग धीरे-धीरे लिखित में भी ऐसी शब्दों के परिवर्तन आरंभ कर देते कि वाक्य رافِعك को पहले और इन्नी मुतवफ़्फ़ीका (انی متوفیك) को पीछे लिख देते और यदि उन से पूछा जाए कि तुम पर ऐसी क्या विपत्ति आ पड़ी है कि तुम ख़ुदा की किताब को उलट-पुलट और अक्षरांतरण करने की चिन्ता में लग गए तो इसका उत्तर यह देते हैं ताकि किसी प्रकार पवित्र क़ुर्आन उन हदीसों के अनुसार हो जाए जिनसे प्रत्यक्ष में विरोधी और विपरीत मालूम होता है। उन बेचारों का इस बात की ओर ध्यान नहीं जाता कि यदि वास्तव में कोई हदीस पवित्र क़ुर्आन से विपरीत और विरोधी है तो हदीस स्पष्टीकरण के योग्य है न कि क़ुर्आन। क्योंकि पवित्र क़ुर्आन के शब्द जड़े हुए हीरों के समान अपने-अपने स्थान पर ठीक हैं तथा पवित्र क़ुर्आन का प्रत्येक शब्द और प्रत्येक बिन्दु मानव हस्तक्षेप और परिवर्तन से सुरक्षित है हदीसों के विपरीत कि वे शब्दों की दृष्टि से पूर्णतया सुरक्षित नहीं तथा उनके शब्दों को स्मरण और यथा स्थान रखने में वहप्रबंध नहीं हुआ जो पवित्र क़ुर्आन में हुआ। इसी कारण उनमें विरोधाभास भी मौजूद है। जिस से सिद्ध होता है कि विरोधाभासी स्थानों में रावियों (वर्णन कर्ताओं) की स्मरण शक्ति ने साथ नहीं दिया। यहां हम सही बुख़ारी के कुछ विरोधाभासी स्थान जो अल्लाह की किताब के बाद सब से अधिक सही समझी गई है और वास्तव में सर्वाधिक सही ही लिखते हैं। इनमें से वही हदीस बुख़ारी के पृष्ठ-652 पर है जिसमें यह लिखा है कि शैतान के स्पर्श से सुरक्षित केवल इब्ने मरयम और उसकी मां है परन्तु बुख़ारी की हदीस पृष्ठ-776 में इसके विपरीत लिखा है जिसमें लिखा है कि जो व्यक्ति सम्भोग के समय بسم الله اللّٰهم الخ पढ़े उसकी सन्तान शैतान के स्पर्श से सुरक्षित रहती है ऐसा ही बुख़ारी के पृष्ठ-464 और पृष्ठ-26 की हदीसें भी इसके विपरीत हैं और ऐसा ही बुख़ारी की वह हदीस भी जो पृष्ठ 477 में लिखी है जिसमें लिखा है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि मस्जिद-ए-हराम और मस्जिद-ए-अक़्सा की नींव में दिनों की कितनी दूरी है तो आप ने फ़रमाया चालीस वर्ष का हालांकि सही

शेष हाशिया :- रिवायत से सिद्ध है कि का'बा के प्रवर्तक इब्राहीम अलैहिस्सलाम और बैतुल मुक़द्दस के प्रवर्तक हज़रत सुलैमान हैं और इन दोनों के युग में हज़ार वर्ष से अधिक दूरी है। इसी कारण इब्ने जौज़ी ने भी इस हदीस पर लिखा कि -

فيه اشكال لانّ ابراهيم بنى الكعبة و سُلَيّمان بنى بيت
المقدس و بينهما اكثر من الف سنة

(देखो पृष्ठ-477, बुख़ारी)

इसी प्रकार मे'राज की हदीसों में बहुत अधिक विरोधाभास है। बुख़ारी किताबुस्सलात् पृष्ठ-50 में जो हदीस है उसमें ये शब्द हैं कि मैं मक्का में था कि छत को खोलकर हज़रत जिबराईल मेरे पास आए और मेरे सीने को खोला और उसे आबे ज़मज़म से उसे धोया फिर एक सोने का थाल लाया गया जिसमें दूरदर्शिता और ईमान भरा हुआ था। वह मेरे सीने में डाला गया फिर जिब्राईल मेरा हाथ पकड़ कर आकाश की ओर ले गया, परन्तु उसमें यह नहीं लिखा कि वह सोने का थाल जो बिल्कुल जागने की अवस्था में लिखा था क्या हुआ और किस के सुपुर्द किया गया। बहरहाल आकाश पर पहुंचे और छठे आकाश पर इब्राहीम को देखा और सर्वप्रथम आदम को देखा फिर इदरीस को देखा, फिर मूसा को और फिर इन सब के पश्चात् ईसा को देखा इसके पश्चात् इब्राहीम को देखा और सब के पश्चात् स्वर्ग का अवलोकन किया और फिर वापस आए और किताब बदउलख़ल्क़ बुख़ारी पृष्ठ-455 में यह हदीस है कि मैं बैतुल्लाह के पास स्वप्न और जागने के मध्य था कि तीन फ़रिश्ते मानव के रूप में आए और एक जानवर भी किया गया। जिसका आकार खच्चर से कुछ कम परन्तु गधे से कुछ अधिक था। फिर मैं आकाश पर गया और दूसरे आसमान पर यह्या और ईसा को देखा फिर तीसरे में यूसुफ को देखा और चौथे में इदरीस को देखा और पांचवें आसमान में हारून ने मुलाक़ात की और छठे आकाश में मूसा से मिला। जब मैं मूसा के स्थान से आगे निकल गया तो वह रोया, फिर जब मैं सातवें आकाश में गया तो वहां इब्राहीम को देखा। और फिर उसी किताब के पृष्ठ 471 में यह हदीस है कि मे'राज की रात मैंने इब्राहीम को छठे

शेष हाशिया :- आकाश में देखा और इस हदीस में बुर्राक़ की कोई चर्चा नहीं केवल इतना लिखा है कि जिबराईल ने मेरा हाथ पकड़ा और आकाश पर ले गया और इस हदीस में यह भी लिखा है कि पहले आदम को देखा और फिर इदरीस को फिर मूसा को फिर ईसा को फिर इब्राहीम को।

फिर बुख़ारी की किताबुलमनाक़िब पृष्ठ 548 में लिखा है कि आंहज़रत स.अ.व. फ़रमाते हैं कि मैं हतीम में था या हुजरे में लेटा हुआ था कि एक आने वाला आया और उसने मेरा हृदय निकाला। इसी मध्य एक सोने का थाल लाया गया जिसमें ईमान भरा हुआ था उसके साथ मेरा हृदय धोया गया और फिर मैं बुर्राक़ पर सवार होकर आकाश पर गया और दूसरे आकाश पर यह्या और ईसा को देखा और तीसरे आकाश पर यूसुफ़ को पाया और चौथे आकाश पर इदरीस को देखा और पांचवें आकाश पर हारून को और छठे पर मूसा को और सातवें पर इब्राहीम को देखा।

फिर बुख़ारी की किताबुत्तौहीद वर्रद्दो अलजहमिया में पृष्ठ 1120 में लिखा है कि मस्जिद का'बा में तीन व्यक्ति ख़ुदा के पैग़म्बर स.अ.व. के पास आए और अभी हुज़ूर स.अ.व. नुबुव्वत के पद पर मामूर नहीं हुए थे अर्थात् वह्यी उतरने और अवतरित होने से पूर्व का युग था तथा आप(स) मस्जिदे हराम में सोए हुए थे कि मे'राज हुआ परन्तु इसी हदीस में लिखा है कि आप अवतरित हो चुके थे जब यह मे'राज हुआ फिर बुर्राक़ के बिना आकाश पर गए और इदरीस को दूसरे आकाश पर देखा और हारून को चौथे में और इब्राहीम को छठे में और मूसा को सातवें में और जब मूसा से आगे हो गुज़रे और सातवें आकाश को पार करने लगे तो मूसा ने कहा कि हे मेरे रब्ब! मुझे यह गुमान नहीं था कि मुझ से भी अधिक किसी का रफ़ा होगा। अरबी इबारत यह है -

فقال موسى ربّ لم اظن ان يرفع عليَّ احد

(यह वही रफ़ा है जिसकी ओर आयत وَرَافِعُكَ اِلَیَّ में संकेत है) फिर इस हदीस के अन्त में लिखा है कि इतनी घटना देख कर फिर आप(स) की आंख खुल

शेष हाशिया :- गई और आप जाग उठे। इन पांचों हदीसों में निरन्तर लिखा है कि मे'राज के समय पहले पचास नमाज़ें नियुक्त हुईं फिर आंहज़रत ने पचास से कम कराकर पांच स्वीकृति कराईं। अब देखना चाहिए कि इन पांच हदीसों में कितना अधिक मतभेद है। किसी हदीस में बुर्राक की चर्चा है और किसी में यह है कि जिब्राईल हाथ पकड़ कर ले गया और किसी में जागने की अवस्था और किसी में स्वप्न लिखा है और किसी में लिखा है कि मैं हुजरे में लेटा हुआ था और किसी में लिखा है कि मैं मस्जिदे का'बा में था और किसी में लिखा है कि केवल जिब्राईल आया था और किसी में लिखा है कि तीन व्यक्ति आए थे और किसी में लिखा है कि आदम के बाद ईसा और यह्या को देखा और किसी में लिखा है कि ईसा को दूसरे आकाश में देखा और मूसा को छठे आकाश में और किसी में लिखा है कि पहले मूसा को देखा फिर ईसा को और किसी में लिखा है कि इब्राहीम को सातवें आकाश पर देखा और किसी में लिखा है कि मूसा को सातवें आकाश पर देखा और ईब्राहीम को छठे में। अत: इतने मतभेद हैं कि जिनके विस्तारपूर्वक लिखने के लिए बहुत से पृष्ठ चाहिए। अत: क्योंकर संभव है कि यदि एक रावी (वर्णनकर्ता) उन समस्त शब्दों को पूर्णरूप से स्मरण रखता जो आप(स) के मुख से निकले थे। अत: उनके बयानों में इतना मतभेद और विरोधाभास पाया जाता है निस्सन्देह कुछ रावी स्मरण शक्ति की कमज़ोरी के कारण कुछ शब्दों को भूल गए या उचित-अनुचित का अन्तर स्मरण न रहा। इसी कारण से यह स्पष्ट मतभेद पैदा हो गए हैं अत: जबकि हदीसों के शब्दों की व्यवस्था का यह नमूना है जो उस किताब से मिलता है जो ख़ुदा की किताब के बाद सबसे प्रमाणित किताब है। तो ऐसी अवस्था में यदि कोई हदीस ख़ुदा की किताब के बिल्कुल विपरीत हो या ऐसी बातों का वर्णन करे जो पवित्र क़ुर्आन की स्पष्ट आयतों की विरोधी हो तो ऐसी हदीस के वे अर्थ मान्य रखे जाएं जो पवित्र क़ुर्आन से स्पष्ट विरोधाभास रखते हैं। जब किसी विरोधाभास के समय हदीस का बयान पवित्र क़ुर्आन के बयान के मुक़ाबले पर छोड़ना हृदय को बुरा लगे तो हदीसों के परस्पर विरोधाभास पर दृष्टि डालकर स्वयं निर्णय कर

शेष हाशिया :- लेना चाहिए कि पवित्र क़ुर्आन में इस विशेष गुण के अतिरिक्त कि वह तिलावत की जाने वाली वह्यी है। सुरक्षा की दृष्टि से भी हदीसों की क़ुर्आन से क्या तुलना। पवित्र क़ुर्आन जैसा कि उसकी शैली की सरसता, सुबोधता, सच्चाइयां तथा आध्यात्म ज्ञानों के अनुसार कोई वस्तु उसके सदृश नहीं हो सकती। इसी प्रकार उसकी प्रामाणिकता और सुरक्षा तथा असंदिग्धता में कोई वस्तु उसके समरूप नहीं क्योंकि उस के शब्द और शब्दों के क्रम और पूर्ण सुरक्षा का प्रबंध ख़ुदा ने अपने दायित्व में ले लिया है तथा इसके अतिरिक्त हदीस हो या किसी सहाबी का कथन हो, इन सब का प्रबन्ध मनुष्यों ने किया है जो भूल-चूक से मुक्त नहीं रह सकते और वे लोग पूर्ण सुरक्षा और पूर्ण प्रामाणिकता में हदीसों या कथनों को क़ुर्आन के सदृश कदापि नहीं बना सकते थे और उनकी यह असमर्थता इस आयत द्वारा प्रस्तुत चमत्कारों में सम्मिलित है।

قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَ الْجِنُّ عَلٰۤى اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَ لَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ﴿۸۹﴾*

जब प्रत्येक बात में क़ुर्आन का सदृश निषेध है तो वे लोग क्योंकर हदीसों को सुरक्षा और प्रामाणिकता में क़ुर्आन के सदृश बना सकते। कुछ लोगों ने मे'राज की हदीसों का जो सही बुख़ारी में हैं विरोधाभास दूर करने के लिए यह उत्तर दिया है कि वास्तव में वह केवल एक ही मे'राज नहीं अपितु पांच मे'राज हुए थे - कोई जागने की अवस्था में कोई स्वप्न में और कोई वह्यी के युग के पश्चात् और कोई वह्यी के प्रारंभ से पूर्व और कोई बैतुल्लाह में और कोई अपने घर के कोठे में। इसी कारण नबियों के देखने में मतभेद पड़ा। कभी किसी को किसी आकाश में देखा और कभी किसी आकाश में।

परन्तु स्पष्ट हो कि विरोधाभास दूर करने के लिए यह उत्तर उचित नहीं है क्योंकि यदि पांच मे'राज ही मान लिए जाएं तो फिर भी वह मतभेद जो नबियों के

---

* बनी इस्राईल-89

शेष हाशिया :- देखने के संबंध में पाया जाता है किसी प्रकार दूर नहीं हो सकता, क्योंकि स्वयं उन्हीं हदीसों से सिद्ध होता है कि नबियों के लिए आकाशों में विशेष-विशेष स्थान नियुक्त हो गए हैं। इसी कारण वह मे'राज की हदीस जो इमाम बुख़ारी ने अपनी सही की किताबुत्तौहीद में लिखी है जो बुख़ारी के पृष्ठ 1120 में मौजूद है उच्च स्वर में पुकार रही है कि प्रत्येक नबी आकाशों पर अपने-अपने स्थान पर आसीन है जिस से बढ़ नहीं सकता क्योंकि उस हदीस में यह वाक्य भी लिखा है कि आंहज़रत स.अ.व. ने मूसा को सातवें आकाश में देखा और जब सातवें आकाश से आप(स) आगे जाने लगे तो मूसा ने कहा कि हे मेरे रब्ब ! मुझे यह अनुमान न था कि मुझ से भी अधिक किसी का रफ़ा होगा। अत: स्पष्ट है कि यदि मूसा के अधिकार में था कि कभी पांचवें आकाश पर आ जाए और कभी छठे पर और कभी सातवें पर तो रोना धोना कैसा था कि पांचवें से या छठे से सातवें पर चले गए, इसी प्रकार आगे भी जा सकते थे तथा पवित्र क़ुर्आन से भी स्पष्ट होता है कि कोई व्यक्ति उन्नति में अपने नफ़्स के बिन्दु से आगे गुज़र नहीं सकता। इसके अतिरिक्त पांच मे'राजों के मानने से एक अन्य कठिनाई सामने आती है कि पवित्र क़ुर्आन और ख़ुदा तआला के आदेशों में केवल अनुचित और निरर्थक तौर पर निरस्तीकरण मानना पड़ता है तथा अपरिवर्तनीय तथा निरन्तर रहने वाले आदेशों को व्यर्थ तौर पर निरस्त मानना पड़ता है तथा स्वच्छंद नीतिवान ख़ुदा को एक निरर्थक और अनावश्यक निरस्तीकरण करने वाला ठहरा कर फिर निर्लज्जता के तौर पर पहले ही आदेश की ओर लौटने वाला विश्वास करना पड़ता है क्योंकि यदि मे'राज का वृत्तान्त पांच बार हुआ है तो फिर ऐसी अवस्था में यह विश्वास होना चाहिए कि पांच ही बार प्रथम पचास नमाज़ें निर्धारित की गई हैं और फिर पांच की स्वीकृति दी गई। उदाहरणतया प्रथम बार के मे'राज के समय में पचास नमाज़ें नियुक्त की गईं और उन पचास में कमी कराने के लिए जैसा कि बुख़ारी की ये पांच हदीसें ही प्रकट कर रही हैं। आंहज़रत स.अ.व. का कई बार मूसा और अपने रब्ब के पास आना जाना हुआ यहां तक पचास नमाज़ों में कमी कराके पांच नमाज़ें स्वीकृत कराईं और ख़ुदा

शेष हाशिया :- तआला ने कह दिया कि अब सदैव के लिए यह अपरिवर्तनीय आदेश है कि नमाज़ें पांच निर्धारित हुईं और क़ुर्आन भी पांच के लिए उतर गया और पवित्र क़ुर्आन की स्पष्ट और सुदृढ़ आयतों के अनुसार पांच नमाज़ों पर कार्यान्वयन आरंभ हो गया और सारा वृत्तान्त लोगों को भी सुना दिया गया कि अब हमेशा के लिए पांच नमाज़ें निर्धारित हो गईं परन्तु कुछ समयोपरान्त जो दूसरा मे'राज हुआ तो पहला समस्त घड़ा गया समाप्त कर दिया गया और वही पुराना झगड़ा नए सिरे से सामने आ गया कि ख़ुदा तआला ने फिर पचास नमाज़ें नियुक्त कर दीं और क़ुर्आन में जो आदेश आ चुका था उसका भी कुछ ध्यान न रखा और निरस्त कर दिया परन्तु फिर आंहज़रत स.अ.व. ने प्रथम बार की तरह कमी कराने के उद्देश्य से कई बार अपने रब्ब में और मूसा में आ जा कर पांच नमाज़ें नियुक्त कराईं और ख़ुदा के समक्ष से सदैव के लिए यह स्वीकृत हो गईं कि नमाज़ें पांच पढ़ा करें और क़ुर्आन में यह आदेश अपरिवर्तनीय ठहराया गया, परन्तु फिर तीसरी बार के मे'राज में वही कठिनाई सामने आ गई और नमाज़ें पचास नियुक्त की गईं और पवित्र क़ुर्आन की अपरिवर्तनीय आयतें निरस्त की गईं फिर बड़ी कठिनाई के पश्चात् उपरोक्त समस्त पचास नमाज़ों से पांच नमाज़ें कराईं परन्तु चौथी बार के मे'राज में फिर पचास नियुक्त की गईं। फिर जैसा कि बार-बार लिखा गया है नितान्त विनय और कई बार के आने आने से पांच नियुक्त कराईं और ख़ुदा तआला ने दृढ़ संकल्प कर लिया कि अब पांच रहेंगी, परन्तु फिर पांचवीं बार के मे'राज में पचास नियुक्त की गईं फिर बहुत आने-जाने के पश्चात् पांच नमाज़ें स्वीकृत कराईं परन्तु निरस्त की हुई आयतों के बाद फिर कोई आयत नहीं उतरी। अब क्या यह समझ में आ सकता है कि ख़ुदा तआला के आदेश इतने कच्चे अस्थिर तथा विरोधाभासों से भरे हुए हैं कि प्रथम पचास नमाज़ें नियुक्त होकर फिर सुदृढ़ तौर पर सदा के लिए पांच नमाज़ें नियुक्त की जाएं फिर वादा भंग करके पांच की पचास बनाई जाएं फिर कुछ दया करके हमेशा के लिए पांच की दी जाएं फिर बार-बार वादा भंग किया जाए और बार-बार पवित्र क़ुर्आन की आयतें निरस्त की जाएं और पवित्र क़ुर्आन की आयत

शेष हाशिया :- के अनुसार-

نَاۡتِ بِخَیۡرٍ مِّنۡہَاۤ اَوۡ مِثۡلِہَا ؕ *

और कोई निरस्त करने वाली आयत न उतरे। वास्तव में ऐसा विचार करना ख़ुदा की वह्यी के साथ एक बाज़ी है जिन लोगों ने ऐसा विचार किया था उनका यह उद्देश्य था कि किसी प्रकार विरोधाभास दूर हो परन्तु ऐसी तावीलों (व्याख्याओं) से विरोधाभास कदापि दूर नहीं हो सकता अपितु आरोपों का और भी अधिक भण्डार बढ़ता है और किताबुत्तौहीद की हदीस जो बुख़ारी के पृष्ठ 1120 में है जिसमें قَبۡلَ اَنۡ یُوۡحٰی اِلَیۡہِ लिखा है ये स्वयं अपने अन्दर विरोधाभास रखती है, क्योंकि एक ओर तो यह लिख दिया कि अवतरित होने से पूर्व यह मे'राज हुआ था और फिर उसी हदीस में यह भी लिखा है कि पांच नमाज़ें नियुक्त करके फिर अन्ततः सदैव के लिए पांच नियुक्त हुईं। स्पष्ट है कि जिस अवस्था में यह मे'राज नुबुव्वत से पूर्व था तो इसका नमाज़ों की अनिवार्यता से क्या संबंध था तथा वह्यी से पूर्व जिब्राईल क्योंकर उतरा और जो आदेश रसूल होने से संबंधित थे वे रसूल होने से पूर्व कैसे जारी किए गए। अतः इन हदीसों में बहुत से विरोधाभास हैं, यद्यपि यह नहीं कहा जाता कि ये हदीसें मनघड़ंत हैं अपितु दोनों में समान बात इस शर्त पर कि - क़ुर्आन से विरोधी न हो यह है कि स्वीकार करने योग्य तथा पालन करने योग्य है। हां यह भी आवश्यक है कि पवित्र क़ुर्आन के नितान्त स्पष्ट और ठोस आदेशों को उन पर प्राथमिकता दी जाए और यदि एक हदीस का विद्वान जिसे ख़ुदा तआला से निरन्तर शिक्षाओं के माध्यम से एक ठोस निश्चित ज्ञान प्राप्त हुआ है क़ुर्आन से अपनी हदीस की वह्यी को उचित और अनुकूल पाकर उन हदीसों को जो ख़बरों और वृत्तान्तों से संबंधित हैं और परस्पर मिलकर कार्य करने के सिलसिले से बाहर हैं प्राथमिक दे और उन काल्पनिक बातों को उस विश्वास के अधीन करे जो उसे ऐसे वरदान के स्रोत से प्राप्त हो रहा है जिससे नुबुव्वत की वह्यी है। अतः उसे यह अधिकार पहुंचता है क्योंकि कल्पना को विश्वास के अधीन करना ख़ुदा

* अलबक़रह-107

शेष हाशिया :- को बिल्कुल पहचानना और सर्वथा ईमान का चरित्र है।

यदि यह कहा जाए कि कुछ स्थानों पर पवित्र क़ुर्आन में भी विरोधाभास पाया जाता है जैसा कि पवित्र क़ुर्आन की सोलह आयतों से यह सिद्ध होता है कि जो व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त हो जाए फिर संसार में कभी नहीं आ सकता और कभी किसी भी व्यक्ति पर दो मौतें नहीं आ सकतीं परन्तु कुछ स्थानों पर यह भी लिखा है कि बनी इस्राईल की अमुक जाति को हमने मारा और फिर जीवित किया और एक नबी उज़ैर अथवा किसी अन्य को सौ वर्ष तक मारा और फिर जीवित किया तथा इब्राहीम के माध्यम से चार प्राणी जीवित किए गए इत्यादि-इत्यादि। इसका उत्तर यह है कि पवित्र क़ुर्आन में कदापि विरोधाभास नहीं पाया जाता अपितु यह सन्देह केवल समझ की कमी और अनभिज्ञता से पैदा होता है। यह सत्य है कि पवित्र क़ुर्आन की सोलह आयतों से ख़ुले-ख़ुले तौर पर यही स्पष्ट होता है कि जो व्यक्ति मृत्यु पा जाए* फिर संसार में कदापि नहीं आता और ऐसा ही हदीसों से सिद्ध होता है परन्तु

* **हाशिये का हाशिया :-** वे आयतें जिन में लिखा है कि मृत्यु प्राप्त लोग फिर दुनिया में नहीं आते। उनमें से एक आयत यह है وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ (अलअंबिया-96) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. से हदीस सदी में है कि इस आयत के यह मायने हैं कि जिन लोगों पर निश्चित तौर पर मौत आ जाती है और वास्तव में मर जाते हैं फिर वे दुनिया में ज़िन्दा करके भेजे नहीं जाते। यही रिवायत तफ़्सीर मआलिम में भी कथित आयत की तफ़्सीर के अन्तर्गत हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. से नकल किया गया है। फिर दूसरी आयत जो पवित्र क़ुर्आन के सही प्रकट कर रहा यह है - حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ۔ لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ؕ وَ مِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ۔ (अलमोमिनून 100-101) अर्थात् जब काफ़िरों में से एक को मौत आती है तो वह कहता है कि हे मेरे रब्ब ! मुझ को फिर दुनिया में भेज ताकि मैं नेक अमल करूं और

शेष हाशिया :- यह कदापि सत्य नहीं है कि उन समस्त स्थानों में जहां मुर्दा जीवित होना लिखा है। निश्चित और वास्तविक मृत्यु के पश्चात् जीवित होना लिखा गया है अपितु शब्दकोश की दृष्टि से मृत्यु के अर्थ नींद और प्रत्येक प्रकार की बेहोशी भी है। अत: आयतों को क्यों अकारण किसी विरोधाभास में डाला जाए और यदि काल्पनिक तौर पर चार प्राणी मरने के पश्चात् जीवित हो गए हों तो यह बात आत्मा के पुन: जीवित होने में सम्मिलित नहीं होगी क्योंकि मनुष्य के अतिरिक्त अन्य किसी प्राणी और कीड़े-मकोड़े की आत्मा को अनश्वरता नहीं है। यदि जीवित हो जाए तो वह एक नवीन सृष्टि होगी। अत: कुछ 'अजायबुल मख़्लूक़ात' का पुस्तकों आदि में उल्लेख है कि यदि बहुत से बिच्छू कूटकर एक विशेष विधि द्वारा किसी बर्तन में बन्द किए जाएं तो उस ख़मीर से जितने प्राणी पैदा होंगे वे सब बिच्छू ही

शेष हाशिये का हाशिया :- जो कुछ रह गया है उस का निवारण मुझ से हो सके। तो उसको कहा जाता है कि यह कदापि नहीं होगा यह केवल उसका कथन है अर्थात् ख़ुदा तआला की ओर से प्रारंभ से कोई भी वादा नहीं कि मुर्दे को फिर दुनिया में भेजे और फिर आगे फ़रमाया कि जो लोग मर चुके हैं उनमें और दुनिया में एक पर्दा है जिसके कारण वह क़यामत तक वे दुनिया की ओर नहीं लौट सकते। फिर तीसरी आयत जो इसी बात को स्पष्ट वर्णन कर रही है यह है فَيُمۡسِكُ الَّتِيۡ قَضٰى عَلَيۡهَا الۡمَوۡتَ (अज़्ज़ुमर-43) अर्थात् जिस पर मौत आ गई ख़ुदा तआला दुनिया में आने से रोक देता है। फिर चौथी आयत इस निबंध की यह है - وَ قَالَ الَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡا لَوۡ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنۡهُمۡ كَمَا تَبَرَّءُوۡا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ يُرِيۡهِمُ اللّٰهُ اَعۡمَالَهُمۡ حَسَرٰتٍ عَلَيۡهِمۡ ؕ وَ مَا هُمۡ بِخٰرِجِيۡنَ مِنَ النَّارِ (अलबक़रह-168) अर्थात् नार्की लोग निवेदन करेंगे कि एक बार हम दुनिया में जाएं ताकि हम अपने झूठे उपास्यों से ऐसे ही विमुख हो जाएं जैसे वे हम से विमुख हैं किन्तु वे नर्क से नहीं निकलेंगे। फिर पांचवीं आयत इस निबंध की यह है ثُمَّ اِنَّكُمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ تُبۡعَثُوۡنَ (अलमोमिन-17) फिर छठी आयत

शेष हाशिया :- होंगे। अत: क्या कोई बुद्धिमान व्यक्ति विचार कर सकता है कि वही बिच्छू दोबारा जीवित होकर आ गए जो मर गए थे अपितु सही विचार जो पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध होता है यही है कि पृथ्वी की सृष्टियों में से जिन्नों और मनुष्यों के अतिरिक्त अन्य किसी को अनश्वर आत्मा नहीं दी गई। फिर यदि ख़ुदा के सृजन के तौर पर किसी तत्त्व से ख़ुदा तआला कोई पक्षी पैदा कर दे तो क्या असंभव है परन्तु ऐसी आत्मा की वापसी जो वास्तविक मृत्यु के तौर पर ढांचे से निकल गई थी ख़ुदा

शेष हाशिये का हाशिया :- यह है لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا (अलकहफ़-109) फिर सातवीं आयत यह है وَمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ (अलहिज्र-49) फिर आठवीं आयत यह है يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَ مَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا ۡ وَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ (अलमाइदह-38) फिर नवीं आयत है فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّ لَاۤ اِلٰۤى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ (यासीन-51) फिर दसवीं आयत यह है اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (अलबक़रह-83) ऐसा ही वे समस्त आयतें जिन के बाद خٰلِدُوْنَ या خٰلِدِيْنَ आता है इसी बात को प्रकट कर रही हैं कि कोई इन्सान आराम या कष्ट आख़िरत के चख कर फिर दुनिया में कदापि नहीं आता। यद्यपि हमने प्रारंभ में ऐसी आयतें पवित्र क़ुर्आन से सोलह निकाली थीं परन्तु वास्तव में ऐसी आयतों से पवित्र क़ुर्आन भरा पड़ा है। न केवल पवित्र क़ुर्आन अपितु बहुत सी हदीसें भी यही गवाही दे रही हैं। अत: हम बतौर नमूना मिश्कात शरीफ़ से हदीस जाबिर बिन अब्दुल्लाह की यहां नकल करते हैं और वह यह है- و عن جابر قال لقینی رسول اللّٰہ صلعم فقال یا جابر مالی اراك منکسرًا قلت استشھد ابی و ترك عیالًا و دَینا قال افلا ابشرك لما لقی اللّٰہ بہٖ اباك قلت بلٰی یا رسول اللّٰہ قال ما کلم اللّٰہ احدًا قطّ الا من وراء حجاب و احیی اباك فکلمه کفاحًا قال یا عبدی تمن علیّ اعطك قال تحیینی فاقتل فیك ثانیة قال الرب تبارك و تعالٰی انه قد سبق منّی انھم لا یرجعون رواہ الترمذی अर्थात् जाबिर[रज़ि.] से रिवायत है कि रसूलुल्लाह

शेष हाशिया :- के वादे के विपरीत है। पवित्र क़ुर्आन के समस्त स्थान जो मुर्दों के जीवित करने से संबंधित हैं जिनमें यह वर्णन है कि अमुक जाति या व्यक्ति को मारने के पश्चात् जीवित किया गया उनमें केवल 'अमातत' का शब्द है 'तवफ़्फ़ा' का शब्द नहीं। इसमें यही रहस्य है कि 'तवफ़्फ़ा' के वास्तविक अर्थ मृत्यु देने और आत्मा को निकालने के हैं, परन्तु अमातत के वास्तविक अर्थ केवल मारना और मृत्यु देना नहीं अपितु सुलाना और बेहोश करना भी इसमें सम्मिलित है। हां यह भी

शेष हाशिये का हाशिया :- सल्अम मुझको मिले और फ़रमाया कि हे जाबिर क्या कारण है कि मैं तुझ को ग़मगीन देखता हूं। मैंने कहा कि हे रसूलुल्लाह सल्अम मेरा बाप शहीद हो गया और मेरे सर पर अयाल का क़र्ज़ का बोझ छोड़ गया। आपने फ़रमाया कि क्या मैं तुझे इस बात की ख़ुशख़बरी दूं कि जिस प्रकार से अल्लाह तआला तेरे बाप को मिला। मैंने कहा कि हां हे रसूलुल्लाह। तो आप ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला किसी के साथ बिना पर्दे के बात नहीं करता परन्तु तेरे बाप को उसने ज़िन्दा किया और आमने सामने कलाम किया और मध्य में कोई पर्दा न था और फिर उसने तेरे बाप को कहा कि हे मेरे बन्दे कुछ मुझ से मांग कि मैं तुझे दूंगा तब तेरे बाप ने कहा कि हे मेरे रब्ब मुझ को ज़िन्दा करके फिर दुनिया में भेज ताकि तेरे मार्ग में दोबारा शहीद किया जाऊं। तब अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐसा नहीं होगा, क्योंकि मैं (पवित्र क़ुर्आन में अहद कर चुका हूं) कि जो लोग मर जाएं फिर वे दुनिया में भेजे नहीं जाएंगे اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ (अलअंबिया-96) पवित्र क़ुर्आन की आयत है। यह वही हदीस है जो तिरमिज़ी में लिखी है और उसी के सम निबंध सही बुख़ारी में एक हदीस है परन्तु लम्बाई के भय से छोड़ी गई। अब इन समस्त आयतों और हदीसों से प्रकट है कि जिस पर वास्तविक मौत आ जाए वह दोबारा कदापि दुनिया में भेजा नहीं जाता। यद्यपि ख़ुदा तआला हर एक चीज़ पर समर्थ है परन्तु ऐसा होना ख़ुदा तआला के वादे के विरुद्ध है। इसी जगह से

शेष हाशिया :- बिल्कुल संभव और उचित है कि ख़ुदा तआला किसी जानवर या मनुष्य या पक्षी को ऐसी अवस्था में भी कि वह टुकड़े-टुकड़े किया जाए वास्तविक मृत्यु से बचाए और उसकी आत्मा का उसके टुकड़े-टुकड़े किए शरीर से वही संबंध क़ायम रखे जो निद्रावस्था में होता है और फिर उसके शरीर को ठीक कर दे और उसे निद्रावस्था से जगा दे क्योंकि वह प्रत्येक बात पर समर्थ है अपनी अनादि विशेषताओं तथा अपने वचन और वादे के विपरीत कोई बात नहीं करता और सब कुछ करता है। अत: यहां पर विचार कर और लापरवाह लोगों में से न हो। इसी से।

शेष हाशिये का हाशिया :- सिद्ध होता है कि पवित्र क़ुर्आन के वे समस्त स्थान जिन में मुर्दों के ज़िन्दा करने का ज़िक्र है उन से वास्तविक मौत अभिप्राय नहीं है। यह बात बिल्कुल संभव ओर सही है कि एक हालत इन्सान पर बिल्कुल मौत की तरह आ जाए परन्तु वह वास्तविक मौत नहीं और यह तनिक विचार करके देखें तो साफ़ प्रकट होगा कि मसीह इब्ने मरयम के बारे में यह बहाना प्रस्तुत करना कि यदि वह मृत्यु पा गया है तब भी ख़ुदा तआला क़ादिर है कि उसको ज़िन्दा करके भेज दे। यह बहाना न केवल इस कारण से ग़लत है कि मृत्यु प्राप्त लोग दुनिया में दोबारा आया नहीं करते अपितु इस कारण से भी गलत है कि जिस प्रकार से मसीह इब्ने मरयम का दुनिया में दोबारा आना दिलों में बसा हुआ है। ऐसे बहाने को इस प्रकार से कुछ भी संबंध नहीं। कारण यह कि मसीह के दोबारा आने के बारे में तो यह विचार दिलों में जमा हुआ है कि वह आकाश से पार्थिव शरीर के साथ उतरेगा परन्तु वह मृत्यु प्राप्त होने की हालत में आकाश से तो किसी प्रकार पार्थिव शरीर के साथ उतर नहीं सकता अपितु क़ब्र से निकलना चाहिए क्योंकि मृत्यु प्राप्त लोगों की लाशें क़ब्रों में रखी जाती हैं न कि आकाशों पर उठाई जाती हैं। और हम यह सिद्ध कर चुके हैं कि तवफ़्फ़ा का शब्द सामान्यतया मुहावरे के अनुसार यही मायने रखता है कि रूह का क़ब्ज़ करना परन्तु शरीर का क़ब्ज़ करना पवित्र क़ुर्आन

साहसी मित्रों की सेवा में निवेदन

चूंकि "इज़ाला औहाम" पुस्तक के प्रकाशन में अनुमान से अधिक व्यय हो गया है तथा प्रेस के मालिक और कापी लिखने वाले का हिसाब चुकता करने के लिए रुपयों की आवश्यकता है इसलिए समस्त वफ़ादार मित्रों की सेवा में निवेदन है कि यथासामर्थ्य इस पुस्तक की खरीदारी से अति शीघ्र सहायता करें। जो सज्जन कुछ प्रतियां क्रय कर सकते हैं वे बजाए एक के इतनी प्रतियां क्रय करें जितनी उन्हें क्रय करने की ख़ुदा की प्रदान की हुई शक्ति प्राप्त है। यहां मेरे भाई आदरणीय मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब हकीम रियासत जम्मू की नवीन सहायता जो उन्होंने इस समय कई नोट भेजे उल्लेखनीय है। ख़ुदा तआला उनको उत्तम प्रतिफल प्रदान करे। इसी प्रकार आदरणीय मेरे भाई हकीम फ़ज़्लदीन साहिब भैरवी ने उन तीन सौ रुपयों के अतिरिक्त जो पहले भेजे थे। अब एक सौ रुपया और भेज दिया। नितान्त प्रसन्नता की बात है कि हकीम फ़ज़्ल दीन साहिब अपने मख़दूम मौलवी हकीम

शेष हाशिये का हाशिया :- के किसी शब्द से सिद्ध नहीं होता। तो जबकि तवफ़्फ़ा का शब्द केवल रूह के क़ब्ज़ करने में सीमित हुआ तो मसीह इब्न मयरम का शरीर आकाश की ओर उठाया जाना पवित्र क़ुर्आन के किसी शब्द से सिद्ध न हो सका। स्पष्ट है कि जिस चीज़ को अल्लाह तआला कब्ज़ करता है उठाता भी उसी को है और यह वादा भी पवित्र क़ुर्आन में हो चुका है कि लाशें क़ब्रों में से मशहर के दिन उठेंगी इस स्थिति कष्ट कल्पना के तौर पर मसीह इब्ने मरयम क़ब्र में से उठे तो फिर नुज़ूल ग़लत ठहरेगा।

कुछ लोग कहते हैं क्या यह संभव नहीं कि मसीह सोने की हालत में उठाया गया और फिर अन्तिम युग में आकाश पर जाग उठे और पृथ्वी पर उतरे, परन्तु ये लोग नहीं समझते कि शरीर का उठाया जाना पवित्र क़ुर्आन से

नूरुद्दीन साहिब के रंग में ऐसे रंगीन हो गए हैं कि अत्यन्त दृढ़ संकल्प से स्वार्थ-त्याग के तौर पर उन से उच्च श्रेणी के शुभकर्म जारी होते हैं। अत: यह सौ रुपए कुछ आभूषण के विक्रय से मात्र ख़ुदा की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए भेजे हैं। अल्लाह उन्हें अच्छा प्रतिफल प्रदान करे।

यहां बिरादरम मौलवी मरदान अली साहिब सदर मुहासिब सरकारी आफ़िस निज़ाम हैदराबाद दकन भी उल्लेखनीय हैं। आदरणीय मौलवी साहिब ने विनती की है कि मेरा नाम बैअत कर्ताओं की श्रृंखला में सम्मिलित किया जाए। अत: सम्मिलित किया गया। उनके पत्रों में नितान्त प्रेम और वफ़ादारी पाई जाती है। वह लिखते हैं कि मैंने हार्दिक सत्य के साथ पांच वर्ष अपनी आयु में से आप के नाम लगा दिए हैं। ख़ुदा तआला मेरी आयु में से काटकर आपकी आयु में जोड़ दे। अत: ख़ुदा तआला ने इस स्वार्थ त्याग का प्रतिफल उन्हें यह प्रदान करे कि उनकी आयु दीर्घ करे। उन्होंने और बिरादरम मौलवी ज़हूर अली साहिब तथा मौलवी ग़ज़न्फ़र अली साहिब ने नितान्त वफ़ादरी से दस-दस रुपया प्रति माह चन्दा देना स्वीकार किया है और बहत्तर रुपये बतौर सहायता भेजे हैं। अल्लाह उन्हें अच्छा प्रतिफल प्रदान करे तथा दरूद और सलाम हमारे नबी, हमारे स्वामी मुहम्मद उनकी सन्तान और साथियों तथा ख़ुदा के समस्त सदाचारी पुरुषों पर।

लेखक - ग़ुलाम अहमद, लुधियाना

मुहल्लाह इक़बाल गंज।

शेष हाशिये का हाशिया :- कदापि सिद्ध नहीं होता। तवफ़्फ़ा के रूह के क़ब्ज़ करने को कहते हैं चाहे नींद की हालत में क़ब्ज़ हो या मौत की हालत में। अत: जो चीज़ क़ब्ज़ की जाए वही उठाई जाएगी और यह हम सिद्ध कर आए हैं कि मसीह का तवफ़्फ़ा अर्थात् मसीह की रूह का क़ब्ज़ करना बतौर मौत के था न कि बतौर नींद के। और सही बुख़ारी में जो ख़ुदा की किताब के बाद सबसे सही किताब है। तफ़्सीर के स्थान में انّی متوفّیک के मायने ممیتک

शेष हाशिये का हाशिया :- लिखे हैं। तो जबकि पवित्र क़ुर्आन और सही हदीसों से केवल हज़रत मसीह की रूह का उठाया जाना सिद्ध होता है तो वर्तमान के अधिकांश उलेमा की समझ पर रोना आता है कि वे क्यों अल्लाह और रसूल के फ़रमान से बाहर जाकर अपनी ओर से बिना प्रमाण मसीह के शरीर को आकाश की ओर उठाया जाना बताते हैं। क्या क़ुर्आन और हदीस का पूर्ण सहमति से मसही इब्ने मरयम की मौत पर गवाही देना सन्तोष्जनक नहीं है। अफ़सोस कि ये लोग थोड़ा भी विचार नहीं करते कि वे हदीसें जो नुज़ूल मसीह के बारे में आई हैं यदि उनके यही मायने किए जाएं कि मसीह इबने मरयम ज़िन्दा हैं और वास्तव में वही आकाश से उतर आएगा तो इस स्थिति में उन हदीसों का पवित्र क़ुर्आन और उन दूसरी हदीसों से विरोधाभास हो जाएगा जिनके अनुसार मसीह इब्ने मरयम का मर जाना निश्चित तौर पर सिद्ध हो चुका है। फिर ख़ुदा की किताब के विरोध के कारण वे हदीसें रद्द करने योग्य ठहरेंगी। फिर क्यों नुज़ूल के ऐसे मायने नहीं करते जो अल्लाह की किताब के विरुद्ध और विपरीत न हां और न दूसरी सही हदीसों से पृथकता रखें। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ने आयत में साफ़-साफ़ अपनी अभिव्यक्ति (इक़रार) दे दिया है कि मैं हमेशा के लिए दुनिया से उठाया गया। क्योंकि उनका यह कहना कि जब मुझे मौत दी गई तो फिर हे मेरे रब्ब मेरे बाद तू मेरी उम्मत का निगहबान था। साफ गवाही दे रहा है कि वह दुनिया से हमेशा के लिए मृत्यु पा गए। क्योंकि यदि उनका दुनिया में पुनः आना प्रारब्ध होता तो वह अवश्य इन दोनों घटनाओं का वर्णन करते और नुज़ूल के बाद की तब्लीग़ का भी वर्णन करते, न यह कि केवल अपनी मृत्यु का ज़िक्र करते फिर अपने बाद ख़ुदा तआला को क़यामत तक निगहबान ठहराते। अतः विचार करो।

विज्ञापन

ईसाई सज्जनों के मार्ग-दर्शन हेतु आंखों के प्रकाश और सत्य की हिदायत के लिए

يَا ايُّهَا المتنصرون ما كان عيسٰى عبدين عباد الله قد مات و دخل فى الموتٰى فَلَا تحسبوه حيًّا بَلْ هو ميّت ولا تعبدوا ميّتاً و انتم تعلمون

हे ईसाइयो! ईसा ख़ुदा के बन्दों में से एक बन्दा था निश्चय ही वह मर चुका और मृत्यु प्राप्त लोगों में जा मिला। उसे जीवित विचार न करो अपितु वह मृत्यु पा चुका और जो मर चुका उसकी उसापना मत करो जबकि तुम जानते हो (कि यह पाप है अनुवादक)।

हे ईसाई सज्जनो ! आप लोग यदि ध्यानपूर्वक इस किताब ''इज़ाला औहाम'' का अध्ययन करेंगे तो आप पर नितान्त स्पष्ट तर्क़ों के साथ ख़ुल जाएगा कि वास्तव में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अब जीवित मौजूद नहीं है अपितु वह मृत्यु पा चुके और अपने मृत्यु प्राप्त बुज़ुर्गों में जा मिले हां वह आध्यात्मिक जीवन जो इब्राहीम, इस्हाक़, याक़ूब और इस्माईल को मिला और रफ़ा की दृष्टि से सबसे बढ़कर हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिला, वही जीवन बिना किसी अन्तर के हज़रत ईसा को भी प्राप्त हुआ। इस बात पर बाईबल से कोई प्रमाण नहीं मिलता कि मसीह इब्ने मरयम को कोई अनोखा जीवन प्राप्त हुआ अपितु उस जीवन की आवश्यकताओं में समस्त अंबिया सम्मिलित और समान हैं। हां रफ़ा की दृष्टि से ख़ुदा से सर्वाधिक सानिध्य का स्थान हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का है। अत: हे ईसाई सज्जनो! आप लोग अब अनुचित हठ न करें। मसीह एक विनीत बन्दा था जो मृत्यु पा चुका और मृत्यु प्राप्त लोगों में जा मिला। आप लोगों के लिए यही उचित है कि ख़ुदा तआला से डरें और एक विनीत बन्दे को ख़ुदा कह कर अपना परलोक खराब न करें। आप लोग तनिक विचार करें कि उस दूसरे

लोक में अन्य से किस बात में अधिक है। क्या इन्जील इस बात की साक्ष्य नहीं देती कि इब्राहीम जीवित है? अपितु लआज़र भी? फिर मसीह लआज़र से अपने जीवन में किस बात में अधिक है। यदि आप लोग शोध द्वारा धर्म ग्रन्थों को देखें तो आप को इक़रार करना पड़ेगा कि किसी बात में अधिक नहीं। यदि आप लोग इस बारे में मेरे साथ बहस करना चाहें तो मुझे उस हस्ती की सौगन्ध है जिसके हाथ में मेरे प्राण है कि मैं इस बहस में पराजित होने की अवस्था में यथासामर्थ्य अपने प्रत्येक जुर्माने को जो आप लोग निर्धारित करें देने को तैयार हूं अपितु अपने प्राण भी इस मार्ग पर बलिदान करने को उपस्थित हूं। ख़ुदा तआला ने मुझ पर स्पष्ट कर दिया है कि वास्तव में ईसा इब्ने मरयम **मृत्यु** पा चुका और अब मृत्यु प्राप्त नबियों की जमाअत में सम्मिलित है। अत: आओ, इस्लाम धर्म अपनाओ। वह धर्म अपनाओ जिसमें ऐसे अस्तित्व (ख़ुदा) की उपासना हो रही है जो सदैव जीवित रहता है और उस पर कभी मृत्यु नही आती। न किसी मुर्दे की जिस का पूर्ण तौर पर अनुसरण करने से प्रत्येक सच्चा प्रेमी स्वयं मसीह इब्ने मरयम बन सकता है।

والسَّلَامُ عَلٰی من اتَّبع الھُدٰی

विज्ञापन दाता

ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

3 सितम्बर, 1891 ई.

الحمدللہ والمنۃ کہ رسالہ ازالہ اوہام از تصنیفات مجدد دوران مرسل یزدان مسیح الزمان جناب حضرت مرزا غلام احمد صاحب رئیس قادیان سلمہ المنّان در مطبع ریاض ہند امرتسر باہتمام شیخ نور احمد صاحب زیور طبع پوشید بقلم ذلیل ترین کافۂ انام غلام محمد امرتسری

غفر اللہ ذنوبہ و ستر عیوبہ۔

हुब्बी फ़िल्लाह अख़्वैम हकीम नूरुद्दीन साहिब का एक पत्र प्रश्नकर्ता के उत्तर में

मेरे प्रिय! अल्लाह तआला आपकी रक्षा करे। अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाहे व बरकातुहू

मिर्ज़ा साहिब के दावों पर आपने मुझे एक बहुत लम्बा पत्र लिखा है उसके उत्तर में निवेदन है فَلَا تَسۡتَعۡجِلُوۡنَ (जल्दबाज़ ब बनो) ख़ुदा का एक आदेश है जो हज़रत ख़ातमुल अंबिया अस्फल अस्फ़िया सय्यिदिना व मौलाना अहमद मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा (उन पर मेरे माता पिता न्योछावर हों) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विरोधियों के नाम जारी हुआ था। हम उसी आदेश को ज़िल्ली तौर पर (प्रतिबिम्ब के तौर पर) हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़िल्ल और नायब और उसके धर्म के सेवक हज़रत समय के मुजद्दिद मिर्ज़ा साहिब के विरोधियों को सुनाते हैं। विरोधियो! धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करो, जल्दबाज़ न बनो।

मिर्ज़ा साहिब ने अपने कुछ मित्रों को मेरे सामने फ़रमाया है कि यदि लोग तुम से मुबाहसा करें तो ख़ुदा का यह आदेश उनको सुना दो -

اِنۡ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيۡهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنۡ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبۡكُمۡ بَعۡضُ الَّذِىۡ يَعِدُكُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهۡدِىۡ مَنۡ هُوَ مُسۡرِفٌ كَذَّابٌ ﴿۲۹﴾*

मेरे प्रिय ! सुनो और उस पर विचार करो। संसार में एक जमाअत गुज़री और अब भी है जिन्होंने اَنَا اللّٰہ कहा (मैं ख़ुदा हूँ) और कहते हैं ऐसा कहने वालों को भी झुठलाने और बुरा कहने से भी जीभ को रोकने को पसन्द करते हैं और इस जमाअत को सदाचारियों और वलियों की जमाअत कहते हैं। अत: हे मेरे प्रिय!

انا عیسٰی ابن مریم و انا المسیح

* अल-मोमिन - 29

(मैं मसीह हूँ, मैं ईसा बिन मरयम हूँ) कहने वाले पर यह शोर और कोलाहल क्यों ? इन्साफ़ ! इन्साफ़ ! इन्साफ़ !!!

मेरे प्यारे वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह. ने अद्दुर्रस्समीन में फ़रमाया है -

بلغنی عن سید العم انه قال رأیت النبی صلی اللہ علیہ وسلم
فی النوم فلم یزل یدنینی منه حتی صرتُ نفسه

ऐसा ही इब्ने हज़्म ज़ाहिरी के बारे में शैख मुहियुद्दीन इब्ने अरबी रह. ने लिखा है - यह दृश्य انا محمد (मैं मुहम्मद हूँ) कहने का है आह फिर मैं मसीह हूँ, मैं मौऊद इब्ने मरयम हूँ पर यह क्रोध और उत्तेजना क्यों !!!

मेरे प्रिय! ईमान की बातों में किसी सीमा तक गोपनीयता का होना एक आवश्यक और अनिवार्य बात है। यदि कोई मामला बिल्कुल प्रकट हो जाए तो फिर गोपनीयता कहां। प्रकट होने और गोपनीय होने में मुकाबला है। इसीलिए शरीअत के आदेशों एवं बातों में भौतिक सूर्य एवं चन्द्रमा का मानना ईमानी बातों में सम्मिलित नहीं। इसीलिए क़यामत के दिन शरीअत के कष्ट सामान्यतया उठ जाएंगे। अत: तुम भविष्यवाणियों में ईमान से काम लो। उन के समझने में इरफ़ान (पहचानने) का दावा मत करो। हमारे सरदार व मौला ख़ातमुल अंबिया स.अ.व. से पहले की वह घटना विचार करने योग्य है जो पवित्र क़ुर्आन के पन्द्रहवें पारे के अन्त और सोलहवें पारे के प्रारंभ में दर्ज है। इस घटना के वर्णन में एक ओर सय्यिदिना मूसा अलैहिस्सलाम हैं जिनका दृढ़संकल्प शरीअत वाला रसूल होना यहूदियों, ईसाइयों और मुसलमानों में मान्य है। उस पवित्र नबी ने जैसे इमामुलमुहद्दिसीन इमाम बुख़ारी रह. इत्यादि ने लिखा है कहीं انا اَعْلَمُ कह दिया तब **ख़ुदाई स्वाभिमान** (ग़ैरत) ने अपने प्रिय बन्दे सय्यिदिना ख़िज्र अलैहिस्सलाम का उन्हें पता दिया। जब जनाब मूसा अलैहिस्सलाम उस **अध्यात्म ज्ञानी** (आरिफ़) से मिले तो उसके सच्चे ज्ञानों तथा रहस्यों की तह तक नहीं पहुँचे। जनाब ख़िज्र अलैहिस्सलाम ने उनसे कह दिया था -

اِنَّكَ لَنۡ تَسۡتَطِيۡعَ مَعِىَ صَبۡرًا ﴿۶۸﴾

और कह दिया था -

وَ كَيۡفَ تَصۡبِرُ عَلٰى مَا لَمۡ تُحِطۡ بِهٖ خُبۡرًا ﴿۶۹﴾*

अत: ख़ुदा के सम्मानों में से यह सम्मान आवश्यक था कि ऐसे बन्दों के मामलों में कम से कम ख़ामोशी धारण की जाती उस समय तक कि लोग मिर्ज़ा साहिब के मामले में स्पष्ट कुफ्र को देख लेते। सय्यिदिना मूसा अलैहिस्सलाम की अधीरता को सतर्क करने वाला सबूत न लेना और कदापि सबूत ग्रहण न करना, क्योंकि समस्त लोगों के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं -

ليست موسیٰ سکت حتی یقص اللہ علینا

मेरी इस बात पर किसी कुधारणा से काम न लेना। मैं मुहम्मदी हूँ और मुहम्मदियों को ख़ुदा की कृपा से कुछ ऐसे इनाम दिए गए हैं कि यदि उन में से कोई मस्ती में आकर अल्लाह के पवित्र दरबार में انت عَبۡدِیۡ و انا ربّکَ (तू मेरा बन्दा और मैं तेरा रब्ब हूँ) कह दे तो इन्शाअल्लाह तआला नारकी न हो, यद्यपि सच यही है कि 'इलाही अन्ता रब्बी व अना अब्दुका' الٰھی انت عَبۡدِیۡ و انا ربّکَ

मुझे इस समय एक किस्सा याद आ गया जिसको 'क़लाइदुलजवाहिर' में मुहम्मद बिन यह्या तादफ़ी ने लिखा है। उस पर विचार करो। हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जैलानी फ़रमाते हैं -

جاءنی ابو العباس الخضر علیه السلام یمتحتنی ما امتحن به الاولیاء من قبلی فکشف لی عن سریرتِه ففتح علی بمخاطبته به ثمّ قلت له وهو مطرق ان یاخضر۔ ان کنت قلت لموسی انك لن تستطیع مع صبرا فانك لن تستطیع معی صبرًا یاخضر ان کنت اسرائیلیا فانك اِسرائیلی واَنا محمّدی۔ فها انا وانت هذه الکرة وهذا المیدان

---

* अल कहफ़ - 68, 69

هذا محمد و هذا الرحمٰن و هذا فرسی مسرج ملجم و قوسی موتر و سیفی شاهرٌ رضی الله عنه

सुब्हान अल्लाह क्या खूब डुअल है। सुनो! हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के दोबारा आने का वर्णन पवित्र क़ुर्आन में तो बिलकुल नहीं। इसी प्रकार हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का पार्थिव शरीर के साथ जीवित रह कर आकाश की ओर चढ़ना पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध नहीं। फिर यदि यह पूछा कि मसअला कहां है शायद यह उत्तर हो कि हदीसों में, परन्तु वहां तो नहीं। फिर क्या इंजीलों में, किन्तु वहां नहीं। फिर कहा तो उत्तर यही होगा कि ईसाइयों के भोले-भाले विचारों में, क्योंकि मती और यूहन्ना तो मौन हैं। और लूका, मर्क ताबिई न सहाबी, बे देखे अटकलें दौड़ाते हैं। फिर क्या इस्लामियों की इस्राईली रिवायतों और किस्सों इत्यादि में जिन का समर्थन पवित्र क़ुर्आन और सही हदीसों से नहीं हो सकता? क्योंकि पवित्र क़ुर्आन तो इस्राईली मसीह ईसा इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम की मृत्यु को विभिन्न स्थानों में वर्णन कर चुका है और सही हदीसों में मसीह ईसा इब्ने मरयम के नुज़ूल (उतरने) में इस्राईली नबी का वर्णन नहीं। यदि हो भी तो में मसीह ईसा इब्ने मरयम अल्लाह के इस्राईली नबी की समानता में जो व्यक्ति मसील (समरूप) होगा उस पर काल्पनिक तौर पर मसीह इब्ने मरयम इस्राईली कहना भी वैध होगा। हां

ينزل ابن مريم فيكم و اماكم منكم

बुख़ारी की हदीस है। इस हदीस का अनुवाद और उसकी वास्तविकता मिर्ज़ा साहिब ने अपनी पुस्तकों में वर्णन की है। इस अनुवाद और वास्तविकता पर यदि किसी को विद्यार्थियों वाली बहस हो तो उसे स्मरण रहे कि و का अक्षर **तफ़्सीर** (व्याख्या) के लिए भी हुआ करता है। देखो क़ुर्आन के पवित्र वाक्य जो निम्नलिखित हैं -

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ*

---

* अलहिज्र- 2

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ؕ وَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ اِلَیْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ*

मेरे प्रिय ! बाह्य प्रेरणाओं के अतिरिक्त आन्तरिक प्रेरणाओं का होना एक दुर्लभ बात है। यह मामला जिस पर यह कमज़ोर और ख़ाकसार पत्र लिख रहा है अब पब्लिक में आ गया है। व्यक्तिगत पत्रों में इसकी चर्चा अब कुछ आवश्यक नहीं। जनाब मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी ने मुझ से वादा किया था कि अब मिर्ज़ा साहिब के मामले में मुझ से पत्राचार नहीं करेंगे, परन्तु जब वादे के विपरीत मौलवी जी ने ख़ाकसार को लिखा तो ख़ाकसार ने उनको यही उत्तर दिया कि अब यह मामला निजी और प्रायवेट पत्रों के योग्य नहीं रहा। अत: तुम भी सार्वजनिक फैसले की प्रतीक्षा करो। तुम्हें मालूम है कि इस समय तीन लोगों को पंजाब में मिर्ज़ा साहिब के विरोध पर बड़ा जोश है। इधर क़ुर्आन सत्यनिष्ठों की विजय पर बड़े ज़ोर से सूचना दे रहा है

وَ الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِیْنَ**

इसलिए धैर्य, गंभीरता तथा सलामती से कुछ दिन काम लो।

मेरे प्रिय! स्मरण रखो मुझ खाकसार को सूचित किया गया है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का क़िस्सा किसी प्रकार की व्याख्या, किसी प्रकार के रूपक तथा कल्पना के बिना किसी क़ौम ने स्वीकार नहीं किया। मेरी यह बात सरसरी न समझो। नमूने के तौर पर देख लो। हमारे अधिकांश व्याख्याकार हज़रत मसीह के किस्से में

اِنِّیْ مُتَوَفِّیْكَ وَ رَافِعُكَ***

में क्या कुछ उलट-फेर नहीं करते। मियाँ अब्दुल हक़ साहिब ग़जनवी अपने दूसरे विज्ञापन में पहले ही पृष्ठ की अन्तिम पंक्ति में लिखते हैं

الله اکبر خربت خیبر

* अर्रअद- 2

** अल आराफ़- 129

*** आले इमरान- 56

अब विचार करने का स्थान है कि मियाँ अब्दुल हक का ख़ैबर वास्तविक ख़ैबर तो कदापि नहीं हो सकता। अब क़ादियान को **दमिश्क़** मानने में वह क्यों घबराते तथा उस पर शोर एवं कोलाहल करते हैं !!!

मौलवी अब्दुर्रहमान लखूके वाले सम्माननीय अब्दुल वाहिद (ख़ुदा उन को सुरक्षित रखे) को लिखते हैं कि -

در تفسیر قرآن عظیم خلاف راہ صحابہ رضی اللہ عنہم نمودن الحاد وضلالت است و
رضامندی رب العالمین در اتباع ایشان است

और इसी पत्र में अल्लाह तआला का कथन -

مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ (اَیْ الملة المُحمَّدِية) اِنْ
هٰذَآ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ﴿۸﴾ *

में الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ की तफ़्सीर सहाबा, ताबिईन तथा उम्मते मुहम्मदिया के समस्त मुफ़स्सिरों (व्याख्याकारों) के विपरीत फ़रमाते हैं। हदीसों में मसीह अलैहिस्सलाम का हुलिया कहीं लाल रंग सीधे बाल और कहीं रंग गेहुआं और घुंघराले बाल आया है उसे अनुकूल करने के लिए तावील (प्रत्यक्ष अर्थों से हटकर व्याख्या) की जाती है। इसी प्रकार अन्य बातों में भी ख़ुदा के कलाम में उपमाओं, रूपकों तथा संकेतों का होना इस्लामियों में मान्य है परन्तु प्रत्येक स्थान में तावीलों, उपमाओं, रूपकों तथा संकेतों से यदि काम लिया जाए तो प्रत्येक नास्तिक द्विमुखी (मुनाफ़िक़), बिदअती और दोषपूर्ण रायों तथा मिथ्या विचारों के अनुसार ख़ुदा के पवित्र वाक्यों को ला सकता है, इसलिए प्रत्यक्ष अर्थों के अतिरिक्त अन्य अर्थ लेने के लिए पुख़्ता सामान तथा सच्चे कारणों का होना आवश्यक है।

ख़ुदा के पवित्र वाक्यों में रूपक अधिक होते हैं परन्तु इस बात के कारण क्या हम प्रत्येक स्थान पर रूपक और अवास्तविक अर्थ लेने पर दिलेर हो सकते हैं कदापि नहीं। क्या इबादतों में, मामलों में, रहन-सहन की समस्याओं में, नैतिक एवं

* साद - 8

राजनीतिक आदेशों में भी हम रूपकों से काम लेंगे? कदापि नहीं! इन बातों को हज़रत रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा आपके सहाबा ने क्रियात्मक तौर पर करके हमें दिखा दिया। उम्मत के अमल और रिवाज ने वह तस्वीर हम तक पहुँचा दी। अल्लाह तआला उन्हें उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

किन्तु जो कुछ भविष्यवाणियों में लिखा है और जो कुछ नबियों के कश्फ़ों और सच्चे स्वप्नों में दिखाई देता है कुछ सन्देह नहीं कि वह आलमे मिसाल* में हुआ करता है। इसी प्रकार उनकी कुछ खबरें और संसार के यथार्थ तथा परलोक के अन्तर्गत जगत के रंग-रूप भौतिक जगत के रंग-रूपों से बिल्कुल अनोखे हुआ करते हैं। अत: ऐसे अवसर पर आवश्यक एवं विश्वसनीय विद्याएं, सच्चे इल्हाम, अवलोकन तथा वास्तविक सच्चाइयाँ, शरीअत के नियम उन स्पष्ट आदेशों (नुसूस) को अवश्य ही प्रत्यक्ष अर्थों से और अर्थों की ओर ले जाएंगे। अत: सय्यिदिना यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने सूर्य, चन्द्रमा और सितारों को अपने लिए सज्दा करते देखा। परन्तु भौतिक जगत में वह सूर्य, चन्द्रमा और सितारे उनके माता-पिता और भाई थे। पवित्र क़ुर्आन में एक बादशाह का क़िस्सा लिखा है जिसने मोटी गाएं और हरी बालियाँ देखीं। भौतिक जगत में वह दुर्भिक्ष और मन्दा (सस्ता) था। हमारे सरदार-व-स्वामी ने सच्चे स्वप्न में देखा कि आपकी मुबारक हथेली में सोने के कंगन हैं और आपने उनको फूंक से उड़ा दिया। वह भौतिक जगत में मुसैलिमा तथा अस्वद अन्सी और उन का विनाश था। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अपनी पत्नियों से कहा -

اسرعکنّ لحوقًا بی اطولکنّ یدًا

पत्नियाँ लगीं हाथों को नापने किन्तु वास्तविक घटनाओं ने बता दिया और अवलोकनों ने दिखा दिया कि सहाबी स्त्रियों का बोध भविष्यवाणियों के समझने में इस पहलू से ग़लत था जिस पर उन्होंने समझा था। अत: दज्जाल और मसीह अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी में क्यों ईमान की सीमा से बढ़कर लोग इरफ़ान के

* आलमे मिसाल - वह जगत जो परलोक के अन्तर्गत है जिसमें संसार की प्रत्येक वस्तु ज्यों की त्यों मौजूद है। (अनुवादक)

दावेदार बन गए हैं और आरिफ़ (अध्यात्म ज्ञानी) के विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं। हमें बड़ा आश्चर्य होता है जब यह कहते सुनते हैं कि **मिर्ज़ा सर्वसम्मति (इज्मा) के विपरीत करता है।**

हालांकि वही लोग जिन को मिर्ज़ा जी से बहुत बड़ा इंकार है **इमाम अहमद हंबल** के उस कथन को हमेशा सुनाते रहे कि इज्मा का दावा झूठ है और बुद्धि एवं दुनिया का दृश्य तथा उलेमा की हालत भी कि पूरब, पश्चिम, पर्वतों तथा समुद्रों में फैले हुए हैं गवाही देती है कि इज्मा का दावा एक विचार से अधिक महत्व नहीं रखता।

मेरे प्रिय! जैसे मिर्ज़ा जी ने स्वयं को इब्ने मरयम कहा है। एक स्थान पर मरयम भी कहा है और **अपने बेटे मसीले मसीह का नाम अम्वान्वेल** बताया है। स्वयं ख़ाकसार ने मिर्ज़ा जी के पास मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी का एक सन्देश पहुँचाया तो आप ने फ़रमाया कि मैंने तो मसीह का मसील होने का दावा दिया है। संभव है कि मसीह के मसील बहुत से आएं और कोई प्रत्यक्ष तौर पर भी उन भविष्यवाणियों तथा निशानों का चरितार्थ हो जिन को मैंने आध्यात्मिक तौर पर इल्हाम द्वारा अपने ऊपर चरितार्थ किया है। ख़ुदा के वरदान की कोई सीमा नहीं और न वहाँ कोई कमी है। तब मैंने कहा कि ऐसी स्थिति में हदीसों के कारण लोग क्यों कठिनाई में फंसे हुए हैं? आश्चर्य है परन्तु मेरे प्रिय!

اَحَسِبَ النَّاسُ اَنۡ یُّتۡرَکُوۡۤا اَنۡ یَّقُوۡلُوۡۤا اٰمَنَّا وَ ہُمۡ لَا یُفۡتَنُوۡنَ ﴿۳﴾*

पर ध्यान दो।

सुनो और ध्यानपूर्वक सुनो! भविष्यवाणियों के पूरा होने के लिए समय निर्धारित हुआ करते हैं जैसे मैंने तीन प्रश्नों के उत्तर में विस्तापूर्वक लिखा है और वह उत्तर अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम लाहौर ने प्रकाशित कराया है। उदाहरणतया हुज़ूर अलैहिस्सलाम को मक्का के काफ़िर कहते हैं -

---

* अन्कबूत-3

لَنۡ نُّؤۡمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفۡجُرَ لَنَا مِنَ الۡاَرۡضِ يَنۡۢبُوۡعًا ۙ‏ *

आप के इन्कार करने वालों ने यह मांग क्यों की थी केवल इसी आधार पर कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक भविष्यवाणी के समझने में बिल्कुल प्रत्यक्ष शब्दों के अर्थों पर मोटी दृष्टि डाली थी। वह भविष्यवाणी यसइयाह नबी के बाब 43, आयत 19 की है। यसइयाह नबी ने हज़रत ख़ातमुल अंबिया के युग के बारे में फ़रमाया कि रेगिस्तान में नदियाँ बनाऊँगा। स्पष्ट है कि सय्यिद-व-मौला के समय **ज़ुबैदा वाली** नदी मक्का में और नहर **बनी ज़र्क़ा** मदीना में जारी नहीं हुई थी। जिस पर कुछ ने अदूरदर्शिता से ठोकर खाई।

मेरे प्रिय! डराने तथा प्रेरणा में हृदयों के बढ़ाने का साहस और ध्यान को उन्नति देने के लिए ऐसे इल्हाम भी होते हैं जिन का वर्णन म्निलिखित आयत में है -

اِذۡ يُرِيۡكَهُمُ اللّٰهُ فِىۡ مَنَامِكَ قَلِيۡلًا **

(हालांकि बद्र के युद्ध में मक्का के काफ़िर, मुसलमानों की अपेक्षा बहुत अधिक थे) परन्तु ऐसा इल्हाम क्यों हुआ। अल्लाह तआला इस का कारण बताता है -

وَلٰـكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ***

सोचो और विचार करो !

मेरे प्रिय! मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब पर अल्लाह तआला दया करे उनको अपने ज्ञान पर बड़ा घमंड है और कृपालु ख़ुदा को घमंड पसन्द नहीं। इल्हामी जमाअत का विरोध भी तुम्हारे लिए ठोकर का कारण न हो। इज़ाला औहाम में इसका बड़ा अद्भुत उत्तर मौजूद है और नसीहत के तौर पर कहता हूँ -

كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَاۤءِ وَهٰٓؤُلَاۤءِ مِنۡ عَطَآءِ رَبِّكَ ****

* बनी इस्राईल-91

** अल अन्फ़ाल-44

*** अल अन्फ़ाल - 44

**** बनी इस्राईल - 21

और तमन्ना पर आयत

اِذَا تَمَنّٰۤی اَلۡقَی الشَّیۡطٰنُ فِیۡۤ اُمۡنِیَّتِہٖ*

आप विचार करते रहें।

भाई साहिब! मिर्ज़ा साहिब इस सदी के मुजद्दिद हैं और मुजद्दिद अपने युग का **महदी** और अपने युग के रोग की तीव्रता में ग्रस्त रोगियों का **मसीह** हुआ करता है और यह बात बिल्कुल उपमा के तौर पर है जैसे मिर्ज़ा साहिब अपनी इल्हामी रुबाई में लिख चुके हैं -

रुबाई

क्या शक है मानने में तुम्हें इस मसीह के
जिसकी मुमासलत को ख़ुदा ने बता दिया।
हाज़िक़ तबीब पाते हैं तुम से यही ख़िताब
ख़ूबों को भी तो तुम ने **मसीहा** बना दिया।

मैं अब इस पत्र को समाप्त करना चाहता हूँ। मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब की इशाअत पर अल्लाह तआला जो फ़ैज़ करेगा उसकी अभिव्यक्ति फिर हो रहेगी। यार बाक़ी सुहबत बाक़ी।

अन्त में तुम्हें यह शे'र सुना कर एक और प्रेरणा देकर समाप्त करता हूँ -

इब्ने मरयम हुआ करे कोई
मेरे दु:ख की दवा करे कोई।

हमारी राय के विरोधी मौलवियों का साहस

ख़ुदा तआला ने पूर्ण रूप से क़ुदरत का जल्वा दिखाने के लिए एक ऐसे प्रसिद्ध मौलवी साहिब से हमें टकरा दिया जिन के ज्ञान की योग्यता, जिनकी बोध शक्ति,

* अल हज्ज-53

जिनकी वाक्य-पटुता, जिनके वर्णन में सरसता की पंजाब तथा हिन्दुस्तान में बहुत ख्याति है और दूरदर्शी एवं सर्वज्ञ ख़ुदा के हित ने इस ख़ाकसार के मुक़ाबले पर उन्हें ऐसा जोश प्रदान किया और इस स्तर की कुधारणा में उन्हें डाल दिया कि कुधारणा और विरोधात्मक प्रहार करने में उन्होंने कोई कमी नहीं छोड़ी ताकि उसकी वह विलक्षण बात प्रकट हो जिसका उसने इरादा किया है। मौलवी साहिब ख़ुदा के प्रकाश को बुझाने के लिए बहुत ज़ोर से फूंकें मार रहे हैं। देखिए अब सचमुच वह प्रकाश बुझ जाता है या कुछ और क़ुदरत का चमत्कार प्रकट होता है। 9 अप्रैल 1891 ई. के पत्र में उन्होंने जो मेरे एक मित्र मौलवी सय्यिद मुहम्मद अहसन साहिब के नाम भोपाल में भेजा था उसमें विचित्र प्रकार के तिरस्कारपूर्ण वाक्य प्रयोग किए हैं। आप सय्यिद साहिब को लिखते हैं कि आप इस व्यक्ति पर जल्दी से क्यों ईमान ले आए, इसको एक बार देख तो लिया होता। मौलवी साहिब ने इस वाक्य तथा एक अरबी वाक्य से यह व्यक्त करना चाहा है कि यह व्यक्ति मात्र मूर्ख तथा ज्ञान एवं क्रियात्मक शक्तियों से पूर्णतया अनभिज्ञ है और कुछ भी वस्तु नहीं। यदि तुम देखो तो इस से नफ़रत करो परन्तु ख़ुदा की कसम यह सच और बिलकुल सच है और क़सम है मुझे उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरी जान है कि वास्तव में मुझ में कोई ज्ञान एवं क्रियात्मक खूबी, बुद्धिमत्ता तथा विद्वता की योग्यता नहीं और मैं कुछ भी नहीं। एक ग़ैब (परोक्ष) में हाथ है जो मुझे थाम रहा है और एक गुप्त प्रकाश है जो मुझे प्रकाशित कर रहा है और एक आकाशीय रूह है जो मुझे शक्ति दे रही है। अत: जिसने नफ़रत करना है करे ताकि मौलवी साहिब प्रसन्न हो जाएं। ख़ुदा की क़सम मेरी दृष्टि एक ही पर है जो मेरे साथ है और अल्लाह के अतिरिक्त मेरी दृष्टि में एक मरी हुई चींटी के बराबर भी नहीं। क्या मेरे लिए वह पर्याप्त नहीं, जिसने मुझे भेजा है। मैं निश्चय ही जानता हूँ कि वह इस प्रचार को नष्ट नहीं करेगा जिसे लेकर मैं आया हूँ। मौलवी साहिब जहाँ तक संभव है लोगों को नफ़रत दिलाने के लिए ज़ोर लगा लें और कोशिश में कुछ कमी न छोड़ें और जैसा कि वह अपने पत्रों में और अपनी पत्रिका में और अपने भाषणों में बार-बार व्यक्त कर चुके हैं कि यह

व्यक्ति मूर्ख है, अनपढ़ है, गुमराह है, झूठ बनाने वाला है, दूकानदार है, अधर्मी है, काफ़िर है, ऐसा ही करते रहें और मुझे थोड़ी सी भी छूट न दें। मुझे भी उस हस्ती की अद्भुत क़ुदरतों को देखने की रुचि है जिसने मुझे भेजा है। किन्तु यदि कुछ आश्चर्य है तो इस बात पर है कि इसके बावजूद कि यह ख़ाकसार मौलवी साहिब की दृष्टि में मूर्ख है बल्कि कथित पत्र में निश्चित तौर पर मौलवी साहिब ने लिख दिया है कि यह व्यक्ति मुल्हम नहीं अर्थात् झूठ बनाने वाला है और यह दावा जो इस ख़ाकसार ने किया है मौलवी साहिब की दृष्टि में व्यापक तौर पर मिथ्या है जिसका क़ुर्आन और हदीस में कोई अवशेष या निशान नहीं पाया जाता। फिर मौलवी साहिब पर भय का इतना अधिक प्रभुत्व है कि आप ही बहस के लिए बुलाते और आप ही किनारा कर जाते हैं। दर्शकों को ज्ञात होगा कि मौलवी साहिब ने बड़ी धूम धाम से 16 अप्रैल 1891 ई. को तार भेज कर इस ख़ाकसार को बहस के लिए बुलाया कि जल्द आओ और आकर बहस करो अन्यथा पराजित समझे जाओगे। उस समय बड़ी प्रसन्नता हुई कि मौलवी साहिब ने इस ओर मुख तो किया और रुचि हुई कि अब देखें कि मौलवी साहिब हज़रत मसीह इब्ने मरयम के पार्थिव शरीर के साथ जीवित उठाए जाने का कौन सा सबूत प्रस्तुत करते हैं या मृत्यु के पश्चात् पुन: जीवित हो जाने का कोई सबूत पवित्र क़ुर्आन या सही हदीस से निकालते हैं। अत: लुधियाना में एक सार्वजनिक चर्चा हो गयी कि मौलवी साहिब ने बहस के लिए बुलाया है और सियालकोट में भी मौलवी साहिब ने अपने हाथ से पत्र भेजे कि हम ने तार के द्वारा बुलाया है परन्तु जब इस ख़ाकसार की ओर से बहस के लिए तैयारी हुई और मौलवी साहिब को सन्देश भेजा गया तो आपने बहस करने से किनारा किया और यह बहाना प्रस्तुत कर दिया कि जब तक इज़ाला औहाम छप न जाए हम बहस नहीं करेंगे। आपको उस समय यह विचार न आया कि हमने तो बुलाने के लिए तार भेजा था और एक पत्र में यह भी लिखा था कि हमें इज़ाला औहाम देखने की आवश्यकता नहीं और यह भी बार-बार व्यक्त कर दिया था कि यह व्यक्ति झूठ पर है। अब इज़ाला औहाम की आवश्यकता क्यों पड़ गई। तार द्वारा

यह सन्देश पहुँचाना कि आओ अन्यथा पराजित समझे जाओगे और अल्लाह की राह में फ़ना मेरे भाई हक़ीम नूरुद्दीन साहिब पर अकारण यह आरोप लगाना कि वह हमारे मुकाबले से भाग गए और फिर बहस की याचना पर इज़ाला औहाम याद आ जाना बड़ा विचित्र इन्साफ़ है। मौलवी साहिब इस ख़ाकसार का दावा सुन चुके थे, फ़तह इस्लाम और तौज़ीह मराम को देख चुके थे। अब केवल क़ुर्आन और हदीस की दृष्टि से बहस थी जिसको मौलवी साहिब ने वादा करके फिर टाल दिया।

समाप्त

सूचना

कुछ दोस्तों के पत्र पहुंचे कि जैसे मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी लुधियाना के मुबाहसे के बाद आदेश देकर निकाले गए हैं। यह आदेश इस ख़ाकसार के बारे में हुआ है। अतः स्पष्ट रहे कि यह अफ़्वाह सरासर ग़लत है। हां यह सच है कि मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी अपनी वहशियों वाली बहस की शैली की शामत से लुधियाना से शहर बदर किए गए। परन्तु इस ख़ाकसार के बारे में कोई निष्कासन का आदेश जारी नहीं हुआ। चुनौचै नीचे जनाब डिप्टी कमिश्नर साहिब बहादुर लुधियाना के पत्र की नक़ल लिखी जाती है

पेशगाह मिस्टर डब्ल्यू **च्यूस साहिब** बहादुर डिप्टी कमिश्नर लुधियाना की ओर से।

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब रईस क़ादियान सलामत चिट्ठी आपकी दिनांक आज पहुंच कर मुलाहज़ा और समाअत हो कर उत्तर में लिखा जाता है कि आपको सरकारी कानून के अनुकरण और दृष्टिगत रखते हुए लुधियाना में ठहरने के लिए वही अधिकार प्राप्त है जैसे कि अन्य प्रजा अंग्रेज़ी सरकार के क़ानून के अधीन प्राप्त हैं।

लिखित - 6 अगस्त 1891 ई.

हस्ताक्षर

साहिब डिप्टी कमिश्नर बहादुर